श्री

आगम-सुधासिन्धुः

विभाग : ४

संपादकः संशोधकश्च

पू. पन्न्यास श्री जिनेन्द्रविजयजी गणिवर

श्री हर्षपुष्पामृत जैन ग्रन्थमाला–ग्रन्थाङ्कः–९६

श्री महावीर जिनेन्द्राय नमः ।

तपोमूर्ति पूज्याचार्यदेवश्रीविजयकर्पूरसूरिगुरुभ्यो नमः

हालारदेशोद्धारक-पूज्याचार्यदेवश्रीविजयामृतसूरिगुरुभ्यो नमः ।

श्री

आगम-सुधा-सिन्धुः

चतुर्थो विभागः

श्रीमद्ज्ञातासूत्र-श्रीमदुपासकदशा-श्रीमदन्तकृद्दशा-श्रीमदनुत्तरोपपातिकदशा-श्रीमत्प्रश्नव्याकरण-श्रीमद्विपाकसूत्रेति-षडंग-सूत्रात्मकः

卐

संपादकः संशोधकश्च

तपोमूर्ति–पूज्याचार्यदेवश्रीमद्विजयकर्पूरसूरीश्वर-पट्टालङ्कार हालारदेशोद्धारक-कविरत्न-पूज्याचार्यदेवश्रीमद्विजयामृतसूरीश्वर–विनेयः

पंन्यास--श्री--जिनेन्द्रविजय--गणी

卐

प्रकाशिका–

श्री हर्षपुष्पामृत जैन ग्रन्थमाला

लाखाबावल–शांतिपुरी (सौराष्ट्र)

प्रकाशिका-
श्री हर्षपुष्पामृत जैन ग्रन्थमाला
लाखाबावल-शांतिपुरी (सौराष्ट्र) गुजरात

वीर सं० २५०२] विक्रम सं० २०३२ [सन् १९७६

आ आगमना अधिकारी योगवाही गुरुकुलवासी
सुविहित मुनिवरो छे.

मूल्य रु. ७०—००

मुद्रक:-
गौतम आर्ट प्रिन्टर्स
ब्यावर (राजस्थान)

संपादकीय निवेदन

निष्कारणबंधु विश्ववत्सल चरमशासनपति श्रमणभगवान महावीरदेवे भव्यजीवोना हितने माटे स्थापेल शासन आजे विद्यमान छे अने विषमकालमां पण भव्य जीवोने माटे सर्वज्ञ परमात्मानु' ए शासन परम आलंबन रूप छे. तीर्थंकरदेवोनी अविद्यमानतामां तेओश्रीनी वाणी शासनना प्राण स्वरूप होय छे. श्री तीर्थंकरदेवोअे अर्थथी प्ररूपेल अने गणधरदेवोअे सूत्रथी गू'थेल अे जिनवाणी हितकांक्षी पुन्यात्माओ माटे अमृत तुल्य छे.

विद्यमान आगम श्रुतज्ञानमां मुख्यतया ४५ आगम गणाय छे. ते उपरांत पण ८४ आगमनी गणतरीने हिसाबे बीजु' पण केटलु'क आगम रूपी श्रुतज्ञान विद्यमान छे. आगम सूत्रो उपर नियु'क्तिओ, भाष्यो, चूर्णिओ अने टीकाओ रचायेल छे. अने अेथी सूत्र सहित आगमनी अे पंचांगी जैन शासनमां मान्य छे. तेना आधारे वर्तमान ज्ञानाचार, दर्शनाचार, चारित्राचार, तपाचार अने वीर्याचार रूप व्यवहार प्रवर्ते छे. सम्यग्दर्शन सम्यग्ज्ञान अने सम्यग्चारित्र रूप मुक्ति-मार्ग प्रवर्तमान छे.

पंचांगीनो वाचना, पृच्छना, परावर्तना, अनुप्रेक्षा अने धर्मकथा रूप पंचलक्षण स्वाध्याय जेटलो जोरदार तेटली श्री संघमां सम्यग्ज्ञाननी शुद्धि जोरदार, तेनाथी ज्ञानाचार उज्वल, उज्वल ज्ञानाचारथी दर्शनाचार उज्वल, उज्वल दर्शनाचारथी चारित्राचार उज्वल, उज्वल चारित्राचारथी तपाचार उज्वल अने अे चारे उज्वल आचारथी वीर्याचार उज्वल. वीर्याचारनी उज्वलताथी जैनशासन उज्वल. ए उज्वल जैन शासन सदा जयवंत वर्ते छे.

आम शासननो आधार कहो के पायो कहो, मूल कहो के प्राण कहो, अे श्री जिनवाणी छे. अने ते जिनवाणी ४५ मूल आगम सहित पंचांगी स्वरूप छे. पंचांगीने अनुसरता प्रकरण ग्रन्थो यावत् स्तवन सज्झाय के नाना निबंध के वाक्य स्वरूप छे. उपशम विवेक संवर अे त्रिपदी स्वरूप जिनवाणीथी घोर पापी चिलातीपुत्र पतनना मार्गथी नीकली प्रगतिमार्गना मुसाफीर बनी गया हता.

४५ मूल आगमना अधिकारी योगवाही गुरुकुलवासी सुविहित मुनिवरो छे, साध्वीजी महाराजो श्रीआवश्यक सूत्र आदि मूल सूत्रोना तेमज श्रीआचारांग सूत्रना योगवहन करवा

पूर्वक अधिकारी छे. श्रावक श्राविकाओ उपधान वहन करवा पूर्वक श्री आवश्यक सूत्र उपरांत दशवैकालिकसूत्रना षड्जीव–निकाय–नामना चोथा अध्ययन पर्यंतना श्रुतना अधिकारी छे. आम आगमश्रुतना अधिकारी मुनिवरो योगवहन करवा पूर्वक योग्यता मुजब अध्ययन आदि करीने पोताना ज्ञान दर्शन चारित्रने निर्मल बनावे छे अने योग्यता मुजब धर्मकथा द्वारा जिणवाणीनु' पान करावी साधु-साध्वी श्रावक-श्राविका रूप चारे प्रकारना संघने तेमज मार्गाभिमुख जीवोने मुक्तिमार्ग प्रदान करे छे.

४५ आगमसूत्रो ६ विभागोमां वहेंचायेल छे. (१) अंगसूत्रो–११ (२) उपांगसूत्रो–१२ (३) पयन्नासूत्रो–१० (४) छेदसूत्रो–६ (५) मूल सूत्रो–४ (६) चूलिकासूत्रो–२. आ सूत्रोनु' स्वाध्याय आदि अध्ययन वधे ते माटे उपयोगी बने ते रीते ४५ मूल सूत्रो श्वेताम्बर मूर्तिपूजक श्रीसंघमां सळंग मुद्रित नथी अने जेथी आगम सूत्रोना स्वाध्याय आदिनी अनुकूलता थाय ते माटे शक्य प्रयत्ने संशोधन करीने प्रगट करवानी योजना विचारवामां आवी छे, ते योजना मुजब ४५ आगमसूत्रो १४ विभागमां संपादन थशे.

पहेलो, आठमो, बारमो, तेरमो, चौदमो विभाग प्रगट थया पछी आ चोथो विभाग संपादित थयेल छे. आ चोथा विभागमां श्री ज्ञातासूत्र, श्री उपासकदशासूत्र, श्री अन्तकृद्दशासूत्र, श्री अनुत्तरोपपातिकदशासूत्र, श्रीप्रश्नव्याकरणसूत्र, श्रीविपाकसूत्र एम छ अंगसूत्रो आपवामां आव्या छे. आ अंगसूत्रोनी रचना द्वादशांगी प्ररूपक श्री सुधर्मास्वामी गणधर भगवंते करी छे.

आ सूत्रोना संपादनमां रायश्रीधनपतसिंहजी प्रकाशित आगमसंग्रह, पूज्य आगमोद्धारक आचार्यदेवश्रीसागरानंदसूरीश्वरजी महाराज संशोधित श्री आगममंजूषा, श्रीमती आगमोदय समिति प्रकाशित पूज्य आचार्यदेव नवांगीटीकाकार श्री अभयदेवसूरीश्वरजी म० विरचित टीका, श्री जैन आत्मानंद सभा प्रकाशित सटीक आगमो, श्री सिद्धचक्र समिति प्रकाशित सटीक ज्ञातासूत्र, श्री जैन धर्म प्रचारक सभा प्रकाशित श्री अंतकृद्दशा अने श्री विपाकसूत्र, शाह नगीनदास नेमचंद प्रकाशित श्री प्रश्नव्याकरण सूत्र, श्री मुक्तिविमल जैन ग्रन्थमाला प्रकाशित पूज्य आचार्यप्रवर श्री ज्ञानविमलसूरीश्वरजी म. विरचित श्री प्रश्नव्याकरणवृत्ति, श्री मुक्ति कमल जैन मोहनमाला प्रकाशित श्री विपाकसूत्र विगेरे ग्रन्थोनो उपयोग कर्यो छे ते माटे ते सौ प्रत्ये कृतज्ञता प्रगट करु' छु'.

टीकाओ आदिमां रहेला पाठांतरो मेलवीने मूलपाठ जोडे कौंशमां आपेला छे.

श्री श्रमण संघमां आगमो कंठस्थ करवामां, स्वाध्याय करवामां, विस्तृत टीकाओना वांचन पछी मूलसूत्रोनु' पुनरावर्तन करवामां, आ मूल सूत्रोना संयुक्त संपादन थी घणी

अनुकूलता रहेशे. अने अेथी उत्साही मुनि भगवंतो होंशे होंशे सूत्रो कंठस्थ करीने आगम श्रुतने धारण करवा माटे पण समर्थ बनी शकशे. २, ५, के १०, २० सूत्र कंठस्थ करनारा घणा मुनिवरो तैयार थशे अने पुरतो प्रयत्न थाय तो लगभग अेक लाख श्लोक प्रमाण मूल सूत्रो कंठस्थ करी धारी राखनारा अनेक गणो मुनिवरोमां थइ शकशे. 'ज्ञानधनाः साधवः' 'शास्त्रचक्षुषः साधवः' अे विधान मुजब श्रमण संघना प्राण समान आ आगम सूत्रोनुं श्री श्रमण भगवंतो द्वारा विशेष परिशीलन थतां श्रीसंघने माटे श्री शासन ने माटे घणी उज्वलता फेलाशे. अने अे आशयथी स्वपरना श्रेयकारी आगम सूत्रोनां संशोधन संपादनमां अविरत उत्साह प्रवर्तमान छे.

प्रकाशननी सगवडता माटे श्री गौतम आर्ट प्रिन्टर्स (ब्यावर) ना व्यवस्थापक श्री छगनलालभाई अे जे खंत अने उत्साह बताव्या छे तेने कारणे आ प्रकाशनो समयसर प्रकाशित थइ रह्या छे.

चरम तीर्थपति श्रमण भगवान महावीर देवे प्रकाशेल जिनवाणीनो प्रभाव पांचमा आराना छेडा सुधी रहेशे. अे ज्वलंत जिनवाणीनो प्रकाश आपणा आत्माने योग्यता अने अधिकार मुजब अजवालनारो बने अने जिनवाणीनी आ उपासना भक्तिमां भावना पूर्वक रस लइ रह्यो छुं ते भावोल्लास टकी रहे अने सौ श्रुत आराधनामां उजमाल बनीअे एज मारा अंतरनी शुभ अभिलाषा छे.

वीर सं० २५०२ वि० सं० २०३२
ज्येष्ठ सुद ११ सोमवार
ता. ७-६-७६
आराधन भवन एस. के. बोले रोड
दादर मुंबइ-२८

हालारदेशोद्धारक कविरत्न पूज्य आचार्यदेव श्रीमद्विजय-अमृतसूरीश्वरजी महाराजानो चरणसेवक
पं० जिनेन्द्रविजय गणी

प्रकाशकीय निवेदन

अमारी ग्रन्थमाला तरफथी आ श्री आगमसुधासिन्धु चोथो विभाग मूल प्रगट करता आनंद अनुभवीए छीए. हालमां ४५ आगम मूल अने केटलाक आगम टीका सहित प्रगट करवानु काम शरू करतां आ ग्रन्थ नागरी लिपिमां मोटा टाइपमां प्रगट करेल छे. आ प्रकाशन पूर्वे श्री आगम-सुधा-सिन्धुना पहेलो, आठमो, बारमो, तेरमो चौदमो विभाग प्रगट थई गया छे. हाल छट्ठा अने अग्यारमा विभागनु मुद्रण चाली रह्यु छे.

आ ग्रन्थनु संशोधन संपादन हालारदेशोद्धारक कविरत्न स्व. पू० आचार्यदेव श्रीमद्-विजयअमृतसूरीश्वरजी महाराजना शिष्यरत्न पू० पंन्यासश्री **जिनेन्द्रविजयजी** गणिवरे घणी खंत थी करेल छे.

कागल छपाइ आदिना भाव वधवाने कारणे खर्च धार्या करतां वधु आवे छे. मोटा टाइपमां मुद्रित करतां पेज वधारे थाय छे. परंतु टकवानी अने अभ्यासनी दृष्टिए अनुकुलता रहशे.

आगम सूत्रोना अधिकारी योगवाही गुरुकुलवासी सुविहित मुनिओ छे. ए शास्त्रविधि मुजब पूज्य श्रमणसंघमां आगम वांचनादिमां अनुकुलता थाय ते रूप आ श्रुतभक्ति करतां अमे आनंद अनुभविए छीए.

श्री ज्ञातासूत्र आदि छ मूल अंगसूत्रो आ चोथा विभागमां प्रगट थइ रह्यां छे. ४५ मूल आगम १४ विभागमां प्रगट थशे. सटीक आगमोमां श्रीमदन्तकृद्दशा, श्रीमदन्तगोपपातिकदशा अने श्रीमदुपासकदशा सूत्र तैयार थइ गयां छे. मुद्रण माटे श्री गौतम आर्ट प्रिन्टर्सना व्यवस्थापकोओ सारी खंत राखी छे तो तेमनो आभार मानीओ छीओ.

वीर संवत् २५०२
वि० स० २०३२
ज्येष्ठ सुद ५ गुरुवार
ता. ३-६-७६

लि:-
महेता मगनलाल चत्रभुज
शाह कानजी हीरजी मोदी

सादर समर्पण—

परम पूज्य तपोनिधि पू. पन्न्यास श्रीमणिविजयजी दादाना
चरम लाडिला शिष्यरत्न
परम पूज्य कलिकालकल्पतरु, शासन संरक्षक, संघस्थविर परम-
आराध्यपाद आचार्यदेवेश श्रीमद्‌विजयसिद्धिसूरीश्वरजी
महाराजना पट्टधर प्रवचन पीयूषनिधि सिद्धान्तमार्तंड
परमशासन प्रभावक प्रातःस्मरणीय
आगमरहस्यज्ञाता

पूज्यपाद आचार्यदेवेश

श्रीमद्‌ विजयमेघसूरीश्वरजी महाराजा

जेओश्रीए संघस्थविर गुरुदेवना सानिध्यमां अंतिम अवस्था सुधी रहीने
श्री महावीर परमात्माना महानमार्गने आराधना प्रभावना रक्षा
आदि वडे दीप्तिमन्त राखी जीवनने उज्वल बनाव्युं मारा
दादागुरु श्रीमद्‌विजयकर्पूरसूरीश्वरजी महाराजा तथा गुरुदेव
श्रीमद्‌विजयअमृतसूरीश्वरजी महाराजाने आचार्यादि-
पदप्रदाननुं सानिध्य आदि पोताना गुरुदेव
साथे आपी महान उपकार कर्यो छे.
तेओश्रीना उपकारोना यादमां

श्री आगम सुधा सिन्धु

चोथो विभाग

सादर कोटिशः वंदना साथे समर्पण करी कृतकृत्यता अनुभवुं छुं.

गुरुदेवपदकजभृङ्गायमाण
जिनेन्द्रविजय

卐 अनुक्रमणिका 卐

॥ श्री ज्ञाताधर्मकथांगसूत्रम् ॥

॥ प्रथमः श्रुतस्कन्धः ॥

क्रमः	अध्ययन नाम	पृष्ठांकः	क्रमः	अध्ययन नाम	पृष्ठांकः
१	उत्क्षिप्त	१	११	दावद्रव	१५०
२	संघाट	५४	१२	उदक	१५२
३	अण्डक	६८	१३	मदूर	१५८
४	कूर्म	७४	१४	तेतलिपुत्र	१६५
५	शैलक	७७	१५	नन्दीफल	१७८
६	तुम्बक	९३	१६	अपरकङ्का	१८२
७	रोहिणीज्ञात	९४	१७	अश्व	२२५
८	मल्लीज्ञात	१०१	१८	सुसुमा	२३२
९	माकन्दीदारक	१३६	१९	पुण्डरीक	२४०
१०	चन्द्र	१४९			

॥ द्वितीयः श्रुतस्कन्धः ॥

क्रमः	वर्गः	पृष्ठांकः	क्रमः	वर्गः	पृष्ठांक
१	प्रथम (अध्ययन-५) —	२४६	६	षष्ठ (अध्ययन-३२)	२५६
२	द्वितीय (,, ५)	२५४	७	सप्तम (,, ४)	२५७
३	तृतीय (,, ५४) ...	२५४	८	अष्टम (,, ४) ...	२५७
४	चतुर्थ (,, ५४)	२५५	९	नवम (,, ८)	२५८
५	पञ्चम (,, ३२)	२५६	१०	दशम (,, ८) ...	२५८

॥ श्री उपासकदशा सूत्रम् ॥

क्रमः	अध्ययन नाम	पृष्ठांक	क्रमः	अध्ययन नाम	पृष्ठांकः
१	आनन्द	२६१	६	कुण्डकोलिक	२८९
२	कामदेव	२७५	७	सद्दालपुत्र	२९२
३	चुलणीपिता	२८२	८	महाशतक	३०२
४	सुरादेव	२८६	९	नन्दिनीपिता	३०८
५	चुल्लशतक	२८८	१०	सालिहीपिता	३०८

॥ श्रीअंतकृद्दशा सूत्रम् ॥

क्रमः	वर्ग	पृष्ठांकः	क्रम	वर्ग	पृष्ठांकः
१	प्रथम (अध्ययन-१०)	३११	५	पञ्चम (अध्ययन-१०)	३२७
२	द्वितीय (,, १०)	३१४	६	षष्ठ (,, १६)	३३२
३	तृतीय (,, १३)	३१४	७	सप्तम (,, १३)	३४२
४	चतुर्थ (,, १०)	३२६	८	अष्टम (,, १०)	३४३

॥ श्री अनुत्तरोपपातिकसूत्रम् ॥

क्रमः	वर्ग	पृष्ठांकः	क्रमः	वर्ग	पृष्ठांक
१	प्रथम (अध्ययन-१०)	३५३	३	तृतीय (अध्ययन-१०)	३५६
२	द्वितीय (,, १३)	३५५			

॥ श्री प्रश्नव्याकरणसूत्रम् ॥

क्रमः	अध्ययन नाम	पृष्ठांकः	क्रमः	अध्ययन नाम	पृष्ठांकः
१	हिंसाकर्माश्रव	३६५	६	अहिंसासंवर	४०२
२	मृषावादकर्माश्रव	३७५	७	सत्यसंवर	४०७
३	अदत्तादानकर्माश्रव	३८०	८	अदत्तादानविरमण	४११
४	अब्रह्माश्रव	३९०	९	ब्रह्मचर्य	४१४
५	परिग्रहाश्रव	३९८	१०	परिग्रहविरमण	४१८

॥ श्री विपाकसूत्रम् ॥

॥ दुःखविपाकः प्रथमः श्रुतस्कन्धः ॥

क्रमः	अध्ययन नाम	पृष्ठांकः	क्रम	अध्ययन नाम	पृष्ठांकः
१	मृगापुत्रीय	४२७	६	नन्दिवर्धन	४६३
२	उज्झितक	४३८	७	उम्बरदत्त	४६८
३	अभग्नसेन	४४७	८	शौरिकदत्त	४७३
४	शकट	४५६	९	देवदत्ता	४७७
५	बृहस्पतिदत्त	४६०	१०	अंजूश्री	४८५

सुखविपाकः द्वितीयः श्रुतस्कन्धः

क्रमः	अध्ययन नाम	पृष्ठांकः	क्रमः	अध्ययन नाम	पृष्ठांकः
१	सुबाहु	४८७	६	धनपति	४९४
२	भद्रनन्दी	४९२	७	महाबल	४९४
३	सुजात	४९३	८	भद्रनन्दी	४९४
४	सुवासव	४९३	९	महाचन्द्र	४९५
५	जिनदास	४९३	१०	वरदत्त	४९५

॥ शुद्धिपत्रकम् ॥

पृष्ठांक	पंक्तिः	अशुद्धं	शुद्धम्
३	२	जति णं ... धम्मकहाओ अ,	बेउड्ड छपायुं ते न जोइए
४	८	(रयणभूमियविडंक)	(रयणभूमियंविडक)
४	२१	सुत्तस्सहे	ससस्सहे
७	२३	सुयोदगेहिं	सुहोदगेहिं
८	१८	सिद्धत्थ-मंगल०	सिद्धत्थकाय-मंगल०
८	२३	अछरग-	अच्छरग
१०	२	अभियगट्ठा	अभिगयट्ठा
१०	१८	रज्जलाभो !	रज्जलाभो सामी !
१२	१२	पंतिसोभत-पंतिसाभंत	पंतिसोभंत-
१५	१९	सेणिय	सेणियं राय
२०	६	तएणं	तए णं से
२२	६	परिवहरति	परिवहति
२४	१७	अज्जं	अज्जं (मज्जं)
२६	२१	दोह	दोह
२७	४	चट्ठ	अट्ठ
२९	१८	पडिच्छते	पडिच्छिते
३१	२१	खलं	खलु
३८	२४	मेहस्स	मेहस्स कुमारस्स
३९	२	आवरण०	आभरण०
३९	१९	देसाणुप्पियाहिं	देवाणुप्पियाहिं
४४	५	विझगिरियामूले	विंझगिरिपायमूले
४५	१९	महा !	मेहा !
४८	७	अणुगा-	अणगा-
५०	१२	तवोकप्मं	तवोकम्मं
५६	१६	विदेसत्थस्स	विदेसत्थस्स
५६	१९	सरपंतियासु	सरपंतिसु
५८	११	लूहइ	लूहेइ
५९	१७	करेति	करेंति
७१	६	पेच्छणाघरएसु	पेच्छणघरएसु
७३	१३	जोव्वणगमणुपत्तो	जोव्वणगमणुपत्तो
७५	१९	एसंचान्ति	संचाएन्ति
७६	१२	उवलेंति	उव्वत्तेंति
७८	२४	भेरीएए	भेरीए
८२	२३	सखसमए	संखसमए
८३	१८	०मल्ललंकारेणं	०मल्लालंकारेणं
८७	१८	भवं अव्वए	भवं
८८	४	थाउर-	थाउर-
८९	२३	पंथयपामोक्खाति	पंथयपामोक्खाति
९७	५	संगोवंति०	संगोवंति
९७	१७	पत्थह	पत्थए
१०२	१०	पारिसा	परिसा
१०६	१५	भगवता	भगवती
१०६	१६	पीढमद्देहिं	पीढमद्देहिं
१०६	१८	(पउमुप्पलुप्पल)	(पउमुप्पलुप्पल)
१०७	१५	जागजन्नए	नागजन्नए
१०८	८	कल्ल	कल्लं जाव
११०	२३	अनभिरिवमाणा	अनभिलिज्जमाणा
१११	५	मडुप्पवाइएसु	पडुप्पवाइएसु
१११	१४	संखुभमाणी	संखुब्भमाणी
११६	१४	पडिबसज्जेति	पडिबिसज्जेति
१२२	१८	तिदंड०	तिदंडं
१२४	१६	वद्दूरं	वद्दूरे
१२५	७	६	६ । ७
१२५	११	उवागच्छंति	उवागच्छति
१२७	२१	जितसत्त-	जितसत्त-
१२८	३	विभूषिया	विभूसिया
१२९	१०	खओवसमेण	खओवसमेणं
१३१	१०	उवागच्छति	उवागच्छंति
१३२	१७	महिला	मिहिला
१३६	१०	पंचेहिं	पंचहिं
१३७	१	सपुप्फज्जिजत्था	समुप्पज्जित्था
१३७	५	आगाहित्तए०	ओगाहित्तए०
१३८	९	गंट्ठि	गंट्ठि-
१३९	६	बमुमज्झ-	बहुमज्झ-
१३९	१४	मग्गाणगवेसणं	मग्गणगवेसणं
१४०	२२	दुद्दूर-	वद्दूर-
१४१	६	साहोणा	साहीणो

पृष्ठांकः	पंक्तिः	अशुद्धं	शुद्धम्
१४१	२४	वेउव्वि-समु- ग्घातणं	वेउव्विय-समुग्घातेणं
१४४	२	मे न	अण्णहा मे न
१४७	२	ससिमंडलगार	ससिमंडलागार
१४८	२०	लवस०	लवण०
१५५	११	जाय	जाव
१५७	२	आपच्छामि	आपुच्छामि
१५६	२	समणोवासाए	समणोवासए
१६२	२१	तत्पणाहि	तप्पणाहि
१७६	३	कणगज्जएण	कणगज्झएणं
१७७	१४	०निवाएं	निनाए
१८४	१७	बहुसंभारसं- जुत्तस्स	बहुसमारसंजुत्तस्स
१८७	१७	काढे	कोट्ठे
१९०	१६	अवसव्वसे	अवस्सवसे
१९१	६	,,	,,
१९३	१२	एडिज्जामाणंसि	एडिज्जमाणंसि
२००	१२	मेरा	मेरी
२०२	१७	गच्छइ	गच्छह
२०३	४	०चामरहिं	चामराहिं
२०५	७	तते ण	तते णं से
२१३	६	हयगपा	हयगया
२१५	१६	उगच्छंति	उवागच्छंति
२२०	४	अद्धजोयणं	अद्धजोयणं च
२२०	१२	उत्तरति	उत्तरति २
२३१	४	उरगा	उरगो
२३४	१०	वारभिसंकीहि०	दाराभिसंकीहि
२३५	१६	अयरिभूए	अपरिभूए
२३७	११	वणक्कणगं	वणकणग
२३९	१६	सत्यवारे	सत्थवाहे
२४३	१६	पढवी०	पुढवी०
२४७	१	पनत्ता	पन्नत्ता
२४९	१२	अरओ	अरहओ
२५०	५	अंबसालावणाओ	अंबसालवणाओ
२५६	१८	१-५	२-५
२५७	८	प्पभाए	प्पभा

पृष्ठांकः	पंक्तिः	अशुद्धं	शुद्धम्
२५८	६	पउमे	पउमे
२६४	१८	गाधट्टएणं	गन्धट्टएणं
२६६	१७	च	च णं
२६८	१०	पडिलाभेमाणस्स	पडिलाभेमाणस्स
२७२	६	०मचलव०	०मचवल०
२७२	१४	सिन्नवेसस्स	सन्निवेसस्स
२७३	१	सव्वे	भंते
२७३	२१	ससणे	समणे
२७४	२२	प्रथमध्ययनम्	प्रथममध्ययनम्
२७६	६	देवि	दोवि
२७६	१३	लोमेहिं	लोमेहिं
२७७	२	कित्तिपरिवज्जिया	कित्तिपरिवज्जिया
२७७	१६	भिउहिं	भिउडिं
२७७	२०	नीलप्पल	नीलुप्पल
२८०	१२	चालित्तए बो	चालित्तए वा
२८२	१०	महाहिदेहे	महाविदेहे
२८३	८	समणोवसाए	समणोवासए
२८६	११	(महाकामववाणे)	(महाकामवणे)
३००	१६	विहरइ	विहरह
३०४	२०	सहासयए	महासयए
३१६	३	निविक्खति	निरिक्खति
३२२	१५	गुत्तबभयारी	गुत्तबंभयारी
३२६	११	जूहा	जहा
३३१	१७	भावेमणा	भावेमाणा
३३७	८	पाणीजक्खे	पाणिजक्खे
३४१	८	पायवंदते,	पायवंदते ?
३४१	१६	पुत्ता ।	पुत्ता !
३४२	२४	नामइं	नामाइं
३४८	१५	अराहेत्ता	आराहेत्ता
३४९	१२	सव्व २	सव्व० २
३५०	१५	चोद्दसमं करेति २ अट्ठारसमं	चोद्दसमं करेति २ सव्व० २ सोलसमं करेति २ सव्व० २ अट्ठारसमं
३५२	१५	अट्टमो	अट्ठमो
३५३	१७	णट्ठसु	अट्ठसु

पृष्ठांक:	पंक्ति:	अशुद्धं	शुद्धम्
३५६	५	अणत्तरो०	अणुत्तरो०
३५६	११	इयदासणं	इयदसाणं
३६२	१४	भद्दाणमं	मद्दाणामं
३६८	६	बहुसंकिलिट्ठकम्मा	बहुसंकिलिट्ठकम्मा
३६८	२०	थूमं	थूभ
३७२	२०	आलुग्ग-	ओलुग्ग-
३७२	२१	पूव्वकम्मादयो०	पूव्वकम्मोदयो०
३७४	२१	तासओ	तासणओ
३७८	६	ओहेव	आहेव
३८२	८	पडुपहडाहय-	पडुपडहाहय-
३८३	९	विच्चवल पउवणं	पच्चवल विउवणं
३८३	२२	बिसमप्पेवसं	बिसमप्पवेसं
३९१	६	थूम-	थूभ-
३९१	१५	सुदरंगा	सुंदरंगा
३९३	९	कणगगिरि-	कणगगिरि
३९६	११	रोमराजीआ	रोमराजीओ
३९९	२३	वद्धरुद्धा	बद्धरुद्धा
४००	९	लोभामिभूत-	लोभाभिभूत-
४०३	३	दुहट्टि(दुहट्टहि)-हियाणं	दुहट्टि(दुहट्टहि)याणं
४१०	३	तवसजम०भीतो	तवसंजम० भीतो
४१०	४	तस्हा	तम्हा
४११	१	अष्टममध्यनम्	अष्टमध्ययनम्
४१९	२	-विमुद्धमूलो	-विसुद्धमूलो
४२०	१०	सम्मुप्पन्न	समुप्पन्न
४२३	२३	-पक्कमंति-	-पवकमंसि-
४२९	४	यालुणवडियाए	कालुणवडियाए
४२९	१५	इंदमहेइ० णिग्ग-च्छंति	इंदमहेइ० निग्ग-च्छंति
४३२	१०	उद्दागच्छति	उवागच्छति
४३३	२४	मं जो	तं जो
४३४	१२	तच्छणेयि	तच्छणेहि
४३६	२४	कहिं	कहिं
४४३	१९	(पासणियं)-दसणं	दंसणं (पासणियं)

पृष्ठांक:	पंक्ति:	अशुद्धम्	शुद्धम्
४४६	८	जाते	जाते जाते
४४९	१४	खहयर०	खहयर०
४५२	७	३	२
४५५	२०	गिण्हइ	गिण्हह
४५६	१४	तो से	तोसे
४५६	१५	उजाणे	उज्जाणे
४५७	२३	बहुविहअयहिं मंसेहिं	बहुविहअय मंसेहिं
४५९	८	सुहरिसणं	सुदरिसणं
४६२	२-३	२० बहस्सतिदत्ते	बहस्सतिदत्ते
४६२	३	बिण्णाय०	बिण्णाय०
४६३	११-१४	सुवरंगे	सुंदरंगे
४६६	२४	तंबभरिएहिं	तंबभरिएहिं
४६५	५	चिट्ठति	चिट्ठंति
४७३	८	रोगयंकेहिं	रोगायंकेहिं
४७४	१२	५	४
४७५	२१	तित्तरो	तित्तिरे
४७५	१	(धम्म०	(धम्म०)
४७५	२	०रस०	०रसि०
४७५	२	कविट्ठरसयाणि	कविट्ठरसियाणि य
४७५	२१	मत्तवेयाणा	मत्तवेयणा
४७६	४	मज्छखलए	मच्छखलए
४८०	१८	मुंजुत्ताए	संजुत्ताए
४८०	२२	बारियाए	दारियत्ताए
४८२	१७	जिमयि०	जिमिय०
४८२	२२	उवागज्छति	उवागच्छंति
४८३	१६	गंधेवट्टएणं	गंधवट्टएणं
४८७	१६	समोगढे	समोसढे
४८९	३	आरारहं	आसरहं
४८९	५	इंदभई	इंदभूई
४८९	७	सुबाहुकुमारे	सुबाहुकुमारे
४९२	१०	तत्थं	तत्थ
४९४	१८	सिरोवेवो०	सिरीवेवो०
४९५	३५	सिज्झहिति	सिज्झिहिति

शुद्धिपत्रकनो उपयोग करीने ग्रन्थनुं अध्ययन आदि करवुं जरुरी छे.

४५ आगम मूल-पुस्तक श्रेणी योजना

❋ श्री आगम-सुधा-सिन्धुः ❋

संपादकः—तपोमूर्ति पूज्य आचार्यदेवश्री विजयकपूरसूरीश्वरजी म. ना पट्टधर हालारदेशोद्धारक
पूज्य आचार्यदेव श्रीविजयअमृतसूरीश्वरजी म. ना शिष्यरत्न

पू. पं. श्री जिनेन्द्रविजयजी गणिवर

अग्यार अंग सूत्रोः—

प्रथमो विभागः

नं०	नाम		श्लोक
१. श्री	आचारांग	सूत्र	२५५४
२. ,,	सूत्रकृताङ्ग	,,	२१००
३. ,,	ठाणांग	,,	३७००
४. ,,	समवायांग	,,	१६६०

द्वितीय-तृतीय-विभागः

५. श्री	भगवती	सूत्र	१५७५२

चतुर्थो विभागः

६. श्री	ज्ञाता	सूत्र	५४६४
७. ,,	उपासकदशा	,,	८१२
८. ,,	अंतकृद्दशा	,,	७९०
९. ,,	अनुत्तरोपपातिक	,,	१९२
१०. ,,	प्रश्नव्याकरण	,,	१२५०
११. ,,	विपाक	,,	१२१६

बार उपांग सूत्रोः—

पञ्चमो विभागः

नं.	नाम		श्लोक
१. श्री	उववाइ	सूत्र	११६७
२. ,,	राजप्रश्नीय	,,	२१२०
३. ,,	जीवाभिगम	,,	४७००

षष्ठो विभागः

४. ,,	पन्नवणा	सूत्र	७७८७

सप्तमो विभागः

५. श्री	जंबूद्वीप प्रज्ञप्ति	सूत्र	४४५४
६. ,,	चंद्र प्रज्ञप्ति	,,	२२००
७. ,,	सूर्य प्रज्ञप्ति	,,	२२९६
८. ,,	कलिका	सूत्र	
९. ,,	कल्पावतंसिका	,,	
१०. ,,	पुष्पिका	,,	११०९
११ ,,	पुष्पचूलिका	,,	
१२ ,,	वह्निदशा	,,	

१० पयन्ना सूत्रोः—

अष्टमो विभागः—

नं.	नाम		श्लोक
१. श्री	चउशरण	सूत्र	८०
२. ,,	आउरपच्चक्खाण	,,	१००
३. ,,	महापच्चक्खाण	,,	१७६
४. ,,	भक्त परिज्ञा	,,	२१५
५. ,,	तंदुलवैयालीय	,,	१३८
६. ,,	संस्तारक	,,	१५५
७. ,,	गच्छाचार	,,	१७५
८. ,,	गणिविज्जा	,,	१०५
९. ,,	देवेन्द्र स्तव	,,	३७५
१० ,,	मरणसमाधि	,,	८७५
१. ,,	चंद्र वेध्यक	,,	१७४
२. ,,	वीरस्तव	,,	४३

—: ६ छेद सूत्रो :—

नवमो विभागः

नं.	नाम		श्लोक
१.	श्री निशीथ	सूत्र	८२१
२.	,, बृहत्कल्प	,,	४३७
	,, पंचकल्पभाष्य	,,	३१३५
३.	,, व्यवहार	,,	३७३
४.	,, दशाश्रुत	,,	२१०६
५.	,, जीतकल्प	,,	१०५

दशमो विभागः

६	श्री महानिशीथ	सूत्र	४५४८

एकादशमो विभागः

श्री कल्पसूत्र सूत्र (प्रताकार ३६ पोइन्ट टाइप) १२१५

४ मूल सूत्रोः-

द्वादशमो विभागः

१	श्री आवश्यक	सूत्र	२५००
२	,, ओघनिर्युक्ति	,,	१२५५

त्रयोदशमो विभागः

३	श्री दशवैकालिक	सूत्र	७००
	,, पिंडनिर्युक्ति	,,	८३५
४	,, उत्तराध्ययन	,,	२०००

२ चूलिका सूत्रो

चतुर्दशमो विभागः

१	श्री नंदी सूत्र	७००
२	श्री अनुयोगद्वार सूत्र	१८९९

सटीक आगमो आदि

नं.	नाम		मूल श्लोक	टीकाकार	टीका श्लोक
१	श्री आचारांग	सूत्र	२५५४	श्री शीलांकाचार्य	१२०००
२	श्री उपासकदशांग	,,	८१२	श्री अभयदेवसूरिजी	८००
३	श्री अंतकृद्दशांग	,,	८९९	,,	४००
४	श्री अनुत्तरोपपातिक	,,	१८२	,,	१००
५	नवस्मरणानि गौतमस्वामिरासश्च				

४५ आगम मूल पुस्तक श्रेणी योजना अंगे

• निवेदन •

जणावतां आनद थाय छे के परम करुणानिधि चरम तीर्थपति श्रमण भगवान महावीरदेवे भव्य जीवोना श्रेयना हेतु रूप तीर्थनी स्थापना करी अने गणधर देवोने त्रिपदीनु प्रदान कर्यु. लब्धिनिधान श्री गणधर देवोअे द्वादशांगीनी रचना करी. जेमनी पाट परंपरा विद्यमान छे ते श्रीमत्सुधर्मस्वामीजीनी द्वादशांगी प्रवर्तमान रही अने वर्तमानमां अग्यार अंग आदि अंग प्रविष्ट अने बार उपांग दश पयन्ना, छ छेद, ४ मूल अने २ चूलिका सूत्रो एम अंग बाह्य श्रुतज्ञान आदि विद्यमान छे ते सूत्रो उपर पूर्वाचार्य महापुरूषो विरचित निर्युक्ति, भाष्य, चूर्णि, टीका, अवचूरि विगेरे आगमानुसारी श्रुत विद्यमान छे.

आ कल्याणकारी श्रुतना आधारे श्री महावीर परमात्मानु शासन प्रवर्तमान छे पूज्य आचार्य भगवंतो आदि मुनिराजो आदि योगवहन, गुरुकुलवास, गुरूआज्ञा आदि योग्यता मुजब अे श्रुतना अधिकारी छे. अने अेथी अे शास्त्रीय मर्यादामां रहेता पूज्योने आ श्रुतज्ञानना स्वाध्याय आदिनी अनुकुलता रहे ते हेतुथी श्रुत भक्तिरूपे ४५ आगमो मूल तेमज केटलाक सूत्रोनी टीका आदि मुद्रित करवानु नक्की कर्यु छे तेनु संशोधन अने संपादन हालार-देशोद्धारक पूज्य आचार्यदेव श्रीमद् विजय-अमृतसूरीश्वरजी महाराजना शिष्य पूज्य पन्यास श्री जिनेन्द्रविजयजी गणिवर अथाग परिश्रम पूर्वक करी रह्या छे

आ सूत्रो श्री संघना भंडारोमां पूज्य गुरुदेवोने अर्पण करवा प्रसारित करवानो अमे निर्णय कर्यो छे. तेनी मर्यादित नकलो प्रकाशित थाय छे अने जे श्री संघो के श्रुतभक्ति रूपे श्रावकोअे आ प्रतिओ मेळववी होय तेमणे पोतानी नकल नी यादी लखावी देवा विनंति छे.

सूत्रोनी नकलो मर्यादित प्रकाशित थाय छे वळी बुकसेलरोने ते वेचवा आपवानो नथी अेटले पाछलथी प्रतिओ प्राप्त थवी मुश्केल पडशे. जेथी भंडारोने सुव्यवस्थित अने समृद्ध बनाववा श्री संघोअे पोताना सेट तरतमां लखावी देवा, पूज्य गुरुदेवो के संघोने अर्पण करवा या श्री शासननी मिलकत रूपे सुरक्षित राखो, पूज्य गुरुदेवोने स्वाध्याय आदि माटे अर्पण करवा सुश्रावको पण आ सेट खरीदी शकशे. तेओ आ सेट वांची के वेंची शकशे नहीं.

४५ आगमो अने ४ सूत्रोनी टीकाओ आदि जे कार्य हाथ उपर धरायु छे तेनु मूल्य रु० ७०० थशे.

चौद विभागमां ४५ आगम प्रगट थशे. तेमां १ लो, ८ मो, १२ मो, १३ मो चौदमो विभाग पण पूर्ण थयो छे बाद आ चोथो प्रगट थाय छे छट्ठो अने अग्यारमो विभाग छपाइ रहेल छे. श्री उपासकदशा सटीक श्री अंतकृद्दशा सटीक, श्री अनुत्तरोपपातिक दशा सटीक, नवस्मरण अने श्री गौतमस्वामी रास पण प्रगट थइ गयेल छे, श्री आचारांग सूत्र सटीक हवे छपाशे.

पहोंचाडवानी सगवडता रहे ते माटे ८ थी १० सूत्रो तैयार थयेथी रवाना कराशे. जेथी सेट मंगावनारे पोताने मोकलवानां ग्रन्थो रेल्वे के ट्रान्सपोर्ट द्वारा प्राप्त थाय तेवुं सरनामुं जणाववुं.

आ आगम श्रेणी अंगे नाम नोंधाववा तथा रकम मोकलवाना सरनामा:–

(१) महेता मगनलाल चत्रभुज
शाक मारकेट सामे निशाल फली,
जामनगर, (सौराष्ट्र)

(२) शा. मनसुखलाल जीवराज भांडलावाला
शराफ बजार, राजकोट (सौराष्ट्र)

(३) शा. वालजी गणशी
C/O हीरा एम्पोरीयम, आनंदरोड,
मलाड (वेस्ट) मुंबई–४०००६४

(४) शा. वेलजी हीरजी गुढका
५२ बी एम. आझाद रोड, रंगवाला चाल,
मुंबई ४०००११

(५) शा. रीखवचंद फुलचंद
सी. पी. टेन्क पहेलो पारसीवाडो
खलीफ मेन्सन, वी. पी. रोड, मुंबई–४

(६) नवीनचंद्र बाबुलाल शाह
डेली फली लालबाग सामे, जामनगर

(७) संघवी जयंतिलाल त्रिभोवनदास
C/o महावीर स्टोर २६८१ फुवारा बजार
गांधी रोड अमदावाद

आ आगम श्रेणी उपरांत अप्रगट तथा अप्राप्य ग्रन्थोनुं विशाल पाया उपर प्रकाशन करवानी पण अमारी धारणा छे.

श्रुतज्ञाननी आ भक्तिना कार्यमां सौनो साथ मलशे तो अमे वहेलासर सफल थशुं अेथी आ अंगे योग्य सहकारनी अपेक्षा राखी श्रुतज्ञान भक्तिना कार्यमां साथ आपवा नम्र विनंति छे.

अर्हम् ।

पञ्चमगणधरदेव-श्रीमत्सुधर्मस्वामिप्रणीतं

॥ श्रीज्ञाताधर्मकथांगसूत्रम् ॥

—:०:—

॥१॥ अथ श्री उत्क्षिप्ताख्यं प्रथममध्ययनम् ॥

ते णं काले णं ते णं समए णं चंपानामं नयरी होत्था वण्णओ ॥ सूत्रं १ ॥ तीसे णं चंपाए नयरीए बहिया उत्तरपुरच्छिमे दिसीभाए पुण्णभद्दे नामं चेइए होत्था, वण्णओ ॥ सूत्रं २ ॥ तत्थ णं चंपाए नयरीए कोणिको नामं राया होत्था वण्णओ ॥ सूत्रं ३ ॥ ते णं काले णं ते णं समए णं समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतेवासी अज्ज-सुहम्मे नामं थेरे जातिसंपन्ने कुलसंपण्णे बलरूव-विणय-णाणदंसण-चरित्त-लाघवसंपण्णे ओयंसी तेयंसी वच्चंसी जसंसी जियकोहे जियमाणे जिय-माए जियलोहे जियइंदिए जियनिद्दे जियपरिसहे जीवियास-मरणभय-विप्प-मुक्के तवप्पहाणे गुणप्पहाणे एवं करणचरणनिग्गह-णिच्छय-अज्जव मद्दव-लाघव-खंति-गुत्तिमुत्ति १० विज्जामंत-बंभवय(चेर)नयनियम-सच्चसोय-णाण-दंसण २० चारित्तप्पहाणे, ओराले घोरे घोरव्वए घोरतवस्सी घोरबंभचेर-वासी उच्छूढसरीरे संखित्तविउल-तेयल्लेसे(तेउलेसे) चोद्दसपुव्वी चउणाणो-वगते पंचहिं अणगारसएहिं सद्धिं संपरिवुडे पुव्वाणुपुव्विं चरमाणे गामा-णुगामं दूतिज्जमाणे सुहंसुहेणं विहरमाणे जेणेव चंपा नयरी जेणेव पुण्ण-भद्दे चेतिए तेणामेव उवागच्छइ उवागच्छइत्ता अहापडिरूवं उग्गहं उग्गिण्हित्ता संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे विहरति ॥ सूत्रं ४ ॥

तएणं चंपानयरीए परिसा निग्गया कोणिओ निग्गओ धम्मो कहिओ परिसा जामेव दिसं पाउब्भूया तामेव दिसिं पडिगया १ । तेणं कालेणं तेणं समयेणं अज्जसुहम्मस्स अणगारस्स जेट्ठे अंतेवासी अज्जजंबू णामं अणगारे कासवगोत्तेणं सत्तुस्सेह जाव अज्जसुहम्मस्स थेरस्स अदूरसामंते उद्धंजाणू अहोसिरे झाणकोट्ठोवगते संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे विहरति, तते णं से अज्जजंबूणामे जायसड्ढे जायसंसए जायकोउहल्ले संजातसड्ढे संजातसंसए संजायकोउहल्ले उप्पन्नसड्ढे उप्पन्नसंसए उप्पन्नकोउहल्ले समुप्पन्नसड्ढे समुप्पन्नसंसए समुप्पन्नकोउहल्ले उट्ठाए उट्ठेति उट्ठाए उट्ठित्ता जेणामेव अज्जसुहम्मे थेरे तेणामेव उवागच्छति २ अज्जसुहम्मे थेरे (अज्जसुहम्मं थेरं) तिक्खुत्तो आयाहिणपयाहिणं करेइ २ वंदति नमंसति वंदित्ता नमंसित्ता अज्जसुहम्मस्स थेरस्स णच्चासन्ने नातिदूरे सुस्सूसमाणे णमंसमाणे अभिमुहं(हे) पंजलिउडे विणएणं पज्जुवासमाणे एवं वयासी–जति णं भंते ! समणेणं भगवया महावीरेणं आइगरेणं तित्थगरेणं सयंसंबुद्धेणं पुरिसुत्तमेणं पुरिससीहेणं पुरिसवरपुंडरीएणं पुरिसवरगंधहत्थीणा लोगुत्तमेणं लोगनाहेणं लोगहिएणं लोगपईवेणं लोगपज्जोयगरेणं अभयदयेणं चक्खुदयेणं मग्गदयेणं सरणदयेणं बोहिदयेणं धम्मदयेणं धम्मदेसयेणं धम्मनायगेणं धम्मसारहीणा धम्मवरचाउरंतचक्कवट्टिणा अप्पडिहयवरनाण-दंसणधरेणं वियट्टछउमेणं जिणेणं जाणएणं (जावएणं) तिन्नेणं तारएणं बुद्धेणं बोहएणं मुत्तेणं मोअगेणं सव्वण्णेणं सव्वदरिसिणा सिवमयल-मरुअमणंत-मक्खयमव्वाबाह-मपुणरावित्तियं सासयं ठाणमुवगतेणं(ठाणं संपत्तेणं)पंचमस्स अंगस्स अयमट्ठे पन्नत्ते, छट्ठस्स णं अंगस्स णं भंते ! णायाधम्मकहाणं के अट्ठे पन्नत्ते ?, जंबूत्ति तए णं अज्जसुहम्मे थेरे अज्जजंबूणामं अणगारं एवं वयासी–एवं खलु जंबू ! समणेणं भगवता महावीरेणं जाव संपत्तेणं छट्ठस्स अंगस्स दो सुयक्खंधा पन्नत्ता, तंजहा–णायाणि य धम्मकहाओ य, जति णं भंते !

समणेणं भगवता महावीरेणं जाव संपत्तेणं छट्ठस्स अंगस्स दो सुयखंधा पन्नत्ता, तंजहा—णायाणि य धम्मकहाओ य २ । जति णं भंते ! समणेणं भगवत्ता महावीरेणं जाव संपत्तेणं छट्ठस्स अंगस्स दो सुयखंधा पन्नत्ता, तंजहा—णायाणि य धम्मकहाओ य, पढमस्स णं भंते ! सुयक्खंधस्स समणेणं जाव संपत्तेणं णायाणं कति अज्झयणा पन्नत्ता ?, एवं खलु जंबू ! समणेणं जाव संपत्तेणं णायाणं एगूणवीसं अज्झयणा पन्नत्ता, तंजहा—उक्खित्तणाए १ संघाडे २ अंडे ३ कुम्मे य ४ सेलगे ५ । तुंबे य ६ रोहिणी ७ मल्ली ८ मायंदी ९ चंदिमा इय १० ॥ १ ॥ दावद्दवे ११ उदगणाए १२ मंडुक्के १३ तेयलीविय १४ । नंदीफले १५ अवरकंका १६, अतिन्ने १७ सुंसुमा इय १८ ॥ २ ॥ अवरे य पुंडरीयणायए १९ एगुणवीसतिमे ३ । ॥ सूत्रं ५ ॥

जति णं भंते ! समणेणं जाव संपत्तेणं णायाणं एगूणवीसा अज्झयणा पन्नत्ता, तंजहा—उक्खित्तणाए जाव पुंडरीएत्ति य, पढमस्स णं भंते ! अज्झयणस्स के अट्ठे पन्नत्ते ? एवं खलु जंबू ! ते णं काले णं २ इहेव जंबूद्दीवे दीवे भारहे वासे दाहिणड्ढभरहे रायगिहे णामं नयरे होत्था, वण्णओ, गुणसिलए चेतिए वन्नओ तत्थ णं रायगिहे नगरे सेणिए नामं राया होत्था महताहिमवंत-महंत मलयमंदर-महिंदसारे वन्नओ, तस्स णं सेणियस्स रन्नो नंदा नामं देवी होत्था सुकुमालपाणिपाया वण्णओ ॥ सू० ६ ॥ तस्स णं सेणियस्स पुत्ते नंदाए देवीए अत्तए अभए नामं कुमारे होत्था अहीण जाव सुरूवे सामदंड--भेयउवप्पयाण-णीति-सुप्पउत्तणय-विहिन्नू ईहावूहमग्गण-गवेसण-अत्थसत्थमइ-विसारए उप्पत्तियाए वेणइयाए कम्मियाए पारिणामिआए चउव्विहाए बुद्धिए उववेए सेणियस्स रण्णो बहुसु कज्जेसु य कुडुंबेसु य मंतेसु य गुज्झेसु य रहस्सेसु य निच्छएसु य आपुच्छणिज्जे पडिपुच्छणिज्जे मेढी पमाणं आहारे आलंबणं चक्खू मेढीभूए पमाणभूए आहार-

भूए आलंबणभूए चक्खूभूए सव्वकज्जेसु सव्वभूमियासु लद्धपच्चए विइ-
णविचारे रज्जधुरचिंतए यावि होत्था, सेणियस्स रन्नो रज्जं च रट्ठं च
कोसं च कोट्ठागारं च बलं च वाहणं च पुरं च अंतेउरं च सयमेव समु-
वेक्खमाणे २ विहरति ॥ सूत्रं ७ ॥ तस्स णं सेणियस्स रन्नो धारिणी
नामं देवी होत्था जाव सेणियस्स रन्नो इट्ठा जाव विहरइ ॥ सूत्रं ८ ॥
तए णं सा धारिणीदेवी अन्नया कयाइ तंसि तारिसगंसि छक्कट्ठक(छठ)लट्ठ
मट्ठ-संठिय-खंभुग्गयं पवरवर-सालभंजिय-उज्जल-मणिकणग-रयणथूभिय-
विडंग(रयणमूमिशविडंक)जालद्धचंद-णिज्जूह-कंतर-कणयालि-चंदसालिया-वि-
भत्तिकलिते सरसच्छ-धाऊवलवण्णरइए बाहिरओ दूमियघट्ठमट्ठे अब्भिंत-
रओ पत्तसुविलिहिय-चित्तकम्मे णाणाविह-पंचवण्ण मणिरयण-कोट्टिमतले
पउमलया-फुल्लवल्लि-वरपुप्फ जातिउल्लोय-चित्तियतले वं(चं)दणवर-कणगकलस-
सुविणिम्मिय-पडिपुं जि(पूजि)य-सरसपउम-सोहंतदारभाए पयरगालंबंत-मणिमुत्त-
दाम-सुविरइय-दारसोहे सुगंधवर-कुसुममउय-पम्हल-सयणोवयारे मणहियय-
निव्वुइयरे कप्पूर-लवंग मलयचंदन -कालागुरु -पवरकुंदुरुक्क-तुरुक्कधूव- डज्झंत-
सुरभि-मघमघंत-गंधुद्धुयाभिरामे सुगंधवरगंधिए गंधवट्टिभूते मणिकिरण-पणा-
सियंधकारे, किं बहुणा ?, जुइगुणेहिं सुरवरविमाण-वेलंबिय-वरघरए तंसि तारि-
सगंसि सयणिज्जंसि सालिंगणवट्टिए उभओ बिब्बोयणे दुहओ उन्नए मज्झे णय-
गंभीरे गंगापुलिण-वालुया-उद्दाल-सालिसए उयचिय-खोमदुगुल-पट्टपडि-च्छयणे
अच्छरय-मलयनवय(नयतय)कुसत्तलिंब सीहकेसर-पच्चुत्थए सुविरइयरयत्ताणे
रत्तंसुयसंवुए सुरम्मे आइणगरूय-बूरणवणीय-तुल्लफासे पुव्वरत्तावरत्त-कालस-
मयंसि सुत्तजागरा ओहीरमाणी २ एगं महं सुत्तस्सेहं रययकूडसन्निहं नहय-
लंसि सोमं सोमागारं लीलायंतं जंभायमाणं मुहमतिगयं गयं पासित्ता
णं पडिबुद्धा १। तते णं सा धारिणी देवी अयमेयारूवं उरालं
कल्लाणं सिवं धन्नं मंगल्लं सस्सिरीयं महासुमिणं पासित्ता णं पडिबुद्धा

समाणी हट्ठतुट्ठा चित्तमाणंदिया पीइमणा परमसोमणस्सिया हरिसवस-विसप्प-माण-हियया धाराहय-कलंबपुप्फगं पिव समूससिय-रोमकूवा तं सुमिणं ओगिण्हइ २ सयणिज्जाओ उ(अब्भु)ट्ठेति २ पायपीढातो पच्चोरुहइ पच्चोरुहइत्ता अतुरिय-मचवल मसंभंताए अविलंबियाए रायहंससरिसीए गतीए जेणामेव से सेणिए राया तेणामेव उवागच्छइ उवागच्छइत्ता सेणियं रायं ताहिं इट्ठाहिं कंताहिं पियाहिं मणुन्नाहिं मणामाहिं उरालाहिं कल्लाणाहिं सिवाहिं धन्नाहिं मंगलाहिं सस्सिरियाहिं हिययगमणिज्जाहिं हिययपल्हायणिज्जाहिं मिउमहुर-रिभियगंभीर-सस्सिरीयाहिं गिराहिं संलवमाणी २ पडिबोहेइ पडिबोहेत्ता सेणिएणं रन्ना अब्भ-णुन्नाया समाणी णाणामणि कणगरयण-भत्तिचित्तंसि भद्दासणंसि निसीयति २ त्ता आसत्था विसत्था सुहासणवरगया करयलपरिग्गहियं दसनहं सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं कट्टु सेणियं रायं एवं वदासी-एवं खलु अहं देवाणुप्पिया! अज्ज तंसि तारिसगंसि सयणिज्जंसि सालिंगणवट्टिए जाव नियग-वयण-मइवयंतं गयं सुमिणे पासित्ता णं पडिबुद्धा, तं एयस्स णं देवाणुप्पिया! उरालस्स जाव सुमिणस्स के मन्ने कल्लाणे फलवित्तिविसेसे भविस्सति? २ ॥ सू० १ ॥

तते णं सेणिए राया धारिणीए देवीए अंतिए एयमट्ठं सोच्चा निसम्म हट्ठ जाव हियये धाराहयनीव-सुरभिकुसुम-चं(चु)चुमालइय-तणु-ऊससिय-रोम-कूवे तं सुमिणं उग्गिण्हइ उग्गिण्हइत्ता ईहं पविसति २ अप्पणो साभाविएणं मइपुव्वएणं बुद्धिविन्नाणेणं तस्स सुमिणस्स अत्थोग्गहं करेति २ धारणिं देवीं ताहिं जाव हिययपल्हायणिज्जाहिं मिउमहुर-रिभिय-गंभीर-सस्सिरियाहिं वग्गूहिं अणुवूहेमाणे २ एवं वयासी-उराले णं तुमे देवाणुप्पिए! सुमिणे दिट्ठे, कल्लाणे णं तुमे देवाणुप्पिए! सुमिणे दिट्ठे, सिवे धन्ने मंगल्ले सस्सि-रीए णं तुमे देवाणुप्पिए! सुमिणे दिट्ठे, आरोग्ग-तुट्ठिदीहाउय-कल्लाण-मंग-ल्लकारए णं तुमे देवी! सुमिणे दिट्ठे, अत्थलाभो ते देवाणुप्पिए! पुत्त-

लाभो ते देवाणुप्पिए !, रज्जलाभो ते देवाणुप्पिए ! भोगलाभो ते देवाणुप्पिए !, सोक्खलाभो ते देवाणुप्पिए !, एवं खलु तुमं देवाणुप्पिए ! नवण्हं मासाणं बहुपडिपुन्नाणं अद्धट्ठमाण य राइंदियाणं विइक्कंताणं अम्हं कुलकेउं कुलदीवं कुलपव्वयं कुलवडिंसयं कुलतिलकं कुलकित्तिकरं कुलवित्तिकरं कुलणंदिकरं कुलजसकरं कुलाधारं कुलपायवं कुलविवद्धणकरं सुकुमालपाणिपायं जाव दारयं पयाहिसि, सेवि य णं दारए उम्मुक्कबालभावे विन्नाय-परिणयमेत्ते जोव्वणगमणुपत्ते सूरे वीरे विक्कंते विच्छिन्नविपुलबलवाहणे रज्जवती राया भविस्सइ, तं उराले णं तुमे देवीए सुमिणे दिट्ठे जाव आरोग्गतुट्ठि-दीहाउ-कल्लाणकारए णं तुमे देवी ! सुमिणे दिट्ठे त्तिकट्टु भुज्जो २ अणुवूहेइ ॥ सू० १० ॥ तते णं सा धारणी देवी सेणिएणं रन्ना एवं वुत्ता समाणी हट्ठतुट्ठा जाव हियया करतलपरिग्गहियं जाव अंजलिं कट्टु एवं वदासी-एवमेयं देवाणुप्पिया ! तहमेयं अवितहमेयं असंदिद्धमेयं इच्छियमेयं देवाणुप्पिया ! पडिच्छियमेयं इच्छियपडिच्छियमेयं सच्चे णं एस अट्ठे जं णं तुब्भे वदहत्ति कट्टु तं सुमिणं सम्मं पडिच्छइ पडिच्छइत्ता सेणिएणं रन्ना अब्भणुन्नाया समाणी णाणामणि-कणगरयणभत्तिचित्ताओ भद्दासणाओ अब्भुट्ठेइ अब्भुट्ठेत्ता जेणेव सए सयणिज्जे तेणेव उवागच्छइ २ त्ता सयंसि सयणिज्जंसि निसीयइ, निसीयइत्ता एवं वदासी मा मे से उत्तमे पहाणे मंगल्ले सुमिणे अन्नेहिं पावसुमिणेहिं पडिहम्मिहित्तिकट्टु देवय-गुरुजणसंबद्धाहिं पसत्थाहिं धम्मियाहिं कहाहिं सुमिणजागरियं पडिजागरमाणी विहरइ ॥ सू० ११ ॥ तए णं सेणिए राया पच्चूसकालसमयंसि कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ सद्दावइत्ता एवं वदासी—खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया ! बाहिरियं उवट्ठाणसालं अज्ज सविसेसं परमरम्मं गंधोदगसित्त-सुइय-संमज्जिओवलित्तं पंचवन्न-सरससुरभि-मुक्क-पुप्फ-पुंजोवयार-कलियं कालागरु-पवरकुंदुरुक्क-तुरुक्कधूव-डज्झंत-मघमघंत-गंधुद्धुयाभिरामं सुगंधवरगंधियं गंधव-

ट्ठिभूतं करेह य कारवेह य २ एवमाणत्तियं पच्चप्पिणह, तते णं ते कोडुं-बियपुरिसा सेणिएणं रन्ना एवं वुत्ता समाणा हट्ठतुट्ठा जाव पच्चप्पिणंति, तते णं सेणिए राया कल्लं पाउप्पभायाए रयणीए फुल्लुप्पल-कमल-कोमलु-म्मिलियंमि अहापंडुरे पभाए रत्तासोग-पगास किंसुय-सुयमुह-गुंजद्धराग-बंधुजीवग--पारावयचलण नयण--परहुयसुरत्तलोयण--जासुमिणकुसुम--जलिय-जलण--तवणिज्जकलस--हिंगुलयनिगर -रूवाइरेग--रेहन्तसस्सिरीए दिवागरे अहकमेण उदिए तस्स दिणकर-करपरंपरावयार-पारद्धंमि अंधयारे बालातवकुंकमेणं खइयव्व जीवलोए लोयण-विसआणुआस-विगसंत-विसदंदसियंमि लोए कमलागरसंडबोहए उट्ठियंमि सूरे सहस्सरस्सिमि दिणयरे तेयसा जलंते सयणिज्जाओ उट्ठेति २ जेणेव अट्टणसाला तेणेव उवा-गच्छइ २ अट्टणसालं अणुपविसति २ अणेगवायाम जोग वग्गण-वामद्दण-मल्लजुद्धकरणेहिं संते परिस्संते सयपागेहिं सहस्सपागेहिं सुगंधवर-तेलमादिएहिं पीणणिज्जेहिं दीवणिज्जेहिं दप्पणिज्जेहिं मदणिज्जेहिं विंहणिज्जेहिं सव्विंदिय-गाय-पल्हायणिज्जेहिं अब्भंगएहिं अब्भंगिए समाणे तेलचम्मंसि पडिपुण्ण-पाणिपाय-सुकुमाल-कोमलतलेहिं पुरिसेहिं छेएहिं दक्खेहिं पट्ठेहिं कुसलेहिं मेहावीहिं निउणेहिं निउणसि-प्पोवगतेहिं जियपरिस्समेहिं अब्भंगण-परिमद्दणुव्वलण-करणगुण-निम्माएहिं अट्ठिसुहाए मंससुहाए तयासुहाए रोमसुहाए चउव्विहाए संबाहणाए संबाहिए समाणे अवगयपरिस्समे नरिंदे अट्टण-सालाओ पडिनि-क्खमइ पडिनिक्खमइत्ता जेणेव मज्जणघरे तेणेव उवागच्छइ उवागच्छइत्ता मज्जणघरं अणुपविसति अणुपविसित्ता समंत(मुत्त, मत्त)-जालाभिरामे विचित्तमणिरयणकोट्टिमतले रमणिज्जे एहाणमंडवंसि णाणा-मणि-रयणभत्तिचित्तंसि एहाणपीढंसि सुहनिसन्ने सुयोदगेहिं पुप्फो-दएहिं गंधोदएहिं सुद्धोदएहि य पुणो पुणो कल्लाणग-पवरमज्जणवि-

हीए मज्जिए तत्थ कोउयसएहिं बहुविहेहिं कल्लाणग-पवर-मज्जणावसाणे पम्हल-सुकुमाल-गंधकासाईय-लूहियंगे अहत-सुमहग्घ-दूसरयण-सुसंवुए सरस-सुरभि-गोसीसचंदणाणुलित्तगत्ते सुइमालावन्नगविलेवणे आविद्धमणिसुवन्ने कप्पिय हारद्धहार-तिसरय-पालंबपलंबमाण-कडिसुत्त-सुकयसोहे पिणद्धगेवेज्जे-अंगुलेज्जग-ललियंग-ललिय-कयाभरणे णाणामणि-कडगतुडिय--थंभियभुए अहियरूवसस्सिरीए कुंडलुज्जोइयाणणे मउडदित्तसिरए हारोत्थय-सुकतरइयवच्छे पालंबपलंबमाण-सुकय-पडउत्तरिज्जे मुद्दियापिंगलंगुलीए णाणामणि-कणग-रयण-विमलमहरिह-निउणोविय-मिसिमिसंत-विरइय--सुसिलिट्ठ- विसिट्ठ-लट्ठसं-ठिय-पसत्थ-आविद्धवीरवलए, किं बहुणा ? कप्परुक्खए चेव सुअलंकिय-विभूसिए नरिंदे सकोरिंटमल्लदामेणं छत्तेणं धरिज्जमाणेणं उभओ चउचामर-वालवीइयंगे मंगलजय-सद्दकयालोए अणेगगणनायग-दंडणायग-राईसर-तल-वर-माडंबिय-कोडुंबिय-मंतिमहामंति-गणग--दोवारिय-अमच्च-चेड-पीढमद्दय-नग-रणिगम-सेट्ठि-सेणावइ-सत्थवाह-दूय-संधिवालसद्धिं संपरिवुडे धवल-महामेह-निग्गएविव गहगण-दिप्पंत-रिक्ख-तारागणाण मज्झे ससिव्व पियदंसणे नरवई मज्जणघराओ पडिनिक्खमति पडिनिक्खमित्ता जेणेव बाहिरिया उव-ट्ठाणसाला तेणेव उवागच्छइ उवागच्छइत्ता सीहासणवरगंते पुरत्थाभिमुहे सन्निसन्ने १ । तते णं से सेणिए राया अप्पणो अदूरसामंते उत्तरपुरच्छिमे दिसिभागे अट्ठ भद्दासणाइं सेयवत्थ-पच्चुत्थुयातिं सिद्धत्थ-मंगलोवयार-कत-संतिकम्माइं रयावेइ रयावित्ता णाणामणि-रयणमंडियं अहिय-पेच्छणिज्जरूवं महग्घ-वरपट्टणुग्गयं सण्ह-बहुभत्ति-सयचित्तट्ठाणं ईहामिय-उसभ-तुरय-णर-मगर-विहग-वालग-किंनर-रुरु-सरभ--चमर--कुंजर-वणलय—पउमलय--भत्तिचित्तं सुखचिय-वरकणग-पवरपेरंत-देसभागं अब्भिंतरियं जवणियं अंछावेइ अंछा-वइत्ता अ च्छरग-मउअ-मसूरग-उच्छइयं धवलवत्थ पच्चत्थुयं विसिट्ठं अंगसुहफा-सयं सुमउयं धारिणीए देवीए भद्दासणं रयावेइ रयावइत्ता कोडुंबियपुरिसे सद्दा-

वेइ सद्दावेत्ता एवं वदासी-खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया ! अट्ठंग-महानिमित्त-सुत्तत्थपाढए विविहसत्थकुसले सुमिणपाढए सद्दावेह सद्दावइत्ता एयमाणत्तियं खिप्पामेव पच्चप्पिणह २। तते णं ते कोडुंबियपुरिसा सेणिएणं रन्ना एवं वुत्ता समाणा हट्ठ जाव हियया करयलपरिग्गहियं दसनहं सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं कट्टु एवं देवो तहत्ति आणाए विणएणं वयणं पडिसुणेंति २ सेणियस्स रन्नो अंतियाओ पडिनिक्खमंति २ रायगिहस्स नगरस्स मज्झंमज्झेणं जेणेव सुमिणपाढगगिहाणि तेणेव उवागच्छंति उवागच्छित्ता सुमिणपाढए सद्दावेंति ३। तते णं ते सुमिणपाढगा सेणियस्स रन्नो कोडुंबियपुरिसेहिं सद्दाविया समाणा हट्ठ २ जाव हियया राहाया कयबलिकम्मा जाव पायच्छित्ता अप्पमहग्घाभरणालंकियसरीरा हरियालिय-सिद्धत्थय-कय-मुद्धाणा (सिद्धत्थय-हरियालिया-कयमंगल-मुद्धाणा) सतेहिं सतेहिं गिहेहिंतो पडिनिक्खमंति २ रायगिहस्स नगरस्स मज्झंमज्झेणं जेणेव सेणियस्स रन्नो भवणवडेंसग-दुवारे तेणेव उवागच्छंति २ एगतओ मिलयंति २ सेणियस्स रन्नो भवणवडेंस-गदुवारेणं अणुपविसंति अणुपविसित्ता जेणेव बाहिरिया उवट्ठाणसाला जेणेव सेणिए राया तेणेव उवागच्छंति उवागच्छित्ता सेणियं रायं जएणं विजएणं वद्धावेंति, सेणिएणं रन्ना अच्चिय वंदिय पूतिय माणिय सक्कारिया सम्माणिया समाणा पत्तेयं २ पुव्वन्नत्थेसु भद्दासणेसु निसीयंति ४। तते णं सेणिए राया जवणियंतरियं धारणीं देवीं ठवेइ ठवेत्ता पुप्फफलपडिपुण्णहत्थे परेणं विणएणं ते सुमिणपाढए एवं वदासी—एवं खलु देवाणुप्पिया ! धारिणीदेवी अज्ज तंसि तारिसयंसि सयणिज्जंसि जाव महासुमिणं पासित्ता णं पडिबुद्धा, तं एयस्स णं देवाणुप्पिया ! उरालस्स जाव सस्सिरीयस्स महासुमिणस्स के मन्ने कल्लाणे फलवित्तिविसेसे भविस्सति ५। तते णं ते सुमिणपाढगा सेणियस्स रन्नो अंतिए एयमट्ठं सोच्चा णिसम्म हट्ठ जाव हियया तं सुमिणं सम्मं ओगिण्हंति २ ईहं अणुपवि-

संति २ अन्नमन्नेण सद्धिं संचालेंति संचालित्ता तस्स सुमिणस्स लद्धट्ठा गहियट्ठा पुच्छियट्ठा विणिच्छियट्ठा अभिगयट्ठा सेणियस्स रन्नो पुरओ सुमिणसत्थाइं उच्चारेमाणा २ एवं वदासी—एवं खलु अम्हं सामी ! सुमिणसत्थंसि बायालीसं सुमिणा तीसं महासुमिणा बावत्तरिं सव्वसुमिणा दिट्ठा, तत्थ णं सामी ! अरिहंतमायरो वा चक्कवट्टिमातरो वा अरहंतंसि वा चक्कवट्टिंसि वा गब्भं वक्कममाणंसि एएसिं तीसाए महासुमिणाणं इमे चोद्दस महासुमिणे पासित्ताणं पडिबुज्झंति, तंजहा—गय-उसभ-सीह-अभिसेय-दाम-ससि-दिणयरं झयं कुंभं। पउमसर-सागर-विमाण-भवण-रयणुच्चय सिहिं च ॥ १ ॥ वासुदेवमातरो वासुदेवंसि गब्भं वक्कममाणंसि एएसिं चोद्दसण्हं महासुमिणाणं अन्नतरे सत्त महासुमिणे पासित्ता णं पडिबुज्झंति, बलदेवमातरो वा बलदेवंसि गब्भं वक्कममाणंसि एएसि चोद्दसण्हं महासुमिणाणं अण्णतरे चत्तारि महासुविणे पासित्ताणं पडिबुज्झंति, मंडलियमायरो वा मंडलियंसि गब्भं वक्कममाणंसि एएसिं चोद्दसण्हं महासुमिणाणं अन्नतरं एगं महासुमिणं पासित्ताणं पडिबुज्झंति, इमे य णं सामी ! धारणीए देवीए एगे महासुमिणे दिट्ठे, तं उराले णं सामी ! धारणीए देवीए सुमिणे दिट्ठे, जाव आरोग्गतुट्ठि-दीहाउ-कल्लाण-मंगल्लकारए णं सामी ! धारिणीए देवीए सुमिणे दिट्ठे, अत्थलाभो सामी ! सोक्खलाभो सामी ! भोगलाभो सामी ! पुत्तलाभो सामी रज्जलाभो ! एवं खलु सामी ! धारिणीदेवी नवण्हं मासाणं बहुपडिपुन्नाणं जाव दारगं पयाहिसि, सेवि य णं दारए उम्मुक्कबालभावे विन्नाय(ण)परिणयमित्ते जोव्वणगमणुपत्ते सूरे वीरे विक्कंते विच्छिन्न-विउल-बलवाहणे रज्जवती राया भविस्सइ अणगारे वा भावियप्पा, तं उराले णं सामी ! धारिणीए देवीए सुमिणे दिट्ठे जाव आरोग्गतुट्ठि जाव दिट्ठेत्ति कट्टु भुज्जो २ अणुवूहेंति ६ । तते णं सेणिए राया तेसिं सुमिणपाढगाणं अंतेए एयमट्ठं सोच्चा णिसम्म हट्ठ जाव हियए

करयल जाव एवं वदासी-एवमेयं देवाणुप्पिया ! जाव जन्नं तुब्भे वदह-त्तिकट्टु तं सुमिणं सम्मं पडिच्छति २ ते सुमिणपाढए विपुलेणं असण-पाण-खाइमसाइमेणं वत्थगंध-मल्लालंकारेण य सक्कारेति सम्माणेति २ विपुलं जीवियारिहं पीतिदाणं दलयति २ पडिविसज्जेइ ७। तते णं से सेणिए राया सीहासणाओ अब्भुट्ठेति २ जेणेव धारिणी देवी तेणेव उवागच्छइ उवागच्छइत्ता धारिणीदेवीं एवं वदासी—एवं खलु देवाणु-प्पिए ! सुमिणसत्थंसि बायालीसं सुमिणा जाव एगं महासुमिणं जाव भुज्जो २ अणुवूहति, तते णं धारिणीदेवी सेणियस्स रन्नो अंतिए एयमट्ठं सोच्चा णिसम्म हट्ठ जाव हियया तं सुमिणं सम्मं पडिच्छति २ जेणेव सए वासघरे तेणेव उवागच्छति २ ण्हाया कयबलिकम्मा जाव विपुलाहिं जाव विहरति ८ ॥ सूत्रं १२ ॥

तते णं तीसे धारिणीए देवीए दोसु मासेसु वीतिक्कंतेसु ततिए मासे वट्टमाणे तस्स गब्भस्स दोहलकालसमयंसि अयमेयारूवे अकालमेहेसु दोहले पाउब्भ-वित्था-धन्नाओ णं ताओ अम्मयाओ सपुन्नाओ णं ताओ अम्मयाओ कयत्थाओ णं ताओ कयपुन्नाओ कयलक्खणाओ कयविहवाओ सुलद्धे णं तासिं माणुस्सए जम्मजीवियफले जाओ णं मेहेसु अब्भुग्गतेसु अब्भुज्जुएसु अब्भुन्नतेसु अब्भुट्ठिएसु सगज्जिएसु सविज्जुएसु सफुसिएसु सथणिएसु धंतधोत-रुप्पपट्ट-अंकसंख-चंदकुंद-सालि-पिट्ठरासि-समप्पभेसु चिउर-हरियाल-भेय-चंपग-सण (कवण)-कोरंट-सरिसय(ग)-पउमरय-समप्पभेसु लक्खारस--सरसरत्त--किंसुय-जासुमण-रत्तबंधुजीवग--जाति-हिंगुलय-सरसकुंकुम--उरब्भससरुहिर-इंदगोवग-समप्पभेसु बरहिण-नीलगुलिय -सुगचासपिच्छ-भिंगपत्त-मास(स)ग--नीलुप्पल-नियर-नवसिरीस-कुसुम-णव-सद्दल-समप्पभेसु जच्चंजण-भिंगभेय-रिट्ठग-भमरा-वलि-गवल-गुलिय-कज्जल-समप्पभेसु फुरंत-विज्जुतसगज्जिएसु वायवस-विपुल-गगण-चवल-परिसक्किरेसु निम्मल-वरवारिधारा-पगलिय-पयंडमारुय-समाहय-

समोत्थरंत-उवरिउवरि(मयय)तुरियवासं पवासिएसु धारापहकर-णिवाय-निव्वाविय मेइणितले हरियगणकंचुए पल्लविय पायवगणेसु वल्लिवियाणेसु पत्थरिएसु उन्नएसु सोभग्गमुवागएसु (नगेसु नएसु वा) वेभारगिरिप्पवाय-तडकडगविमुक्केसु उज्झरेसु तुरिय पहाविय-पलोट्ट-फेणाउलं सकलुसं जलं वहंतीसु गिरिनदीसु सज्जज्जुण-नीव-कुडय-कंदल-सिलिंध-कलिएसु उववणेसु मेहरसिय-हट्ठतुट्ठचिट्ठिय हरिसवस-पमुक्ककंठकेकारवं मुयंतेसु बरहिणेसु उउव-समय-जणिय-तरुण-सहयरि-पणच्चितेसु नवसुरभि-सिलिंध-कुडय-कंदल-कलंबगं-धद्धणिं मुयंतेसु उववणेसु परहुय-रुयरिभित-संकुलेसु उद्दायंत-रत्तइंदगोव-य-थोवय-कारुन्नविलवितेसु ओणायतणमंडिएसु दद्दुरपयंपिएसु संपिंडिय-दरिय-भमर महुकरि-पहकर-परिलिंत-मत्तछप्पय--कुसुमासवलोल-मधुरगुंजंतदेसभाएसु उववणेसु परिसा(ज्झा, भा)मिय-चंदसूर गहगण-पणट्ठ-नक्खत्ततारगपहे इंदाउह-बद्धचिंधपट्टंसि अंबरतले उड्डीण-बलाग-पंतिसोभंत-पंतिसाभंत-मेहविंदे कारं-डग-चक्कवाय-कलहंस-उस्सुयकरे संपत्ते पाउसंमि काले ण्हाया कयबलिकम्मा कयकोउय-मंगलपायच्छित्ताओ किं ते वरपायपत्तणेउर-मणिमेहलहार-रइय-(उचिय)कडग-खुड्डय-विचित्त-वरवलय-थंभियभुयाओ कुंडल-उज्जोवियाणणाओ (कुंडलोज्जोतिताननाा वरपायपत्त-नेउर--मणि--मेहला- हाररइय--उचियकडग-खुड्डय--एगावलिकंठमुरय--तिसरय--वरवलय-हेमसुत्त--कुंडलु--ज्जोवियाणणाओ) रयणभूसियंगाओ नासानीसास-वायवोज्झं चक्खुहरं वण्णफरिस-संजुत्तं हयला-लापेलवाइरेयं धवल-कणय-खचियन्त-कम्मं आगासफलिह-सरिसप्पभं अंसुयं पवर परिहियाओ दुगूल-सुकुमाल-उत्तरिज्जाओ सव्वोउय-सुरभिकुसुम-पवरमल्ल-सोभितसिराओ (सुरइय-पलंबमाण-सोहमाण-कंतविकसंत-चित्तमालाओ) काला-गरू धूवधूवियाओ सिरिसमाणवेसाओ सेयणय-गंधहत्थिरयणं दुरूढाओ समाणीओ सकोरिंटमल्लदामेणं छत्तेणं धरिज्जमाणेणं चंदप्पभ-वइर-वेरुलिय-विमलदंड-संख-कुंद--दगरय--अमयमहिय-फेणपुंज -सन्निगास--चउचामरवाल-वी-

जितंगीओ (सेयवरचामरेहिं उद्धुव्वमाणीहिं २,) सेणिएणं रन्ना सद्धिं हत्थिखंधवरगएणं पिट्ठओ समणुगच्छमाणीओ चाउरंगिणीए सेणाए महता हयाणीएणं गयाणीएणं रहाणीएणं पायत्ताणीएणं सव्वड्ढीए सव्वजुइए जाव निग्घोसणादियरवेणं रायगिहं नगरं सिंघाडग-तियचउक्क-चच्चर-चउम्मुह-महापह-पहेसु आसित्तसित्त-सुचिय-संमज्जिओवलित्तं जाव सुगंधवरगंधियं गंधवट्टीभूयं अवलोएमाणीओ नागरजणेणं अभिणंदिज्जमाणीओ गुच्छ-लया-रुक्खगुम्म-वल्लि-गुच्छ-ओच्छाइयं सुरम्मं वेभारगिरि-कडग-पायमूलं सव्वओ समंता (ओलोएमाणीओ २,) आहिंडेमाणीओ २ दोहलं विणियंति, तं जइ णं अहमवि मेहसु अब्भुवगएसु जाव दोहलं विणिज्जामि ॥ सूत्रं १३ ॥ तए णं सा धारिणी देवी तंसि दोहलंसि अविणिज्जमाणंमि असंपन्नदोहला असंपुन्नदोहला असंमाणियदोहला सुक्का भुक्खा णिम्मंसा ओलुग्गा ओलुग्गसरीरा पमइलदुब्बला किलंता ओमंथिय-वयणनयणकमला पंडुइयमुही करयलमलियव्व चंपगमाला णित्तेया दीणविवण्णवयणा जहोचिय-पुप्फगंध-मल्लालंकारहारं अणभिलसमाणी कीडारमणकिरियं च परिहावेमाणी दीणा दुम्मणा निराणंदा भूमिगयदिट्ठीया ओहयमणसंकप्पा जाव झियायइ १ । तते णं तीसे धारिणीए देवीए अंगपडियारियाओ अब्भितरियाओ दासचेडीयाओ धारिणीं देवीं ओलुग्गं जाव झियायमाणिं पासंति पासित्ता एवं वदासी-किण्णं तुमे देवाणुप्पिए ! ओलुग्गा ओलुग्गसरीरा जाव झियायसि ? २ । तते णं सा धारणी देवी ताहिं अंगपडियारियाहिं अब्भितरियाहिं दासचेडियाहिं एवं वुत्ता समाणी (ताओ चेडीओ) नो आढाति णो य परियाणाति अणाढायमाणी अपरियाणमाणी तुसिणिया संचिट्ठति ३ । तते णं ताओ अंगपडियारियाओ अब्भितरियाओ दासचेडियाओ धारिणीं देवीं दोच्चंपि तच्चंमि एवं वयासी-किन्नं तुमे देवाणुप्पिए ! ओलुग्गा ओलुग्गसरीरा

जाव झियायसि ? ४ । तते णं सा धारिणीदेवी ताहिं अंगपडियारियाहिं अब्भिंतरियाहिं दासचेडियाहिं दोच्चंपि तच्चंपि एवं वुत्ता समाणी णो आदाति णो परियाणाति अणाढायमाणा अपरियायमणा तुसिणिया संचिट्ठति ५ । तते णं ताओ अंगपडियारियाओ दासचेडियाओ धारिणीए देवीए अणाढातिज्जमाणीओ अपरिजाणिज्जमाणिओ तहेव संभंताओ समाणीओ धारणीए देवीए अंतियाओ पडिनिक्खमंति २ जेणेव सेणिए राया तेणेव उवागच्छंति २ करतलपरिग्गहियं जाव कट्टु जएणं विजएणं वद्धावेंति वद्धावइत्ता एवं वदासी-एवं खलु सामी ! किंपि अज्ज धारिणीदेवी ओलुग्गा ओलुग्गसरीरा जाव अट्टज्झाणोवगया झियायति ६ । तते णं से सेणिए राया तासिं अंगपाडियारियाणं अंतिए एयमट्ठं सोचा णिसम्म तहेव संभंते समाणे सिग्घं तुरियं चवलं वेइयं जेणेव धारिणीदेवी तणेव (पहारेत्थगमणाए) उवागच्छइ उवागच्छइत्ता धारणीं देवीं ओलुग्गं ओलुग्गसरीरं जाव अट्टज्झाणोवगयं झियायमाणिं पासइ पासित्ता एवं वदासी-किन्नं तुमे देव णुप्पिए ! ओलुग्गा ओलुग्गसरीरा जाव अट्टज्झाणोवगया झियायसि ? ७ । तते णं सा धारणी देवी सेणिएणं रन्ना एवं वुत्ता समाणी नो आढाइ जाव तुसिणीया संचिट्ठति ८ । तते णं से सेणिए राया धारिणीं देवीं दोच्चंपि तच्चंपि एवं वदासी-किन्नं तुमे देवाणुप्पिए ! ओलुग्गा जाव झियायसि ? ९ । तते णं सा धारिणीदेवी सेणिएणं रन्ना दोच्चंपि तच्चंपि एवं वुत्ता समाणी णो आढाति णो परिजाणाति तुसिणीया संचिट्ठइ १० । तते णं सेणिए राया धारणिं देविं सवहसावियं करेइ २ त्ता एवं वयासी-किण्णं (किराहं किराणं) तुमं देवाणुप्पिए ! अहमेयस्स अट्ठस्स अणरिहे सवणायाए, ता णं तुमं ममं अयमेयारूवं मणोमाणसियं दुक्खं रहस्सी करेसि ? ११ । तते णं सा धारिणीदेवी सेणिएणं रन्ना सवहसाविया समाणी सेणियं रायं एवं वदासी-एवं खलु सामी ! मम तस्स उरालस्स जाव महासुमिणस्स तिराहं

मासाणं बहुपडिपुन्नाणं अयमेयारूवे अकालमेहेसु दोहले पाउब्भूए-धन्नाओ णं ताओ अम्मयाओ कयत्थाओ णं ताओ अम्मयाओ जाव वेभारगिरिपायमूलं आहिंडमाणीओ डोहलं विणिंति, तं जइ णं अहमवि जाव डोहलं विणिज्जामि, तते णं हं सामी ! अयमेयारूवंसि अकालदोहलंसि अविणिज्जमाणंसि ओलुग्गा जाव अट्टज्झाणोवगया झियायामि, एएणं अहं कारणेणं सामी ! ओलुग्गा जाव अट्टज्झाणोवगया झियायामि १२ । तते णं से सेणिए राया धारिणीए देवीए अंतिए एयमट्ठं सोचा णिसम्म धारिणिं देविं एवं वदासी –मा णं तुमं देवाणुप्पिए ! ओलुग्गा जाव झियाहि, अहं णं तहा जत्तिहामि (करिस्सामि) जहा णं तुब्भं अयमेयारूवस्स अकालदोहलस्स मणोरहसंपत्ती भविस्सइत्तिकट्टु धारिणीं देवीं इट्ठाहिं कंताहिं पियाहिं मणुन्नाहिं मणामाहिं वग्गूहिं समासासेइ २ जेणेव बाहिरिया उवट्ठाणसाला तेणामेव उवागच्छइ उवागच्छइत्ता सीहासणवरगते पुरत्थाभिमुहे सन्निसन्ने धारिणीए देवीए एयं अकालदोहलं बहूहिं आएहि य उवाएहि य उप्पत्तियाहि य वेणइयाहि य कम्मियाहि य परिणामियाहि य चउव्विहाहिं बुद्धीहिं अणुचिंतेमाणे २ तस्स दोहलस्स आयं वा उवायं वा ठिइं वा कमं वा (उप्पत्तिं वा) अविंदमाणे ओहयमणसंकप्पे जाव झियायति १३ ॥ सूत्रं १४ ॥ तदाणंतरं अभए कुमारे ण्हाते कयबलिकम्मे जाव सव्वालंकारविभूसिए पायवंदते पहारेत्थ गमणाए १ । तते णं से अभयकुमारे जेणेव सेणिए राया तेणेव उवागच्छइ उवागच्छइत्ता सेणियं ओहयमणसंकप्पं (झियायमाणं) जाव पासइ २ त्ता अयमेयारूवे अब्भत्थिए चिंतिए पत्थिए मणोगते संकप्पे समुप्पज्जित्था-अन्नया य ममं सेणिए राया एज्जमाणं पासति पासइत्ता आढाति परिजाणाति सक्कारेइ सम्माणेइ आलवति संलवति अद्धासणेणं उवणिमंतेति मत्थयंसि अग्घाति, इयाणिं ममं सेणिए राया णो आढाति णो परियाणइ णो सक्कारेइ णो सम्माणेइ णो इट्ठाहिं कंताहिं

पियाहिं मणुन्नाहिं (मणामाहिं) ओरालाहिं वग्गूहिं आलवति संलवति नो अद्धासणेणं उवणिमंतेति णो मत्थयंसि अग्घाति य, किंपि ओहयमणसंकप्पे झियायति, तं भवियव्वं णं एत्थ कारणेणं, तं सेयं खलु मे सेणियं रायं एयमट्ठं पुच्छित्तए, एवं संपेहेइ २ जेणामेव सेणिए राया तेणामेव उवागच्छइ २ करयलपरिग्गहियं सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं कट्टु जएणं विजएणं वद्धावेइ वद्धावइत्ता एवं वदासी-तुब्भे णं ताओ ! अन्नया मम एज्जमाणं पासित्ता आढाह परिजाणह जाव मत्थयंसि अग्घायह आसणेणं उवणिमंतेह, इयाणिं ताओ ! तुब्भे ममं नो आढाह जाव नो आसणेणं उवणिमंतेह किंपि ओहयमणसंकप्पा जाव झियायह, तं भवियव्वं ताओ ! एत्थ कारणेणं, तओ तुब्भे मम ताओ ! एयं कारणं अगूहेमाणा असंकेमाणा अनिण्हवेमाणा अप्पच्छाएमाणा जहाभूतमवितहमसंदिद्धं एयमट्ठमाइक्खह, तते णं हं तस्स कारणस्स अंतगमणं गमिस्सामि २ । तते णं से सेणिए राया अभएणं कुमारेणं एवं वुत्ते समाणे अभयकुमारं एवं वदासी—एवं खलु पुत्ता ! तव चुल्लमाउयाए धारिणीए देवीए तस्स गब्भस्स दोसु मासेसु अइक्कंतेसु तइयमासे वट्टमाणे दोहलकालसमयंसि अयमेयारूवे दोहले पाउब्भवित्था-धन्नाओ णं ताओ अम्मयाओ तहेव निरवसेसं भाणियव्वं जाव विणिति, तते णं अहं पुत्ता धारिणीए देवीए तस्स अकालदोहलस्स बहूहिं आएहि य उवाएहिं जाव उप्पत्तिं अविंदमाणे ओहयमणसंकप्पे जाव झियायामि, तुमं आगयंपि न याणामि, तं एतेणं कारणेणं अहं पुत्ता ! ओहय जाव झियामि ३ । तते णं से अभयकुमारे सेणियस्स रन्नो अंतिए एयमट्ठं सोच्चा णिसम्म हट्ठ जाव हियए सेणियं रायं एवं वदासी—मा णं तुब्भे ताओ ! ओहयमणा जाव झियायह, अहण्णं तहा करिस्सामि जहा णं मम चुल्लमाउयाए धारिणीए देवीए अयमेयारूवस्स अकालडोहलस्स मणोरहसंपत्ती भविस्सइत्तिकट्टु

सेणियं रायं ताहिं इट्ठाहिं कंताहिं जाव समासासेइ ४। तते णं सेणिए राया अभयेणं कुमारेणं एवं वुत्ते समाणे हट्ठतुट्ठे जाव अभयकुमारं सक्कारेति संमाणेति २ पडिविसज्जेति ५॥ सूत्रं १५॥

तते णं से अभयकुमारे सक्कारियसम्माणिए पडिविसज्जिए समाणे सेणियस्स रन्नो अंतियाओ पडिनिक्खमइ २ जेणामेव सए भवणे तेणामेव उवागच्छति २ सीहासणे निसन्ने १। तते णं तस्स अभयकुमारस्स अयमेयारूवे अब्भत्थिए जाव समुप्पज्जित्था—नो खलु सक्का माणुस्सएणं उवाएणं मम चुल्लमाउयाए धारिणीए देवीए अकालडोहलमणोरहसंपत्तिं करेत्तए णन्नत्थ दिव्वेणं उवाएणं, अत्थि णं मज्झ सोहम्मकप्पवासी पुव्वसंगतिए देवे महिड्ढीए जाव महासोक्खे, तं सेयं खलु मम पोसहसालाए पोसहियस्स बंभचारिस्स उम्मुक्क-मणिसुवन्नस्स ववगय-मालावन्नग-विलेवणस्स निक्खित्त-सत्थमुसलस्स एगस्स अबीयस्स दब्भसंथारोवगयस्स अट्ठमभत्तं परिगिण्हित्ता पुव्वसंगतियं देवं मणसि करेमाणस्स विहरित्तए, तते णं पुव्वसंगतिए देवे मम चुल्लमाउयाए धारिणीए देवीए अयमेयारूवे अकालमेहेसु डोहलं विणेहिति २। एवं संपेहेति २ जेणेव पोसहसाला तेणामेव उवागच्छति २ पोसहसालं पमज्जति २ उच्चारपासवणभूमिं पडिलेहेइ २ दब्भसंथारगं पडिलेहेइ २ डब्भसंथारगं दुरूहइ २ अट्ठमभत्तं परिगिण्हइ २ पोसहसालाए पोसहिए बंभयारी जाव पुव्वसंगतियं देवं मणसि करेमाणे २ चिट्ठइ ४। तते णं तस्स अभयकुमारस्स अट्ठमभत्ते परिणममाणे पुव्वसंगतिअस्स देवस्स आसणं चलति, तते णं पुव्वसंगतिए सोहम्मकप्पवासी देवे आसणं चलियं पासति २ ओहिं पउंजति ५। तते णं तस्स पुव्वसंगतियस्स देवस्स अयमेयारूवे अब्भत्थिए जाव समुप्पज्जित्था—एवं खलु मम पुव्वसंगतिए जंबूद्दीवे २ भारहे वासे दाहिणड्ढभरहे वासे रायगिहे नयरे पोसहसालाए पोसहिए अभए नामं कुमारे अट्ठमभत्तं

परिगिरिहित्ता णं मम मणसि करमाणे २ चिट्ठति, तं सेयं खलु मम अभयस्स कुमारस्स अंतिए पाउब्भवित्तए ६। एवं संपेहेइ २ उत्तरपुरच्छिमं दिसीभागं अवक्कमति २ वेउव्वियसमुग्घाएणं समोहणति २ संखेज्जाइं जोयणाइं दंडं निसिरति, तंजहा—रयणाणं १ वइराणं २ वेरुलियाणं ३ लोहियक्खाणं ४ मसारगल्लाणं ५ हंसगब्भाणं ६ पुलगाणं ७ सोगंधियाणं ८ जोइरसाणं ९ अंकाणं १० अंजणाणं ११ रयणाणं १२ जायरूवाणं १३ अंजणपुलगाणं १४ फलिहाणं १५ रिट्ठाणं १६, अहाबायरे पोग्गले परिसाडेइ २ अहासुहुमे पोग्गले परिगिण्हति परिगिण्हइत्ता अभयकुमार-मणुकंपमाणे देवे पुव्वभवजणियनेह-पीइबहुमाण-जायसोगे(जणियसोहे) तओ विमाणवरपुंडरीयाओ रयणुत्तमाओ धरणियल-गमणतुरित-संजणित-गमणपयारो वाघुण्णित-विमल-कणग-पयरग-वडिंसग(पकंपमाण-चललोल-ललियपरिलंबमाण-नरमगर--तुरग-मुहसय- विणिग्गिगन्नपवरमोत्तिय-विरायमाण)मउडुक्कडाडोव-दंसणिज्जो अणेगमणि-कणग-रतण-पहकरपरिमंडित(भाग)भत्तिचित्त- विणिउत्त--गमणगुण-जणियहरिसे (जणिय-)पेंखोलमाण-वरललित-कुंडलुज्जलिय-अहियआभरण-(वयणगुण)-जनितसोभे गगनजलमलविमल-दंसणविरायमाण-रूवे उदितोविव कोमुदीनिसाए सणिच्छरंगार-उज्जलिय मज्झभागत्थे णयणाणंदो सरयचंदो दिव्वो सहि-पज्जलुज्जलियदंसणाभिरामो उउ-लच्छि-समत्त-जायसोहे पइट्ठगंधुद्धुयाभिरामो मेरुरिव नगवरो विगुव्वियविचित्तवेसे दीवसमुद्दाणं असंखपरिमाण-नामधेज्जाणं मज्झंकारेणं वीइवयमाणो उज्जोयंतो पभाए विमलाते जीवलोगं रायगिहं पुरवरं च अभयस्स य तस्स पासं उवयति दिव्वरूवधारी ७॥ सूत्रं १६॥

ततेणं से देवे अंतलिक्खपडिवन्ने दसद्धवन्नाइं सखिंखिणियाइं पवरवत्थाइं परिहिए, एक्को ताव एसो गमो १। अण्णोऽवि गमो—ताए उक्किट्ठाए तुरियाए चवलाए चंडाए सीहाए उद्धुयाए जतिणाए छेयाए दिव्वाए

देवगतीए जेणामेव जंबुद्दीवे २ भारहे वासे जेणामेव दाहिणड्ढभरहे रायगिहे नगरे पोसहसालाए अभयए कुमारे तेणामेव उवागच्छइ २ अंतरिक्खपडिवन्ने दसद्धवन्नाइं सखिंखिणियाइं पवरवत्थाइं परिहिए अभयं कुमारं एवं वयासी—अहन्नं देवाणुप्पिया ! पुव्वसंगतिए सोहम्मकप्पवासी देवे महड्ढिए जणणं तुमं पोसहसालाए अट्ठमभत्तं पगिण्हित्ता णं ममं मणसि करेमाणे चिट्ठसि तं एस णं देवाणुप्पिया ! अहं इहं हव्वमागए, संदिसाहि णं देवाणुप्पिया ! किं करेमि किं दलामि किं पयच्छामि किं वा ते हियइच्छितं ? २ । तते णं से अभए कुमारे तं पुव्वसंगतियं देवं अंतलिक्खपडिवन्नं पासइ पासित्ता हट्ठतुट्ठे पोसहं पारेइ २ करयलपरिग्गहियं जाव अंजलिं कट्टु एवं वयासी—एवं खलु देवाणुप्पिया ! मम चुल्लमाउयाए धारिणीए देवीए अयमेयारूवे अकालडोहले पाउब्भूते—धन्नाओ णं ताओ अम्मयाओ तहेव पुव्वगमेणं जाव विणिज्जामि, तन्नं तुमं देवाणुप्पिया ! मम चुल्लमाउयाए धारिणीए देवीए अयमेयारूवं अकालडोहलं विणेहि ३ । तते णं से देवे अभएणं कुमारेणं एवं वुत्ते समाणे हट्ठतुट्ठे अभयकुमारं एवं वदासी—तुमणं देवाणुप्पिया ! सुणिव्वुयवीसत्थे अच्छाहि, अहणं तव चुल्लमाउयाए धारिणीए देवीए अयमेयारूवं डोहलं विणेमीतिकट्टु अभयस्स कुमारस्स अंतियाओ पडिणिक्खमति २ उत्तरपुरच्छिमे णं वेभारपव्वए वेउव्वियसमुग्घाएणं समोहणणाति २ संखेज्जाइं जोयणाइं दंडं निस्सरति जाव दोच्चंपि वेउव्वियसमुग्घाएणं समोहणणाति २ खिप्पामेव सगज्जतियं सविज्जुयं सफुसियं तं पंचवन्न-मेहणिणाओव-सोहियं दिव्वं पाउससिरिं विउव्वेइ २ जेणेव अभए कुमारे तेणामेव उवागच्छइ २ अभयं कुमारं एवं वदासी—एवं खलु देवाणुप्पिया ! मए तव पियट्ठयाए सगज्जिया सफुसिया सविज्जुया दिव्वा पाउससिरी विउव्विया, तं विणेउ णं देवाणुप्पिया ! तव चुल्लमाउया धारिणीदेवी अयमेयारूवं अकालडोहलं ४ । तते णं से अभयकुमारे तस्स पुव्वसंगति-

यस्स देवस्स सोहम्मकप्पवासिस्स अंतिए एयमट्ठं सोचा णिसम्म हट्ठतुट्ठे सयातो भवणाओ पडिनिक्खमति २ जेणामेव सेणिए राया तेणामेव उवागच्छति करयल जाव अंजलिं कट्टु एवं वदासी–एवं खलु ताओ ! मम पुव्वसंगतिएणं सोहम्मकप्पवासिणा देवेणं खिप्पामेव सगज्जिता सविज्जुता पंचवन्न मेहनिनाओव-सोभिता दिव्वा पाउससिरी विउव्विया, तं विणेउ णं मम चुल्लमाउया धारिणी देवी अकालदोहलं ५। तते णं सेणिए राया अभयस्स कुमारस्स अंतिए एतमट्ठं सोचा णिसम्म हट्ठतुट्ठे जाव कोडुंबिय-पुरिसे सद्दावेति सद्दावइत्ता एवं वदासी–खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया ! रायगिहं नयरं सिंघाडग-तिय-चउक्क-चच्चर-चउमुह-महापह-पहेसु आसित्तोसित्त-विपुलवट्ट-वग्घारिय-मल्लदामकलावं जाव सुगंधवरगंधियं गंधवट्टिभूयं करेह य २ मम एतमाणत्तियं पच्चप्पिणह, तते णं ते कोडुंबियपुरिसा जाव पच्चप्पिणंति ६। तते णं से सेणिए राया दोच्चंपि कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ २ एवं वदासी–खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया ! हयगयरह-जोह-पवरकलितं चाउरंगिणिं सेन्नं सन्नाहेह सेयणयं च गंधहत्थिं परिकप्पेह, तेवि तहेव जाव पच्चप्पिणंति ७। तते णं से सेणिए राया जेणेव धारिणीदेवी तेणामेव उवागच्छति २ धारिणीं देवीं एवं वदासी–एवं खलु देवाणुप्पिए। सगज्जिया जाव पाउससिरी पाउब्भूता तसणं तुमं देवाणुप्पिए ! एयं अकालदोहलं विणेहि ८। तते णं सा धारिणीदेवी सेणिएणं रन्ना एवं वुत्ता समाणी हट्ठतुट्ठा जेणामेव मज्जणघरे तेणेव उवागच्छति २ मज्जणघरं अणुपविसति २ अंतो अंतेउरंसि ण्हाता कतबलिकम्मा कतकोउय-मंगल-पायच्छित्ता, किं ते वरपायपत्तणेउर जाव *आगासफालियसमप्पभं अंसुयं नियत्था सेयणयं* गंधहत्थिं दूरूढा समाणी अमयमहिय-फेणपुंज-सण्णिगासाहिं सेयचामर-वालवीयणीहिं वीइज्जमाणी २ संपत्थिता ९। तते णं से सेणिए राया ण्हाए कयबलिकम्मे जाव सस्सिरीए हत्थिखंधवरगए सकोरंटमल्लदामेणं

छत्तेणं धरिज्जमाणेणं चउचामराहिं वीइज्जमाणेणं धारिणीदेवीं पिट्ठतो अणुगच्छति १० । तते णं सा धारिणीदेवी सेणिएणं रन्ना हत्थिखंधवरगएणं पिट्ठतो पिट्ठतो समणुगम्ममाणमग्गा हयगय-रहजोह-कलियाए चाउरंगिणीए सेणाए सद्धिं संपरिवुए महता भडचडगरवंदपरिक्खित्ता सव्विड्ढीए सव्वजुइए जाव दुंदुभि-निग्घोस-नादितरवेणं रायगिहे नगरे सिंघाडगतिगचउक्कचच्चर जाव महापहेसु नागरजणेणं अभिनंदिज्जमाणा २ जेणामेव वेभारगिरिपव्वए तेणामेव उवागच्छति २ वेभारगिरि-कडग-तडपायमूले आरामेसु य उज्जाणेसु य काणणेसु य वणेसु वणसंडेसु य रुक्खेसु य गुच्छेसु य गुम्मेसु य लयासु य वल्लीसु य कंदरासु य दरीसु य चुण्ढीसु य दहेसु य कच्छेसु य नदीसु य संगमेसु य विवरतेसु य अच्छमाणी य पेच्छमाणी य मज्जमाणी य पत्ताणि य पुप्फाणि य फलाणि य पल्लवाणि य गिण्हमाणी य माणेमाणी य अग्घायमाणी य परिभुंजमाणी य परिभाएमाणी य वेभारगिरिपायमूले दोहलं विणेमाणी सव्वतो समंता आहिंडति ११ । तते णं धारिणी देवी विणीतदोहला संपुन्नदोहला संपन्नडोहला जाया यावि होत्था १२ । तते णं से धारिणीदेवी सेयणयगंधहत्थिं दूरूढा समाणी सेणिएणं हत्थिखंधवरगएणं पिट्ठओ २ समणुगम्ममाणमग्गा हयगय जाव रहेणं जेणेव रायगिहे नगरे तेणेव उवागच्छइ २ रायगिहं नगरं मज्झंमज्झेणं जेणामेव सए भवणे तेणामेव उवागच्छति २ त्ता विउलाइं माणुस्साइं भोगभोगाइं जाव विहरति १३ ॥ सूत्रं १७ ॥ तते णं से अभए कुमारे जेणामेव पोसहसाला तेणामेव उवागच्छइ २ पुव्वसंगतियं देवं सक्कारेइ सम्माणेइ २ पडिविसज्जेति २, तते णं से देवे सगज्जियं पंचवन्नं मेहोवसोहियं दिव्वं पाउससिरिं पडिसाहरति २ जामेव दिसिं पाउब्भूए तामेव दिसिं पडिगते ॥ सूत्रं १८ ॥ तते णं सा धारिणीदेवी तंसि अकालदोहलंसि विणीयंसी सम्माणियडो-

हला तस्स गब्भस्स अणुकंपणट्ठाए जयं चिट्ठति जयं आसयति जयं सुवति आहारंपिय णं आहारेमाणी णाइतित्तं णातिकडुयं णातिकसायं णातिअंबिलं णातिमहुरं जं तस्स गब्भस्स हियं मियं पत्थयं देसे य काले य आहारं आहारेमाणी णाइचिन्तं णाइसोगं णाइदेण्णं णाइमोहं णाइभयं णाइपरितासं(ववगय-चित्तसोयमोहभयं उदुभयमाण-परितोसा सुहेहिं) भोयण-च्छायण-गंधमल्लालंकारेहिं तं गब्भं सुहंसुहेणं परिवहरति ॥ सूत्रं ११ ॥ ततेणं सा धारिणीदेवी नवण्हं मासाणं बहुपडिपुन्नाणं अद्धट्ठमाणरातिंदियाणं वीतिक्कंताणं अद्धरत्तकालसमयंसि सुकुमालपाणिपादं जाव सव्वंगसुंदरंगं दारगं पयाया १ । तए णं ताओ अंगपडियारिआओ धारिणीं देवीं नवण्हं मासाणं जाव दारगं पयायं पासन्ति २ सिग्घं तुरियं चवलं वेतिथं जेणेव सेणिए राया तेणेव उवागच्छंति २ सेणियं रायं जएणं विजएणं वद्धावेंति २ करयलपरिग्गहियं सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं कट्टु एवं वदासी—एवं खलु देवाणुप्पिया ! धारिणीदेवी णवण्हं मासाणं जाव दारगं पयाया तन्नं अम्हे देवाणुप्पियाणं पियं णिवेदेमो पियं भे भवउ २ । तते णं से सेणिए राया तासिं अंगपडियारियाणं अंतिए एयमट्ठं सोचा णिसम्म हट्ठतुट्ठ जाव ताओ अंगपडियारियाओ महुरेहिं वयणेहिं विपुलेण य पुप्फगंधमल्लालंकारेणं सक्कारेति सम्माणेति २ मत्थयधोयाओ करेति पुत्ताणुपुत्तियं वित्तिं कप्पेति २ पडिविसज्जेति ३ । तते णं से सेणिए राया कोडुंबियपुरिसे सद्दावेति २ एवं वदासी—खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया ! रायगिहं नगरं आसिय जाव परिगयं करेह २ चारगपरिसोहणं करेह २ त्ता माणुम्माणवद्धणं करेह २ एतमाणत्तियं पच्चप्पिणह जाव पच्चप्पिणंति ४ । तते णं से सेणिए राया अट्ठारस-सेणीप्पसेणीओ सद्दावेति २ एवं वदासी—गच्छह णं तुब्भे देवाणुप्पिया ! रायगिहे नगरे अब्भिंतरबाहिरिए उस्सुक्कं उक्करं अभडप्पवेसं अदंडिमकुदंडिमं अधरिमं अधारणिज्जं अणुद्धु-

यमुइंगं अभिलायमल्लदामं गणियावर-णाडइज्जकलियं अणेगतालायराणुचरितं पमुइयपक्कीलियाभिरामं जहारिहं दसदिवसियं ठिइवडियं करेह २ एयमाणत्तियं पच्चप्पिणह, तेवि करिंति २ तहेव पच्चप्पिणंति ५। तए णं से सेणिए राया बाहिरियाए उवट्ठाणसालाए सीहासणवरगए पुरत्थाभिमुहे सन्निसन्ने सइएहि य साहस्सिएहि य सयसाहस्सेहि य जाएहिं दाएहिं भागेहिं दलयमाणे २ पडिच्छेमाणे २ एवं च णं विहरति ६। तते णं तस्स अम्मापियरो पढमे-दिवसे जातकम्मं करेंति २ बितियदिवसे जागरियं करेंति २ ततिए दिवसे चंदसूरदंसणियं करेंति २ एवामेव निव्वत्ते असुइजायकम्मकरणे (सुइजात-कम्मकरणे) संपत्ते बारसाहदिवसे विपुलं असणं पाणं खातिमं सातिमं उवक्खडावेंति २ मित्त-णाति-णियग-सयण-संबंधि-परिजणं बलं च बहवे गणणायग दंडणायग जाव आमन्तेंति ततो पच्छा राहाता कयबलिकम्मा कयकोउय जाव सव्वालंकारविभूसिया महतिमहालयंसि भोयणमंडवंसि तं विपुलं असणं पाणं खाइमं सातिमं मित्तनाति०गणणायग जाव सद्धिं आसा-एमाणा विसाएमाणा परिभाएमाणा परिभुंजेमाणा एवं च णं विहरति, जिमितभुत्तुत्तरागतावि य णं समाणा आयंता चोक्खा परमसुइभूया तं मित्त-नाति-नियग-सयणसंबंधि-परिजण-गणणायग-दंडनायग जाव विपुलेणं पुप्फव-त्थ-गंधमल्लालंकारेणं सक्कारेंति सम्माणेंति २ एवं वदासी—जम्हा णं अम्हं इमस्स दारगस्स गब्भत्थस्स चेव समाणस्स अकालमेहेसु डोहले पाउब्भूते तं होउ णं अम्हं दारए मेहे नामेणं मेहकुमारे. तस्स दारगस्स अम्मापियरो अयमेयारूवं गोणणं गुणनिप्फन्नं नामधेज्जं करेंति (मेहात्ति) ७। तते णं से मेहकुमारे पंचधातीपरिग्गहिए, तं जहा—खीरधातीए मंडणधातीए मज्जणधातीए कीलावणधातीए अंकधातीए, अन्नाहि य बहूहिं खुज्जाहिं चिलाइयाहिं वाम-णि-वडभि-बब्बरि--बउसि--जोणिय--पल्हविया-इसिणिया--चाधोरुगिणि--लासिय-लउसिय-दमिलि-सिंहलि-आरबि-पुलिंदि--पक्कणि-बहलि-मरुंडि-सबरि-पारसीहिं

णाणादेसीहिं विदेस-परिमंडियाहिं इंगित-चिंतिय-पत्थिय-वियाणियाहिं सदेस-णेवत्थ-गहितवेसाहिं निउणकुसलाहिं विणीयाहिं चेडियाचक्कवाल-वरिसधर-कंचुइअ-महयरग-वंदपरिखित्ते हत्थाओ हत्थं संहरिज्जमाणे अंकाओ अंकं परिभुज्जमाणे परिगिज्जमाणे चालिज्जमाणे उवलालिज्जमाणे (उवणच्चिज्जमाणे २, उवगाइज्जमाणे २, उवलालिज्जमाणे २, अवगूहिज्जमाणे २, अवयासिज्जमाणे २, परिवंदिज्जमाणे २, परिचुंबिज्जमाणे २) रम्मंसि मणि-कोट्टिमतलंसि परिमिज्जमाणे २ णिव्वायणिव्वाघायंसि गिरिकंदर-मल्लीणेव चंपगपायवे सुहं सुहेणं वड्ढइ ८। तते णं तस्स मेहस्स कुमारस्स अम्मापियरो अणुपुव्वेणं नामकरणं च पजेमणं च एवं चंकम्मणगं च चोलोवणयं च महता महया इड्ढीसक्कारसमुदएणं करिंसु ९। तते णं तं मेहकुमारं अम्मापियरो सातिरेगट्ठवासजातगं चेव गब्भट्ठमे वासे सोहणंसि तिहिकरणमुहुत्तंसि कलायरियस्स उवणेंति १०। तते णं से कलायरिए मेहं कुमारं लेहाइयाओ गणितप्पहाणाओ सउणरुतपज्जवसाणाओ बावत्तरिं कलाओ सुत्तओ य अत्थओ य करणओ य सेहावेति सिक्खावेति, तंजहा—लेहं गणियं रूवं नट्टं गीयं वाइयं सरम(ग)यं पोक्खरगयं समतालं जूयं १० जणवायं पासयं अट्ठावयं पोरेकच्चं दगमट्टियं अन्नविहिं पाणविहिं वत्थविहिं विलेवणविहिं सयणविहिं २० अज्जं पहेलियं मागहियं गाहं गीइयं सिलोयं हिरण्णजुत्तिं सुवन्नजुत्तिं चुन्नजुत्तिं आभरणविहिं ३० तरुणीपडिकम्मं इत्थिलक्खणं पुरिसलक्खणं हयलक्खणं गयलक्खणं गोणलक्खणं कुक्कुडलक्खणं छत्तलक्खणं डंडलक्खणं असि-लक्खणं ४० मणिलक्खणं कागणिलक्खणं वत्थुविज्जं खंधारमाणं नगरमाणं वूहं पडिवूहं चारं पडिचारं चक्कवूहं ५० गरुलवूहं सगडवूहं जुद्धं निजुद्धं जुद्धातिजुद्धं अट्ठियुद्धं मुट्ठियुद्धं बाहुयुद्धं लयाजुद्धं ईसत्थं ६० छरुप्पवायं धणुव्वेयं हिरन्नपागं सुवन्नपागं सुत्तखेडं वट्टखेडं

नालियाखेडं पत्तच्छेज्जं कडच्छेज्जं सज्जीवं ७० निज्जीवं सऊणरुयमिति १० ॥ सूत्रं २० ॥

तते णं से कलायरिए मेहं कुमारं लेहादीयाओ गणियप्पहाणाओ सउणरुय-पज्जवसाणाओ बावत्तरि कलाओ सुत्तओ य अत्थओ य करणओ य सिहावेति सिक्खावेइ सिहावेत्ता सिक्खावेत्ता अम्मापिऊणं उवणेति, तते णं मेहस्स कुमारस्स अम्मापितरो तं कलायरियं मधुरेहिं वयणेहिं विपुलेणं वत्थगंधमल्लालंकारेणं सक्कारेंति सम्माणेंति २ त्ता विपुलं जीवियारिहं पीइदाणं दलयंति २ त्ता पडिविसज्जेंति ॥ सूत्रं २१ ॥ तते णं से मेहे कुमारे बावत्तरिकलापंडिए णवंगसुत्तपडिबोहिए अट्ठारसविहिप्पगारदेसीभासाविसारए गीइरई गंधव्वनट्टकुसले हयजोही गयजोही रहजोही बाहुजोही बाहुप्पमद्दी अलं भोगसमत्थे साहसिए वियालचारी जाते यावि होत्था १ । तते णं तस्स मेहकुमारस्स अम्मापियरो मेहं कुमारं बावत्तरिकलापंडितं जाव वियालचारी जायं पासंति २ त्ता अट्ठ पासातवडिंसए करेंति अब्भुग्गय-मुसियपहसिए विव मणिकणग रयणभत्तिचित्ते वाउद्धूत विजय-वेजयंती-पडागा-छत्ताइच्छत्तकलिए तुंगे गगणतल-मभिलंघमाणसिहरे जालंतर-रयण-पंजरुम्मिल्लियव्व मणिकणगथूभियाए वियसितसयपत्तपुंडरीए तिलयरयणद्धय-चंदच्चिए नानामणिमय दामालंकिते अंतो बहिं च सण्हे तवणिज्ज-रुइल-वालुयापत्थरे सुहफासे सस्सिरीयरूवे पासादीए जाव पडिरूवे, एगं च णं महं भवणं करेंति अणेगखंभ-सयसन्निविट्ठं लीलट्ठिय-सालभंजियागं अब्भुग्गय-सुकय-वइर-वेतियातोरण-वररइय-सालभंजिया-सुसिलिट्ठ-विसिट्ठ-लट्ठसंठित-पसत्थ-वेरुलिय-खंभ-नाणामणि--कणगरयणखचितउज्जलं बहुसम-सुविभत्त-निचिय-रमणिज्ज-भूमिभागं ईहामिय जाव भत्तिचित्तं खंभुग्गय-वयर-वेइयापरिगयाभिरामं विज्जाहर-जमल-जुयल-जुत्तंपिव अच्चीसहस्स मालणीयं रूवगसहस्स-कलियं भिसमाणं भिब्भिसमाणं

चक्खुलोयणलेसं सुहफासं सस्सिरीयरूवं कंचण-मणिरयण-थूभियागं नाणाविह-पंचवन्न-घंटापडाग--परिमंडियग्गसिरं(सिहरं) धवलमिरीचि-कवयं विणिम्मुयंतं लाउल्लोइयमहियं जाव गंधवट्टिभूयं पासादीयं दरिसणिज्जं अभिरूवं पडिरूवं २॥ सूत्रं २२ ॥ तते णं तस्स मेहकुमारस्स अम्मापियरो मेहं कुमारं सोहणंसि तिहिकरणनक्खत्तमुहुत्तंसि सरिसियाणं सरिसव्वयाणं सरित्तयाणं सरिसजाव-नरूव-जोव्वणगुणोववेयाणं सरिसएहिंतो रायकुलेहिंतो आणिअल्लियाणं पसाहणट्ठंगअविहव-बहुओवयण-मंगलसुजंपियाहिं अट्ठहिं रायवरकण्णाहिं सद्धिं एगदिवसेणं पाणिं गिण्हाविंसु १ । तते णं तस्स मेहस्स अम्मापितरो इमं एतारूवं पीतिदाणं दलयंति अट्ठ हिरण्णकोडीओ अट्ठ सुवण्णकोडीओ गाहाणुसारेण* भाणियव्वं जाव पेसणकारियाओ ।

*(गाथाश्चेह नोपलभ्यन्ते, केवलं ग्रन्थान्तरानुसारेण लिख्यन्ते--"अट्ठहिरण्ण-सुवन्नय कोडीओ मउडकुंडला हारा । अट्ठहार एकावली उ मुत्तावली अट्ठ ॥ १ ॥ कणगावलि-रयणावलि कडगजुगा तुडियजोयखोमजुगा । वडजुगपट्ट-जुगाइं दुकूलजुगलाइं अट्ठ वग्ग)ट्ठ ॥ २ ॥ सिरिहिरिधिइकित्तीउ बुद्धी लच्छी य होंति अट्ठट्ठ । नंदा भद्दा य तला झय वय नाडाइं आसेव ॥ ३ ॥ हत्थी जाणा जुग्गा उ सीया तह संदमाणी गिल्लिओ । थिल्लीइ वियडजाणा रह गामा दास दासीओ ॥ ४ ॥ किंकरकंचुइ मयहर वरिसधरे तिविह दीव थाले य । पाई थासग पल्लग कतिविय अवएड अवपका ॥ ५ ॥ पावीढ भिसिय करोडियाओ पल्लंकए य पडिसिज्जा । हंसाईहिं विसिट्ठा आसणभेया उ अट्ठ ॥ ६ ॥ हंसे १ कुंचे २ गरुडे ३ ओणय ४ पणए ५ य दीह ६ भद्दे ७ य । पक्खे ८ मयरे ९ पउमे १० होइ दिसासोत्थिए ११ कारे ॥ ७ ॥ तेल्ले कोट्ठ-समुग्गा पत्ते चोए य तगर एला य । हरियाले हिंगुलए मणोसिला सासव समुग्गे ॥ ८ ॥ खुज्जा चिलाइ वामणि वडभीओ बब्बरी उ वसियाओ । जोणिय पल्हवियाओ ईसिणिया घोरुइणिया य ॥ ९ ॥ लासिय लउसिय दमिणी सिंहलि तह आरबी पुलिंदी य । पक्कणि बहणि मुरंडी सबरीओ पारसीओ य ॥ १० ॥ छत्तधरी चेडीओ चामरधर-तालियंटयधरीओ । सकरोडियाधरीउ खीराती पंच

धावीओ ॥ ११ ॥ अङ्कंगमद्दियाओ उम्मद्दिगविगमंडियाओ य । वण्णयचुण्णय पीसिय कोलाकारी य दवगारी ॥१२॥ उच्छाविया उ तह नाडइल्ल कोडुंबिणी महाणसिणी । भंडारि अज्जधारि पुप्फधरी पाणियधरी य ॥१३॥ बलकारि य सेज्जाकारिया-ओ अब्भंतरी उ बाहिरिया । पडिहारी मालारी पेसणकारीउ चडढ ॥ १४ ॥)

अन्नं च विपुलं धणकणग-रयण-मणिमोत्तिय-संखसिलप्पवाल-रत्त-रयणमंत-सारसावतेज्जं अलाहि जाव आसत्तमाओ कुलवंसाओ पकामं दाउं पकामं भोत्तुं पकामं परिभाएउं २ । तते णं से मेहे कुमारे एगमेगाए भारियाए एगमेगं हिरण्णकोडिं दलयति एगमेगं सुवन्नकोडिं दलयति जाव एगमेगं पेसणकारिं दलयति, अन्नं च विपुलं धणकणग जाव परिभाएउं दलयति ३ । तते णं से मेहे कुमारे उप्पिं पासातवरगते फुट्टमाणेहिं मुइंगमत्थएहिं वरतरुणिसंपउत्तेहिं बत्तीसइबद्धएहिं नाडएहिं उवगिज्जमाणे २ उवलालिज्ज-माणे २ सद्द-फरिस-रस-रूव-गंधविउले माणुस्सए कामभोगे पच्चणुभवमाणे विहरति ४ ॥ सूत्रं २३ ॥ तेणं कालेणं २ समणे भगवं महावीरे पुव्वाणु-पुव्विं चरमाणे गामाणुगामं दूइज्जमाणे सुहंसुहेणं विहरमाणे जेणामेव राय-गिहे नगरे गुणसिलए चेतिए जाव विहरति १ । तते णं से रायगिहे नगरे सिंघाडग-तिग-चउक्क-चच्चर-चउमुह-महापहपहेसु महया बहुजणसद्दे ति वा जाव बहवे उग्गा भोगा जाव रायगिहस्स नगरस्स मज्झंमज्झेणं एगदिसिं एगाभिमुहा निग्गच्छंति, इमं च णं मेहे कुमारे उप्पिं पासातवरगते फुट्टमा-णेहिं मुयंगमत्थएहिं जाव माणुस्सए कामभोगे भुंजमाणे रायमग्गं च ओलोएमाणे २ एवं च णं विहरति २ । तए णं से मेहे कुमारे ते बहवे उग्गे भोगे जाव एगदिसाभिमुहे निग्गच्छमाणे पासति पासित्ता कंचुइज्जपुरिसं सद्दावेति २ एवं वदासी—किन्नं भो देवाणुप्पिया ! अज्ज रायगिहे नगरे इंदमहेति वा खंदमहेति वा एवं रुद्द-सिव-वेसमण-नाग-जक्ख-भूय-नई-तलाय-रुक्ख-चेतिय-पव्वय-उज्जाण-गिरिजत्ताइ वा जओ णं बहवे उग्गा भोगा

जाव एगदिसिं एगाभिमुहा णिग्गच्छंति ३। तते णं से कंचुइज्जपुरिसे समणस्स भगवओ महावीरस्स गहियागमणपवत्तीए मेहं कुमारं एवं वदासी–नो खलु देवाणुप्पिया! अज्ज रायगिहे नयरे इंदमहेति वा जाव गिरिजत्ताओ वा, जन्नं एए उग्गा जाव एगदिसिं एगाभिमुहा निग्गच्छन्ति, एवं खलु देवाणुप्पिया! समणे भगवं महावीरे आइकरे तित्थकरे जाव संपाविउकामे पुव्वाणुपुव्विं चरमाणे गामाणुगामं दुइज्जमाणे इहमागते इह संपत्ते इह समोसढे इह चेव रायगिहे नगरे गुणसिलए चेइए अहापडि जाव विहरति ४।॥ सूत्रं २४॥ तते णं से मेहे (मेहे कुमारे) कंचुइज्जपुरिसस्स अंतिए एतमट्ठं सोच्चा णिसम्म हट्ठतुट्ठे कोडुंबियपुरिसे सद्दावेति २ एवं वदासी–खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया! चाउग्घंटं आसरहं जुत्तामेव उवट्ठवेह, तहत्ति उवणेंति १। तते णं से मेहे ण्हाते जाव सव्वालंकारविभूसिए चाउग्घंटं आसरहं दुरूढे समाणे सकोरंटमल्लदामेणं छत्तेणं धरिज्जमाणेणं महया भडचडगर-विंदपरियाल-संपरिवुडे रायगिहस्स नगरस्स मज्झं मज्झेणं निग्गच्छति २ जेणामेव गुणसिलए चेतिए तेणामेव उवागच्छति २ त्ता समणस्स भगवओ महावीरस्स छत्तातिछत्तं पडागातिपडागं विज्जाहरचारणे जंभए य देवे ओवयमाणे उप्पयमाणे पासति पासित्ता चाउग्घंटाओ आसरहाओ पच्चोरुहति २ समणं भगवं महावीरं पंचविहेणं अभिगमेणं अभिगच्छति, तंजहा–सचित्ताणं दव्वाणं विउ(ओ)सरणयाए, अचित्ताणं दव्वाणं अविउसरणयाए, एगसाडिय-उत्तरासंग-करणेणं, चक्खुप्फासे अंजलिपग्गहेणं, मणसो एगत्तीकरणेणं (एगत्तभावेणं), जेणामेव समणे भगवं महावीरे तेणामेव उवागच्छति २ समणं ३ तिक्खुत्तो आदाहिणं (अयाहिणं) पदाहिणं करेति २ वंदति णमंसइ २ समणस्स भगवओ महावीरस्स णच्चासन्ने नातिदूरे सुस्सूसमाणे नमंसमाणे अंजलियउडे अभिमुहे विणएणं पज्जुवासति २। तए णं समणे भगवं महावीरे मेहकुमारस्स तीसे य महतिमहालियाए

परिसाए मज्झगए विचित्तं धम्ममातिक्खति जहा जीवा बज्झंति मुच्चंति जह य संकिलिस्संति धम्मकहा भाणियव्वा जाव परिसा पडिगया ३ ॥ सूत्रं २५ ॥

तते णं से मेहे कुमारे समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतिए धम्मं सोचा णिसम्म हट्ठतुट्ठे समणं भगवं महावीरं तिक्खुत्तो आदाहिणं पदाहिणं करेति २ वंदति नमंसइ २ एवं वदासी—सद्दहामि णं भंते ! णिग्गंथं पावयणं एवं पत्तियामि णं रोएमि णं अब्भुट्ठेमि णं भंते ! निग्गथं पावयणं, एवमेयं भते ! तहमेयं अवितहमेयं इच्छितमेयं पडिच्छियमेयं भंते ! इच्छितपडिच्छियमेयं भंते ! से जहेव तं तुब्भे वदह, जं नवरं देवाणुप्पिया ! अम्मापियरो आपुच्छामि तओ पच्छा मुंडे भवित्ता णं पव्वइस्सामि, अहासुहं देवाणुप्पिया ! मा पडिबंधं करेह १ । तते णं से मेहे कुमारे समणं ३ वंदति नमंसति २ जेणामेव चाउग्घंटे आसरहे तेणामेव उवागच्छति २ त्ता चाउग्घंटं आसरहं दूरूहति २ महया भडचडगरपहकरेणं रायगिहस्स नगरस्स मज्झंमज्झेणं जेणामेव सए भवणे तेणामेव उवागच्छति २ त्ता चाउग्घंटाओ आसरहाओ पच्चोरूहति २ जेणामेव अम्मापियरो तेणामेव उवागच्छति २ त्ता अम्मापिऊणं पायवडणं करेति २ एवं वदासी—एवं खलु अम्मयाओ ! मए समणस्स भगवतो महावीरस्स अंतिए धम्मे णिसंते सेवि य मे धम्मे इच्छिते पडिच्छते अभिरुइए २ । तते णं तस्स मेहस्स अम्मापियरो एवं वदासी—धन्नेसि तुमं जाया ! संपुन्नोऽसि तुमं जाया ! कयत्थोऽसि तुमं जाया ! कयलक्खणोऽसि तुमं जाया ! जन्नं तुमे समणस्स ३ अंतिए धम्मे णिसंते, सेवि य ते धम्मे इच्छिते पडिच्छिते अभिरुइए ३ । तते णं से मेहे कुमारे अम्मापियरो दोच्चंपि तच्चंपि एवं वदासी—एवं खलु अम्मयातो ! मए समणस्स ३ अंतिए धम्मे निसंते, सेवि य मे धम्मे इच्छिते पडिच्छिते इच्छियपडिच्छिए अभिरुइए, तं इच्छामि णं अम्मयाओ ! तुब्भेहिं अब्भणुन्नाए

समाणे समणस्स भगवतो महावीरस्स अंतिए मुंडे भवित्ताणं आगारातो अणगारियं पव्वइत्तए ४। तते णं सा धारिणी देवी तमणिट्ठं अकंतं अप्पियं अमणुन्नं अमणामं असुयपुव्वं फरुसं गिरं सोच्चा णिसम्म इमेणं एतारूवेणं मणोमाणसिएणं महया पुत्तदुक्खेणं अभिभूता समाणी सेयागय-रोमकूव-पगलंत-विलीणगाया सोयभर-पवेवियंगी णित्तेया दीण-विमण-वयणा करयलमलियव्व कमलमाला तक्खण-ओलुग्ग-दुब्बल-सरीरा लावन्न-सुन्ननि-च्छाय-गयसिरीया पसिढिल-भूमण-पडंत-खुम्मिय-संचुन्निय-धवल-वलय-पब्भट्ठ-उत्तरिज्जा सूमाल-विकिन्न-केसहत्था मुच्छावस-णट्ठचेयगरुई परसुनियत्तव्व चंपकलया निव्वत्तमहिमव्व इंदलट्ठी विमुक्कसंधिबंधणा कोट्टिमतलंसि सव्वं-गेहिं धसत्ति पडिया ५। तते णं सा धारिणी देवी ससंभमोवत्तियाए तुरियं कंचण-भिंगार-मुहविणिग्गय-सीयल-जलविमलधाराए परिसिंचमाणा निव्वावियगायलट्ठी उक्खेवण-तालवंटवीयणग--जणियवाएणं सफुसिएणं अंतेउरपरिजणेणं आसासिया समाणी मुत्तावलि-सन्निगास-पवडंत-अंसुधाराहिं सिंचमाणी पओहरे कलुणविमणदीणा रोयमाणी कंदमाणी तिप्पमाणी सोयमाणी विलवमाणी मेहं कुमारं एवं वयासी—६ ॥ सूत्रं २६ ॥ तुमंसि-णं जाया! अम्हं एगे पुत्ते इट्ठे कंते पिए मणुन्ने मणामे थेज्जे वेसासिए सम्मए बहुमए अणुमए भंडकरंडगसमाणे रयणे रयणभूते जीवियउस्सासय-(जीविउस्सइए) हिययाणंदजणणे उंबरपुप्फं व दुलभे सवणयाए किमंग पुण पासणयाए? णो खलु जाया! अम्हे इच्छामो खणमवि विप्पओगं सहि-त्तते तं भुंजाहि ताव जाया! विपुले माणुस्सए कामभोगे जाव ताव वयं जीवामो तओ पच्छा अम्हेहिं कालगतेहिं परिणयवए वड्ढिय-कुलवंस-तं-तुकज्जंमि निरावयक्खे समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतिए मुंडे भवित्ता आगारातो अणगारियं पव्वइस्ससि १। तते णं से मेहे कुमारे अम्मापि-ऊहिं एवं वुत्ते समाणे अम्मापियरो एवं वदासी-तहेव णं तं अम्मताओ!

जहेव णं तुम्हे ममं एवं वदह तुमंसि णं जाया ! अम्हं एगे पुत्ते तं चेव जाव निरावयक्खे समणस्स ३ जाव पव्वइस्ससि, एवं खलु अम्मयाओ ! माणुस्सए भवे अधुवे अणियए असासए वसण-सउवद्दवाभिभूते विज्जुलया-चंचले अणिच्चे जलबुब्बुयसमाणे कुसग्गजलबिंदुसन्निभे संझब्भरागसरिसे सुविणदंसणोवमे सडणपडणविद्धंसणधम्मे पच्छा पुरं च णं अवस्स विप्पजहणिज्जे से केणं जाणति अम्मयाओ ! के पुव्विं गमणाए के पच्छा गमणाए ? तं इच्छामि णं अम्मयाओ ! तुब्भेहिं अब्भणुन्नाते समाणे समणस्स भगवतो महावीरस्स जाव पव्वतित्तए २। तते णं तं मेहं कुमारं अम्मापियरो एवं वदासी–इमातो ते जाया ! (इमाओ ते जायाओ विपुलकुल-बालियाओ कला-कुसल-सव्व-काललालियसुहाओ मद्दवगुण-जुत्तनिउण-विणओवयार–पंडियवियक्खणाओ मंजुलमिय-महुर-भणिय-हसिय-विप्पेक्खिय–गइ–विलास–चिट्ठिय–विसारियाओ अविकल–कुलसील–सालिणीओ विसुद्धकुल-वंससंताण-तंतुवद्धण-पगब्भुब्भवप्पभाविणीओ मणो-णुकूल-सीलसालिणीओ अट्ठ तुज्झ गुणवल्लहाओ भज्जाओ उत्तमाओ निच्चं भावाणुरत्ता सव्वंगसुंदरीओ)सरिसियाओ सरिसत्तयाओ सरिसव्वयाओ सरिस-लावन्न-रूव-जोव्वण-गुणोववेयाओ सरिसेहिंतो रायकुलेहिंतो आणियल्लि-याओ भारियाओ, तं भुंजाहि णं जाया ! एताहिं सद्धिं विपुले माणुस्सए काम-भोगे, तओ पच्छा भुत्तभोगे समणस्स ३ जाव पव्वइस्ससि ३। तते णं से मेहे कुमारे अम्मापितरं एवं वदासी–तहेव णं अम्मयाओ ! जन्नं तुब्भे ममं एवं वदह-इमाओ ते जाया ! सरिसियाओ जाव समणस्स ३ पव्वइ-स्ससि, एवं खलु अम्मयाओ ! माणुस्सगा कामभोगा असुई असासया वंतासवा पित्तासवा खेलासवा सुक्कासवा सोणियासवा दुरुस्सासनीसासा दुरूय-मुत्त-पुरिस-पूय बहुपडिपुन्ना उच्चार-पासवण-खेल-जल्ल-सिंघाणग-वंत-पित्त-सुक्क-सोणित-संभवा अधुवा अणितिया असासया सडण-पडण-विद्धंसण-

धम्मा पच्छा पुरं च णं अवस्सविप्पजहणिज्जा, से के णं अम्मयाओ ! जाणंति के पुव्विं गमणाए के पच्छा गमणाए ?, तं इच्छामि णं अम्मयाओ ! जाव पव्वतित्तए ४ । तते णं तं मेहं कुमारं अम्मापितरो एवं वदासी–इमे ते जाया ! अज्जयपज्जय-पिउपज्जयागए सुबहु हिरन्ने य सुवण्णे य कंसे य दूसे य मणिमोत्तिए य संख-सिलप्पवाल-रत्तरयण-संतसार-सावतिज्जे य अलाहि जाव आसत्तमाओ कुलवंसाओ पगामं दाउं पगामं भोत्तुं पकामं परिभाएउं तं अणुहोहि ताव जाव जाया ! विपुलं माणुस्सगं इड्ढिसक्कारसमुदयं, तओ पच्छा अणुभूयकल्लाणे समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतिए पव्वइस्ससि ५ । तते णं से मेहे कुमारे अम्मापियरं एवं वदासी–तहेव णं अम्मयाओ ! जण्णं तं वदह इमे ते जाया ! अज्जग-पज्जग पिउपज्ज-यागए जाव तओ पच्छा अणुभूयकल्लाणे पव्वइस्ससि, एवं खलु अम्मयाओ ! हिरन्ने य सुवण्णे य जाव सावतेज्जे अग्गिसाहिए चोरसाहिए रायसाहिए दाइयसाहिए मच्चुसाहिए अग्गिसामन्ने जाव मच्चुसामन्ने सडणपडण-विद्धंसण-धम्मे पच्छा पुरं च णं अवस्स-विप्पजहणिज्जे, से के णं जाणइ अम्मयाओ ! के जाव गमणाए तं इच्छामि णं जाव पव्वतित्तए ६ । तते णं तस्स मेहस्स कुमारस्स अम्मा-पियरो जाहे नो संचाएइ मेहं कुमारं बहूहिं विसयाणुलोमाहिं आघवणाहि य पन्नवणाहि य सन्नवणाहि य विन्नवणाहि य आघवित्तए वा पन्नवित्तए वा सन्नवितए वा विन्नवित्तए वा ताहे विसयपडिकूलाहिं संजमभउव्वेय-कारियाहिं पन्नवणाहिं पन्नवेमाणा एवं वदासी–एस णं जाया ! निग्गंथे पावयणे सच्चे अणुत्तरे केवलिए पडिपुन्ने णेयाउए संसुद्धे सल्लगत्तणे सिद्धिमग्गे मुत्तिमग्गे निज्जाणमग्गे निव्वाणमग्गे सव्वदुक्खप्पहीणमग्गे, अहीव एगंतदिट्ठीए खुरो इव एगधाराए (एगंतधाराए) लोहमया इव जवा चावेयव्वा वालुयाकवले इव निरस्साए, गंगा इव महानदी पडिसोयगमणाए, महास-

मुद्दो इव भुयाहिं दुत्तरे तिक्खं चंकमियव्वं गरुअं लंबेयव्वं असिधारव्व संचरियव्वं, णो य खलु कप्पति जाया ! समणाणं निग्गंथाणं आहाकम्मिए वा उद्देसिए वा कीयगडे वा ठवियए वा रइयए वा दुब्भिक्खभत्ते वा कंतारभत्ते वा वद्दलियाभत्ते वा गिलाणभत्ते वा मूलभोयणे वा कंदभोयणे वा फलभोयणे वा बीयभोयणे वा हरियभोयणे वा भोत्तए वा पायए वा, तुमं च णं जाया ! सुहसमुचिए णो चेव णं दुहसमुचिए णालं सीयं णालं उण्हं णालं खुहं णालं पिवासं णालं वाइय-पित्तिय-सिंभिय-सन्निवाइय-विविहे रोगायंके उच्चावए गामकंटए बावीसं परीसहोवसग्गे उदिन्ने सम्मे अहियासित्तए, तं भुंजाहि ताव जाया ! माणुस्सए कामभोगे, ततो पच्छा भुत्तभोगी समणस्स ३ जाव पव्वतिस्ससि ७ । तते णं से मेहे कुमारे अम्मापिऊहिं एवं वुत्ते समाणे अम्मापितरं एवं वदासी—तहेव णं तं अम्मयाओ ! जन्नं तुब्भे ममं एवं वदह एस णं जाया ! निग्गंथे पावयणे सच्चे अणुत्तरे, पुणरवि तं चेव जाव तओ पच्छा भुत्तभोगी समणस्स ३ जाव पव्वइस्ससि, एवं खलु अम्मयाओ ! णिग्गंथे पावयणे कीवाणं कायराणं कापुरिसाणं इहलोगपडिबद्धाणं परलोगनिप्पिवासाणं दुरणुचरे पाययजणस्स णो चेव णं धीरस्स निच्छियस्स(च्छया) ववसियस्स एत्थं किं दुक्करं करणयाए ?, तं इच्छामि णं अम्मयाओ ! तुब्भेहिं अब्भणुन्नाए समाणे समणस्स भगवओ महावीरस्स जाव पव्वइत्तए ८ ॥ सूत्रं २७ ॥ तते णं तं मेहं कुमारं अम्मापियरो जाहे नो संचाइंति बहूहिं विसयाणुलोमाहि य विसयपडिकूलाहि य आघवणाहि य पन्नवणाहि य सन्नवणाहि य विन्नवणाहि य आघवित्तए वा पन्नवित्तए वा सन्नवित्तए वा विन्नवित्तए वा ताहे अकामए (अकामगाइं) चेव मेहं कुमारं एवं वदासी—इच्छामो ताव जाया ! एगदिवसमवि ते रायसिरिं पासित्तए १ । तते णं से मेहे कुमारे अम्मापितरमणुवत्तमाणे तुसिणीए संचिट्ठति २ । तते णं से सेणिए राया कोडुंबियपुरिसे

सद्दावेति २ त्ता एवं वदासी–खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया ! मेहस्स कुमारस्स महत्थं महग्घं महरिहं विउलं रायाभिसेयं उवट्ठवेह ३। तते णं ते कोडुंबियपुरिसा जाव तेवि तहेव उवट्ठवेंति ४। तते णं से सेणिए राया बहूहिं गणणायग-दंडणायगेहि य जाव संपरिवुडे मेहं कुमारं अट्ठसएणं सोवन्नियाणं कलसाणं एवं रुप्पमयाणं कलसाणं सुवन्नरुप्पमयाणं कलसाणं मणिमयाणं कलसाणं सुवन्नमणिमयाणं कलसाणं रुप्पमणिमयाणं कलसाणं सुवन्नरुप्पमणिमयाणं कलसाणं भोमेज्जाणं कलसाणं सव्वोदएहिं सव्वमट्टियाहिं सव्वपुप्फेहिं सव्वगंधेहिं सव्वमल्लेहिं सव्वोसहीहि य सिद्धत्थएहि य सव्विड्ढीए सव्वजुईए सव्वबलेणं जाव दुंदुभिनिग्घोस-णादितरवेणं महया २ रायाभिसेएणं अभिसिंचति २ करयल जाव कट्टु एवं वदासी–जय जय णंदा ! जय २ भद्दा ! जय णंदा० भद्दं ते अजियं जिणाहि जियं पालयाहि जियमज्झे वसाहि अजियं जिणेहि सत्तुपक्खं जियं च पालेहि मित्तपक्खं जाव भरहो इव मणुयाणं रायगिहस्स नगरस्स अन्नेसिं च बहूणं गामागरनगर जाव सन्निवेसाणं आहेवच्चं जाव विहराहित्ति कट्टु जय २ सद्दं पउंजंति ४। तते णं से मेहे राया जाते महया जाव विहरति ५। तते णं तस्स मेहस्स रन्नो अम्मापितरो एवं वदासी–भण जाया ! किं दलयामो किं पयच्छामो किं वा ते हियइच्छिए सामत्थे(मन्ते) ? ६। तते णं मेहे राया अम्मापितरो एवं वदासी–इच्छामि णं अम्मयाओ ! कुत्तियावणाओ रयहरणं पडिग्गहगं च उवणेह कासवयं च सद्दावेह ७। तते णं से सेणिए राया कोडुंबियपुरिसे सद्दावेति सद्दावेत्ता एवं वदासी–गच्छह णं तुब्भे देवाणुप्पिया ! सिरिघरातो तिन्नि सयसहस्साति गहाय दोहिं सयसहस्सेहिं कुत्तियावणाओ रयहरणं पडिग्गहगं च उवणेह सयसहस्सेणं कासवयं सद्दावेह ८। तते णं ते कोडुंबियपुरिसा सेणिएणं रन्ना एवं वुत्ता समाणा हट्ठतुट्ठा सिरिघराओ तिन्नि

सयसहस्साति गहाय कुत्तियावणातो दोहिं सयसहस्सेहिं रयहरणं पडिग्गहं च उवणेंति सयसहस्सेणं कासवयं सद्दावेंति ९ । तते णं से कासवए तेहिं कोडुंबियपुरिसेहिं सद्दाविए समाणे हट्ठे जाव हयहियए राहाते कतबलि-कम्मे कयकोउय-मंगलपायच्छित्ते सुद्धप्पावेसातिं वत्थाइं मंगलाइं पवरपरि-हिए अप्पमहग्घाभरणालंकितसरीरे जेणेव सेणिए राया तेणामेव उवागच्छति २ सेणियं रायं करयलमंजलिं कट्टु एवं वयासी—संदिसह णं देवाणुप्पिया ! जं मए करणिज्जं १० । तते णं से सेणिए राया कासवयं एवं वदासी—गच्छाहि णं तुमं देवाणुप्पिया ! सुरभिणा गंधोदएणं णिक्के हत्थपाए पक्खालेह सेयाए चउप्फालाए पोत्तीए मुहं बंधेत्ता मेहस्स कुमारस्स चउरंगुलवज्जे णिक्खमणपाउग्गे अग्गकेसे कप्पेहि ११ । तते णं से कासवए सेणिएणं रन्ना एवं वुत्ते समाणे हट्ठ जाव हियए जाव पडिसुणेति २ सुरभिणा गंधोदएणं हत्थपाए पक्खालेति २ सुद्धवत्थेणं मुहं बंधति २ त्ता परेणं जत्तेणं मेहस्स कुमारस्स चउरंगुलवज्जे णिक्खमणपाउग्गे अग्गकेसे कप्पति १२ । तते णं तस्स मेहस्स कुमारस्स माया महरिहेणं हंसलक्खणेणं पडसाडएणं अग्गकेसे पडिच्छति २ सुरभिणा गंधोदएणं पक्खालेति २ सरसेणं गोसी-सचंदणेणं चच्चाओ दलयति २ सेयाए पोतीए बंधेति २ रयणसमुग्गयंसि पक्खिवति २ मंजूसाए पक्खिवति २ हारवारिधार-सिंदुवार-छिन्नमुत्तावलि-पगासाइं अंसूइं विणिम्मुयमाणी २ रोयमाणी २ कंदमाणी २ विलव-माणी २ एवं वदासी—एस णं अम्हं मेहस्स कुमारस्स अब्भुदएसु य उस्सवेसु य पव्वेसु य तिहीसु य छणेसु य जन्नेसु य पव्वणीसु य अप-च्छिमे दरिसणे भविस्सइत्तिकट्टु उस्सीसामूले ठवेति १३ । तते णं तस्स मेहस्स कुमारस्स अम्मापितरो उत्तरावक्कमणं सीहासणं रयावेंति मेहं कुमारं दोच्चंपि तच्चंपि सेयपीयएहिं कलसेहिं राहावेंति २ पम्हलसुकुमालाए गंधकासाइयाए गायातिं लूहेंति २ सरसेणं गोसीसचंदणेणं गायातिं

अणुलिंपति २ नासानीसासवायवोज्झं जाव हंसलक्खणं पडगसाडगं नियंसेंति २ हारं पिणद्धंति २ अद्धहारं पिणद्धंति २ एगावलिं मुत्तावलिं कणगावलिं रयणावलिं पालंबं पायपलंबं कडगाइं तुडिगाइं केउराति अंगयातिं दसमुद्दियाणंतयं कडिसुतयं कुंडलातिं चूडामणिं रयणुक्कडं मउडं पिणद्धंति २ दिव्वं सुमणदामं पिणद्धंति २ दद्दुरमलयसुगंधिए गंधे पिणद्धंति १४। तते णं तं मेहं कुमारं गंठिम-वेढिम-पूरिम-संघाइमेणं चउव्विहेणं मल्लेणं कप्परुक्खगंपिव अलंकितविभूसियं करेंति १५। तते णं से सेणिए राया कोडुंबियपुरिसे सद्दावेति २ एवं वयासी—खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया! अणेगखंभसय-सन्निविट्ठं लीलट्ठिय-सालभंजियागं ईहामिग-उसभ-तुरय-नर-मगर-विहग-वालग-किन्नर-रुरु-सरभ-चमर-कुंजर-वणलय-पउमलय-भत्तिचित्तं घंटावलि-महुर-मणहरसरं सुभकंत-दरिसणिज्जं निउणोविय-मिसिमिसिंत-मणिरयण-घंटियाजाल-परिखित्तं अब्भुग्गय-वइर-वेतिया-परिगयाभिरामं विज्जाहर-जमल-जंतजुत्तंपिव अच्चीसहस्समालणीयं रूवग-सहस्सकलियं भिसमाणं भिब्भिसमाणं चक्खुलोयणलेस्सं सुहफासं सस्सिरीयरूवं सिग्घं तुरितं चवलं वेतियं पुरिससहस्सवाहिणीं सीयं उवट्ठवेह १५। तते णं ते कोडुंबियपुरिसा हट्ठतुट्ठा जाव उवट्ठवेंति १६। तते णं से मेहे कुमारे सीयं दूरूहति २ त्ता सीहासणवरगए पुरत्थाभिमुहे सन्निसन्ने १७। तते णं तस्स मेहस्स कुमारस्स माया ण्हाता कयबलिकम्मा जाव अप्पमहग्घाभरणालंकियसरीरा सीयं दूरूहति २ मेहस्स कुमारस्स दाहिणे पासे भद्दासणंसि निसीयति, तते णं तस्स मेहस्स कुमारस्स अंबधाती रयहरणं च पडिग्गहगं च गहाय सीयं दूरूहति २ मेहस्स कुमारस्स वामे पासे भद्दासणंसि निसीयति, तते णं तस्स मेहस्स कुमारस्स पिट्ठतो एगा वरतरुणी सिंगारागार-चारुवेसा संगय-गय-हसिय-भणिय-चेट्ठिय-विलास-संलावुल्लावनिउण-जुत्तोवयारकुसला आमेलग-जमल-जुयल-वट्टिय-

अब्भुन्नय-पीण-रतिय-संठित-पओहरा हिम-रयय-कुंदेंदुपगासं सकोरेंट-मल्लदाम-धवलं आयवत्तं गहाय सलीलं ओहारेमाणी २ चिट्ठति, तते णं तस्स मेहस्स कुमारस्स दुवे वरतरुणीओ सिंगारागार-चारुवेसाओ जाव कुसलाओ सीयं दूरूहंति २ मेहस्स कुमारस्स उभओ पासिं नाणामणि-कणगरयण-महरिह-तवणिज्जुज्जल-विचित्तदंडाओ चिल्लियाओ सुहुम-वर-दीहवालाओ संखकुंद-दगरय-अमयम-हिय-फेणपुंज-सन्निगासाओ चामराओ गहाय सलीलं ओहारेमाणीओ २ चिट्ठंति, तते णं तस्स मेहकुमारस्स एगा वरतरुणी सिंगारा जाव कुसला सीयं जाव दूरूहति २ मेहस्स कुमारस्स पुरतो पुरत्थिमेणं चंदप्पभ-वइर-वेरुलिय-विमलदंडं तालविंटं गहाय चिट्ठति, तते णं तस्स मेहस्स कुमारस्स एगा वरतरुणी जाव सुरूवा सीयं दूरूहति २ मेहस्स कुमारस्स पुव्वदक्खि-णेणं सेयं रययामयं विमलसलिलपुन्नं मत्तगय-महामुहाकितिसमाणं भिंगारं गहाय चिट्ठति १८। तते णं तस्स मेहस्स कुमारस्स पिया कोडुंबियपुरिसे सद्दावेति२ त्ता एवं वदासी—खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया! सरिसयाणं सरित्तयाणं सरिव्वयाणं एगाभरण गहित-निज्जोयाणं कोडुंबियवरतरुणाणं सहस्सं सद्दावेह जाव सद्दावेंति, तए णं कोडुंबियवरतरुणपुरिसा सेणियस्स रन्नो कोडुंबियपुरिसेहिं सद्दाविया समाणा हट्ठा ण्हाया जाव एगाभरण-गहित-णिज्जोया जेणामेव सेणिए राया तेणामेव उवागच्छंति २ सेणियं रायं एवं वदासी—संदिसह णं देवाणुप्पिया! जन्नं अम्हेहिं करणिज्जं १९। तते णं से सेणिए तं कोडुंबिय-वर-तरुणसहस्सं एवं वदासी गच्छह णं देवाणुप्पिया! मेहस्स कुमारस्स पुरिससहस्सवाहिणिं सीयं परिवहेह, तते णं तं कोडुंबि-यवरतरुणसहस्सं सेणिएणं रन्ना एवं वुत्तं संतं हट्ठं तुट्ठं तस्स मेहस्स कुमारस्स पुरिससहस्सवाहिणीं सीयं परिवहति २०। तए णं तस्स मेहस्स कुमारस्स पुरिससहस्सवाहिणिं सीयं दूरूढस्स समाणस्स इमे अट्ठट्ठमंगलया तप्पढमयाए पुरितो अहाणुपुव्वीए संपट्ठिया, तंजहा—सोत्थिय सिरिवच्छ

णंदियावत्त वद्धमाणग भद्दासण कलस मच्छ दप्पण जाव बहवे अत्थत्थिया जाव ताहिं इट्ठाहिं जाव अणवरयं अभिणंदंता य अभिथुणंता य एवं वदासी—जय २ णंदा ! जय २ णंदा जय २ भद्दा ! भद्दं ते अजियाइं जिणाहि इंदियाइं जियं च पालेहि समणधम्मं जियविग्घोऽविय वसाहि तं देव ! सिद्धिमज्झे, निहणाहि रागदोसमल्ले तवेणं धितिधणिय(वलिय)बद्ध-कच्छे, मद्दाहि य अट्ठकम्मसत्तू झाणेणं उत्तमेणं सुक्केणं, अप्पमत्तो पावय वितिमिरमणुत्तरं केवलं नाणं गच्छ य मोक्खं परमपयं सासयं च अयलं हंता परीसहचमुं, अभीओ परीसहोवसग्गाणं धम्मे ते अविग्घं भवउत्ति-कट्टु पुणो २ मंगलजय २ सद्दं पउंजंति २१ । तते णं से मेहे कुमारे रायगिहस्स नगरस्स मज्झंमज्झेणं निग्गच्छति २ जेणेव गुणसिलए चेतिए तेणामेव उवागच्छति २ पुरिससहस्सवाहिणीओ सीयाओ पच्चोरुभति २२ ॥ सूत्रं २८ ॥ तते णं तस्स मेहस्स कुमारस्स अम्मापियरो मेहं कुमारं पुरओ कट्टु जेणामेव समणे भगवं महावीरे तेणामेव उवागच्छंति २ त्ता समणं भगवं महावीरं तिखुत्तो आयाहिणं पयाहिणं करेंति २ त्ता वंदंति नमंसंति २ त्ता एवं वदासी—एस णं देवाणुप्पिया । मेहे कुमारे अम्हं एगे पुत्ते इट्ठे कंते जाव जीवियाउसासए हिययणंदि(हिययाणंद)जणए उंबर-पुप्फंपि(वि)व दुलहे सवणयाए किमंग पुण दरिसणयाए ?, से जहा नामए उप्पलेति वा पउमेति वा कुमुदेति वा पंके जाए जले संवड्ढिए नोवलिप्पइ पंकरएणं णोवलिप्पइ जलरएणं एवामेव मेहे कुमारे कामेसु जाए भोगेसु संवुड्ढे नोवलिप्पति कामरएणं नोवलिप्पति भोगरएणं, एस णं देवाणुप्पिया ! संसारभउव्विगे भीए जम्मणजरमरणाणं इच्छइ देवाणुप्पियाणं अंतिए मुंडे भवित्ता आगाराओ अणगारियं पव्वतित्तए, अम्हे णं देवाणुप्पियाणं सिस्सभिक्खं दलयामो, पडिच्छंतु णं देवाणुप्पिया ! सिस्सभिक्खं १ । तते णं से समणे भगवं महावीरे मेहस्स अम्मापिऊएहिं एवं वुत्ते समाणे एयमट्ठं सम्मं पडिसुणेति

२। तते णं से मेहे कुमारे समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतियाओ उत्तरपुरच्छिमं दिसिभागं अवक्कमति २ त्ता सयमेव आवरणमल्लालंकारं ओमुयति ३। तते णं से मेहकुमारस्स माया हंसलक्खणेणं पडसाडएणं आभरणमल्लालंकारं पडिच्छति २ हार-वारिधार-सिंदुवार-छिन्नमुत्तावलि-पगासाति अंसूणि विणिम्मुयमाणी २ रोयमाणी २ कंदमाणी २ विलवमाणी २ एवं वदासी—जतियव्वं जाया! घडियव्वं जाया! परक्कमियव्वं जाया! अस्सिं च णं अट्ठे नो पमादेयव्वं अम्हंपि णं एमेव मग्गे भवउत्तिकट्टु मेहस्स कुमारस्स अम्मापियरो समणं भगवं महावीरं वंदंति नमंसंति २ जामेव दिसिं पाउब्भूता तामेव दिसिं पडिगया ४॥ सूत्रं २१॥ तते णं से मेहे कुमारे सयमेव पंचमुट्ठियं लोयं करेति २ जेणामेव समणे ३ तेणामेव उवागच्छति २ समणं भगवं महावीरं तिक्खुत्तो आयाहिणं पयाहिणं करेति २ वंदति नमंसति २ एवं वदासी—आलित्ते णं भंते! लोए, पलित्ते णं भंते! लोए, आलित्तपलित्ते णं भंते! लोए जराए मरणेण य, से जहाणामए केई गाहावती आगारंसि झियायमाणंसि जे तत्थ भंडे भवति अप्पभा(सा)रे मोल्लगुरुए तं गहाय आयाए एगंतं अवक्कमति एस मे णित्थारिए समाणे पच्छा पुरा (पच्छाउरस्स) हियाए सुहाए खमाए णिस्सेसाए आणुगामियत्ताए भविस्सति एवामेव ममवि एगे आयाभंडे इट्ठे कंते पिए मणुन्ने मणामे एस मे नित्थारिए समाणे संसारवोच्छेयकरे भविस्सति, तं इच्छामि णं देवाणुप्पियाहिं सयमेव पव्वावियं सयमेव मुंडावियं सेहावियं सिक्खावियं सयमेव आयार-गोयर-विणयवेणइय-चरणकरण-जायामायावत्तियं धम्ममाइक्खियं १। तते णं समणे भगवं महावीरे मेहं कुमारं सयमेव पव्वावेति सयमेव आयार जाव धम्ममातिक्खइ—एवं देवाणुप्पिया! गंतव्वं चिट्ठितव्वं णिसीयव्वं तुयट्टियव्वं भुंजियव्वं भासियव्वं एवं उट्ठाए उट्ठाय पाणेहिं भूतेहिं जीवेहिं सत्तेहिं संजमेणं संजमितव्वं अस्सिं च णं अट्ठे णो पमादेयव्वं २।

तते णं से मेहे कुमारे समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतिए इमं एयारूवं धम्मियं उवएसं णिसम्म सम्मं पडिवज्जइ तमाणाए तह गच्छइ तह चिट्ठइ जाव उट्ठाए उट्ठाय पाणेहिं भूतेहिं जीवेहिं सत्तेहिं संजमइ ३ ॥ सूत्रं ३० ॥

जं दिवसं च णं मेहे कुमारे मुंडे भवित्ता आगाराओ अणगारियं पव्वइए तस्स णं दिवसस्स पुव्वावररत्तकालसमयंसि समणाणं निग्गंथाणं अहारातिणियाए सेज्जासंथारएसु विभज्जमाणेसु मेहकुमारस्स दारमूले सेज्जासंथारए जाए यावि होत्था १। तते णं समणा णिग्गंथा पुव्वरत्ता-वरत्तकालसमयंसि वायणाए पुच्छणाए परियट्टणाए धम्माणुजोगचिंताए य उच्चारस्स य पासवणस्स य अइगच्छमाणा य निग्गच्छमाणा य अप्पेग-तिया मेहं कुमारं हत्थेहिं संघट्टंति एवं पाएहिं सीसे पोट्टे कायंसि अप्पे-गतिया ओलंडेति अप्पेगइया पोलंडेइ अप्पेगतिया पाय-रय-रेणुगुंडियं करेंति २। एवंमहालियं च णं रयणीं मेहे कुमारे णो संचाएति खणमवि अच्छिं निमीलित्तए २। तते णं तस्स मेहस्स कुमारस्स अयमेयारूवे अब्भत्थिए जाव समुप्पज्जित्था—एवं खलु अहं सेणियस्स रन्नो पुत्ते धारि-णीए देवीए अत्तए मेहे जाव समणयाए, तं जया णं अहं अगारमज्झे व(आव)सामि तया णं मम समणा णिग्गंथा आढायंति परिजाणंति सक्कारेंति सम्माणेंति अट्ठाइं हेऊतिं पसिणातिं कारणाइं वाकर-णाइं आतिक्खंति इट्ठाहिं कंताहिं वग्गूहिं आलवेंति संलवेंति ३। जप्प-भितिं च णं अहं मुंडे भवित्ता आगाराओ अणगारियं पव्वइए तप्पभितिं च णं मम समणा नो आढायंति जाव नो संलवंति, अदुत्तरं च णं मम समणा णिग्गंथा राओ पुव्वरत्तावरत्तकालसमयंसि वायणाए पुच्छणाए जाव महालियं च णं रत्तिं नो संचाएमि अच्छिं णिमिलावेत्तए, तं सेयं खलु मज्झं कल्लं पाउप्पभायाए रयणीए जाव तेयसा जलंते समणं भगवं महावीरं आपुच्छित्ता पुणरवि आगारमज्झे वसित्तएत्तिकट्टु एवं संपेहेति

२ अट्ट-दुहट्ट-वसट्ट-माणसगए णिरयपडिरूवियं च णं तं रयणिं खवेति २ कल्लं पाउप्पभायाए सुविमलाए रयणीए जाव तेयसा जलंते जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणामेव उवागच्छति २ तिखुत्तो आदाहिणं पदाहिणं करेइ २ वंदइ नमंसइ २ जाव पज्जुवासइ ४ ॥ सू० ३१ ॥

तते णं मेहाति समणे भगवं महावीरे मेहं कुमारं एवं वदासी—से णूणं तुमं मेहा ! राओ पुव्वरत्तावरत्तकालसमयंसि समणेहिं निग्गंथेहिं वायणाए पुच्छणाए जाव महालियं च णं राइं णो संचाएसि मुहुत्तमवि अच्छि निमिलावेत्तए १। तते णं तुब्भं मेहा ! इमे एयारूवे अब्भत्थिए जाव समुपज्जित्था—जया णं अहं अगारमज्झे वसामि तया णं मम समणा निग्गंथा आढायंति जाव परियाणंति, जप्पभिति च णं मुंडे भवित्ता आगाराओ अणगारियं पव्वयामि तप्पभित्ति च णं मम समणा णो आढायंति जाव नो परियाणंति अदुत्तरं च णं समणा निग्गंथा राओ अप्पेगतिया वायणाए जाव पायरयरेणुगुंडियं करेंति २। तं सेयं खलु मम कल्लं पाउप्पभायाए (रयणीए) समणं भगवं महावीरं आपुच्छित्ता पुणरवि आगारमज्झे आवसित्तएत्तिकट्टु एवं संपेहेसि २ अट्टदुहट्ट-वसट्टमाणसे जाव रयणीं खवेसि २ जेणामेव अहं तेणामेव हव्वमागए, से णूणं मेहा ! एस अत्थे समट्ठे ?, हंता अत्थे समट्ठे ३। एवं खलु मेहा ! तुमं इओ तच्चे अईए भवग्गहणे वेयड्ढगिरिपायमूले वणयरेहिं णिव्वत्तियणामधेज्जे सेते संखदल-उज्जल-विमल-निम्मल-दहिघण-गोखीर-फेण-रयणियरप्पयासे सत्तुस्सेहे णवायए दसपरिणाहे सत्तंगपतिट्ठिए समे सुसंठिए सोमे समिए (सोम्मसम्मिए) सुरूवे पुरतो उदग्गे समूसियसिरे सुहासणे पिट्ठओ वराहे अतियाकुच्छी अच्छिद्दकुच्छी अलंबकुच्छी पलंब-लंबोदराहरकरे धणुपट्ठागिइ-विसिट्ठपुट्ठे अल्लीण-पमाणजुत्त-वट्टियापीवर-गत्तावरे (अब्भुग्गय-मउल-मल्लिया-धवलदंते आनामिय-चावललिय-संवेल्लितग्गसुंडे)

अल्लीणपमाण-जुत्तपुच्छे पडिपुन्न-सुचारु-कुम्मचलणे पंडुर-सुविसुद्ध-निद्ध-णि-रुवहय-विंसतिणहे छद्दंते सुमेरुप्पभे नामं हत्थिराया होत्था, तत्थ णं तुमं मेहा ! बहूहिं हत्थीहि य हत्थीणियाहि य लोट्टएहि य लोट्टियाहि य कलभेहि य कलभियाहि य सद्धिं संपरिवुडे हत्थिसहस्सणायए देसए पागट्टी पट्ठवए जूहवई वंदपरियट्टए अन्नेसिं च बहूणं एकल्लाणं हत्थिकल-भाणं आहेवच्चं जाव विहरसि ४। तते णं तुमं मेहा ! णिच्चप्पमत्ते सइं पललिए कंदप्परई मोहणसीले अवितण्हे कामभोगतिसिए बहूहिं हत्थीहि य जाव संपरिवुडे वेयड्ढगिरिपायमूले गिरीसु य दरीसु य कुहरेसु य कंदरासु य उज्झरेसु य निज्झरेसु य वियरएसु य गड्डासु य पल्लवेसु य चिल्ललेसु य कडयेसु य कडयपल्ललेसु य तडीसु य वियडीसु य टंकेसु य कूडेसु य सिहरेसु य पब्भारेसु य मंचेसु य मालेसु य काणणेसु य वणेसु य वणसंडेसु य वणराईसु य नदीसु य नदीकच्छेसु य जूहेसु य संगमेसु य वावीसु य पोक्खरिणीसु य दीहियासु य गुंजालियासु य सरेसु य सरपंतियासु य सरसरपंतियासु य वणयरएहिं दिन्नवियारे बहूहिं हत्थीहि य जाव सद्धिं संपरिवुडे बहुविह-तरुपल्लव-पउर-पाणि-यतणे निब्भए निरुव्विग्गे सुहंसुहेणं विहरसि ५। तते णं तुमं मेहा ! अन्नया कयाई पाउस-वरिसारत्त-सरय-हेमंत-वसंतेसु कमेण पंचसु उऊसु समतिक्कंतेसु गिम्हकालसमयंसि जेट्ठामूलमासे पायवघंस-समुट्ठिएणं सुक्क-तणपत्त-कयवर-मारुत-संजोग-दीविएणं महाभयंकरेणं हुयवहेणं वणदवजा-ला-संपलित्तेसु वणंतेसु धूमाउलासु दिसासु महावायवेगेणं संघट्टिएसु छिन्नजालेसु आवयमाणेसु पोलरुक्खेसु अंतो २ झियायमाणेसु मयकु-हित-विणिविट्ठ-किमिय(ण)(मव)-कद्दम-नदीवियरग-जिण्ण-पाणीयंतेसु वणंतेसु भिंगारक-दीणकंदियरवेसु खर-फरुस-अणिट्ठ-रिट्ठ-वाहित-विद्दुमग्गेसु दुमेसु तण्हावस-मुक्क-पक्ख-पयडिय-जिब्भतालुय-असंपुडिततुंड-पक्खिसंघेसु ससं-

तेसु गिम्ह-उम्हउराह--वाय-खरफरुस-चंडमारुय--सुक्कतणपत्त-कयवर--वाउलि-भमंतदित्त-संभंत-सावयाउल--मिगतराहा-बद्धचिरहपट्टेसु गिरिवरेसुसंवट्टिएसु तत्थमिय-पसव-सिरीसिवेसु अवदालिय-वयण-विवर-णिल्लालियग्गजीहे महंततुंब-इव-पुन्नकन्ने संकुचियथोर-पीवरकरे ऊसियलंगूले पीणाइय-विरस-रडियसद्देणं फोडयंतेव अंबरतलं पायदद्दरएणं कंपयंतेव मेइणितलं विणिम्मुयमाणे य सीयारं सव्वतो समंता वल्लिवियाणाइं छिंदमाणे रुक्खसहस्साति तत्थ सुबहूणि णोल्लायंते विणट्ठरट्ठेव्व णरवरिंदे वायाइद्धेव्व पोए मंडलवाएव्व परिब्भमंते अभिक्खणं २ लिंडणियरं पमुंचमाणे २ बहूहिं हत्थीहि य जाव सद्धिं दिसोदिसिं विप्पलाइत्था ६। तत्थ णं तुमं मेहा! जुन्ने जराजज्जरियदेहे आउरे झंझिए पिवासिए दुब्बले किलंते नट्ठसुइए मूढदिसाए सयातो जूहातो विप्पहूणे वणदवजालापारद्धे उराहेण तराहाए य छुहाए य परब्भाहए समाणे भीए तत्थे तसिए उव्विग्गे संजातभए सव्वतो समंता आधावमाणे परिधावमाणे एगं च णं महं सरं अप्पोदयं पंकबहुलं अतित्थेणं पाणियपाए उइन्नो ७। तत्थ णं तुमं मेहा! तीरमतिगते पाणियं असंपत्ते अंतरा चेव सेयंसि विसन्ने, तत्थ णं तुमं मेहा! पाणियं पाइस्सामित्तिकट्टु हत्थं पसारेसि, सेवि य ते हत्थे उदगं न पावति, तते णं तुमं मेहा! पुणरवि कायं पच्चुद्धरिस्सामीतिकट्टु बलियतरायं पंकंसि खुत्ते ८। तते णं तुमे मेहा! अन्नया कदाइ एगे चिरनिज्जूढे गयवरजुवाणए सगाओ जूहाओ करचरण-दंत-मुसलप्पहारेहिं विप्परद्धे समाणे तं चेव महद्दहं पाणीयं पादेउं समोयरेति ९। तते णं से कलभए तुमं पासति २ तं पुव्ववेरं समरति २ आसुरुत्ते रुट्ठे कुविए चंडिकिए मिसिमिसेमाणे जेणेव तुमं तेणेव उवागच्छति २ तुमं तिक्खेहिं दंतमुसलेहिं तिक्खुत्तो पिट्ठतो उच्छुभति उच्छुभित्ता पुव्ववेरं निज्जाएति २ हट्ठतुट्ठे पाणियं पियति २ जामेव दिसिं पाउब्भूए तामेव दिसिं पडिगए १०। तते णं तव मेहा! सरीरगंसि वेयणा पाउब्भवित्था

उज्जला विउला (तिउला) कक्खडा जाव दुरहियासा पित्तज्जर-परिगयसरीरे दाहवक्कंतीए यावि विहरित्था ११। तते णं तुमं मेहा ! तं उज्जलं जाव दुरहियासं सत्तराइंदियं वेयणं वेदेसि सवीसं वाससतं परमाउं पालइत्ता अट्टवसट्टदुहट्टे कालमासे कालं किच्चा इहेव जंबुद्दीवे भारहे वासे दाहिणड्ढभरहे गंगाए महाणदीए दाहिणे कूले विंझगिरियामूले एगेणं मत्तवर-गंधहत्थिणा एगाए गयवरकरेणूए कुच्छिंसि गयकलभए जणिते १२। तते णं सा गयकलभिया णवण्हं मासाणं वसंतमासंमि तुमं पयाया, तते णं तुमं मेहा ! गब्भवासाओ विप्पमुक्के समाणे गयकलभए यावि होत्था, रत्तुप्पल-रत्तसूमालए जासुमणारत्त-पारिजत्तय-लक्खारस-सरसकुंकुम-संझब्भरागवन्ने इट्ठे णियगस्स जूहवइणो गणियायार-कणेरु-कोत्थहत्थी अणेग-हत्थिसय-संपरिवुडे रम्मेसु गिरिकाणणेसु सुहंसुहेणं विहरसि १३। तते णं तुमं मेहा ! उम्मुक्कबालभावे जोव्वणगमणुपत्ते जूहवइणा कालधम्मुणा संजुत्तेणं तं जूहं सयमेव पडिवज्जसि १४। तते णं तुमं मेहा ! वणयरेहिं निव्वत्तिय-नामधेज्जे जाव चउदंते मेरुप्पभे हत्थिरयणे होत्था, तत्थ णं तुमं मेहा ! सत्तुस्सेहे (सत्तंगपइट्ठिए) तहेव जाव पडिरूवे, तत्थ णं तुमं मेहा ! सत्तसइयस्स जूहस्स आहेवच्चं जाव अभिरमेत्था, तते णं तुमं अन्नया कयाइ गिम्हकाल-समयंसि जेट्ठामूले वणदवजालापलित्तेसु वणंतेसु सुधूमाउलासु दिसासु जाव मंडलवाएव्व तते णं परिब्भमंते भीते तत्थे जाव संजायभए बहूहिं हत्थीहि य जाव कलभियाहि य सद्धिं संपरिवुडे सव्वतो समंता दिसोदिसिं विप्पला-इत्था, तते णं तव मेहा ! तं वणदवं पासित्ता अयमेयारूवे अज्झत्थिए जाव समुप्पज्जित्था—कहिणणं मन्ने मए अयमेयारूवे अग्गिसंभवे अणुभूयपुव्वे ?, तव मेहा ! लेस्साहिं विसुज्झमाणीहिं अज्झवसाणेणं सोहणेणं सुभेणं परि-णामेणं तयावरणिज्जाणं कम्माणं खओवसमेणं ईहापूह-मग्गण-गवेसणं करेमाणस्स सन्निपुव्वे जातिसरणे समुप्पज्जित्था १५। तते णं तुमं मेहा !

एयमट्ठं सम्मं अभिसमेमि, एवं खलु मया अतीए दोच्चे भवग्गहणे इहेव जंबुद्दीवे २ भारहे वासे वियड्ढगिरिपायमूले जाव तत्थ णं महया अयमेयारूवे अग्गिसंभवे समणुभूए १६। तते णं तुमं मेहा! तस्सेव दिवसस्स पुव्वावर(पच्चावर)राहकालसमयंसि नियएणं जूहेणं सद्धिं समन्नागए यावि होत्था, तते णं तुमं मेहा! सतुस्सेहे जाव सन्निपुव्वे जाइस्सरणे चउद्दंते मेरुप्पभे नाम हत्थी होत्था १७। तते णं तुज्झं मेहा! अयमेयारूवे अज्झत्थिए जाव समुप्पज्जित्था—तं सेयं खलु मम इयाणिं गंगाए महानदीए दाहिणिल्लंसि कूलंसि विंझगिरिपायमूले दवग्गिसंजाय(संताण)कारणट्ठा सएणं जूहेणं महालयं मंडलं घाइत्तएत्तिकट्टु एवं संपेहेसि २ सुहंसुहेणं विहरसि १८। तते णं तुमं मेहा! अन्नया कदाइं पढमपाउसंसि महावुट्ठिकायंसि सन्निवइयंसि गंगाए महानदीए अदूरसामंते बहूहिं हत्थीहिं जाव कलभियाहि य सत्तहि य हत्थिसएहिं संपरिवुडे एगं महं जोयणपरिमंडलं महतिमहालयं मंडलं घाएसि, जं तत्थ तणं वा पत्तं वा कट्ठं वा कंटए वा लया वा वल्ली वा खाणुं वा रुक्खे वा खुवे वा तं सव्वं तिखुत्तो आहुणिय एगंते एडेसि २ पाएणा उट्ठवेसि हत्थेणं गेण्हसि [२ त्ता] तते णं तुमं मेहा! तस्सेव मंडलस्स अदूरसामंते गंगाए महानदीए दाहिणिल्ले कूले विंझगिरिपायमूले गिरीसु य जाव विहरसि १९। तते णं मेहा! अन्नया कदाइ मज्झिमए वरिसारत्तंसि महाविट्ठिकायंसि सन्निवइयंसि जेणेव से मंडले तेणेव उवागच्छसि २ दोच्चंपि तच्चंपि मंडलं घाएसि २ एवं चरिमे वासारत्तंसि महावुट्ठिकायंसि सन्निवइयमाणंसि जेणेव से मंडले तेणेव उवागच्छसि २ तच्चंपि मंडलघायं करेसि जं तत्थ तणं वा जाव सुहंसुहेणं विहरसि २०। अह मेहा! तुमं गइंदभावंमि वट्टमाणो कमेणं नलिणिवण-विवहणगरे हेमंते कुंदलोद्ध-उद्धत-तुसारपउरंमि अतिक्कंते अहिणवे गिम्हसमयंसि पत्ते वियट्टमाणेसु वणेसु वणकरेणु(वणरेणु)-विविहदिण्णकयपंसुघाओ

कीलाकयपंसुघाओ तुमं कुसुम(उउयकुसुम)कय-चामरकन्नपूर-परिमंडियाभि-रामो मयवस-विगसंत-कडतडकिलिन्न गंधमदवारिणा सुरभिजणियगंधो करेणु-परिवारिओ उउसमत्त-जणितसोभो काले दिणयर-करपयंडे परिसोसिय-तरुवर-सिहर-सिरिधराये (सीहरभीमतर-दंसणिज्जे) भिंगार-रवंतभेरवरवे णाणा-विह-पत्तकट्ठ-तण-कयवरुद्धत पइमारुयाइद्ध-नहयल-पडुममणे(दुमगणे) वाउलि-यादारुणतरे तगहवस-दोसदूसिय-भमंत-विविह-सावयसमाउले भीमदरिसणिज्जे वट्टंते दारुणंमि गिम्हे मारुतवस-पसर-पसरिय-वियंभिएणं अब्भहिय-भीमभेरव-रवप्पगारेणं महुधारापडिय-सित्तउद्धायमाण धगधगधगं-तप्पंदु(सद्दु) द्धुएणं दित्ततरसफुलिंगेणं धूममालाउलेणं सावयसयंतकरणेणं अब्भहियवण-दवेणं जालालोविय-निरुद्ध-धूमंधकारभीयो आयपाल(आयवालोय)महंत-तुंबइ-यपुन्नकन्नो आकुंचिय-थोर-पीवरकरो भयवस-(कराभोयसव्व)भयंत दित्तनयणो वेगेण महामेहोव्व पवणोल्लियामहल्लरूवो जेणेव कओ ते पुरा दवग्गिभय-भीयहियएणं अवगय-तणप्पएस-रुक्खो रुक्खोद्देसो दवग्गि-संताणकारण-ट्ठाए जेणेव मंडले तेणेव पहारेत्थ गमणाए, एक्को ताव एस गमो २१। तते णं तुमं मेहा! अन्नया कदाइं कमेणं पंचसु उऊसु समतिक्कंतेसु गिम्हकाल-समयंसि जेट्ठामूले मासे पायवसंघंस-समुट्ठिएणं जाव संवट्टिएसु मियपसु-पक्खि-सिरीसिवे दिसो दिसिं विप्पलायमाणेसु तेहिं बहूहिं हत्थीहि य जाव कलभियाहि य सद्धिं जेणेव मंडले तेणेव पहारेत्थ गमणाए, तत्थ णं अण्णे बहवे सीहा य वग्घा य विगया य दीविया य अच्छा य तरच्छा य पारासरा य सरभा य सियाला विराला सुणहा कोला ससा कोकंतिया चित्ता चिल्लला पुव्वपविट्ठा अग्गि-भयविहुया एगयओ बिलधम्मेणं चिट्ठंति २२। तए णं तुमं मेहा! जेणेव से मंडले तेणेव उवागच्छसि २ त्ता तेहिं बहूहिं सीहेहिं जाव चिल्ललएहि य एगयओ बिलधम्मेणं चिट्ठसि, तते णं तुमं मेहा! पाएणं गत्तं कंडुइस्सामीतिकट्टु पाए उक्खित्ते तंसि च णं अंतरंसि

अन्नेहिं बलवन्तेहिं सत्तेहिं पणोलिज्जमाणे २ ससए अणुपविट्ठे २३। तते णं तुमं मेहा ! गायं कंडुइत्ता पुणरवि पायं पडिनिक्खविस्सामित्तिकट्टु तं ससयं अणुपविट्ठं पाससि २ पाणाणुकंपयाए भूयाणुकंपाए जीवाणुकंपाए सत्ताणुकंपयाए सो पाए अंतरा चेव संधारिए, नो चेव णं णिक्खित्ते, तते णं तुमं मेहा ! ताए पाणाणुकंपयाए जाव सत्ताणुकंपयाए संसारे परित्तीकत्ते माणुस्साउए निबद्धे २४। तते णं वणदवे अड्ढातिज्जातिं रातिंदियाइं तं वणं झामेइ २ निट्ठिए उवरए उवसंते विज्झाए यावि होत्था, तते णं ते बहवे सीहा य जाव चिल्लला य तं वणदवं निट्ठियं जाव विज्झायंत्ति पासंति २ त्ता अग्गिभयविप्पमुक्का तण्हाए य छुहाए य परब्भाहया समाणा मंडलातो पडिनिक्खमंति २ सव्वतो समंता विप्पसरित्था, [तए णं ते बहवे हत्थि जाव छुहाए य परब्भाहया समाणा तओ मंडलाओ पडिनिक्खमंति २ दिसो दिसिं विप्पसरित्था,] २५। तए णं तुमं मेहा ! जुन्ने जराजज्जरियदेहे सिढिल-वलित-तयापिणद्धगत्ते दुब्बले किलंते जुंजिए पिवासिते अत्थामे अबले अपरक्कमे अचंकमणो वा ठाणुखंडे वेगेण विप्पसरिस्सामित्तिकट्टु पाए पसारेमाणे विज्जुहते विव रयतगिरिपब्भारे धरणितलंसि सव्वंगेहि य सन्निवइए, तते णं तव मेहा ! सरीरगंसि वेयणा पाउब्भूता उज्जला जाव दाहवक्कंतिए यावि विहरसि, तते णं तुमं मेहा ! तं उज्जलं जाव दुरहियासं तिन्नि राइंदियाइं वेयणं वेएमाणे विहरित्ता एगं वाससतं परमाउं पालइत्ता इहेव जंबुद्दीवे २ भारहे वासे रायगिहे नयरे सेणितस्स रन्नो धारिणीए देवीए कुच्छिंसि कुमारत्ताए पच्चायाए २६ ॥ सूत्रं ३२ ॥ तते णं तुमं मेहा ! आणुपुव्वेणं गब्भवासाओ निक्खंते समाणे उम्मुक्कबालभावे जोव्वणगमणुपत्ते मम अंतिए मुंडे भवित्ता आगाराओ अणगारियं पव्वइए, तं जति जाव तुमे मेहा ! तिरिक्ख-जोणिय-भावमुवगएणं अपडिलद्ध-संमत्तरयणलंभेणं से पाणे (पाये) पाणाणुकंपयाए जाव अंतरा चेव संधारिते नो चेव णं निक्खित्ते

किमंग पुण तुमं मेहा ! इयाणि विपुलकुल-समुब्भवेणं निरुवहय-सरीर-दंत(पत्त)लद्धपंचिंदिएणं एवं उट्ठाण-बल-वीरिय-पुरिसगार-परक्कममंजुत्तेणं मम अंतिए मुंडे भवित्ता आगारातो अणगारियं पव्वतिए समाणे समणाणं निग्गंथाणं रात्रो पुव्वरत्तावरत्त-कालसमयंसि वायणाए जाव धम्माणुओगचिंताए य उच्चारस्स वा पासवणस्स वा अतिगच्छमाणाण य निग्गच्छमाणाण य हत्थ-संघट्टणाणि य पायसंघट्टणाणि य जाव रयरेणुगुंडणाणि य नो सम्मं सहसि खमसि तितिक्खसि अहियासेसि ? १ । तते णं तस्स मेहस्स अणुगा-रस्स समणस्स भगवतो महावीरस्स अंतिए एतमट्ठं सोच्चा णिसम्म सुभेहिं परिणामेहिं पसत्थेहिं अज्झवसाणेहिं लेस्साहिं विसुज्झमाणीहिं तयावरणि-ज्जाणं कम्माणं खओवसमेणं ईहावू(पो)ह-मग्गण-गवेसणं करेमाणस्स सन्निपुव्वे जातीसरणे समुप्पन्ने, एतमट्ठं सम्मं अभिसमेति २ । तते णं से मेहे कुमारे समणेणं भगवया महावीरेणं संभारियपुव्व-(भवे)जातीसंभरणे दुगुणाणीयसंवेगे आणंदयंसुपुन्नमुहे हरिसवसेणं धाराहयकदंबकं पिव समुस्स-सितरोमकूवे समणं भगवं महावीरं वंदति नमंसति २ त्ता एवं वदासी—अज्ज-प्पभिती णं भंते ! मम दो अच्छीणि मोत्तूणं अवसेसे काए समणाणं णिग्गंथाणं निसट्ठे त्तिकट्टु पुणरवि समणं भगवं महावीरं वंदति नमंसति २ एवं वदासी—इच्छामि णं भंते ! इयाणिं दोच्चंपि सयमेव पव्वावियं सयमेव मुंडावियं जाव सयमेव आयारगोयरं जायामायावत्तियं धम्ममातिक्खह ३ । तए णं समणे भगवं महावीरे मेहं कुमारं सयमेव पव्वावेइ जाव जायामायावत्तियं धम्ममाइक्खइ, एवं देवाणुप्पिया ! गन्तव्वं एवं चिट्ठियव्वं एवं णिसीयव्वं एवं तुयट्टियव्वं एवं भुंजियव्वं भासियव्वं उट्ठाय २ पाणाणं भूयाणं जीवाणं सत्ताणं संजमेणं संजमितव्वं, तते णं से मेहे समणस्स भगवतो महावीरस्स अयमेयारूवं धम्मियं उवएसं सम्मं पडिच्छति २ तह चिट्ठति जाव संजमेणं संजमति, तते णं से मेहे अणगारे जाए ईरियासमिए अणगारवन्नओ भाणियव्वो ४ ।

तते णं से मेहे अणगारे समणस्स भगवतो महावीरस्स अंतिए एतारूवाणं थेराणं सामातियमातियाणि एक्कारस अंगाति अहिज्जति २ त्ता बहूहिं चउत्थ-छट्ठट्ठम-दसम दुवालसेहिं मासद्धमासखमणेहिं अप्पाणं भावेमाणे विहरति, तते णं समणे भगवं महावीरे रायगिहाओ नगराओ गुणसिलाओ चेति-याओ पडिनिक्खमति २ बहिया जणवयविहारं विहरति ५ ॥ सूत्रं ३३ ॥ तते णं से मेहे अणगारे अन्नया कदाइ समणं भगवं महावीरं वंदति नमंसति २ एवं वदासी—इच्छामि णं भंते ! तुब्भेहिं अब्भणुन्नाते समाणे मासियं भिक्खुपडिमं उवसंपज्जित्ताणं विहरित्तए, अहासुहं देवाणुप्पिया ! मा पडिबन्धं करेह १। तते णं से मेहे समणेणं भगवया महावीरेण अब्भ-णुन्नाते समाणे मासियं भिक्खुपडिमं उवसंपज्जित्ताणं विहरति, मासियं भिक्खुपडिमं अहासुत्तं अहाकप्पं अहामग्गं जाव सम्मं काएणं फासेति पालेति सोभेति तीरेति किट्टेति सम्मं काएण फासेत्ता पालित्ता सोभेत्ता तीरेत्ता किट्टेत्ता पुणरवि समणं भगवं महावीरं वंदति नमंसति २ त्ता एवं वदासी—इच्छामि णं भंते ! तुब्भेहिं अब्भणुन्नाते समाणे दोमासियं भिक्खुपडिमं उवसंपज्जित्ता णं विहरित्तए २। अहासुहं देवाणुप्पिया ! मा पडिबन्धं करेह, जहा पढमाए अभिलावो तहा दोचाए तच्चाए चउत्थाए पंचमाए छम्मासि-याए सत्तमासियाए पढमसत्तराइंदियाए दोच्चं सत्तरातिंदियाए तइयं सत्त-रातिंदियाए अहोरातिंदियाएवि एगराइंदियाएवि ३। तते णं से मेहे अण-गारे बारस भिक्खुपडिमाओ सम्मं काएणं फासेत्ता पालेत्ता सोभेत्ता तीरेत्ता किट्टेत्ता पुणरवि वंदति नमंसइ २ त्ता एवं वदासी—इच्छामि णं भंते ! तुब्भेहिं अब्भणुन्नाए समाणे गुणरतणसंवच्छरं तवोकम्मं उवसंपज्जिता णं विहरित्तए, अहासुहं देवाणुप्पिया ! मा पडिबंधं करेह ४। तते णं से मेहे अणगारे पढमं मासं चउत्थंचउत्थेणं अणिक्खित्तेणं तवोकम्मेणं दिया ठाणुक्कु-डुए सूराभिमुहे आयावणभूमीए आयावेमाणे रत्तिं वीरासणेणं अवाउडएणं,

दोच्चं मासं छट्ठंछट्ठेणं अणिक्खित्तणं जाव अवाउडएणं, तच्चं मासं अट्ठमंअट्ठमेणं अणिक्खित्तणं जाव अवाउडएणं, चउत्थं मासं दसमं २ अणिक्खित्तेणं तवोकम्मेणं दिया ठाणुक्कुडूए सूराभिमूहे आयावणभूमीए आयावेमाणे रत्तिं वीरासणेणं अवाउडएणं, पंचमं मासं दुवालसमं २ अणिक्खित्तेणं तवोकम्मेणं दिया ठाणुक्कुडूए सूराभिमुहे आयावणभूमिए आयावेमाणे रत्तिं वीरासणेणं अवाउडतेणं ५। एवं खलु एएणं अभिलावेणं छट्ठे चोद्दसमं २ सत्तमे सोलसमं २ अट्ठमे अट्ठारसमं २ नवमे वीसतिमं २ दसमे बावीसतिमं २ एक्कारसमे चउव्वीसतिमं २ बारसमे छव्वीसतिमं २ तेरसमे अट्ठावीसतिमं २ चोद्दसमे तीसइमं २ पंचदसमे बत्तीसतिमं २ सोलसमे चउत्तीसतिमं २ अणिक्खित्तेणं तवोकम्मेणं दिया ठाणुक्कुडुएणं सूराभिमूहे आयावणभूमीए आयावेमाणे रत्तिं वीरासणेण य अवाउडतेण य ६। तते णं से मेहे अणगारे गुणरयणसंवच्छरं तवोकम्मं अहासुत्तं जाव सम्मं काएणं फासेइ पालेइ सोभेइ तीरेइ किट्टेइ, अहासुत्तं अहाकप्पं अहामग्गं फासेत्ता पालेत्ता सोहेत्ता तीरेत्ता किट्टेत्ता समणं भगवं महावीरं वंदति नमंसति २ बहूहिं चउत्थ-छट्ठट्ठमदसमदुवालसेहिं मासद्धमासखमणेहिं विचित्तेहिं तवोकम्मेहिं अप्पाणं भावेमाणे विहरति ७॥ सूत्रं ३४॥ तते णं से मेहे अणगारे तेणं उरालेणं विपुलेणं सस्सिरीएणं पयत्तेणं पग्गहिएणं कल्लाणेणं सिवेणं धन्नेणं मंगल्लेणं उदग्गेणं उदारएणं उत्तमेणं महाणुभावेणं तवोकम्मेणं सुक्के भुक्खे लुक्खे निम्मंसे निस्सोणिए किडिकिडियाभूए अट्ठिचम्मावणद्धे किसे धमणिसंतए जाते यावि होत्था, जीवं जीवेणं गच्छति जीवं जीवेणं चिट्ठति भासं भासित्ता गिलायति भासं भासमाणे गिलायति भासं भासिस्सामित्ति गिलायति, से जहा नामए इंगालसगडियाइ वा कट्ठसगडियाइ वा पत्तसगडियाइ वा तिलसगडियाइ वा एरंडकट्ठसगडियाइ वा उण्हे दिन्ना सुक्का समाणी ससद्दं गच्छइ, ससद्दं चिट्ठति, एवामेव मेहे अणगारे ससद्दं गच्छइ ससद्दं चिट्ठइ, उवचिए तवेणं

अवचिते मंससोणिएणं हुयासणे इव भासरासिपरिच्छन्ने तवेणं तेएणं तवतेयसिरीए अतीव अतीव उवसोभेमाणे २ चिट्ठति १। तेणं कालेणं तेणं समएणं समणे भगवं महावीरे आइगरे तित्थगरे जाव पुव्वाणुपुव्विं चरमाणे गामाणुगामं दुतिज्जमाणे सुहंसुहेणं विहरमाणे जेणामेव रायगिहे नगरे जेणामेव गुणासिलए चेतिए तेणामेव उवागच्छति २ त्ता अहापडिरूवं उग्गहं उग्गिण्हित्ता संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे विहरति २। तते णं तस्स मेहस्स अणगारस्स राओ पुव्वरत्तावरत्तकालसमयंसि धम्मजागरियं जागरमाणस्स अयमेयारूवे अज्झत्थिते जाव समुपज्जित्था—एवं खलु अहं इमेणं उरालेणं तहेव जाव भासं भासिस्सामीति गिलामि तं अत्थि ता मे उट्ठाणे कम्मे बले वीरिए पुरिसक्कारपरक्कमे सद्धा धिई संवेगे तं जाव ता मे अत्थि उट्ठाणे कम्मे बले वीरिए पुरिसगारपरक्कमे सद्धा धिई संवेगे जाव इमे धम्मायरिए धम्मोवदेसए समणे भगवं महावीरे जिणे सुहत्थी विहरति ताव ताव मे सेयं कल्लं पाउप्पभाताए रयणीए जाव तेयसा जलंते सूरे समणं ३ वंदित्ता नमंसित्ता समणेणं भगवता महावीरेणं अब्भणुन्नायस्स समाणस्स सयमेव पंच महव्वयाइं आरुहित्ता गोयमादिए समणे निग्गंथे निग्गंथीओ य खामेत्ता तहारूवेहिं कडाईहिं थेरेहिं सद्धिं विउलं पव्वयं सणियं सणियं दुरूहति दुरूहित्ता सयमेव मेहघणसन्निगासं पुढविसिलापट्टयं पडिलेहेत्ता संलेहणाभूसणाए भूसियस्स भत्तपाण-पडियाइक्खितस्स पाओवगयस्स कालं अणवकंखमाणस्स विहरित्तए ३। एवं संपेहेति २ कल्लं पाउप्पभायाए रयणीए जाव जलंते जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छति २ समणं ३ तिक्खुत्तो आदाहिणं पयाहिणं करेइ २ त्ता वंदति नमंसति २ नच्चासन्ने नातिदूरे सुस्सूसमाणे नमंसमाणे अभिमुहे विणएणं पंजलियपुडे पज्जुवासति ४। मेहेत्ति समणे भगवं महावीरे मेहं अणगारं एवं वदासी—से णूणं तव मेहा ! राओ पुव्व-

रत्तावरत्तकालसमयंसि धम्मजागरियं जागरमाणस्स अयमेयारूवे अज्झत्थिते जाव समुपज्जित्था—एवं खलु अहं इमेणं ओरालेणं जाव जेणेव अहं तेणेव हव्वमागए, से णूणं मेहा अट्ठे समट्ठे ?, हंता अत्थि, अहासुहं देवाणुप्पिया ! मा पडिबंधं करेह ५ । तते णं से मेहे अणगारे समणेणं भगवया महावीरेणं अब्भणुन्नाए समाणे हट्ठ जाव हियए उट्ठाए उट्ठेइ २ त्ता समणं ३ तिक्खुत्तो आयाहिणं पयाहिणं करेइ २ त्ता वंदइ नमंसइ २ त्ता सयमेव पंच महव्वयाइं आरुभेइ २ त्ता गोयमाति समणे निग्गंथे निग्गंथीओ य खामेति खामेत्ता य तहारूवेहिं कडाईहिं थेरेहिं सद्धिं विपुलं पव्वयं सणियं २ दुरूहति २ सयमेव मेहघण-सन्निगासं पुढविसिलापट्टयं पडिलेहति २ उच्चारपासवणभूमिं पडिलेहति २ दब्भसंथारगं संथरति २ दब्भसंथारगं दुरूहति २ पुरत्थाभिमुहे संपलियंकनिसन्ने करयलपरिग्गहियं सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं कट्टु एवं वदासी—नमोऽत्थु णं अरिहंताणं भगवंताणं जाव संपत्ताणं, णमोऽत्थु णं समणस्स भगवओ महावीरस्स जाव संपाविउकामस्स मम धम्मायरियस्स, वंदामि णं भगवंतं तत्थगयं इहगए पासउ मे भगवं तत्थगते इहगतंतिकट्टु वंदति नमंसइ २ त्ता एवं वदासी—पुव्विंपिय णं मए समणस्स ३ अंतिए सव्वे पाणाइवाए पच्चक्खाए मुसावाए अदिन्नादाणे मेहुणे परिग्गहे कोहे माणे माया लोभे पेज्जे दोसे कलहे अब्भक्खाणे पेसुन्ने परपरिवाए अरतिरति मायामोसे मिच्छादंसणसल्ले पच्चक्खाते, इयाणिंपि णं अहं तस्सेव अंतिए सव्वं पाणातिवायं पच्चक्खामि जाव मिच्छादंसणसल्लं पच्चक्खामि, सव्वं असणपाणखादिमसातिमं चउव्विहंपि आहारं पच्चक्खामि जावज्जीवाए, जंपि य इमं सरीरं इट्ठं कंतं पियं जाव विविहा रोगायंका परीसहोवसग्गा फुसंतीतिकट्टु एयंपिय णं चरमेहिं ऊसासनिस्सासेहिं वोसिरामित्तिकट्टु संलेहणा-झूसणाझूसिए भत्तपाण-पडियाइक्खिए पाओवगए कालं अणवकंखमाणे विहरति, तते णं ते थेरा भगवंतो मेहस्स अणगारस्स अगिलाए

वेयावडियं करेंति ६। तते णं से मेहे अणगारे समणस्स भगवओ महावीरस्स तहारूवाणं थेराणं अंतिए सामाइयमाइयाई एक्कारस अंगाइं अहिज्जित्ता बहुपडिपुन्नाइं दुवालस वरिसाइं सामन्नपरियागं पाउणित्ता मासियाए संलेहणाए अप्पाणं झोसेत्ता सट्ठिं भत्ताइं अणसणाए छेदेत्ता आलोतियपडिक्कंते उद्धियसल्ले समाहिपत्ते आणुपुव्वेणं कालगए, तते णं ते थेरा भगवंतो मेहं अणगारं आणुपुव्वेणं कालगयं पासेंति २ परिनिव्वाणवत्तियं काउस्सगं करेंति २ मेहस्स आयारभंडयं गेण्हंति २ विउलाओ पव्वयाओ सणियं २ पच्चोरुहंति २ जेणामेव गुणासिलए चेइए जेणामेव समणे भगवं महावीरे तेणामेव उवागच्छंति २ त्ता समणं ३ वंदंति नमंसंति २ त्ता एवं वयासी—एवं खलु देवाणुप्पियाणं अंतेवासी मेहे णामं अणगारे पगइभद्दए जाव विणीते से णं देवाणुप्पिएहिं अब्भणुन्नाए समाणे गोतमातिए समणे निग्गंथे निग्गंथीओ य खामेत्ता अम्हेहिं सद्धिं विउलं पव्वयं सणियं २ दुरूहति २ सयमेव मेघघणसन्निगासं पुढविसिलं पट्टयं पडिलेहेति २ भत्तपाण-पडियाइक्खित्ते अणुपुव्वेणं कालगए एस णं देवाणुप्पिया! मेहस्स अणगारस्स आयारभंडए ७॥ सूत्रं ३५॥

भंतेत्ति भगवं गोतमे समणं भगवं महावीरं वंदति नमंसति २ त्ता एवं वदासी—एवं खलु देवाणुप्पियाणं अंतेवासी मेहे णामं अणगारे से णं भंते! मेहे अणगारे कालमासे कालं किच्चा कहिं गए कहिं उववन्ने?, गोतमादि समणे भगवं महावीरे भगवं गोयमं एवं वयासी—एवं खलु गोयमा! मम अंतेवासी मेहे णामं अणगारे पगतिभद्दए जाव विणीए से णं तहारूवाणं थेराणं अंतिए सामाइयमाइयातिं एक्कारस अंगातिं अहिज्जति २ बारस भिक्खुपडिमाओ गुणरयणसंवच्छरं तवोकम्मं काएणं फासेत्ता जाव किट्टेत्ता मए अब्भणुन्नाए समाणे गोयमाइ थेरे खामेइ २ तहारूवेहिं जाव विउलं पव्वयं दुरूहति २ दब्भसंथारगं संथरति २ दब्भसंथारोवगए सयमेव पंच

महव्वए उच्चारेइ बारस वासातिं सामरणपरियागं पाउणित्ता मासियाए संलेहणाए अप्पाणं भूसित्ता सट्ठि भत्तातिं अणसणाए छेदेत्ता आलोइयप-डिक्कंते उद्धियसल्ले समाहिपत्ते कालमासे कालं किच्चा उद्धं चंदिमसूरग-हगण-णक्खत्ततारारूवाणं बहूइं जोयणाइं बहूइं जोयणसयाइं बहूइं जोयण-सहस्साइं बहूइं जोयणसयसहस्साइं बहूइ जोयणकोडीओ बहूइ जोअण-कोडाकोडीओ उड्ढं दूरं उप्पइत्ता सोहंमीसाण-सणंकुमार-माहिंद बंभ-लंतग-महासुक्क सहस्साराणय-पाणयारणच्चुते तिरिण य अट्ठारसुत्तरे गेवेज्ज-वि-माणावाससए वीइवइत्ता विजए महाविमाणे देवत्ताए उववरणे, तत्थ णं अत्थेगइयाणं देवाणं तेत्तीसं सागारोवमाइं ठिई पराणत्ता, तत्थ णं मेहस्सवि देवस्स तेत्तीसं सागरोवमातिं ठिती पन्नत्ता १। एस णं भंते! मेहे देवे ताओ देवलोयाओ आउक्खएणं ठितिक्खएणं भवक्खएणं अणंतरं चयं चइत्ता कहिं गच्छिहिति कहिं उववज्जिहिति? गोयमा! महाविदेहे वासे सिज्झिहिति बुज्झिहिति मुच्चिहिति परिनिव्वाहिति सव्वदुक्खाणमंतं काहिति २। एवं खलु जंबू! समणेणं भगवया महावीरेणं आइगरेणं तित्थ-गरेणं जाव संपत्तेणं अप्पोपालंभनिमित्तं पढमस्स नायज्झयणस्स अयमट्ठे पन्नत्ते त्तिबेमि ३॥ सूत्रं ३६॥ पढमं अज्झयणं समत्तं।

॥ इति प्रथममध्ययनम् ॥ १ ॥

॥२॥ अथ संघाटाख्यं द्वितीयमध्ययनम् ॥

जति णं भंते! समणेणं भगवया महावीरेणं पढमस्स नायज्झयणस्स अयमट्ठे पन्नत्ते बितीयस्स णं भंते। नायज्झयणस्स के अट्ठे पन्नत्ते?, एवं खलु जंबू! तेणं कालेणं तेणं समएणं रायगिहे णामं नयरे होत्था वन्नओ १। तस्स णं रायगिहस्स नगरस्स बहिया उत्तरपुरच्छिमे दिसीभाए गुणसिलए नामं चेतिए होत्था वन्नओ, तस्स णं गुणसिलयस्स चेतियस्स अदूरसामंते

एत्थ णं महं एगे जिरणुज्जाणे यावि होत्था विणट्ठदेवउले परिसडियतोरणघरे नाणाविहगुच्छगुम्म-लयावल्लि-वच्छच्छाइए अरोग-वालसय-संकणिज्जे यावि होत्था २। तस्स णं जिन्नुज्जाणस्स बहुमज्झदेसभाए एत्थ णं महं एगे भग्ग-कूवए यावि होत्था, तस्स णं भग्गकूवस्स अदूरसामंते एत्थ णं महं एगे मालु-याकच्छए यावि होत्था, किराहे किराहोभासे जाव रम्मे घनकडियडच्छाए महामेह-निउरंबभूते (पत्तिए पुष्फिए फलिए हरियगरे-रिज्जमाणे सिरीए अईव अईव उवसोभेमाणे चिट्ठइ)बहूहिं रुक्खेहि य गुच्छेहि य गुम्मेहि य लयाहि य वल्लीहि य कुसेहि य (कूविएहि य) खाणु(रुक्ख)एहि य संच्छन्ने पलिच्छन्ने अंतो भुसिरे बाहिं गंभीरे अरोग-वालसय-संकणिज्जे यावि होत्था ३ ॥ सूत्रं ३७॥ तत्थ णं रायगिहे नगरे धणे नामं सत्थवाहे अड्ढे दित्ते जाव विउलभत्त-पाणे, तस्स णं धणस्स सत्थवाहस्स भद्दा नामं भारिया होत्था सुकुमालपा-णिपाया अहीण-पडिपुराण-पंचिंदियसरीरा लक्खण-वंजण-गुणोववेया माणुम्माणप्पमाण-पडिपुन्न-सुजात-सव्वंगसुंदरंगी ससिसोमागारा कंता पिय-दंसणा सुरूवा करयल-परिमिय-तिवलियमज्झा कुंडलुल्लिहिय गंडलेहा कोमुदि-रयणियर-पडिपुराण-सोमवयणा सिंगारागार-चारुवेसा जाव पडिरूवा वंझा अवियाउरी जाणुकोप्परमाया यावि होत्था ॥ सूत्रं ३८ ॥ तस्स णं धणस्स सत्थवाहस्स पंथए नाम दासचेडे होत्था सव्वंगसुंदरंगे मंसोवचित्ते बाल-कीलावण-कुसले यावि होत्था, तते णं से धणे सत्थवाहे रायगिहे नयरे बहूणं नगरनिगम-सेट्ठिसत्थवाहाणं अट्ठारसराह य सेणियप्पसेणीणं बहुसु कज्जेसु य कुडुंबेसु य मंतेसु य जाव चक्खुभूते यावि होत्था, नियगस्सवि य णं कुडुंबस्स बहुसु य कज्जेसु जाव चक्खुभूते यावि होत्था ॥ सूत्रं ३९ ॥ तत्थ णं रायगिहे नगरे विजए नामं तक्करे होत्था, पावे चंडालरूवे भीमतर-रुद्दकम्मे आरुसिय-दित्तरत्तनयणे खरफरुस-महल्ल-विगय-बीभत्थदाढिए असंपुडितउट्ठे उद्धुयपइन्न-लंबंतमुद्धए भमरराहुवन्ने निरणुकोसे

निरणुतावे दारुणे पइभए निसंसतिए(निसंसे) निरणुकंपे अहिव्व एगंत-दिट्ठिए खुरेव एगंतधाराए गिद्धेव आमिसतल्लिच्छे अग्गिमिव सव्वभक्खे जलमिव सव्वगाही उक्कंचण-वंचण-मायानियडि-कूडकवड-साइसंपओगबहुले चिरनगर-विणट्ठ-दुट्ठ-सीलायारचरित्ते जूयपसंगी मज्जपसंगी भोज्जपसंगी मंसप-संगी दारुणे हिययदारए (जणहियाकारए) साहसिए संधिच्छेयए उवहिए विस्सं भघाती आलीयग-तित्थभेय-लहुहत्थ-संपउत्ते परस्स दव्वहरणंमि निच्चं अणुबद्धे तिव्ववेरे रायगिहस्स नगरस्स बहूणि अइगमणाणि य निग्गमणाणि य दाराणि य अवदाराणि य छिंडिओ य खंडीओ य नगरनिद्धमणाणि य संवट्टणाणि य निव्वट्टणाणि य जूयखलयाणि य पाणागाराणि य वेसागा-राणि य तद्दारट्ठाणाणि य तक्करट्ठाणाणि य तक्करघराणि य सिंगाडगाणि य तियाणि य चउक्काणि य चच्चराणि य नागघराणि य भूयघराणि य जक्खदेउलाणि य सभाणि य पवाणि य पणियसालाणि य सुन्नघराणि य आभोएमाणे २ मग्गमाणे गवेसमाणे, बहुजणस्स छिद्देसु य विसमेसु य विहुरेसु य वसणेसु य अब्भुदएसु य उस्सवेसु य पसवेसु य तिहीसु य छणेसु य जन्नेसु य पव्वणीसु य मत्तपमत्तस्स य वक्खित्तस्स य वाउलस्स य सुहितस्स य दुक्खियस्स य विदेसत्थस्स य विप्पवसियस्स य मग्गं च छिद्दं च विरहं च अंतरं च मग्गमाणे गवेसमाणे एवं च णं विहरति, बहियावि य णं रायगिहस्स नगरस्स आरामेसु य उज्जाणेसु य वाविपोक्खरणी-दीहिया-गुंजालियासरेसु य सरपंतियासु य सरसरपंतियासु य जिण्णुज्जाणेसु य भग्गकूवएसु य मालुयाकच्छएसु य सुसाणएसु य गिरिकंदर-लेण-उवट्ठाणेसु य बहुजणस्स छिद्देसु य जाव एवं च णं विहरति ॥ सूत्रं ४० ॥

तते णं तीसे भद्दाए भारियाए अन्नया कयाइं पुव्वरत्तावरत्त-कालसम-यंसि कुडुंबजागरियं जागरमाणीए अयमेयारूवे अज्झत्थिए जाव समुप-ज्जित्था—अहं धण्णेणं सत्थवाहेणं सद्धिं बहूणि वासाणि सद्दफरिस-रसगंध-

रूवाणि माणुस्सगाइं कामभोगाइं पच्चणुभवमाणी विहरामि, नो चेव णं अहं दारगं वा दारिगं वा पयायामि १ । तं धन्नाओ णं ताओ अम्मयाओ जाव सुलद्धे णं माणुस्सए जम्मजीवियफले तासिं अम्मयाणं जासिं मन्ने णियगकुच्छिसंभूयातिं थणदुद्धलुद्धयातिं महुरसमुल्लावगातिं मम्मणपयंपियातिं थणमूलकक्खदेसभागं अभिसरमाणातिं मुद्धयाइं थणयं पिवंति २ । ततो य कोमलकमलोवमेहिं हत्थेहिं गिरिहऊणं उच्छंगे निवेसियाइं देंति समुल्लावए पिए सुमहुरे पुणो २ मंजुलप्पभणिते, तं अहन्नं अधन्ना अपुन्ना अलक्खणा अकयपुन्ना एत्तो एगमवि न पत्ता, तं सेयं मम कल्लं पाउप्पभायाए रयणीए जाव जलंते धरणं सत्थवाहं आपुच्छित्ता धरणेणं सत्थवाहेण अब्भणुन्नाया समाणी सुबहुँ विपुलं असणपाण-खातिमसातिमं उवक्खडावेत्ता सुबहुँ पुप्फवत्थ-गंधमल्लालंकारं गहाय बहूहिं मित्तनाति-नियग-सयण-संबंधि-परिजणमहिलाहिं सद्धिं संपरिवुडा जाइं इमाइं रायगिहस्स नगरस्स बहिया णागाणि य भूयाणि य जक्खाणि य इंदाणि य खंदाणि य रुद्दाणि य सेवाणि य वेसमणाणि य तत्थ णं बहूणं नागपडिमाण य जाव वेसमणपडिमाण य महरिहं पुप्फच्चणियं करेत्ता जाणुपायपडियाए एवं वइत्तए—जइ णं अहं देवाणुप्पिया ! दारगं वा दारिगं वा पयायामि तो णं अहं तुब्भं जायं च दायं च भायं च अक्खयणिहिं च अणुवड्ढेमित्ति कट्टु उवातिणं उवाइत्तए ३ । एवं संपेहेति २ कल्लं जाव जलंते जेणामेव धरणे सत्थवाहे तेणामेव उवागच्छति उवागच्छित्ता एवं वदासी—एवं खलु अहं देवाणुप्पिया ! तुब्भेहिं सद्धिं बहूइं वासातिं जाव देंति समुल्लावए सुमहुरे पुणो २ मंजुलप्पभणिते तएणं अहं अहन्ना अपुन्ना अकयलक्खणा एत्तो एगमवि न पत्ता, तं इच्छामि णं देवाणुप्पिया ! तुब्भेहिं अब्भणुन्नाता समाणी विपुलं असणं ४ जाव अणुवड्ढेमि उवाइयं करेत्तए ४ । तते णं धरणे सत्थवाहे भद्दं भारियं एवं वदासी—ममंपि य णं खलु देवाणुप्पिए !

एस चेव मणोरहे—कहं णं तुमं दारगं दारियं वा पयाएज्जसि ?, भद्दाए सत्थवाहीए एयमट्ठमणुजाणाति, तते णं सा भद्दा सत्थवाही धणणेणं सत्थवाहेणं अब्भणुन्नाता समाणी हट्ठतुट्ठ जाव हयहियया विपुलं असणपाणखातिमसातिमं उवक्खडावेति २ त्ता सुबहुँ पुप्फगंध-वत्थमल्लालंकारं गेणहति २ सयाओ गिहाओ निग्गच्छति २ रायगिहं नगरं मज्झंमज्झेणं निग्गच्छति २ त्ता जेणेव पोक्खरिणी तेणेव उवागच्छति २ पुक्खरिणीए तीरे सुबहुँ पुप्फ जाव मल्लालंकारं ठवेइ २ पुक्खरिणिं ओगाहइ २ जल-मज्जणं करेति जलकीडं करेति २ ण्हाया कयबलिकम्मा उल्लपडसाडिगा जाइं तत्थ उप्पलाइं जाव सहस्सपत्ताइं ताइं गिण्हइ २ पुक्खरिणीओ पच्चोरुहइ २ तं सुबहुँ पुप्फगंधमल्लं गेणहति २ जेणामेव नागघरए य जाव वेसमणघरए य तेणेव उवागच्छति २ तत्थ णं नागपडिमाण य जाव वेसमणपडिमाण य आलोए पणामं करेइ ईसिं पच्चुन्नमइ २ लोम-हत्थगं परामुसइ २ नागपडिमाओ य जाव वेसमणपडिमाओ य लोमहत्थेणं पमज्जति उदगधाराए अब्भुक्खेति २ पम्हलसुकुमालाए गंधकासाईए गायाइं लूहेइ २ महरिहं वत्थारुहणं च मल्लारुहणं च गंधारुहणं च चुन्नारुहणं च वन्नारुहणं च करेति २ जाव धूवं डहति २ जानुपायपडिया पंजलिउडा एवं वदासी—जइ णं अहं दारगं वा दारिगं वा पयायामि तो णं अहं जायं च जाव अणुवड्ढेमित्ति कट्टु उवातियं करेति २ जेणेव पोक्खरिणी तेणेव उवागच्छति २ विपुलं असणं ४ आसाएमाणी जाव विहरति, जिमिया जाव सुइभूया जेणेव सए गिहे तेणेव उवागया अदुत्तरं च णं भद्दा सत्थवाही चाउद्दसट्ठमुद्दिट्ठ-पुन्नमासिणीसु विपुलं असणं ४ उवक्खडेति २ बहवे नागा य जाव वेसमणा य उवायमाणी जाव एवं च णं विहरति ५ ॥ सूत्रं ४१ ॥ तते णं सा भद्दा सत्थवाही अन्नया कयाइ केणति कालंतरेणं आवन्नसत्ता जाया यावि होत्था १। तते णं तीसे भद्दाए

सत्थवाहीए दोसु मासेसु वीतिक्कंतेसु ततिए मासे वट्टमाणे इमेयारूवे दोहले पाउब्भूते—धन्नाओ णं ताओ अम्मयाओ जाव कयलक्खणाओ णं ताओ अम्मयाओ जाओ णं विउलं असणं ४ सुबहुयं पुप्फवत्थ-गंधमल्लालंकारं गहाय मित्तनाति-नियग-सयण-संबंधि-परियण-नयरमहिलियाहि य सद्धिं संपरिवुडाओ रायगिहं नगरं मज्झंमज्झेणं निग्गच्छंति २ जेणेव पुक्खरिणी तेणेव उवागच्छंति २ पोक्खरिणीं ओगाहिंति २ ण्हायाओ कयबलिकम्माओ सव्वालंकारविभूसियाओ विपुलं असणं ४ आसाएमाणीओ जाव पडिभुंजेमाणीओ दोहलं विणेंति एवं संपेहेति २ कल्लं जाव जलंते जेणेव धरणे सत्थवाहे तेणेव उवागच्छति २ धरणं सत्थवाहं एवं वदासी—एवं खलु देवाणुप्पिया! मम तस्स गब्भस्स जाव विणेंति तं इच्छामि णं देवाणुप्पिया! तुब्भेहिं अब्भणुन्नाता समाणी जाव विहरित्तए अहासुहं देवाणुप्पिया! मा पडिबंधं करेह २। तते णं सा भद्दा सत्थवाही धरणेणं सत्थवाहेणं अब्भणुन्नाया समाणी हट्ठतुट्ठा जाव विपुलं असणं ४ जाव ण्हाया जाव उल्लपडसाडगा जेणेव नागघरते जाव धूवं दहति २ पणामं करेति पणामं करेत्ता जेणेव पोक्खरिणी तेणेव उवागच्छति २ तते णं ताओ मित्तनाति जाव नगरमहिलाओ भद्दं सत्थवाहिं सव्वालंकारविभूसितं करेंति ३। तते णं सा भद्दा सत्थवाही ताहिं मित्तनातिनियगसयण-संबंधिपरिजण-णगरमहिलियाहिं सद्धिं तं विपुलं असणं ४ जाव परिभुंजमाणी य दोहलं विणेति २ जामेव दिसिं पाउब्भूता तामेव दिसिं पडिगया ४। तते णं सा भद्दा सत्थवाही संपुन्नडोहला जाव तं गब्भं सुहंसुहेणं परिवहति, तते णं सा भद्दा सत्थवाही णवण्हं मासाणं बहुपडिपुन्नाणं अद्धट्ठमाण राइंदियाणं सुकुमालपाणिपादं जाव दारगं पयाया ५। तते णं तस्स दारगस्स अम्मापियरो पढमे दिवसे जातकम्मं करेंति २ तहेव जाव विपुलं असणं ४ उवक्खडावेंति २ तहेव मित्तनाति-नियगसयण-

संबंधि-परियणनगर-महिलियाहि य भोयावेत्ता अयमेयारूवं गोन्नं गुण-
निप्फन्नं नामधेज्जं करेंति जम्हा णं अम्हं इमे दारए बहूणं नागपडिमाण
य जाव वेसमणपडिमाणा य उवाइयलद्धे णं ते होउ णं अम्हं इमे दारए
देवदिन्ननामेणं ६ । तते णं तस्स दारगस्स अम्मापियरो नामधिज्जं करेंति
देवदिन्नेत्ति, तते णं तस्स दारगस्स अम्मापियरो जायं च दायं च भायं च
अक्खयनिहिं च अणुवड्ढेंति ७॥सूत्रं ४२॥ तते णं से पंथए दासचेडए देवदि-
न्नस्स दारगस्स बालग्गाही जाए, देवदिन्नं दारयं कडीए गेण्हति २ बहूहिं
डिंभएहि य डिंभगाहि य दारएहि य दारियाहि य कुमारएहि अ कुमारियाहि
य सद्धिं संपरिवुडे अभिरममाणे अभिरमति १ । तते णं सा भद्दा
सत्थवाही अन्नया कयाइं देवदिन्नं दारयं एहायं कयबलिकम्मं कयकोउय-
मंगल-पायच्छित्तं सव्वालंकारभूसियं करेति, पंथयस्स दासचेडयस्स हत्थयंसि
दलयति २ । तते णं से पंथए दासचेडए भद्दाए सत्थवाहीए हत्थाओ
देवदिन्नं दारगं कडिए गिण्हति २ सयातो गिहाओ पडिनिक्खिमति २
बहूहिं डिंभएहि य डिंभियाहि य जाव कुमारियाहि य सद्धिं संपरिवुडे
जेणेव रायमग्गे तेणेव उवागच्छइ २ देवदिन्नं दारगं एगंते ठवेति २
बहूहिं डिंभएहि य जाव कुमारियाहि य सद्धिं संपरिवुडे पमत्ते यावि होत्था
(विहरति) ३ । इमं च णं विजए तक्करे रायगिहस्स नगरस्स बहूणि
बाराणि य अवदाराणि य तहेव जाव आभोएमाणे मग्गेमाणे गवेसेमाणे
जेणेव देवदिन्ने दारए तेणेव उवागच्छइ २ देवदिन्नं दारगं सव्वालंकार-
विभूसियं पासति पासित्ता देवदिन्नस्स दारगस्स आभरणालंकारेसु मुच्छिए
गढिए गिद्धे अज्झोववन्ने पंथयं दासचेडं पमत्तं पासति २ दिसालोयं करेति
करेत्ता देवदिन्नं दारगं गेण्हति २ कक्खंसि अल्लियावेति २ उत्तरिज्जेणं
पिहेइ २ सिग्घं तुरियं चवलं वेतियं रायगिहस्स नगरस्स अवदारेणं
निग्गच्छति २ जेणेव जिण्णुज्जाणे जेणेव भग्गकूवए तेणेव उवागच्छति २

देवदिन्नं दारयं जीवियाओ ववरोवेति २ आभरणालंकारं गेराहति २ देवदिन्नस्स दारगस्स सरीरगं निप्पाणं निच्चेट्ठं जीवियविप्पजढं भग्गकूवए पक्खिवति २ जेणेव मालुयाकच्छए तेणेव उवागच्छति २ मालुयाकच्छयं अणुपविसति २ निच्चले निप्फंदे तुसिणीए दिवसं खिवेमाणे चिट्ठति ४ ।

॥ सूत्रं ४३ ॥ तते णं से पंथए दासचेडे तओ मुहुत्तंतरस्स जेणेव देवदिन्ने दारए ठविए तेणेव उवागच्छति २ देवदिन्नं दारगं तंसि ठाणंसि अपासमाणे रोयमाणे कंदमाणे विलवमाणे देवदिन्नदारगस्स सव्वतो समंता मग्गणगवेसणं करेइ २ देवदिन्नस्स दारगस्स कत्थइ सुतिं वा खुतिं वा पउत्तिं वा अलभमाणे जेणेव सए गिहे जेणेव धरणे सत्थवाहे तेणेव उवागच्छति २ धरणं सत्थवाहं एवं वदासी—एवं खलु सामी ! भद्दा सत्थवाही देवदिन्नं दारयं राहायं जाव मम हत्थंसि दलयति तते णं अहं देवदिन्नं दारयं कडीए गिराहामि २ जाव मग्गणगवेसणं करेमि तं न णज्जति णं सामि ! देवदिन्ने दारए केणइ हते वा अवहिए वा अवखित्ते वा पायवडिए धरणस्स सत्थवाहस्स एतमट्ठं निवेदेति १ । तते णं से धरणे सत्थवाहे पंथयदासचेडयस्स एतमट्ठं सोच्चा णिसम्म तेण य महया पुत्तसोएणाभिभूते समाणे परसुणियत्तेव चंपगपायवे धसत्ति धरणीयलंसि सव्वंगेहिं सन्निवइए २ । तते णं से धरणे सत्थवाहे ततो मुहुत्तंतरस्स आसत्थे पच्छागयपाणे देवदिन्नस्स दारगस्स सव्वतो समंता मग्गणगवेसणं करेति देवदिन्नस्स दारगस्स कत्थइ सुइं वा खुइं वा पउत्तिं वा अलभमाणे जेणेव सए गिहे तेणेव उवागच्छइ २ महत्थं पाहुडं गेराहति २ जेणेव नगरगुत्तिया तेणेव उवागच्छति २ तं महत्थं पाहुडं उवणेति उवणेत्ता एवं वयासी—एवं खलु देवाणुप्पिया ! मम पुत्ते भद्दाए भारियाए अत्तए देवदिन्ने नाम दारए इट्ठे जाव उंबरपुप्फंपिव दुलहे सवणयाए किमंग पुण पासणयाए ? ३ । तते णं सा भद्दा देवदिन्नं राहायं सव्वा-

लंकारविभूसियं पंथगस्स हत्थे दलाति जाव पायवडिए तं मम निवेदेति तं इच्छामि णं देवाणुप्पिया ! देवदिन्नदारगस्स सव्वओ समंता मग्गणगवेसणं कयं ४। तए णं ते नगरगोत्तिया धणेणं सत्थवाहेणं एवं वुत्ता समाणा सन्नद्धबद्धवम्मियकवया उप्पीलिय-सरासणवट्टिया जाव गहियाउहपहरणा धणेणं सत्थवाहेणं सद्धिं रायगिहस्स नगरस्स बहूणि अतिगमणाणि य जाव पवासु य मग्गणगवेसणं करेमाणा रायगिहाओ नगराओ पडिनिक्खमंति २ जेणेव जिण्णुज्जाणे जेणेव भग्गकूवए तेणेव उवागच्छंति २ देवदिन्नस्स दारगस्स सरीरगं निप्पाणं निच्चेट्ठं जीव(जीविय)विप्पजढं पासंति २ हा हा अहो अकज्जमितिकट्टु देवदिन्नं दारगं भग्गकूवाओ उत्तारेंति २ धणस्स सत्थवाहस्स हत्थेणं दलयंति ५ ॥ सूत्रं ४४ ॥ तते णं ते नगरगुत्तिया विजयस्स तक्करस्स पयमग्ग-मणुगच्छमाणा जेणेव मालुयाकच्छए तेणेव उवागच्छंति २ मालुयाकच्छयं अणुपविसंति २ विजयं तक्करं ससक्खं सहोढं सगेवेज्जं जीवग्गाहं गिण्हंति २ अट्ठिमुट्ठि-जाणुकोप्पर-पहार-संभग्ग-महियगत्तं करेंति २ अवउडाबन्धणं करेंति २ देवदिन्नगस्स दारगस्स आभरणं गेण्हंति २ विजयस्स तक्करस्स गीवाए बंधंति २ मालुयाकच्छगाओ पडिनिक्खमंति २ जेणेव रायगिहे नगरे तेणेव उवागच्छंति २ रायगिहं नगरं अणुपविसंति २ रायगिहे नगरे सिंघाडग-तियचउक्क-चच्चरमहापहपहेसु कसप्पहारे य लयप्पहारे य छिवापहारे य निवाएमाणा २ छारं च धूलिं च कयवरं च उवरिं पकिरमाणा २ महया २ सद्देणं उग्घोसेमाणा एवं वदंति—एस णं देवाणुप्पिया ! विजय नामं तक्करे जाव गिद्धे विव आमिसभक्खी बालघायए बालमारए, तं नो खलु देवाणुप्पिया ! एयस्स केति राया वा रायपुत्ते वा रायमच्चे वा अवरज्झति एत्थट्ठे (नन्नत्थ) अप्पणो सयातिं कम्माइं अवरज्झंतित्तिकट्टु जेणामेव चारगसाला तेणामेव उवागच्छंति २ हडिबंधणं करेंति २ भत्तपाणनिरोहं

करेंति २ तिसंभं कसप्पहारे य जाव निवाएमाणा २ विहरंति १ । तते णं से धणो सत्थवाहे मित्तनाति-नियगसयण-संबंधिपरियणेणं सद्धिं रोयमाणे जाव विलवमाणे देवदिन्नस्स दारगस्स सरीरस्स महया इड्ढीसक्कारसमुदएणं निहरणं करेंति २ बहूइं लोतियातिं मयगकिच्चाइं करेंति २ केणइ कालं-तरेणं अवगयसोए जाए यावि होत्था २ ॥ सूत्रं ४५ ॥

तते णं से धणे सत्थवाहे अन्नया कयाइं लहूसयंसि रायावराहंसि संपलत्ते जाए यावि होत्था, तते णं ते नगरगुत्तिया धणं सत्थवाहं गेराहंति २ जेणेव चारगे तेणेव उवागच्छंति २ चारगं अणुपवेसंति २ विजएणं तक्करेणं सद्धिं एगयओ हडिबंधणं करेंति १ । तते णं सा भद्दा भारिया कल्लं जाव जलंते विपुलं असणं ४ उवक्खडेति २ भोयणपिंड-(पडि)ए क(भ)रेति २ भोयणाइं पक्खिवति लंछियमुद्दियं करेइ २ एगं च सुरभि-वारिपडिपुन्नं दगवारयं करेति २ पंथयं दासचेडं सद्दावेति २ एवं वदासी—गच्छ णं तुमं देवाणुप्पिया ! इमं विपुलं असणं ४ गहाय चारगसालाए धणस्स सत्थवाहस्स उवणेहि, तते णं से पंथए भद्दाए सत्थवाहीए एवं वुत्ते समाणे हट्ठतुट्ठे तं भोयणपिंडयं तं च सुरभिवरवारिपडिपुन्नं दगवारयं गेराहति २ सयाओ गिहाओ पडिनिक्खमति २ रायगिहे नगरे मज्झं-मज्झेणं जेणेव चारगसाला जेणेव धन्ने सत्थवाहे तेणेव उवागच्छति २ भोयणपिडयं ठावेति २ उल्लंछति २ त्ता भायणाइं गेराहति २ भायणाइं धोवेति २ हत्थसोयं दलयति २ धणं सत्थवाहं तेणं विपुलेणं असण-पाण-खाइमसाइमेणं परिवेसति, तते णं से विजए तक्करे धणं सत्थवाहं एवं वदासी—तुमरणं देवाणुप्पिया ! मम एयाओ विपुलातो असण-पाण-खाइम-साइमाओ संविभागं करेहि २ । तते णं से धणे सत्थवाहे विजयं तक्करं एवं वदासी—अवि याइं अहं विजया ! एयं विपुलं असणं ४ कायाणं वा सुणगाणं वा दलएज्जा उक्कुरुडियाए वा णं छड्डेज्जा नो चेव णं तव पुत्तघायगस्स पुत्तमार-

गस्स अरिस्स वेरियस्स पडिणीयस्स पच्चामित्तस्स एत्तो विपुलाओ असण-पाण-खाइमसाइमाओ संविभागं करेज्जामि ३। तते णं से धणे सत्थवाहे तं विपुलं असणं ४ आहारेति २ तं पंथयं पडिविसज्जेति, तते णं से पंथए दासचेडे तं भोयणपिडगं गिरहति २ जामेव दिसिं पाउब्भूते तामेव दिसिं पडिगए ४। तते णं तस्स धणस्स सत्थवाहस्स तं विपुलं असणं ४ आहारियस्स समाणस्स उच्चारपासवणे णं उव्वाहित्था, तते णं से धणे सत्थवाहे विजयं तक्करं एवं वदासी—एहि ताव विजया ! एगंतमवक्कमामो जेणं अहं उच्चारपासवणं परिट्ठवेमि, तते णं से विजए तक्करे धणं सत्थवाहं एवं वयासी—तुब्भं देवाणुप्पिया ! विपुलं असणं ४ आहारियस्स अत्थि उच्चारे वा पासवणे वा ममन्नं देवाणुप्पिया ! इमेहिं बहूहिं कसप्पहारेहि य जाव लयापहारेहि य तराहाए य छुहाए य परब्भवमाणस्स णत्थि केइ उच्चारे वा पासवणे वा तं छंदेणं तुमं देवाणुप्पिया ! एगंते अवक्कमित्ता उच्चारपासवणं परिट्ठवेहि, तते णं से धणे सत्थवाहे विजएणं तक्करेणं एवं वुत्ते समाणे तुसिणीए संचिट्ठति ५। तते णं से धणे सत्थवाहे मुहुत्तंतरस्स बलियतरागं उच्चारपासवणेणं उव्वाहिज्जमाणे विजयं तक्करं एवं वदासी—एहि ताव विजया ! जाव अवक्कमामो ६। तते णं से विजए धणं सत्थवाहं एवं वदासी—जइ णं तुमं देवाणुप्पिया ! ततो विपुलाओ-असण-पाणखाइमसाइमाओ संविभागं करेहि ततोऽहं तुमेहिं सद्धिं एगंतं अवक्कमामि ७। तते णं से धणे सत्थवाहे विजयं एवं वदासी—अहन्नं तुब्भं ततो विपुलाओ असण-पाण-खाइमसाइमाओ संविभागं करिस्सामि, तते णं से विजए धणस्स सत्थवाहस्स एयमट्ठं पडिसुणेति ८। तते णं से विजए धणेणं सद्धिं एगंते अवक्कमेति उच्चारपासवणं परिट्ठवेति आयंते चोक्खे परमसुइभूए तमेव ठाणं उवसंकमित्ता णं विहरति, तते णं सा भद्दा कल्लं जाव जलंते विपुलं असणं ४ जाव परिवेसेति ९। तते णं से धणे

सत्थवाहे विजयस्स तक्करस्स ततो विपुलाओ असण-पाण-खाइमसाइमाओ संविभागं करेति, तते णं से धणे सत्थवाहे पंथयं दासचेडं विसज्जेति १० । तते णं से पंथए भोयणपिडयं गहाय चारगाओ पडिनिक्खमति २ रायगिहं नगरं मज्झंमज्झेणं जेणेव सए गेहे जेणेव भद्दा भारिया तेणेव उवागच्छइ २ त्ता भद्दं सत्थवाहिणिं एवं वयासी—एवं खलु देवाणुप्पिए ! धणे सत्थवाहे त(हे)व पुत्तघायगस्स जाव पच्चामित्तस्स ताओ विपुलाओ असण-पाणखाइमसाइमाओ संविभागं करेति ११ ॥ सूत्रं ४६ ॥

तते णं सा भद्दा सत्थवाही पंथयस्स दासचेडयस्स अंतिए एयमट्ठं सोच्चा आसुरुत्ता रुट्ठा जाव मिसिमिसेमाणा धणस्स सत्थवाहस्स पओसमावज्जति १ । तते णं से धणे सत्थवाहे अन्नया कयाइं मित्तनाति-नियगसयण-संबंधिपरियणेणं सएण य अत्थसारेणं रायकज्जातो अप्पाणं मोयावेति २ चारगसालाओ पडिनिक्खमति २ जेणेव अलंकारियसभा तेणेव उवागच्छति २ अलंकारियकम्मं करेति(करावेइ) २ जेणेव पुक्खरिणी तेणेव उवागच्छति २ अह(अहाकय) धोयमट्टियं गेण्हति पोक्खरिणीं ओगाहति २ जलमज्जणं करेति २ ण्हाए कयबलिकम्मे जाव रायगिहं नगरं अणुपविसति २ रायगिहनगरस्स मज्झंमज्झेणं जेणेव सए गिहे तेणेव पधारेत्थ गमणाए २ । तते णं तं धणं सत्थवाहं एज्जमाणं पासित्ता रायगिहे नगरे बहवे नियग-सेट्ठि-सत्थवाह-पभितओ आढंति परिजाणंति सक्कारेंति सम्माणेंति अब्भुट्ठेंति सरीरकुसलं पुच्छंति ३ । तते णं से धणे जेणेव सए गिहे तेणेव उवागच्छति २ जाविय से तत्थ बाहिरिया परिसा भवति तंजहा—दासाति वा पेस्साति वा भियगाइ वा भाइल्लगाइ वा, सेवि य णं धणं सत्थवाहं एज्जंतं पासति २ पायवडियाए खेमकुसलं पुच्छंति, जावि य से तत्थ अब्भंतरिया परिसा भवति तंजहा—मायाइ वा पियाइ वा भायाति वा भगिणीति वा, सावि य णं धणं सत्थवाहं एज्जमाणं पासति २ आसणाओ

अब्भुट्ठे ति २ कंठाकंठियं अवयासिय बाहप्पमोक्खणं करेति ४। तते णं से धरणे सत्थवाहे जेणेव भद्दा भारिया तेणेव उवागच्छति, तते णं सा भद्दा धरणं सत्थवाहं एज्जमाणं पासति पासित्ता णो आढाति नो परियाणाति अणाढायमाणी अपरिजाणमाणी तुसिणीया परम्मुही संचिट्ठति ५। तते णं से धरणे सत्थवाहे भद्दं भारियं एवं वदासी—किन्नं तुब्भं देवाणुप्पिए! न तुट्ठी वा न हरिसे वा नाणंदे वा जं मए सएणं अत्थसारेणं रायकज्जातो अप्पाणं विमोतिए? ६। तते णं सा भद्दा धरणं सत्थवाहं एवं वदासी—कहन्नं देवाणुप्पिया! मम तुट्ठी वा जाव आणंदे वा भविस्सति? जेणं तुमं मम पुत्तघायगस्स जाव पच्चामित्तस्स ततो विपुलातो असण-पाण-खाइम-साइमाओ संविभागं करेसि ७। तते णं से धरणे भद्दं एवं वदासी—नो खलु देवाणुप्पिए। धम्मोत्ति वा तवोत्ति वा कयपडिकइया वा लोगजत्ताति वा नायएति वा घाडिएति वा सहाएति वा सुहिति वा ततो विपुलातो असण-पाणखाइम-साइमाओ संविभागे कए, नन्नत्थ सरीरचिंताए ८। तते णं सा भद्दा धरणेणं सत्थवाहेणं एवं वुत्ता समाणी हट्ठ जाव आसणातो अब्भुट्ठे ति कंठाकंठिं अवयासेति खेमकुसलं पुच्छति २ ण्हाया जाव पायच्छित्ता विपुलातिं भोगभोगाइं भुंजमाणी विहरति ९। तते णं से विजए तक्करे चारगसालाए तेहिं बंधेहिं वहेहिं कसप्पहारेहि य जाव तण्हाए य छुहाए य परब्भवमाणे कालमासे कालं किच्चा नरएसु नेरइयत्ताए उववन्ने १०। से णं तत्थ नेरइए जाते काले कालोभासे जाव वेयणं पच्चणुभवमाणे विहरइ, से णं ततो उव्वट्टित्ता अणादीयं अणवदग्गं दीहमद्धं चाउरंतसंसारकंतारं अणुपरियट्टिस्सति एवामेव जंबू! जे णं अम्हं निग्गंथो वा निग्गंथी वा आयरियउवज्झायाणं अंतिए मुंडे भवित्ता आगाराओ अणगारियं पव्वतिए समाणे विपुलमणि-मुत्तिय-धणकणग रयण-सारेणं लुब्भति सेविय एवं चेव ११॥ सूत्रं ४७॥ तेणं कालेणं तेणं

समणाणं धम्मघोसा नामं थेरा भगवंतो जातिसंपन्ना २ जाव पुव्वाणुपुव्विं चरमाणे जाव जेणेव रायगिहे नगरे जेणेव गुणसिलए चेतिए जाव अहापडिरूवं उग्गहं उग्गिरिहत्ता संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणा विहरंति, परिसा निग्गया धम्मो कहिओ १। ततेणं तस्स धरणस्स सत्थवाहस्स बहुजणस्स अंतिए एतमट्ठं सोचा णिसम्म इमेतारूवे अज्झत्थिते जाव समुपज्जित्था—एवं खलु भगवंतो जातिसंपन्ना इहमागया इह संपत्ता तं इच्छामि णं थेरे भगवंते वंदामि नमंसामि राहाते जाव सुद्धप्पावेसाति मङ्गल्लाइं वत्थाइं पवरपरिहिए पायविहारचारेणं जेणेव गुणसिले चेतिए जेणेव थेरा भगवंतो तेणेव उवागच्छति २ वंदति नमंसति २। ततेणं थेरा धरणस्स विचित्तं धम्ममातिक्खंति, ततेणं से धरणे सत्थवाहे धम्मं सोचा एवं वदासी—सद्दहामि णं भंते! निग्गंथे पावयणे जाव पव्वतिए जाव बहूणि वासाणि सामन्नपरियागं पाउणित्ता भत्तं पच्चक्खातित्ता मासियाए संलेहणाए सट्ठिं भत्ताइं अणसणाए छेदेइ २ त्ता कालमासे कालं किच्चा सोहम्मे कप्पे देवत्ताए उवन्ने, तत्थ णं अत्थेगतियाणं देवाणं चत्तारि पलिओवमाइं ठिती पन्नत्ता, तत्थ णं धरणस्स देवस्स चत्तारि पलिओवमाइं ठिती पण्णत्ता ३। से णं धरणे देवे ताओ देवलोयाओ आउक्खएणं ठितीक्खएणं भवक्खएणं अणंतरं चयं चइत्ता महाविदेहे वासे सिज्झिहिति जाव सव्वदुक्खाणमंतं करेहिति ४ ॥ सूत्रं ४८ ॥ जहा णं जंबू! धणेणं सत्थवाहेणं नो धम्मोत्ति वा जाव विजयस्स तक्करस्स ततो विपुलाओ असण-पाण-खाइमसाइमाओ संविभागे कए नन्नत्थ सरीरसारक्खणट्ठाए १। एवामेव जंबू! जे णं अम्हं निग्गंथे वा २ जाव पव्वतिए समाणे ववगयण्हाणुम्मद्दण-पुप्फगंध-मल्लालंकारविभूसे इमस्स ओरालियसरीरस्स नो वन्नहेउं वा रूवहेउं वा विसयहेउं वा असणं ४ आहारमाहारेति, नन्नत्थ णाणदंसणचरित्ताणं वहणयाए

२ । से णं इहलोए चेव बहूणं समणाणं समणीणं सावगाण य साविगाण य अच्चणिज्जे जाव पज्जुवासणिज्जे भवति, परलोएवि य णं नो बहूणि हत्थच्छेयणाणि य कन्नच्छेयणाणि य नासाछेयणाणि य एवं हिययउप्पायणाणि य वसणुप्पाडणाणि य उल्लंबणाणि य पाविहिति अणातीयं च णं अणवदग्गं दीहं जाव वीतिवतिस्सति जहा व से धणो सत्थवाहे ३ । एवं खलु जंबू ! समणेणं जाव दोच्चस्स नायज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्तेत्तिबेमि ४ ॥ सूत्रं ४९ ॥ बितीयं अज्झयणं समत्तं ॥ २ ॥

॥ इति द्वितीयमध्ययनम् ॥ २ ॥

॥३॥ अथ अण्डकाख्यं तृतीयमध्ययनम् ॥

जति णं भंते ! समणेणं भगवया महावीरेणं दोच्चस्स अज्झयणस्स णायाधम्मकहाणं अयमट्ठे पन्नत्ते तइअस्स अज्झयणस्स के अट्ठे पण्णत्ते ?, एवं खलु जंबू ! तेणं कालेणं २ चंपा नामं नयरी होत्था वन्नओ १ । तीसे णं चंपाए नयरीए बहिया उत्तरपुरच्छिमे दिसीभाए सुभूमिभाए नामं उज्जाणे होत्था सव्वोउए(य) सुरम्मे नंदणवणे इव सुहसुरभि-सीयलच्छायाए समणुबद्धे २ । तस्स णं सुभूमिभागस्स उज्जाणस्स उत्तरओ एगदेसंमि मालुयाकच्छए वन्नओ, तत्थ णं एगा वरमऊ(यु)री दो पुट्ठे परियागते पिट्ठुंडीपंडुरे निव्वणे निरुवहए भिन्नमुट्ठिप्पमाणे मऊरी अंडए पसवति २ सतेणं पक्खवाएणं सारक्खमाणी संगोवमाणी संविट्ठेमाणी विहरति ३ । तत्थ णं चंपाए नयरीए दुवे सत्थवाहदारगा परिवसंति तंजहा—जिणदत्तपुत्ते य सागरदत्तपुत्ते य, सहजायया सहवड्ढियया सहपंसुकीलियया सहदारदरिसी अन्नमन्न-मणुरत्तया अन्नमन्न-मणुव्वयया अन्नमन्नच्छंदाणुवत्तया अन्नमन्नहियतिच्छियकारया अन्नमन्नेसु गिहेसु किच्चाइं करणिज्जाइं पच्चणुभवमाणा विहरन्ति ४ ॥ सूत्रं ५० ॥

तते णं तेसिं सत्थवाहदारगाणं अन्नया कयाई एगतओ सहियाणं समुवागयाणं सन्निसन्नाणं सन्निविट्ठाणं इमेयारूवे मिहोकहासमुल्लावे समुप्पज्जित्था—जन्नं देवाणुप्पिया ! अम्हं सुहं वा दुक्खं वा पव्वज्जा वा विदेसगमणं वा समुप्पज्जति तन्नं अम्हेहिं एगयओ समेच्चा(संहिच्चा) णित्थरियव्वंतिकट्टु अन्नमन्नमेयारूवं संगारं पडिसुणेंति २ सकम्मसंपउत्ता जाया यावि होत्था ॥ सूत्रं ४१ ॥ तत्थ णं चंपाए नयरीए देवदत्ता नामं गणिया परिवसइ अड्डा जाव भत्तपाणा चउसट्ठि-कलापंडिया चउसट्ठि-गणियागुणोववेया अउणत्तीसं विसेसे रममाणी एक्कवीस-रतिगुणप्पहाणा बत्तीस-पुरिसोवयार-कुसला णवंग-सुत्त-पडिबोहिया अट्ठारस-देसीभासा-विसारया सिंगारागार-चारुवेसा संगयगयहसिय-भणिय-विहिय-विलाससललिय-संलावनिउणजुत्तोवयारकुसला (सुंदरथणजघण--वयण--नयण--लावण्ण--रूवजोव्वण-विलास-कलिया) ऊसियझया सहस्सलंभा विदिन्न-छत्तचामर-बालवियणिया कन्नीरहप्पयाया यावि होत्था बहूणं गणियासहस्साणं आहेवच्चं जाव विहरति १। तते णं तेसिं सत्थवाहदारगाणं अन्नया कदाइ पुव्वा(पच्चा)वरण्ह-कालसमयंसि जिमियभुत्तुत्तरागयाणं समाणाणं आयन्ताणं चोक्खाणं परमसुतिभूयाणं सुहासणवरगयाणं इमेयारूवे मिहोकहासमुल्लावे समुप्पज्जित्था २। तं सेयं खलु अम्हं देवाणुप्पिया ! कल्लं जाव जलंते विपुलं असणं ४ उवक्खडावेत्ता तं विपुलं असणं ४ धूवपुप्फगंधवत्थं गहाय देवदत्ताए गणियाए सद्धिं सुभूमिभागस्स उज्जाणस्स उज्जाणसिरिं पच्चणुभवमाणाणं विहरित्तएत्तिकट्टु अन्नमन्नस्स एयमट्ठं पडिसुणेंति २ कल्लं पाउब्भूए कोडुंबियपुरिसे सद्दावेंति २ एवं वदासी—गच्छह णं देवाणुप्पिया ! विपुलं असणं ४ उवक्खडेह २ तं विपुलं असणं ४ धूवपुप्फं गहाय जेणेव सुभूमिभागे उज्जाणे जेणेव णंदापुक्खरिणी तेणामेव उवागच्छह २ नंदापुक्खरिणीतो अदूरसामंते थूणामंडवं आहणह २ आसित-सम्मज्जितोवलित्तं सुगंध जाव कलियं करेह २ अम्हे

पडिवालेमाणा २ चिट्ठइ जाव चिट्ठंति ३। तए णं सत्थवाहदारगा दोच्चंपि कोडुंबियपुरिसे सद्दावेंति २ एवं वदासी—खिप्पामेव लहुकरण-जुत्तजोतियं (जुत्तएहिं) समखुरवालिहाणं समलिहिय-तिक्खग्ग-सिंगएहिं (जंबूणयमय-कलावजुत्त-पइविसिट्ठएहिं) रययामय-घंटसुत्त-रज्जुपवर-कंचणखचिय-णत्थपग्ग-होवग्गहितेहिं नीलुप्पल-कयामेलएहि पवरगोण-जुवाणएहिं नाणामणिरयण-कंचण-घंटियाजाल-परिक्खित्तं पवरलक्खणोववेयं (सुजात-जुगजुत्त-उज्जुग-पसत्थ-सुविरइय-निम्मियं) जुत्तमेव पवहणं उवणेह, तेऽवि तहेव उवणेंति ४। तते णं से सत्थवाह-दारगा ण्हाया जाव सरीरा पवहणं दुरूहंति २ जेणेव देवदत्ताए गणियाए गिहं तेणेव उवागच्छंति २ त्ता पवहणातो पच्चोरुहति २ देवदत्ताए गणियाए गिहं अणुपविसेंति ५। तते णं सा देवदत्ता गणिया सत्थवाहदारए एज्जमाणे पासति २ हट्ठ २ जाव आसणाओ अब्भुट्ठेति २ सत्तट्ठ पदाति अणुगच्छति २ ते सत्थवाहदारए एवं वदासी—संदिसंतु णं देवाणुप्पिया ! किमिहाग-मणप्पतोयणं ? तते णं ते सत्थवाह-दारगा देवदत्तं गणियं एवं वदासी—इच्छामो णं देवाणुप्पिए ! तुम्हेहिं सद्धिं सुभूमिभागस्स उज्जाणस्स उज्जाणसिरिं पच्चणुब्भवमाणा विहरित्तए ६। तते णं सा देवदत्ता तेसिं सत्थवाहदारगाणं एतमट्ठं पडिसुणेति २ ण्हाया कयकिच्चा किं ते पवर जाव सिरिसमाणवेसा जेणेव सत्थवाहदारगा तेणेव समागया ७। तते णं ते सत्थवाहदारगा देवदत्ताए गणियाए सद्धिं जाणं दुरूहति २ चंपाए नयरीए मज्झंमज्झेणं जेणेव सुभूमिभागे उज्जाणे जेणेव नंदापुक्खरिणी तेणेव उवागच्छंति २ पवहणातो पच्चोरुहंति २ नंदापोक्ख-रिणीं ओगाहिंति २ जलमज्जणं करेंति जलकीडं करेंति ण्हाया देवदत्ताए सद्धिं पच्चुत्तरंति जेणेव थूणामंडवे तेणेव उवागच्छंति २ थूणामंडवं अणुपविसंति २ सव्वालंकारविभूसिया आसत्था वीसत्था सुहासणवरगया देवदत्ताए सद्धिं तं विपुलं असणं ४ धूवपुप्फगंधवत्थं आसाएमाणा

वीसाएमाणा परिभुंजेमाणा एवं च णं विहरंति, जिमियभुत्तुत्त-रागयाविय णं समाणा देवदत्ताए सद्धिं विउलातिं माणुस्सगाइं कामभोगाइं भुंजमाणा विहरंति ८ ॥ सूत्रं ५२ ॥ तते णं ते सत्थवाहदारगा पुव्वा(पच्चा)वरराह-कालसमयंसि देवदत्ताए गणियाए सद्धिं थूणामंडवाओ पडिनिक्खमंति २ हत्थसंगेल्लीए सुभूमिभागे बहूसु आलिघरएसु य कयलीघरेसु य लयाघरएसु य अच्छणाघरएसु य पेच्छणाघरएसु य पसाहणाघरएसु य मोहणघरएसु य सालघरएसु य जालघरएसु य कुसुमघरएसु य(जाव) उज्जाणसिरिं पच्चणुभवमाणा विहरंति ॥ सूत्रं ५३ ॥ तते णं ते सत्थवाहदारया जेणेव से मालुयाकच्छए तेणेव पहारेत्थ गमणाए, तते णं सा वणमऊरी ते सत्थवाहदारए एज्जमाणे पासति २ भीया तत्था तसिया उव्विग्गा पलाया महया २ सद्देणं केकारवं विणिम्मुयमाणी २ मालुयाकच्छाओ पडिनिक्खमति २ एगंसि रुक्खमालयंसि ठिच्चा ते सत्थवाहदारए मालुयाकच्छयं च अणिमिसाए दिट्ठीए पेहमाणी २ चिट्ठति १। तते णं ते सत्थवाहदारगा अण्णमन्नं सद्दावेंति २ एवं वदासी—जहा णं देवाणुप्पिया! एसा वणमऊरी अम्हे एज्जमाणा पासित्ता भीता तत्था तसिया उव्विग्गा पलाया महता २ सद्देणं जाव अम्हे मालुयाकच्छयं च पेच्छमाणी २ चिट्ठति तं भवियव्वमेत्थ कारणेणंतिकट्टु मालुयाकच्छयं अंतो अणुपविसंति २ तत्थ णं दो पुट्ठे परियागये जाव पासित्ता अन्नमन्नं सद्दावेंति २ एवं वदासी—सेयं खलु देवाणुप्पिया! अम्हे इमे वणमऊरीअंडए साणं जाइमंताणं कुक्कुडियाणं अंडएसु अ पक्खिवावेत्तए २। तते णं ताओ जातिमन्ताओ कुक्कुडियाओ ताए अंडए सए य अंडए सएणं पक्खवाएणं सारक्खमाणीओ संगोवेमाणीओ विहरिस्संति ३। तते णं अम्हं एत्थं दो कीलावणगा मऊरपोयगा भविस्संतित्तिकट्टु अन्नमन्नस्स एतमट्ठं पडिसुणेति २ सए सए दासचेडे सद्दावेंति २ एवं वदासी—गच्छह णं तुब्भे

देवाणुप्पिया ! इमे अंडए गहाय सगाणं जाइमंताणं कुक्कुडीणं अंडएसु पक्खिवह जाव तेवि पक्खिवेंति ४। तते णं ते सत्थवाहदारगा देवदत्ताए गणियाए सद्धिं सुभूमिभागस्स उज्जाणस्स उज्जाणसिरिं पच्चणुभवमाणा विहरित्ता तमेव जाणं दुरूढा समाणा जेणेव चंपानयरीए जेणेव देवदत्ताए गणियाए गिहे तेणेव उवागच्छंति २ देवदत्ताए गिहं अणुपविसंति २ देवदत्ताए गणियाए विपुलं जीवियारिहं पीइदाणं दलयंति २ सक्कारेंति २ सम्माणेंति २ देवदत्ताए गिहातो पडिनिक्खमंति २ जेणेव सयाइं २ गिहाइं तेणेव उवागच्छंति २ सकम्मसंपउत्ता जाया यावि होत्था ५। ॥ सूत्रं ५४ ॥ तते णं जे से सागरदत्तपुत्ते सत्थवाहदारए से णं कल्लं जाव जलंते जेणेव से वणमऊरीअंडए तेणेव उवागच्छति २ तंसि मऊरीअंडयंसि संकिते कंखिते वितिगिच्छा-समावन्ने भेयसमावन्ने कलुससमावन्ने किन्नं ममं एत्थ किलावणमऊरीपोयए भविस्सति उदाहु णो भविस्सइत्तिकट्टु तं मउरीअंडयं अभिक्खणं २ उव्वत्तेति परियत्तेत्ति आसारेति संसारेति चालेति फंदेइ घट्टेति खोभेति अभिक्खणं २ कन्नमूलंसि टिट्टियावेति १। तते णं से मऊरीअंडए अभिक्खणं २ उव्वत्तिज्जमाणे जाव टिट्टियावेज्जमाणे पोच्चडे जाते यावि होत्था २। तते णं से सागरदत्तपुत्ते सत्थवाहदारए अन्नया कयाइं जेणेव से मऊरअंडए तेणेव उवागच्छति २ तं मऊरीअंडयं पोच्चडमेव पासति २ अहो णं ममं एस कीलावणए मऊरीपोयए ण जाएत्तिकट्टु ओहतमण जाव झियायति ३। एवामेव समणाउसो ! जो अम्हं निग्गंथो वा निग्गंथी वा आयरिय-उवज्झयाणं अंतिए पव्वतिए समाणे पंचमहव्वएसु छज्जीवनिकाएसु निग्गंथे पावयणे संकिते जाव कलुससमावन्ने से णं इहभवे चेव बहूणं समणाणं बहूणं समणीणं सावगाणं साविगाणं हीलणिज्जे निंदणिज्जे खिंसणिज्जे गरहणिज्जे परिभवणिज्जे परलोएऽविय णं आगच्छति बहूणि दंडणाणि य

जाव अणुपरियट्टए ४ ॥ सूत्रं ५५ ॥ तते णं से जिणदत्तपुत्ते जेणेव से मऊरीअंडए तेणेव उवागच्छति २ तंसि मउरीअंडयंसि निस्संकिते, सुवत्तए णं मम एत्थ कीलावणए मऊरीपोयए भविस्सतीतिकट्टु तं मऊरी-अंडयं अभिक्खणं २ नो उव्वत्तेत्ति जाव नो टिट्टियावेति १ । तते णं से मउरीअंडए अणुव्वत्तिज्जमाणे जाव अटिट्टिया-विज्जमाणे तेणं कालेणं तेणं समएणं उब्भिन्ने मऊरिपोयए एत्थ जाते २ । तते णं से जिणदत्तपुत्ते तं मऊरपोययं पासति २ हट्ठतुट्ठे मऊरपोसए सद्दावेति २ एवं वदासी–तुब्भे णं देवाणुप्पिया ! इमं मऊर-पोययं बहूहिं मऊर-पोसण-पाउग्गेहिं दव्वेहिं अणु-पुव्वेणं सारक्खमाणा संगोवेमाणा संवड्ढेह नट्टुल्लगं च सिक्खावेह ३ । तते णं ते मऊरपोसगा जिणदत्तस्स पुत्तस्स एतमट्ठं पडिसुणेंति २ तं मउर-पोययं गेराहंति जेणेव सए गिहे तेणेव उवागच्छंति २ तं मयूरपोयगं जाव नट्टुल्लगं सिक्खावेंति ४ । तते णं से मऊरपोयए उम्मुक्कबालभावे विन्नाय परिणायमित्ते जोव्वणगमणुपत्ते लक्खणवंजण-गुणोववेये माणुम्माणप्प-माण-पडिपुन्न-सुजायसव्वंगसुंदरंगे पक्खपेहुणकलावे विचित्तपिच्छ-सत-(च्छावसत्त)चंदए नीलकंठए नच्चणसीलए एगाए चप्पुडियाए कयाए समाणीए अणेगाति नट्टुल्लगसयाति केकारवसयाणि य करेमाणे विहरति, तते णं ते मऊरपोसगा तं मऊरपोयगं उम्मुक्क जाव करेमाणं पासित्ता २ तं मऊर-पोयगं गेराहंति २ जिणदत्तस्स पुत्तस्स उवणेंति, तते णं से जिणदत्तपुत्ते सत्थवाहदारए मऊरपोयगं उम्मुक्क जाव करेमाणं पासित्ता हट्ठतुट्ठे तेसिं विपुलं जीवियारिहं पीतिदाणं जाव पडिविसज्जेइ ५ । तए णं से मऊरपो-तए जिणदत्तपुत्तेणं एगाए चप्पुडियाए कयाए समाणीए णंगोला-भंगसिरोधरे सेयावंगे गिराहइ अवयारियपइन्नपक्खे उक्खित्त-चंदकातिय-कलावे केकाइयसयाणि विमुच्चमाणे णच्चइ ६ । तते णं से जिणदत्तपुत्ते तेणं मउरपोयएणं चंपाए नयरीए सिंघाडग जाव पहेसु सतिएहि य साह-

स्सिएहि य सयसाहस्सिएहि य परिएहि य जयं करेमाणे विहरति ७। एवामेव समणाउसो ! जो अम्हं निग्गंथो वा निग्गंथी वा पव्वतिए समाणे पंचसु महव्वएसु छसु जीवनिकाएसु निग्गंथे पावयणे निस्संकिते निक्कंखिए निव्वितिगिच्छे से णं इहभवे चेव बहूणं समणाणं समणीणं जाव वीतिवतिस्सति ८। एवं खलु जंबू ! समणेणं भगवया महावीरेणं णायाणं तच्चस्स अज्झयणस्स अयमट्ठे पन्नत्ते त्तिबेमि ९ ॥ सूत्रं ५६ ॥ तच्चं नायज्झयणं समत्तं ॥

॥ इति तृतीयमध्ययनम् ॥ ३ ॥

॥४॥ अथ कूर्माभिधानं चतुर्थमध्ययनम् ॥

जति णं भंते ! समणेणं भगवया महावीरेणं नायाणं तच्चस्स नायज्झयणस्स अयमट्ठे पन्नत्ते चउत्थस्स णं णायाणं के अट्ठे पन्नत्ते ?, एवं खलु जंबू ! तेणं कालेणं २ वाणारसी नामं नयरी होत्था वन्नओ, तीसे णं वाणारसीए नयरीए बहिया उत्तरपुरच्छिमे दिसिभागे गंगाए महानदीए मयंगतीरद्दहे नामं दहे होत्था १। अणुपुव्व-सुजाय-वप्पगंभीर-सीयलजले (अच्छविमल-सलिलपलिच्छन्ने) संछन्न-पत्तपुप्फ-पलासे(पउमपत्त-भिसमुणाले) बहुउप्पल(पउम)-कुमुय-नलिण-सुभग--सोगंधिय-पुंडरीय--महापुंडरीय-सयपत्त-सहस्सपत्त-केसरफुल्लो(पुप्फो)वचिए पासादीए ४, तत्थ णं बहूणं मच्छाण य कच्छभाण य गाहाण य मगराण य सुंसुमाराण य सइयाण य साहस्सियाण य सयसाहस्सियाण य जूहाइं निब्भयाइं निरुव्विग्गाइं सुहंसुहेणं अभिरममाणगाति २ विहरंति, तस्स णं मयंगतीरद्दहस्स अदूरसामंते एत्थ णं महं एगे मालुयाकच्छए होत्था वन्नओ २। तत्थ णं दुवे पावसियालगा परिवसंति, पावा चंडा रोद्दा तल्लिच्छा साहसिया लोहितपाणी आमिसत्थी आमिसाहारा आमिसप्पिया आमिसलोला आमिसं गवेसमाणा

रत्तिं वियालचारिणो दिया पच्छन्नं चावि चिट्ठंति ३। तते णं ताओ मयंगतीरद्दहातो अन्नया कदाइं सूरियंसि चिरत्थमियंसि लुलियाए संझाए पविरलमाणुसंसि णिसंत-पडिणिसंतंसि समाणंसि दुवे कुम्मगा आहारत्थी आहारं गवेसमाणा सणियं २ उत्तरंति, तस्सेव मयंगतीरद्दहस्स परिपेरंतेणं सव्वतो समंता परिघोलेमाणा २ वित्तिं कप्पेमाणा विहरंति, तयणंतरं च णं ते पावसियालगा आहारत्थी जाव आहारं गवेसमाणा मालुयाकच्छयाओ पडिनिक्खमंति २ त्ता जेणेव मयंगतीरे दहे तेणेव उवागच्छंति तस्सेव मयंगतीरद्दहस्स परिपेरंतेणं परिघोलेमाणा २ वित्तिं कप्पेमाणा विहरंति ४। तते णं ते पावसियाला ते कुम्मए पासंति २ जेणेव ते कुम्मए तेणेव पहारेत्थ गमणाए, तते णं ते कुम्मगा ते पावसियालए एज्जमाणे पासंति २ भीता तत्था तसिया उव्विग्गा संजातभया हत्थे य पादे य गीवाए य सएहिं २ काएहिं साहरंति २ निच्चला निप्फंदा तुसिणीया संचिट्ठंति ५। तते णं ते पावसियालया जेणेव ते कुम्मगा तेणेव उवागच्छंति २ ते कुम्मगा सव्वतो समन्ता उव्वत्तेंति परियत्तेंति आसारेंति संसारेंति चालेंति घट्टेंति फंदेंति खोभेंति नहेहिं आलुंपंति दंतेहि य अक्खोडेंति नो चेव णं संचाएंति तेसिं कुम्मगाणं सरीरस्स आबाहं वा पबाहं वा वाबाहं वा उप्पाएत्तए छविच्छेयं वा करेत्तए ६। तते णं ते पावसियालया एए कुम्मए दोच्चंपि तच्चंपि सव्वतो समंता उव्वत्तेंति जाव नो चेव णं एसंचाएन्ति करेत्तए, ताहे संता तंता परितंता निव्विन्ना समाणा सणियं २ पच्चोसक्केंति एगंतमवक्कमंति निच्चला निप्फंदा तुसिणीया संचिट्ठंति ७। तत्थ णं एगे कुम्मगे ते पावसियालए चिरंगते दूरंगए जाणित्ता सणियं २ एगं पायं निच्छुभति, तते णं ते पावसियाला तेणं कुम्मएणं सणियं २ एगं पायं नीणियं पासंति २ ताए उक्किट्ठाए गईए सिग्घं चवलं तुरियं चंडं जतिणं वेगितं जेणेव से कुम्मए तेणेव उवा-

गच्छंति २ तस्स णं कुम्मगस्स तं पायं नखेहिं आलुंपंति दंतेहिं अक्खोडेंति ततो पच्छा मंसं च सोणियं च आहारेंति २ तं कुम्मगं सव्वतो समंता उव्वत्तेंति जाव नो चेव णं संचाइन्ति करेत्तए ताहे दोच्चंपि अवक्कमंति एवं चत्तारिवि पाया जाव सणियं २ गीवं णीणेति, तते णं ते पावसियालगा तेणं कुम्मएणं गीवं णीणियं पासंति २ सिग्घं चवलं ४ नहेहिं दंतेहिं कवालं विहाडेंति २ तं कुम्मगं जीवियाओ ववरोवेंति २ मंसं च सोणियं च आहारेंति ८। एवामेव समणाउसो ! जो अम्हं निग्गंथो वा २ आयरियउवज्झायाणं अंतिए पव्वतिए समाणे पंच से इंदिया अगुत्ता भवंति से णं इहभवे चेव बहूणं समणाणं ४ हीलणिज्जे जाव भवति, परलोगेऽविय णं आगच्छति बहूणं दंडणाणं जाव अणुपरियट्टति, जहा से कुम्मए अगुत्तिंदिए ९। तते णं ते पावसियालगा जेणेव से दोच्चए कुम्मए तेणेव उवागच्छंति २ तं कुम्मगं सव्वतो समंता उवत्तेंति जाव दंतेहिं अक्खुडेंति जाव करेत्तए, तते णं ते पावसियालगा दोच्चंपि तच्चंपि जाव नो संचाएन्ति तस्स कुम्मगस्स किंचि आबाहं वा विबाहं वा जाव छविच्छेयं वा करेत्तए ताहे संता तंता परितंता निव्विन्ना समाणा जामेव दिसिं पाउब्भूता तामेव दिसिं पडिगया, तते णं से कुम्मए ते पावसियालए चिरंगए दूरगए जाणित्ता सणियं २ गीवं नेणेति २ दिसावलोयं करेइ २ जमगसमगं चत्तारिवि पादे नीणेति २ ताए उक्किट्ठाए कुम्मगईए वीइवयमाणे २ जेणेव मयंगतीरद्दहे तेणेव उवागच्छइ २ मित्तनाति-नियग-सयण-संबंधिपरियणेणं सद्धिं अभिसमन्नागए यावि होत्था १०। एवामेव समणाउसो ! जो अम्हं समणो वा २ पंच से इंदियातिं गुत्तातिं भवंति जाव जहा उ से कुम्मए गुत्तिंदिए ११। एवं खलु जंबू ! समणेणं भगवया महावीरेणं चउत्थस्स नायज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते त्तिबेमि १२ ॥ सूत्रं ५७॥ चउत्थं नायज्झयणं समत्तं ॥

॥ इति चतुर्थमध्ययनम् ॥ ४ ॥

॥५॥ अथ श्री शैलकाख्यं पञ्चमध्ययनम् ॥

जति णं भंते ! समणेणं भगवया महावीरेणं चउत्थस्स नायज्झयणस्स अयमट्ठे पन्नत्ते पंचमस्स णं भंते ! णायज्झयणस्स के अट्ठे पन्नत्ते ?, एवं खलु जंबू ! तेणं कालेणं २ बारवती नामं नयरी होत्था पाईण-पडीणायया उदीण-दाहिणविच्छिन्ना नवजोयण-विच्छिन्ना दुवालस-जोयणायामा धणवइ-मतिनिम्मिया चामीयर-पवरपागार-णाणामणि-पंचवन्न-कविसीसग-सोहिया अलयापुरि-संकासा पमुतिय-पक्कीलिया पच्चक्खं देवलोयभूता, तीसे णं बारवतीए नयरीए बहिया उत्तरपुरच्छिमे दिसीभाए रेवतगे नाम पव्वए होत्था तुंगे गगणतल-मणुलिहंतसिहरे णाणाविह-गुच्छगुम्म-लया-वल्लिपरिगते हंस-मिग-मयूर-कोंच-सारस--चक्कवाय-मयणसाल-कोइल-कुलोववेए अणेग-तड-कडग-वियर-उज्झरय-पवाय-पब्भार-सिहरपउरे अच्छरगण-देव-संघ-चारण-विज्जाहर-मिहुणसंविचिन्ने निच्चच्छणए दसारवर-वीरपुरिस-तेलोक्कबलवगाणं सोमे सुभगे पियदंसणे सुरूवे पासातीए ४, १। तस्स णं रेवयगस्स अदूरसामंते एत्थ णं णंदणवणे नामं उज्जाणे होत्था, सव्वोउय-पुप्फफलसमिद्धे रम्मे नंदणवणप्पगासे पासातीए ४, तस्स णं उज्जाणस्स बहुमज्झदेसभाए सुरप्पिए नामं जक्खाययणे होत्था दिव्वे, वन्नओ २। तत्थ णं बारवतीए नयरीए कण्हे नामं वासुदेवे राया परिवसति, से णं तत्थ समुद्दविजयपामोक्खाणं दसण्हं दसाराणं बलदेवपामोक्खाणं पंचण्हं महावीराणं उग्गसेण-पामोक्खाणं सोलसण्हं राईसहस्साणं पज्जुन्न-पामोक्खाणं अद्धुट्ठाणं कुमारकोडीणं संबपामोक्खाणं सट्ठीए दुद्दंतसाहस्सीणं वीरसेण-पामोक्खाणं एक्कवीसाए वीरसाहस्सीणं महासेन-पामोक्खाणं छप्पन्नाए बलवग-साहस्सीणं रुप्पिणीपामोक्खाणं बत्तीसाए महिलासाहस्सीणं अणंग-सेणा-पामोक्खाणं अणेगाणं गणियासाहस्सीणं अन्नेसिं च बहूणं ईसरत-लवर जाव सत्थवाहपभिईणं वेयड्ढगिरि-सायर-पेरंतस्स य दाहिणड्ढ-भरहस्स

य बारवतीए नयरीए य आहेवच्चं जाव पालेमाणे विहरति २ ॥ सूत्रं ४८ ॥ तस्स णं बारवईए नयरीए थावच्चा णामं गाहावतिणी परिवसति अड्ढा जाव अपरिभूता, तीसे णं थावच्चाए गाहावतिणीए पुत्ते थावच्चापुत्ते णामं सत्थवाहदारए होत्था सुकुमालपाणिपाए जाव सुरूवे १ । तते णं सा थावच्चा गाहावइणी तं दारयं सातिरेग-अट्ठवास-जाययं जाणित्ता सोहणंसि तिहि-करण-णक्खत्त-मुहुत्तंसि कलायरियस्स उवणेति, जाव भोगसमत्थं जाणित्ता बत्तीसाए इब्भकुल-बालियाणं एगदिवसेणं पाणिं गेराहावेति, बत्तीसतो दाओ जाव बत्तीसाए इब्भकुलबालियाहिं सद्धिं विपुले सद्दफरिस-रसरूप-वन्नगंधे जाव भुंजमाणे विहरति २ । तेणं कालेणं २ अरहा अरिट्ठनेमी सो चेव वराणओ दसधणुस्सेहे नीलुप्पल-गवल-गुलिय-अयसि-कुसुमप्पगासे अट्ठारसहिं समणसाहस्सीहिं सद्धिं संपरिवुडे चत्तालीसाए अज्जियासाहस्सीहिं सद्धिं संपरिवुडे पुव्वाणु-पुव्विं चरमाणे जाव जेणेव बारवती नगरी जेणेव रेवयगपव्वए जेणेव नंद-णवणे उज्जाणे जेणेव सुरप्पियस्स जक्खस्स जक्खाययणे जेणेव असोगव-रपायवे तेणेव उवागच्छइ २ अहापडिरूवं उग्गहं ओगिरिहत्ता संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे विहरति, परिसा निग्गया धम्मो कहिओ ३ । तते णं से कराहे वासुदेवे इमीसे कहाए लद्धट्ठे समाणे कोडुंबियपुरिसे सद्दावेति २ एवं वदासी–खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया ! सभाए सुहम्माए मेघोघरसियं गंभीरं महुरसद्दं कोमुदितं भेरिं तालेह, तते णं ते कोडुंबिय-पुरिसा कराहेणं वासुदेवेणं एवं वुत्ता समाणा हट्ठ जाव मत्थए अंजलिं कट्टु–एवं सामी २ तहत्ति जाव पडिसुणेंति २ कराहस्स वासुदेवस्स अंति-याओ पडिनिक्खमंति २ जेणेव सहा सुहम्मा जेणेव कोमुदिया भेरी तेणेव उवागच्छंति तं मेघोघरसियं गंभीरं महुरसद्दं कोमुदितं (सामुदायिकीं) भेरिं तालेंति ४ । ततो निद्ध-महुर-गंभीर-पडिसुएणंपिव सारइएणं बलाह-एणंपिव अणुरसियं भेरीएए तते णं तीसे कोमुदियाए भेरियाए तालियाए

समाणीए बारवतीए नयरीए नवजोयण-विच्छिन्नाए दुवालस-जोयणाया-माए सिंघाडग-तिय-चउक्क-चच्चर-कंदरदरीए विवर-कुहर-गिरिसिहर-नगरगो-उर-पासातदुवार-भवणदेउल-पडिसुया-सयसहस्ससंकुलं सद्दं करेमाणे बारवतिं नगरिं सब्भितरबाहिरियं सव्वतो समंता से सद्दे विप्पसरित्था ५ । तते णं बारवतीए नयरीए नवजोयणविच्छिन्नाए बारसजोयणायामाए समुद्दविजय-पामोक्खा दसदसारा जाव गणियासहस्साइं कोमुदीयाए भेरीए सद्दं सोच्चा णिसम्म हट्ठतुट्ठा जाव राहाया आविद्ध-वग्घारिय-मल्लदामकलावा अहतव-त्थ-चंदणोक्किन्न-गायसरीरा अप्पेगतिया हयगया एवं गयगया रहसीया-संद-माणीगया अप्पेगतिया पायविहारचारेणं पुरिस-वग्गुरा-परिखित्ता कराहस्स वासुदेवस्स अंतियं पाउब्भवित्था ६ । तते णं से कराहे वासुदेवे समुद्दवि-जय-पामोक्खे दस दसारे जाव अंतियं पाउब्भवमाणे पासति पासित्ता हट्ठतुट्ठ जाव कोडुंबियपुरिसे सद्दावेति २ एवं वयासी—खिप्पामेव भो देवा-णुप्पिया ! चाउरिंगिणीं सेणं सज्जेह विजयं च गंधहत्थिं उवट्ठवेह, तेवि तहत्ति उवट्ठवेंति, जाव पज्जुवासंति ७ ॥ सूत्रं ५१ ॥ थावच्चापुत्तेवि णिग्गए जहा मेहे तहेव धम्मं सोच्चा णिसम्म जेणेव थावच्चा गाहावतिणी तेणेव उवागच्छति २ पादग्गहणं करेति जहा मेहस्स तहा चेव णिवेयणा जाहे नो संचाएति विसयाणुलोमाहि य विसयपडिकूलाहि य बहूहिं आघ-वणाहि य पन्नवणाहि य सन्नवणाहि य विन्नवणाहि य आघवित्तए वा ४ ताहे अकामिया चेव थावच्चापुत्तदारगस्स निक्खमण-मणुमन्नित्था नवरं निक्खमणाभिसेयं पासामो, तए णं से थावच्चापुत्ते तुसिणीए संचिट्ठइ १ । तते णं सा थावच्चा आसणाओ अब्भुट्ठेति २ महत्थं महग्घं महरिहं राय-रिहं पाहुडं गेराहति २ मित्त जाव संपरिवुडा जेणेव कराहस्स वासुदेवस्स भवणवरपडिदुवारदेसभाए तेणेव उवागच्छति २ पडिहारदेसिएणं मग्गेणं जेणेव कराहे वासुदेवे तेणेव उवागच्छति २ करयल जाव वद्धावेति २ तं

महत्थं महग्घं महरिहं रायरिहं पाहुडं उवरोइ २ एवं वदासी–एवं खलु देवाणुप्पिया ! मम एगे पुत्ते थावच्चापुत्ते नामं दारए इट्ठे जाव से णं संसारभयउव्विग्गे इच्छति अरहओ अरिट्ठनेमिस्स जाव पव्वतित्तए अहरणं निक्खमणसक्कारं करेमि, इच्छामि णं देवाणुप्पिया ! थावच्चापुत्तस्स निक्खममाणस्स छत्तमउड-चामराओ य विदिन्नाओ २। तते णं कण्हे वासुदेवे थावच्चा-गाहावतिणीं एवं वदासी–अच्छाहि णं तुमं देवाणुप्पिए ! सुनिव्वुया वीसत्था, अहरणं सयमेव थावच्चापुत्तस्स दारगस्स निक्खमणसक्कारं करिस्सामि, तते णं से कण्हे वासुदेवे चाउरंगिणीए सेणाए विजयं हत्थि-रयणं दुरूढे समाणे जेणेव थावच्चाए गाहावतिणीए भवणे तेणेव उवाग-च्छति २ थावच्चापुत्तं एवं वदासी–मा णं तुमे देवाणुप्पिया ! मुंडे भवित्ता पव्वयाहि; भुंजाहि णं देवाणुप्पिया ! विउले माणुस्सए कामभोए मम बाहुच्छायापरिग्गहिए, केवलं देवाणुप्पियस्स अहं णो संचाएमि वाउकायं उवरिमेणं गच्छमाणं निवारित्तए, अरणे णं देवाणुप्पियस्स जे किंचिवि आबाहं वा वाबाहं वा उप्पाएति तं सव्वं निवारेमि ३। तते णं से थाव-च्चापुत्ते कण्हेणं वासुदेवेणं एवं वुत्ते समाणे कण्हं वासुदेवं एवं वयासी–जइ णं तुमं देवाणुप्पिया ! मम जीवियंतकरणं मच्चुं एज्जमाणं निवारेसि जरं वा सरीररूवविणासिणिं सरीरं वा अइवयमाणिं निवारेसि तते णं अहं तव बाहुच्छायापरिग्गहिए विउले माणुस्सए कामभोगे भुंजमाणे विहरामि ४। तते णं से कण्हे वासुदेवे थावच्चापुत्तेणं एवं वुत्ते समाणे थावच्चापुत्तं एवं वदासी–एए णं देवाणुप्पिया दुरतिक्कमणिज्जा णो खलु सक्का सुबलिएणावि देवेण वा दाणवेण वा णिवारित्तए णन्नत्थ अप्पणो कम्मक्खएणं, तं इच्छामि णं देवाणुप्पिया ! अन्नाणमिच्छत्तअविरइकसायसंचियस्स अत्तणो कम्मक्खयं करित्तए ५। तते णं से कण्हे वासुदेवे थावच्चापुत्तेणं एवं वुत्ते समाणे कोडुंबियपुरिसे सद्दावेति २ एवं वदासी–गच्छह णं देवाणुप्पिया !

बारवतीए नयरीए सिंघाडग-तियग-चउक्क-चच्चर जाव हत्थिखंधवरगया महया २ सद्देणं उग्घोसेमाणा २ उग्घोसणं करेह—एवं खलु देवाणुप्पिया! थावच्चापुत्ते संसारभउव्विग्गे भीए जम्मणमरणाणं (जम्मजरामरणाणं) इच्छति अरहतो अरिट्ठनेमिस्स अंतिए मुंडे भवित्ता पव्वइत्तए, तं जो खलु देवाणुप्पिया! राया वा जुयराया वा देवी वा कुमारे वा ईसरे वा तलवरे वा कोडुंबिय-पुरिसे वा मांडबिय-पुरिसे वा इब्भसेट्ठि-सेणावइ-सत्थवाहे वा थावच्चापुत्तं पव्वयंतमणुपव्वयति तस्स णं कण्हे वासुदेवे अणुजाणाति पच्छातुरस्सवि य से मित्तनाति-नियग-संबंधिपरिजणस्स जोगखेमं वट्टमाणं पडिवहतित्तिकट्टु घोसणं घोसेह जाव घोसंति ६। तते णं थावच्चापुत्तस्स अणुराएणं पुरिससहस्सं निक्खमणाभिमुहं ण्हायं सव्वालंकारविभूसियं पत्तेयं २ पुरिससहस्सवाहिणीसु सिवियासु दुरूढं समाणं मित्तणातिपरिवुडं थावच्चापुत्तस्स अंतियं पाउब्भूयं ७। तते णं से कण्हे वासुदेवे पुरिससहस्समंतियं पाउब्भवमाणं पासति २ कोडुंबियपुरिसे सद्दावेति २ एवं वदासी—जहा मेहस्स निक्खमणाभिसेओ तहेव सेयापीएहिं ण्हावेति २ जाव अरहतो अरिट्ठनेमिस्स छत्ताइच्छत्तं पडागातिपडागं पासंति २ विज्जाहरचारणे जाव पासित्ता सीवियाओ पच्चोरुहंति, तते णं से कण्हे वासुदेवे थावच्चापुत्तं पुरओ काउं जेणेव अरिहा अरिट्ठनेमी सव्वं तं चेव आभरण-मल्लंकारं ओमुयति, ८। तते णं से थावच्चागाहावइणी हंसलक्खणेणं पडगसाडएणं आभरणमल्लालंकारे पडिच्छइ हार-वारिधार-छिन्न-मुत्तावलिप्पगासाति अंसूणि विणिम्मुंचमाणी २ एवं वदासी—जतियव्वं जाया! घडियव्वं जाया! परिक्कमियव्वं जाया! अस्सिं च णं अट्ठे णो पमादेयव्वं, जामेव दिसिं पाउब्भूता तामेव दिसिं पडिगया ९। तते णं से थावच्चापुत्ते पुरिससहस्सेहिं सद्धिं सयमेव पंचमुट्ठियं लोयं करेति जाव पव्वतिए १०। तते णं से थावच्चापुत्ते अणगारे जाते ईरियासमिए भासासमिए

जाव विहरति, तते णं से थावच्चापुत्ते अरहतो अरिट्ठनेमिस्स तहारूवाणं थेराणं अंतिए सामाइयमाइयाति चोद्दस पुव्वाइं अहिज्जति २ बहूहिं जाव चउत्थेणं विहरति ११ । तते णं अरिहा अरिट्ठनेमी थावच्चापुत्तस्स अणगारस्स तं इब्भाइयं अणगारसहस्सं सीसत्ताए दलयति, तते णं से थावच्चापुत्ते अन्नया कयाइं अरहं अरिट्ठनेमिं वंदति नमंसति २ एवं वदासी–इच्छामि णं भंते ! तुब्भेहिं अब्भणुन्नाते समाणे सहस्सेणं अणगारेणं सद्धिं बहिया जणवयविहारं विहरित्तए, अहासुहं देवाणुप्पिआ ! तते णं से थावच्चापुत्ते अणगारसहस्सेणं सद्धिं तेणं उरालेणं उग्गेणं पयत्तेणं पग्गहिएणं जाव बहिया जणवयविहारं विहरति १२ ॥ सूत्रं ६० ॥

तेणं कालेणं तेणं समएणं सेलगपुरे नामं नगरं होत्था, सुभूमिभागे उज्जाणे, सेलए राया पउमावती देवी मंडुए कुमारे जुवराया, तस्स णं सेलगस्स पंथगपामोक्खा पंच मंतिसया होत्था उप्पत्तियाए वेणइयाए ४ उववेया रज्जधुरं चिंतयंति १ । थावच्चापुत्ते सेलगपुरे समोसढे राया णिग्गतो धम्मकहा, धम्मं सोच्चा जहा णं देवाणुप्पियाणं अंतिए बहवे उग्गा भोगा जाव चइत्ता हिरन्नं जाव पव्वइत्ता तहा णं अहं नो संचाएमि पव्वतित्तए २ । अहन्नं देवाणुप्पियाणं अंतिए पंचाणुव्वइयं जाव समणोवासए जाव अहिगयजीवाजीवे जाव अप्पाणं भावेमाणे विहरंति, पंथगपामोक्खा पंच मंतिसया समणोवासया जाया, थावच्चापुत्ते बहिया जणवयविहारं विहरति ३ ॥ सू० ६१ ॥

तेणं कालेणं २ सोगंधिया नाम नयरी होत्था वन्नओ, नीलासोए उज्जाणे वन्नओ, तत्थ णं सोगंधियाए नयरीए सुदंसणे नामं नगरसेट्ठी परिवसति अड्ढे जाव अपरिभूते १ । तेणं कालेणं २ सुए नामं परिव्वायए होत्था, रिउव्वेय-जजुव्वेय-सामवेय-अथव्वणवेय-सट्ठितंतकुसले (संखाणे सिक्खाणकप्पे कप्पे वागरणे छंदे निरुत्ते जोइसामयणे) संखसमए लद्धट्ठे (वेयाणं इतिहासपंचमाणं निघंटुछट्ठाणं संगोवंगाणं सरहस्साणं सारए वारए पारए सडंगवी सट्ठितं-

तविसारए अन्नेसु य बंभरणएसु सत्थेसु सुपरिनिट्ठिए पंचजम-पंचनियम-जुत्तं) सोयमूलयं दसप्पयारं परिव्वायगधम्मं दाणधम्मं च सोयधम्मं च तित्थाभिसेयं च आघवेमाणे पन्नवेमाणे धाउरत्त-वत्थपवरपरिहिए तिदंड-कुंडिय-छत्तछलु(कंननीय, करोडिय)छरणालयंकुस-पवित्तय-केसरीहत्थगए परिव्वायगसहस्सेणं सद्धिं संपरिवुडे जेणेव सोगंधियानगरी जेणेव परिव्वायगावसहे तेणेव उवागच्छइ २ परिव्वायगावसहंसि भंडगनिक्खेवं करेइ २ त्ता संखसमएणं अप्पाणं भावेमाणे विहरति २ । तते णं सोगंधियाए सिंघाडग-तिगचउक्कचच्चर-चउमुह-महापह-पहेसु बहुजणो अन्नमन्नस्स एवमाइक्खइ—एवं खलु सुए परिव्वायए इह हव्वमागते जाव विहरइ, परिसा निग्गया सुदंसणे निग्गए ३ । तते णं से सुए परिव्वायए तीसे परिसाए सुदंसणस्स य अन्नेसिं च बहूणं संखाणं परिकहेति—एवं खलु सुदंसणा ! अम्हं सोयमूलए धम्मे पन्नत्ते सेऽविय सोए दुविहे पन्नत्ते, तंजहा—दव्वसोए य भावसोए य, दव्वसोए य उदएणं मट्टियाए य, भावसोए दब्भेहि य मंतेहि य, जन्नं अम्हं देवाणुप्पिया ! किंचि असुई भवति तं सव्वं सज्जो पुढवीए आलिप्पति ततो पच्छा सुद्धेण वारिणा पक्खालिज्जति ततो तं असुई सुई भवति, एवं खलु जीवा जलाभिसेयपू-यप्पाणो अविग्घेणं सग्गं गच्छंति, तते णं से सुदंसणे सुयस्स अंतिए धम्मं सोच्चा हट्ठे सुयस्स अंतियं सोयमूलयं धम्मं गेण्हति २ परिव्वायए विपुलेणं असण-पाणखाइमसाइमेणं वत्थ-गन्धमल्ललंकारेणं पडिलाभेमाणे जाव विहरति ३ । तते णं से सुए परिव्वायगे सोगंधियाओ नगरीओ निगच्छति २ त्ता बहिया जणवयविहारं विहरति ४ । तेणं कालेणं २ थावच्चापुत्तस्स समोसरणं, परिसा निग्गया, सुदंसणोवि णीइ, थावच्चापुत्तं वंदति नमंसति २ एवं वदासी—तुम्हाणं किंमूलए धम्मे पन्नत्ते ?, तते णं थावच्चापुत्ते सुदंसणेणं एवं वुत्ते समाणे सुदंसणं एवं वदासी—सुदंसणा ! विणयमूले धम्मे पन्नत्ते, सेविय विणयमूले धम्मे दुविहे पन्नत्ता, तंजहा—अगारविणए अणगारविणए

य, तत्थ णं जे से अगारविणए से णं पंच अणुव्वयातिं सत्त सिक्खावयातिं एक्कारस उवासगपडिमाओ, तत्थ णं जे से अणगारविणए से णं पंच महव्वयाइं, तंजहा–सव्वातो पाणातिवायाओ वेरमणं सव्वाओ मुसावायाओ वेरमणं सव्वातो अदिन्नादाणातो वेरमणं सव्वाओ मेहुणाओ वेरमणं सव्वाओ परिग्गहाओ वेरमणं सव्वाओ राइभोयणाओ वेरमणं जाव मिच्छादंसणसल्लाओ वेरमणं ५। दसविहे पच्चक्खाणे बारस भिक्खुपडिमाओ, इच्चेएणं दुविहेणं विणयमूलएणं धम्मेणं अणुपुव्वेणं अट्ठकम्मपगंठीओ खवेत्ता लोयग्गपइट्ठाणे भवंति ६। तते णं थावच्चापुत्ते सुदंसणं एवं वदासी–तुब्भे णं सुदंसणा ! किंमूलए धम्मे पन्नते ?, अम्हाणं देवाणुप्पिया ! सोयमूले धम्मे पन्नत्ते जाव सग्गं गच्छंति ७। तते णं थावच्चापुत्ते सुदंसणं एवं वदासी–सुदंसणा ! से जहा नामए केइ पुरिसे एगं महं रुहिरकयं वत्थं रुहिरेण चेव धोवेज्जा तते णं सुदंसणा ! तस्स रुहिरकयस्स वत्थस्स रुहिरेण चेव पक्खालिज्जमाणस्स अत्थि काइ सोही ?, णो तिणट्ठे समट्ठे, एवामेव सुदंसणा ! तुब्भंपि पाणातिवाएणं जाव मिच्छादंसणसल्लेणं नत्थि सोही जहा तस्स रुहिरकयस्स वत्थस्स रुहिरेणं चेव पक्खालिज्जमाणस्स नत्थि सोही, सुदंसणा ! से जहाणामए केइ पुरिसे एगं महं रुहिरकयं वत्थं सज्जियाखारेणं अणुलिंपति २ पयणं आरुहेति २ उण्हं गाहेइ २ त्ता ततो पच्छा सुद्धेणं वारिणा धोवेज्जा, से णूणं सुदंसणा ! तस्स रुहिरकयस्स वत्थस्स सज्जियाखारेणं अणुलित्तस्स पयणं आरुहियस्स उण्हं गाहितस्स सुद्धेणं वारिणा पक्खालिज्जमाणस्स सोही भवति ?, हंता भवइ, एवामेव सुदंसणा ! अम्हंपि पाणाइवाय-वेरमणेणं जाव मिच्छादंसण-सल्लवेरमणेणं अत्थि सोही, जहा वा तस्स रुहिरकयस्स वत्थस्स जाव सुद्धेणं वारिणा पक्खालिज्जमाणस्स अत्थि सोही ८। तत्थ णं से सुदंसणे संबुद्धे थावच्चापुत्तं वंदति नमंसति २ एवं वदासी–इच्छामि णं भंते ! धम्मं सोच्चा जाणित्तए जाव

समणोवासए जाते अहिगयजीवाजीवे जाव पडिलाभेमाणे विहरति, तए णं तस्स सुयस्स परिव्वायगस्स इमीसे कहाए लद्धट्ठस्स समाणस्स अयमेयारूवे जाव समुप्पज्जित्था—एवं खलु सुदंसणेणं सोयं धम्मं विप्पजहाय विणयमूले धम्मे पडिवन्ने, तं सेयं खलु मम सुदंसणस्स दिट्ठिं वामेत्तए, पुणरवि सोयमूलए धम्मे आघवित्तएत्तिकट्टु एवं संपेहेति २ परिव्वायगसहस्सेणं सद्धिं जेणेव सोगंधिया नगरी जेणेव परिव्वायगावसहे तेणेव उवागच्छति २ परिव्वायगावसहंसि भंडनिक्खेवं करेति २ धाउरत्तवत्थपरिहिते पविरलपरिव्वायगेणं सद्धिं संपरिवुडे परिव्वायगावसहाओ पडिनिक्खमति २ सोगंधियाए नयरीए मज्झंमज्झेणं जेणेव सुदंसणस्स गिहे जेणेव सुदंसणे तेणेव उवागच्छति, तते णं से सुदंसणे तं सुयं एज्जमाणं पासति २ नो अब्भुट्ठेति नो पच्चुग्गच्छति णो आढाइ नो परियाणाइ नो वंदति तुसिणीए संचिट्ठति ९। तए णं से सुए परिव्वायए सुदंसणं अणब्भुट्ठियं जाव पासित्ता एवं वदासी—तुमं णं सुदंसणा! अन्नदा ममं एज्जमाणं पासित्ता अब्भुट्ठेसि जाव वंदसि, इयाणिं सुदंसणा! तुमं ममं एज्जमाणं पासित्ता जाव णो वंदसि, तं कस्स णं तुमे सुदंसणा! इमेयारूवे विणयमूलधम्मे पडिवन्ने ?, तते णं से सुदंसणे सुएणं परिव्वायएणं एवं वुत्ते समाणे आसणाओ अब्भुट्ठेति २ करयल-परिग्गहिय-दसणहं जाव सुयं परिव्वायगं एवं वदासी—एवं खलु देवाणुप्पिया! अरहतो अरिट्ठनेमिस्स अंतेवासी थावच्चापुत्ते नामं अणगारे जाव इहमागए इह चेव नीलासोए उज्जाणे विहरति, तस्स णं अंतिए विणयमूले धम्मे पडिवन्ने १०। तते णं से सुए परिव्वायए सुदंसणं एवं वदासी—तं गच्छामो णं सुदंसणा! तव धम्मायरियस्स थावच्चापुत्तस्स अंतियं पाउब्भवामो इमाइं च णं एयारूवाति अट्ठाइं हेऊइं पसिणाति कारणाति वागरणाति पुच्छामो, तं जइ णं मे से इमाइं अट्ठाति जाव वागरति तते णं अहं वंदामि नमंसामि, अह मे से इमाति अट्ठाति

जाव नो से वाकरेति तते णं अहं एएहिं चेव अट्ठेहिं हेऊहिं निप्पट्ठपसिणवागरणं करिस्सामि ११। तते णं से सुए परिव्वायगसहस्सेणं सुदंसणेण य सेट्ठिणा सद्धिं जेणेव नीलासोए उज्जाणे जेणेव थावच्चापुत्ते अणगारे तेणेव उवागच्छति २ त्ता थावच्चापुत्तं एवं वदासी—जत्ता ते भंते! जवणिज्जं ते अव्वाबाहंपि ते फासुयं विहारं ते ?, तते णं से थावच्चापुत्ते सुएणं परिव्वायगेणं एवं वुत्ते समाणे सुयं परिव्वायगं एवं वदासी—सुया! जत्तावि मे जवणिज्जंपि मे अव्वाबाहंपि मे फासुयविहारंपि मे १२। तते णं से सुए थावच्चापुत्तं एवं वदासी—किं भंते! जत्ता ? सुया! जन्नं मम णाणदंसणचरित्ततव-संजममातिएहिं जोएहिं जोयणा से तं जत्ता, से किं तं भंते! जवणिज्जं ?, सुया! जवणिज्जे दुविहे पन्नत्ते, तंजहा—इंदियजवणिज्जे य नोइंदियजवणिज्जे य, से किं तं इंदियजवणिज्जे ?, सुया! जन्नं ममं सोतिंदिय-चक्खिंदिय-घाणिंदिय-जिब्भिंदिय-फासिंदियाइं निरुवहयाइं वसे वट्टंति से तं इंदियजवणिज्जं, से किं तं नोइंदियजवणिज्जे ?, सुया! जन्नं कोहमाणमायालोभा खीणा उवसंता नो उदयंति से तं नोइंदियजवणिज्जे १३। *से किं तं भंते! अव्वाबाहं ? सुया! जन्नं मम वातिय-पित्तिय-सिंभिय-*सन्निवाइया विविहा रोगातंका णो उदीरेंति सेत्तं अव्वाबाहं, से किं तं भंते! फासुयविहारं ?, सुया! जन्नं आरामेसु उज्जाणेसु देवउलेसु सभासु पव्वासु इत्थि-पसु-पंडग-विवज्जियासु वसहीसु पाडिहारियं पीढफलग-सेज्जासंथारयं उग्गिण्हित्ताणं विहरामि सेत्तं फासुयविहारं १४। सरिसवया ते भंते! किं भक्खेया अभक्खेया ?, सुया! सरिसवया भक्खेयावि अभक्खेयावि, से केणट्ठेणं भंते! एवं वुच्चइ—सरिसवया भक्खेयावि अभक्खेयावि ?, सुया! सरिसवया दुविहा पन्नता, तंजहा—मित्तसरिसवया धन्नसरिसवया य, तत्थ णं जे ते मित्तसरिसवया ते तिविहा पन्नता, तंजहा—सहजायया सहवड्ढियया सहपंसुकीलियया, ते णं समणाणं

णिग्गंथाणं अभक्खेया, तत्थ णं जे ते धन्नसरिसवया ते दुविहा पन्नत्ता, तंजहा–सत्थपरिणया य असत्थपरिणया य १५। तत्थ णं जे ते असत्थपरिणया ते समणाणं निग्गंथाणं अभक्खेया, तत्थ णं जे ते सत्थपरिणया ते दुविहा पन्नत्ता, तंजहा–फासुगा य अफासुगा य, अफासुया णं सुया! नो भक्खेया, तत्थ णं जे ते फासुया ते दुविहा पन्नत्ता, तंजहा–जातिया य अजातिया य, तत्थ णं जे ते अजातिया ते अभक्खेया, तत्थ णं जे ते जाइया ते दुविहा पन्नत्ता, तंजहा–एसणिज्जा य अणेसणिज्जा य, तत्थ णं जे ते अणेसणिज्जा ते णं अभक्खेया, तत्थ णं जे ते एसणिज्जा ते दुविहा पन्नत्ता, तंजहा–लद्धा य अलद्धा य, तत्थ णं जे ते अलद्धा ते अभक्खेया, तत्थ णं जे ते लद्धा ते निग्गंथाणं भक्खेया, एएणं अट्ठेणं सुया! एवं वुच्चति–सरिसवया भक्खेयावि अभक्खेयावि, एवं कुलत्थावि भाणियव्वा १६। नवरि इमं णाणत्तं–इत्थिकुलत्था य धन्नकुलत्था य, इत्थिकुलत्था तिविहा पन्नत्ता, तंजहा–कुलवधुया य कुलमाउया इ य कुलधूया इ य, धन्नकुलत्था तहेव, एवं मासावि १७। नवरि इमं नाणत्तं–मासा तिविहा पन्नत्ता, तंजहा–कालमासा य अत्थमासा य धन्नमासा य, तत्थ णं जे ते कालमासा ते णं दुवालसविहा पन्नत्ता, तंजहा–सावणे जाव आसाढे, ते णं अभक्खेया, अत्थमासा दुविहा–हिरन्नमासा य सुवण्णमासा य, ते णं अभक्खेया धन्नमासा तहेव १८। एगे भवं दुवे भवं अणेगे भवं अक्खए अव्वए भवं अव्वए भवं अवट्ठिए भवं अणेगभूयभावे भविएवि भवं ?, सुया! एगेवि अहं! दुवेवि अहं जाव अणेगभूयभावभविएवि अहं, से केणट्ठेणं भंते! एगेवि अहं जाव सुया! दव्वट्ठयाए एगे अहं नाणदंसणट्ठयाए दुवेवि अहं, पएसट्ठयाए अक्खएवि अहं अव्वएवि अहं अवट्ठिएवि अहं, उवओगट्ठयाए अणेगभूयभावभविएवि अहं १९। एत्थ णं से सुए संबुद्धे थावच्चापुत्तं वंदति नमंसति २ एवं वदासी–इच्छामि णं भंते! तुब्भे अंतिए केवलि-

पन्नत्तं धम्मं निसामित्तए धम्मकहा भाणियव्वा, तए णं से सुए परिव्वायए थावच्चापुत्तस्स अंतिए धम्मं सोच्चा णिसम्म एवं वदासी—इच्छामि णं भंते ! परिव्वायग-सहस्सेणं सद्धिं संपरिवुडे देवाणुप्पियाणं अंतिए मुंडे भविता पव्वइत्तए, अहासुहं जाव उत्तरपुरच्छिमे दिसीभागे तिडंडयं जाव थाउरत्ताओ य एगंते एडेति २ सयमेव सिहं उप्पाडेति २ जेणेव थावच्चापुत्ते तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता जाव मुंडे भवित्ता जाव पव्वतिए सामाइयमातियाइं चोद्दस पुव्वाति अहिज्जति २० । तते णं थावच्चापुत्ते सुयस्स अणगारसहस्सं सीसत्ताए वियरति, तते णं से थावच्चापुत्ते सोगंधियाओ नीलासोयाओ पडिनिक्खमति २ बहिया जणवयविहारं विहरति २१ । तते णं से थावच्चापुत्ते अणगारसहस्सेणं सद्धिं संपरिवुडे जेणेव पुंडरीए पव्वए तेणेव उवागच्छइ २ पुंडरीयं पव्वयं सणियं २ दुरूहति २ मेघघणसन्निगासं देवसन्निवायं पुढविसिलापट्टयं जाव पाओवगमणं णुवन्ने २२ । तते णं से थावच्चाउत्ते बहूणि वासाणि सामन्नपरियागं पाउणित्ता मासियाए संलेहणाए सट्ठिं भत्ताति अणसणाए जाव केवलवरनाणदंसणं समुप्पाडेत्ता ततो पच्छा सिद्धे जाव पहीणे २३ ॥ सूत्रं ६२ ॥ तते णं से सुए अन्नया कयाइं जेणेव सेलगपुरे नगरे जेणेव सुभूमिभागे उज्जाणे समोसरणं परिसा निग्गया सेलओ निग्गच्छति धम्मं सोच्चा जं नवरं देवाणुप्पिया ! पंथगपामोक्खाति पंच मंतिसयाति आपुच्छामि मण्डुयं च कुमारं रज्जे ठावेमि, ततो पच्छा देवाणुप्पियाणं अन्तिए मुंडे भवित्ता आगाराओ अणगारियं पव्वयामि, अहासुहं १ । तते णं से सेलए राया सेलगपुरं नयरं अणुपविसति २ जेणेव सए गिहे जेणेव बाहिरिया उवट्ठाणसाला तेणेव उवागच्छइ २ सीहासणं सन्निसन्ने, तते णं से सेलए राया पंथयपामोक्खे पंच मंतिसए सद्दावेइ सद्दावेत्ता एवं वदासी—एवं खलु देवाणुप्पिया ! मए सुयस्स अंतिए धम्मे णिसंते सेवि य मे धम्मे इच्छिए पडिच्छिए

अभिरुतिए अहं णं देवाणुप्पिया ! संसारभयउव्विग्गे जाव पव्वयामि, तुब्भे णं देवाणुप्पिया ! किं करेह किं ववसह किं वा ते हियइच्छियं ? २। तते णं तं पंथयपामोक्खा पंचमंतिसया सेलगं रायं एवं वदासी—जइ णं तुब्भे देवाणुप्पिया ! संसार जाव पव्वयह अम्हाणं देवाणुप्पिया ! किमन्ने आहारे वा आलंबे वा अम्हेऽवि य णं देवाणुप्पिया ! संसारभयउव्विग्गा जाव पव्वयामो, जहा देवाणुप्पिया ! अम्हं बहुसु कज्जेसु य कारणेसु य जाव तहा णं पव्वतियाणवि समाणाणं बहुसु जाव चक्खुभूते ३। तते णं से सेलगे पंथगपामोक्खे पंच मंतिसए एवं वदासी—जति णं देवाणुप्पिया ! तुब्भे संसार जाव पव्वयह तं गच्छह णं देवाणुप्पिया ! सएसु २ कुडुंबेसु जेट्ठे पुत्ते कुडुंबमज्झे ठवेत्ता पुरिससहस्सवाहिणीओ सीयाओ दुरूढा समाणा मम अंतियं पाउब्भवहत्ति, तहेव पाउब्भवंति ४। तते णं से सेलए राया पंच मंतिसयाइं पाउब्भवमाणाति पासति २ हट्ठतुट्ठे कोडुंबियपुरिसे सद्दावेति २ एवं वदासी—खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया ! मंडुयस्स कुमारस्स महत्थं जाव रायाभिसेयं उवट्ठवेह जाव अभिसिंचति जाव राया विहरति। तते णं से सेलए मंडुयं रायं आपुच्छइ ५। तते णं से मंडुए राया कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ २ एवं वदासी—खिप्पामेव सेलगपुरं नगरं आसित जाव गंधवट्टिभूतं करेह य कारवेह य २ एवमाणत्तियं पच्चप्पिणह, तते णं से मंडुए दोच्चंपि कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ २ एवं वदासी—खिप्पामेव सेलगस्स रन्नो महत्थं जाव निक्खमणाभिसेयं जहेव मेहस्स तहेव णवरं पउमावतीदेवी अग्गकेसे पडिच्छति सव्वेवि पडिग्गहं गहाय सीयं दुरूहंति, अवसेसं तहेव जाव सामातियमातियाति एक्कारस अंगाइं अहिज्जति २ बहूहिं चउत्थ जाव विहरति ६। तए णं से सुए सेलयस्स अणगारस्स ताइं पंथयपामोक्खाति पंच अणगारसयाइं सीसत्ताए वियरति, तते णं से सुए अन्नया कयाइं

सेलगपुराओ नगराओ सुभूमिभागाओ उज्जाणाओ पडिनिक्खमति २ त्ता बहिया जणवयविहारं विहरति, तते णं से सुए अणगारे अन्नया कयाइं तेणं अणगारसहस्सेणं सद्धिं संपरिवुडे पुव्वाणुपुव्विं चरमाणे गामाणुगामं विहरमाणे जेणेव पोंडरीए पव्वए जाव सिद्धे ७॥ सूत्रं ६३ ॥ तते णं तस्स सेलगस्स रायरिसिस्स तेहिं अंतेहि य पंतेहि य तुच्छेहि य लूहेहि य अरसेहि य विरसेहि य सीएहि य उराहेहि य कालातिक्कंतेहि य पमाणाइक्कंतेहि य णिच्चं पाणभोयणेहि य पयइसुकुमालयस्स सुहोचियस्स सरीरगंसि वेयणा पाउब्भूता उज्जला जाव दुरहियासा (रोगायंके उज्जले जाव दुरहियासे) कंडुयदाह-पित्तज्जर-परिगयसरीरे यावि विहरति, तते णं से सेलए तेणं रोयायंकेणं सुक्के जाए यावि होत्था १ । तते णं सेलए अन्नया कदाइं पुव्वाणुपुव्विं चरमाणे जाव जेणेव सुभूमिभागे जाव विहरति, परिसा निग्गया, मंडुओऽवि निग्गओ, सेलयं अणगारं जाव वंदति नमंसति २ पज्जुवासति २ । तते णं से मंडुए राया सेलयस्स अणगारस्स सरीरयं सुक्कं भुक्कं जाव सव्वाबाहं सरोगं पासति २ एवं वदासी—अहं णं भंते ! तुब्भं अहापवित्तेहिं तिगिच्छएहिं अहापवित्तेणं ओसहभेसज्जेणं भत्तपाणेणं तिगिच्छं आउंटावेमि, तुब्भे णं भंते ! मम जाणसालासु समोसरह फासुअं एसणिज्जं पीढ-फलगसेज्जा-संथारगं ओगिण्हित्ताणं विहरह ३ । तते णं से सेलए अणगारे मंडुयस्स रन्नो एयमट्ठं तहत्ति पडिसुणेति, तते णं से मंडुए सेलयं वंदति नमंसति २ जामेव दिसिं पाउब्भूते तामेव दिसिं पडिगए ४ । तते णं से सेलए कल्लं जाव जलंते सभंड-मत्तोवगरण-मायाए पंथयपामोक्खेहिं पंचहिं अणगारसएहिं सद्धिं सेलगपुर-मणुपविसति २ जेणेव मंडुयस्स जाणसाला तेणेव उवागच्छति २ फासुयं पीढ जाव विहरति ५ । तते णं से मंडुए चिगिच्छए सद्दावेति २ एवं वदासी—तुब्भे णं देवाणुप्पिया ! सेलयस्स फासुएसणिज्जेणं जाव तेगिच्छं आउट्टेह, तते

णं तेगिच्छया मंडुएणं रन्ना एवं वुत्ता हट्ठतुट्ठ जाव सेलयस्स अहापवित्तेहिं ओसहभेसज्जभत्तपाणेहिं तेगिच्छं आउट्टेंति, मज्जपाणयं च से उवदिसंति ६ । तते णं तस्स सेलयस्स अहापवत्तेहिं जाव मज्जपाणेणं रोगायंके उवसंते होत्था हट्ठे म(क)ल्लसरीरे जाते ववगयरोगायंके, तते णं से सेलए तंसि रोगायंकंसि उवसंतंसि समाणंसि तंसि विपुलंसि असण-पाण-खाइमसाइमंसि मज्जपाणए य मुच्छिए गढिए गिद्धे अज्झोववन्ने ओसन्ने ओसन्नविहारी एवं पासत्थे २ कुसीले २ पमत्ते संसत्ते उउबद्ध-पीढफलग-सेज्जासंथारए पमत्ते यावि विहरति, नो संचाएति फासुएसणिज्जं पीढं पच्चप्पिणित्ता, मंडुयं च रायं आपुच्छित्ता बहिया जाव (जणवयविहारं अब्भुज्जएणं पवत्तेण पग्गहिएणं) विहरित्तए ७ । तते णं तेसिं पंथयवज्जाणं पंचण्हं अणगारसयाणं अन्नया कयाइं एगयओ सहियाणं जाव पुव्वरत्ता-वरत्त-कालसमयंसि धम्मजागरियं जागरमाणाणं अयमेयारूवे अब्भत्थिए जाव समुप्पज्जित्था—एवं खलु सेलए रायरिसी चइत्ता रज्जं जाव पव्वतिए ८ । विपुलेणं असण-पाण-खाइम-साइमेणं मज्जपाणए मुच्छिए, नो संचाएति जाव विहरित्तए, नो खलु कप्पइ देवाणुप्पिया ! समणाणं जाव पमत्ताणं विहरित्तए, तं सेयं खलु देवाणुप्पिया ! अम्हं कल्लं सेलयं रायरिसिं आपुच्छित्ता पाडिहारियं पीढफलग-सेज्जासंथारगं पच्चप्पिणित्ता सेलगस्स अणगारस्स पंथयं अणगारं वेयावच्चकरं ठवेत्ता बहिया अब्भुज्जएणं जाव विहरित्तए ९ । एवं संपेहेंति २ कल्लं जेणेव सेलए आपुच्छित्ता पाडिहा-रियं पीढ-फलग-सेजासंथारगं पच्चप्पिणंति २ पंथयं अणगारं वेयावच्चकरं ठवंति २ बहिया जाव विहरंति १० ॥ सूत्रं ६४ ॥ तते णं से पंथए सेलयस्स सेज्जासंथार-उच्चारपासवण--खेलसंघाण-मत्तओसह--भेसज्ज-भत्तपाणएणं अगि-लाए विणएणं वेयावडियं करेइ १ । तते णं से सेलए अन्नया कयाइं कत्तिय-चाउम्मासियंसि विपुलं असण-पाण-खाइम-साइमं आहारमाहारिए सुबहुं

मज्जपाणयं पीए पुव्वा(पच्चा)वररहकालसमयंसि सुहप्पसुत्ते २। तते णं से पंथए कत्तिय-चाउम्मासियंसि कयकाउस्सग्गे देवसियं पडिक्कमणं पडिक्कंते चाउम्मासियं पडिक्कमिउंकामे सेलयं रायरिसिं खामणट्ठयाए सीसेणं पाएसु संघट्टेइ ३। तते णं से सेलए पंथएणं सीसेणं पाएसु संघट्टिए समाणे आसुरुत्ते जाव मिसिमिसेमाणे उट्ठेति २ एवं वदासी–से केस णं भो एस अप्पत्थियपत्थए जाव परिवज्जिए जे णं ममं सुहपसुत्तं पाएसु संघट्टेति ? तते णं से पंथए सेलएणं एवं वुत्ते समाणे भीए तत्थे तसिए करयल-परिग-हियदसनहं जाव कट्टु एवं वदासी–अहण्णं भंते ! पंथए कयकाउस्सग्गे देवसियं पडिक्कमणं पडिक्कंते चाउम्मासियं पडिक्कंते चाउम्मासियं खामेमाणे देवाणुप्पियं वंदमाणे सीसेणं पाएसु संघट्टेमि, तं खमंतु णं देवाणुप्पिया ! खमन्तु मेऽवराहं तुमरणं (खंतुमरहंतु णं) देवाणुप्पिया ! णाइभुज्जो एवं करणयाएत्तिकट्टु सेलयं अणगारं एतमट्ठं सम्मं विणएणं भुज्जो २ खामेति ४। तते णं तस्स सेलयस्स रायरिसिस्स पंथएणं एवं वुत्तस्स अयमेयारूवे जाव समुप्पज्जित्था–एवं खलु अहं रज्जं च जाव ओसन्नो जाव उउबद्धपीढ-फलग-सेज्जासंथारए विहरामि, तं नो खलु कप्पति समणाणं णिग्गंथाणं अपसत्थाणं जाव विहरित्तए, तं सेयं खलु मे कल्लं मंडुयं रायं आपुच्छित्ता पाडिहारियं पीढफलग-सेज्जासंथारयं पच्चप्पिणित्ता पंथएणं अणगारेणं सद्धिं बहिया अब्भुज्जएणं जाव जणवयविहारेणं विहरित्तए, एवं संपेहेति २ कल्लं जाव विहरति ५॥ सूत्रं ६५॥

एवामेव समणाउसो ! जाव निग्गंथे वा २ ओसन्ने जाव संथारए पमत्ते विहरति से णं इहलोए चेव बहूणं समणाणं ४ हीलणिज्जे संसारो भाणियव्वो १। तते णं ते पंथगवज्जा पंच अणगारसया इमीसे कहाए लद्धट्ठा समाणा अन्नमन्नं सद्दावेंति २ एवं वयासी–सेलए रायरिसी पंथएणं बहिया जाव विहरति, तं सेयं खलु देवाणुप्पिया ! अम्हं सेलयं

उवसंपज्जित्ता णं विहरित्तए, एवं संपेहेंति २ त्ता सेलयं रायं उवसंपज्जित्ताणं विहरंति २ ॥ सूत्रं ६६ ॥ तते णं ते सेलयपामोक्खा पंच अणगारसया बहूणि वासाणि सामन्नपरियागं पाउणित्ता जेणेव पोंडरीये पव्वए तेणेव उवागच्छंति २ जहेव थावच्चापुत्ते तहेव सिद्धा १ । एवामेव समणाउसो ! जो निग्गंथो वा २ जाव विहरिस्सति एवं खलु जंबू ! समणेणं भगवया महावीरेणं पंचमस्स णायज्झयणस्स अयमट्ठे पराणत्तेत्तिबेमि २ ॥ सूत्रं ६७ ॥ पंचमं नायज्झयणं समत्तं ॥

॥ इति पञ्चममध्ययनम् ॥ ५ ॥

॥६॥ श्रीतुम्बकाख्यं षष्ठमध्ययनम् ॥

जति णं भंते ! समणेणं जाव संपत्तेणं पंचमस्स णायज्झयणस्स अयमट्ठे पन्नत्ते छट्ठस्स णं भंते ! नायज्झयणस्स समणेणं जाव संपत्तेणं के अट्ठे पन्नत्ते ?, एवं खलु जंबू ! तेणं कालेणं २ रायगिहे समोसरणं परिसा निग्गया १ । तेणं कालेणं २ समणस्स भगवओ महावीरस्स जेट्ठे अंतेवासी इंदभूती अणगारे अदूरसामंते जाव सुक्कज्झाणोवगए विहरति, तते णं से इंदभूती अणगारे जायसड्ढे० समणस्स ३ एवं वदासी—कहराणं भंते ! जीवा गुरुयत्तं वा लहुयत्तं वा हव्वमागच्छंति ?, गोयमा ! से जहा नामए केइ पुरिसे एगं महं सुक्कं तुंबं णिच्छिड्डं निरुवहयं दब्भेहिं कुसेहिं वेढेइ २ मट्टियालेवेणं लिंपति उराहे दलयति २ सुक्कं समाणं दोच्चंपि दब्भेहि य कुसेहि य वेढेति २ मट्टियालेवेणं लिंपति २ उराहे सुक्कं समाणं तच्चंपि दब्भेहि य कुसेहि य वेढेति २ मट्टियालेवेणं लिंपति, एवं खलु एएणुवाएणं अंतरा वेढेमाणे अंतरा लिंपेमाणे अंतरा सुक्कवेमाणे जाव अट्ठहिं मट्टियालेवेहिं आलिंपति, अत्थाह-मतारम-पोरिसियंसि उदगंसि पक्खिवेज्जा, से णूणं गोयमा ! से तुंबे तेसिं अट्ठराहं मट्टियालेवाणं गुरुय-

याए भारिययाए गुरुयभारिययाए उप्पिं सलिलमतिवइत्ता अहे धरणियल-पइट्ठाणे भवति, एवामेव गोयमा ! जीवावि पाणातिवाएणं जाव मिच्छा-दंसणसल्लेणं अणुपुव्वेणं अट्ठ कम्मपगडीओ समज्जिणन्ति, तासिं गरुय-याए भारिययाए गरुयभारिययाए कालमासे कालं किच्चा धरणियल-मतिव-तित्ता अहे नरगतल-पइट्ठाणा भवंति, एवं खलु गोयमा ! जीवा गुरुयत्तं हव्वमागच्छंति २ । अहणं गोयमा ! से तुंबे तंसि पढमिल्लुगंसि मट्टि-यालेवंसि तिन्नंसि कुहियंसि परिसडियंसि ईसिं धरणियलाओ उप्पतित्ता णं चिट्ठति, ततोऽणंतरं च णं दोच्चंपि मट्टियालेवे जाव उप्पतित्ता णं चिट्ठति, एवं खलु एएणं उवाएणं तेसु अट्ठसु मट्टियालेवेसु तिन्नेसु जाव विमुक्कबंधणे अहेधरणियल-मइवइत्ता उप्पिं सलिलतल-पइट्ठाणे भवति, एवा-मेव गोयमा ! जीवा पाणातिवातवेरमणेणं जाव मिच्छादंसण-सल्ल-वेरमणेणं अणुपुव्वेणं अट्ठ कम्मपगडीओ खवेत्ता गगणतल-मुप्पइत्ता उप्पिं लोयग्ग-पतिट्ठाणा भवंति, एवं खलु गोयमा ! जीवा लहुयत्तं हव्वमागच्छंति ३ । एवं खलु जंबू ! समणेणं भगवया महावीरेणं छट्ठस्स नायज्झयणस्स अयमट्ठे पन्नत्तेत्तिबेमि ४ ॥ सूत्रं ६८ ॥ छट्ठं नायज्झयणं समत्तं ॥

॥ इति षष्ठमध्ययनम् ॥ ६ ॥

॥७॥ अथ श्रीरोहिणीज्ञाताख्यं सप्तममध्ययनम् ॥

जति णं भंते ! समणेणं जाव संपत्तेणं छट्ठस्स नायज्झयणस्स अयमट्ठे पन्नत्ते सत्तमस्स णं भंते ! नायज्झयणस्स के अट्ठे पन्नत्ते ?, एवं खलु जंबू ! तेणं कालेणं २ रायगिहे नाम नयरे होत्था, सुभूमिभागे उज्जाणे १ । तत्थ णं रायगिहे नगरे धणे नामं सत्थवाहे परिवसति, अड्ढे०, भद्दा भारिया अहीणपंचेंदिय जाव सुरूवा, तस्स णं धणस्स सत्थवाहस्स पुत्ता भद्दाए भारियाए अत्तया चत्तारि सत्थवाहदारया होत्था, तंजहा—धणपाले धणदेवे

धणगोवे धणरक्खिए, तस्स णं धणस्स सत्थवाहस्स चउण्हं पुत्ताणं भारियाओ चत्तारि सुण्हाओ होत्था, तंजहा—उज्झिया भोगवतिया रक्खतिया रोहिणिया २। तते णं तस्स धणस्स अन्नया कदाइ पुव्वरत्ता-वरत्त-कालसमयंसि इमेयारूवे अब्भत्थिए जाव समुप्पज्जित्था—एवं खलु अहं रायगिहे बहूणं ईसर जाव पभिईणं सयस्स कुडुंबस्स बहूसु कज्जेसु य करणिज्जेसु कोडुंबेसु य मंतणेसु य गुज्झे रहस्से निच्छए ववहारेसु य आपुच्छणिज्जे पडिपुच्छणिज्जे मेढी पमाणे आहारे आलंबणे चक्खुमेढीभूते कज्जवट्टावए ३। तं ण णज्जति जं मए गयंसि वा चुयंसि वा मयंसि वा भग्गंसि वा लुग्गंसि वा सडियंसि वा पडियंसि वा विदेसत्थंसि वा विप्पवसियंसि वा, इमस्स कुडुंबस्स किं मन्ने आहारे वा आलंबे वा पडिबंधे वा भविस्सति ? ४। तं सेयं खलु मम कल्लं जाव जलंते विपुलं असणं ४ उवक्खडावेत्ता मित्तणाति-नियगसयण-संबंधि-परिजणं चउण्हं सुण्हाणं कुलघर-वग्गं आमंतेत्ता तं मित्तणाइ-णियगसयण-संबंधिपरिजणं चउण्ह य सुण्हाणं *कुलघरवग्गं विपुलेणं असण-पाण-खाइम-साइमेणं धूवपुप्फवत्थगंध जाव* सक्कारेत्ता सम्माणेत्ता तस्सेव मित्तणाति-नियग-सयणसंबंधिपरिजणस्स चउण्ह य सुण्हाणं कुलघरवग्गस्स पुरतो चउण्हं सुण्हाणं परिक्खणट्टयाए पंच २ सालिअक्खए दलइत्ता जाणामि ताव का किहं वा सारक्खइ वा संगोवेइ वा संवड्ढेति वा ? ५। एवं संपेहेइ २ कल्लं जाव मित्तणाति-नियग-सयण-संबंधि-परिजणं चउण्हं सुण्हाणं कुलघरवग्गं आमंतेइ २ विपुलं असणं ४ उवक्ख-डावेइ ततो पच्छा ण्हाए कयबलिकम्मे जाव भोयणमंडवंसि सुहासण-वरगए मित्तणाति-नियग-सयण-संबंधि-परिजणेणं चउण्ह य सुण्हाणं कुलघरवग्गेणं सद्धिं तं विपुलं असणं ४ जाव सक्कारेति २ तस्सेव मित्तनाति-नियग-सयण-संबंधि-परिजणस्स चउण्ह य सुण्हाणं कुलघरवग्गस्स य पुरतो पंच सालि-अक्खए गेण्हति २ जेट्ठा सुण्हा उज्झितिया तं सद्दावेति २ एवं वदासी—

तुमं णं पुत्ता ! मम हत्थाओ इमे पंच सालिअक्खए गेराहाहि २ अणुपुव्वेणं सारक्खेमाणी संगोवेमाणी विहराहि, जया णंऽहं पुत्ता ! तुमं इमे पंच सालिअक्खए जाएज्जा तया णं तुमं मम इमे पंच सालिअक्खए पडिदिज्जाए-ज्जासित्तिकट्टु सुराहाए हत्थे दलयति २ पडिविसज्जेति ६ । तते णं सा उज्झिया धराणस्स तहत्ति एयमट्ठं पडिसुणेति २ धराणस्स सत्थवाहस्स हत्थाओ ते पंच सालिअक्खए गेराहति २ एगंतमव-क्कमति एगंतमवक्कमियाए इमेयारूवे अब्भत्थिए जाव समुप्पज्जित्था—एवं खलु तायाणं कोट्ठागारंसि बहवे पल्ला सालीणं पडिपुराणा चिट्ठंति, तं जया णं ममं ताओ इमे पंच सालिअक्खए जाएस्सति तया णं अहं पल्लंतराओ अन्ने पंच सालिअक्खए गहाय दाहामित्तिकट्टु एवं संपेहेइ २ तं पंच सालिअक्खए एगंते एडेति २ सकम्मसंजुत्ता जाया यावि होत्था ७। एवं भोगवतियाएवि, णवरं सा छोल्लेति २ अणुगिलति(फोल्लेइ) २ सकम्म-संजुत्ता जाया ८। एवं रक्खियावि, नवरं गेराहति २ इमेयारूवे अब्भत्थिए जाव समुप्पज्जित्था—एवं खलु ममं ताओ इमस्स मित्तनाति-नियग-सयण-संबंधि-परिजणस्स चउराह य सुराहाणं कुलघरवग्गस्स य पुरतो सद्दावेत्ता एवं वदासी—तुमराणं पुत्ता ! मम हत्थाओ जाव पडिदिज्जाएज्जासित्तिकट्टु मम हत्थंसि पंच सालिअक्खए दलयति तं भवियव्वमेत्थ कारणेणंतिकट्टु एवं संपेहेति २ ते पंच सालिअक्खए सुद्धे वत्थे बंधइ २ रयणकरंडियाए पक्खिवेइ २ ऊसीसामूले ठावेइ २ तिसंझं पडिजागरमाणी विहरइ ९। तए णं से धराणे सत्थवाहे तस्सेव मित्त जाव चउत्थि रोहिणीयं सुराहं सद्दावेति २ जाव तं भवियव्वं एत्थ कारणेणं तं सेयं खलु मम एए पंच सालिअ-क्खए सारक्खेमाणीए संगोवेमाणीए संवड्ढेमाणीएत्तिकट्टु एवं संपेहेति २ कुलघरपुरिसे सद्दावेति २ एवं वदासी—तुब्भे णं देवाणुप्पिया ! एते पंच सालिअक्खए गेराहह २ पढमपाउसंसि महावुट्ठिकायंसि निवइयंसि समाणंसि

खुड्डागं केयारं सुपरिकम्मियं करेह २ त्ता इमे पंच सालिअक्खए वावेह २ दोच्चंपि तच्चंपि उक्खयनिहए करेह २ वाडिपरिक्खेवं करेह २ सारक्खेमाणा संगोवेमाणा अणुपुव्वेणं संवड्ढेह १०। तते णं ते कोडुंबिया रोहिणीए एतमट्ठं पडिसुणंति तं पंच सालिअक्खए गेराहंति २ अणुपुव्वेणं सारक्खंति संगोवंति० विहरंति ११। तए णं ते कोडुंबिया पढमपाउसंसि महावुट्ठिकायंसि णिवइयंसि समाणंसि खुड्डायं केदारं सुपरिकम्मियं करेंति २ ते पंच सालिअक्खए ववंति दुच्चंपि तच्चंपि उक्खयनिहए करेंति २ वाडिपरिक्खेवं करेंति २ अणुपुव्वेणं सारक्खेमाणा संगोवेमाणा संवड्ढेमाणा विहरंति १२। तते णं ते साली अणुपुव्वेणं सारक्खिज्जमाणा संगोविज्जमाणा संवड्ढिज्जमाणा साली जाया किराहा किराहोभासा जाव निउरंबभूया पासादीया ४, तते णं साली पत्तिया वत्तिया(तइया) गब्भिया पसूया आगयगंधा खीराइया बद्धफला पक्का परियागया सल्लइपत्तया (सल्लइया पत्तइया) हरियपव्वकंडा जाया यावि होत्था १३। तते णं ते कोडुंबिया ते सालीए पत्तिए जाव सल्लइए पत्तइए जाणित्ता तिक्खेहिं णवपज्जणएहिं असियएहिं लुणेंति २ करयलमलिते करेंति २ पुणंति, तत्थ णं चोक्खाणं सूयाणं अक्खंडाणं अफोडियाणं छड्डछडापुट्टा(पूया)णं सालीणं मागहए पत्थह जाए तते णं ते कोडुंबिया ते साली णवएसु घडएसु पक्खिवंति २ उपलिपंति २ लिंपेंति २ लंछियमुद्दिते करेंति २ कोट्ठागारस्स एगदेसंसि ठवेंति २ सारक्खेमाणा संगोवेमाणा विहरंति १४। तते णं ते कोडुंबिया दोच्चंमि वासारत्तंसि पढमपाउसंसि महावुट्ठिकायंसि निवइयंसि खुड्डागं केयारं सुपरिकम्मियं करेंति ते साली ववंति दोच्चंपि तच्चंपि उक्खयणिहए जाव लुणेंति जाव चलणतलमलिए करेंति २ पुणंति, तत्थ णं सालीणं बहवे कुडवा(मुरला) जाव एगदेसंसि ठवेंति २ सारक्खेमाणा संगोवेमाणा विहरंति १५। तते णं ते कोडुंबिया तच्चंसि वासारत्तंसि

महावुट्ठिकायंसि निवइयंसि बहवे केदारे सुपरिकम्मियं करेंति जाव लुणेंति २ संवहंति २ खलयं करेंति २ मलेंति जाव बहवे कुंभा जाया, तते णं ते कोडुंबिया साली कोट्ठागारंसि पक्खिवंति जाव विहरंति, चउत्थे वासारत्ते बहवे कुंभसया जाया १६। तते णं तस्स धरणस्स पंचमयंसि संवच्छरंसि परिणममाणंसि पुव्वरत्तावरत्त-कालसमयंसि इमेयारूवे अब्भत्थिए जाव समुप्पज्जित्था–एवं खलु मम इओ अतीते पंचमे संवच्छरे चउराहं सुराहाणं परिक्खणट्ठयाए ते पंच सालिअक्खता हत्थे दिन्ना तं सेयं खलु मम कल्लं जाव जलंते पंच सालिअक्खए परिजाइत्तए जाव जाणामि ताव काए किहं सारक्खिया वा संगोविया वा संवड्ढिया जावत्तिकट्टु एवं संपेहेति २ कल्लं जाव जलंते विपुलं असणं ४ जाव मित्तनाय-निगम-सयण-संबंधि-परिजणं चउराह य सुराहाणं कुलघर जाव सम्माणित्ता तस्सेव मित्तनाय-नियग-सयण-संबंधि-परिजणस्स चउराह य सुराहाणं कुलघरवग्गस्स पुरओ जेट्ठं उज्झियं सद्दावेइ २ त्ता एवं वयासी–एवं खलु अहं पुत्ता! इतो अतीते पंचमंसि संवच्छरंसि इमस्स मित्तनायनियग-सयण-संबंधि-परिजणस्स चउराह य सुराहाणं कुलघरवग्गस्स य पुरतो तव हत्थंसि पंच सालिअक्खए दलयामि जया णं अहं पुत्ता! एए पंच सालियअक्खए जाएज्जा तया णं तुमं मम इमे पंच सालिअक्खए पडिदिज्जाएज्जासित्तिकट्टु तं हत्थंसि दलयामि, से नूणं पुत्ता! अत्थे समट्ठे ?, हंता अत्थि, तन्नं पुत्ता! मम ते सालिअक्खए पडिनिज्जाएहि १७। तते णं सा उज्झितिया एयमट्ठं धणस्स पडिसुणेति २ जेणेव कोट्ठागारं तेणेव उवागच्छति २ पल्लातो पंच सालिअक्खए गेराहति २ जेणेव धणे सत्थवाहे तेणेव उवागच्छति २ धणं सत्थवाहं एवं वदासी–एए णं ते पंच सालिअक्खएत्तिकट्टु धणस्स हत्थंसि ते पंच सालिअक्खए दलयति, तते णं धणे उज्झियं सवहसावियं करेति २ एवं वयासी–किराणं पुत्ता! एए ते चेव पंच

सालिअक्खए उदाहु अन्ने ?, तते णं उज्झिया धणणं सत्थवाहं एवं वयासी—एवं खलु तुब्भे तातो ! इओऽतीए पंचमे संवच्छरे इमस्स मित्त-नाति-नियग-सजण-संबंधि-परिजणस्स चउराह य सुराहाणं कुलघरवग्गस्स जाव विहरामि, तते णंऽहं तुब्भं एतमट्ठं पडिसुणेमि २ ते पंच सालिअ-क्खए गेराहामि एगंतमवक्कमामि तते णं मम इमेयारूवे अब्भत्थिए जाव समुप्पज्जित्था—एवं खलु तायाणं कोट्ठागारंसि बहवे जाव सकम्मसंजुत्ता, तं णो खलु ताओ ! ते चेव पंच सालिअक्खए एए णं अन्ने, तते णं से धणे उज्झियाए अंतिए एयमट्ठं सोच्चा णिसम्म आसुरुत्ते जाव मिसिमि-सेमाणे उज्झितियं तस्स मित्तनाति-नियग-सजण-संबंधि-परिजणस्स चउराह य सुराहाणं कुलघरवग्गस्स य पुरओ तस्स कुलघरस्स छारुज्झियं च छाणुज्झियं च कयवरुज्झियं च समु(संपु)च्छियं च सम्मज्जिअं च पाउवदाइं च राहाणोवदाइं च बाहिरपेसणकारिं ठवेति १८। एवामेव समणाउसो ! जो अम्हं निग्गंथो वा २ जाव पव्वतिते पंच य से महव्वयाति उज्झियाइं भवंति से णं इह भवे चेव बहूणं समणाणं ४ जाव अणुपरियट्टिइस्सइ जहा सा उज्झिया। एवं भोगवइयावि, नवरं तस्स कंडितियं वा कोट्टंतियं च पीसंतियं च एवं रुच्चंतियं रंधंतियं परिवेसंतियं च परिभायंतियं च अब्भंतरियं च पेसणकारिं महाणसिणिं ठवेंति १६। एवामेव समणाउसो ! जो अम्हं समणो पंच य से महव्वयाइं फोडि(लि)याइं भवंति से णं इह भवे चेव बहूणं समणाणं ४ जाव हीलणिज्जे ४ जहा व सा भोगवतिया २०। एवं रक्खितियावि, नवरं जेणेव वासघरे तेणेव उवागच्छइ २ मंजूसं विहाडेइ २ रयणकरंडगाओ ते पंच सालिअक्खए गेराहति २ जेणेव धणे तेणेव उवागच्छति २ पंच सालिअक्खए धणस्स हत्थे दलयति, तते णं से धणे रक्खितियं एवं वदासी—किन्नं पुत्ता ! ते चेव ते पंच सालिअक्खया उदाहु अन्नेत्ति ?,

तते णं रक्खितिया धराणं सत्थवाहं एवं वयासी–एवं खलु तातो ! जाव ते चेव ताया ! एए पंच सालिअक्खया णो अन्ने, कहन्नं पुत्ता !, एवं खलु ताओ ! तुब्भे इओ पंचमंमि जाव भवियव्वं एत्थ कारणेणंतिकट्टु ते पंच सालिअक्खए सुद्धे वत्थे जाव तिसंझं पडिजागरमाणी य विहरामि, ततो एतेणं कारणेणं ताओ ! ते चेव ते पंच सालिअक्खए णो अन्ने, तते णं से धराणे रक्खितियाए अंतिए एयमट्ठं सोच्चा हट्ठतुट्ठ तस्स कुलघरस्स हिरन्नस्स य कंसदूस-विपुल-धण जाव सावतेज्जस्स य भंडागारिणिं ठवेति २१ । एवामेव समणाउसो ! जाव पंच य से महव्वयातिं रक्खियातिं भवंति से णं इह भवे चेव बहूणं समणाणं ४ अच्चणिज्जे जहा जाव सा रक्खिया २२ । रोहिणियावि एवं चेव, नवरं तुब्भे ताओ ! मम सुबहुयं सगडीसागडं दलाहि जेणं अहं तुब्भं ते पंच सालिअक्खए पडिणिज्जाएमि, तते णं से धराणे रोहिणिं एवं वदासी–कहणं तुमं मम पुत्ता ! ते पंच सालिअक्खए सगड(डी)सागडेणं निज्जाइस्ससि ?, तते णं सा रोहिणी धराणं एवं वदासी–एवं खलु तातो ! इओ तुब्भे पंचमे संवच्छरे इमस्स मित्त जाव बहवे कुंभसया जाया तेणेव कमेणं एवं खलु ताओ ! इओ तुब्भे ते पंच सालिअक्खए सगडसागडेणं निज्जाएमि २३ । तते णं से धराणे सत्थवाहे रोहिणीयाए सुबहुयं सगडसागडं दलयति, तते णं रोहिणी सुबहुँ सगडसागडं गहाय जेणेव सए कुलघरे तेणेव उवागच्छइ कोट्ठागारे विहाडेति २ पल्ले उब्भिदति २ सगडीसागडं भरेति २ रायगिहं नगरं मज्झंमज्झेणं जेणेव सए गिहे जेणेव धराणे सत्थवाहे तेणेव उवागच्छति २४ । तते णं रायगिहे नगरे सिंघाडग जाव बहुजणो अन्नमन्नं एवमातिक्खति–धन्ने णं देवाणुप्पिया ! धराणे सत्थवाहे जस्स णं रोहिणिया सुराहा जीए णं पंच सालिअक्खए सगडसागडिएणं निज्जाएति २५ । तते णं से धराणे सत्थवाहे ते पंच सालिअक्खए सगडसागडेणं निज्जाएतिते

पासति २ हट्ठ जाव पडिच्छति २ तस्सेव मित्तनाति-नियगसजण-संबंधि-परिजणस्स चउराह य सुराहाणं कुलघरपुरतो रोहिणीयं सुराहं तस्स कुलघरस्स बहुसु कज्जेसु य जाव रहस्सेसु य आपुच्छणिज्जं जाव वट्टावितं पमाणभूयं ठवेति २६ । एवामेव समणाउसो ! जाव पंच महव्वया संवड्ढिया भवंति से णं इह भवे चेव बहूणं समणाणं जाव वीतीवइस्सइ जहा व सा रोहिणीया २७ । एवं खलु जंबू ! समणेणं भगवया महावीरेणं सत्तमस्स नायज्झयणस्स अयमट्ठे पन्नत्तेत्ति-बेमि २८ ॥ सूत्रं ६१ ॥ सत्तमं नायज्झयणं समत्तं ॥

॥ इति सप्तममध्ययनम् ॥ ७ ॥

॥८॥ अथ श्रीमल्लीज्ञाताख्य-मष्टममध्ययनम् ॥

जति णं भंते ! समणेणं भगवया महावीरेणं सत्तमस्स नायज्झयणस्स अयमट्ठे पराणत्ते अट्ठमस्स णं भंते ! के अट्ठे पराणत्ते ?, एवं खलु जंबू ! तेणं कालेणं तेणं समएणं इहेव जंबूद्दीवे दीवे महाविदेहे वासे २ मंदरस्स पव्वयस्स पच्चत्थिमेणं निसढस्स वासहरपव्वयस्स उत्तरेणं सीयोयाए महाणदीए दाहिणेणं सुहावहस्स वक्खारपव्वतस्स पच्चत्थिमेणं पच्चत्थिम-लवणसमुद्दस्स पुरच्छिमेणं एत्थ णं सलिलावती नामं विजए पन्नत्ते १ । तत्थ णं सलिलावती(नलिनावती)विजए वीयसोगा नामं रायहाणी पन्नत्ता, नवजोयणवित्थिन्ना जाव पच्चक्खं देवलोगभूया, तीसे णं वीयसोगाए रायहाणीए उत्तरपुरच्छिमे दिसिभाए इंदकुंभे नामं उज्जाणे, तत्थ णं वीयसोगाए रायहाणीए बले नामं राया, तस्सेव धारणीपामोक्खं देविसहस्सं उवरोधे होत्था २ । तते णं सा धारिणी देवी अन्नया कदाइ सीहं सुमिणे पासित्ता णं पडिबुद्धा जाव महब्बले नामं दारए जाए उम्मुक्क जाव भोग-समत्थे, तते णं तं महब्बलं अम्मापियरो सरिसियाणं कमलसिरी-पामोक्खाणं

पंचरहं रायवरकन्नासयाणं एगदिवसेणं पाणिं गेरहावेंति, पंच पासायसया पंचसतो दातो जाव विहरति ३। थेरागमणं इंदकुंभे उज्जाणे समोसढे परिसा निग्गया, बलोवि निग्गओ धम्मं सोच्चा णिसम्म जं नवरं महब्बलं कुमारं रज्जे ठवेति जाव एक्कारसंगवी बहूणि वासाणि सामरणपरियायं पाउणित्ता जेणेव चारुपव्वए मासिएणं भत्तेणं सिद्धे ४। तते णं सा कमलसिरी अन्नदा सीहं सुमिणे जाव बलभद्दो कुमारो जाओ, जुवराया यावि होत्था, तस्स णं महब्बलस्स रन्नो इमे छप्पिय बालवयंसगा रायाणो होत्था, तंजहा—अयले १ धरणे २ पूरणे ३ वसु ४ वेसमणे ५ अभिचंदे ६ सहजायया जाव संहिच्चाते णित्थरियव्वेत्तिकट्टु अन्नमन्नस्सेयमट्ठं पडिसुणेंति ५। तेणं कालेणं २ इंदकुंभे उज्जाणे थेरा समोसढा, पारिसा निग्गया महब्बले णं धम्मं सोच्चा जं नवरं छप्पिय बालवयंसए आपुच्छामि बलभद्दं च कुमारं रज्जे ठावेमि जाव छप्पिय बालवयंसए आपुच्छति, तते णं ते छप्पिय बालवयंसए महब्बलं रायं एवं वदासी—जति णं देवाणुप्पिया! तुब्भे पव्वयह अम्हं के अन्ने आहारे वा जाव पव्वयामो, तते णं से महब्बले राया ते छप्पिय बालवयंसयाणं एवं वदासी—जति णं तुब्भे मए सद्धिं जाव पव्वयह तो णं गच्छह जेट्ठे पुत्ते सएहिं २ रज्जेहिं ठवेह जाव पुरिससहस्सवाहिणीओ सीयाओ दुरूढा जाव पाउब्भवंति ६। तते णं से महब्बले राया छप्पिय बालवयंसए पाउब्भूते पासति २ हट्ठतुट्ठ जाव कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ जाव बलभद्दस्स अभिसेओ, आपुच्छति, तते णं से महब्बले जाव महया इड्ढीए पव्वतिए एक्कारस अंगाइं अहिज्जति २ बहूहिं चउत्थ जाव भावेमाणे विहरति ७। तते णं तेसिं महब्बलपामोक्खाणं सत्तरहं अणगाराणं अन्नया कयाइ एगयओ सहियाणं इमेयारूवे मिहो कहासमुल्लावे समुप्पज्जित्था—जरणं अम्हं देवाणुप्पिया! एगे तवोकम्मं उव्वसंपज्जित्ता णं विहरति तरणं अम्हेहिं सव्वेहिं तवोकम्मं उवसंपज्जित्ताणं

(कप्पइ) विहरित्तएत्तिकट्टु अरणगारणास्स एयमट्ठं पडिसुणेंति २ बहूहिं चउत्थ जाव विहरति ८। तते णं से महब्बले अणगारे इमेणं कारणेणं इत्थिणामगोयं कम्मं निव्वत्तेसु—जति णं ते महब्बलवज्जा छ अणगारा चउत्थं उवसंपज्जित्ताणं विहरंति ततो से महब्बले अणगारे छट्ठं उवसंपज्जित्ता णं विहरइ, जति णं ते महब्बलवज्जा अणगारा छट्ठं उवसंपज्जित्ता णं विहरंति ततो से महब्बले अणगारे अट्ठमं उवसंपज्जित्ता णं विहरति, एवं अट्ठमं तो दसमं अह दसमं तो दुवालसं, इमेहि य णं वीसाएहि य कारणेहिं आसेवियबहुलीकएहिं तित्थयरनामगोयं कम्मं निव्वत्तिंसु, तंजहा—अरहंत १ सिद्ध २ पवयण ३ गुरु ४ थेर ५ बहुस्सुए ६ तवस्सीसु ७॥ वच्छलया य तेसिं अभिक्ख णाणोवओगे य ८॥ १॥ दंसण ९ विणए १० आवस्सए य ११ सीलव्वए निरइयारं १२। खणलव १३ तव १४ च्चियाए १५ वेयावच्चे १६ समाही य १७॥ २॥ अप्पुव्वणाणगहणे १८ सुयभत्ती १९ पवयणे पभावणया २०। एएहिं कारणेहिं तित्थयरत्तं लहइ जीओ (एसो, सो उ)॥ ३॥ ८। तए णं ते महब्बलपामोक्खा सत्त अणगारा मासियं भिक्खुपडिमं उवसंपज्जित्ताणं विहरंति जाव एगराइयं उवसंपज्जिताणं विहरंति, ९। तते णं ते महब्बलपामोक्खा सत्त अणगारा खुड्डागं सीहनिकीलियं तवोकम्मं उवसंपज्जित्ताणं विहरंति, तंजहा—चउत्थं करेंति २ सव्वकामगुणियं पारेंति २ छट्ठं करेंति २ चउत्थं करेंति २ अट्ठमं करेंति २ छट्ठं करेंति २ दसमं करेंति २ अट्ठमं करेंति २ दुवालसमं करेंति २ दसमं करेंति २ चाउद्दसमं करेंति २ दुवालसमं करेंति २ सोलसमं करेंति २ चोद्दसमं करेंति २ अट्ठारसमं करेंति २ सोलसमं करेंति २ वीसइमं करेंति २ अट्ठारसमं करेंति २ वीसइमं करेंति २ सोलसमं करेंति २ अट्ठारसमं करेंति २ चोद्दसमं करेंति २ सोलसमं करेंति २ दुवालसमं करेंति २ चाउद्दसमं करेंति २ दसमं करेंति २ दुवाल-

समं करेंति २ अट्ठमं करेंति २ दसमं करेंति २ छट्ठं करेंति २ अट्ठमं करेंति २ चउत्थं करेंति २ छट्ठं करेंति २ चउत्थं करेंति सव्वत्थ सव्वकामगुणिएणं पारेंति, एवं खलु एसा खुड्डागसीहनिक्कीलियस्स तवोकम्मस्स पढमा परिवाडी छहिं मासेहिं सत्तहि य अहोरत्तेहि य अहासुत्ता जाव आराहिया भवइ, तयाणंतरं दोच्चाए परिवाडीए चउत्थं करेंति नवरं विगइवज्जं पारेंति, एवं तच्चावि परिवाडी नवरं पारणए अलेवाडं पारेंति, एवं चउत्थावि परिवाडी नवरं पारणए आयंबिलेण पारेंति १० । तए णं ते महब्बलपामोक्खा सत्त अणगारा खुड्डागं सीहनिक्कीलियं तवोकम्मं दोहिं संवच्छरेहिं अट्ठावीसाए य अहोरत्तेहिं अहासुत्तं जाव आणाए आराहेत्ता जेणेव थेरे भगवंते तेणेव उवागच्छंति २ थेरे भगवंते वंदंति नमंसंति २ एवं वयासी–इच्छामो णं भंते ! महालयं सीहनिक्कीलियं तहेव जहा खुड्डागं नवरं चोत्तीसइमाओ नियत्तए एगाए परिवाडीए कालो एगेणं संवच्छरेणं छहिं मासेहिं अट्ठारसहि य अहोरत्तेहिं समप्पेति, सव्वंपि सीहनिक्कीलियं छहिं वासेहिं दोहि य मासेहिं बारसहि य अहोरत्तेहिं समप्पेति ११ । तए णं ते महब्बलपामोक्खा सत्त अणगारा महालयं सीहनिक्कीलियं अहासुत्तं जाव आराहेत्ता जेणेव थेरे भगवंते तेणेव उवागच्छंति २ थेरे भगवंते वंदंति नमंसंति २ बहूणि चउत्थ जाव विहरंति १२ । तते णं ते महब्बलपामोक्खा सत्त अणगारा तेणं ओरालेणं सुक्का भुक्खा जहा खंदओ नवरं थेरे आपुच्छित्ता चारुपव्वयं दुरूहंति २ जाव दोमासियाए संलेहणाए सवीसं भत्तसयं चतुरासीतिं वाससयसहस्साति सामण्णपरियागं पाउणंति २ चुलसीतिं पुव्वसयसहस्साति सव्वाउयं पालइत्ता जयंते विमाणे देवत्ताए उववन्ना १३ ॥ सूत्रं ७० ॥

तत्थ णं अत्थेगतियाणं देवाणं बत्तीसं सागरोवमाइं ठिती, तत्थ णं महब्बलवज्जाणं छण्हं देवाणं देसूणाइं बत्तीसं सागरोवमाइं ठिती,

महब्बलस्स देवस्स पडिपुन्नाइं बत्तीसं सागरोवमाइं ठिती १। तते णं ते महब्बलवज्जा छप्पिय बालवयंसा देवा ताओ देवलोगाओ आउक्खएणं ठिइक्खएणं भवक्खएणं अणंतरं चयं चइत्ता इहेव जंबुद्दीवे २ भारहे वासे विसुद्ध-पितिमातिवंसेसु रायकुलेसु पत्तेयं २ कुमारत्ताए पच्चायायासी, तंजहा—पडिबुद्धी इक्खागराया, चंदच्छाए अंगराया, संखे कासिराया, रुप्पी कुणालाहिवती, अदीणसत्तू कुरुराया, जितसत्तू पंचालाहिवई २। तते णं से महब्बले देवे तीहिं णाणेहिं समग्गे उच्चट्ठाणट्ठि(ग)एसु गहेसु सोमासु दिसासु वितिमिरासु विसुद्धासु जइतेसु सउणेसु पयाहिणाणुकूलंसि भूमिसप्पिंसि मारुतंसि पवायंसि निप्फन्नसस्समेइणीयंसि कालंसि पमुइयपक्कीलिएसु जणवएसु अद्धरत्तकालसमयंसि अस्सिणीणक्खत्तेणं जोगमुवागएणं जे से हेमंताणं चउत्थे मासे अट्ठमे पक्खे फग्गुणसुद्धे तस्स णं फग्गुणसुद्धस्स (गिम्हाणं पढमे मासे दोच्चे पक्खे चेतसुद्धे तस्स णं चित्तसुद्धस्स) चउत्थिपक्खेणं जयंताओ विमाणाओ बत्तीसं सागरोवमट्ठितीयाओ अणंतरं चयं चइत्ता इहेव जंबुद्दीवे २ भारहे वासे मिहिलाए रायहाणीए कुंभगस्स रन्नो पभावतीए देवीए कुच्छिंसि आहारवक्कंतीए सरीरवक्कंतीए भववक्कंतीए गब्भत्ताए वक्कंते, तं रयणिं च णं चोद्दस महासुमिणा वन्नओ, भत्तारकहणं सुमिणपाढगपुच्छा जाव विहरति ३। तते णं तीसे पभावतीए देवीए तिण्हं मासाणं बहुपडिपुन्नाणं इमेयारूवे डोहले पाउब्भूते—धन्नाओ णं ताओ अम्मयाओ जाओ णं जलथलय-भासुरप्पभूएणं दसद्धवन्नेणं मल्लेणं अत्थुयपच्चत्थुयंसि सयणिज्जंसि सन्निसन्नाओ सणिवन्नाओ य विहरंति, एगं च महं सिरीदामगंडं पाडल-मल्लिय-चंपय-असोग-पुन्नाग-नाग-मरुयग-दमणग-अणोज्ज-कोज्जयपउरं परमसुह-फासदरिसणिज्जं महया गंधद्धणिं मुयंतं अग्घायमाणीओ डोहलं विणेंति ४। तते णं तीसे पभावतीए देवीए इमेयारूवं डोहलं पाउब्भूतं पासित्ता अहासन्निहिया वाणमंतरा देवा

खिप्पामेव जलथलय जाव दसद्धवन्नमल्लं कुंभग्गसो य भारग्गसो य कुंभगस्स रन्नो भवणंसि साहरंति, एगं च णं महं सिरिदामगंडं जाव मुयंतं उवणेंति, तए णं सा पभावती देवी जलथलय जाव मल्लेणं डोहलं विणेति, तए णं सा पभावतीदेवी पसत्थडोहला जाव विहरइ ५। तए णं सा पभावतीदेवी नवण्हं मासाणं श्रद्धट्ठमाण य रतिं(राइ)दियाणं जे से हेमंताणं पढमे मासे दोच्चे पक्खे मग्गसिरसुद्धे तस्स णं मग्गसिरसुद्धस्स एक्कारसीए पुव्वरत्तावरत्त-कालसमयंसि अस्सिणीनक्खत्तेणं उच्चट्ठाणट्ठिएसे गहेसु जाव पमुइयपक्कीलिएसु जणवएसु आरोयाऽऽरोयं एकूणवीसतिमं तित्थयरं पयाया ६ ॥ सूत्रं ७१ ॥ तेणं कालेणं २ अहोलोग-वत्थव्वाओ अट्ठ दिसाकुमारीओ मयहरीयाओ जहा जंबुद्दीवपन्नत्तीए जम्मणं सव्वं नवरं मिहिलाए कुंभयस्स पभावतीए अभिलाओ संजोएव्वो जाव नंदीसरवरे दीवे महिमा १। तया णं कुंभए राया बहूहिं भवणवति ४ तित्थयर जाव कम्मं जाव नामकरणं, जम्हा णं अम्हे इमीए दारियाए माउए मल्लसयणिज्जंसि डोहले विणीते तं होउ णं णामेणं मल्ली २। जहा महाबले नाम जाव परिवड्ढिया, "सा वद्धती भगवती दियलोयचुता अणोवमसिरीया। दासीदासपरिवुडा परिकिन्ना पीढमद्देहिं ॥१॥ असियसिरया सुनयणा बिंबोट्ठी धवलदंतपंतीया(सेढीया)। वरकमलगब्भगोरी(वराणा, कोमलंगी) फुल्लुप्पल(पउमुप्पलुप्पल)गंधनीसासा ॥२॥" ३ ॥ सूत्रं ७२ ॥ तए णं सा मल्ली विदेहवररायकन्ना उम्मुक्कबालभावा जाव रूवेण जोव्वणेण य लावन्नेण य अतीव २ उक्किट्ठा उक्किट्ठसरीरा जाया यावि होत्था १। तते णं सा मल्ली देसूणवाससयजाया ते छप्पि रायाणो विपुलेण ओहिणा आभोएमाणी २ विहरति, तंजहा—पडिबुद्धिं जाव जियसत्तुं पंचालाहिवइं २। तते णं सा मल्ली कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ २ एवं वयासी—तुब्भे णं देवाणुप्पिया असोगवणियाए एगं महं मोहणघरं करेह अणेग-खंभ-सयस-

न्निविट्ठं, तस्स णं मोहणघरस्स बहुमज्भदेसभाए छ गब्भघरए करेह, तेसि णं गब्भघरगाणं बहुमज्भदेसभाए जालघरयं करेह, तस्स णं जालघरयस्स बहुमज्भदेसभाए मणिपेढियं करेह २ जाव पच्चप्पिणंति ३। तते णं मल्ली मणिपेढियाए उवरिं अप्पणो सरिसियं सरित्तयं सरिव्वयं सरिस-लावन्न-जोव्वण-गुणोववेयं कणगमइं मत्थयच्छिड्डं पउमुप्पलप्पिहाणं पडिमं करेति २ जं विपुलं असणं ४ आहारेति ततो मणुन्नाओ असण-पाण-खाइमसाइमाओ कल्लाकल्लिं एगमेगं पिंडं गहाय तीसे कणगामतीए मत्थयच्छिड्डाए जाव पडिमाए मत्थयंसि पक्खिवमाणी २ विहरति ४। तते णं तीसे कणगमतीए जाव मत्थयच्छिड्डाए पडिमाए एगमेगंसि पिंडे पक्खिप्पमाणे २ ततो गंधे पाउब्भवति, से जहा नामए अहिमडेत्ति वा जाव एत्तो अणिट्ठतराए अमणामतराए ५ ॥ सूत्रं ७३ ॥ तेणं कालेणं २ कोसला नाम जणवए, तत्थ णं सागेए नाम नयरे तस्स णं उत्तरपुरच्छिमे दिसीभाए, एत्थ णं महं एगे णागघरए होत्था दिव्वे सच्चे सच्चोवाए संनिहियपाडिहेरे, तत्थ णं नगरे पडिबुद्धिनाम इक्खागुराया परिवसति पउमावती देवी सुबुद्धी अमच्चे सामदंड० १। तते णं पउमावतीए अन्नया कयाइं जागजन्नए यावि होत्था, तते णं सा पउमावती नागजन्नमुवट्ठियं जाणित्ता जेणेव पडिबुद्धि नाम इक्खागुराया तेणेव उवागच्छइ २ करयल-परिग्गहिय-दसनहं सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं कट्टु एवं वदासी—एवं खलु सामी! मम कल्लं नागजन्नए यावि भविस्सति तं इच्छामि णं सामी! तुब्भेहिं अब्भणुन्नाया समाणी नागजन्नयं गमित्तए, तुब्भेऽवि णं सामी! मम नागजन्नयंसि समोसरह, तते णं पडिबुद्धी पउमावतीए देवीए एयमट्ठं पडिसुणेति २। तते णं पउमावती पडिबुद्धिणा रन्ना अब्भणुन्नाया हट्ठतुट्ठ जाव हियया कोडुंबियपुरिसे सद्दावेति २ एवं वदासी—एवं खलु देवाणुप्पिया! मम कल्लं नागजण्णए भविस्सति तं तुब्भे मालागारे सद्दावेह २ एवं वदह—एवं खलु पउमावईए देवीए कल्लं

नागजन्नए भविस्सइ तं तुब्भे णं देवाणुप्पिया ! जलथलय जाव दसद्धवन्नं मल्लं णागघरयंसि साहरह एगं च णं महं सिरिदामगंडं उवणेह, तते णं जलथलय जाव दसद्धवन्नेणं मल्लेणं णाणाविहभत्ति-सुविरइयं हंस-मिय-मउर-कोंच-सारस-चक्कवाय-मयण-साल-कोइल-कुलोववेयं ईहामिय जाव भत्तिचित्तं महग्घं महरिहं विपुलं पुप्फमंडवं विरएह, तस्स णं बहुमज्झदेसभाए एगं महं सिरिदामगंडं जाव गंधद्धुणिं मुयंतं उल्लोयंसि ओलंबेह २ पउमावतिं देविं पडिवालेमाणा २ चिट्ठह ३। तते णं ते कोडुंबिया जाव चिट्ठंति, तते णं सा पउमावती देवी कल्लं० कोडुंबिए एवं वदासी—खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया ! सागेयं नगरं सब्भितरबाहिरियं आसित-सम्मज्जितोवलित्तं जाव पच्चप्पिणंति, तते णं सा पउमावती दोच्चंपि कोडुंबियपुरिसे सद्दावेति २ एवं वयासी—एवं खलु देवाणुप्पिया ! खिप्पामेव लहुकरणजुत्तं जाव जुत्तामेव उवट्ठवेह, तते णं तेऽवि तहेव उवट्ठावेंति ४। तते णं सा पउमावती अंतो अंतेउरंसि ण्हाया जाव धम्मियं जाणं दूरूढा, तए णं सा पउमावई नियगपरिवालसंपरिवुडा सागेयं नगरं मज्झंमज्झेणं णिज्जाति २ जेणेव पुक्खरणी तेणेव उवागच्छति २ पुक्खरणिं ओगाहइ २ जलमज्जणं जाव परमसूइभूया उल्लपडसाडया जाति तत्थ उप्पलातिं जाव गेण्हति २ जेणेव नागघरए तेणेव पहारेत्थ गमणाए, तते णं पउमावतीए दासचेडीओ बहूओ पुप्फपडलग-हत्थगयाओ धूव-कडुच्छुग-हत्थ-गयाओ पिट्ठतो समणुगच्छंति ५। तते णं पउमावती सव्विड्ढिए जेणेव नागघरे तेणेव उवागच्छति २ नागघरयं अणुपविसति २ लोमहत्थगं जाव धूवं डहति २ पडिबुद्धिं पडिवालेमाणी २ चिट्ठति, तते णं पडिबुद्धी ण्हाए हत्थिखंधवरगते सकोरंट जाव सेयवरचामराहिं हयगय-रहजोह-महया-भडग-चडकर-पहकरेहिं साकेयनगरं मज्झं मज्झेणं णिग्गच्छति २ जेणेव नागघरे तेणेव उवागच्छति २ हत्थिखंधाओ पच्चोरुहति २

आलोए पणामं करेइ २ पुप्फमंडवं अणुपविसति २ पासति तं एगं महं सिरिदामगंडं, तए णं पडिबुद्धी तं सिरिदामगंडं सुइरं कालं निरिक्खइ २ तंसि सिरिदामगंडंसि जायविम्हए सुबुद्धिं अमच्चं एवं वयासी—तुमन्नं देवाणुप्पिया ! मम दोच्चेणं बहूणि गामागर जाव सन्निवेसाइं आहिंडसि बहूणि रायईसर जाव गिहाति अणुपविससि तं अत्थि णं तुमे कहिंचि एरिसए सिरिदामगंडे दिट्ठपुव्वे जारिसए णं इमे पउमावतीए देवीए सिरिदामगंडे ? ६ । तते णं सुबुद्धी पडिबुद्धिं रायं एवं वदासी—एवं खलु सामी ! अहं अन्नया कयाइं तुब्भं दोच्चेणं मिहिलं रायहाणिं गते तत्थ णं मए कुंभगस्स रन्नो धूयाए पभावईए देवीए अत्तयाए मल्लीए संवच्छरपडिलेहणगंसि दिव्वे सिरिदामगंडे दिट्ठपुव्वे तस्स णं सिरिदामगंडस्स इमे पउमावतीए सिरिदामगंडे सयसहस्सतिमंपि कलं ण अग्घति ७ । तते णं पडिबुद्धी सुबुद्धिं अमच्चं एवं वदासी—केरिसिया णं देवाणुप्पिया ! मल्ली विदेहरायवरकन्ना जस्स णं संवच्छर-पडिलेहणयंसि सिरिदामगंडस्स पउमावतीए देवीए सिरिदामगंडे सयसहस्सतिमपि कलं न अग्घति ?, तते णं सुबुद्धी पडिबुद्धिं इक्खागुरायं एवं वदासी—विदेहरायवरकन्नगा सुपइट्ठिय-कुमुन्नय-चारुचरणा वन्नओ ८ । तते णं पडिबुद्धी सुबुद्धिस्स अमच्चस्स अंतिए सोचा णिसम्म सिरिदामगंड-जणितहासे दूयं सद्दावेइ २ एवं वयासी—गच्छाहि णं तुमं देवाणुप्पिया ! मिहिलं रायहाणिं तत्थ णं कुंभगस्स रन्नो धूयं पभावतीए देवीए अत्तियं मल्लिं विदेह-वरराय-कण्णगं मम भारियत्ताए वरेहि जतिविय णं सा सयं रज्जसुंका ६ । तते णं से दूए पडिबुद्धिणा रन्ना एवं वुत्ते समाणे हट्ठतुट्ठ जाव पडिसुणेति २ जेणेव सए गिहे जेणेव चाउग्घंटे आसरहे तेणेव उवागच्छति २ चाउग्घंटं आसरहं पडिकप्पावेति २ दुरूढे जाव हयगय-महयाभड-चडगरेणं साएयाओ णिग्गच्छति २ जेणेव विदेहजणवए जेणेव मिहिला रायहाणी तेणेव पहारेत्थ गमणाए १० ॥ ७४ ॥ तेणं कालेणं

२ अंगानाम जणवए होत्था, तत्थ णं चंपानामे णयरी होत्था, तत्थ णं चंपाए नयरीए चंदच्छाए अंगराया होत्था, तत्थ णं चंपाए नयरीए अरहन्नगपामोक्खा बहवे संजत्ता णावावाणियगा परिवसंति अड्ढा जाव अपरिभूया १। तते णं से अरहन्नगे समणोवासए यावि होत्था अहिगयजीवाजीवे वन्नओ, तते णं तेसिं अरहन्नगपामोक्खाणं संजुत्ता-णावावाणियगाणं अन्नया कयाइ एगयओ सहिआणं इमे एयारूवे मिहो कहासंलावे समुप्पज्जित्था— सेयं खलु अम्हं गणिमं च धरिमं च मेज्जं च पारिच्छेज्जं च भंडगं गहाय लवणसमुद्दं पोतवहणेण ओगाहित्तएत्तिकट्टु अन्नमन्नं एयमट्ठं पडिसुणेंति २ गणिमं च ४ गेण्हंति २ सगडिसागडियं च सज्जेंति २ गणिमस्स ४ भंडगस्स सगडसागडियं भरेंति २ सोहणंसि तिहिकरण-नक्खत्तमुहुत्तंसि विपुलं असणं ४ उवक्खडावेंति मित्तणाइ-नियगसजण-संबंधि-परिजणं भोअणवेलाए भुंजावेंति जाव आपुच्छंति २ सगडिसागडियं जोयंति २ चंपाए नयरीए मज्झंमज्झेणं जेणेव गंभीरए पोयपट्टणे तेणेव उवागच्छति २ सगडिसागडियं मोयंति २ पोयवहणं सज्जेंति २ गणिमस्स य जाव चउव्विहस्स भंडगस्स भरेंति तंदुलाण य समितस्स य तेल्लयस्स य गुलस्स य घयस्स य गोरसस्स य उदयस्स य उदयभायणाण य ओसहाण य भेसज्जाण य तणस्स य कट्ठस्स य आवरणाण य पहरणाण य अन्नेसिं च बहूणं पोयवहणपाउग्गाणं दव्वाणं पोतवहणं भरेंति, सोहणंसि तिहिकरण-नक्खत्तमुहुत्तंसि विपुलं असणं ४ उवक्खडावेंति २ मित्तणाति नियग-सजण-संबंधि-परिजणं भुंजावेंति जाव आपुच्छंति २ जेणेव पोतट्ठाणे तेणेव उवागच्छंति २। तते णं तेसिं अरहन्नग जाव वाणियगाणं परियणो जाव तारिसेहिं वग्गूहिं अभिणंदंता य अभिसंथुणमाणा य एवं वदासी—अज्ज ताय भाय माउल भाइणज्जे भगवता समुद्देणं अनभिरिक्खज्जमाणा २ चिरं जीवह भद्दं च मे पुणरवि लद्धट्ठे कयकज्जे अणहसमग्गे नियगं घरं

हव्वमागए पासामोत्तिकट्टु ताहिं सोमाहिं निद्धाहिं दीहाहिं (सप्पिवासाहिं) पप्पु(च्छ)याहिं दिट्ठीहिं निरीक्खमाणा मुहुत्तमेत्तं संचिट्ठंति ३। तओ समाणिएसु पुप्फबलिकम्मेसु दिन्नेसु सरस-रत्तचंदण-दद्दर-पंचंगुलितलेसु अणुक्खित्तंसि धूवंसि पूतिएसु समुद्दवाएसु संसारियासु वलयबाहासु ऊसिएसु सिएसु झयग्गेसु पडुप्पवाइएसु तूरेसु जइएसु सव्वसउणेसु गहिएसु रायवरसासणेसु महया उक्किट्ठिसीहणाय जाव रवेणं पक्खुभित-महासमुद्द-रवभूयंपिव मेइणिं करेमाणा एगदिसिं जाव वाणियगा णावं दुरूढा ४। ततो पुस्समाणवो वक्कमुदाहु-हं भो! सव्वेसिमवि अत्थसिद्धी उवट्ठिताइं कल्लाणाइं पडिहयाति सव्वपावाइं जुत्तो पूसो विजओ मुहुत्तो अयं देसकालो, ततो पुस्समाणएणं वक्के समुदाहिए हट्ठतुट्ठे कुच्छिधार-कन्नधार-गब्भिज-संजत्ताणावावाणियगा वावारिंसु तं नावं पुन्नुच्छंगं पुणमुहिं बंधणेहिंतो मुंचंति ५। तते णं सा नावा विमुक्कबंधणा पवणबल-समाहया उस्सियसिया विततपक्खा इव गरुडजुवई गंगासलिल-तिक्खसोयवेगेहिं संखुब्भमाणी २ उम्मीतरंग-मालासहस्साइं समतिच्छमाणी २ कइवएहिं अहोरत्तेहिं लवणसमुद्दं अणेगाति जोयणसताति ओगाढा ६। तते णं तेसिं अरहन्नग-पामोक्खाणं संजुत्तानावावाणियगाणं लवणसमुद्दं अणेगाइं जोयणसयाइं ओगाढाणं समाणाणं बहूतिं उप्पातियसताति पाउब्भूयाइं, तंजहा-अकाले गज्जिते अकाले विज्जुते अकाले थणियसद्दे, अभिक्खणं २ आगासे देवताओ नच्चंति, एगं च णं महं पिसायरूवं पासंति, तालजंघं दिवं गयाहिं बाहाहिं मसिमूसग-महिसकालगं भरियमेहवन्नं लंबोट्ठं निग्गयग्गदंतं निल्लालिय-जमलजुयलजीहं आऊ-सिय-वयणगंडदेसं चीण-चिपिट-नासियं विगय-भुग्ग-भुमयं(भुग्गभग्गं) खज्जोयग-दित्तचक्खुरागं उत्तासणगं विसालवच्छं विसालकुच्छिं पलंबकुच्छिं पहसिय-पयलिय-पयडियगत्तं(विगयभुग्ग-भुमय-पहसिय-पयलिय-पयडिय--फुलिंग--खज्जोय-दित्त-

चक्खुरागं) पणच्चमाणं अप्फोडंतं अभिवयंतं अभिगज्जंतं बहुसो २ अट्टट्ट-हासे विणिम्मुयंतं नीलुप्पल-गवल-गुलिय-अयसिकुसुमप्पगासं खुरहारं असिं गहाय अभिमुह-मावयमाणं पासंति ८। तते णं ते अरहण्णगवज्जा संजुत्ताणावावाणियगा एगं च णं महं तालपिसायं पासंति तालजंघं दिवं गयाहिं बाहाहिं फुट्टसिरं भमर-णिगर-वरमासरासि-महिसकालगं भरियमेह-वन्नं सुप्पणहं फालसरिसजीहं लंबोट्टं धवल-वट्ट-असिलिट्ट-तिक्खथिर-पीण-कुडिल-दाढोवगूढवयणं विकोसिय-धारासि-जुयल-समसरिस-तणुय-चंचल-गलंत-रसलोल-चवल-फुरुफुरेंत-निल्लालियग्गजीहं अवय(अवि)च्छिय-महल्ल-विगय-बीभत्स-लालपगलंत-रत्ततालुयं हिंगुलुय-सगब्भ-कंदरबिलंव अंजणगिरिस्स (अग्गिभरस्स) अग्गिजालुग्गिलंतवयणं आऊसिय-अक्ख-चम्म-उइट्ठ-गंडदेसं चीणचिपिड-वंक-भग्गणासं रोसागय-धमधमेंत-मारुत-निट्ठुर-खर-फरुसभुसिरं ओभुग्ग-णासियपुडं घाडुब्भड-रइयभीसणमुहं उद्धमुह-कन्नसक्कुलिय-महंत-विगयलोम-संखालग-लंबंतचलियकन्नं पिंगल-दिप्पंतलोयणं भिउडि-तडिय-निडालं(भिउडितडियं तडियनिडालं) नरसिर-माल-परिणद्धचिंधं विचित्त-गोणस-सुबद्धपरिकरं अवहोलंत-पुप्फुयायंत-सप्पविच्छुय-गोधुंदर-नउल-सरड-विरइय-विचित्त वेयच्छमालियागं भोगकूर-कण्ह-सप्प-धमधमेंत-लंबंतकन्नपूरं मज्जार-सियाल-लइयखंधं दित्तघुघुयंत-घूयकय-कुंतलसिरं घंटारवेणभीमं भयंकरं कायरजण-हिययफोडणं दित्तमट्टट्टहासं विणिम्मुयंतं वसा-रुहिर-पूयमंसमल-मलिण-पोच्चडतणुं उत्तासणयं विसालवच्छं पेच्छंता भिन्नणह-मुह-नयण-कन्न-वरवग्घचित्त-कत्तीणिवसणं सरस-रुहिर-गयचम्म-वितत-ऊसविय-बाहुजुयलं ताहि य खरफरुसअसि-णिद्ध-अणिट्ठ-दित्तअसुभअप्पिय[अमणुन्न] अक्कंतवग्गूहि य तज्जयंतं पासंति तं तालपिसायरूवं एज्जमाणं पासंति २ भीया संजायभया अन्नमन्नस्स कायं समतुरंगेमाणा २ बहूणं इंदाण य खंदाण य रुद्दसिव-वेसमणणागा(मा)णं भूयाण य जक्खाण य अज्जकोट्टकि-

रियाण य बहूणि उवाइयसयाणि ओवातियमाणा २ चिट्ठंति ७। तए णं से अरहन्नए समणोवासए तं दिव्वं पिसायरूवं एज्जमाणं पासति २ अभीते *अतत्थे अचलिए असंभंते अणाउले अणुव्विग्गे अभिन्नमुह-राग-णयणवन्ने* अदीणविमणमाणसे पोयवहणस्स एगदेसंसि वत्थंतेणं भूमिं पमज्जति २ ठाणं ठाइ २ करयलओ एवं वयासि—नमोऽत्थु णं अरहंताणं जाव संपत्ताणं, जइ णं अहं एत्तो उवसग्गातो मुंचामि तो मे कप्पति पारित्तए अह णं एत्तो उवसग्गाओ ण मुंचामि तो मे तहा पचक्खाएयव्वेत्तिकट्टु सागारं भत्तं पचक्खाति ८। तते णं से पिसायरूवे जेणेव अरहन्नए समणोवासए तेणेव उवागच्छति २ अरहन्नगं एवं वदासी—हं भो! अरहन्नगा अपत्थिय-पत्थिया जाव परिवज्जिया णो खलु कप्पति तव सीलव्वय-गुणवेरमण-पचक्खाणे पोसहोववासाति चालित्तए वा एवं खोभेत्तए वा खंडित्तए वा भंजित्तए वा उज्झित्तए वा परिचइत्तए वा? तं जति णं तुमं सीलव्वयं जाव ण परिचयसि तो ते अहं एयं पोतवहणं दोहिं अंगुलियाहिं गेण्हामि २ सत्तट्ठ-तलप्प-माण-मेत्ताति उड्ढं वेहासं उव्विहामि २ अंतो जलंसि णिव्बोलेमि जेणं तुमं अट्टदुहट्टवसट्टे असमाहिपत्ते अकाले चेव जीवियाओ ववरोविज्जसि ९। तते णं से अरहन्नते समणोवासए तं देवं मणसा चेव एवं वदासी—अहं णं देवाणुप्पिया! अरहन्नए णामं समणोवासए अहिगयजीवाजीवे नो खलु अहं सक्का केणइ देवेण वा जाव निग्गंथाओ पावयणाओ चालित्तए वा खोभेत्तए वा विपरिणामेत्तए वा तुमं णं जा सद्धा तं करेहित्तिकट्टु अभीए जाव अभिन्नमुह-रागणयण-वन्ने अदीणविमण-माणसे निच्चले निप्फंदे तुसिणीए धम्मज्झाणोवगते विहरति १०। तए णं से दिव्वे पिसायरूवे अरहन्नगं समणोवासगं दोच्चंपि तच्चंपि एवं वदासी—हं भो अरहन्नगा! अपत्थिपत्थिया जाव परिवज्जिया जाव अभिन्नमुह-रागणयणवन्ने अदीण-विमणमाणसे निच्चले निप्फंदे तुसिणीए धम्मज्झा-णोवगए विहरति ११। तते णं से दिव्वे पिसायरूवे अरहन्नगं धम्मज्झा-

णोवगयं पासति पासित्ता बलियतरागं आसुरुत्ते तं पोयवहणं दोहिं अंगुलियाहिं गिराहति २ सत्तट्ठतलाइं जाव अरहन्नगं एवं वदासी–हं भो अरहन्नगा ! अप्पत्थियपत्थिया णो खलु कप्पति तव सीलव्वय तहेव जाव धम्मज्झाणोवगए विहरति १२। तते णं से पिसायरूवे अरहन्नगं जाहे नो संचाएइ निग्गंथाओ पावयणाओ चालित्तए वा खोभेत्तए वा विपरिणामेत्तए वा ताहे उवसंते जाव निव्विन्ने तं पोयवहणं सणियं २ उवरिं जलस्स ठवेति २ तं दिव्वं पिसायरूवं पडिसाहरइ २ दिव्वं देवरूवं विउव्वइ २ अंतलिक्खपडिवन्ने सखिंखिणियाइं जाव परिहिते अरहन्नगं समणोवासगं एवं वयासी–हं भो ! अरहन्नगा ! धन्नोऽसि णं तुमं देवाणुप्पिया ! जाव जीवियफले जस्स णं तव निग्गंथे पावयणे इमेयारूवा पडिवत्ती लद्धा पत्ता अभिसमन्नागया १३। एवं खलु देवाणुप्पिया ! सक्के देविंदे देवराया सोहम्मे कप्पे सोहम्मवडिंसए विमाणे सभाए सुहम्माए बहूणं देवाणं मज्झगते महया सद्देणं आतिक्खति ४ एवं खलु जंबूद्दीवे २ भारहे वासे चंपाए नयरीए अरहन्नए समणोवासए अहिगयजीवाजीवे नो खलु सक्को केणति देवेण वा दाणवेण वा णिग्गंथाओ पावयणाओ चालित्तए वा जाव विपरिणामेत्तए वा, तते णं अहं देवाणुप्पिया ! सक्कस्स णो एयमट्ठं सद्दहामि णो पत्तियामि णो रोयामि तते णं मम इमेयारूवे अब्भत्थिए ५ गच्छामि णं अरहन्नयस्स अंतियं पाउब्भवामि जाणामि ताव अहं अरहन्नगं किं पियधम्मे णो पियधम्मे ? दढधम्मे नो दढधम्मे ? सीलव्वयगुणे किं चालेति जाव परिच्चयति णो परिच्चयतित्तिकट्टु, एवं संपेहेमि २ ओहिं पउंजामि २ देवाणुप्पिया ! ओहिणा आभोएमि २ उत्तरपुरच्छिमं २ उत्तरविउव्वियं जाव ताए उक्किट्ठाए जेणेव समुद्दे जेणेव देवाणुप्पिया तेणेव उवागच्छामि २ देवाणुप्पिया णं उवसग्गं करेमि, नो चेव णं देवाणुप्पिया भीया वा०, तं जणणं सक्के देविंदे देवराया वदति सच्चे णं एसमट्ठे तं दिट्ठे णं देवाणु-

प्पियाणं इड्ढी जुई जसे जाव परक्कमे लद्धे पत्ते अभिसमन्नागए तं खामेमि णं देवाणुप्पिया ! खमंतु मरहंतु णं देवाणुप्पिया ! णाइभुज्जो २ एवंकरण-याएत्तिकट्टु पंजलिउडे पायवडिए एयमट्टं विणएणं भुज्जो २ खामेइ २ अरहन्नयस्स दुवे कुंडलजुयले दलयति २ जामेव दिसिं पाउब्भूए तामेव पडिगए १४ ॥ सूत्रं ७५ ॥

तते णं से अरहन्नए निरुवसग्गमितिकट्टु पडिमं पारेति, तए णं ते अरहन्नगपामोक्खा जाव वाणियगा दक्खिणाणुकूलेणं वाएणं जेणेव गंभीरए पोयपट्टणे तेणेव उवागच्छंति २ पोयं लंबेंति २ सगडसागडं सज्जेंति २ तं गणिमं ४ सगडि-सागडियं संकामेंति २ सगडी-सागडियं जोएंति २ जेणेव मिहिला तेणेव उवागच्छंति २ मिहिलाए रायहाणीए बहिया अग्गुज्जाणंसि सगडीसगडं मोएंइ २ मिहिलाए रायहाणीए तं महत्थं महग्घं महरिहं विउलं रायरिहं पाहुडं कुंडलजुयलं च गेराहंति २ अणुपविसंति २ जेणेव कुंभए तेणेव उवागच्छंति २ करयल जाव तं महत्थं दिव्वं कुंडलजुयलं च उवणेंति २ तते णं कुंभए तेसिं संजत्तगाणं जाव पडिच्छइ २ मल्लीं विदेहवररायकन्नं सद्दावेति २ तं दिव्वं कुंडल-जुयलं मल्लीए विदेहवररायकन्नगाए पिणद्धति २ पडिविसज्जेति १। तते णं से कुंभए राया ते अरहन्नगपामोक्खे जाव वाणियगे विपुलेणं असण-वत्थगंध जाव उस्सुक्कं वियरति २ रायमग्गमोगाढेइ आवासे वियरति २ पडिविसज्जेति २। तते णं अरहन्नगसंजत्तगा जेणेव रायमग्गमोगाढे आवासे तेणेव उवागच्छंति २ भंडववहरणं करेंति २ पडिभंडं गेराहंति २ सगडी-सागडियं भरेंति जेणेव गंभीरए पोयपट्टणे तेणेव उवागच्छंति २ पोतव-हणं सज्जेंति २ भंडं संकामेंति दक्खिणाणुकूलेण वाएण जेणेव चंपा पोयट्टाणे तेणेव पोयं लंबेंति २ सगडीसागडं सज्जेंति २ तं गणिमं ४ सगडी-सागडियं संकामेंति २ जाव महत्थं पाहुडं दिव्वं च कुंडलजुयलं

गेरहंति २ जेणेव चंदच्छाए अंगराया तेणेव उवागच्छति २ तं महत्थं जाव उवणेंति ३ । तते णं चंदच्छाए अंगराया तं दिव्वं महत्थं च कुंडलजुयलं पडिच्छति २ ते अरहन्नगपामोक्खे एवं वदासी—तुब्भे णं देवाणुप्पिया ! बहूणि गामागार जाव आहिंडह लवणसमुद्दं च अभिक्खणं २ पोयवहणेहिं ओगाहेह गाहह तं अत्थियाइं भे केइ कहिंचि अच्छेरए दिट्ठपुव्वे ?, तते णं ते अरहन्नपामोक्खा चंदच्छायं अंगरायं एवं वदासी—एवं खलु सामी ! अम्हे इहेव चंपाए नयरीए अरहन्नपामोक्खा बहवे संजत्तगा णावावाणियगा परिवसामो, तते णं अम्हे अन्नया कयाइं गणिमं च ४ तहेव अहीणमतिरित्तं जाव कुंभगस्स रन्नो उवणेमो ४ । तते णं से कुंभए मल्लीए विदेहरायवरकन्नाए तं दिव्वं कुंडलजुयलं पिणद्धेति २ पडिविसज्जेति, तं एस णं सामी ! अम्हेहिं कुंभरायभवणंसि मल्ली विदेहे अच्छेरए दिट्ठे तं नो खलु अन्ना कावि तारिसिया देवकन्ना वा जाव जारिसिया णं मल्लीविदेहा, तते णं चंदच्छाए ते अरहन्नगपामोक्खे सक्कारेति सम्माणेति २ पडिवसज्जेति ५ । तते णं चंदच्छाए वाणियगजणियहासे दूतं सद्दावेति जाव जइविय णं सा सयं रज्जसुक्का, तते णं ते दूते हट्ठे जाव पहारेत्थ गमणाए २, ६ ॥ सूत्रं ७६ ॥

तेणं कालेणं २ कुणाला नाम जणवए होत्था, तत्थ णं सावत्थी नामं नगरी होत्था, तत्थ णं रुप्पी कुणालाहिवई नामं राया होत्था, तस्स णं रुप्पिस्स धुया धारिणीए देवीए अत्तया सुबाहुनामं दारिया होत्था, सुकुमाल जाव रूवेण य जोव्वणेणं लावण्णेण य उक्किट्ठा उक्किट्ठसरीरा जाया यावि होत्था, तीसे णं सुबाहुए दारियाए अन्नदा चाउम्मासियमज्जणए जाए यावि होत्था १ । तते णं से रुप्पी कुणालाहिवई सुबाहुए दारियाए चाउम्मासियमज्जणयं उवट्ठियं जाणति २ कोडुंबियपुरिसे सद्दावेति २ एवं वयासी—एवं खलु देवाणुप्पिया ! सुबाहुए दारियाए कल्लं चाउम्मासियमज्जणए भविस्सति तं

कल्लं तुब्भे णं रायमग्गमोगाढंसि चउक्कंसि जलथलय-दसद्धवन्नमल्लं साहरह जाव सिरिदामगंडं ओलइन्ति, तते णं से रुप्पी कुणालाहिवती सुवन्नगारसेणिं सद्दावेति २ एवं वयासी–खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया! रायमग्गमोगाढंसि पुप्फमंडवंसि णाणाविह-पंचवन्नेहिं तंदुलेहिं णगरं आलिहह तस्स बहुमज्झदेसभाए पट्टयं रएह २ जाव पच्चप्पिणंति २। तते णं से रुप्पी कुणालाहिवई हत्थिखंधवरगए चाउरंगिणीए सेणाए महया भड० अंते-उरपरियाल-संपरिवुडे सुबाहुं दारियं पुरतो कट्टु जेणेव रायमग्गे जेणेव पुप्फ-मण्डवे तेणेव उवागच्छति २ हत्थिखंधातो पच्चोरुहति २ पुप्फमंडवं अणुप-विसति २ सीहासणवरगए पुरत्थाभिमुहे सन्निसन्ने ३। तते णं ताओ अंतेउरियाओ सुबाहुं दारियं पट्टयंसि दुरूहेंति २ सेयपीतएहिं कलसेहिं ण्हाणेंति २ सव्वालंकारविभूसियं करेंति २ पिउणो पायं वंदिउं उवणेंति तते णं सुबाहुदारिया जेणेव रुप्पी राया तेणेव उवागच्छति २ पायग्गहणं करेति, तते णं से रुप्पी राया सुबाहुं दारियं अंके निवेसेति २ सुबाहुए दारियाए रूवेण य जोव्वणेण य लावण्णेण य जाव विम्हिए वरिसधरं सद्दावेति २ एवं वयासी–तुमणं देवाणुप्पिया! मम दोच्चेणं बहूणि गामागरनगर-गिहाणि अणुपविससि, तं अत्थि याइं ते कस्सइ रन्नो वा ईसरस्स वा कहिंचि एयारिसए मज्जणए दिट्ठपुव्वे जारिसए णं इमीसे सुबाहुदारियाए मज्जणए? ४। तते णं से वरिसधरे रुप्पिं करयल जाव एवं वयासी–एवं खलु सामी! अहं अन्नया तुब्भेणं दोच्चेणं मिहिलं गए तत्थ णं मए कुंभगस्स रन्नो धूयाए पभावतीए देवीए अत्तयाए मल्लीए विदेहरायकन्नगाए मज्जणए दिट्ठे, तस्स णं मज्जणगस्स इमे सुबाहुए दारियाए मज्जणए सयसहस्सइमंपि कलं न अग्घेति ५। तए णं से रुप्पी राया वरिसधरस्स अंतिए एयमट्ठं सोच्चा णिसम्म सेसं तहेव मज्जणगजणितहासे दूतं सद्दावेति २ एवं वयासी–जेणेव मिहिला नयरी तेणेव पहारित्थगमणाए ६॥ सूत्रं ७७॥ तेणं कालेणं २

कासी नाम जणवए होत्था, तत्थ णं वाणारसीनाम नगरी होत्था, तत्थ णं संखे नामं कासीराया होत्था, तते णं तीसे मल्लीए विदेहरायवरकन्नाए अन्नया कयाइं तस्स दिव्वस्स कुंडलजुयलस्स संधी विसंघडिए यावि होत्था १। तते णं से कुंभए राया सुवन्नगारसेणिं सद्दावेति २ एवं वदासी–तुब्भे णं देवाणुप्पिया ! इमस्स दिव्वस्स कुंडलजुयलस्स संधिं संघाडेह, तए णं सा सुवन्नगारसेणी एतमट्ठं तहत्ति पडिसुणेंति २ तं दिव्वं कुंडलजुयलं गेराहति २ जेणेव सुवन्नगारभिसियाओ तेणेव उवागच्छंति २ सुवन्नगारभिसियासु णिवेसेति २ बहूहिं आएहि य जाव परिणामेमाणा इच्छंति २ तस्स दिव्वस्स कुंडलजुयलस्स संधिं घडित्तए, नो चेव णं संचाएंति संघडित्तए २। तते णं सा सुवन्नगारसेणी जेणेव कुंभए तेणेव उवागच्छति २ करयल जाव वद्धावेत्ता एवं वदासी–एवं खलु सामी ! अज्ज तुब्भे अम्हे सद्दावेह २ जाव संधिं संघाडेत्ता एतमाणं पच्चप्पिणह, तते णं अम्हे तं दिव्वं कुंडलजुयलं गेराहामो जेणेव सुवन्नगारभिसियाओ जाव नो संचाएमो संघाडित्तए, तते णं अम्हे सामी ! एयस्स दिव्वस्स कुंडलस्स अन्नं सरिसयं कुंडलजुयलं घडेमो ३। तते णं से कुंभए राया तीसे सुवन्नगारसेणीए अंतिए एयमट्ठं सोच्चा निसम्म आसुरुत्ते तिवलियं भिउडीं निडाले साहट्टु एवं वदासी–से केणं तुब्भे कलायाणं भवह ? जे णं तुब्भे इमस्स कुंडलजुयलस्स नो संचाएह संधिं संघाडेत्तए?, ते सुवन्नगारे निव्विसए आणवेति ४। तते णं ते सुवन्नगारा कुंभेणं रराणा निव्विसया आणत्ता समाणा जेणेव साति २ गिहाति तेणेव उवागच्छंति २ सभंडमत्तोवगरणमायाओ मिहिलाए रायहाणीए मज्झंमज्झेणं निक्खमंति २ विदेहस्स जणवयस्स मज्झंमज्झेणं जेणेव कासी जणवए जेणेव वाणारसी नयरी तेणेव उवागच्छंति २ अग्गुज्जाणंसि सगडीसागडं मोएन्ति २ महत्थं जाव पाहुडं गेराहंति २ त्ता वाणारसीनयरीं मज्झंमज्झेणं जेणेव संखे कासीराया तेणेव उवागच्छंति २

करयल जाव एवं वयासी—अम्हे णं सामी ! मिहिलातो नयरीओ कुंभएणं रन्ना निव्विसया आणत्ता समाणा इहं हव्वमागता तं इच्छामो णं सामी ! तुब्भं बाहुच्छाया-परिग्गहिया निब्भया निरुव्विग्गा सुहंसुहेणं परिवसिउं ५। तते णं संखे कासीराया ते सुवन्नगारे एवं वदासी—किन्नं तुब्भे देवाणुप्पिया ! कुंभएणं रन्ना निव्विसया आणत्ता ?, तते णं ते सुवन्नगारा संखं एवं वदासी—एवं खलु सामी ! कुंभगस्स रन्नो धूयाए पभावतीए देवीए अत्तयाए मल्लीए कुंडलजुयलस्स संधी विसंघडिए तते णं से कुंभए सुवन्नगारसेणिं सद्दावेति २ जाव निव्विसया आणत्ता, तं एएणं कारणेणं सामी ! अम्हे कुंभएणं निव्विसया आणत्ता ६। तते णं से संखे सुवन्नगारे एवं वदासी—केरिसिया णं देवाणुप्पिया ! कुंभगस्स धूया पभावतीदेवीए अत्तया मल्ली विदेहवररायकन्ना ? तते णं ते सुवन्नगारा संखरायं एवं वदासी—णो खलु सामी ! अन्ना काई तारिसिया देवकन्ना वा गंधव्वकन्नगा वा जाव जारिसिया णं मल्ली विदेहवररायकन्ना, तते णं से संखे कुंडलजुअल-जणितहासे दूतं सद्दावेति जाव तहेव पहारेत्थ गमणाए ७॥ सूत्रं ७८॥ तेणं कालेणं २ कुरुजणवए होत्था, हत्थिणाउरे नगरे अदीणसत्तू नामं राया होत्था जाव विहरति, तत्थ णं मिहिलाए कुंभगस्स पुत्ते पभावतीए अत्तए मल्लीए अणुजायए मल्लदिन्नए नाम कुमारे जाव जुवराया यावि होत्था, तते णं मल्लदिन्ने कुमारे अन्नया कोडुंबियपुरिसे सद्दावेति २ गच्छह णं तुब्भे मम पमदवणंसि एगं महं चित्तसभं करेह अणेग जाव पच्चप्पिणंति १। तते णं से मल्लदिन्ने चित्तगरसेणिं सद्दावेति २ एवं वयासी—तुब्भे णं देवाणुप्पिया ! चित्तसभं हावभाव-विलास-विब्बोयकलिएहिं रूवेहिं चित्तेह २ जाव पच्चप्पिणह, तते णं सा चित्तगरसेणी तहत्ति पडिसुणेति २ जेणेव सयाइं गिहाइं तेणेव उवागच्छति २ तूलियाओ वन्नए य गेण्हंति २ जेणेव चित्तसभा

तेणेव उवागच्छंति २ त्ता अणुपविसंति २ भूमिभागे विरंचंति २ भूमिं सज्जेंति २ चित्तसभं हावभाव जाव चित्तेउं पयत्ता यावि होत्था, तते णं एगस्स चित्तगरस्स इमेयारूवा चित्तगरलद्धी लद्धा पत्ता अभिसमन्नागया— जस्स णं दुपयस्स वा चउपयस्स वा अपयस्स वा एगदेसमवि पासति तस्स णं देसाणुसारेणं तयाणुरूवं निव्वत्तेति २। तए णं से चित्तगरदारए मल्लीए जवणियंतरियाए जालंतरेण पायंगुट्ठं पासति, तते णं तस्स णं चित्तगरस्स इमेयारूवे जाव सेयं खलु ममं मल्लीएवि पायंगुट्ठाणुसारेणं सरिसगं जाव गुणोववेयं रूवं निव्वत्तित्तए, एवं संपेहेति २ भूमिभागं सज्जेति २ मल्लीएवि पायंगुट्ठाणुसारेणं जाव निव्वत्तेति, तते णं सा चित्तगरसेणी चित्तसभं जाव हावभावं जाव चित्तेति २ जेणेव मल्लदिन्ने कुमारे तेणेव उवागच्छंति २ जाव एतमाणत्तियं पच्चप्पिणंति ३। तए णं मल्लदिन्ने चित्तगरसेणिं सक्कारेइ २ विपुलं जीवियारिहं पीइदाणं दलेइ २ पडिविसज्जेइ, तए णं मल्लदिन्ने अन्नया राहाए अंतेउरपरियालसंपरिवुडे अम्मधाईए सद्धिं जेणेव चित्तसभा तेणेव उवागच्छति २ चित्तसभं अणुपविसइ २ हावभावविलासविब्बोयकलियाइं रूवाइं पासमाणे २ जेणेव मल्लीए विदेहवररायकन्नाए तयाणुरूवे रूवे णिव्वत्तिए तेणेव पहारेत्थ गमणाए ४। तए णं से मल्लदिन्ने कुमारे मल्लीए विदेहवररायकन्नाए तयाणुरूवं रूवं निव्वत्तियं पासति २ इमेयारूवे अब्भत्थिए जाव समुप्पज्जित्था—एस णं मल्ली विदेहवररायकन्नत्तिकट्टु लज्जिए वीडिए विअडे सणियं २ पच्चोसक्कइ, तए णं मल्लदिन्नं अम्मधाई सणियं २ पच्चोसक्कंतं पासित्ता एवं वदासी—किन्नं तुमं पुत्ता ! लज्जिए वीडिए(वेइडे) विअडे सणियं २ पच्चोसक्कसि ?, तते णं से मल्लदिन्ने अम्मधातिं एवं वदासी—जुत्तं णं अम्मो ! मम जेट्ठाए भगिणीए गुरुदेवयभूयाए लज्जणिज्जाए मम चित्तगरणिव्वत्तियं सभं अणुपविसित्तए ?, तएणं अम्मधाई मल्लदिन्नं कुमारं एवं वदासी—नो खलु पुत्ता ! एस मल्ली, एस

णं मल्ली विदेहवररायकन्ना चित्तगरएणं तयाणुरूवे रूवे णिव्वत्तिए, तते णं मल्लदिन्ने अम्मधाईए एयमट्ठं सोच्चा आसुरुत्ते एवं वयासी—केस णं भो चित्तयरए अपत्थियपत्थिए जाव परिवज्जिए जे णं मम जेट्ठाए भगिणीए गुरुदेवयभूयाए जाव निव्वत्तिएकिट्टु तं चित्तगरं वज्झं आणवेइ ५। तए णं सा चित्तगरस्सेणी इमीसे कहाए लद्धट्ठा समाणा जेणेव मल्लदिन्ने कुमारे तेणेव उवागच्छइ २ त्ता करयलपरिग्गहियं जाव वद्धावेइ २ त्ता एवं वयासी—एवं खलु सामी! तस्स चित्तगरस्स इमेयारूवा चित्तकरलद्धी लद्धा पत्ता अभिसमन्नागया जस्स णं दुपयस्स वा जाव णिव्वत्तेति तं मा णं सामी! तुब्भे तं चित्तगरं वज्झं आणवेह, तं तुब्भे णं सामी! तस्स चित्तगरस्स अन्नं तयाणुरूवं दंडं निव्वत्तेह, तए णं से मल्लदिन्ने तस्स चित्तगरस्स संडासगं छिंदावेइ २ निव्विसयं आणवेइ ६। तए णं से चित्तगरए मल्लदिन्नेणं णिव्विसिए आणत्ते समाणे सभंड-मत्तोवगरण-मायाए मिहिलाओ णयरीओ णिक्खमइ २ विदेहं जणवयं मज्झंमज्झेणं जेणेव कुरुजणवए जेणेव हत्थिणाउरे नयरे जेणेव अदीणसत्तू राया तेणेव उवागच्छति २ त्ता भंडणिक्खेवं करेइ २ चित्तफलगं सज्जेइ २ मल्लीए विदेहवररायकन्नाए पायंगुट्ठाणुसारेणं रूवं णिव्वत्तेइ २ कक्खंतरंसि छुब्भइ २ महत्थं ३ जाव पाहुडं गेण्हइ २ हत्थिणापुरं नयरं मज्झंमज्झेणं जेणेव अदीणसत्तू राया तेणेव उवागच्छति २ तं करयल जाव वद्धावेइ २ पाहुडं उवणेति २ एवं वयासी—एवं खलु अहं सामी! मिहिलाओ रायहाणीओ कुंभगस्स रन्नो पुत्तेणं पभावतीए देवीए अत्तएणं मल्लदिन्नेणं कुमारेणं निव्विसए आणत्ते समाणे इह हव्वमागए, तं इच्छामि णं सामी! तुब्भं बाहुच्छाया-परिग्गहिए जाव परिवसित्तए ७। तते णं से अदीणसत्तू राया तं चित्तगदारयं एवं वदासी—किन्नं तुमं देवाणुप्पिया! मल्लदिण्णेणं निव्विसए आणत्ते?, तए णं से चित्तयरदारए अदीणसत्तुरायं एवं वदासी—एवं खलु

सामी ! मल्लदिन्ने कुमारे अराणया कयाई चित्तगरसेणिं सद्दावेइ २ एवं वयासी–तुब्भे णं देवाणुप्पिया ! मम चित्तसभं तं चेव सव्वं भाणियव्वं जाव मम संडासगं छिंदावेइ २ निव्विसयं आणवेइ, तं एवं खलु अहं सामी ! मल्लदिन्नेणं कुमारेणं निव्विसए आणत्ते ८। तते णं अदीणसत्तू राया तं चित्तगरं एवं वदासी–से केरिसए णं देवाणुप्पिया ! तुमे मल्लीए तदाणुरूवे रूवे निव्वत्तिए ?, तते णं से चित्तगरदारए कक्खंतराओ चित्तफलयं णीणेति २ अदीणसत्तुस्स उवणेइ २ एवं वयासी–एस णं सामी ! मल्लीए विदेहवररायकन्नाए तयाणुरूवस्स रूवस्स केइ आगारभावपडोयारे निव्वत्तिए णो खलु सक्का केणइ देवेण वा जाव मल्लीए विदेहरायवरकरणगाए तयाणुरूवे रूवे निव्वत्तित्तए, तते णं अदीणसत्तू पडिरूवजणितहासे दूयं सद्दावेति २ एवं वदासी–तहेव जाव पहारेत्थ गमणाए ९ ॥सूत्रं ७१॥ तेणं कालेणं २ पंचाले जणवए कंपिल्ले पुरे नयरे जियसत्तू नाम राया पंचालाहिवई, तस्स णं जितसत्तुस्स धारिणीपामोक्खं देविसहस्सं ओरोहे होत्था, तत्थ णं मिहिलाए चोक्खा नामं परिव्वाइया रिउव्वेद जाव परिणिट्ठिया यावि होत्था १। तते णं सा चोक्खा परिव्वाइया मिहिलाए बहूणं राईसर जाव सत्थवाहपभितीणं पुरतो दाणधम्मं च सोयधम्मं च तित्थाभिसेयं च आघवेमाणी पराणवेमाणी परूवेमाणी उवदंसेमाणी विहरति २। तते णं सा चोक्खा परिव्वाइया अन्नया कयाई तिदंडं च कुंडियं च जाव धाउरत्ताओ य गेराहइ २ परिव्वाइगावसहाओ पडिनिक्खमइ २ पविरल-परिव्वाइया सद्धिं संपरिवुडा मिहिलं रायहाणिं मज्झंमज्झेणं जेणेव कुंभगस्स रन्नो भवणे जेणेव कराणंतेउरे जेणेव मल्ली विदेहवररायकन्ना तेणेव उवागच्छइ २ उदय-परिफासियाए दब्भोवरि पच्चत्थुयाए भिसियाए निसियति २ त्ता मल्लीए विदेहवररायकन्नाए पुरतो दाणधम्मं च जाव विहरति ३। तते णं मल्ली विदेहा चोक्खं परिव्वाइयं एवं वयासी–तुब्भे

णं चोक्खे ! किंमूलए धम्मे पन्नत्ते ?, तते णं सा चोक्खा परिव्वाइया मल्लिं विदेहं एवं वदासी—अम्हं णं देवाणुप्पिए ! सोयमूलए धम्मे पराण-वेमि, जराणं अम्हं किंचि असुई भवइ तराणं उदएण य मट्टियाए जाव अविग्घेणं सग्गं गच्छामो, तए णं मल्ली विदेहवररायकन्ना चोक्खं परि-व्वाइयं एवं वदासी—चोक्खा ! से जहा नामए केई पुरिसे रुहिरकयं वत्थं रुहिरेण चेव धोवेज्जा अत्थि णं चोक्खा ! तस्स रुहिरकयस्स वत्थस्स रुहिरेणं धोव्वमाणस्स काई सोही ?, नो इणट्ठे समट्ठे, एवामेव चोक्खा ! तुब्भे णं पाणाइवाएणं जाव मिच्छादंसणसल्लेणं नत्थि काई सोही, जहा व तस्स रुहिरकयस्स वत्थस्स रुहिरेणं चेव धोव्वमाणस्स ४। तए णं सा चोक्खा परिव्वाइया मल्लीए विदेहवररायकन्नाए एवं वुत्ता समाणा संकिया कंखिया विइगिच्छिया भेयसमावराणा जाया यावि होत्था, मल्लीए णो संचाएति किंचिवि पामोक्खमाइक्खित्तए तुसिणीया संचिट्ठति, तते णं तं चोक्खं मल्लीए बहुओ दासचेडिओ हीलेंति निंदंति खिंसंति गरहंति अप्पेगतिया हेरुयालंति अप्पेगतिया मुहमक्कडिया करेंति अप्पेगतिया वग्घाडीओ करेंति अप्पेगतिया तज्जेमाणीओ तालेमाणीओ निच्छुभंति, तए णं सा चोक्खा मल्लीए विदेहवररायकन्नाए दासचेडियाहिं जाव गर-हिज्जमाणी हीलिज्जमाणी आसुरुत्ता जाव मिसिमिसेमाणी मल्लीए विदेहराय-वरकराणाए पओसमावज्जति, भिसियं गेराहति २ कराणंतेउराओ पडि-निक्खमति २ मिहिलाओ निग्गच्छति २ परिव्वाइयासंपरिवुडा जेणेव पंचालजणवए जेणेव कंपिल्लपुरे बहूणं राइसर जाव परूवेमाणी विहरति ५। तए णं से जियसत्तू अन्नदा कदाई अंतेउरपरियाल सद्धिं संपरिवुडे एवं जाव विहरति, तते णं सा चोक्खा परिव्वाइयासंपरिवुडा जेणेव जित-सत्तुस्स रराणो भवणे जेणेव जितसत्तू तेणेव उवागच्छइ २ त्ता अणुपवि-सति २ जियसत्तुं जएणं विजएणं वद्धावेति, तते णं से जितसत्तू चोक्खं

परिव्वाइयासंपरिवुडं एज्जमाणं पासति २ सीहासणाओ अब्भुट्ठेति २ चोक्खं सक्कारेति २ आसणेणं उवणिमंतेति, तते णं सा चोक्खा उदगपरिफासियाए जाव भिसियाए निविसइ, जियसत्तुं रायं रज्जे य जाव अंतेउरे य कुसलोदंतं पुच्छइ, तते णं सा चोक्खा जियसत्तुस्स रन्नो दाणधम्मं च जाव विहरति ६। तते णं से जियसत्तू अप्पणो ओरोहंसि जाव विम्हिए चोक्खं एवं वदासी–तुमं णं देवाणुप्पिया ! बहूणि गामागर जाव अडह बहूण य रातीसर० गिहाति अणुपविससि तं अत्थियाइं ते कस्सवि रन्नो वा जाव एरिसए ओरोहे दिट्ठपुव्वे जारिसए णं इमे मह उवरोहे ?, तए णं सा चोक्खा परिव्वाइया ईसिं अवहसियं करेइ २ जियसत्तुं एवं वयासी–एवं च सरिसए णं तुमं देवाणुप्पिया ! तस्स अगडदद्दुरस्स ?, के णं देवाणुप्पिए ! से अगडदद्दुरे ?, जियसत्तू ! से जहा नामए अगडदद्दुरे सिया, से णं तत्थ जाए तत्थेव वुड्ढे अण्णं अगडं वा तलागं वा दहं वा सरं वा सागरं वा अपासमाणे चेवं मण्णइ–अयं चेव अगडे वा जाव सागरे वा, तए णं तं कूवं अण्णे सामुद्दए दद्दुरे हव्वमागए, तए णं से कूवदद्दुरे तं सामुद्ददद्दुरं एवं वदासी–से केस णं तुमं देवाणुप्पिया ! कत्तो वा इह हव्वमागए ?, तए णं से सामुद्दए दद्दुरे तं कूवदद्दुरं एवं वयासी–एवं खलु देवाणुप्पिया ! अहं सामुद्दए दद्दुरे, तए णं से कूवदद्दुरे तं सामुद्दयं दद्दुरं एवं वयासी–केमहालए णं देवाणुप्पिया ! से समुद्दे ?, तए णं से सामुद्दए दद्दुरे तं कूवदद्दुरं एवं वयासी–महालए णं देवाणुप्पिया ! समुद्दे, तए णं से दद्दूरं पाएणं लीहं कड्ढेइ २ एवं वयासी–एमहालए णं देवाणुप्पिया ! से समुद्दे ?, णो इणट्ठे समट्ठे, महालए णं से समुद्दे, तए णं से कूवदद्दुरे पुरच्छिमिल्लाओ तीराओ उप्फिडित्ता णं गच्छइ २ एवं वयासी–एमहालए णं देवाणुप्पिया ! से समुद्दे ?, णो इणट्ठे समट्ठे, तहेव एवामेव तुमंपि जियसत्तू अन्नेसिं बहूणं राईसर जाव सत्थवाहपभिईणं भज्जं वा भगिणीं वा धूयं वा सुण्हं

वा अपासमाणे जाणेसि जारिसए मम चेव णं ओरोहे तारिसए णो अण्णस्स, तं एवं खलु जियसत्तू ! मिहिलाए नयरीए कुंभगस्स धूता पभावतीए अत्तिया मल्ली नामंति रूवेण य जुव्वणेण जाव नो खलु अण्णा काई देवकन्ना वा जारिसिया मल्ली, विदेहवररायकण्णाए छिण्णस्सवि पायंगुट्ठगस्स इमे तवोरोहे सयसहस्सतिमंपि कलं न अग्घइत्तिकट्टु जामेव दिसं पाउब्भूया तामेव दिसं पडिगया, तते णं से जित्तसत्तू परिव्वाइया-जणितहासे दूयं सद्दावेति २ जाव पहारेत्थ गमणाए ६ ॥ सूत्रं ८० ॥

तते णं तेसिं जियसत्तुपामोक्खाणं छण्हं राईणं दूया जेणेव मिहिला तेणेव पहारेत्थ गमणाए १ । तते णं छप्पिय दूतका जेणेव मिहिला तेणेव उवागच्छंति २ मिहिलाए अग्गुज्जाणंसि पत्तेयं २ खंधावारनिवेसं करेंति २ मिहिलं रायहाणीं अणुपविसंति २ जेणेव कुंभए तेणेव उवागच्छंति २ पत्तेयं २ करयल जाव साणं २ राईणं वयणातिं निवेदेंति २ । तते णं से कुंभए तेसिं दूयाणं अंतिए एयमट्ठं सोच्चा आसुरुत्ते जाव तिवलियं भिउडिं एवं वयासी—न देमि णं अहं तुब्भं मल्लीं विदेहवरकण्णंतिकट्टु ते छप्पि दूते असक्कारिय असम्माणिय अवद्दारेणं णिच्छुभावेति, तते णं जितसत्तुपामोक्खाणं छण्हं राईणं दूया कुंभएणं रन्ना असक्कारिया असम्माणिया अवद्दारेणं णिच्छुभाविया समाणा जेणेव सगा २ जाणवया जेणेव सयातिं २ णगराइं जेणेव सगा २ रायाणो तेणेव उवागच्छंति करयलपरिग्गहिय-दसनहं सिरावत्तं जाव कट्टु एवं वयासी—एवं खलु सामी ! अम्हे जितसत्तुपामोक्खाणं छण्हं राईणं दूया जमगसमगं चेव जेणेव मिहिला जाव अवद्दारेणं निच्छुभावेति, तं ण देइ णं सामी ! कुंभए मल्ली विदेहवररायकन्ना साणं २ राईणं एयमट्ठं निवेदंति ३ । तते णं ते जियसत्तुपामोक्खा छप्पि रायाणो तेसिं दूयाणं अंतिए एयमट्ठं सोच्चा निसम्म आसुरुत्ता अण्णमण्णस्स दूयसंपेसणं करेंति २ एवं वदासी—एवं

खलु देवाणुप्पिया ! अम्हं छराहं राईणं दूया जमगसमगं चेव जाव निच्छूढा, तं सेयं खलु देवाणुप्पिया ! अम्हं कुंभगस्स जत्तं गेरिहत्तए त्तिकट्टु अरण-मरणस्स एतमट्ठं पडिसुणेंति २ राहाया सराणद्धा हत्थिखंधवरगया सकोरंटम-ल्लदामा जाव सेयवरचामराहिं० महया-हय-गय-रह-पवर-जोहकलियाए चाउरं-गिणीए सेणाए सद्धिं संपरिवुडा सव्विड्ढीए जाव रवेणं सएहिं २ नगरेहिंतो जाव निग्गच्छंति २ एगयओ मिलायंति २ जेणेव मिहिला तेणेव पहारेत्थ गमणाए ४ । तते णं कुंभए राया इमीसे कहाए लद्धट्ठे समाणे बलवाउयं सद्दावेति २ एवं वदासी—खिप्पामेव जाव हय जाव सेणाणं सन्नाहेह जाव पच्चप्पिणंति, तते णं कुंभए राहाते सराणद्धे हत्थिखंधवरगये सकोरंटमल्ल-दामे सेयवरचामरए महया हयगयरह-पवरजोह-कलिए मिहिलं मज्झंमज्झेणं णिज्जाति २ विदेहं जणवयं मज्झंमज्झेणं जेणेव देसअंते तेणेव उवागच्छति २ खंधावारनिवेसं करेति २ जियसत्तुपामुक्खा छप्पिय रायाणो पडिवालेमाणे जुज्झसज्जे पडिचिट्ठति ५ । तते णं ते जियसत्तुपामोक्खा छप्पिय रायाणो जेणेव कुंभए तेणेव उवागच्छंति २ कुंभएणं रन्ना सद्धिं संपलग्गा यावि होत्था, तते णं ते जियसत्तुपामोक्खा छप्पि रायाणो कुंभयं रायं हयमहिय-पवर-वीरघाइय-निवडिय-चिंधद्धयप्पडागं किच्छप्पाणोवगयं दिसो दिसिं पडिसेहिंति ६ । तते णं से कुंभए जितसत्तुपामोक्खेहिं छहिं राईहिं हयमहित जाव पडिसेहिए समाणे अत्थामे अबले अवीरिए जाव अधारणिज्जमितिकट्टु सिग्घं तुरियं जाव वेइयं जेणेव मिहिला तेणेव उवागच्छंति २ मिहिलं अणुपविसति २ मिहिलाए दुवारातिं पिहेइ २ रोहसज्जे चिट्ठति ७ । तते णं ते जितसत्तुपामोक्खा छप्पि राया णो जेणेव मिहिला तेणेव उवागच्छंति २ मिहिलं रायहाणिं णिस्संचारं णिरुच्चारं सव्वतो समंता ओरुंभित्ताणं चिट्ठंति, तते णं से कुंभए मिहिलं रायहाणिं रुद्धं जाणित्ता अब्भंतरियाए उवट्ठाणसालाए सीहासणवरगए तेसिं जितसत्तु-

पामोक्खाणं छराहं रातीणं छिद्दाणि य विवराणि य मम्माणि य अलभमाणे बहूहिं आएहि य उवाएहि य उप्पत्तियाहि य ४ बुद्धीहिं परिणामेमाणे २ किंचि आयं वा उवायं वा अलभमाणे ओहतमणसंकप्पे जाव झियायति, इमं च णं मल्लीविदेहवररायकन्ना राहाया जाव बहूहिं खुज्जाहिं परिवुडा जेणेव कुंभए तेणेव उवागच्छति २ कुंभगस्स पायग्गहणं करेति ८। तते णं कुंभए मल्लिं विदेहवररायकन्नं णो आदाति नो परियाणाइ तुसिणीए संचिट्ठति, तते णं मल्ली विदेहवररायकन्ना कुंभगं एवं वयासी—तुब्भे णं ताओ ! अराणदा ममं एज्जमाणं जाव निवेसेह, किराणं तुब्भं अज्ज ओहत-मणसंकप्पे झियायह ?, तते णं कुंभए मल्लिं विदेहवररायकन्नं एवं वयासी— एवं खलु पुत्ता ! तव कज्जे जितसत्तुपामुक्खेहिं छहिं रातीहिं दूया संपेसिया, ते णं मए असकारिया जाव निच्छूढा ९। तते णं ते जितसत्तुपामुक्खा तेसिं दूयाणं अंतिए एयमट्ठं सोच्चा परिकुविया समाणा मिहिलं रायहाणिं निस्सं-चारं जाव चिट्ठंति, तते णं अहं पुत्ता तेसिं जितसत्तुपामोक्खाणं छराहं राईणं अंतराणि अलभमाणे जाव झियामि, १०। तते णं सा मल्ली विदेहवररा-यकन्ना कुंभयं रायं एवं वयासी—मा णं तुब्भे ताओ ! ओहयमणसंकप्पा जाव झियायह, तुब्भे णं ताओ ! तेसिं जितसत्तुपामोक्खाणं छराहं राईणं पत्तेयं २ रहसियं दूयसंपेसे करेह, एगमेगं एवं वदह—तव देमि मल्लिं विदेह-वररायकराणंतिकट्टु संझाकाल-समयंसि पविरलमणूसंसि निसंतंसि पडिनि-संतंसि पत्तेयं २ मिहिलं रायहाणिं अणुप्पवेसेह २ गब्भघरएसु अणुप्पवेसेह मिहिलाए रायहाणीए दुवाराइं पिधेह २ रोहसज्जे चिट्ठह, तते णं कुंभए एवं करेइ तं चेव जाव पवेसेति रोहसज्जे चिट्ठंति ११। तते णं ते जितसत्त-पामोक्खा छप्पिय रायाणो कल्लं पाउब्भूया जाव जालंतरेहिं कणयमयं मत्थयछिड्डं पउमुप्पलपिहाणं पडिमं पासंति, एस णं मल्ली विदेहरायवरक-राणत्तिकट्टु मल्लीए विदेहवररायकन्नाए रूवे य जोव्वणे य लावराणे य

मुच्छिया गिद्धा जाव अज्झोववरणा अणिमिसाए दिट्ठीए पेहमाणा २ चिट्ठंति १२। तते णं सा मल्ली विदेहवररायकन्ना राहाया जाव पायच्छित्ता सव्वालंकार-विभूषिया बहूहिं खुज्जाहिं जाव परिक्खित्ता जेणेव जालघरए जेणेव कणयपडिमा तेणेव उवागच्छति २ तीसे कणगपडिमाए मत्थयाओ तं पउमं अवणेति, तते णं गंधे णिद्धावति से जाह नामए अहिमडेति वा जाव असुभतराए चेव १३। तते णं ते जियसत्तुपामोक्खा तेणं असुभेणं गंधेणं अभिभूया समाणा सएहिं २ उत्तरिज्जएहिं आसातिं पिहेंति २ त्ता परम्मुहा चिट्ठंति, तते णं सा मल्ली विदेहवररायकन्ना ते जितसत्तुपामोक्खे एवं वयासी—किराणं तुब्भं देवाणुप्पिया ! सएहिं २ उत्तरिज्जेहिं जाव परम्मुहा चिट्ठह ?, तते णं ते जितसत्तुपामोक्खा मल्लीं विदेहवररायकन्नं एवं वयंति—एवं खलु देवाणुप्पिए ! अम्हे इमेणं असुभेणं गंधेणं अभिभूया समाणा सएहिं २ जाव चिट्ठामो, तते णं मल्ली विदेहवररायकन्ना ते जितसत्तुपामुक्खे एवं वयासी—जइ ता देवाणुप्पिया ! इमीसे कणगपडिमाए जाव पडिमाए कल्लाकल्लिं ताओ मणुराणाओ असण ४ एगमेगे पिंडे पक्खिप्पमाणे २ इमेयारूवे असुभे पोग्गलपरिणामे इमस्स (किमंग) पुण ओरालिय-सरीरस्स खेलासवस्स वंतासवस्स पित्तासवस्स सुक्कसोणिय-पूयासवस्स दुरूवऊसास-नीसासस्स दुरूव-मुत्त-पुतिय-पुरीस-पुराणस्स सडण जाव धम्मस्स केरिसए परिणामे भविस्सति ?, तं मा णं तुब्भे देवाणुप्पिया ? माणुस्सएसु कामभोगेसु सज्जह रज्जह गिज्झह मुज्झह अज्झोववज्जह, एवं खलु देवाणुप्पिया ! तुम्हे अम्हे इमाओ तच्चे भवग्गहणे अवरविदेहवासे सलिलावतिंसि विजए वीयसोगाए रायहाणीए महब्बलपामोक्खा सत्तवि य बालवयंसया रायाणो होत्था सहजाया जाव पव्वतिता, तए णं अहं देवाणुप्पिया ! इमेणं कारणेणं इत्थीनामगोयं कम्मं निव्वत्तेमि जति णं तुब्भं चोत्थं उवसंपज्जित्ताणं विहरह तते णं अहं छट्ठं उवसंपज्जित्ताणं विहरामि सेसं

तहेव सव्वं, तते णं तुब्भे देवाणुप्पिया ! कालमासे कालं किच्चा जयंते विमाणे उववरणा तत्थ णं तुब्भे देसूणातिं बत्तीसातिं सागरोवमाइं ठिती, तते णं तुब्भे ताओ देवलोयाओ अणंतरं चयं चइत्ता इहेव जंबुद्दीवे २ जाव साइं २ रज्जातिं उवसंपज्जित्ताणं विहरह, तते णं अहं देवाणुप्पिया ! ताओ देवलोयाओ आउक्खएणं जाव दारियत्ताए पच्चायाया,—किं थ तयं पम्हुट्ठं जं थ तया भो जयंत पवरंमि वुत्था समयनिबद्धं देवा ! तं संभरह जातिं ॥ १ ॥ १४ । तते णं तेसिं जियसत्तुपामोक्खाणं छरहं रायाणं मल्लीए विदेहवररायकन्नाए अंतिए एतमट्ठं सोच्चा णिसम्म सुभेणं परिणामेणं पसत्थेणं अज्झवसाणेणं लेसाहिं विसुज्झमाणीहिं तयावरणिज्जाणं कम्माणं खओवसमेण ईहावूह-मग्गणगवेसणं करेमाणस्स सणिणज्जाइस्सरणे समुप्पन्ने, एयमट्ठं सम्मं अभिसमागच्छंति १५ । तए णं मल्ली अरहा जितसत्तुपामोक्खे छप्पि रायाणो समुप्पराणजाइसरणे जाणित्ता गब्भघराणं दाराइं विहाडावेति, तते णं ते जितसत्तुपामोक्खा जेणेव मल्ली अरहा तेणेव उवागच्छंति २ तते णं महब्बलपामोक्खा सत्तविय बालवयंसा एगयओ अभिसमन्नागया यावि होत्था १६ । तते णं मल्लीए अरहाते जिनसत्तूपामोक्खे छप्पिय रायाणो एवं वदासी—एवं खलु अहं देवाणुप्पिया ! संसारभयउव्विग्गा जाव पव्वयामि तं तुब्भे णं किं करेह किं च ववसह-(वसह) जाव किं भे हियसामत्थे ?, जियसत्तुपामुक्खा छप्पिय रायाणो मल्लिं अरहं एवं वयासी—जति णं तुब्भे देवाणुप्पिया ! संसार जाव पव्वयह अम्हे णं देवाणुप्पिया ! के अराणे आलंबणे वा आहारे वा पडिबंधे वा जह चेव णं देवाणुप्पिया ! तुब्भे अम्हे इओ तच्चे भवग्गहणे बहुसु कज्जेसु य मेढी पमाणं जाव धम्मधुरा होत्था तहा चेव णं देवाणुप्पिया ! इरिंहपि जाव भविस्सह, अम्हेविय णं देवाणुप्पिया ! संसारभउविग्गा जाव भीया जम्मणमरणाणं, देवाणुप्पियाणं सद्धिं मुंडा भवित्ता जाव पव्वयामो

१७। तते णं मल्ली अरहा ते जितसत्तुपामोक्खे एवं वयासी–जराणं तुब्भे संसार जाव मए सद्धिं पव्वयह तं गच्छह णं तुब्भे देवाणुप्पिया! सएहिं २ रज्जेहिं जेट्ठे पुत्ते रज्जे ठावेह २ त्ता पुरिससहस्सवाहिणीओ सीयाओ दुरूहह दुरूढा समाणा मम अंतियं पाउब्भवह, तते णं ते जितसत्तुपामुक्खा मल्लिस्स अरहतो एतमट्ठं पडिसुणेंति १८। तते णं मल्ली अरहा ते जितसत्तुपामुक्खाण छप्पिय रायाण गहाय जेणेव कुंभए तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता कुंभगस्स पाएसु पाडेति, तते णं कुंभए ते जितसत्तुपामुक्खे छप्पिय रायाणो विपुलेणं असण-पाणखाइम-साइमेणं पुप्फवत्थ-गंधमल्लालंकारेणं सक्कारेति जाव पडिविसज्जेति, तते णं ते जियसत्तुपामोक्खा कुंभएणं रएणा विसज्जिया समाणा जेणेव साइं २ रज्जातिं जेणेव नगरातिं तेणेव उवागच्छंति २ सगाइं रज्जातिं उवसंपज्जित्ता विहरंति, तते णं मल्ली अरहा संवच्छरावसाणे निक्खमिस्सामित्ति मणं पहारेति १६॥सूत्रं ८१॥ तेणं कालेणं २ सक्कस्सासणं चलति, तते णं सक्के देविंदे ३ आसणं चलियं पासति २ ओहिं पउंजति २ मल्लिं अरहं ओहिणा आभोएति २ इमेयारूवे अब्भत्थिए जाव समुप्पज्जित्था–एवं खलु जंबुद्दीवे २ भारहे वासे मिहिलाए कुंभगस्स रन्नो पुत्ती मल्ली अरहा निक्खमिस्सामिति मणं पहारेति १। तं जीयमेयं तीयपच्चुप्पन्नमणागयाणं सक्काणं ३ अरहंताणं भगवंताणं निक्खममाणाणं इमेयारूवं अत्थसंपयाणं दलित्तए, तंजहा–'तिण्णेव य कोडिसया अट्ठासीतिं च होंति कोडीओ। असितिं च सयसहस्सा इंदा दलयंति अरहाणं॥ १॥ एवं संपेहेति २ वेसमणं देवं सद्दावेति २ त्ता एवं वयासी–एवं खलु देवाणुप्पिया! जंबुद्दीवे २ भारहे वासे जाव असीतिं च सयसहस्साइं दलइत्तए, तं गच्छह णं देवाणुप्पिया! जंबुद्दीवे २ भारहे वासे मिहिलाए कुंभगस्स रन्नो भवणंसि इमेयारूवं अत्थसंपदाणं साहराहि २ खिप्पामेव मम एयमाणत्तियं पच्चप्पिणाहि, तते णं से वेसमणे

देवे सक्केणं देविंदेणं ३ एवं वुत्ते हट्ठे करयल जाव पडिसुणेइ २ जंभए देवे सद्दावेइ २ एवं वयासी—गच्छह णं तुब्भे देवाणुप्पिया! जंबुद्दीवं दीवं भारहं वासं मिहिलं रायहाणिं कुंभगस्स रन्नो भवणंसि तिन्नेव य कोडिसया अट्ठासीयं च कोडीओ असियं च सयसहस्साइं अयमेयारूवं अत्थसंपयाणं साहरह २ मम एयमाणत्तियं पच्चप्पिणह २। तते णं ते जंभगा देवा वेसमणेणं जाव सुणेत्ता उत्तरपुरच्छिमं दिसीभागं अवकमंति २ जाव *उत्तरवेउव्वियाइं रूवाइं विउव्वंति* २ ताए उक्किट्ठाए जाव वीइवयमाणा जेणेव जंबुद्दीवे २ भारहे वासे जेणेव मिहिला रायहाणी जेणेव कुंभगस्स रण्णो भवणे तेणेव उवागच्छंति २ कुंभगस्स रन्नो भवणंसि तिन्नि कोडिसया जाव साहरंति २ जेणेव वेसमणे देवे तेणेव उवागच्छंति २ करयल जाव पच्चप्पिणंति, तते णं से वेसमणे देवे जेणेव सक्के देविंदे देवराया तेणेव उवागच्छइ २ करयल जाव पच्चप्पिणाति ३।

तते णं मल्ली अरहा कल्लाकल्लिं जाव मागहओ पायरासोत्ति बहूणं सणाहाण य अणाहाण य पंथियाण य पहियाण य करो-(कायको)डियाण य कप्पडियाण य एगमेगं हिरण्णकोडिं (हत्थामासं) अट्ठ य अणूणाति सयसहस्साति इमेयारूवं अत्थसंपदाणं दलयति, तए णं से कुंभए मिहिलाए रायहाणीए तत्थ २ तहिं २ देसे २ बहूओ महाणससालाओ करेति, तत्थ णं बहवे मणुया दिण्णभइभत्तवेयणा विपुलं असणं ४ उवक्खडेंति २ जे जहा आगच्छंति तंजहा—पंथिया वा पहिया वा करोडिया वा कप्पडिया वा पासंडत्था वा गिहत्था वा तस्स य तहा आसत्थस्स वीसत्थस्स सुहासणवरगतस्स तं विपुलं असणं ४ परिभाएमाणा परिवेसेमाणा विहरंति ४। तते णं मिहिलाए सिंघाडग जाव बहुजणो अण्णमण्णस्स एवमातिक्खति—एवं खलु देवाणुप्पिया! कुंभगस्स रण्णो भवणंसि सव्वकामगुणियं किमिच्छियं विपुलं असणं ४ बहूणं

समणाण य जाव (सुरासुरियं) परिवेसिज्जति, वरवरिया घोसिज्जति किमिच्छियं दिज्जए बहुविहीयं। सुरअसुर-देवदाणव-नरिंदमहियाण निक्खमणे ॥ १ ॥ तते णं मल्ली अरहा संवच्छरेणं तिन्नि कोडिसया अट्ठासीतिं च होंति कोडीओ असितिं च सयसहस्साइं इमेयारूवं अत्थसंपदाणं दलइत्ता निक्खमामित्ति मणं पहारेति ५ ॥ सूत्रं ॥ ८२ ॥ तेणं कालेणं २ लोगंतिया देवा बंभलोए कप्पे रिट्ठे विमाणपत्थडे सएहिं २ विमाणेहिं सएहिं २ पासायवडिंसएहिं पत्तेयं २ चउहिं सामाणिय-साहस्सीहिं तिहिं परिसाहिं सत्तहिं अणिएहिं सत्तहिं अणियाहिवईहिं सोलसहिं आयरक्ख-देवसाहस्सीहिं अन्नेहि य बहूहिं लोगंतिएहिं देवेहिं सद्धिं संपरिवुडा महयाहय-नट्टगीयवाइय जाव रवेणं भुंजमाणा विहरंति, तंजहा–'सारस्सयमाइच्चा वण्ही वरुणा य गद्दतोया य। तुसिया अव्वाबाहा अग्गिच्चा चेव रिट्ठा य॥ १ ॥ १। तते णं तेसिं लोयंतियाणं देवाणं पत्तेयं २ आसणाति चलंति तहेव जाव अरहंताणं निक्खममाणाणं संबोहणं करेत्तएत्ति तं गच्छामो णं अम्हेवि मल्लिस्स अरहतो संबोहणं करेमित्तिकट्टु एवं संपेहेंति २ उत्तरपुरच्छिमं दिसीभायं अवक्कमंति २ वेउव्वियसमुग्घाएणं समोहणंति २ संखिज्जाइं जोयणाइं एवं जहा जंभगा जाव जेणेव महिला रायहाणी जेणेव कुंभगस्स रन्नो भवणे जेणेव मल्ली अरहा तेणेव उवागच्छंति २ अंतलिक्खपडिवन्ना सखिंखिणियाइं जाव वत्थाति पवर परिहिया करयल जाव ताहिं इट्ठाहिं जाव एवं वयासी–बुज्झाहि भगवं ! लोगनाहा पवत्तेहि धम्मतित्थं जीवाणं हियसुहनिस्सेयसकरं भविस्सतित्तिकट्टु दोच्चंपि तच्चंपि एवं वयंति २ मल्लिं अरहं वंदंति नमंसंति २ जामेव दिसिं पाउब्भूआ तामेव दिसिं पडिगया २। तते णं मल्ली अरहा तेहिं लोगंतिएहिं देवेहिं संबोहिए समाणे जेणेव अम्मापियरो तेणेव उवागच्छति २ करयल जाव एवं वयासी–इच्छामि णं अम्मयाओ !

तुब्भेहिं अब्भणुराणाते मुंडे भवित्ता जाव पव्वतित्तए, अहासुहं देवाणुप्पिया ! *मा पडिबंधं करेहि ३ । ततेणं कुंभए कोडुंबियपुरिसे सद्दावेति २ एवं* वदासी—खिप्पामेव अट्ठसहस्सं सोवण्णियाणं जाव भोमेज्जाणंति, अण्णं च महत्थं जाव तित्थयराभिसेयं उवट्ठवेह जाव उवट्ठवेंति ४ । तेणं कालेणं २ चमरे असुरिंदे जाव अच्चुय-पज्जवसाणा आगया, तते णं सक्के ३ आभिओगिए देवे सद्दावेति २ एवं वदासी—खिप्पामेव अट्ठसहस्सं सोवण्णियाणं जाव अण्णं च तं विउलं उवट्ठवेह जाव उवट्ठवेंति, तेवि कलसा ते चेव कलसे अणुपविट्ठा, तते णं से सक्के देविंदे देवराया कुंभए य राया मल्लि अरहं सीहासणंसि पुरत्थाभिमुहं निवेसेइ अट्ठसहस्सेणं सोवण्णियाणं जाव अभिसिंचंति ५ । तते णं मल्लिस्स भगवओ अभिसेए वट्टमाणे अप्पेगतिया देवा मिहिलं च सब्भितरं बाहिं जाव सव्वतो समंता परिधावंति, तए णं कुंभए राया दोच्चंपि उत्तरावक्कमणं जाव सव्वालंकारविभूसियं करेति २ कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ २ त्ता एवं वयासी—खिप्पामेव मणोरमं सीयं उवट्ठवेह ते उवट्ठवेंति ६ । तते णं सक्के ३ आभिओगिए देवे सद्दावेति २ एवं वयासी—खिप्पामेव अणेगखंभ-सयसन्निविट्ठं जाव मणोरमं सीयं उवट्ठवेह जाव सावि सीया तं चेव सीयं अणुपविट्ठा, तते णं मल्ली अरहा सीहासणाओ अब्भुट्ठेति २ जेणेव मणोरमा सीया तेणेव उवागच्छति २ मणोरमं सीयं अणुपयाहिणी-करेमाणा मणोरमं सीयं दुरूहति २ सीहासणवरगए पुरत्थाभिमुहे सन्निसन्ने, तते णं कुंभए अट्ठारस सेणिप्पसेणीओ सद्दावेति २ एवं वदासी—तुब्भे णं देवाणुप्पिया ! ण्हाया जाव सव्वालंकारविभूसिया मल्लिस्स सीयं परिवहह जाव परिवहंति ७ । तते णं सक्के देविंदे देवराया मणोरमाए दक्खिणिल्लं उवरिल्लं बाहं गेण्हति, ईसाणे उत्तरिल्लं उवरिल्लं बाहं गेण्हति, चमरे दाहिणिल्लं हेट्ठिल्लं बाहं गेण्हति, बली उत्तरिल्लं हेट्ठिल्लं बाहं गेण्हति, अवसेसा देवा जहा-

रिहं मणोरमं सीयं परिवहंति, "पुव्विं उक्खित्ता माणुस्सेहिं तो हट्ठरोम-कूवेहिं। पच्छा वहंति सीयं असुरिंद-सुरिंद-नागेंदा ॥ १ ॥ चल-चवल-कुंडल(भूषण)धरा सच्छंद-विउव्वियाभरणधारी। देविंद-दाणविंदा वहंति सीयं जिणिंदस्स ॥ २ ॥ ८। तते णं मल्लिस्स अरहओ मणोरमं सीयं दुरूढस्स इमे अट्ठट्ठमंगलगा पुरतो अहाणु० एवं निग्गमो जहा जमालिस्स, तते णं मल्लिस्स अरहतो निक्खममाणस्स अप्पेगइया देवा मिहिलं रायहाणिं आसिय-संमज्जियं संमट्ठसुइ-रत्थंतरावण-विहियं करेंति अब्भितर-वासविहि-गाहा जाव परिधावंति ६। तते णं मल्ली अरहा जेणेव सहस्संबवणे उज्जाणे जेणेव असोगवरपायवे तेणेव उवागच्छति सीयाओ पच्चोरुभति २ आभर-णालंकारं पभावती पडिच्छति, तते णं मल्ली अरहा सयमेव पंचमुट्ठियं लोयं करेति, तते णं सक्के देविंदे ३ मल्लिस्स केसे पडिच्छति, खीरोदग-समुद्दे पक्खिवइ (साहरइ) १०। तते णं मल्ली अरहा णमोऽत्थु णं सिद्धाणंतिकट्टु सामाइयचरित्तं पडिवज्जति, जं समयं च णं मल्ली अरहा चरित्तं पडिवज्जति तं समयं च णं देवाणं माणुसाण य णिग्घोसे तुरियनि-णायगीयवातियनिग्घोसे य सक्कस्स वयणसंदेसेणं णिलुक्के यावि होत्था, जं समयं च णं मल्ली अरहा सामातियं चरित्तं पडिवन्ने तं समयं च णं मल्लिस्स अरहतो माणुसधम्माओ उत्तरिए मणपज्जवनाणे समुप्पन्ने ११। मल्ली णं अरहा जे से हेमंताणं दोच्चे मासे चउत्थे पक्खे पोससुद्धे तस्स णं पोससुद्धस्स एक्कारसीपक्खेणं पुव्वण्हकालसमयंसि अट्ठमेणं भत्तेणं अपाणएणं अस्सिणीहिं नक्खत्तेणं जोगमुवागएणं तिहिं इत्थीसएहिं अब्भितरियाए परिसाए तिहिं पुरिससएहिं बाहिरियाए परिसाए सद्धिं मुंडे भवित्ता पव्वइए १२। मल्लिं अरहं इमे अट्ठ रा(णा)यकुमारा अणुपव्वइंसु तंजहा—णंदे य णंदिमित्ते सुमित्त बलमित्त भाणुमित्ते य। अमरवति अमरसेणे महसेणे चेव अट्ठमए ॥ १ ॥ तए णं से भवणवई ४ मल्लिस्स

अरहतो निक्खमणमहिमं करेंति २ जेणेव नंदीसरवरे तेणेव उवागच्छंति २ अट्ठाहियं करेंति २ जाव पडिगया १४। तते णं मल्ली अरहा जंचेव दिवसं पव्वतिए तस्सेव दिवसस्स पुव्वा(पच्च)वरगह-कालसमयंसि असोग-वरपायवस्स अहे पुढवि-सिलापट्टयंसि सुहासणवरगयस्स सुहेणं परिणामेणं पसत्थेहिं अज्झवसाणेहिं पसत्थाहिं लेसाहिं विसुज्झमाणीहिं तयावरण-कम्म-रय-विकरणकरं अपुव्वकरणं अणुपविट्ठस्स अणंते जाव केवलनाण-दंसणे समुप्पन्ने १५ ॥ सूत्रं ८३ ॥ तेणं कालेणं २ सव्वदेवाणं आसणाति चलंति, समोसढा सुणेंति अट्ठाहियामहिमं नंदीसरं जामेव दिसं पाउब्भूया कुंभएवि निग्गच्छति १। तते णं ते जितसत्तुपामुक्खा छप्पिय रायाणो जेट्ठपुत्ते रज्जे ठावेत्ता पुरिससहस्सवाहिणीयाओ दुरूढा सव्विड्ढीए जेणेव मल्ली अरहा जाव पज्जुवासंति, तते णं मल्ली अरहा तीसे महालियाए कुंभगस्स तेसिं च जियसत्तुपामुक्खाणं धम्मं कहेति परिसा जामेव दिसिं पाउब्भूया तामेव दिसिं पडिगया, कुंभए समणोवासए जाते, पडिगए, पभावती य २। तते णं जितसत्तू छप्पि राया धम्मं सोच्चा आलित्तए णं भंते ! जाव पव्वइया, चोद्दसपुव्विणो अणंते केवले सिद्धा ३। तते णं मल्ली अरहा सहसंब-वणाओ निक्खमति २ बहिया जणवयविहारं विहरइ ४। मल्लिस्स णं भिसगपामोक्खा अट्ठावीसं गणा अट्ठावीसं गणहरा होत्था, मल्लिस्स णं अरहओ चत्तालीसं समणसाहस्सीओ उक्कोसिया समणसंपया होत्था, बंधुमति-पामोक्खाओ पणपन्नं अज्जियासाहस्सीओ उक्कोसिया अज्जियासंपया होत्था, सावयाणं एगा सतसाहस्सी चुलसीतिं सहस्सा उक्कोसिया सावयाणं संपया होत्था, सावियाणं तिन्नि सयसाहसीओ पणणट्ठिं च सहस्सा, छस्सया चोद्दसपुव्वीणं, वीससया ओहिनाणीणं, बत्तीसं सया केवलणाणीणं पणतीसं सया वेउव्वियाणं, अट्ठसया मणपज्जवनाणीणं, चोद्दससया वाईणं, वीसं सया अणुत्तरोववातियाणं ४। मल्लिस्स अरहओ दुविहा अंतगड-

भूमी होत्था, तंजहा—जुयंतकरभूमी परियायंतकरभूमी य, जाव वीसतिमाओ पुरिसजुगाओ जुयंतकरभूमी, दुवासपरियाए(दुमास, चउमास परियाए) अंतमकासी ५। मल्ली णं अरहा पणुवीसं धणूतिमुद्धं उच्चत्तेणं वण्णेणं पियंगुसमे समचउरंस-संठाणे वज्जरिसभ-णारायसंघयणे मज्झदेसे सुहंसुहेणं विहरित्ता जेणेव सम्मेय-सेलसिहरे पव्वए तेणेव उवागच्छइ २ त्ता संमेय-सेलसिहरे पाओवगमणुववरणे मल्ली य अरहा एगं वाससतं आगारवासं, पणपण्णं वाससहस्साति वाससयऊणाति केवलिपरियागं पाउणित्ता, पणपण्णं वाससहस्साइं सव्वाउयं पालइत्ता जे से गिम्हाणं पढमे मासे दोच्चे पक्खे चित्तसुद्धे तस्स णं चेत्तसुद्धस्स चउत्थीए भरणीए णक्खत्तेणं अद्धरत्तकालसमयंसि पंचेहिं अज्जियासएहिं अब्भितरियाए परिसाए पंचहिं अणगारसएहिं बाहिरियाए परिसाए मासिएणं भत्तेणं अपाणएणं वग्घारियपाणी खीणे वेयणिज्जे आउए नामे गोए सिद्धे ६। एवं परिनिव्वाण-महिमा भाणियव्वा जहा जंबुद्दीव-पण्णत्तीए, नंदीसरे अट्ठाहियाओ पडिगयाओ, एवं खलु जंबू ! समणेणं भगवया महावीरेणं अट्ठमस्स नायज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्तेत्तिबेमि ७॥ सूत्रं ८४॥

॥ इति अष्टममध्ययनम्॥

॥९॥ अथ श्रीमाकन्दीदारकाख्यं नवममध्ययनम्॥

जइ णं भंते ! समणेणं जाव संपत्तेणं अट्ठमस्स णायज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते नवमस्स णं भंते ! नायज्झयणस्स समणेणं जाव संपत्तेणं के अट्ठे पण्णत्ते ?, एवं खलु जंबू ! तेणं कालेणं २ चंपा नामं नयरी पुण्णभद्दे तत्थ णं मार्कदी नामं सत्थवाहे परिवसति, अड्ढे०, तस्स णं भद्दा नामं भारिया, तीसे णं भद्दाए अत्तया दुवे सत्थवाहदारया होत्था, तंजहा—जिणपालिए य जिणरक्खिए य १। तते णं तेसिं मागंदियदारगाणं

अण्णया कयाई एगयओ इमेयारूवे मिहो कहासमुल्लावे समुप्पज्जित्था-एवं खलु अम्हे लवणसमुद्दं पोयवहणेणं एक्कारस वारा ओगाढा सव्वत्थविय णं लद्धट्ठा कयकज्जा अणहसमग्गा पुणरवि नियघरं हव्वामागया तं सेयं खलु अम्हं देवाणुप्पिया! दुवालसमंपि लवणसमुद्दं पोतवहणेणं ओगाहित्तएत्तिकट्टु अण्णमण्णस्सेतमट्ठं पडिसुणेंति २ त्ता जेणेव अम्मापियरो तेणेव उवागच्छंति एवं वदासी-एवं खलु अम्हे अम्मयाओ! एक्कारस वारा तं चेव जाव नियगं घरं हव्वमागया, तं इच्छामो णं अम्मयाओ! तुम्हेहिं अब्भणुण्णाया समाणा दुवालसमं लवणसमुद्दं पोयवहणेणं ओगाहित्तए २। तते णं ते मागंदियदारए अम्मापियरो एवं वदासी-इमे ते जाया! अज्जग जाव परिभाएत्तए तं अणुहोह ताव जाया! विउले माणुस्सए इड्ढीसक्कारसमुदए, किं भे सपच्चवाएणं निरालंबणेणं लवणसमुद्दोत्तारेणं?, एवं खलु पुत्ता! दुवालसमी जत्ता सोवसग्गा यावि भवति, तं मा णं तुब्भे दुवे पुत्ता! दुवालसमंपि लवणसमुद्दं जाव ओगाहेह, मा हु तुब्भं सरीरस्स वावत्ती भविस्सति ३। तते णं मागंदियदारगा अम्मापियरो दोच्चंपि तच्चंपि एवं वदासी-एवं खलु अम्हे अम्मयाओ! एक्कारस वारा लवणं ओगाहित्तए ४। तते णं ते मागंदीदारए अम्मापियरो जाहे नो संचाएंति बहूहिं आघवणाहिं पण्णवणाहि य आघवित्तए वा पन्नवित्तए वा ताहे अकामा चेव एयमट्ठं अणुजाणित्था (अणुमण्णित्था) तते णं ते मागंदियदारगा अम्मापिऊहिं अब्भणुण्णाया समाणा गणिमं च धरिमं च मेज्जं च पारिच्छेज्जं च जहा अरहण्णगस्स जाव लवणसमुद्दं बहूइं जोयणसयाइं ओगाढा ५ ॥ सूत्रं ८५ ॥

तते णं तेसिं मागंदियदारगाणं अणेगाइं जोयणसयाइं ओगाढाणं समाणाणं अणेगाइं उप्पाइयसयातिं पाउब्भूयातिं; तंजहा-अकाले गज्जियं जाव थणियसद्दे कालियवाते तत्थ समुट्ठिए, तते णं सा णावा तेणं

कालियवातेणं आहुणिज्जमाणी २ संचालिज्जमाणी २ संखोभिज्जमाणी २ सलिल-तिक्खवेगेहिं आयट्टिज्जमाणी २ कोट्टिमंसि करतलाहते विव तेंदूसए तत्थेव २ ओवयमाणी य उप्पयमाणी य उप्पयमाणीविव धरणीयलाओ सिद्धविज्जाहरकन्नगा ओवयमाणीविव गगणतलाओ भट्ठविज्जा विज्जाहर-कन्नगाविव पलायमाणीविव महागरुल-वेग-वित्तासिया भुयगवर-कन्नगा धावमाणीविव महाजण-रसियसद्द-वित्तत्था ठाणभट्ठा आसकिसोरी णिगुंजमाणीविव गुरुजण-दिट्ठावराहा सुयण-कुलकन्नगा घुम्ममाणीविव वीचीपहार सततालिया गलिय-लंबणाविव गगणतलाओ रोयमाणीविव सलिल-गंट्ठि-विप्पइरमाण-घोरंसुवाएहिं णववहू उवरतभत्तुया विलवमाणीविव परचक्क-रायाभिरोहिया परम-महब्भयाभिद्दुया महापुरवरी झायमाणीविव कवडच्छोम-प्पओगजुत्ता जोगपरिव्वाइया णिसासमाणीविव महाकंतार-विणिग्गय-परिस्संता परिणयवया अम्मया सोयमाणीविव तवचरण-खीण-परिभोगा चयण-काले देववरवहू संचुण्णिय-कट्ठकूवरा भग्ग-मेढि-मोडिय-सहस्समाला सूलाइय(त्त)-वंक-परिमासा फलहंतर-तडतडेंत-फुट्टंत-संधि-वियलंत-लोहकीलिया सव्वंग-वियंभिया परिसडिय-रज्जु-विसरंत-सव्वगत्ता आमग-मल्लग-भूया अकयपुण्ण-जण-मणोरहोविव चिंतिज्जमाणगुरुई हाहाकय-कण्णधार-णाविय-वाणियग-जण-कम्मगार-विलविया णाणाविह-रयण-पणि-यसंपुण्णा बहूहिं पुरिससएहिं रोयमाणेहिं कंदमाणेहिं सोयमाणेहिं तिप्प-माणेहिं विलवमाणेहिं एगं महं अंतो जलगयं गिरि-सिहर-मासायइत्ता संभग्ग-कूवतोरणा मोडिय-झयदंडा वलय-सय-खंडिया करकरस्स तत्थेव विद्दवं उवगया १ । तते णं तीए णावाए भिज्जमाणीए बहवे पुरिसा विपुलपडियं भंडमायाए अंतो जलंमि णिमज्जावि यावि होत्था २ ॥ सूत्रं ८६ ॥

तते णं ते मागंदियदारगा छेया दक्खा पत्तट्ठा कुसला मेहावी

णिउण-सिप्पोवगया बहुसु पोतवहण-संपराएसु कयकरण-लद्धविजया अमूढा अमूढहत्था एगं महं फलगखंडं आसादेंति, जंसिं च णं पदेसंसि से पोयवहणे विवन्ने तंसिं च णं पदेसंसि एगे महं रयणदीवे णामं दीवे होत्था अणेगाइं जोअणाति आयाम-विक्खंभेणं अणेगाइं जोअणाइं परिक्खेवेणं णाणा-दुमसंड-मंडिउद्देसे सस्सिरीए पासातीए ४, तस्स णं बहुमज्झ-देसभाए तत्थ णं महं एगे पासायवडेंसए होत्था अब्भुग्गय-मूसियए जाव सस्सिरीभूयरूवे पासातीए ४, तत्थ णं पासाय-वडेंसए रयणद्दीवदेवया नामं देवया परिवसति पावा चंडा रुद्दा साहसिया, तस्स णं पासायवडिं-सयस्स चउद्दिसिं चत्तारि वणसंडा किण्हा किण्होभासा १। तते णं ते मागंदियदारगा तेणं फलयखंडेणं उब्बुडमाणा (उवुज्झमाणा) २ रयणदीवंतेणं संवूढा (संछूढा) यावि होत्था, तते णं ते मागंदियदारगा थाहं लभंति २ मुहुत्ततरं आससंति २ फलगखंडं विसज्जेंति २ रयणद्दीवं उत्तरंति २ फलाणं मग्गणगवेसणं करेंति २ फलातिं गिण्हंति २ आहारेंति २ णालि-एराणं मग्गणगवेसणं करेंति २ नालिएराइं फोडेंति २ नालिएर-तेल्लेणं अण्णमण्णस्स गत्ताइं अब्भंगेंति २ पोक्खरणीतो ओगाहिंति २ जलमज्जणं करेंति २ जाव पच्चुत्तरंति २ पुढवि-सिलापट्टयंसि निसीयंति २ आसत्था वीसत्था सुहासणवरगया चंपानयरिं अम्मापिउ-आपुच्छणं च लवणसमुद्दोत्तारं च कालियवाय-समुत्थणं च पोतवहण-विवत्तिं च फलयखंडस्स आसायणं च रयणद्दीवुत्तारं च अणुचिंतेमाणा २ ओहतमणसंकप्पा जाव झियायेन्ति २। तते णं सा रयणद्दीवदेवया ते मागंदियदारए ओहिणा आभोएति असिफलग-वग्गहत्था सत्तट्ठतलप्पमाणं उड्ढं वेहासं उप्पयति २ ताते उक्किट्ठाए जाव देवगईए वीइवयमाणी २ जेणेव मागंदियदारए तेणेव आगच्छति २ आसुरुत्ता मागंदियदारए खर-फरुस-निट्ठुर-वयणेहिं एवं वदासी—हं भो मागंदियदारया ! अप्पत्थियपत्थिया जति णं तुब्भे मए सद्धिं

विउलातिं भोगभोगाइं भुंजमाणा विहरह तो भे अत्थि जीवियं, अहणं तुब्भे मए सद्धिं विउलातिं नो विहरह तो भे इमेणं नीलुप्पल-गवल-गुलिय जाव खुरधारेणं असिणा रत्तगंडमंसुयाइं माउयाहिं उवसोहियाइं तालफलाणीव सीसाइं एगंते एडेमि ३। तते णं ते मागंदियदारगा रयणदीवदेवयाए अंतिए सोच्चा भीया करयल जाव एवं वयासी—जण्णं देवाणुप्पिया! वतिस्ससि तस्स आणा-उववाय-वयणनिद्देसे चिट्ठिस्सामो, तते णं सा रयणद्दीवदेवया ते मागंदियदारए गेण्हति २ जेणेव पासायवडिंसए तेणेव उवागच्छइ २ असुभ-पोग्गलावहारं करेति २ सुभपोग्गल-पक्खेवं करेति २ त्ता पच्छा तेहिं सद्धिं विउलातिं भोगभोगाइं भुंजमाणी विहरति कल्लाकल्लिं च अमयफलातिं उवणेति ४॥ सूत्रं ८७॥ तते णं सा रयणदीवदेवया सक्कवयण-संदेसेणं सुट्ठिएणं लवणाहिवइणा लवणसमुद्दे तिसत्तखुत्तो अणुपरियट्टियव्वेत्ति जं किंचि तत्थ तणं वा पत्तं वा कट्ठं वा कयवरं वा असुइं पूतियं दुरभि-गंध-मचोक्खं तं सव्वं आहुणिय २ तिसत्तखुत्तो एगंते एडेयव्वंतिकट्टु णिउत्ता १। तते णं सा रयणद्दीवदेवया ते मागंदियदारए एवं वदासी-एवं खलु अहं देवाणुप्पिया! सक्कवयणसंदेसेणं सुट्ठियएणं तं चेव जाव णिउत्ता, तं जाव अहं देवाणुप्पिया! लवणसमुद्दे जाव एडेमि ताव तुब्भे इहेव पासायवडिंसए सुहंसुहेणं अभिरममाणा २ चिट्ठह, जति णं तुब्भे एयंसि अंतरंसि उव्विग्गा वा उस्सुया (उप्पिच्छा) वा उप्पुया वा भवेज्जाह तो णं तुब्भे पुरच्छिमिल्लं वणसंडं गच्छेज्जाह, तत्थ णं दो ऊऊ सया साहीणा तंजहा—पाउसे य वासारत्ते य,—तत्थ उ कंदल-सिलिंध-दंतो णिउर-वरपुप्फ-पीवरकरो। कुडयज्जुण-णीव-सुरभि-दाणो पाउस-उऊ-गयवरो साहीणो॥ १॥ तत्थ य—सुरगोवमणि-विचित्तो दुद्दुर-कुलर-सियउज्झररवो। बरहिणविंद-परिणद्धसिहरो वासारत्तो उऊपव्वतो साहीणो॥ २॥ तत्थ णं तुब्भे देवाणुप्पिया! बहुसु वावीसु य जाव सरसरपंतियासु बहूसु

आलीघरएसु य मालीघरएसु य जाव कुसुमघरएसु य सुहंसुहेणं अभिरम-माणा विहरेज्जाह, जति णं तुब्भे एत्थवि उव्विग्गा वा उस्सुया वा उप्पुया वा भवेज्जाह तो णं तुब्भे उत्तरिल्लं वणसंडं गच्छेज्जाह, तत्थ णं दो ऊऊ सया साहीणा तंजहा—सरदो य हेमंतो य,—तत्थ उ सणसत्त-वणकउओ नीलुप्पल-पउम-नलिणसिंगो। सारस-चक्कवाय-रवितघोसो सरय-ऊऊगोवती साहीणो ॥ १ ॥ तत्थ य सियकुंद-धवल(विमल)-जोगहो कुसुमित-लोद्ध-वणसंड-मंडलतलो। तुसार-दगधार-पीवरकरो हेमंत-ऊऊससी सया साहीणो ॥ २ ॥ तत्थ णं तुब्भे देवाणुप्पिया! वावीसु य जाव विहरेज्जाह, जति णं तुब्भे तत्थवि उव्विग्गा वा उस्सुया वा जाव भवेज्जाह तो णं तुब्भे अवरिल्लं वणसंडं गच्छेज्जाह, तत्थ णं दो ऊऊ साहीणा, तंजहा—वसंते य गिम्हे य, तत्थ उ सहकार-चारुहारो किंसुय-कणियारासोग-मउडो। ऊसित-तिलग-बउलायवत्तो वसंत-उऊणरवती साहीणो ॥ १ ॥ तत्थ य पाडल-सिरीस-सलिलो मलिया-वासंतिय-धवलवेलो। सीयल-सुरभि-अनिल-मगरचरिओ गिम्ह-ऊऊ-सागरो साहीणो ॥ २ ॥ तत्थ णं बहुसु जाव विहरेज्जाह, जति णं तुब्भे देवाणुप्पिया! तत्थवि उव्विग्गा उस्सुया भवेज्जाह तओ तुब्भे जेणेव पासायवडिंसए तेणेव उवागच्छेज्जाह, ममं पडिवालेमाणा २ चिट्ठेज्जाह, मा णं तुब्भे दक्खिणिल्लं वणसंडं गच्छेज्जाह, तत्थ णं महं एगे उग्गविसे चंडविसे घोर(भोग)विसे महाविसे अइकायमहाकाए जहा तेयनिसग्गे मसि-महिसामूसाकालए नयण-विस-रोसपुणे अंजण-पुंज-नियर-प्पगासे रत्तच्छे जमल-जुयल-चंचल-चलंतजीहे धरणि-यल-वेणिभूए उक्कड-फुड-कुडिल-जडिल-कक्खड-वियड-फडाडोव-करणदच्छे लोगाहार-धम्ममाण-धमधमेंतघोसे अणागलिय-चंडतिव्वरोसे समुहिं तुरियं चवलं धमधमंत-दिट्ठी-विसे सप्पे य परिवसति, मा णं तुब्भं सरीरगस्स वावत्ती भविस्सइ २। ते मागंदियदारए दोच्चं तच्चंपि एवं वदति २ वेउव्वि-समुग्घातणं समोहणति

२ ताए उक्किट्ठाए लवणसमुद्दं तिसत्तखुत्तो अणुपरियट्टेउं पयत्ता यावि होत्था ३ ॥ सूत्रं ८८ ॥

तए णं ते मागंदियदारया तओ मुहुत्तंतरस्स पासायवडिंसए सइं वा रतिं वा धितिं वा अलभमाणा अण्णमण्णं एवं वदासी–एवं खलु देवाणुप्पिया ! रयणदीवदेवया अम्हे एवं वदासी–एवं खलु अहं सक्कवयणसंदेसेणं सुट्ठिएणं लवणाहिवइणा जाव वावत्ती भविस्सइ, तं सेयं खलु अम्हं देवाणुप्पिया ! पुरच्छिमिल्ले वणसंडं गमित्तए, अण्णमण्णस्स एयमट्ठं पडिसुणेंति २ जेणेव पुरच्छिमिल्ले वणसंडे तेणेव उवागच्छंति २ तत्थ णं वावीसु य जाव अभिरममाणा आलीघरएसु य जाव विहरंति १ । तते णं ते मागंदियदारया तत्थवि सइं वा जाव अलभमाणा जेणेव उत्तरिल्ले वणसंडे तेणेव उवागच्छंति २ तत्थ णं वाविसु य जाव जालीघरएसु य विहरंति २ । तते णं ते मागंदियदारया तत्थवि सतिं वा जाव अलभमाणा जेणेव पच्चत्थिमिल्ले वणसंडे तेणेव उवागच्छंति २ जाव विहरंति ३ । तते णं ते मागंदियदारया तत्थवि सतिं वा जाव अलभमाणा अण्णमण्णं एवं वदासी–एवं खलु देवाणुप्पिया ! अम्हे रयणदीवदेवया एवं वदासी–एवं खलु अहं देवाणुप्पिया ! सक्कस्स वयणसंदेसेणं सुट्ठिएण लवणाहिवइणा जाव मा णं तुब्भं सरीरगस्स वावत्ती भविस्सति तं भवियव्वं एत्थ कारणेणं, तं सेयं खलु अम्हं दक्खिणिल्लं वणसंडं गमित्तएत्तिकट्टु अण्णमण्णस्स एतमट्ठं पडिसुणेंति २ जेणेव दक्खिणिल्ले वणसंडे तेणेव पहारेत्थ गमणाए ४ । तते णं गंधे निद्धाति से जहा नामए अहिमडेति वा जाव अणिट्ठतराए चेव, तते णं ते मागंदियदारया तेणं असुभेणं गंधेणं अभिभूया समाणा सएहिं २ उत्तरिज्जेहिं आसातिं पिहेंति २ जेणेव दक्खिणिल्ले वणसंडे तेणेव उवागया तत्थ णं महं एगं आघा(य)तणं पासंति २ अट्ठिय-रासि-सतसंकुलं भीम-दरिसणिज्जं एगं च तत्थ सूलाइतयं पुरिसं

कलुणाति विस्सराति कट्ठाति कुव्वमाणं पासंति २ भीता जाव संजातभया जेणेव से सूलातियपुरिसे तेणेव उवागच्छंति २ तं सूलाइयं एवं वदासी—एस णं देवाणुप्पिया ! कस्साघयणे तुमं च णं के कओ वा इहं हव्वमागए केण वा इमेयारूवं आवतिं पाविए ? ५ । तते णं से सूलातियए पुरिसे मागंदियदारए एवं वदासी—एस णं देवाणुप्पिया ! रयणदीवदेवयाए आघयणे अहण्णं देवाणुप्पिया ! जंबुद्दीवाओ दीवाओ भारहाओ वासाओ कागंदीए आसवाणियए विपुलं पणिय-भंडमायाए पोतवहणेणं लवणसमुद्दं ओयाए, तते णं अहं पोयवहण-विवत्तीए निब्बुड्ड-भंडसारे एगं फलगखंडं आसाएमि, तते णं अहं उवुज्झमाणे २ रयणदीवंतेणं संवूढे, तते णं सा रयणदीवदेवया ममं ओहिणा पासइ २ ममं गेण्हइ २ मए सद्धिं विपुलाति भोगभोगाति भुंजमाणी विहरति, तते णं सा रयणदीवदेवया अण्णदा कयाई अहाल-हुसगंसि अवराहंसि परिकुविया समाणी ममं एतारूवं आवतिं पावेइ, तं ण णज्जति णं देवाणुप्पिया ! तुम्हंपि इमेसिं सरीरगाणं का मण्णे आवती भविस्सइ ? ६ । तते णं ते मागंदियदारया तस्स सूलाइयगस्स अंतिए एयमत्थं सोच्चा णिसम्म बलियतरं भीया जाव संजायभया सूलाइतयं पुरिसं एवं वयासी—कहण्णं देवाणुप्पिया ! अम्हे रतणदीवदेवयाए हत्थाओ साहत्थिं णित्थरिज्जामो ? ७ । तते णं से सूलाइयए पुरिसे ते मागंदियदारए एवं वदासी—एस णं देवाणुप्पिया ! पुरच्छिमिल्ले वणसंडे सेलगस्स जक्खस्स जक्खाययणे सेलए नामं आसरूवधारी जक्खे परिवसति, तए णं सेलए जक्खे चोद्दसट्ठ-मुद्दिट्ठ-पुण्णमासिणीसु आगयसमए पत्तसमये महया २ सद्देणं एवं वदति—कं तारयामि कं पालयामि ?, तं गच्छह णं तुब्भे देवाणु-प्पिया ! पुरच्छिमिल्लं वणसंडं सेलगस्स जक्खस्स महरिहं पुप्फच्चणियं करेह २ जण्णुपायवडिया पंजलिउडा विणएणं पज्जुवासमाणा चिट्ठह, जाहे णं से सेलए जक्खे आगतसमए पत्तसमए एवं वदेज्जा—कं तारयामि कं

पालयामि ?, ताहे तुब्भे वदह—अम्हे तारयाहि अम्हे पालयाहि, सेलए मे जक्खे परं रयणदीवदेवयाए हत्थाओ साहत्थिं णित्थारेज्जा, मे न याणामि इमेसिं सरीरगाणं का मण्णे आवई भविस्सइ ? ८ ॥ सूत्रं ८१ ॥ तते णं ते मागंदियदारया तस्स सूलाइयस्स अंतिए एयमट्ठं सोच्चा निसम्म सिग्घं चंडं चवलं तुरियं चेइयं जेणेव पुरच्छिमिल्ले वणसंडे जेणेव पोक्खरिणी तेणेव उवागच्छंति २ पोक्खरिणिं गाहंति २ जलमज्जणं करेन्ति २ जाइं तत्थ उप्पलाइं जाव गेण्हंति २ जेणेव सेलगस्स जक्खस्स जक्खाययणे तेणेव उवागच्छंति २ आलोए पणामं करेंति २ महरिहं पुप्फच्चणियं करेंति २ जण्णुपायवडिया सुस्सूसमाणा णमंसमाणा पज्जुवासंति १। तते णं से सेलए जक्खे आगतसमए पत्तसमए एवं वदासी—कं तारयामि कं पालयामि ?, तते णं ते मागंदियदारया उट्ठाए उट्ठेंति करयल जाव एवं वयासी—अम्हे तारयाहि अम्हे पालयाहि २। तए णं से सेलए जक्खे ते मागंदियदारया एवं वयासी—एवं खलु देवाणुप्पिया ! तुब्भं मए सद्धिं लवणसमुद्देणं मज्झं मज्झं २ वीइवयमाणेणं सा रयणदीवदेवया पावा चंडा रुद्दा खुद्दा साहसिया बहूहिं खरएहि य मउएहि य अणुलोमेहि य पडि-लोमेहि य सिंगारेहि य कलुणेहि य उवसग्गेहि य उवसग्गं करेहिति, तं जति णं तुब्भे देवाणुप्पिया ! रयणदीवदेवयाए एतमट्ठं आढाह वा परियाणह वा अवयेक्खह वा तो भे अहं पिट्ठातो विधुणामि, अह णं तुब्भे रयणदीवदेवयाए एतमट्ठं णो आढाह णो परियाणह णो अवे(अवय)क्खह तो भे रयणदीव-देवया-हत्थातो साहत्थिं णित्थारेमि ३। तए णं ते मागं-दियदारया सेलगं जक्खं एवं वदासी—जण्णं देवाणुप्पिया ! वइस्संति तस्स णं उववाय-वयणणिद्देसे चिट्ठिस्सामो ४। तते णं से सेलए जक्खे उत्तर-पुरच्छिमं दिसीभागं अवक्कमति २ वेउव्विय-समुग्घाएणं समोहणति २ संखेज्जातिं जोयणाइं दंडं निस्सरइ दोच्चंपि तच्चंपि वेउव्वियसमुग्घाएणं

समोहणति २ एगं महं आसरूवं विउव्वइ २ ते मागंदियदारए एवं वदासी--हं भो मागंदिया ! आरुह णं देवाणुप्पिया ! मम पिट्ठंसि ५ । तते णं ते मागंदियदारया हट्ठतुट्ठे सेलगस्स जक्खस्स पणामं करेंति २ सेलगस्स पिट्ठिं दुरूढा, तते णं से सेलए ते मागंदियदारया दुरूढे जाणित्ता सत्तट्ठ-तालप्पमाणमेत्ताति उड्ढं वेहासं उप्पयति, उप्पइत्ता य ताए उक्किट्ठाए तुरियाए देवयाए लवणसमुद्दं मज्झंमज्झेणं जेणेव जंबुद्दीवे दीवे जेणेव भारहे जेणेव चंपा नयरी तेणेव पहारेत्थ गमणाए ६ ॥ सूत्रं १० ॥ तते णं सा रयणदीवदेवया लवणसमुद्दं तिसत्तखुत्तो अणुपरियट्टति जं तत्थ तणं वा जाव एडेति, जेणेव पासायवडेंसए तेणेव उवागच्छति २ ते मागंदिया पासायवडिंसए अपासमाणी जेणेव पुरच्छिमिल्ले वणसंडे जाव सव्वतो समंता मग्गणगवेसणं करेति २ तेसिं मायंदियदारगाणं कत्थइ सुतिं वा ३ अलभमाणी जेणेव उत्तरिल्ले एवं चेव पच्चत्थिमिल्लेवि जाव अपासमाणी ओहिं पउंजति, ते मागंदियदारए सेलएणं सद्धिं लवणसमुद्दं मज्झंमज्झेणं वीइवयमाणे २ पासति २ आसुरुत्ता असिखेडगं गेण्हति २ सत्तट्ठ जाव उप्पयति २ ताए उक्किट्ठाए जेणेव मागंदियदारया तेणेव उवागच्छति २ एवं वदासी--हं भो मागंदियदारया ! अप्पत्थियपत्थिया ! किणणं तुब्भे जाणह ममं विप्पजहाय सेलएणं जक्खेणं सद्धिं लवणसमुद्दं मज्झंमज्झेणं वीतीवयमाणा ?, तं एवमवि गए जइ णं तुब्भे ममं अवयक्खह तो भे अत्थि जीवियं, अहण्णं णावयक्खह तो भे इमेणं नीलुप्पल-गवल जाव एडेमि १ । तते णं ते मागंदियदारया रयणदीवदेवयाए अंतिए एयमट्ठं सोच्चा णिसम्म अभीया अतत्था अणुव्विग्गा अक्खुभिया असंभंता रयणदीवदेवयाए एयमट्ठं नो आढंति नो परियाणंति णो अवयक्खंति, अणाढायमाणा अपरिजाणमाणा अणवयक्खमाणा सेलएण जक्खेण सद्धिं लवणसमुद्दं मज्झंमज्झेणं वीतिवयंति २ । तते णं सा रयणदीवदेवया

ते मागंदिया जाहे नो संचाएति बहूहिं पडिलोमेहि य उवसग्गेहिं य चालित्तए वा खोभित्तए वा विप्परिणामित्तए वा लोभित्तए वा ताहे महुरेहिं सिंगारेहि य कलुणेहि य उवसग्गेहि य उवसग्गेउं पयत्ता यावि होत्था, हं भो मागंदियदारगा ! जति णं तुब्भेहिं देवाणुप्पिया ! मए सद्धिं हसियाणि य रमियाणि य ललियाणि य कीलियाणि य हिंडियाणि य मोहियाणि य ताहे णं तुब्भे सव्वाति अगणेमाणा ममं विप्पजहाय सेलएणं सद्धिं लवणसमुद्दं मज्झंमज्झेणं वीइवयह ३ । तते णं सा रयणदीवदेवया जिणरक्खियस्स मणं ओहिणा आभोएति आभोएत्ता एवं वदासी—णिच्चंऽपिय णं अहं जिणपालियस्स अणिट्ठा ५ निच्चं मम जिणपालिए अणिट्ठे ५ निच्चंपिय णं अहं जिणरक्खियस्स इट्ठा ५ निच्चंपिय णं ममं जिणरक्खिए इट्ठे ५, जति णं ममं जिणपालिए रोयमाणीं कंदमाणीं सोयमाणीं तिप्पमाणीं विलवमाणीं णावयक्खति किण्णं तुमं जिणरक्खिया ! ममं रोयमाणिं जाव णावयक्खसि ?, तते णं—'सा पवररयणदीवस्स देवया ओहिणा उ जिणरक्खियस्स मणं । नाऊण वधनिमित्तं उवरि मागंदियदारगाणं दोण्हंपि ॥ १ ॥ दोसकलिया सललियं णाणाविहचुण्णवासमीसं(सियं) दिव्वं । घाणमण-निव्वुइकरं सव्वोउय-सुरभि-कुसुमवुट्ठिं पमुंचमाणी ॥ २ ॥ णाणा-मणि-कणग-रयण-घंटिय-खिंखिणि-णेऊर-मेहल-भूसणरवेणं । दिसाओ विदिसाओ पूरयंती वयणमिणं बेति सा सकलुसा ॥ ३ ॥ होल वसुल गोल णाह दइत पिय रमण कंत सामिय णिग्घिण णित्थक्क । छि(थि)ण्ण णिक्किव अकयण्णुय सिढिलभाव निल्लज्ज लुक्ख अकलुण जिणरक्खिय मज्झं हिययरक्खगा ! ॥ ४ ॥ णहु जुज्जसि एक्कियं अणाहं अबंधवं तुज्झ चलण-ओवाय-कारियं उज्झिउं महण्णं । गुणसंकर ! अहं तुमे विहूणा ण समत्थावि जीविउं खणंपि ॥ ५ ॥ इमस्स उ अणेग-झस-मगर-विविध-सावय-सयाउलघरस्स । रयणागरस्स मज्झे अप्पाणं वहेमि तुज्झ पुरओ एहि

णियत्ताहि जइसि कुविश्रो खमाहि एकावराहं मे ॥ ६ ॥ तुज्झ य विगय-घण-विमल-ससिमंडलगार(लोवम)सस्सिरीयं सारय-नवकमल-कुमुद-कुवलय (कुमुद-विमउल-विगसिय)विमलदलनिकर-सरिसनिभं । नयणं वयणं पिवासागयाए सद्धा मे पेच्छिउं जे अवलोएहि ता इओ ममं णाह जा ते पेच्छामि वयणकमलं ॥ ७ ॥ एवं सप्पणय-सरल-महुराति पुणो २ कलुणाइं वयणाति जंपमाणी सा पावा मग्गओ समण्णेइ पावहियया ॥ ८ ॥ ३ । ततेणं से जिणरक्खिए चलमणे तेणेव भूसणरवेणं कण्णसुह-मणोहरेणं तेहि य सप्पणय-सरल-महुरभणिएहिं संजाय-विउणराए रयणदीवस्स देवयाए तीसे सुंदरथण-जहण-वयण-कर-चरण-नयण-लावन्न-रूव-जोव्वणसिरिं च दिव्वं सरभसउवगूहियाइं जाति विब्बोय-विलसियाणि य विहसिय-सकडक्ख-दिट्ठि-निस्ससिय-मलि(णि)य-उवललिय-ठियगमण-पणय-खिज्जिय-पासादीयाणि य सरमाणे रागमोहियमई अवसे कम्मवसगए (कमवेगनडिए) अवयक्खति मग्गतो सविलियं ४ । तते णं जिणरक्खियं समुप्पन्न-कलुणभावं मच्चुगलत्थल्लणोल्लियमइं अवयक्खंतं तहेव जक्खे य सेलए जाणिऊण सणियं २ उव्विहति (तहेव सणियं) नियगपिट्ठाहिं विगयसत्थं (सड्ढं, सड्ढं) ५ । तते णं सा रयणदीवदेवया निस्संसा कलुणं जिणरक्खियं सकलुसा सेलगपिट्ठाहिं उवयंतं दास ! मओसित्ति जंपमाणी अप्पत्तं सागरसलिलं गेण्हिय बाहाहिं आरसंतं उड्ढं उव्विहति, अंबरतले ओवयमाणं च मंडलग्गेण पडिच्छित्ता नीलुप्पल-गवल-अयसिप्पगासेण असिवरेणं खंडाखंडि करेति २ तत्थ विलवमाणं तस्स य सरसवहियस्स घेत्तूण अंगमंगाति सरुहिराइं उक्खित्तबलिं चउद्दिसिं करेति सा पंजली पहिट्ठा ६ ॥ सूत्रं ११ ॥ एवामेव समणाउसो ! जो अम्हं निग्गंथाण वा २ अंतिए पव्वतिए समाणे पुणरवि माणुस्सए कामभोगे आसायति पत्थयति पीहेति अभिलसति से णं इह भवे चेव बहूणं समणाणं ४ जाव संसारं अणुपरियट्टिस्सति, जहा

वा से जिणरक्खिए–'छलओ अवयक्खंतो निरावयक्खो गओ अविग्घेणं। तम्हा पवयणसारे निरावयक्खेण भवियव्वं ॥ १ ॥ भोगे अवयक्खंता पडंति संसारसायरे घोरे। भोगेहिं निरवयक्खा तरंति संसारकंतारं ॥ २ ॥ सूत्रं १२ ॥ तते णं सा रयणद्दीवदेवया जेणेव जिणपालिए तेणेव उवागच्छति बहूहिं अणुलोमेहि य पडिलोमेहि य खरमहुर-सिंगारेहिं कलुणेहि य उवसग्गेहि य जाहे नो संचाएइ चालित्तए वा खोभित्तए वा विप्परिणामित्तए वा ताहे संता तंता परितंता निव्विण्णा समाणा जामेव दिसिं पाउब्भूया तामेव दिसिं पडिगया १। तते णं से सेलए जक्खे जिण-पालिएण सद्धिं लवणसमुद्दं मज्झंमज्झेणं वीतीवयति २ जेणेव चंपानयरी तेणेव उवागच्छति २ चंपाए नयरीए अग्गुज्जाणंसि जिणपालियं पट्ठातो ओयारेति २ एवं वयासी–एस णं देवाणुप्पिया! चंपानयरी दीसतित्ति-कट्टु जिणपालियं आपुच्छति २ जामेव दिसिं पाउब्भूए तामेव दिसिं पडिगए २ ॥ सूत्रं १३ ॥ तते णं जिलपालिए चंपं अणुपविसति २ जेणेव सए गिहे जेणेव अम्मापियरो तेणेव उवागच्छइ २ अम्मापिऊणं रोयमाणे जाव विलवमाणे जिणरक्खियवावत्तिं निवेदेति, तते णं जिण-पालिए अम्मापियरो मित्तणाति जाव परियणेणं सद्धिं रोयमाणाति बहूई लोइयाइं मयकिच्चाई करेति २ कालेणं विगतसोया जाया, तते णं जिणपालियं अन्नया कयाइ सुहासणवरगतं अम्मापियरो एवं वदासी–कहण्णं पुत्ता! जिणरक्खिए कालगए? ३। तते णं से जिणपालिए अम्मापिऊणं लवणसमुद्दोत्तारं च कालियवाय-समुत्थणं पोतवहणविवत्तिं च फलह-खंड-आसातणं च रयणदीवुत्तारं च रयणदीवदेवयागिहं च भोगविभूइं च रयणदीवदेवया अप्पाहणं च सूलाइय-पुरिस-दरिसणं च सेलग-जक्ख-आरुहणं च रयणदीवदेवयाउवसग्गं च जिणरक्खियविवत्तिं च लवणसमुद्द-उत्तरणं च चंपागमणं च सेलग-जक्ख-आपुच्छणं च जहाभूय-

मवितह-मसंदिद्धं परिकहेति, तते णं जिणपालिए जाव अप्पसोगे जाव विपुलातिं भोगभोगाइं भुंजमाणे विहरति ४ ॥ सूत्रं १४ ॥ तते कालेणं २ समणे भगवं महावीरे समोसढे, धम्मं सोचा पव्वतिए एकारसंगवी मासिएणं सोहम्मे कप्पे दो सागरोवमे, महाविदेहे सिज्झिहिति । एवामेव समणाउसो ! जाव माणुस्सए कामभोए णो पुणरवि आसाति से णं जाव वीतिवतिस्सति जहा वा से जिणपालिए । एवं खलु जंबू ! समणेणं भगवया महावीरेणं नवमस्स नायज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्तेत्तिबेमि ॥ सूत्रं १५ ॥ नवमं अज्झयणं समत्तं ॥

॥ इति नवममध्ययनम् ॥ ९ ॥

॥१०॥ अथ श्रीचन्द्राख्यं दशममध्ययनम् ॥

जति णं भंते ! समणेणं भगवया महावीरेणं जाव संपत्तेणं णवमस्स णायज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते, दसमस्स णं भंते ! नायज्झयणस्स समणेणं जाव संपत्तेणं के अट्ठे पन्नत्ते ?, एवं खलु जंबू ! तेणं कालेणं २ रायगिहे नगरे सामी समोसढे गोयमसामी एवं वदासी—कहणणं भंते ! जीवा वड्ढंति वा हायन्ति वा ?, गोयमा ! से जहा नामए बहुलपक्खस्स पाडिवयाचंदे पुण्णिमाचंदं पणिहाय हीणे वण्णेणं हीणे सोम्मयाए हीणे निद्धयाए हीणे कंतीए एवं दित्तीए जुत्तीए छायाए पभाए ओयाए लेस्साए मंडलेणं तयाणंतरं च णं बीयाचंदे पाडिवयं चंदं पणिहाय हीणतराए वण्णेणं जाव मंडलेणं तयाणंतरं च णं ततिआचंदे बितियाचंदं पणिहाय हीणतराए वण्णेणं जाव मंडलेणं, एवं खलु एएणं कमेणं परिहायमाणे २ जाव अमावस्साचंदे चाउद्दसिचंदं पणिहाय नट्ठे वण्णेणं जाव नट्ठे मंडलेणं १ । एवामेव समणाउसो ! जो अम्हं निग्गंथो वा निग्गंथी वा जाव पव्वइए समाणे हीणे खंतीए एवं मुत्तीए गुत्तीए अज्जवेणं मद्दवेणं लाघवेणं सच्चेणं तवेणं

चियाए अकिंचणयाए बंभचेरवासेणं, तयाणंतरं च णं हीणे हीणतराए खंतीए जाव हीणतराए बंभचेरवासेणं, एवं खलु एएणं कमेणं परिहायमाणे २ णट्ठे खंतीए जाव णट्ठे बंभचेरवासेणं २। से जहा वा सुक्कपक्खस्स पाडिवयाचंदे अमावासाए चंदं पणिहाय अहिए वण्णेणं जाव अहिए मंडलेणं तयाणंतरं च णं बिइयाचंदे पडिवयाचंदं पणिहाय अहिययराए वण्णेणं जाव अहियतराए मंडलेणं एवं खलु एएणं कमेणं परिवुड्ढेमाणे २ जाव पुण्णिमाचंदे चाउद्दसिं चंदं पणिहाय पडिपुण्णे वण्णेणं जाव पडिपुण्णे मंडलेणं ३। एवामेव समणाउसो! जाव पव्वतिए समाणे अहिए खंतीए जाव बंभचेरवासेणं, तयाणंतरं च णं अहिययराए खंतीए जाव बंभचेरवासेणं ४। एवं खलु एएणं कमेणं परिवड्ढेमाणे २ जाव पडिपुन्ने बंभचेरवासेणं, एवं खलु जीवा वड्ढंति वा हायंति वा, एवं खलु जंबू! समणेणं भगवता महावीरेणं दसमस्स णायज्झयणस्स अयमट्ठे *पण्णत्तेत्तिबेमि ५ ॥ सूत्रं १६ ॥ दसमं णायज्झयणं समत्तं ॥*

॥ इति दशममध्ययनम् ॥ १० ॥

॥११॥ अथ श्रीदावद्रवाख्य-मेकादशममध्ययनम् ॥

जति णं भंते! समणेणं भगवया महावीरेणं जाव संपत्तेणं दसमस्स नायज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते एक्कारसमस्स णं भंते! नायज्झयणस्स समणेणं भगवया महावीरेणं जाव संपत्तेणं के अट्ठे पन्नत्ते?, एवं खलु जंबू! तेणं कालेणं २ रायगिहे गोयमे एवं वदासी– कह णं भंते! जीवा आराहगा वा विराहगा वा भवंति?, गोयमा! से जहा णामए एगंसि समुद्दकूलंसि दावद्दवा नामं रुक्खा पण्णत्ता किण्हा जाव निउरुंबभूया पत्तिया पुप्फिया फलिया हरियगरेरिज्जमाणा सिरीए अतीव उवसोभेमाणा २ चिट्ठंति १। जया णं दीविच्चगा ईसिं पुरेवाया पच्छावाया मंदावाया महा-

वाया वायंति तदा णं बहवे दावद्दवा रुक्खा पत्तिया जाव चिट्ठंति अप्पेगतिया दावद्दवा रुक्खा जुन्ना झोडा परिसडियपंडुपत्तपुप्फफला सुक्करुक्खओ विव मिलायमाणा २ चिट्ठंति, एवामेव समणाउसो! जे अम्हं निग्गंथो वा निग्गंथी वा जाव पव्वतिते समाणे बहूणं समणाणं ४ सम्मं सहति जाव अहियासेति बहूणं अणणउत्थियाणं बहूणं गिहत्थाणं नो सम्मं सहति जाव नो अहिया-सेति एस णं मए पुरिसे देसविराहए पणत्ते समणाउसो! २। जया णं सामुद्दगा ईसिं पुरेवाया पच्छावाया मंदावाया महावाता वायंति तदा णं बहवे दावद्दवा रुक्खा जुण्णा झोडा जाव मिलायमाणा २ चिट्ठंति, अप्पेगइया दावद्दवा रुक्खा पत्तिया पुप्फिया जाव उवसोभेमाणा २ चिट्ठंति, एवामेवसमणाउसो! जो अम्हं निग्गंथो वा निग्गंथी वा पव्वतिए समाणे बहूणं अणणउत्थियाणं बहूणं गिहत्थाणं सम्मं सहति बहूणं समणाणं ४ नो सम्मं सहति एस णं मए पुरिसे देसाराहए पन्नत्ते समणाउसो! ३। जया णं नो दीविच्चगा णो सामुद्दगा ईसिं पुरेवाया पच्छावाया जाव महावाया तते णं सव्वे दावद्दवा रुक्खा जुण्णा झोडा जाव मिलायमाणा २ चिट्ठंति, अप्पेगइया दावद्दवा रुक्खा पत्तिया पुप्फिया जाव उवसोभेमाणा २ चिट्ठंति, एवामेव समणाउसो! जाव पव्वतिए समाणे बहूणं समणाणं २ बहूणं अन्नउत्थियगिहत्थाणं नो सम्मं सहति एस णं मए पुरिसे सव्वविराहए पणत्ते समणाउसो!, जया णं दीविच्चगावि सामुद्दगावि ईसिं पुरेवाया पच्छावाया जाव वायंति तदा णं सव्वे दावद्दवा रुक्खा पत्तिया जाव चिट्ठंति, एवामेव समणाउसो! जे अम्हं पव्वतिए समाणे बहूणं समणाणं बहूणं अन्नउत्थियगिहत्थाणं सम्मं सहति एस णं मए पुरिसे सव्वाराहए पन्नत्ते! एवं खलु गोयमा! जीवा आराहगा वा विराहगा वा भवंति, एवं खलु जंबू! समणेणं भगवया एकार-समस्स अयमट्ठे पणत्तेत्तिबेमि ४॥ सूत्रं १७॥ एकारसमं नायज्झयणं समत्तं॥

॥ इति एकादशममध्ययनम् ॥ ११ ॥

॥१२॥ अथ श्री उदकाख्यं द्वादशममध्ययनम् ॥

जति णं भंते ! समणेणं जाव संपत्तेणं एक्कारसमस्स नायज्झयणस्स अयमट्ठे पन्नत्ते, बारसमस्स णं भंते ! नायज्झयणस्स समणेणं जाव सपत्तेणं के अट्ठे पन्नत्ते ?, एवं खलु जंबू ! तेणं कालेणं २ चंपा नाम नयरी पुण्ण-भद्दे, जितसत्तू राया धारिणी देवी, अदीणसत्तू नामं कुमारे जुवराया यावि होत्था, सुबुद्धी अमच्चे जाव रज्जधुराचिंतए समणोवासए १। तीसे णं चंपाए णयरीए बहिया उत्तरपुरच्छिमेणं एगे परिहोदए यावि होत्था, मेय-वसा-मंस-रुहिर-पूय-पडल-पोच्चडे मयग-कलेवर-संछण्णे अमणुण्णे वण्णेणं जाव फासेणं २। से जहा नामए अहिमडेति वा गोमडेति वा जाव मय-कुहिय-विणट्ठ-किमिणवावण्ण-दुरभिगंधे किमिजालाउले संसत्ते असुइ-विगय-बीभत्थ-दरिसणिज्जे, भवेयारूवे सिया ?, णो इणट्ठे समट्ठे, एत्तो अणिट्ठतराए चेव जाव गंधेणं पण्णत्ते ३॥ सूत्रं ९८॥ तते णं से जितसत्तू राया अण्णदा कदाइ ण्हाए कयबलिकम्मे जाव अप्प-महग्घाभर-णालंकिय-सरीरे बहूहिं राईसर जाव सत्थवाहपभितिहिं सद्धिं भोयणवेलाए सुहासणवरगए विपुलं असणं ४ जाव विहरति, जिमित-भुत्तुत्तरायए जाव सुइभूते तंसि विपुलंसि असण-पाण-खाइम-साइमंसि जाव जायविम्हए ते बहवे ईसर जाव पभितीए एवं वयासी—अहो णं देवाणुप्पिया ! इमे मणुण्णे असणे ४ वण्णेणं उववेए जाव फासेणं उववेते अस्सायणिज्जे विस्सायणिज्जे पीणणिज्जे दीवणिज्जे दप्पणिज्जे मयणिज्जे बिंहणिज्जे सव्विंदिय-गाय-पल्हायणिज्जे १। तते णं ते बहवे ईसर जाव पभियओ जितसत्तुं एवं वयासी—तहेव णं सामी ! जण्णं तुब्भे वदह अहो णं इमे मणुण्णे असणं ४ वण्णेणं उववेए जाव पल्हायणिज्जे, तते णं जितसत्तू सुबुद्धिं अमच्चं एवं वयासी—अहो णं सुबुद्धी ! इमे मणुण्णे असणे ४ जाव पल्हायणिज्जे तए णं सुबुद्धी जितसत्तुस्सेयमट्ठं नो आढाइ जाव तुसिणीए संचिट्ठति

२। तते णं जितसत्तुणा सुबुद्धी दोच्चंपि तच्चंपि एवं वुत्ते समाणे जितसत्तुं रायं एवं वदासी—नो खलु सामी ! अहं एयंसि मणुणंसि असण-पाण-खाइम-साइमंसि केइ विम्हए, एवं खलु सामी ! सुब्भिसद्दावि पुग्गला दुब्भिसद्दत्ताए परिणमंति, दुब्भिसद्दावि पोग्गला सुब्भिसद्दत्ताए परिणमंति, सुरूवावि पोग्गला दुरूवत्ताए परिणमंति दुरूवावि पोग्गला सुरूवत्ताए परिणमंति, सुब्भिगंधावि पोग्गला दुब्भिगंधत्ताए परिणमंति दुब्भिगंधावि पोग्गला सुब्भिगंधत्ताए परिणमंति, सुरसावि पोग्गला दुरसत्ताए परिणमंति दुरसावि पोग्गला सुरसत्ताए परिणमंति, सुहफासावि पोग्गला दुहफासत्ताए परिणमंति दुहफासावि पोग्गला सुहफासत्ताए परिणमंति पओग-वीससा-परिणयावि य णं सामी ! पोग्गला पण्णत्ता ३। तते णं से जितसत्तू सुबुद्धिस्स अमच्चस्स एवमातिक्खमाणस्स ४। एयमट्ठं नो आढाति नो परियाणाई तुसिणीए संचिट्ठइ ४। तए णं से जितसत्तू अण्णदा कदाई ण्हाए आसखंध-वरगते महया भड-चडग-रहआस-वाहणियाए निज्जायमाणे तस्स फरिहोदगस्स अदूरसामंतेणं वीतीवयइ ५। तते णं जितसत्तू तस्स फरिहोदगस्स असुभेणं गंधेणं अभिभूते समाणे सएणं उत्तरिज्जगेणं आसगं पिहेइ, एगंतं अवक्कमति, ते बहवे ईसर जाव पभितिओ एवं वदासी—अहो णं देवाणुप्पिया ! इमे फरिहोदए ! अमणुण्णे वण्णेणं ४ से जहा नामए अहिमडेति वा जाव अमणामतराए चेव ५। तए णं ते बहवे राईसरपभिइ जाव एवं वयासी—तहेव णं तं सामी ! जंणं तुब्भे एवं वयह, अहो णं इमे फरिहोदए अमणुण्णे वण्णेणं ४ से जहा णामए अहिमडे इ वा जाव अमणामतराए चेव ६। तए णं से जियसत्तू सुबुद्धिं अमच्चं एवं वदासी—अहो णं सुबुद्धी ! इमे फरिहोदए अमणुण्णे वण्णेणं से जहा नामए अहिमडेइ वा जाव अमणामतराए चेव, तए णं सुबुद्धी अमच्चे जाव तुसिणीए संचिट्ठइ ७। तए णं से जियसत्तू राया सुबुद्धिं अमच्चं दोच्चंपि तच्चंपि एवं वयासी—अहो

णं तं चेव, तए णं से सुबुद्धी अमच्चे जियसत्तुणा रन्ना दोच्चंपि तच्चंपि एवं वुत्ते समाणे एवं वयासी—नो खलु सामी ! अम्हं एयंसि फरिहोदगंसि केइ विम्हए, एवं खलु सामी ! सुब्भिसद्दावि पोग्गला दुब्भिसद्दत्ताए परिणमंति, तं चेव जाव पओग वीससा-परिणयावि य णं सामी ! पोग्गला पण्णत्ता ८ । तते णं जितसत्तू सुबुद्धिं एवं चेव, मा णं तुमं देवाणुप्पिया ! अप्पाणं च परं च तदुभयं वा बहूहि य असब्भावुब्भावणाहिं मिच्छत्ताभिणिवेसेण य वुग्गाहेमाणे वुप्पाएमाणे विहराहि ९ । तते णं सुबुद्धिस्स इमेयारूवे अब्भत्थिए ५ समुप्पज्जित्था—अहो णं जितसत्तू संते तच्चे तहिए अवितहे सब्भूते जिणपण्णत्ते भावे णो उवलभति, तं सेयं खलु मम जितसत्तुस्स रण्णो संताणं तच्चाणं तहियाणं अवितहाणं सब्भूताणं जिणपण्णत्ताणं भावाणं अभिगमणट्ठयाए एयमट्ठं उवाइणावेत्तए १० । एवं संपेहेति २ पच्चतिएहिं पुरिसेहिं सद्धिं अंतरावणाओ नवए घडयपडए पगेण्हति २ संझाकाल-समयंसि पविरलमणुस्संसि णिसंत-पडिनिसंतंसि जेणेव फरिहोदए तेणेव उवागए २ तं फरिहोदगं गेण्हावेति २ नवएसु घडएसु गालावेति २ नवएसु घडएसु पक्खिवावेति २ सज्जक्खारं पक्खिवावेइ २ लंछियमुद्दिते करावेति २ सत्तरत्तं परिवसावेति २ दोच्चंपि नवएसु घडएसु गालावेति नवएसु घडएसु पक्खिवावेति २ सज्जक्खारं पक्खिवावेइ लंछियमुद्दिते कारवेति २ सत्तरत्तं परिवसावेति २ तच्चंपि णवएसु घडएसु जाव संवसावेति, एवं खलु एएणं उवाएणं अंतरा गलावेमाणे अंतरा पक्खिवावेमाणे अंतरा य विपरिवसावेमाणे २ सत्त २ रातिंदिया विपरिवसावेति ११ । तते णं से फरिहोदए सत्तमसत्तयंसि परिणममाणंसि उदगरयणे जाए यावि होत्था अच्छे पत्थे जच्चे तणुए फलिहवण्णाभे वण्णेणं उववेते ४ आसायणिज्जे जाव सव्विंदिय-गाय-पल्हायणिज्जे १२ । तते णं सुबुद्धी अमच्चे जेणेव से उदगरयणे तेणेव उवागच्छति २ करय-

लंसि आसादेति २ तं उदगरयणं वएणोणं उववेयं ४ आसायणिज्जं जाव सव्विंदिय-गाय-पल्हायणिइज्जं जाणित्ता हट्ठतुट्ठे बहूहिं उदगसंभारणिज्जेहिं संभारेति २ जितसत्तुस्स रएणो पाणियघरियं सद्दावेति २ एवं वयासी–तुमं च णं देवाणुप्पिया ! इमं उदगरयणं गेणहाहि २ जितसत्तुस्स रन्नो भोयणवेलाए उवणेज्जासि १३। तते णं से पाणियघरिए सुबुद्धियस्स एतमट्ठं पडिसुणेति २ तं उदगरयणं गिणहाति २ जितसत्तुस्स रएणो भोयणवेलाए उवट्ठवेति, तते णं से जितसत्तू राया तं विपुलं असणं ४ आसाएमाणे वीसाएमाणे जाव विहरइ १४। जिमियभुत्तुत्तरायएवि य णं जाव परमसुइभूए तंसि उदगरयणे जायविम्हए ते बहवे राईसर जाव एवं वयासी–अहो णं देवाणुप्पिया ! इमे उदगरयणे अच्छे जाव सव्विंदियगाय-पल्हायणिज्जे, तते णं बहवे राईसर जाय एवं वयासी–तहेव णं सामी ! जणणं तुब्भे वदह जाव एवं चेव पल्हायणिज्जे १५। तते णं जितसत्तू राया पाणियघरियं सद्दावेति २ एवं वयासी–एस णं तुब्भे देवाणुप्पिया ! उदगरयणे कओ आसादिते ?, तते णं से पाणियघरिए जितसत्तुं एवं वदासी–एस णं सामी ! मए उदगरयणे सुबुद्धिस्स अंतियाओ आसादित्ते १६। तते णं जितसत्तू सुबुद्धिं अमच्चं सद्दावति २ एवं वयासी–अहो णं सुबुद्धी केणं कारणेणं अहं तव अणिट्ठे ५ जेणं तुमं मम कल्लाकल्लिं भोयणवेलाए इमं उदगरयणं न उवट्ठवेसि ?, तए णं (तं एस णं) तुमे देवाणुप्पिया ! उदगरयणे कओ उवलद्धे ?, तते णं सुबुद्धी जितसत्तुं एवं वयासी–एस णं सामी ! से फरिहोदए १७। तते णं से जितसत्तू सुबुद्धिं एवं वयासी–केणं कारणेणं सुबुद्धी ! एस से फरिहोदए ?, तते णं सुबुद्धी जितसत्तुं एवं वयासी–एवं खलु सामी ! तुम्हे तया मम एवमातिक्खमाणस्स ४ एतमट्ठं नो सद्दहह तते णं मम इमेयारूवे अब्भत्थिते ६ अहो णं जितसत्तू संते जाव भावे

नो सद्दहति नो पत्तियति नो रोएती तं सेयं खलु ममं जियसत्तुस्स रन्नो संताणं जाव सब्भूताणं जिणपन्नत्ताणं भावाणं अभिगमणट्टयाए एतमट्ठं उवाइणावेत्तए, एवं संपेहेमि २ तं चेव जाव पाणियघरियं सद्दावेमि २ एवं वदामि–तुमं णं देवाणुप्पिया ! उदगरतणं जितसत्तुस्स रन्नो भोयणवेलाए उवणेहि, तं एएणं कारणेणं सामी ! एस से फरिहोदए १८। तते णं जितसत्तू राया सुबुद्धिस्स अमच्चस्स एवमातिक्खमाणस्स ४ एतमट्ठं नो सद्दहति ३ असद्दहमाणे ३ अब्भितरट्ठाणिज्जे पुरिसे सद्दावेति २ एवं वदासी–गच्छह णं तुब्भे देवाणुप्पिया ! अंतरावणाओ नवघडए पडए य गेण्हह जाव उदग-संहारणिज्जेहिं दव्वेहिं संभारेह तेऽवि तहेव संभारेंति २ जितसत्तुस्स उवणेंति १९। तते णं जितसत्तू राया तं उदगरयणं करयलंसि आसाएति आसातणिज्जं जाव सव्विंदिय-गाय-पल्हायणिज्जं जाणित्ता सुबुद्धिं अमच्चं सद्दावेति २ एवं वयासी–सुबुद्धी ! एए णं तुमे संता तच्चा जाव सब्भूया भावा कतो उवलद्धा ?, तते णं सुबुद्धी जितसत्तुं एवं वदासी–एए णं सामी ! मए संता जाव भावा जिणवयणातो उवलद्धा २०। तते णं जितसत्तू सुबुद्धिं एवं वदासी–तं इच्छामि णं देवाणुप्पिया ! तव अंतिए जिणवयणं निसामेत्तए, तते णं सुबुद्धी जितसत्तुस्स विचित्तं केवलिपन्नत्तं चाउज्जामं धम्मं परिकहेइ, तमाइक्खति जहा जीवा बज्झंति जाव पंच अणुव्वयाति २१। तते णं जितसत्तू सुबुद्धिस्स अंतिए धम्मं सोच्चा णिसम्म हट्ठतुट्ठे सुबुद्धिं अमच्चं एवं वयासी–सद्दहामि णं देवाणुप्पिया ! निग्गंथं पावयणं ३ जाव से जहेयं तुब्भे वयह, तं इच्छामि णं तव अंतिए पंचाणुव्वइयं सत्तसिक्खावइयं जाव उवसंपज्जित्ताणं विहरित्तए, अहासुहं देवाणुप्पिया ! मा पडिबंधं करेह २२। तए णं से जियसत्तू सुबुद्धिस्स अमच्चस्स अंतिए पंचाणुव्वइयं जाव दुवालसविहं सावयधम्मं पडिवज्जइ, तते णं जितसत्तू समणोवासए अभिगय-जीवाजीवे जाव पडिला-

भेमाणे विहरति २३। तेणं कालेणं २ थेरागमणं जियसत्तू राया सुबुद्धी य निग्गच्छति, सुबुद्धी धम्मं सोच्चा जं णवरं जियसत्तुं आपुच्छामि जाव पव्वयामि, अहासुहं देवाणुप्पिया २४। तते णं सुबुद्धी जेणेव जितसत्तू तेणेव उवागच्छति २ एवं वयासी—एवं खलु सामी! मए थेराणं अंतिए धम्मे निसन्ते सेऽविय धम्मे इच्छिए पडिच्छिए इच्छियपडिच्छिए, तए णं अहं सामी! संसारभउव्विग्गे भीए जाव इच्छामि णं तुब्भेहिं अब्भणुन्नाए समाणे थेराणं अंतिए जाव पव्वइत्तए २५। तते णं जितसत्तू सुबुद्धिं एवं वयासी—अच्छासु ताव देवाणुप्पिया! कतिवयातिं वासाइं उरालातिं जाव भुंजमाणा ततो पच्छा एगयओ थेराणं अंतिए मुंडे भवित्ता जाव पव्वइस्सामो २६। तते णं सुबुद्धी जितसत्तुस्स एयमट्ठं पडिसुणेति, तते णं तस्स जितसत्तुस्स सुबुद्धीणा सद्धिं विपुलाइं माणुस्सगाइं कामभोगाइं पच्चणुब्भवमाणस्स दुवालस वासाइं वीतिक्कंताइं २७। तेणं कालेणं २ थेरागमणं तते णं जितसत्तू धम्मं सोच्चा एवं जं नवरं देवाणुप्पिया! सुबुद्धिं अमच्चं आमंतेमि जेट्ठपुत्तं रज्जे ठवेमि, तए णं तुब्भं जाव पव्वयामि, अहासुहं देवाणुप्पिया! २८। तते णं जितसत्तू जेणेव सए गिहे तेणेव उवागच्छति २ सुबुद्धिं सद्दावेति २ एवं वयासी—एवं खलु मए थेराणं जाव *पव्वज्जामि, तुमं णं किं करेसि?, तते णं सुबुद्धी जितसत्तुं एवं वयासी—* जाव के० अन्ने आहारे वा जाव पव्वयामि, तं जति णं देवाणुप्पिया! जाव पव्वयह गच्छह णं देवाणुप्पिया! जेट्ठपुत्तं च कुडुंबे ठवेहि २ सीयं दुरुहित्ताणं ममं अंतिए सीया जाव पाउब्भवेति, तते णं सुबुद्धीए सीया जाव पाउब्भवइ २९। तते णं जितसत्तू कोडुंबियपुरिसे सद्दावेति २ एवं वयासी—गच्छह णं तुब्भे देवाणुप्पिया! अदीणसत्तुस्स कुमारस्स रायाभिसेयं उवट्ठवेह जाव अभिसिंचंति जाव पव्वतिए ३०। तते णं जितसत्तू एक्कारस अंगाइं अहिज्जति बहूणि

वासाणि परियाओ मासियाए सिद्धे, तते णं सुबुद्धी एक्कारस अंगाइं अहिज्जति, बहूणि वासाणि जाव सिद्धे ३१। एवं खलु जंबू ! समणेणं भगवया महावीरेणं बारसमस्स नायज्झयणस्स अयमट्ठे पणत्तेत्तिबेमि ३२ ॥ सूत्रं ९९ ॥ बारसमं नाअज्झयणं समत्तं ॥

॥ इति द्वादशममध्ययनम् ॥ १२ ॥

॥१३॥ अथ श्रीदर्दुराख्यं त्रयोदशमध्ययनम् ॥

जति णं भंते ! समणेणं जाव संपत्तेणं बारसमस्स नायज्झयणस्स अयमट्ठे पणत्ते तेरसमस्स णं भंते ! नायज्झयणस्स समणेणं जाव संपत्तेणं के अट्ठे पन्नत्ते ?, एवं खलु जंबू ! तेणं कालेणं २ रायगिहे गुणसिलए चेतिए, समोसरणं, परिसा निग्गया १। तेणं कालेणं २ सोहम्मे कप्पे दद्दुरवडिंसए विमाणे सभाए सुहम्माए दद्दुरंसि सीहासणंसि दद्दुरे देवे चउहिं सामाणियसाहस्सीहिं चउहिं अग्गमहिसीहिं सपरिसाहिं एवं जहा सुरियाभो जाव दिव्वातिं भोगभोगाइं भुंजमाणो विहरइ, इमं च णं केवलकप्पं जंबुद्दीवं २ विपुलेणं ओहिणा आभोएमाणे २ जाव नट्टविहिं उवदंसित्ता पडिगते जहा सुरियाभे २। भंतेति भगवं गोयमे समणं भगवं महावीरं वंदइ नमंसति २ एवं वयासी–अहो णं भंते! दद्दुरे देवे महिड्ढिए २ दद्दुरस्स णं भंते ! देवस्स सा दिव्वा देविड्ढी ३ कहिं गया ? कहिं अणुपविट्ठा ?, गोयमा ! सरीरं गया सरीरं अणुपविट्ठा कूडागारदिट्ठंतो ३। दद्दुरेणं भंते ! देवेणं सा दिव्वा देविड्ढी ३ किणा लद्धा जाव अभिसमन्नागया ?, एवं खलु गोयमा ! इहेव जंबुद्दीवे २ भारहे वासे रायगिहे गुणसिलए चेतिए सेणिए राया, तत्थ णं रायगिहे णंदे णामं मणियारसेट्ठी अड्ढे दित्ते० ४। तेणं कालेणं २ अहं गोयमा ! समोसढे परिसा णिग्गया, सेणिए राया निग्गए, तते णं से नंदे मणियारसेट्ठी

इमीसे कहाए लद्धट्ठे समाणे राहाए पायचारेणं जाव पज्जुवासति, णंदे धम्मं सोचा समणोवासए जाते, तते णं अहं रायगिहाओ पडिनिक्खन्ते बहिया जणवयविहारं विहरामि ५। तते णं से णंदे मणियारसेट्ठी अन्नया कदाइ असाहुदंसणेण य अपज्जुवासणाए य अणणुसासणाए य असुस्सूसणाए य सम्मत्तपज्जवेहिं परिहायमाणेहिं २ मिच्छत्तपज्जवेहिं परिवड्ढमाणेहिं २ मिच्छत्तं विप्पडिवन्ने जाए यावि होत्था ६। तते णं नंदे मणियारसेट्ठी अन्नता गिम्हकालसमयंसि जेट्ठामूलंसि मासंसि अट्ठमभत्तं परिगेराहति २ पोसहसालाए जाव विहरति, तते णं णंदस्स अट्ठमभत्तंसि परिणममाणंसि तराहाए छुहाए य अभिभूतस्स समाणस्स इमेयारूवे अब्भत्थिते ५—धन्ना णं ते जाव ईसरपभितओ जेसिं णं रायगिहस्स बहिया बहूओ वावीतो पोक्खरणीओ जाव सरसरपंतियाओ जत्थ णं बहुजणो राहाति य पियति य पाणियं च संवहति, तं सेयं खलु ममं कल्लं पाउप्पभायाए सेणियं आपुच्छित्ता रायगिहस्स बहिया उत्तरपुरच्छिमे दिसिभाए वेभारपव्वयस्स अदूरसामंते वत्थुपाढगरोइतंसि भूमिभागंसि जाव णंदं पोक्खरणिं खणावेत्तएत्तिकट्टु एवं संपेहेति २ कल्लं पाउप्पभायाए जाव पोसहं पारेति २ राहाते कयबलिकम्मे मित्तणाइ जाव संपरिवुडे महत्थं जाव पाहुडं रायारिहं गेराहति २ जेणेव सेणिए राया तेणेव उवागच्छति २ जाव पाहुडं उवट्ठवेति २ एवं वयासी—इच्छामी णं सामी! तुब्भेहिं अब्भणुन्नाए समाणे रायगिहस्स बहिया जाव खणावेत्तए, अहासुहं देवाणुप्पिया ७। तते णं णंदे सेणिएणं रन्ना अब्भणुराणाते समाणे हट्ठतुट्ठे रायगिहं मज्झंमज्झेणं निग्गच्छति २ वत्थुपाढयरोइयंसि भूमिभागंसि णंदं पोक्खरणिं खणाविउं पयत्ते यावि होत्था, तते णं सा णंदा पोक्खरणी अणुपुव्वेणं खणमाणा २ पोक्खरणी जाया यावि होत्था चाउक्कोणा समतीरा अणुपुव्व-सुजाय-वप्प-सीयलजला संछराण-पत्त-बिस-मुणाला बहुप्पल-

पउम-कुमुद-नलिण-सुभग--सोगंधिय-पुंडरीय-महापुंडरीय-सयपत्त--सहस्सपत्त-पफुल्ल-केसरोववेया परिहत्थ-भमंत-मच्छ-छप्पय-अणेग-सउण-गण-मिहुण-वियरिय-सदुन्नइय-महुर-सरनाइया पासाईया ४, ८। तते णं से णंदे मणियार-सेट्ठी णंदाए पोक्खरणीए चउदिसिं चत्तारि वणसंडे रोवावेति ९। तए णं ते वणसंडा अणुपुव्वेणं सारक्खिज्जमाणा य संगोविज्जमाणा य संवड्ढियमाणा य से वणसंडा जाया किण्हा जाव निकुरुंबभूया पत्तिया पुप्फिया जाव उव-सोभेमाणा २ चिट्ठंति १०। तते णं नंदे पुरच्छिमिल्ले वणसंडे एगं महं चित्तसभं करावेति अणेग-खंभसय-संनिविट्ठं पा०, तत्थ णं बहूणि किण्हाणि य जाव सुक्किलाणि य कट्ठकम्माणि य पोत्थकम्माणि य चित्त-कम्माणि य लिप्पकम्माणि य गंथिम-वेढिम-पूरिम-संघातिमकम्माणि य उवदंसिज्जमाणाइं २ चिट्ठंति, तत्थ णं बहूणि आसणाणि य सयणाणि य अत्थुयपच्चत्थुयाइं चिट्ठंति, तत्थ णं बहवे णडा य णट्ठा य जाव दिन्न-भइभत्त-वेयणा तालायरकम्मं करेमाणा विहरंति ११। रायगिहविणिग्गओ य जत्थ बहू जणो तेसु पुव्वन्नत्थेसु आसणसयणेसु संनिसन्नो य संतुयट्टो य सुणमाणो य पेच्छमाणो य सोहेमाणो य सुहंसुहेणं विहरइ १२। तते णं णंदे दाहिणिल्ले वणसंडे एगं महं महाणससालं करावेति अणेगखंभ-सयसंनिविट्ठं जाव रूवं, तत्थ णं बहवे पुरिसा दिन्नभइभत्तवेयणा विपुलं असणं ४ उवक्खडेंति बहूणं समण-माहण-अतिही-किवण-वणीमगाणं परि-भाएमाणा २ विहरंति १३। तते णं णंदे मणियारसेट्ठी पच्चत्थिमिल्ले वणसंडे एगं महं तेगिच्छियसालं करेति, अणेगखंभसयसंनिविट्ठं जाव रूवं, तत्थ णं बहवे वेज्जा य वेज्जपुत्ता य जाणुया य जाणुयपुत्ता य कुसला य कुसलपुत्ता य दिन्न-भइभत्तवेयणा बहूणं वाहियाणं गिलाणाण य रोगि-याण य दुब्बलाण य तेइच्छकम्मं करेमाणा विहरंति १४। अरणे य एत्थ बहवे पुरिसा दिन्नभइ भत्तवेयणा तेसिं बहूणं वाहियाण य रोगियाण य गिलाणाण य

दुब्बलाण य ओसह-भेसज्ज-भत्तपाणेणं पडियारकम्मं करेमाणा विहरंति, तते णं णंदे उत्तरिल्ले वणसंडे एगं महं अलंकारियसभं करेति, अणेगखंभसतसंनिविट्ठं जाव पडिरूवं, तत्थ णं बहवे अलंकारियपुरिसा दिन्नभइ-भत्तवेयणा बहूणं समणाण य अणाहाण य गिलाणाण य रोगियाण य दुब्बलाण य अलंकारियकम्मं करेमाणा २ विहरंति १५। तते णं तीए णंदाए पोक्खरणीए बहवे सणाहा य अणाहा य पंथिया य पहिया य करोडिया कारि(र)या तणहारया पत्तहारया कट्ठहारया अप्पेगतिया ण्हायंति अप्पेगतिया पाणियं पियंति अप्पेगतिया पाणियं संवहंति अप्पेगतिया विसज्जितसेय-जल्लमल-परिस्सम-निद्दखुप्पिवासा सुहंसुहेणं विहरंति १६। रायगिह-विणिग्गओवि जत्थ बहुजणो किं ते जलरमण-विविहमज्जण-कयलिलयाघरय-कुसुमसत्थरय-अणेगसउण-गणरुयरिभितसंकुलेसु सुहंसुहेणं अभिरममाणो २ विहरति १७। तते णं णंदाए पोक्खरिणीए बहुजणो ण्हायमाणो पाणियं च संवहमाणो य अन्नमन्नं एवं वदासी—धण्णे णं देवाणुप्पिया! णंदे मणियारसेट्ठी कयत्थे जाव जम्मजीवियफले जस्स णं इमेयारूवा णंदा पोक्खरणी चाउक्कोणा जाव पडिरूवा, जस्स णं पुरत्थिमिल्ले तं चेव सव्वं चउसुवि वणसंडेसु जाव रायगिहविणिग्गओ जत्थ बहुजणो आसणेसु य सयणेसु य सन्निसन्नो य संतुयट्टो य पेच्छमाणो य साहेमाणो य सुहंसुहेणं विहरति, तं धन्ने कयत्थे कयपुन्ने कयाणं० लोया! सुलद्धे माणुस्सए जम्मजीवियफले नंदस्स मणियारस्स १८। तते णं रायगिहे संघाडग जाव बहुजणो अन्नमन्नस्स एवमातिक्खति ४ धन्ने णं देवाणुप्पिया! णंदे मणियारे सो चेव गमओ जाव सुहंसुहेणं विहरति। तते णं से णंदे मणियारे बहुजणस्स अंतिए एतमट्ठं सोच्चानिसम्म हट्ठ २ धाराहय-कलंबुगंपिव समूससियरोमकूवे परं सायासोक्ख-मणुभवमाणे विहरति १९ ॥ सूत्रं १०० ॥

तते णं तस्स नंदस्स मणियारसेट्ठिस्स अन्नया कयाई सरीरगंसि सोलस रोयायंका पाउब्भूया तंजहा—"सासे कासे जरे दाहे, कुच्छिसूले भगंदरे ६ । अरिसा अजीरए दिट्ठिमुद्धसूले अगारए १० ॥ १ ॥ अच्छिवेयणा कन्नवेयणा कंडू दउदरे कोढे ? १६ ।" १ । तते णं से णंदे मणियारसेट्ठी सोलसहिं रोयायंकेहिं अभिभूते समाणे कोडुंबियपुरिसे सद्दावेति २ एवं वयासी—गच्छह णं तुब्भे देवाणुप्पिया ! रायगिहे सिंघाडग जाव पहेसु महया सद्देणं उग्घोसेमाणा २ एवं वयह—एवं खलु देवाणुप्पिया ! णंदस्स मणियारसेट्ठिस्स सरीरगंसि सोलस रोयायंका पाउब्भूता, तंजहा—'सासे जाव कोढे' तं जो णं इच्छति देवाणुप्पिया ! वेज्जो वा वेज्जपुत्तो वा जाणुओ वा २ कुसलो वा २ नंदस्स मणियारस्स तेसिं च णं सोलसण्हं रोयायंकाणं एगमवि रोयायंकं उवसामेत्तए तस्स णं देवाणुप्पिया ! मणियारे विउलं अत्थसंपदाणं दलयतित्तिकट्टु दोच्चंपि तच्चंपि घोसणं घोसेह २ पच्चप्पिणह, तेवि तहेव पच्चप्पिणंति २ । तते णं रायगिहे इमेयारूवं घोसणं सोच्चा णिसम्म बहवे वेज्जा व वेज्जपुत्ता य जाव कुसलपुत्ता य सत्थ-कोस-हत्थगया य कोसग-पाय-हत्थगया य सिलियाहत्थगया य गुलियाहत्थगया य ओसह-भेसज्ज-हत्थगया य सएहिं २ गिहेहिंतो निक्खमंति २ रायगिहं मज्झंमज्झेणं जेणेव णंदस्स मणियारसेट्ठिस्स गिहे तेणेव उवागच्छंति २ णंदस्स सरीरं पासंति, तेसिं रोयायंकाणं णियाणं पुच्छंति णंदस्स मणियारस्स बहूहिं उव्वलणेहि य उव्वट्टणेहि य सिणेहपाणेहि य वमणेहि य विरेयणेहि य सेयणेहि य अवदहणेहि य अवण्हाणेहि य अणुवासणेहि य वत्थिकम्मेहि य निरूहेहि य सिरावेहेहि य तच्छणाहि य पच्छणाहि य सिरावेढेहि य तप्पणाहि य पुढवाएहि य छल्लीहि य वल्लीहि य मूलेहि य कंदेहि य पत्तेहि य पुप्फेहि य फलेहि य बीएहि य सिलि(ला)याहि य गुलियाहि य ओसहेहि य भेसज्जेहि य इच्छंति तेसिं सोलसण्हं

रोयायंकाणं एगमवि रोयायंकं उवसामित्तए, नो चेव णं संचाएंति उवसामेत्तए, तते णं ते बहवे वेज्जा य ६ जाहे नो संचाएंति तेसिं सोलसण्हं रोगाणं एगमवि रोगायंकं उवसामित्तए ताहे संता तंता जाव पडिगया ३। तते णं नंदे तेहिं सोलसेहिं रोयायंकेहिं अभिभूते समाणे णंदापोक्खरणीए मुच्छिए ४ तिरिक्खजोणिएहिं निबद्धाउते बद्धपएसिए अट्टदुहट्टवसट्टे कालमासे कालं किच्चा नंदाए पोक्खरणीए दद्दुरीए कुच्छिंसि दद्दुरत्ताए उववन्ने ४। तए णं णंदे दद्दुरे गब्भाओ विणिम्मुक्के समाणे उम्मुक्क-बालभावे विन्नाय-परिणयमित्ते जोव्वणग-मणुपत्ते नंदाए पोक्खरणीए अभिरममाणे २ विहरति ५। तते णं णंदाए पोक्खरणीए बहू जणो ण्हायमाणो य पियइ य पाणियं च संवहमाणो अन्नमन्नस्स एवमातिक्खति ४ धन्ने णं देवाणुप्पिया! णंदे मणियारे जस्स णं इमेयारूवा णंदा पुक्खरणी चाउक्कोणा जाव पडिरूवा जस्स णं पुरत्थिमिल्ले वणसंडे चित्तसभा अणेगखंभ-सयसंनिविट्ठा तहेव चत्तारि सहाओ जाव जम्मजीवियफले ६। तते णं तस्स दद्दुरस्स तं अभिक्खणं २ बहुजणस्स अंतिए एयमट्ठं सोचा णिसम्म इमेयारूवे अब्भत्थिए ६—से कहिं मन्ने मए इमेयारूवे सद्दे *णिसंत-पुव्वेत्तिकट्टु सुभेणं परिणामेणं जाव जाइसरणे समुप्पन्ने,* पुव्वजातिं सम्मं समागच्छति ७। तते णं तस्स दद्दुरस्स इमेयारूवे अब्भत्थिए पत्थिए मणोगए संकप्पे समुप्पज्जित्था—एवं खलु अहं इहेव रायगिहे नगरे णंदे णामं मणियारे अड्ढे०। तेणं कालेणं तेणं समएणं समणे भगवं महावीरे समोसढे, तए णं समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतिए पंचाणुव्वइए सत्तसिक्खावइए जाव पडिवन्ने, तए णं अहं अन्नया कयाइं असाहुदंसणेण य जाव मिच्छत्तं विप्पडिवन्ने, तए णं अहं अन्नया कयाई गिम्ह कालसमयंसि जाव उपसंपज्जित्ता णं विहरामि, एवं जहेव चिंता आपुच्छणा नंदापुक्खरणी वणसंडा सहाओ तं चेव सव्वं जाव नंदाए

पुक्खरणीए दद्दुरीए कुच्छिंसि दद्दुरत्ताए उववन्ने, तं अहो णं अहं अहन्ने अपुन्ने अकयपुन्ने निग्गंथाओ पावयणाओ नट्ठे भट्ठे परिब्भट्ठे तं सेयं खलु ममं सयमेव पुव्वपडिवन्नातिं पंचाणुव्वयातिं सत्तसिक्खावयातिं उवसंपज्जित्ताणं विहरित्तए, एवं संपेहति २ पुव्वपडिवन्नातिं पंचाणुव्वयाइं सत्तसिक्खावयाइं आरुहेति २ इमेयारूवं अभिग्गहं अभिगिराहति–कप्पइ मे जावजीवं छट्ठंछट्ठेणं अणिक्खित्तेणं अप्पाणं भावेमाणस्स विहरित्तए, छट्ठस्सविय णं पारणगंसि कप्पइ मे णंदाए पोक्खरणीए परिपेरंतेसु फासुएणं राहाणोदएणं उम्मद्दणोलोलियाहि य वित्ति कप्पेमाणस्स विहरित्तए, इमेयारूवं अभिग्गहं अभिगेराहति, जावज्जीवाए छट्ठंछट्ठेणं जाव विहरति ८। तेणं कालेणं २ अहं गोयमा ! गुणसिलए समोसढे परिसा निग्गया, तए णं नंदाए पुक्खरिणीए बहुजणो राहायमाणो पियइ य पाणियं च संवहमाणो य अन्नमन्नं एवं वयासी–जाव समणे ३ इहेव गुणसिलए चेइए, समोसढे, तं गच्छामो णं देवाणुप्पिया ! समणं भगवं महावीरं वंदामो जाव पज्जुवासामो एयं मे इह भवे परभवे य हियाए जाव अणुगामियत्ताए भविस्सइ ९। तए णं तस्स दद्दुरस्स बहुजणस्स अंतिए एयमट्ठं सोच्चा निसम्म हट्ठ २ धाराहयकलंबुगंपिव समूससियरोमकूवे अयमेयारूवे अब्भत्थिए ५ समुप्पज्जित्था–एवं खलु समणे भगवं महावीरे इहेव गुणसिलए चेइए समोसढे, तं गच्छामि णं वंदामि णं जाव पज्जुवासामि, एवं संपेहेति २ णंदाओ पुक्खरणीओ सणियं २ उत्तरइ जेणेव रायमग्गे तेणेव उवागच्छति २ ताए उक्किट्ठाए ५ दद्दुरगईए वीतिवयमाणे जेणेव ममं अंतिए तेणेव पहारेत्थ गमणाए १०। इमं च णं सेणिए राया भंभसारे राहाए कयकोउय-मंगलपायच्छित्ते जाव सव्वालंकारविभूसिए हत्थिखंधवरगए सकोरंट-मल्लदामेणं छत्तेणं धरिज्जमाणेणं सेयवरचामराहिं उद्धुव्वमाणीहिं हयगयरह-जोहकलियाए महया भडचडगर-आसवाहणियाए चाउ-

रंगिणीए सेणाए सद्धिं संपरिवुडे मम पायवंदते हव्वमागच्छति १० । तते णं से ददुरे सेणियस्स रन्नो एगेणं आसकिसोरएणं वामपाएणं अक्कंते समाणे अंतनिग्घातिए कते यावि होत्था, तते णं से ददुरे अत्थामे अबले अवीरिए अपुरिसकार-परक्कमे अधारणिज्ज-मितिकट्टु एगंत-मवक्कमति २ करयल-परिग्गहियं दसनहं सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं कट्टु एवं वयासी—नमोऽत्थु णं जाव संपत्ताणं, नमोऽत्थु णं मम धम्मायरियस्स जाव संपाविउकामस्स पुव्विंपिय णं मए समणस्स भगवतो महावीरस्स अंतिए थूलए पाणातिवाए पच्चक्खाए जाव थूलए परिग्गहे पच्चक्खाए, तं इयाणिंपि तस्सेव अंतिए सव्वं पाणातिवायं पच्चक्खामि जाव सव्वं परिग्गहं पच्चक्खामि, जावजीवं सव्वं असणं ४ पच्चक्खामि, जावजीवं जंपिय इमं सरीरं इट्ठं कंतं जाव मा फुसंतु एयंपि णं चरिमेहिं ऊसासनीसासेहिं वोसिरामित्तिकट्टु ११ । तए णं से ददुरे कालमासे कालं किच्चा जाव सोहम्मे कप्पे ददुरवडिंसए विमाणे उववायसभाए ददुरदेवत्ताए उववन्ने, एवं खलु गोयमा ! ददुरेणं सा दिव्वा देविड्ढी लद्धा ३, १२ । ददुरस्स णं भंते ! देवस्स केवतिकालं ठिई पण्णत्ता ?, गोयमा ! चत्तारि पलिओवमाइं ठिती पन्नत्ता, से णं ददुरे देवे० महाविदेहे वासे सिज्झिहिति बुज्झिहिति जाव अंतं करेहिइ १३ । एवं खलु समणेणं भगवया महावीरेणं तेरसमस्स नायज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्तेत्तिबेमि १४ ॥ सूत्रं १०१ ॥ तेरसमं णायज्झयणं समत्तं ॥

॥ इति त्रयोदशममध्ययनम् ॥ १३ ॥

॥१४॥ अथ श्रीतेतलिपुत्राख्यं चतुर्दशममध्ययनम् ॥

जति णं भंते ! समणेणं भगवया महावीरेणं जाव संपत्तेणं तेरसमस्स नायज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते, चोद्दसमस्स णं भंते ! नायज्झयणस्स समणेणं जाव संपत्तेणं के अट्ठे पन्नत्ते ?, एवं खलु जंबू ! तेणं कालेणं २

तेयलिपुरं नाम नगरं पमयवणे उज्जाणे कणगरहे राया, तस्स णं कणगरहस्स पउमावती देवी, तस्स णं कणगरहस्स तेयलिपुत्ते णामं अमच्चे सामदंड० १। तत्थ णं तेयलिपुरे कलादे नामं मूसियारदारए होत्था अड्ढे जाव अपरिभूते, तस्स णं भद्दा नामं भारिया, तस्स णं कलायस्स मूसियार-दारयस्स धूया भद्दाए अत्तया पोट्टिला नामं दारिया होत्था रूवेण जोव्वणेण य लावन्नेण उक्किट्ठा २, २। तते णं पोट्टिला दारिया अन्नदा कदाइ राहाता सव्वालंकार-विभूसिया चेडिया-चक्कवाल-संपरिवुडा उप्पिं पासाय-वरगया आगासतलगंसि कणगमएणं तिंदूसएणं कीलमाणी २ विहरति ३। इमं च णं तेयलिपुत्ते अमच्चे राहाए आसखंधवरगए महया भड-चडगर-आस-वाहणियाए णिज्जायमाणे कलायस्स मूसियारदारगस्स गिहस्स अदूरसामंतेणं वीतिवयति ४। तते णं से तेयलिपुत्ते मूसियारदारगगिहस्स अदूरसामंतेणं वीतीवयमाणे २ पोट्टिलं दारियं उप्पिं पासायवरगयं आगासतलगंसि कणगतिंदूसएणं कीलमाणीं पासति २ पोट्टिलाए दारियाए रूवे य ३ जाव अज्झोववन्ने कोडुंबियपुरिसे सद्दावेति २ एवं वयासी—एस णं देवाणुप्पिया! कस्स दारिया किंनामधेज्जा ?, तते णं कोडुंबियपुरिसे तेयलिपुत्तं एवं वदासी—एस णं सामी! कलायस्स मूसियारदारयस्स धूता भद्दाए अत्तया पोट्टिला नामं दारिया रूवेण य जाव सरीरा ५। तते णं से तेयलिपुत्ते आसवाहणियाओ पडिनियत्ते समाणे अब्भितरट्ठाणिज्जे पुरिसे सद्दावेति २ एवं वयासी—गच्छह णं तुब्भे देवाणुप्पिया! कलादस्स मूसियार-दारयस्स धूयं भद्दाए अत्तयं पोट्टिलं दारियं मम भारियत्ताए वरेह ६। तते णं ते अब्भंतरट्ठाणिज्जा पुरिसा तेतलिणा एवं वुत्ता समाणा हट्ठतुट्ठ जाव हियया करयल जाव कट्टु तहत्ति पडिसुणंति २ जेणेव कलायस्स मूसियारदारयस्स गिहे तेणेव उवागया, तते णं से कलाए मूसियारदारते पुरिसे एज्जमाणे पासति २ हट्ठतुट्ठे आसणाओ अब्भु-

ट्टेति २ सत्तट्ठपदातिं अणुगच्छति २ आसणेणं उवणिमंतेति २ आसत्थे वीसत्थे सुहासणवरगए एवं वयासी—संदिसंतु णं देवाणुप्पिया ! किमागमणपओयणं ?, तते णं ते अब्भितरट्ठाणिज्जा पुरिसा कलायमूसियारदारयं एवं वयासी—अम्हे णं देवाणुप्पिया ! तव धूयं भद्दाए अत्तयं पोट्टिलं दारियं तेयलिपुत्तस्स भारियत्ताए वरेमो, तं जति णं जाणसि देवाणुप्पिया ! जुत्तं वा पत्तं वा सलाहणिज्जं वा सरिसो वा संजोगो ता दिज्जउ णं पोट्टिला दारिया तेयलिपुत्तस्स, ता भण देवाणुप्पिया ! किं दलामो सुक्कं ?, ७। तते णं कलाए मूसियारदारए ते अब्भितरट्ठाणिज्जे पुरिसे एवं वदासी—एस चेव णं देवाणुप्पिया ! मम सुंके जन्नं तेतलिपुत्ते मम दारियानिमित्तेणं अणुग्गहं करेति, ते ठाणिज्जे पुरिसे विपुलेणं असण-पाण-खाइम-साइमेणं पुप्फवत्थ-गंध-मल्लालंकारेणं सक्कारेइ सम्माणेइ २ पडिविसज्जेइ, तए णं कलायस्सवि मूसियारदारयस्स गिहाओ पडिनिक्खमइ २ जेणेव तेयलिपुत्ते अमच्चे तेणेव उवागच्छंति २ तेयलिपुत्तं अमच्चं एयमट्ठं निवेयंति ८। तते णं कलादे मूसियदारए अन्नया कयाइं सोहणंसि तिहि-नक्खत्त-मुहुत्तंसि पोट्टिलं दारियं ण्हायं सव्वालंकारभूसियं सीयं दुरूहेइ २ त्ता मित्तणाइ-नियय-सजण-संबंधि-परिजणस्स सद्धिं संपरिवुडे सातो गिहातो पडिनिक्खमति २ सव्विड्ढीए तेयलीपुरं मज्झंमज्झेणं जेणेव तेतलिस्स गिहे तेणेव उवागच्छति २ पोट्टिलं दारियं तेतलिपुत्तस्स सयमेव भारियत्ताए दलयति ८। तते णं तेतलिपुत्ते पोट्टिलं दारियं भारियत्ताए उवणीयं पासति २ पोट्टिलाए सद्धिं पट्टयं दुरूहति २ सेतापीतएहिं कलसेहिं अप्पाणं मज्जावेति २ अग्गिहोमं करेति २ पाणिग्गहणं करेति २ पोट्टिलाए भारियाए मित्त-णाति जाव परिजणं विपुलेणं असण-पाण-खातिम-सातिमेणं पुप्फ-वत्थगंध-मल्लालंकारेणं जाव पडिविसज्जेति ९। तते णं से तेतलिपुत्ते पोट्टिलाए भारियाए अणुरत्ते अविरत्ते उरालाइं जाव विहरति १०॥ सूत्रं १०२॥

तते णं से कणगरहे राया रज्जे य रट्ठे य बले य वाहणे य कोसे य कोट्ठागारे य अंतेउरे य मुच्छिते ४ जाते २ पुत्ते वियंगेति, अप्पेगइयाणं हत्थंगुलियाओ छिंदति अप्पेगइयाणं हत्थंगुट्ठए छिंदति एवं पायंगुलियाओ पायंगुट्ठएवि कन्नसक्कुलीएवि नासापुडाइं फालेति अंगमंगाति वियंगेति १। तते णं तीसे पउमावतीए देवीए अन्नया पुव्वरत्तावरत्तकाल-समयंसि अयमेयारूवे अब्भत्थिए पत्थिए मणोगए संकप्पे समुप्पज्जित्था–एवं खलु कणगरहे राया रज्जे य जाव पुत्ते वियंगेति जाव अंगमंगाइं वियंगेति, तं जति अहं दारयं पयायामि सेयं खलु ममं तं दारगं कणगरहस्स रहस्सियं चेव सारक्खमाणीए संगोवेमाणीए विहरित्तएत्तिकट्टु एवं संपेहेति २ तेयलिपुत्तं अमच्चं सद्दावेति २ एवं वयासी–एवं खलु देवाणुप्पिया! कणगरहे राया रज्जे य जाव वियंगेति तं जति णं अहं देवाणुप्पिया! दारगं पयायामि तते णं तुमं कणगरहस्स रहस्सियं चेव अणुपुव्वेणं सारक्खमाणे संगोवेमाणे संवड्ढेहि, तते णं से दारए उम्मुक्कबालभावे जोव्वणगमणुप्पत्ते तव य मम य भिक्खाभायणे भविस्सति, तते णं से तेयलिपुत्ते पउमावतीए एयमट्ठं पडिसुणेति २ पडिगए २। तते णं पउमावती य देवी पोट्टिला य अमच्ची सयमेव गब्भं गेण्हति सयमेव परिवहति, तते णं सा पउमावती नवण्हं मासाणं जाव पियदंसणं सुरूवं दारगं पयाया, जं रयणिं च णं पउमावती दारयं पयाया तं रयणिं च णं पोट्टिलावि अमच्ची नवण्हं मासाणं विणिहायमावन्नं दारियं पयाया ३। तते णं सा पउमावती देवी अम्मधाइं सद्दावेति २ एवं वयासी–गच्छाहि णं तुमे अम्मो! तेयलिगिहे तेयलिपुत्तं रहस्सिययं चेव सद्दावेहि, तते णं सा अम्मधाई तहत्ति पडिसुणेति २ अंतेउरस्स अवद्दारेणं निग्गच्छति २ जेणेव तेयलिस्स गिहे जेणेव तेयलिपुत्ते तेणेव उवागच्छति २ करयल जाव एवं वदासी–एवं खलु देवाणुप्पिया! पउमावती देवी सद्दावेति ४। तते णं तेयलिपुत्ते अम्मधातीए अंतिए

एयमट्ठं सोच्चा हट्ठ २ अम्मधातीए सद्धिं सातो गिहाओ णिग्गच्छति २ अंतेउरस्स अवद्दारेणं रहस्सियं चेव अणुपविसति २ जेणेव पउमावती तेणेव उवागच्छति २ करयल जाव एवं वयासी–संदिसंतु णं देवाणुप्पिया ! जं मए कायव्वं ?, तते णं पउमावती तेयलीपुत्तं एवं वयासी–एवं खलु कणगरहे राया जाव वियंगेति अहं च णं देवाणुप्पिया ! दारगं पयाया तं तुमं णं देवाणुप्पिया ! तं दारगं गेण्हाहि जाव तव मम य भिक्खा-भायणे भविस्सतित्तिकट्टु तेयलिपुत्तं दलयति ५ । तते णं तेयलिपुत्ते पउमावतीए हत्थातो दारगं गेण्हति उत्तरिज्जेणं पिहेति २ अंतेउरस्स रहस्सियं चेव अवदारेणं निग्गच्छति २ जेणेव सए गिहे जेणेव पोट्टिला भारिया तेणेव उवागच्छति २ पोट्टिलं एवं वयासी–एवं खलु देवाणु-प्पिया ! कणगरहे राया रज्जे य जाव वियंगेति अयं च णं दारए कणगर हस्स पुत्ते पउमावईए अत्तए तेणं तुमं देवाणुप्पिया ! इमं दारगं कणगर-हस्स रहस्सियं चेव अणुपुव्वेणं सारक्खाहि य संगोवेहि य संवड्ढेहि य, तते णं एस दारए उम्मुक्कबालभावे तव य मम य पउमावतीए य आहारे भविस्सतित्तिकट्टु पोट्टिलाए पासे णिक्खिवति पोट्टिलाओ पासाओ तं विणिहायमावन्नियं दारियं गेण्हति २ उत्तरिज्जेणं पिहेति २ अंतेउरस्स अवद्दारेणं अणुपविसति २ जेणेव पउमावती देवी तेणेव उवागच्छति २ पउमावतीए देवीए पासे ठवेति २ जाव पडिनिग्गते ६ । तते णं तीसे पउमावतीए अंगपडियारियाओ पउमावइं देविं विणिहायमावन्नियं च दारियं पयायं पासंति २ त्ता जेणेव कणगरहे राया तेणेव उवागच्छति २ त्ता करयल जाव एवं वयासी–एवं खलु सामी ! पउमावती देवी मइल्लियं दारियं पयाया, तते णं कणगरहे राया तीसे मइल्लियाए दारियाए नीहरणं करेति, बहूणि लोइयाइं मयकिच्चाइं करेति, कालेणं विगयसोए जाते ७ । तते णं से तेतलिपुत्ते कल्ले कोडुंबियपुरिसे सद्दावेति २ एवं वयासी–खिप्पामेव

चारगसोहणं जाव ठितिपडियं जम्हा णं अम्हं एस दारए कणगरहस्स रज्जे जाए तं होउ णं दारए नामेणं कणगज्झए जाव भोगसमत्थे जाते ८। ॥ सूत्रं १०३ ॥ तते णं सा पोट्टिला अन्नया कयाई तेतलिपुत्तस्स अणिट्ठा ५ जाया यावि होत्था णेच्छइ य तेयलिपुत्ते पोट्टिलाए नामगोत्तमवि सवणयाए, किं पुण दरिसणं वा परिभोगं वा ?, तते णं तीसे पोट्टिलाए अन्नया कयाई पुव्वरत्तावरत्तकालसमयंसि इमेयारूवे ५ जाव समुप्पज्जित्था—एवं खलु अहं तेतलिस्स पुव्विं इट्ठा ५ आसि इयाणिं अणिट्ठा ५ जाया, नेच्छइ य तेयलिपुत्ते मम नामं जाव परिभोगं वा ओहयमणसंकप्पा जाव झियायति १। तए णं तेतलिपुत्ते पोट्टिलं ओहयमणसंकप्पं जाव झियायमाणं पासति २ एवं वयासी—मा णं तुमं देवाणुप्पिया ! ओहयमणसंकप्पा जाव झियाहह, तुमं णं मम महाणसंसि विपुलं असणं ४ उवक्खडावेहि २ बहूणं समणमाहण जाव वणीमगाणं देयमाणी य दवावेमाणी य विहराहि २। तते णं सा पोट्टिला तेयलिपुत्तेणं एवं वुत्ता समाणा हट्ठतुट्ठा जाव तेयलिपुत्तस्स एयमट्ठं पडिसुणेति २ कल्लाकल्लिं महाणसंसि विपुलं असणं ४ जाव दवावेमाणी विहरति ३ ॥ सूत्रं १०४ ॥ तेणं कालेणं २ सुव्वयाओ नामं अज्जाओ ईरियासमिताओ जाव गुत्तबंभयारिणीओ बहुस्सुयाओ बहुपरिवाराओ पुव्वाणुपुव्विं जेणामेव तेयलिपुरे नयरे तेणेव उवागच्छंति २ अहापडिरूवं उग्गहं उग्गिण्हंति २ संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणीओ विहरंति, तते णं तासिं सुव्वयाणं अज्जाणं एगे संघाडए पढमाए पोरसीए सज्झायं करेति जाव अडमाणीओ तेतलिस्स गिहं अणुपविट्ठाओ १। तते णं सा पोट्टिला ताओ अज्जाओ एज्जमाणीओ पासति २ हट्ठतुट्ठा जाव आसणाओ अब्भुट्ठेति २ वंदति नमंसति २ विपुलं असणं ४ पडिलाभेति २ एवं वयासी—एवं खलु अहं अज्जाओ ! तेयलिपुत्तस्स पुव्विं इट्ठा ५ आसी इयाणिं अणिट्ठा ५ जाव

दंसणं वा परिभोगं वा, तं तुब्भे णं अज्जातो सिक्खियाओ बहुनायाओ बहुपढियाओ बहूणि गामागर जाव आहिंडह बहूणं राईसर जाव गिहाति गिहाति अणुपविसह तं अत्थि याइं भे अज्जाओ ! केइ कहंचि चुन्नजोए वा मंतजोगे वा कम्मणजोए वा हियउड्डावणे वा काउड्डावणे वा आभिओगिए वा वसीकरणे वा कोउयकम्मे वा भूइकम्मे वा मूले कंदे छल्ली वल्ली सिलिया वा गुलिया वा ओसहे वा भेसज्जे वा उवलद्धपुव्वे जेणाहं तेयलिपुत्तस्स पुणरवि इट्ठा ५ भवेज्जामि ?, २ । तते णं ताओ अज्जाओ पोट्टिलाए एवं वुत्ताओ समाणीओ दोवि कन्ने ठइंति २ पोट्टिलं एवं वदासी—अम्हे णं देवाणुप्पिया ! समणीओ निग्गंथीओ जाव गुत्तबंभचारिणीओ नो खलु कप्पइ अम्हे एयप्पयारं कन्नेहिवि णिसामेत्तए, किमंग पुण उवदिसित्तए वा आयरित्तए वा ?, अम्हे णं तव देवाणुप्पिया ! विचित्तं केवलिपन्नत्तं धम्मं पडिकहिज्जामो ३ । तते णं सा पोट्टिला ताओ अज्जाओ एवं वयासी—इच्छामि णं अज्जाओ ! तुम्हं अंतिए केवलिपन्नत्तं धम्मं निसामित्तए, तते णं ताओ अज्जाओ पोट्टिलाए विचित्तं धम्मं परिकहेंति, तते णं सा पोट्टिला धम्मं सोच्चा निसम्म हट्ठ जाव एवं वयासी—सद्दहामि णं अज्जाओ ! निग्गंथं पावयणं जाव से जहेयं तुब्भे वयह, इच्छामि णं अहं तुब्भं अंतिए पंचाणुव्वयाइं जाव धम्मं पडिवज्जित्तए, अहासुहं ४ । तए णं सा पोट्टिला तासिं अज्जाणं अंतिए पंचाणुव्वइयं जाव धम्मं पडिवज्जइ, ताओ अज्जाओ वंदति नमंसति २ पडिविसज्जेति, तए णं सा पोट्टिला समणोवासिया जाया जाव पडिलाभेमाणी विहरइ ५ ॥ सूत्रं १०५ ॥

तते णं तीसे पोट्टिलाए अन्नया कयाइ पुव्वरत्तावरत्त-कालसमयंसि कुडुंब-जागरियं जागरमाणाए अयमेयारूवे अब्भत्थिते पत्थिते मणोगते संकप्पे समुप्पज्जित्था—एवं खलु अहं तेतलिपुत्तस्स पुव्विं इट्ठा ५ आसि इयाणिं अणिट्ठा ५ जाव परिभोगं वा, तं सेयं खलु मम सुव्वयाणं अज्जाणं

अंतिए पव्वतित्तए, एवं संपेहेति २ कल्लं पाउप्पभायाए जेणेव तेतलिपुत्ते तेणेव उवागच्छति २ करयलपरिगहियं जाव एवं वयासी–एवं खलु देवाणुप्पिया ! मए सुव्वयाणं अज्जाणं अंतिए धम्मे णिसंते जाव अब्भणुन्नाया पव्वइत्तए १ । तते णं तेयलिपुत्ते पोट्टिलं एवं वयासी–एवं खलु तुमं देवाणुप्पिए ! मुंडा(मुंडे) पव्वइया समाणी कालमासे कालं किच्चा अन्नतरेसु देवलोएसु देवत्ताए उववज्जिहिसि, तं जति णं तुमं देवाणुप्पिया ! ममं ताओ देवलोयाओ आगम्म केवलिपन्नत्ते धम्मे बोहिहि तोऽहं विसज्जेमि, अह णं तुमं ममं ण संबोहेसि तो ते ण विसज्जेमि, तते णं सा पोट्टिला तेयलिपुत्तस्स एयमट्ठं पडिसुणेति २ । तते णं तेयलिपुत्ते विपुलं असणं ४ उवक्खडावेति २ मित्तणाति जाव आमंतेइ २ जाव सम्माणेइ २ पोट्टिलं ण्हायं जाव पुरिससहस्सवाहणीयं सिबं दुरूहित्ता मित्तणाति जाव परिवुडे सव्विड्ढिए जाव रवेणं तेतलीपुरस्स मज्झंमज्झेणं जेणेव सुव्वयाणं उवस्सए तेणेव उवागच्छति २ सीयाओ पच्चोरुहति २ पोट्टिलं पुरतो कट्टु जेणेव सुव्वया अज्जा तेणेव उवागच्छति २ वंदति नमंसति २ एवं वयासी–एवं खलु देवाणुप्पिया ! मम पोट्टिला भारिया इट्ठा ५ एस णं संसारभउव्विग्गा जाव पव्वतित्तए पडिच्छंतु णं देवाणुप्पिया ! सिस्सिणिभिक्खं दलयामि, अहासुहं मा णं पडिबंधं करेह ३ । तते णं सा पोट्टिला सुव्वयाहिं अज्जाहिं एवं वुत्ता समाणा हट्ठ जाव उत्तरपुरच्छिमे दिसीभागे अवक्कमइ २ सयमेव आभरणमल्लालंकारं ओमुयति २ सयमेव पंचमुट्ठियं लोयं करेइ २ जेणेव सुव्वयाओ अज्जाओ तेणेव उवागच्छइ २ वंदति नमंसति २ एवं वयासी–आलित्ते णं भंते ! लोए एवं जहा देवाणंदा जाव एकारस अंगाइं बहूणि वासाणि सामन्नपरियागं पाउणइ २ मासियाए संलेहणाए अत्ताणं झोसेत्ता सट्ठिं भत्ताइं अणसणाए आलोइयपडिक्कंते समाहिं पत्ता कालमासे कालं किच्चा अन्नतरेसु देवलोएसु देवत्ताए उववन्ना ४ ॥ सूत्रं १०६ ॥ तते णं

से कणगरहे राया अन्नया कयाई कालधम्मुणा संजुत्ते यावि होत्था, तते णं राईसर जाव णीहरणं करेंति २ अन्नमन्नं एवं वयासी--एवं खलु देवाणुप्पिया ! कणगरहे राया रज्जे य जाव पुत्ते वियंगित्था, अम्हे णं देवाणुप्पिया ! रायाहीणा रायाहिट्ठिया रायाहीणकज्जा अयं च णं तेतली अमच्चे कणगरहस्स रन्नो सव्वट्ठाणेसु सव्वभूमियासु लद्धपच्चए दिन्नवियारे सव्वकज्जवट्टावए यावि होत्था, तं सेयं खलु अम्हं तेतलिपुत्तं अमच्चं कुमारं जाति(ति)एत्तिकट्टु अन्नमन्नस्स एयमट्ठं पडिसुणेंति २ जेणेव तेयलिपुत्ते अमच्चे तेणेव उवागच्छंति २ तेयलिपुत्तं एवं वयासी--एवं खलु देवाणुप्पिया ! कणगरहे राया रज्जे य रट्ठे य जाव वियंगेइ, अम्हे य णं देवाणुप्पिया ! रायाहीणा जाव रायाहीणकज्जा, तुमं च णं देवाणुप्पिया ! कणगरहस्स रन्नो सव्वट्ठाणेसु जाव रज्जधुराचिंतए, तं जइ णं देवाणुप्पिया ! अत्थि केइ कुमारे रायलक्खणसंपन्ने अभिसेयारिहे तण्णं तुमं अम्हं दलाहि, जा णं अम्हे महया २ रायाभिसेएणं अभिसिंचामो १ । तए णं तेतलिपुत्ते तेसिं ईसर० एतमट्ठं पडिसुणेति २ कणगज्झयं कुमारं ण्हायं जाव सस्सिरीयं करेइ २ त्ता तेसिं ईसर जाव उवणेति २ एवं वयासी--एस णं देवाणुप्पिया ! कणगरहस्स रन्नो पुत्ते पउमावतीए देवीए अत्तए कणगज्झए नामं कुमारे अभिसेयारिहे रायलक्खणसंपन्ने मए कणगरहस्स रन्नो रहसि- ययं संवड्ढिए, एयं णं तुब्भे महया २ रायाभिसेएणं अभिसिंचह, सव्वं च तेसिं उट्ठाण-परियावणियं परिकहेइ २ । तते णं ते ईसर० कणगज्झयं कुमारं महया २ अभिसिंचंति ३ । तते णं से कणगज्झए कुमारे राया जाए महया हिमवंतमलय० वण्णओ जाव रज्जं पसासेमाणे विहरइ ४ । तते णं सा पउमावती देवी कणगज्झयं रायं सद्दावेति २ एवं वयासी--एस णं पुत्ता ! तव रज्जे जाव अंतेउरे य जाव तुमं च तेतलिपुत्तस्स अमच्चस्स पहावेणं, तं तुमं णं तेतलिपुत्तं अमच्चं आढाहि परिजाणाहि सक्कारेहि

सम्माणेहि इंतं अब्भुट्ठेहि ठियं पज्जुवासाहि वच्चंतं पडिसंसाहेहि अद्धासणेणं उवणिमंतेहि भोगं च से अणुवड्ढेहि ५। तते णं से कणगज्झए पउमावतीए तहत्ति पडिसुणेति जाव भोगं च से वड्ढेति ६ ॥ सूत्रं १०७ ॥ तते णं से पोट्टिले देवे तेतलिपुत्तं अभिक्खणं २ केवलिपन्नत्ते धम्मे संबोहेति, नो चेव णं से तेतलिपुत्ते संबुज्झति, तते णं तस्स पोट्टिलदेवस्स इमेयारूवे अब्भत्थिते ५—एवं खलु कणगज्झए राया तेयलिपुत्तं आढाति जाव भोगं च संवड्ढेति तते णं से तेतली अभिक्खणं २ संबोहिज्जमाणेवि धम्मे नो संबुज्झति, तं सेयं खलु कणगज्झयं तेतलिपुत्तातो विप्परिणामेत्तएत्तिकट्टु एवं संपेहेति २ त्ता कणगज्झयं तेतलिपुत्तातो विप्परिणामेइ १। तते णं तेतलिपुत्ते कल्लं ण्हाते जाव पायच्छित्ते आसखंधवरगए बहूहिं पुरिसेहिं सद्धिं संपरिवुडे सातो गिहातो निग्गच्छति २ जेणेव कणगज्झए राया तेणेव पहारेत्थ गमणाए, तते णं तेतलिपुत्तं अमच्चं जे जहा बहवे राईसरतलवर जाव पभियओ पासंति ते तहेव आढायंति परिजाणंति अब्भुट्ठेंति २ अंजलिपरिग्गहं करेंति इट्ठाहिं कंताहिं जाव वग्गूहिं आलवेमाणा य संलवेमाणा य पुरतो य पिट्ठतो य पासतो य मग्गतो य समणुगच्छंति, तते णं से तेतलिपुत्ते जेणेव कणगज्झए तेणेव उवागच्छति, तते णं कणगज्झए तेतलिपुत्तं एज्जमाणं पासति २ नो आढाति नो परियाणाति नो अब्भुट्ठेति अणाढायमाणे ३ परम्मुहे संचिट्ठति, तते णं तेतलिपुत्ते कणगज्झयस्स रन्नो अंजलिं करेइ २। तते णं से कणगज्झए राया अणाढायमाणे तुसिणीए परम्मुहे संचिट्ठति, तते णं तेतलिपुत्ते कणगज्झयं विप्परिणयं जाणित्ता भीते जाव संजातभए एवं वयासी—रुट्ठे णं ममं कणगज्झए राया, हीणे णं मम कणगज्झए राया, अवज्झाए (दुज्झाए) णं कणगज्झए, तं ण नज्जइ णं मम केणइ कुमारेण मारेहितित्तिकट्टु भीते तत्थे य जाव सणियं २ पच्चोसक्केति २

तमेव आसखंधं दुरूहेति २ तेतलिपुरं मज्झंमज्झेणं जेणेव सए गिहे तेणेव पहारेत्थ गमणाए ३। तते णं तेयलिपुत्तं जे जहा ईसर जाव पासंति ते तहा नो आढायंति नो परियाणंति नो अब्भुट्ठेंति नो अंजलि-परिग्गहं करेंति इट्ठाहि जाव णो संलवंति नो पुरओ य पिट्ठओ य पासओ य (मग्गतो य) समणुगच्छंति ४। तते णं तेतलिपुत्ते जेणेव सए गिहे तेणेव उवागच्छति, जावि य से तत्थ बाहिरिया परिसा भवति, तंजहा–दासेति वा पेसेति वा भाइल्लएति वा सावि य णं नो आढाइ २, जाविय से अब्भितरिया परिसा भवति, तंजहा–पियाइ वा माताति वा जाव सुराहाति वा साविय णं वा नो आढाइ ३, ५। तते णं से तेतलिपुत्ते जेणेव वासघरे जेणेव सए सयणिज्जे तेणेव उवागच्छति २ सयणिज्जंसि णिसीयति २ एवं वयासी–एवं खलु अहं सयातो गिहातो निग्गच्छामि तं चेव जाव अब्भितरिया परिसा नो आढाति नो परियाणाति नो अब्भुट्ठेति, तं सेयं खलु मम अप्पाणं जीवियातो ववरोवित्तएत्तिकट्टु एवं संपेहेति २ तालउडं विसं आसगंसि पक्खिवति से य विसे णो संकमति, तते णं से तेतलिपुत्ते नीलुप्पल जाव असिं खंधे ओहरति, तत्थवि य से धारा ओप(इ)ल्ला ६। तते णं से तेतलिपुत्ते जेणेव असोगवणिया तेणेव उवागच्छति २ पासगं गीवाए बंधति २ रुक्खं दुरूहति २ पासं रुक्खे बंधति २ अप्पाणं मुयति तत्थवि य से रज्जू छिन्ना, तते णं से तेतलिपुत्ते महतिमहालयं सिलं गीवाए बंधति २ अत्थाहमतारमपोरिसियंसि उदगंसि अप्पाणं मुयति, तत्थवि से थाहे जाते, तते णं से तेतलिपुत्ते सुक्कंसि तणकूडंसि अगणिकायं पक्खिवति २ अप्पाणं मुयति तत्थवि य से अगणिकाए विज्झाए, तते णं से तेतली एवं वयासी–सद्धेयं खलु भो समणा वयंति सद्धेयं खलु भो माहणा वयंति सद्धेयं खलु भो समणा माहणा वयति, अहं एगो असद्धेयं वयामि एवं

खलु अहं सह पुत्तेहिं अपुत्ते को मेऽदं सद्दहिस्सति ? सह मित्तेहिं अमित्ते को मेऽदं सद्दहिस्सति ? एवं अत्थेणं दारेणं दासेहिं परिजणेणं ७। एवं खलु तेयलिपुत्ते णं अ० कणगज्झएणं रन्ना अवज्झाएणं समाणेणं तेयलिपुत्ते तालपुडगे विसे आसगंसि पक्खित्ते सेविय णो कमति को मेयं सद्दहिस्सति ?, तेतलिपुत्ते नीलुप्पल जाव खंधंसि ओहरिए तत्थविय से धारा ओपल्ला को मेदं सद्दहिस्सति ?, तेतलिपुत्तस्स पासगं गीवाए बंधेत्ता जाव रज्जू छिन्ना को मेदं सद्दहिस्सति ?, तेतलिपुत्ते महासिलयं जाव बंधित्ता अत्थाह जाव उदगंसि अप्पा मुक्के तत्थविय णं थाहे जाए को मेयं सद्दहिस्सति ?, तेतलिपुत्ते सुक्कंसि तणकूडे अग्गी विज्झाए को मेदं सद्दहिस्सति ?, ओहतमणसंकप्पे जाव झियाइ ८। तते णं से पोट्टिले देवे पोट्टिलारूवं विउव्वति २ तेतलिपुत्तस्स अदूरसामंते ठिच्चा एवं वयासी—हं भो ! तेतलिपुत्ता ! पुरतो पवाए पिट्ठओ हत्थिभयं दुहओ अचक्खुफासे मज्झे सराणि वरिसयंति गामे, पलित्ते रन्ने झियाति रन्ने पलित्ते गामे झियाति, आउसो ! तेतलिपुत्ता ! कओ वयामो ?, तते णं से तेतलिपुत्ते पोट्टिलं एवं वयासी—भीयस्स खलु भो ! पव्वज्जा सरणं उक्कंठियस्स सदेसगमणं छुहियस्स अन्नं तिसियस्स पाणं आउरस्स भेसज्जं माइयस्स रहस्सं अभिजुत्तस्स पच्चयकरणं अद्धाणपरिसंतस्स वाहणगमणं तरिउकामस्स पवहणं किच्चं परं अभिओजितुकामस्स सहायकिच्चं खंतस्स दंतस्स जितिंदियस्स एत्तो एगमवि ण भवति ९। तते णं से पोट्टिले देवे तेयलिपुत्तं अमच्चं एवं वयासी—सुट्ठु २ णं तुमं तेतलिपुत्ता ! एयमट्ठं आयाणिहित्तिकट्टु दोच्चंपि तच्चंपि एवं वयइ २ जामेव दिसिं पाउब्भूए तामेव दिसिं पडिगए १० ॥ सूत्रं १०८ ॥ तते णं तस्स तेयलिपुत्तस्स सुभेणं परिणामेणं जाइसरणे समुप्पन्ने, तते णं तस्स तेयलिपुत्तस्स अयमेयारूवे अब्भत्थिते ५ समुप्पज्जित्था—एवं खलु अहं इहेव जंबुद्दीवे २ महाविदेहे वासे पोक्खलावतीविजये

पोंडरीगिणीते रायहाणीए महापउमे नामं राया होत्था, तते णं अहं थेराणं अंतिए मुंडे भवित्ता जाव चोद्दस पुव्वातिं अहिज्जित्ता बहूणि वासाणि सामन्नपरियाए पालयित्ता मासियाए संलेहणाए महासुक्के कप्पे देवे, तते णं अहं तात्रो देवलोयाओ आउक्खएणं इहेव तेयलिपुरे तेयलिस्स अमच्चस्स भद्दाए भारियाए दारगत्ताए पच्चायाते, तं सेयं खलु मम पुव्वदिट्ठाइं महव्वयाइं सयमेव उवसंपज्जित्ताणं विहरित्तए १। एवं संपेहेति २ सयमेव महव्वयाइं आरुहेति २ जेणेव पमयवणे उज्जाणे तेणेव उवागच्छति २ असोग-वरपायवस्स अहे पुढवि-सिला-पट्टयंसि सुहनिसन्नस्स अणुचिंतेमाणस्स पुव्वाहीयातिं सामाइय-मातियाइं चोद्दसपुव्वाइं सयमेव अभिसमन्नागयाइं २। तते णं तस्स तेयलिपुत्तस्स अणगारस्स सुभेणं परिणामेणं जाव तयावरणिज्जाणं कम्माणं खओवसमेणं कम्मरय-विकरणकरं अपुव्वकरणं पविट्ठस्स केवलवर-णाणदंसणे समुप्पन्ने ३ ॥ सूत्रं १०१ ॥ तए णं तेतलिपुरे नगरे अहासन्निहिएहिं वाणमंतरेहिं देवेहिं देवीहि य देवदुंदुभीओ समाहयाओ दसद्धवन्ने कुसुमे निवाइए, दिव्वे गीयगंधव्वनिवाए कए यावि होत्था १। तते णं से कणगज्झए राया इमीसे कहाए लद्धट्ठे एवं वयासी—एवं खलु तेतलिमए अवज्झाते मुंडे भवित्ता पव्वतिते तं गच्छामि णं तेयलिपुत्तं अणगारं वंदामि नमंसामि २ एयमट्ठं विणएणं भुज्जो २ खामेमि, एवं संपेहेति २ ण्हाए चाउरंगिणीए सेणाए जेणेव पमयवणे उज्जाणे जेणेव तेतलिपुत्ते अणगारे तेणेव उवागच्छति २ तेतलिपुत्तं अणगारं वंदति नमंसति २ एयमट्ठं च विणएणं भुज्जो २ खामेइ नच्चासन्ने जाव पज्जुवासइ २। तते णं से तेयलिपुत्ते अणगारे कणगज्झयस्स रन्नो तीसे य महइ० धम्मं परिकहेइ, तते णं से कणगज्झए राया तेतलिपुत्तस्स केवलिस्स अंतिए धम्मं सोच्चा णिसम्म पंचाणुव्वइयं सत्तसिक्खावइयं सावगधम्मं पडिवज्जइ २ समणोवासए जाते जाव अहिगय-जीवाजीवे ३। तते णं तेतलिपुत्ते केवली

बहूणि वासाणि केवलिपरियागं पाउणित्ता जाव सिद्धे । एवं खलु जंबू ! समणेणं भगवया महावीरेणं चोद्दसमस्स नायज्झयणस्स अयमट्ठे पन्नत्तेत्ति-बेमि ४ ॥ सूत्रं ११० ॥ चउदसमं अज्झयणं समत्तं ॥

॥ इति चतुर्दशमध्ययनम् ॥ १४ ॥

॥१५॥ अथ श्रीनन्दिफलाख्यं पञ्चदशमध्ययनम् ॥

जति णं भंते ! समणेणं जाव संपत्तेणं चोद्दसमस्स नायज्झयणस्स अयमट्ठे पराणत्ते, पन्नरसमस्स णं भंते ! नायज्झयणस्स समणेणं जाव संपत्तेणं के अट्ठे पन्नत्ते ?, एवं खलु जंबु ! तेणं कालेणं २ चंपा नाम नयरी होत्था, पुन्नभद्दे चेइए जियसत्तू राया, तत्थ णं चंपाए नयरीए धणे णामं सत्थवाहे होत्था अड्ढे जाव अपरिभूए, तीसे णं चंपाए नयरीए उत्तरपुरच्छिमे दिसिभाए अहिच्छत्ता नाम नयरी होत्था, रिद्धत्थिमियसमिद्धा वन्नओ १ । तत्थ णं अहिच्छत्ताए नयरीए कणगकेउ नामं राया होत्था, महया वन्नओ २ । तस्स धणस्स सत्थवाहस्स अन्नदा कदाइ पुव्वरत्तावरत्त-कालसमयंसि इमेयारूवे अब्भत्थिते चिंतिए पत्थिए मणोगए संकप्पे समुप्पज्जित्था—सेयं खलु मम विपुलं पणियभंडमायाए अहिच्छत्तं नगरं वाणिज्जाए गमित्तए, एवं संपेहेति २ गणिमं च ४ चउव्विहं भंडं गेराहइ २ सगडीसागडं सज्जेइ २ सगडीसागडं भरेति २ कोडुंबियपुरिसे सद्दावेति २ एवं वयासी—गच्छह णं तुब्भे देवाणुप्पिया ! चंपाए नगरीए सिंघाडग जाव पहेसु एवं खलु देवाणुप्पिया ! धणे सत्थवाहे विपुले पणियभंडयाए इच्छति अहिच्छत्तं नगरं वाणिज्जाए गमित्तते, तं जो णं देवाणुप्पिया ! चरए वा चीरिए वा चम्मखंडिए वा भिच्छुंडे वा पंडुरगे वा गोतमे वा गोवतीते वा गिहिधम्मे वा गिहिधम्मचिंतए वा अविरुद्ध-विरुद्ध-वुड्ढ-सावग-रत्तपड-निग्गंथप्पभिति-पासंडत्थे वा गिहत्थे वा तस्स णं

धरणेणं सद्धिं अहिच्छत्तं नगरिं गच्छइ तस्स णं धणे अच्छत्तगस्स छत्तगं दलाइ अणुवाहणस्स उवाहणाउ दलयइ अकुंडियस्स कुंडियं दलयइ अपत्थयणस्स पत्थयणं दलयइ अपक्खेवगस्स पक्खेवं दलयइ अंतराऽविय से पडियस्स वा भग्गरु(लु)ग्गस्स साहेज्जं दलयति सुहंसुहेण य णं अहिच्छत्तं संपावेतित्तिकट्टु दोच्चंपि तच्चंपि घोसेह २ मम एयमाणत्तियं पच्चप्पिणह ३। तते णं ते कोडुंबियपुरिसा जाव एवं वयासी–हंदि सुणंतु भगवंतो चंपानगरीवत्थव्वा बहवे चरगा य जाव पच्चप्पिणंति ४। तते णं से कोडुंबिय-घोसणं सुच्चा चंपाए णयरीए बहवे चरगा य जाव गिहत्था य जेणेव धणे सत्थवाहे तेणेव उवागच्छंति तते णं धणे तेसिं चरगाण य जाव गिहत्थाण य अच्छत्तगस्स छत्तं दलयइ जाव पत्थयणं दलाति, गच्छह णं तुब्भे देवाणुप्पिया! चंपाए नयरीए बहिया अग्गुज्जाणंसि ममं पडिवालेमाणा चिट्ठह ५। तते णं चरगा य जाव गिहत्थाय धणेणं सत्थवाहेणं एवं वुत्ता समाणा जाव चिट्ठंति, तते णं धणे सत्थवाहे सोहणंसि तिहिकरणनक्खत्तंसि विपुलं असणं ४ उवक्खडावेइ २ त्ता मित्तनाई आमंतेति २ भोयणं भोयावेति २ आपुच्छति २ सगडीसागडं जोयावेति २ चंपानगरीओ निग्गच्छति णाइविप्पगिट्ठेहिं अद्धाणेहिं वसमाणे २ सुहेहिं वसहिपायरासेहिं अंगं जणवयं मज्झंमज्झेणं जेणेव देसग्गं तेणेव उवागच्छति २ सगडीसागडं मोयावेति २ सत्थणिवेसं करेति २ कोडुंबियपुरिसे सद्दावेति ३ एवं वयासी–तुब्भे णं देवाणुप्पिया! मम सत्थनिवेसंसि महया २ सद्देणं उग्घोसेमाणा २ एवं वदह–एवं खलु देवाणुप्पिया! इमीसे आगामियाए छिन्नावायाए दीहमद्धाए अडवीए बहुमज्झदेसभाए बहवे णंदिफला नामं रुक्खा पन्नत्ता किण्हा जाव पत्तिया पुप्फिया फलिया हरियरेरिज्जमाणा सिरीए अईव अतीव उवसोभेमाणा चिट्ठंति मणुण्णा वन्नेणं ४ जाव मणुन्ना फासेणं मणुन्ना छायाए, तं जो

णं देवाणुप्पिया ! तेसिं नंदिफलाणं रुक्खाणं मूलाणि वा कंदाणि वा तयाणि वा पत्ताणि वा पुप्फाणि वा फलाणि वा बीयाणि वा हरियाणि वा आहारेति छायाए वा वीसमति तस्स णं आवाए भद्दए भवति ततो पच्छा परिणममाणा २ अकाले चेव जीवियातो ववरोवेंति, तं मा णं देवाणुप्पिया! केइ तेसिं नंदिफलाणं मूलाणि वा जाव छायाए वा वीसमउ, मा णं सेऽवि अकाले चेव जीवियातो ववरोविज्जिस्सति, तुब्भे णं देवाणुप्पिया ! अन्नेसिं रुक्खाणं मूलाणि य जाव हरियाणि य आहारेथ छायासु वीसमहत्ति घोसणं घोसेह जाव पच्चप्पिणंति ६ । तते णं धणणे सत्थवाहे सगडीसागडं जोएति २ जेणेव नंदिफला रुक्खा तेणेव उवागच्छति २ तेसिं नंदिफलाणं अदूरसामंते सत्थणिवेसं करेति २ दोच्चंपि तच्चंपि कोडुंबियपुरिसे सद्दावेति २ एवं वयासी–तुब्भे णं देवाणुप्पिया ! मम सत्थनिवेसंसि महता सद्दे णं उग्घोसेमाणा २ एवं वयह–एए णं देवाणुप्पिया ! ते णंदिफला किण्हा जाव मणुन्ना छायाए तं जो णं देवाणुप्पिया ! एएसिं णंदिफलाणं रुक्खाणं मूलाणि वा कंदाणि वा पुप्फाणि वा तयाणि वा पत्ताणि वा फलाणि वा जाव अकाले चेव जीवियाओ ववरोवेंति, तं मा णं तुब्भे जाव दूरंदूरेणं परिहरमाणा वीसमह, मा णं अकाले जीवितातो ववरोविस्संति, अन्नेसिं रुक्खाणं मूलाणि य जाव वीसमहत्तिकट्टु घोसणं पच्चप्पिणंति ७ । तत्थ णं अत्थेगइया पुरिसा धणस्स सत्थवाहस्स एयमट्ठं सद्दहंति जाव रोयंति एयमट्ठं सद्दहमाणा तेसिं नंदिफलाणं दूरंदूरेण परिहरमाणा २ अन्नेसिं रुक्खाणं मूलाणि य जाव वीसमंति, तेसि णं आवाए नो भद्दए भवति, ततो पच्छा परिणममाणा २ सुहरूवत्ताए ५ भुज्जो २ परिणमंति, एवामेव समणाउसो ! जो अम्हं निग्गंथो वा २ जाव पंचसु कामगुणेसु नो सज्जेति नो रज्जेति० से णं इह भवे चेव बहूणं समणाणं ४ अच्चणिज्जे० परलोए नो आगच्छति जाव वीतीवतिस्सति, तत्थ णं जे से अप्पेगतिया

पुरिसा धरणस्स एयमट्ठं नो सद्दहंति २ धरणस्स एतमट्ठं असद्दहमाणा २ जेणेव ते नंदिफला तेणेव उवागच्छंति २ तेसिं नंदिफलाणं मूलाणि य जाव वीसमंति तेसि णं आवाए भद्दए भवति ततो पच्छा परिणममाणा जाव ववरोवेंति ८। एवामेव समणाउसो ! जो अम्हं निग्गंथो वा निग्गंथी वा पव्वतिए पंचसु कामगुणेसु सज्जेति ३ जाव अणुपरियट्टिस्सति जहा व ते पुरिसा ६। तते णं से धणे सगडीसागडं जोयावेति २ जेणेव अहिच्छत्ता नगरी तेणेव उवागच्छति २ अहिच्छत्ताए णयरीए बहिया अग्गुज्जाणे सत्थनिवेसं करेति २ सगडीसागडं मोयावेइ, तए णं से धणे सत्थवाहे महत्थं ३ रायरिहं पाहुडं गेण्हइ २ बहुपुरिसेहिं सद्धिं संपरिवुडे अहिच्छत्तं नयरं मज्झंमज्झेणं अणुप्पविसइ जेणेव कणगकेऊ राया तेणेव उवागच्छति, करयल जाव वद्धावेइ, तं महत्थं ३ पाहुडं उवणेइ १०। तए णं से कणगकेऊ राया हट्ठतुट्ठे धणस्स सत्थवाहस्स तं महत्थं ३ जाव पडिच्छइ २ धणं सत्थवाहं सक्कारेइ सम्माणेइ २ उस्सुक्कं वियरति २ पडिविसज्जेइ भंडविणिमयं करेइ २ पडिभंडं गेण्हति २ सुहंसुहेणं जेणेव चंपानयरी तेणेव उवागच्छति २ मित्तनाति-नियगसजण-संबंधिपरिजणे अभिसमन्नागते विपुलाइं माणुस्सगाइं जाव विहरति ११। तेणं कालेणं २ थेरागमणं धणे धम्मं सोच्चा जेट्ठपुत्तं कुडुंबे ठवेत्ता पव्वइए एकारस सामाइयाति अंगाति बहूणि वासाणि जाव मासियाए संलेहणाए अन्नतरेसु देवलोएसु देवत्ताए उववन्ने, महाविदेहे वासे सिज्झिहिति जाव अंतं करेति १२। एवं खलु जंबू ! समणेणं भगवया महावीरेणं पन्नरसमस्स नायज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्तेत्तिबेमि १३ ॥ सूत्रं १११ ॥ पन्नरसमं नायज्झयणं समत्तं ॥

॥ इति पञ्चदशमध्ययनम् ॥ १५ ॥

॥१६॥ अथ श्रीअपरकङ्काख्यं षोडशमध्ययनम् ॥

जति णं भंते ! समणेणं भगवया महावीरेणं जाव संपत्तेणं पन्नरसमस्स नायज्झयणस्स अयमट्ठे पन्नत्ते सोलसमस्स णं भंते ! णायज्झयणस्स णं समणेणं भगवया महावीरेण जाव संपत्तेणं के अट्ठे पण्णत्ते ?, एवं खलु जंबू ! तेणं कालेणं २ चंपा नाम नयरी होत्था, तीसे णं चंपाए नयरीए बहिया उत्तरपुरच्छिमे दिसिभाए सुभूमिभागे उज्जाणे होत्था, तत्थ णं चंपाए नयरीए तओ माहणा भातरो परिवसंति, तंजहा–सोमे सोमदत्ते सोमभूती, अड्ढा जाव रिउव्वेद ४ जाव सुपरिनिट्ठिया, तेसि णं माहणाणं तओ भारियाओ होत्था, तंजहा–नागसिरी भूयसिरी जक्खसिरी, सुकुमाल जाव तेसि णं माहणाणं इट्ठाओ विपुले माणुस्सए जाव विहरंति १। तते णं तेसिं माहणाणं अन्नया कयाई एगयओ समुवागयाणं जाव इमेयारूवे मिहो कहासमुल्लावे समुप्पज्जित्था, एवं खलु देवाणुप्पिया ! अम्हं इमे विपुले धणे जाव सावतेज्जे अलाहि जाव आसत्तमाओ कुलवंसाओ पकामं दाउं पकामं भोत्तुं पकामं परिभाएउं, तं सेयं खलु अम्हं देवाणुप्पिया ! अन्नमन्नस्स गिहेसु कल्लाकल्लिं विपुलं असणं ४ उवक्खडेउं २ परिभुंजमाणाणं विहरित्तए, अन्नमन्नस्स एयमट्ठं पडिसुणेंति, कल्लाकल्लिं अन्नमन्नस्स गिहेसु विपुणं असणं ४ उवक्खडावेंति २ परिभुंजमाणा विहरंति २। तते णं तीसे नागसिरीए माहणीए अन्नदा भोयणवारए जाते यावि होत्था, तते णं सा नागसिरी विपुलं असणं ४ उवक्खडेति २ एगं महं सालतियं तित्तालाउअं बहुसंभारसंजुत्तं णेहावगाढं उवक्खडावेति, एगं बिंदुयं करयलंसि आसाएइ तं खारं कडुयं अक्खज्जं अभोज्जं विसब्भूयं जाणित्ता एवं वयासी–धिरत्थु णं मम नागसिरीए अहन्नाए अपुन्नाए दूभगाए दूभगसत्ताए दूभगणिबोलियाए जीए णं मए सालइए बहुसंभारसंभिए नेहावगाढे उवक्खडिए सुबहुदव्वक्खएणं, नेहक्खए य

कए, तं जति णं ममं जाउयाओ जाणिस्संति तो णं मम खिंसिस्संति तं जाव ताव ममं जाउयाओ ण जाणंति ताव मम सेयं एयं सालतियं तित्तालाउ बहुसंभारणेहकयं एगंते गोवेत्तए अन्नं सालइयं महुरालाउयं जाव नेहावगाढं उवक्खडेत्तए, एवं संपेहेति २ तं सालतियं जाव गोवेइ, अन्नं सालतियं महुरालाउयं उवक्खडेइ, तेसिं माहणाणं राहायाणं जाव सुहासणवरगयाणं तं विपुलं असणं ४ परिवेसंति ३ । तते णं ते माहणा जिमितभुत्तुत्तरागया समाणा आयंता चोक्खा परमसुइभूया सकम्मसंपउत्ता जाया यावि होत्था, तते णं ताओ माहणीओ राहायाओ जाव विभूसियाओ तं विपुलं असणं ४ आहारेंति २ जेणेव सयाइं २ गेहाइं तेणेव उवागच्छंति २ सककम्म-संपउत्तातो जायातो ४ ॥ सूत्रं ११२ ॥ तेणं कालेणं २ धम्मघोसा नाम थेरा जाव बहुपरिवारा जेणेव चंपा नामं नगरी जेणेव सुभूमिभागे उज्जाणे तेणेव उवागच्छति २ अहापडिरूवं जाव विहरंति, परिसा निग्गया, धम्मो कहिओ, परिसा पडिगया १ । तए णं तेसिं धम्मघोसाणं थेराणं अंतेवासी धम्मरुई नाम अणगारे ओराले जाव तेउलेस्से मासं मासेणं खममाणे विहरति २ । तते णं से धम्मरुई अणगारे मासखमण-पारणगंमि पढमाए पोरिसीए सज्झायं करेइ २ बीयाए पोरिसीए एवं जहा गोयमसामी तहेव उग्गाहेति २ तहेव धम्मघोसं थेरं आपुच्छइ जाव चंपाए नयरीए उच्चनीयमज्झिमकुलाइं जाव अडमाणे जेणेव नागसिरीए माहणीए गिहे तेणेव अणुपविट्ठे ३ । तते णं सा नागसिरी माहणी धम्मरुइं एज्जमाणं पासति २ त्ता तस्स सालइयस्स तित्तकडुयस्स बहुसंभारसंजुत्तस्स णेहावगाढस्स निसिरणट्ठयाए हट्ठतुट्ठा उट्ठेति २ जेणेव भत्तघरे तेणेव उवागच्छति २ तं सालतियं तित्तकडुयं च बहुसंभारसंजुत्तं नेहावगाढं धम्मरुइस्स अणगारस्स पडिग्गहंसि सव्वमेव निसिरइ ४ । तते णं से धम्मरुई अणगारे अहापज्जत्तमितिकट्टु णागसिरीए माहणीए गिहातो

पडिनिक्खमति २ चंपाए नगरीए मज्झंमज्झेणं पडिनिक्खमति २ जेणेव सुभूमिभागे उज्जाणे तेणेव उवागच्छति २ जेणेव धम्मघोसा थेरा तेणेव उवागच्छइ २ धम्मघोसस्स अदूरसामंते अन्नपाणं पडिदंसेइ २ अन्नपाणं पडिलेहेइ २ अन्नपाणं करयलंसि पडिदंसेति ५। तते णं ते धम्मघोसा थेरा तस्स सालाइतस्स नेहावगाढस्स गंधेणं अभिभूया समाणा ततो सालाइयातो नेहावगाढाओ एगं बिंदुगं गहाय करयलंसि आसादेति, तित्तगं खारं कडुयं अखज्जं अभोज्जं विसभूयं जाणित्ता धम्मरुइं अणगारं एवं वदासी–जति णं तुमं देवाणुप्पिया! एयं सालइयं जाव नेहावगाढं आहारेसि तो णं तुमं अकाले चेव जीवितातो ववरोविज्जसि, तं मा णं तुमं देवाणुप्पिया! इमं सालतियं जाव आहारेसि, मा णं तुमं अकाले चेव जीविताओ ववरोविज्जसि, तं गच्छ णं तुमं देवाणुप्पिया! इमं सालतियं एगंतमणावाए अचित्ते थंडिले परिट्ठवेहि २ अन्नं फासुयं एसणिज्जं असणं ४ पडिगाहेत्ता आहारं आहारेहि ६। तते णं से धम्मरुई अणगारे धम्मघोसेणं थेरेणं एवं वुत्ते समाणे धम्मघोसस्स थेरस्स अंतियाओ पडिनिक्खमति २ सुभूमिभाग-उज्जाणाओ अदूरसामंते थंडिल्लं पडिलेहेति २ ततो सालइयातो एगं बिंदुगं गहेइ २ थंडिलंसि निसिरति, तते णं तस्स सालतियस्स तित्तकडुयस्स बहुसंभारसंजुत्तस्स नेहावगाढस्स गंधेणं बहूणि पिपीलिगासहस्साणि पाउब्भूयाणि, जा जहा य णं पिपीलिका आहारेति सा तहा अकाले चेव जीवितातो ववरोविज्जति ७। तते णं तस्स धम्मरुइस्स अणगारस्स इमेयारूवे अब्भत्थिए ५ समुप्पज्जित्था–जइ ताव इमस्स सालतियस्स जाव एगंमि बिंदुगंमि पक्खित्तंमि अणेगाति पिपीलिका-सहस्साइं ववरोविज्जंति तं जति णं अहं एयं सालइयं थंडिल्लंसि सव्वं निसिरामि तते णं बहूणं पाणाणं ४ वहकरणं भविस्सति, तं सेयं खलु ममेयं सालइयं जाव गाढं सयमेव आहारेत्तए, मम चेव एएणं सरीरेणं णिज्जाउत्तिकट्टु एवं

संपेहेति २ मुहपोत्तियं २ पडिलेहेति २ ससीसोवरियं कायं पमज्जेति २ तं सालइयं तित्तकडुय बहुनेहावगाढं बिलमिव पन्नगभूतेणं अप्पाणेणं सव्वं सरीरकोट्ठंसि पक्खिवति ८। तते णं तस्स धम्मरुइस्स तं सालइयं जाव नेहावगाढं आहारियस्स समाणस्स मुहुत्तंतरेणं परिणममाणंसि सरीरगंसि वेयणा पाउब्भूता उज्जला जाव दुरहियासा, तते णं से धम्मरुची अणगारे अथामे अबले अवीरिए अपुरिसक्कारपरक्कमे अधारणिज्जमितिकट्टु आयार-भंडगं एगंते ठवेइ २ थंडिल्लं पडिलेहेति २ दब्भसंथारगं संथारेइ २ दब्भसंथारगं दुरूहति २ पुरत्थाभिमुहे संपलियंकनिसन्ने करयलपरिग्गहियं एवं वयासी—नमोऽत्थु णं अरहंताणं जाव संपत्ताणं, णमोऽत्थु णं धम्म-घोसाणं थेराणं मम धम्मायरियाणं धम्मोवएसगाणं, पुव्विंपि णं मए धम्म-घोसाणं थेराणं अंतिए सव्वे पाणातिवाए पच्चक्खाए जावज्जीवाए जाव परिग्गहे, इयाणिंपि णं अहं तेसिं चेव भगवंताणं अंतियं सव्वं पाणाति-पातं पच्चक्खामि जाव परिग्गहं पच्चक्खामि जावजीवाए, जहा खंदओ जाव चरिमेहिं उस्सासनीसासेहिं वोसिरामित्तिकट्टु आलोइय-पडिक्कंते समाहिपत्ते कालगए ९। तते णं ते धम्मघोसा थेरा धम्मरुइं अणगारं चिरं गयं जाणित्ता समणे निग्गंथे सद्दावेंति २ एवं वयासी—एवं खलु देवाणुप्पिया! धम्मरुइस्स अणगारस्स मासखमण-पारणगंसि सालइयस्स जाव गाढस्स णिसिरणट्ठायाए बहिया निग्गते चिराति तं गच्छह णं तुब्भे देवाणुप्पिया! धम्मरुइस्स अणगारस्स सव्वतो समंता मग्गण-गवेसणं करेह १०। तते णं ते समणा निग्गंथा जाव पडिसुणेंति २ धम्मघोसाणं थेराणं अंति-याओ पडिनिक्खमंति २ धम्मरुइस्स अणगारस्स सव्वओ समंता मग्गण-गवेसणं करेमाणा जेणेव थंडिल्लं तेणेव उवागच्छंति २ धम्मरुइस्स अणगारस्स सरीरगं निप्पाणं निच्चेट्ठं जीवविप्पजढं पासंति २ हा हा अहो अकज्जमिति-कट्टु धम्मरुइस्स अणगारस्स परिनिव्वाणवत्तियं काउस्सग्गं करेंति, धम्मरुइस्स

आयारभंडगं गेराहंति २ जेणेव धम्मघोसा थेरा तेणेव उवागच्छंति २ गमणागमणं पडिक्कमंति २ एवं वयासा–एवं खलु अम्हे तुब्भं अंतियाओ पडिनिक्खमामो २ सुभूमिभागस्स उज्जाणाओ परिपेरंतेणं धम्मरुइस्स अणगारस्स सव्वं जाव करेमाणे जेणेव थंडिल्ले तेणेव उवागया २ जाव इहं हव्वमागया, तं कालगए णं भंते ! धम्मरुई अणगारे इमे से आयारभंडए ११ । तते णं ते धम्मघोसा थेरा पुव्वगए उवओगं गच्छंति २ समणे निग्गंथे निग्गंथीओ य सद्दावेंति २ एवं वयासी–एवं खलु अज्जो ! मम अंतेवासी धम्मरुची नाम अणगारे पगइभद्दए जाव विणीए मासंमासेणं अणिक्खित्तेणं तवोकम्मेणं जाव नागसिरीए माहणीए गिहे अणुपविट्ठे, तए णं सा नागसिरी माहणी जाव निसिरइ, तए णं से धम्मरुई अणगारे अहापज्जत्तमितिकट्टु जाव कालं अणवकंखेमाणे विहरति, से णं धम्मरुई अणगारे बहूणि वासाणि सामन्नपरियागं पाउणित्ता आलोइयपडिक्कंते समाहिपत्ते कालमासे कालं किच्चा उड्ढं सोहम्मजाव सव्वट्ठसिद्धे महाविमाणे देवत्ताए उववन्ने, तत्थ णं अजहराणमणुक्कोसेणं तेत्तीसं सागरोवमाइं ठिती पन्नत्ता, तत्थ धम्मरुइस्सवि देवस्स तेत्तीसं सागरोवमाइं ठिती पराणत्ता, से णं धम्मरुई देवे ताओ देवलोगाओ जाव महाविदेहे वासे सिज्झिहिति १२ ॥ सूत्रं ११३ ॥ तं धिरत्थु णं अज्जो ! णागसिरीए माहणीए अधन्नाए अपुन्नाए जाव णिंबोलियाए जाए णं तहारूवे साहू धम्मरुई अणगारे मासखमण-पारणगंसि सालाइएणं जाव गाढेणं अकाले चेव जीवितातो ववरोविए १ । तते णं ते समणा निग्गंथा धम्मघोसाणं थेराणं अंतिए एतमट्ठं सोच्चा णिसम्म चंपाए सिंघाडग-तिग जाव बहुजणस्स एवमातिक्खंति–धिरत्थु णं देवाणुप्पिया ! नागसिरीए माहणीए जाव णिंबोलियाए जाए णं तहारूवे साहू साहूरूवे सालतिएणं जीवियाओ ववरोविए २ । तए णं तेसिं समणाणं अंतिए एयमट्ठं सोच्चा णिसम्म बहुजणो अन्नमन्नस्स एवमातिक्खति एवं भासति–धिरत्थु णं नागसिरीए माहणीए जाव जीवियाओ ववरो-

विते ३ । तते णं ते माहणा चंपाए नयरीए बहुजणस्स अंतिए एतमट्ठं सोच्चा निसम्म आसुरुत्ता जाव मिसिमिसेमाणा जेणेव नागसिरी माहणी तेणेव उवागच्छंति २ णागसिरिं माहणिं एवं वदासी–हं भो ! नागसिरी ! अपत्थियपत्थिए दुरंतपंतलक्खणे हीणपुण्णचाउद्दसे धिरत्थु णं तव अधन्नाए अपुन्नाए जाव णिंबोलियाते जाए णं तुमे तहारूवे साहू साहुरूवे मासखमणपारणगंसि सालतिएणं जाव ववरोविते, उच्चावएहिं अक्कोसणाहिं अक्कोसंति, उच्चावयाहिं उद्धंसणाहिं उद्धंसेंति, उच्चावयाहिं णिब्भत्थणाहिं णिब्भत्थंति, उच्चावयाहिं णिच्छोडणाहिं निच्छोडेंति तज्जेंति तालेंति तज्जेत्ता तालेत्ता सयातो गिहातो निच्छुभंति ४ । तते णं सा नागसिरी सयातो गिहातो निच्छूढा समाणी चंपाए नगरीए सिंघाडग-तिय-चउक्क-चच्चर-चउम्मुह-महापहपहेसु बहुजणेणं हीलिज्जमाणी खिंसिज्जमाणी निंदिज्जमाणी गरहिज्जमाणी तज्जिज्जमाणी पव्वहिज्जमाणी धिक्कारिज्जमाणी थुक्कारिज्जमाणी कत्थइ ठाणं वा निलयं वा अलभमाणी २ दंडीखंडनिवसणा खंड-मल्लय-खंडघडग-हत्थगया फुट्टह-डाहड-सीसा मच्छिया-चडगरेणं अन्निज्जमाणमग्गा गेहंगेहेणं देहंबलियाए वित्तिं कप्पेमाणी विहरति ५ । तते णं तीसे नागसिरीए माहणीए तब्भवंसि चेव सोलस रोयायंका पाउब्भूया, तंजहा–सासे कासे जोणिसूले जाव कोढे. तए णं सा नागसिरी माहणी सोलसहिं रोयायंकेहिं अभिभूता समाणी अट्टदुहट्टवसट्टा कालमासे कालं किच्चा छट्ठीए पुढवीए उक्कोसेणं बावीस-सागरोवम-ट्ठितीएसु नरएसु नेरइयत्ताते उववन्ना ६ । सा णं तओऽणंतरंसि उव्वट्टित्ता मच्छेसु उववन्ना, तत्थ णं सत्थवज्झा दाहवक्कंतिए कालमासे कालं किच्चा अहेसत्तमीए पुढवीए उक्कोसाए तित्तीसं सागरोवम-ट्ठितीएसु नेरइएसु उववन्ना, सा णं ततोऽणंतरं उव्वट्टित्ता दोच्चंपि मच्छेसु उववज्जति, तत्थवि य णं सत्थवज्झा दाहवक्कंतीए दोच्चंपि अहे सत्तमीए पुढवीए उक्कोसं तेत्तीस-सागरोवम-ट्ठितीएसु नेरइएसु उववज्जति, सा णं

तओहिंतो जाव उव्वट्टित्ता तच्चंपि मच्छेसु उववन्ना, तत्थवि य णं सत्थवज्झा जाव कालं किच्चा दोच्चंपि छट्ठीए पुढवीए उक्कोसेणं बावीस सागरोवमट्ठितीएसु नेरइएसु उववज्जति, तओऽणंतर उव्वट्टित्ता नरएसु एवं जहा गोसाले तहा नेयव्वं जाव रयणप्पभाए सत्तसु उववन्ना, ततो उव्वट्टित्ता जाव इमाइं खहयर-विहाणाइं जाव अदुत्तरं च णं खर-बायर-पुढविकाइयत्ताते तेसु अणेगसतसहस्स खुत्तो ७ ॥ सूत्रं ११४ ॥ सा णं तओऽणंतरं उव्वट्टित्ता इहेव जंबुद्दीवे दीवे भारहे वासे चंपाए नयरीए सागरदत्तस्स सत्थवाहस्स भद्दाए भारियाए कुच्छिंसि दारियत्ताए पच्चायाया १ । तते णं सा भद्दा सत्थवाही णवण्हं मासाणं दारियं पयाया सुकुमालकोमलियं गयतालुयसमाणं, तीसे दारियाए निव्वत्ते बारसाहियाए अम्मापियरो इमं एतारूवं गोन्नं गुणनिप्फन्नं नामधेज्जं करेंति—जम्हा णं अम्हं एसा दारिया सुकुमाला गयतालुयसमाणा तं होउ णं अम्हं इमीसे दारियाए नामधेज्जे सुकुमालिया, तते णं तीसे दारियाए अम्मापितरो नामधेज्जं करेंति सूमालियत्ति २ । तए णं सा सूमालिया दारिया पंचधाईपरिग्गहिया तंजहा—खीरधाईए जाव गिरिकंदरमल्लीणा इव चंपकलया निव्वाए निव्वाघायंसि जाव परिवड्ढइ, तते णं सा सूमालिया दारिया उम्मुक्कबालभावा जाव रूवेण य जोव्वणेण य लावण्णेण य उक्किट्ठा उक्किट्ठसरीरा जाता यावि होत्था ३ ॥ सूत्रं ११५ ॥

तत्थ णं चंपाए नयरीए जिणदत्ते नाम सत्थवाहे अड्ढे०, तस्स णं जिणदत्तस्स भद्दा भारिया सूमाला इट्ठा जाव माणुस्सए कामभोए पच्चणुब्भवमाणा विहरती १ । तस्स णं जिणदत्तस्स पुत्ते भद्दाए भारियाए अत्तए सागरए नामं दारए सुकुमाले जाव सुरूवे २ । तते णं से जिणदत्ते सत्थवाहे अन्नदा कदाई सातो गिहातो पडिनिक्खमति २ सागरदत्तस्स गिहस्स अदूरसामंतेणं वीतीवयइ इमं च णं सूमालिया दारिया ण्हाया चेडियासंघपरिवुडा उप्पिं आगासतलगंसि कणगतेंदूसएणं कीलमाणी २

विहरति ३। तते णं से जिणदत्ते सत्थवाहे सूमालियं दारियं पासति २ सूमालियाए दारियाए रूवे य ३ जायविम्हए कोडुंबियपुरिसे सद्दावेति २ एवं वयासी—एस णं देवाणुप्पिया! कस्स दारिया किं वा णामधेज्जं से?, तते णं ते कोडुंबियपुरिसा जिणदत्तेणं सत्थवाहेणं एवं वुत्ता समाणा हट्ठ करयल जाव एवं वयासी—एस णं देवाणुप्पिया! सागरदत्तस्स सत्थवाहस्स धूया भद्दाए अत्तया सूमालिया नाम दारिया सुकुमालपाणिपाया जाव उक्किट्ठा उक्किट्ठसरीरा जाता यावि होत्था ४। तते णं से जिणदत्ते सत्थवाहे तेसिं कोडुंबियाणं अंतिए एयमट्ठं सोच्चा जेणेव सए गिहे तेणेव उवागच्छति २ एहाए जाव मित्तनाइपरिवुडे चंपाए नयरीए जेणेव सागरदत्तस्स गिहे तेणेव उवागच्छइ, तए णं सागरदत्ते सत्थवाहे जिणदत्तं सत्थवाहं एज्जमाणं पासइ एज्जमाणं पासइत्ता आसणाओ अब्भुट्ठेइ २ त्ता आसणेणं उवणिमंतेति २ आसत्थं वीसत्थं सुहासणवरगयं एवं वयासी—भण देवाणुप्पिया! किमागमण-पओयणं? ५। तते णं से जिणदत्ते सत्थवाहे सागरदत्तं सत्थवाहं एवं वयासी—एवं खलु अहं देवाणुप्पिया! तव धूयं भद्दाए अत्तियं सूमालियं सागरस्स भारियत्ताए वरेमि, जति णं जाणाह देवाणुप्पिया! जुत्तं वा पत्तं वा सलाहणिज्जं वा सरिसो वा संजोगो ता दिज्जउ णं सूमालिया सागरस्स, तते णं देवाणुप्पिया! किं दलयामो सुंकं सूमालियाए?, तए णं से सागरदत्ते तं जिणदत्तं एवं वयासी—एवं खलु देवाणुप्पिया! सूमालिया दारिया मम एगा एगजाया इट्ठा जाव किमंग पुण पासणयाए तं नो खलु अहं इच्छामि सूमालियाए दारियाए खणमवि विप्पओगं, तं जति णं देवाणुप्पिया! सागरदारए मम घरजामाउए भवति तो णं अहं सागरस्स दारगस्स सूमालियं दलयामि ६। तते णं से जिणदत्ते सत्थवाहे सागरदत्तेणं सत्थवाहेणं एवं वुत्ते समाणे जेणेव सए गिहे तेणेव उवागच्छइ २ सागरदारगं सद्दावेति २ एवं वयासी—एवं खलु पुत्ता! सागरदत्ते

सत्थवाहे मम एवं वयासी—एवं खलु देवाणुप्पिया ! सूमालिया दारिया इट्ठा तं चेव तं जति णं सागरदारए मम घरजामाउए भवइ ता दलयामि, तते णं से सागरए दारए जिणदत्तेणं सत्थवाहेणं एवं वुत्ते समाणे तुसिणीए ७। तते णं जिणदत्ते सत्थवाहे अन्नदा कदाइ सोहणंसि तिहिकरणे विउलं असणं ४ उवक्खडावेति २ मित्तणाई-नियगसजण-संबंधि-परिजणं आमंतेइ जाव सम्माणित्ता सागरं दारगं राहायं जाव सव्वालंकारविभूसियं करेइ २ पुरिस-सहस्सवाहिणिं सीयं दुरूहावेति २ मित्तणाइ जाव संपरिवुडे सव्विड्ढीए सातो गिहाओ निग्गच्छति २ चंपानयरिं मज्झंमज्झेणं जेणेव सागरदत्तस्स गिहे तेणेव उवागच्छति २ सीयाओ पच्चोरुहति २ सागरगं दारगं सागर-दत्तस्स सत्थवाहस्स उवणेति ८। तते णं सागरदत्ते सत्थवाहे विपुलं असणं ४ उवक्खडावेइ २ जाव सम्माणेत्ता सागरगं दारगं सूमालियाए दारियाए सद्धिं पट्टयं दुरूहावेइ २ सेयापीतएहिं कलसेहिं मज्जावेति २ होमं करावेति २ सागरं दारयं सूमालियाए दारियाए पाणिं गेराहावेति ९ ॥ सूत्रं ११६ ॥

तते णं सागरदारए सूमालियाए दारियाए इमं एयारूवं पाणिफासं पडिसंवेदेति से जहा नाम ए असिपत्ते इ वा जाव मुम्मुरे इ वा इतो अणिट्ठतराए चेव पाणिफासं पडिसंवेदेति, तते णं से सागरए अकामए अवसव्वसे तं मुहुत्तमित्तं संचिट्ठति, तते णं से सागरदत्ते सत्थवाहे सागरस्स दारगस्स अम्मापियरो मित्तणाइ विउलं असणं ४ पुप्फवत्थ जाव सम्माणेत्ता पडिवि-सज्जति १। तते णं सागरए दारए सूमालियाए सद्धिं जेणेव वासघरे तेणेव उवागच्छति २ सूमालियाए दारियाए सद्धिं तलिगंसि निवज्जइ, तते णं ते सागरए दारए सूमालियाए दारियाए इमं एयारूवं अंगफासं पडिसंवेदेति, से जहा नामए असिपत्तेइ वा जाव अमणामयरागं चेव अंगफासं पच्चणुब्भ-वमाणे विहरति, तते णं से सागरए अंगफासं असहमाणे अवसव्वसे मुहुत्तमित्तं संचिट्ठति, तते णं से सागरदारए सूमालियं दारियं सुहपसुत्तं

जाणित्ता सूमालियाए दारियाए पासाउ उट्ठेति २ जेणेव सए सयणिज्जे तेणेव उवागच्छति २ सयणीयंसि निवज्जइ २। तते णं सूमालिया दारिया तओ मुहुत्तंतरस्स पडिबुद्धा समाणी पतिव्वया पइमणुरत्ता पतिं पासे अपस्समाणी तलिमाउ उट्ठेति २ जेणेव से सयणिज्जे तेणेव उवागच्छति २ सागरस्स पासे णुवज्जइ, तते णं से सागरदारए सूमालियाए दारियाए दुच्चंपि इमं एयारूवं अंगफासं पडिसंवेदेति जाव अकामए अवसव्वसे मुहुत्तमित्तं संचिट्ठति, तते णं से सागरदारए सूमालियं दारियं सुहपसुत्तं जाणित्ता सयणिज्जाओ उट्ठेइ २ वासघरस्स दारं विहाडेति २ मारामुक्के विव काए जामेव दिसिं पाउब्भूए तामेव दिसिं पडिगए ३ ॥ सूत्रं ११७॥ तते णं सूमालिया दारिया ततो मुहुत्तंतरस्स पडिबुद्धा पतिव्वया जाव अपासमाणी सयणिज्जाओ उट्ठेति सागरस्स दारगस्स सव्वतो समंता मग्गणगवेसणं करेमाणी २ वासघरस्स दारं विहाडियं पासइ २ एवं वयासी–गए से सागरेत्तिकट्टु ओहयमणसंकप्पा जाव झियायइ १। तते णं सा भद्दा सत्थवाही कल्लं पाउप्पभायाए दासचेडियं सद्दावेति २ एवं वयासी–गच्छह णं तुमं देवाणुप्पिए! वहुवरस्स मुहसोहणियं उवणेहि, तते णं सा दासचेडी भद्दाए एवं वुत्ता समाणी एयमट्ठं तहत्ति पडिसुणेति, मुहधोवणियं गेण्हति २ जेणेव वासघरे तेणेव उवागच्छति २ सूमालियं दारियं जाव झियायमाणिं पासति २ एवं वयासी–किन्नं तुमं देवाणुप्पिया! ओहयमणसंकप्पा जाव झियाहिसि २। तते णं सा सूमालिया दारिया तं दासचेडीयं एवं वयासी–एवं खलु देवाणुप्पिया! सागरए दारए मम सुहपसुत्तं जाणित्ता मम पासाओ उट्ठेति २ वासघरदुवारं अवगुणेति जाव पडिगए, तते णं ततो अहं मुहुत्तंतरस्स जाव विहाडियं पासामि, गए णं से सागरएत्तिकट्टु ओहयमण जाव झियायामि ३। तते णं सा दासचेडी सूमालियाए दारियाए एयमट्ठं सोचा जेणेव सागरदत्ते तेणेव उवा-

गच्छइ २ त्ता सागरदत्तस्स एयमट्ठं निवेएइ, तते णं से सागरदत्ते दास-चेडीए अंतिए एयमट्ठं सोच्चा निसम्म आसुरुत्ते जेणेव जिणदत्तसत्थवाह-गिहे तेणेव उवागच्छति २ जिणदत्तसत्थवाहं एवं वयासी—किराणं देवाणुप्पिया ! एवं जुत्तं वा पत्तं वा कुलाणुरूवं वा कुलसरिसं वा जन्नं सागरदारए सूमालियं दारियं अदिट्ठदोसं पइवयं विप्पजहाय इहमागओ बहूहिं खिज्जणियाहि य रुंटणियाहि य उवालभति ४। तए णं जिणदत्ते सागरदत्तस्स एयमट्ठं सोच्चा जेणेव सागरए दारए तेणेव उवागच्छति २ सागरयं दारयं एवं वयासी—दुट्ठु णं पुत्ता ! तुमे कयं सागरदत्तस्स गिहाओ इहं हव्वमागते, तेणं तं गच्छह णं तुमं पुत्ता ! एवमवि गते सागरदत्तस्स गिहे, तते णं से सागरए जिणदत्तं एवं वयासी—अवि याति अहं ताओ ! गिरिपडणं वा तरुपडणं वा मरुप्पवायं वा जलप्पवेसं वा विसभक्खणं वा वेहाणसं वा सत्थोवाडणं वा गिद्धापिट्ठं वा पव्वज्जं वा विदेसगमणं वा अब्भुवगच्छिज्जामि नो खलु अहं सागरदत्तस्स गिहं गच्छिज्जा ५। तते णं से सागरदत्ते सत्थवाहे कुड्डंतरिए सागरस्स एयमट्ठं निसामेति २ लज्जिए विलीए विड्डे जिणदत्तस्स गिहातो पडिनिक्खमइ जेणेव सए गिहे तेणेव उवागच्छति २ सुकुमालियं दारियं सद्दावेइ २ अंके निवेसेइ २ एवं वयासी—किराणं तव पुत्ता ! सागरएणं दारएणं मुक्का ?, अहं णं तुमं तस्स दाहामि जस्स णं तुमं इट्ठा जाव मणामा भविस्ससित्ति सूमालियं दारियं ताहिं इट्ठाहिं वग्गूहिं समासासेइ २ पडिविसज्जेइ ६। तए णं से सागरदत्ते सत्थवाहे अन्नया उप्पिं आगासतलगंसि सुहनिसण्णे रायमग्गं ओलोएमाणे २ चिट्ठति, तते णं से सागरदत्ते एगं महं दमगपुरिसं पासइ *दंडिखंड-निवसणं खंडग-मल्लग-घडग-हत्थगयं मच्छिया-सहस्सेहिं* जाव *अन्निज्जमाणमग्गं* ७। तते णं से सागरदत्ते कोडुंबियपुरिसे सद्दावेति २ एवं वयासी—तुब्भे णं देवाणुप्पिया ! एयं दमगपुरिसं विउलेणं असणं

पाणखाइम-साइमेणं पलोभेहि २ गिहं अणुप्पवेसेह २ खंडगमल्लगं खंडघडगं ते एगंते एडेह २ अलंकारियकम्मं कारेह २ एहायं कयबलि-कम्मं जाव सव्वालंकार-विभूसियं करेह २ मणुराणं असणां ४ भोयावेह २ मम अंतियं उवणेह, तए णं कोडुंबियपुरिसा जाव पडिसुणेंति २ जेणेव से दमगपुरिसे तेणेव उवागच्छंति २ त्ता तं दमगं असणं उवप्प-लोभेंति २ त्ता सयं गिहं अणुपवेसिंति २ तं खंडगमल्लगं खंडगघडगं च तस्स दमगपुरिसस्स एगंते एडंति ८। तते णं से दमगे तं खंडमल्लगंसि खंडघडगंसि य एगंते एडिज्जमाणंसि महया २ सद्देणं आरसति, तए णं से सागरदत्ते तस्स दमगपुरिसस्स तं महया २ आरसिसयसद्दं सोच्चा निसम्म कोडुंबियपुरिसे एवं वयासी—किराणं देवाणुप्पिया! एस दमगपुरिसे महया २ सद्देणं आरसति?, तते णं कोडुंबियपुरिसा एवं वयासी—एस णं सामी! तंसि खंडमल्लगंसि खंडघडगंसि एगंते एडिज्जामाणंसि महया २ सद्देणं आरसइ ९। तते णं से सागरदत्ते सत्थवाहे ते कोडुंबिय-पुरिसे एवं वयासी—मा णं तुब्भे देवाणुप्पिया! एयस्स दमगस्स तं खंड जाव एडेह पासे ठवेह जहा णं पत्तियं भवति, तेवि तहेव ठवेंति, तए णं ते कोडुंबियपुरिसा तस्स दमगस्स अलंकारियकम्मं करेंति २ सयपाग-सहस्सपागेहिं तिल्लेहिं अब्भंगेंति अब्भंगिए समाणे सुरभिगंधुव्वट्टणेणं गायं उव्वट्टिंति २ उसिणोदग-गंधोदएणं सीतोदगेणं एहाणेंति पम्हल-सुकुमाल-गंध-कासाईए गायाइं लूहंति २ हंसलक्खणं पट्ट(पडग)साडगं परिहंति २ सव्वालंकार-विभूसियं करेंति २ विउलं असणं ४ भोयावेंति २ सागरदत्तस्स उवणेन्ति, तए णं सागरदत्ते सूमालियं दारियं एहायं जाव सव्वालंकारभूसियं करित्ता तं दमगपुरिसं एवं वयासी—एस णं देवाणु-प्पिया! मम धूया इट्ठा एयं णं अहं तव भारियत्ताए दलामि भद्दियाए भद्दतो भविज्जासि १०। तते णं से दमगपुरिसे सागरदत्तस्स एयमट्ठं पडिसुणेंति

२ सूमालियाए दारियाए सद्धिं वासघरं अणुपविसति सूमालियाए दारियाए सद्धिं तलिगंसि निवज्जइ, तते णं से दमगपुरिसे सूमालियाए इमं एयारूवं अंगफासं पडिसंवेदेति, सेसं जहा सागरस्स जाव सयणिज्जाओ अब्भु(पच्चु)-ट्ठेति २ वासघराओ निग्गच्छति २ खंडमल्लगं खंडघडं च गहाय मारामुक्के विव काए जामेव दिसिं पाउब्भूए तामेव दिसिं पडिगए, तते णं सा सूमालिया जाव गए णं से दमगपुरिसेत्तिकट्टु ओहयमण जाव झियायति ११ ॥ सूत्रं ११८ ॥ तते णं सा भद्दा कल्लं पाउप्पभायाए दासचेडिं सद्दावेति २ एवं वयासी—जाव सागरदत्तस्स एयमट्ठं निवेदेति, तते णं से सागरदत्ते तहेव संभंते समाणे जेणेव वासहरे तेणेव उवागच्छति २ सूमालियं दारियं अंके निवेसेति २ एवं वयासी—अहो णं तुमं पुत्ता ! पुरापोराणाणं जाव पच्चणुब्भवमाणी विहरसि तं मा णं तुमं पुत्ता ! ओहयमण जाव झियाहि तुमं णं पुत्ता ! मम महाणसंसि विपुलं असणं ४ जहा पुट्टिला जाव परिभाएमाणी विहराहि, तते णं सा सूमालिया दारिया एयमट्ठं पडिसुणेति २ महाणसंसि विपुलं असणं जाव दलमाणी दवावेमाणी विहरइ १ । तेणं कालेणं २ गोवालियाओ अज्जाओ बहुस्सुयाओ एवं जहेव तेयलिणाए सुव्वयाओ तहेव समोसढ्ढाओ तहेव संघाडओ जाव अणुपविट्ठे तहेव जाव सूमालिया पडिलाभित्ता एवं वदासी—एवं खलु अज्जाओ ! अहं सागरस्स अणिट्ठा जाव अमणामा नेच्छइ णं सागरए मम नामं वा जाव परिभोगं वा, जस्स २ वि य णं दिज्जामि तस्स २ वि य णं अणिट्ठा जाव अमणामा भवामि, तुब्भे य णं अज्जाओ ! बहुनायाओ एवं जहा पुट्टिला जाव उवलद्धे जे णं अहं सागरस्स दारगस्स इट्ठा कंता जाव भवेज्जामि, अज्जाओ ! तहेव भणंति तहेव साविया जाया तहेव चिंता तहेव सागरदत्तं सत्थवाहं आपुच्छति जाव गोवालियाणं अंतिए पव्वइया २ । तते णं सा सूमालिया अज्जा जाया ईरियासमिया जाव बंभयारिणी

तए णं से दूए ण्हाते जाव अलंकार-विभूसिए सरीरे चाउग्घंटं आसरहं दुरुहइ २ बहुहिं पुरिसेहिं सन्नद्ध जाव गहियाऽऽउहपहरणेहिं सद्धिं संपरिवुडे कंपिल्लपुरं नगरं मज्झंमज्झेणं निग्गच्छति, पंचालजणवयस्स मज्झंमज्झेणं जेणेव देसप्पंते तेणेव उवागच्छइ, सुरट्ठाजणवयस्स मज्झंमज्झेणं जेणेव बारवती नगरी तेणेव उवागच्छइ २ बारवइं नगरिं मज्झंमज्झेणं अणुपविसइ २ जेणेव कण्हस्स वासुदेवस्स बाहिरिया उवट्ठाणसाला तेणेव उवागच्छइ २ त्ता चाउग्घंटं आसरहं ठवेइ २ रहाओ पच्चोरुहति २ मणुस्स-वग्गुरा-परिक्खित्ते पायचार-विहारचारेणं जेणेव कण्हे वासुदेवे तेणेव उवागच्छति २ कण्हं वासुदेवं समुद्दविजय-पामुक्खे य दस दसारे जाव बलवग-साहस्सीओ करयल तं चेव जाव समोसरह २। तते णं से कण्हे वासुदेवे तस्स दूयस्स अंतिए एयमट्ठं सोचा निसम्म हट्ठ जाव हियए तं दूयं सकारेइ सम्माणेइ २ पडिविसज्जेइ ३। तए णं से कण्हे वासुदेवे कोडुंबियपुरिसं सद्दावेइ २ एवं वयासी—गच्छाहि णं तुमं देवाणुप्पिया ! सभाए सुहम्माए सामुदाइयं भेरिं तालेहि, तए णं से कोडुंबियपुरिसे करयल जाव कण्हस्स वासुदेवस्स एयमट्ठं पडिसुणेति २ जेणेव सभाए सुहम्माए सामुदाइया भेरी तेणेव उवागच्छइ २ सामुदाइयं भेरिं महया २ सद्देणं तालेइ, तए णं ताए सामुदाइयाए भेरीए तालियाए समाणीए समुद्दविजयपामोक्खा दस दसारा जाव महसेणपामुक्खाओ छप्पणणं बलवगसाहस्सीओ ण्हाया जाव विभूसिया जहा विभव-इड्ढि-सक्कार-समुदएणं अप्पेगइया हयगया जाव पायविहारचारेणं जेणेव कण्हे वासुदेवे तेणेव उवागच्छंति २ करयल जाव कण्हं वासुदेवं जएणं विजएणं वद्धावेंति, तए णं से कण्हे वासुदेवे कोडुंबियपुरिसे सद्दावेति २ एवं वयासी—खिप्पामेव भो ! देवाणुप्पिया ! अभिसेक्कं हत्थिरयणं पडिकप्पेह हयगय जाव पच्चप्पिणंति ४। तते णं से कण्हे वासुदेवे जेणेव

मज्जणघरे तेणेव उवागच्छति २ समुत्तजालाकुलाभिरामे जाव अंजणगिरि-कूडसन्निभं गयवरं नरवई दुरूढे, तते णं से कराहे वासुदेवे समुद्दविजय-पामुक्खेहिं दसहिं दसारेहिं जाव अणंगसेणा-पामुक्खेहिं अणेगाहिं गणिया-साहस्सीहिं सद्धिं संपरिवुडे सव्विड्ढीए जाव रवेणं बारवइनयरिं मज्झं-मज्झेणं निग्गच्छइ २ सुरट्ठाजणवयस्स मज्झंमज्झेणं जेणेव देसप्पंते तेणेव उवागच्छइ २ पंचालजणवयस्स मज्झंमज्झेणं जेणेव कंपिल्लपुरे नयरे तेणेव पहारेत्थगमणाए ५। तए णं से दुवए राया दोच्चं दूयं सद्दावेइ २ एवं वयासी—गच्छ णं तुमं देवाणुप्पिया! हत्थिणाउरं नगरं तत्थ णं तुमं पंडुरायं सपुत्तयं जुहिट्ठिल्लं भीमसेणं अज्जुणं नउलं सहदेवं दुज्जोहणं भाइसय-समग्गं गंगेयं विदुरं दोणं जयद्दहं सउणीं कीवं आस-त्थामं करयल जाव कट्टु तहेव समोसरह, तए णं से दूए एवं वयासी—जहा वासुदेवे नवरं भेरा नत्थि जाव जेणेव कंपिल्लपुरे नयरे तेणेव पहारेत्थ गमणाए २, ६। एएणेव कमेणं तच्चं दूयं चंपानयरिं, तत्थ णं तुमं कराहं अंगरायं सेल्लं नंदिरायं करयल तहेव जाव समोसरह, चउत्थं दूयं सुत्तिमइं नयरिं, तत्थं णं तुमं सिसुपालं दमघोससुयं पंचभाइसयसंप-रिवुडं करयल तहेव जाव समोसरह, पंचमगं दूयं हत्थसीसनयरं, तत्थ णं तुमं दमदंतं रायं करयल तहेव जाव समोसरह, छट्ठं दूयं महुरं नयरिं, तत्थ णं तुमं धरं रायं करयल जाव समोसरह, सत्तमं दूयं रायगिहं नगरं, तत्थ णं तुमं सहदेवं जरासिंधुसुयं करयल जाव समोसरह, अट्ठमं दूयं कोडिराणं नयरं, तत्थ णं तुमं रूप्पिं भेसगसुयं करयल तहेव जाव समो-सरह, नवमं दूयं विराडनयरं तत्थ णं तुमं कियगं भाउसयसमग्गं करयल जाव समोसरह, दसमं दूयं अवसेसेसु य गामागर-नगरेसु अणेगाइं राय-सहस्साइं जाव समोसरह ७। तए णं से दूए तहेव निग्गच्छइ जेणेव गामागर जाव समोसरह। तए णं ताइं अणेगाइं रायसहस्साइं तस्स

दूयस्स अंतिए एयमट्ठं सोचा निसम्म हट्ठतुट्ठाइं तं दूयं सकारेंति २ सम्माणेंति २ पडिविसज्जिंति ७। तए णं ते वासुदेवपामुक्खा बहवे रायसहस्सा पत्तेयं २ एहाया सन्नद्ध-हत्थिखंध-वरगया हयगयरह-पवर-जोह-कलियाए महया भड-चडगर-रह-पहकर० सएहिं २ नगरेहिंतो अभिनिग्गच्छंति २ जेणेव पंचाले जणवए तेणेव पहारेत्थ गमणाए ८ ॥ सूत्रं १२३ ॥ तए णं से दुवए राया कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ २ एवं वयासी—गच्छह णं तुमं देवाणुप्पिया ! कंपिल्लपुरे नयरे बहिया गंगाए महानदीए अदूरसामंते एगं महं सयंवरमंडवं करेह अणेगखंभसयसंनिविट्ठं लीलट्ठियसालभंजिआगं जाव पच्चप्पिणंति १। तए णं से दुवए राया कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ २ एवं वयासी—खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया ! वासुदेव-पामुक्खाणं बहूणं राय-सहस्साणं आवासे करेह तेवि करेत्ता पच्चप्पिणंति २। तए णं दुवए वासु-देवपामुक्खाणं बहूणं रायसहस्साणं आगमं जाणेत्ता पत्तेयं २ हत्थिखंध जाव परिवुडे अग्घं च पज्जं च गहाय सव्विड्ढिए कंपिल्लपुराओ निग्गच्छइ २ जेणेव ते वासुदेवपामुक्खा बहवे रायसहस्सा तेणेव उवागच्छइ २ ताइं वासुदेवपामुक्खाइं अग्घेण य पज्जेण य सकारेति सम्माणेइ २ तेसिं वासुदेवपामुक्खाणं पत्तेयं २ आवासे वियरति ३। तए णं ते वासुदेव-पामोक्खा जेणेव सया २ आवासा तेणेव उवागच्छंति २ हत्थिखंधाहिंतो पच्चोरु-हंति २ पत्तेयं खंधावारनिवेसं करेंति २ सए २ आवासे अणुपविसंति २ सएसु २ आवासेसु आसणेसु य सयणेसु य सन्निसन्ना य संतुयट्टा य बहूहिं गंधव्वेहि य नाडएहि य उवगिज्जमाणा य उवणच्चिज्जमाणा य विहरंति ४। तते णं से दुवए राया कंपिल्लपुरं नगरं अणुपविसति २ विउलं असणं ४ उवक्खडावेइ २ कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ २ एवं वयासी—गच्छह णं तुब्भे देवाणुप्पिया ! विउलं असणं ४ सुरं च मज्जं च मंसं च सीधुं च पसण्णं च सुबहु-पुप्फ-वत्थ-गंध-मल्लालंकारं च वासुदेवपामो-

क्खाणं रायसहस्साणं आवासेसु साहरह, तेवि साहरंति, तते णं ते वासुदेव-पामुक्खा तं विपुलं असणं ४ जाव पसन्नं च आसाएमाणा ४ विहरंति, जिमिय-भुत्तुत्तरागयाविय णं समाणा आयंता जाव सुहासणवरगया बहूहिं गंधव्वेहिं जाव विहरंति ५। तते णं से दुवए राया पुव्वावरराह-कालसमयंसि कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ २ त्ता एवं वयासी—गच्छह णं तुमे देवाणुप्पिया ! कंपिल्लपुरे संघाडग जाव पहे वासुदेवपामुक्खाण य रायसहस्साणं आवासेसु हत्थिखंधवरगया महया २ सद्देणं जाव उग्घोसेमाणा २ एवं वदह—एवं खलु देवाणुप्पिया ! कल्लं पाउप्पभायाए दुवयस्स रराणो धूयाए चुलणीए देवीए अत्तयाए धट्ठज्जुणस्स भगिणीए दोवईए रायवरकरणाए सयंवरे भविस्सइ, तं तुब्भे णं देवाणुप्पिया ! दुवयं रायाणं अणुगिराहेमाणा राहाया जाव विभूसिया हत्थिखंधवरगया सकोरंटमल्लदामेणं छत्तेणं धरिज्जमाणेणं सेयवरचामराहिं उद्धुव्वमाणीहिं हयगयरह-पवरजोह-कलियाए चाउरंगिणीए सेनाए सद्धिं संपरिवुडा महया भडचरगरेणं जाव परिक्खित्ता जेणेव सयंवरामंडवे तेणेव उवागच्छति २ पत्तेयं नामंकेसु आसणेसु निसीयह २ दोवइं रायकराणं पडिवालेमाणा २ चिट्ठह, घोसणं घोसेह २ मम एयमाणत्तियं पच्चप्पिणह, तए णं तं कोडुंबिया तहेव जाव पच्चप्पिणंति ६। तए णं से दुवए राया कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ २ एवं वयासी—गच्छइ णं तुब्भे देवाणुप्पिया ! सयंवरमंडपं आसिय-संमज्जि-ओवलित्तं सुगंधवरगंधियं पंचवराण-पुप्फ-पुंजोवयार-कलियं कालागरु-पवरकुंदुरुक्क-तुरुक्क जाव गंधवट्टिभूयं मंचाइमंच-कलियं करेह २ वासुदेवपामुक्खाणं बहूणं रायसहस्साणं पत्तेयं २ नामंकाइं आसणाइं अत्थुयपच्चत्थुयाइं रएह २ एयमाणत्तियं पच्चप्पिणह, तेवि जाव पच्चप्पिणंति ७। तते णं ते वासुदेवपामुक्खा बहवे रायसहस्सा कल्लं पाउप्पभायाए राहाया जाव विभूसिया हत्थिखंधवरगया सकोरंट-मल्लदामेणं छत्तेणं धरिज्जमाणेणं सेयवरचामराहिं हयगय जाव परिवुडा

सव्विड्ढीए जाव रवेणं जेणेव सयंवरे तेणेव उवागच्छति २ अणुपविसंति २ पत्तेयं २ नामंकेसु निसीयंति दोवइं रायवरकएणं पडिवालेमाणा चिट्ठंति ८। तए णं से पंडुए राया कल्लं ण्हाए जाव विभूसिए हत्थिखंधवरगए सकोरंट-मल्लदामेणं छत्तेणं धरिज्जमाणेणं सेयवरचामरहिं उद्धुव्वमाणीहिं हयगय-रहपवरजोहकलियाए चाउरंगिणीए सेणाए सद्धिं संपरिवुडे कंपिल्लपुरं मज्झंमज्झेणं निग्गच्छंति जेणेव सयंवरामंडवे जेणेव वासुदेवपामुक्खा बहवे रायसहस्सा तेणेव उवागच्छति २ तेसिं वासुदेवपामुक्खाणं करयल जाव वद्धावेत्ता कएहस्स वासुदेवस्स सेयवरचामरं गहाय उववीयमाणे चिट्ठति ६ ॥ सूत्रं १२४ ॥ तए णं सा दोवई रायवरकन्ना जेणेव जिणघरे तेणेव उवागच्छइ २ त्ता जिणपडिमाणं अच्चणं करेई (जेणेव मज्जणघरे तेणेव उवागच्छइ २ ण्हाया कयबलिकम्मा कयकोउयमंगलपायच्छित्ता सुद्धप्पावेसाइं मंगल्लाइं वत्थाइं पवर परिहिया मज्जणघराओ पडिनिक्खमइ २ जेणेव जिणघरे तेणेव उवागच्छइ २ जिणघरं अणुपविसइ २ जिणपडिमाणं आलोए पणामं करेइ २ लोमहत्थयं परामुसइ एवं जहा सूरियाभो जिणपडिमाओ अच्चेइ २ तहेव भाणियव्वं जाव धूवं डहइ) २ वामं जाणुं अञ्चेति दाहिणं जाणुं धरणियलंसि णिवेसेति २ तिक्खुत्तो मुद्धाणं धरणियलंसि नमेइ २ ईसिं पच्चुएणमति करयल जाव कट्टु एवं वयासी–नमोऽत्थु णं अरिहंताणं भगवंताणं जाव संपत्ताणं वंदइ नमंसइ २ जिणघराओ पडिनिक्खमति २ जेणेव अंतेउरे तेणेव उवागच्छइ ॥सूत्रं १२५॥

तते णं तं दोवइं रायवरकन्नं अंतेउरियाओ सव्वालंकार-विभूसियं करेंति किं ते ? वरपायपत्तणेउरा जाव चेडिया-चक्कवाल-मयहरगविंद-परिक्खित्ता अंतेउराओ पडिणिक्खमति २ जेणेव बाहिरिया उवट्ठाणसाला जेणेव चाउग्घंटे आसरहे तेणेव उवागच्छति २ किड्डावियाए लेहियाए सद्धिं चाउग्घंटं आसरहं दुरूहति, तते णं से धट्ठज्जुणे कुमारे दोवतीए

कराणाए सारत्थं करेति, तते णं सा दोवती रायवरकराणा कंपिल्लपुरं नयरं मज्झंमज्झेणं जेणेव सयंवरमंडवे तेणेव उवागच्छति २ रहं ठवेति रहाओ पच्चोरुहति २ किड्डावियाए लेहियाए य सद्धिं सयंवरं मंडपं अणुपविसति करयल जाव तेसिं वासुदेवपामुक्खाणं बहूणं रायवरसहस्साणं पणामं करेति १। तते णं सा दोवती रायवरकन्ना एगं महं सिरिदामगंडं, किं ते? पाडलमल्लियचंपय जाव सत्तच्छयाईहिं गंधद्धणिं मुयंतं परमसुहफासं दरिसणिज्जं गिराहति, तते णं सा किड्डाविया जाव सुरूवा जाव वामहत्थेणं चिल्लगदप्पणं गहेऊण सललियं दप्पणसंकंतबिंब संदंसिए य से दाहिणेणं हत्थेणं दरिसिए पवररायसीहे फुड-विसय-विसुद्ध-रिभिय-गंभीर-महुरभणिया सा तेसिं सव्वेसिं पत्थिवाणं अम्मापिऊणं वंस-सत्त-सामत्थ-गोत्त-विक्कंति-कंति-बहुविह-आगम-माहप्प--रूव-जोव्वण-गुण--लावराण--कुल--सील--जाणिया कित्तणं करेइ २। पढमं ताव वरिहपुंगवाणं दसदसार-वीरपुरिसाणं तेलोक्कबलवगाणं सत्तुसय-सहस्समाणावमद्दगाणं भवसिद्धि-पवरपुंडरीयाणं चिल्लगाणं बल-वीरिय-रूव-जोव्वण-गुण-लावन्न-कित्तिया कित्तणं करेति, ततो पुणो उग्गसेणमाईणं जायवाणं, भणति य—सोहग्गरूवकलिए वरेहि वरपुरिसगंधहत्थीणं ३। जो हु ते होइ हिययदइओ, तते णं सा दोवई रायवरकन्नगा बहूणं रायवर-सहस्साणं मज्झंमज्झेणं समतिच्छमाणी २ पुव्वकय-णियाणेणं चोइज्जमाणी २ जेणेव पंच पंडवा तेणेव उवागच्छति २ ते पंचपंडवे तेणं दसद्धवराणेणं कुसुमदामेणं आवेढिय-परिवेढियं करेति २त्ता एवं वयासी—एए णं मए पंच पंडवा वरिया, तते णं तेसिं वासुदेवपामोक्खाणं बहूणि रायसहस्साणि महया २ सद्देणं उग्घोसेमाणा २ एवं वयंति—सुवरियं खलु भो! दोवइए रायवरकन्नाए २त्तिकट्टु सयंवरमंडवाओ पडिनिक्खमंति २ जेणेव सया २ आवासा तेणेव उवागच्छंति, तते णं धट्ठज्जुराणे कुमारे पंच पंडवे दोवतिं रायवरकराणं च चाउग्घंटं

आसरहं दुरूहति २ त्ता कंपिल्लपुरं मज्झंमज्झेणं जाव सयं भवणं अणुपविसति ४। तते णं दुवए राया पंच पंडवे दोवइं रायवरकरणं पट्टयं दुरूहेति २ सेयापीएहिं कलसेहिं मज्जावेति २ अग्गिहामं कारवेति पंचरहं पंडवाणं दोवतीए य पाणिग्गहणं करावेइ, तते णं से दुवए राया दोवतीए रायवरकरणयाए इमं एयारूवं पीतिदाणं दलयती, तंजहा—अट्ठ हिरणकोडीओ जाव अट्ठ पेसणकारीओ दासचेडीओ, अरणं च विपुलं धणकणग जाव दलयति, तते णं दुवए राया ताइं वासुदेवपामोक्खाइं विपुलेणं असण ४ वत्थगंध जाव पडिविसज्जेति ५॥ सूत्रं १२६॥ तते णं से पंडू राया तेसिं वासुदेवपामोक्खाणं बहूणं रायसहस्साणं करयल जाव एवं वयासी—एवं खलु देवाणुप्पिया! हत्थिणाउरे नयरे पंचरहं पंडवाणं दोवतीए य देवीए कल्लाणकरे भविस्सति तं तुब्भे णं देवाणुप्पिया! ममं अणुगिराहमाणा अकाल-परिहीणं (अकालए) समोसरह, तते णं वासुदेवपामोक्खा पत्तेयं २ जाव पहारेत्थ गमणाए १। तते णं से पंडुराया कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ २ एवं वयासी—गच्छह णं तुब्भे देवाणुप्पिया! हत्थिणाउरे पंचरहं पंडवाणं पंच पासायवडिंसए कारेह अब्भुग्गयमूसिय वराणओ जाव पडिरूवे २। तते णं ते कोडुंबियपुरिसा पडिसुणेंति जाव करावेंति, तते णं से पंडुए पंचहिं पंडवेहिं दोवईए देवीए सद्धिं हयगय-संपरिवुडे कंपिल्लपुराओ पडिनिक्खमइ २ जेणेव हत्थिणाउरे तेणेव उवागए ३। तते णं से पंडुराया तेसिं वासुदेवपामोक्खाणं आगमणं जाणित्ता कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ २ एवं वयासी—गच्छह णं तुब्भे देवाणुप्पिया! हत्थिणाउरस्स नयरस्स बहिया वासुदेवपामोक्खाणं बहूणं रायसहस्साणं आवासे कारेह अणेगखंभसय तहेव जाव पच्चप्पिणंति ४। तते णं ते वासुदेवपामोक्खा बहवे रायसहस्सा जेणेव हत्थिणाउरे तेणेव उवागच्छन्ति, तते णं से पंडुराया तेसिं वासुदेवपामोक्खाणं आगमणं जाणित्ता हट्ठतुट्ठे राहाए कयबलिकम्मे

जहा दुपए जाव जहारिहं आवासे दलयति, तते णं ते वासुदेवपामुक्खा बहवे रायसहस्सा जेणेव सयाइं २ आवासाइं तेणेव उवागच्छंति तहेव जाव विहरंति ५। तते णं से पंडुराया हत्थिणाउरं णयरं अणुपविसति २ कोडुंबियपुरिसे सद्दावेति २ एवं वयासी--तुब्भे णं देवाणुप्पिया! विउलं असणं ४ तहेव जाव उवणेंति, तते णं ते वासुदेवपामोक्खा बहवे राया राहाया कयबलिकम्मा तं विपुलं असणं ४ तहेव जाव विहरंति, तते णं से पंडुराया पंच पंडवे दोवतिं च देविं पट्टयं दुरूहेति २ सीयापीएहिं कलसेहिं राहावेंति २ कल्लाणकारं करेति २ ते वासुदेवपामोक्खे बहवे रायसहस्से विपुलेणं असण ४ पुप्फवत्थेणं सक्कारेति समाणेति जाव पडिविसज्जेति, तते णं ताइं वासुदेवपामोक्खाइं बहुहिं जाव पडिगयातिं॥ सूत्रं १२७॥ तते णं ते पंच पंडवा दोवतीए देवीए सद्धिं अंतो अंतेउर-परियाल सद्धिं कल्लाकल्लिं वारंवारेणं ओरालातिं भोगभोगाइं जाव विहरति १। तते णं से पंडू राया अन्नया कयाई पंचहिं पंडवेहिं कोंतीए देवीए दोवतीए देवीए य सद्धिं अंतो अंतेउरपरियाल सद्धिं संपरिवुडे सीहासण-वरगते यावि विहरति २। इमं च णं कच्छुल्लणारए दंसणेणं अइभद्दए विणीए अंतो २ य कलुसहियए मज्झत्थोवत्थिए य अल्लीण-सोम-पियदंसणे सुरूवे अमइल-सगल-परिहिए कालमिय-चम्म-उत्तरासंग-रइयवत्थे(च्छे) दण्ड-कमण्डलु-हत्थे जडामउड-दित्तसिरए जन्नोवइय-गणेत्तिय-मुंजमेहल-वागलधरे हत्थकय-कच्छभीए पियगंधव्वे धरणि-गोयर-प्पहाणे संचरणावरण-ओवयण-उप्पयणिलेसणीसु य संकामणि-अभिओग-पराणत्ति-गमणी-थंभणीसु य बहुसु विज्जाहरीसु विज्जासु विस्सुयजसे इट्ठे रामस्स य केसवस्स य पज्जुन्न-पईव-संब-अनिरुद्ध-णिसढ-उम्मुय-सारणगय-सुमुह-दुम्मुहातीण जायवाणं अद्धुट्टाण कुमारकोडीणं हिययदइए संथवए कलह-जुद्ध-कोलाहलप्पिए भंडणाभिलासी बहुसु य समर-सय-संपराएसु दंसणरए समंतओ कलहं सदक्खिणं अणुगवेसमाणे

असमाहिकरे दसार-वरवीर-पुरिस-तिलोक्क-बलवगाणं आमंतेऊण तं भगवतीं एक्क(संका)मणिं गगण-गमणदच्छं उप्पइओ गगण-मभिलंघयंतो गामागर-नगर-खेड-कब्बड-मडंब-दोणमुह-पट्टण-संवा(बा)हसहस्समंडियं थिमियमेइणीतलं वसुहं ओलोइंतो रम्मं हत्थिणाउरं उवागए पंडुरायभवणंसि अइवेगेण समोवइए ३। तते णं से पंडुराया कच्छुल-नारयं एज्जमाणं पासति २ पंचहिं पंडवेहिं कुंतीए य देवीए सद्धिं आसणातो अब्भुट्ठेति २ कच्छुलनारयं सत्तट्ठपयाइं पच्चुग्गच्छइ २ तिक्खुत्तो आयाहिण-पयाहिणं करेति २ वंदति णमंसति महरिहेणं आसणेणं उवणिमंतेति, तते णं से कच्छुलनारए उदग-परिफोसियाए दब्भोवरिपच्चत्थुयाए भिसियाए णिसीयति २ पंडुरायं रज्जे जाव अंतेउरे य कुसलोदंतं पुच्छइ, तते णं से पंडुराया कोंतीदेवी पंच य पंडवा कच्छुलणारयं आदंति जाव पज्जुवासंति, तए णं सा दोवई कच्छुलनारयं अस्संजयं अविरयं अपडिहय-पच्चक्खाय-पावकम्मंतिकट्टु नो आढाति नो परियाणइ नो अब्भुट्ठेति नो पज्जुवासति ४ ॥ सूत्रं १२८ ॥

तते णं तस्स कच्छुल-णारयस्स इमेयारूवे अब्भत्थिए चिंतिए पत्थिए मणोगए संकप्पे समुप्पज्जित्था-अहो णं दोवती देवी रूवेणं जाव लावण्णेण य पंचहिं पंडवेहिं अणुबद्धा समाणी ममं णो आढाति जाव नो पज्जुवासइ, तं सेयं खलु मम दोवतीए देवीए विप्पियं करित्तएत्तिकट्टु एवं संपेहेति २ पंडुयरायं आपुच्छइ २ उप्पयणिं विज्जं आवाहेति २ ताए उक्किट्ठाए जाव विज्जाहरगईए लवणसमुद्दं मज्झंमज्झेणं पुरत्थाभिमुहे वीइवतिउं पयत्ते यावि होत्था १। तेणं कालेणं तेणं समएणं धायइसंडे दीवे पुरत्थिमद्ध-दाहिणड्ढ-भरहवासे अमरकंका णामं रायहाणी होत्था, तते णं अमरकंकाए रायहाणीए पउमणाभे णामं राया होत्था महया हिमवंत० वण्णओ, तस्स णं पउमनाभस्स रन्नो सत्त देवीसयातिं ओरोहे होत्था, तस्स णं पउमनाभस्स रण्णो सुनाभे नामं पुत्ते जुवराया यावि होत्था, तते णं से

पउमणाभे राया अंतो अंतेउरंसि ओरोहसंपरिवुडे सिंहासणवरगए विहरति, २। तए णं से कच्छुलणारए जेणेव अमरकंका रायहाणी जेणेव पउमनाहस्स भवणे तेणेव उवागच्छति २ पउमनाभस्स रन्नो भवणंसि झत्ति वेगेणं समोवइए, तते णं से पउमनाभे राया कच्छुल्लं नारयं एज्जमाणं पासति २ आसणातो अब्भुट्ठेति २ अग्घेणं जाव आसणेणं उवणिमंतेति ३। तए णं से कच्छुलनारए उदय-परिफोसियाए दब्भोवरि-पच्चत्थुयाते भिसियाए निसीयइ जाव कुसलोदंतं आपुच्छइ, तते णं से पउमनाभे राया णियग-ओरोहे जायविम्हए कच्छुलणारयं एवं वयासी–तुब्भं देवाणुप्पिया! बहूणि गामाणि जाव गेहातिं अणुपविससि, तं अत्थि याइं ते कहिंचि देवाणुप्पिया! एरिसए ओरोहे दिट्ठपुव्वे जारिसए णं मम ओरोहे? ४। तते णं से कच्छुलनारए पउमनाभेणं रन्ना एवं वुत्ते समाणे ईसिं विहसियं करेइ २ एवं वयासी–सरिसे णं तुमं पउमणाभा! तस्स अगडदद्दुरस्स, के णं देवाणुप्पिया! से अगडदद्दुरे?, एवं जहा मल्लिणाए एवं खलु देवाणुप्पिया! जंबूद्दीवे २ भारहे वासे हत्थिणाउरे दुपयस्स रण्णो धूया चूलणीए देवीए अत्तया पंडुस्स सुण्हा पंचण्हं पंडवाणं भारिया दोवती देवी रूवेण य जाव उक्किट्ठसरीरा दोवईए णं देवीए छिन्नस्सवि पायंगुट्ठयस्स अयं तव ओरोहे सतिमंपि कलं ण अग्घतित्तिकट्टु, पउमणाभं आपुच्छति २ जाव पडिगए २, ५। तते णं से पउमनाभे राया कच्छुलनारयस्स अंतिए एयमट्ठं सोच्चा णिसम्म दोवतीए देवीए रूवे य ३ मुच्छिए ४ दोवईए अज्झोववन्ने जेणेव पोसहसाला तेणेव उवागच्छति २ पोसहसालं जाव पुव्वसंगतियं देवं एवं वयासी–एवं खलु देवाणुप्पिया! जंबुद्दीवे २ भारहे वासे हत्थिणाउरे जाव सरीरा तं इच्छामि णं देवाणुप्पिया! दोवतीं देवीं इहमाणियं, तते णं पुव्वसंगतिए देवे पउमनाभं एवं वयासी–नो खलु देवाणुप्पिया! एयं भूयं वा भव्वं वा भविस्सं वा जण्णं दोवती देवी पंच पंडवे मोत्तूण अन्नेणं पुरिसेणं

सद्धिं ओरालाति जाव विहरिस्सति, तहाविय णं अहं तव पियट्ठतयाए दोवतीं देविं इहं हव्वमाणेमित्तिकट्टु पउमणाभं आपुच्छइ २ ताए उक्किट्ठाए जाव लवणसमुद्दं मज्झंमज्झेणं जेणेव हत्थिणाउरे णयरे तेणेव पहारेत्थ गमणाए ६ । तेणं कालेणं २ हत्थिणाउरे जुहिट्ठिल्ले राया दोवतीए सद्धिं उप्पिं आगासतलंसि सुहपसुत्ते यावि होत्था, तए णं से पुव्वसंगतिए देवे जेणेव जुहिट्ठिल्ले राया जेणेव दोवती देवी तेणेव उवागच्छति २ दोवतीए देवीए ओसोवणियं दलयइ २ दोवतिं देविं गिराहइ २ ताए उक्किट्ठाए जाव जेणेव अमरकंका जेणेव पउमणाभस्स भवणे तेणेव उवागच्छति २ पउमणाभस्स भवणंसि असोगवणियाए दोवतिं देवीं ठवेइ २ ओसोवणिं अवहरति २ जेणेव पउमणाभे तेणेव उवागच्छति २ एवं वयासी—एस णं देवाणुप्पिया ! मए हत्थिणाउराओ दोवती इह हव्वमाणीया तव असोगवणियाए चिट्ठति, अतो परं तुमं जाणसित्तिकट्टु जामेव दिसिं पाउब्भूए तामेव दिसिं पडिगए ७। तते णं सा दोवई देवी ततो मुहुत्तंतरस्स पडिबुद्धा समाणी तं भवणं असोगवणियं च अपच्चभिजाणमाणी एवं वयासी—नो खलु अम्हं एसे सए भवणे, णो खलु एसा अम्हं समा असोगवणिया, तं ण णज्जति णं अहं केणई देवेण वा दाणवेण वा किंपुरिसेण वा किन्नरेण वा महोरगेण वा गंधव्वेण वा अन्नस्स रराणो असोगवणियं साहरियत्तिकट्टु ओहयमण-संकप्पा जाव झियायति ८। तते णं से पउमणाभे राया राहाए जाव सव्वालंकारभूसिए अंतेउर-परियाल-संपरिवुडे जेणेव असोगवणिया जेणेव दोवती देवी तेणेव उवागच्छति २ दोवतीं देवीं ओहय-मणसंकप्पां जाव झियायमाणीं पासति २ त्ता एवं वयासी—किराणं तुमं देवाणुप्पिया ! ओहय जाव झियाहि ?, एवं खलु तुमं देवाणुप्पिया ! मम पुव्वसंगतिएणं देवेणं जंबुद्दीवाओ २ भारहाओ वासाओ हत्थिणापुराओ नयराओ जुहिट्ठिलस्स रराणो भवणाओ साहरिया तं मा णं तुमं देवाणुप्पिया ! ओहयमणसंकप्पा

जाव भियाहि, तुमं मए सद्धिं विपुलाइं भोगभोगाइं भुंजमाणी विहराहि ९। तते णं सा दोवती देवी पउमणाभं एवं वयासी–एवं खलु देवाणुप्पिया ! जंबुद्दीवे २ भारहे वासे बारवतिए णयरीए कराहे णामं वासुदेवे ममप्पियभाउए परिवसति, तं जति णं से छराहं मासाणं ममं कूवं नो हव्वमागच्छइ तते णं अहं देवाणुप्पिया ! जं तुमं वदसि तस्स आणा-ओवाय-वयण-णिद्दे से चिट्ठिस्सामि, तते णं से पउमे दोवतीए एयमट्ठं पडिसुणेत्ता २ दोवतिं देविं कराणंतेउरे ठवेति, तते णं सा दोवती देवी छट्ठंछट्ठेणं अनिक्खित्तेणं आयंबिल-परिग्गहिएणं तवोकम्मेणं अप्पाणं भावेमाणी विहरति १० ॥ सूत्रं १२१ ॥ तते णं से जुहुट्ठिल्ले राया तओ मुहुत्तंतरस्स पडिबुद्धे समाणे दोवतिं देविं पासे अपासमाणो सयणिज्जाओ उट्ठेइ २ त्ता दोवतीए देवीए सव्वओ समंता मग्गणगवेसणं करेइ २ त्ता दोवतीए देवीए कत्थइ सुइं वा खुइं वा पवत्तिं वा अलभमाणे जेणेव पंडुराया तेणेव उवागच्छति २ त्ता पंडुरायं एवं वयासी–एवं खलु ताओ ! ममं आगासतलगंसि पसुत्तस्स पासातो दोवती देवी णं णज्जति केणइ देवेण वा दाणवेण वा किन्नरेण वा महोरगेण वा गंधव्वेण वा हिया वा णीया वा अवक्खित्ता वा ?, इच्छामि णं ताओ ! दोवतीए देवीए सव्वतो समंता मग्गणगवेसणं कयं १। तते णं से पंडुराया कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ २ एवं वयासी–गच्छह णं तुब्भे देवाणुप्पिया ! हत्थिणाउरे नयरे सिंघाडग-तिय-चउक्क-चच्चर-महापहपहेसु महया २ सद्देणं उग्घोसेमाणा २ एवं वयासी–एवं खलु देवाणुप्पिया ! जुहिट्ठिलस्स रराणो आगासतलगंसि सुहपसुत्तस्स पासातो दोवती देवी ण णज्जति केणइ देवेण वा दाणवेण वा किंपुरिसेण वा किन्नरेण वा महोरगेण वा गंधव्वेण वा हिया वा नीया वा अवक्खित्ता वा, तं जो णं देवाणुप्पिया ! दोवतीए देवीए सुतिं वा जाव पवित्तिं वा परिकहेति तस्स णं पंडुराया विउलं अत्थसंपयाणं दाणं दलयतित्तिकट्टु

घोसणं घोसावेह २ एयमाणत्तियं पच्चप्पिणह २ । तते णं ते कोडुंबियपुरिसा जाव पच्चप्पिणंति, तते णं से पंडू राया दोवतीए देवीए कत्थति सुइं वा जाव अलभमाणे कोंतीं देवीं सद्दावेति २ एवं वयासी–गच्छह णं तुमं देवाणुप्पिया ! बारवतिं णयरिं कण्हस्स वासुदेवस्स एयमट्ठं णिवेदेहि, कण्हे णं परं वासुदेवे दोवतीए मग्गणगवेसणं करेज्जा, अन्नहा न नज्जइ दोवतीए देवीए सुतीं वा खुतीं वा पवत्तीं वा उवलभेज्जा ३ । तते णं सा कोंती देवी पंडुरण्णा एवं वुत्ता समाणी जाव पडिसुणेइ २ ण्हाया कयबलिकम्मा हत्थिखंधवरगया हत्थिणाउरं मज्झंमज्झेणं णिग्गच्छइ २ कुरुजणवयं मज्झंमज्झेणं जेणेव सुरट्ठजणवए जेणेव बारवती णयरी जेणेव अग्गुज्जाणे तेणेव उवागच्छति २ हत्थिखंधाओ पच्चोरुहति २ कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ २ एवं वयासी–गच्छह णं तुब्भे देवाणुप्पिया ! जेणेव बारवई णयरिं बारवतिं णयरिं अणुपविसह २ कण्हं वासुदेवं करयल जाव एवं वयह–एवं खलु सामी ! तुब्भं पिउच्छा कोंती देवी हत्थिणाउराओ नयराओ इह हव्वमागया तुब्भं दंसणं कंखति, तते णं ते कोडुंबियपुरिसा जाव कहेंति ४ । तते णं कण्हे वासुदेवे कोडुंबियपुरिसाणं अंतिए सोच्चा णिसम्म हत्थिखंधवरगए हयगय बारवतीए य मज्झंमज्झेणं जेणेव कोंती देवी तेणेव उवागच्छति २ हत्थिखंधातो पच्चोरुहति २ कोंतीए देवीए पायग्गहणं करेति २ कोंतीए देवीए सद्धिं हत्थिखंधं दुरूहति २ बारवतीए णयरीए मज्झंमज्झेणं जेणेव सए गिहे तेणेव उवागच्छति २ सयं गिहं अणुपविसति ५ । तते णं से कण्हे वासुदेवे कोंतीं देविं ण्हायं कयबलिकम्मं जिमिय-भुत्तुत्तरागयं जाव सुहासणवरगयं एवं वयासी–संदिसउ णं पिउच्छा ! किमागमणपओयणं ?, तते णं सा कोंती देवी कण्हं वासुदेवं एवं वयासी–एवं खलु पुत्ता ! हत्थिणाउरे णयरे जुहिट्ठिल्लस्स आगासतले सुहपसुत्तस्स पासाओ दोवती देवी ण णज्जति केणइ अवहिया जाव अवक्खित्ता वा, तं इच्छामि णं पुत्ता !

दोवतीए देवीए मग्गणगवेसणं कयं ६। तते णं से कराहे वासुदेवे कोंतीं पिउच्छिं एवं वयासी—जं णवरं पिउच्छा! दोवतीए देवीए कत्थइ सुइं वा जाव लभामि तो णं अहं पायालाओ वा भवणाओ वा अद्धभरहाओ वा समंतओ दोवतिं साहत्थिं उवणेमित्तिकट्टु कोंतीं पिउत्थिं(च्छिं) सक्कारेति सम्माणेति जाव पडिविसज्जेति, तते णं सा कोंती देवी कराहेणं वासुदेवेणं पडिविसज्जिया समाणी जामेव दिसिं पाउब्भूया तामेव दिसिं पडिगया ७। तते णं से कराहे वासुदेवे कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ २ एवं वयासी—गच्छह णं तुब्भे देवाणुप्पिया! बारवतिं एवं जहा पंडू तहा घोसणं घोसावेति जाव पच्चप्पिणंति, पंडुस्स जहा, तते णं से कराहे वासुदेवे अन्नया अंतो अंतेउरगए ओरोहे जाव विहरति, इमं च णं कच्छुल्लए जाव समोवइए जाव णिसीइत्ता कराहं वासुदेवं कुसलोदंतं पुच्छइ ८। तते णं से कराहे वासुदेवे कच्छुल्लं एवं वयासी—तुमं णं देवाणुप्पिया! बहूणि गामा जाव अणुपविससि, तं अत्थि याइं ते कहिंवि दोवतीए देवीए सुती वा जाव उवलद्धा?, तते णं से कच्छुल्ले कराहं वासुदेवं एवं वयासी—एवं खलु देवाणुप्पिया! अन्नया धायतीसंडे दीवे पुरत्थिमद्धं दाहिणड्ढ-भरहवासं अवरकंका-रायहाणिं गए, तत्थ णं मए पउमनाभस्स रन्नो भवणंसि दोवती देवी जारिसिया दिट्ठपुव्वा यावि होत्था, तते णं कराहे वासुदेवे कच्छुल्लं एवं वयासी—तुब्भं चेव णं देवाणुप्पिया! एवं पुव्वकम्मं, तते णं से कच्छुल्लनारए कराहेणं वासुदेवेणं एवं वुत्ते समाणे उप्पयणिं विज्जं आवाहेति २ जामेव दिसिं पाउब्भूए तामेव दिसिं पडिगए ९। तते णं से कराहे वासुदेवे दूयं सद्दावेइ २ एवं वयासी—गच्छह णं तुमं देवाणुप्पिया! हत्थिणाउरं पंडुस्स रन्नो एयमट्ठं निवेदेहि—एवं खलु देवाणुप्पिया! धायइसंडे दीवे पुरच्छिमद्धे अवरकंकाए रायहाणीए पउमणाभ-भवणंसि दोवतीए देवीए पउत्ती उवलद्धा, तं गच्छंतु पंच पंडवा चाउरंगिणीए सेणाए सद्धिं संपरिवुडा पुरत्थिमवेयालीए

ममं पडिवालेमाणा चिट्ठंतु, तते णं से दूए जाव भणति, पडिवालेमाणा चिट्ठह, तेवि जाव चिट्ठंति, तते णं से कण्हे वासुदेवे कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ २ त्ता एवं वयासी–गच्छह णं तुब्भे देवाणुप्पिया ! सन्नाहियं भेरिं ताडेह, तेवि तालेंति, तते णं तीसे सण्णाहियाए भेरीए सद्दं सोच्चा समुद्दविजय-पामोक्खा दसदसारा जाव छप्पण्णं बलवयसाहस्सीओ सन्नद्ध-बद्ध जाव गहियाउहपहरणा अप्पेगतिया हयगपा गयगया जाव वग्गुरापरि-क्खित्ता जेणेव सभा सुधम्मा जेणेव कण्हे वासुदेवे तेणेव उवागच्छति २ करयल जाव वद्धावेंति १० । तते णं कण्हे वासुदेवे हत्थिखंधवरगए सकोरेंट-मल्लदामेणं छत्तेणं धरिज्जमाणेणं सेयवर-चामराहिं उद्धुव्वमाणीहिं हयगयरह-पवरजोह-कलियाए चाउरंगिणीए सेणाए सद्धिं संपरिवुडे महया भड-चडगर-पहकरेणं बारवती णयरी मज्झंमज्झेणं णिग्गच्छति, जेणेव पुरत्थिमवेयाली तेणेव उवागच्छति २ पंचहिं पंडवेहिं सद्धिं एगयओ मिलइ २ खंधावारणिवेसं करेति २ पोसहसालं अणुपविसति २ सुट्ठियं देवं मणसि करेमाणे २ चिट्ठति, तते णं कण्हस्स वासुदेवस्स अट्ठमभत्तंसि परिणममाणंसि सुट्ठिओ आगतो, भण देवाणुप्पिया ! जं मए कायव्वं ११ । तते णं से कण्हे वासुदेवे सुट्ठियं एवं वयासी–एवं खलु देवाणुप्पिया ! दोवती देवी जाव पउमनाभस्स भवणंसि साहरिया तण्णं तुमं देवाणुप्पिया ! मम पंचहिं पंडवेहिं सद्धिं अप्पछट्ठस्स छण्हं रहाणं लवणसमुद्दे मग्गं वियरेहि, जण्णं अहं अमरकंकारायहाणीं दोवतीए कूवं गच्छामि १२ । तते णं से सुट्ठिए देवे कण्हं वासुदेवं एवं वयासी–किण्हं देवाणुप्पिया ! जहा चेव पउमणाभस्स रन्नो पुव्वसंगतिएणं देवेणं दोवती जाव संहरिया तहा चेव दोवतिं देविं धायती-संडाओ दीवाओ भारहाओ जाव हत्थिणापुरं साहरामि, उदाहु पउमणाभं रायं सपुरबलवाहणं लवणसमुद्दे पक्खिवामि ?, तते णं कण्हे वासुदेवे सुट्ठियं देवं एवं वयासी–मा णं तुमं देवाणुप्पिया !

जाव साहराहि तुमं णं देवाणुप्पिया ! लवणसमुद्दे अप्पछट्ठस्स छराहं रहाणं मग्गं वियराहि, सयमेव णं अहं दोवतीए कूवं गच्छामि १३। तए णं से सुट्ठिए देवे कराहं वासुदेवं एवं वयासी–एवं होउ, पंचहिं पंडवेहिं सद्धिं अप्पछट्ठस्स छराहं रहाणं लवणसमुद्दे मग्गं वितरति, तते णं से कराहे वासुदेवे चाउरंगिणीसेणं पडिविसज्जेति २ पंचहिं पंडवेहिं सद्धिं अप्पछट्ठे छहिं रहेहिं लवणसमुद्दं मज्झंमज्झेणं वीतीवयति २ जेणेव अमरकंका रायहाणी जेणेव अमरकंकाए अग्गुज्जाणे तेणेव उवागच्छइ २ रहं ठवेइ २ दारुयं सारहिं सद्दावेति एवं वयासी–गच्छह णं तुमं देवाणुप्पिया ! अमरकंकारायहाणीं अणुपविसाहि २ पउमणाभस्स रराणो वामेणं पाएणं पायपीढं अक्कमित्ता कुंतग्गेणं लेहं पणामेहि तिवलियं भिउडिं णिडाले साहट्टु आसुरुत्ते रुट्ठे कुद्धे कुविए चंडिकिए एवं वयासी–हं भो पउमणाहा ! अपत्थियपत्थिया दुरंतपंतलक्खणा हीणपुन्नचाउद्दसा सिरीहिरिधीपरिवज्जिया अज्ज ण भवसि किन्नं तुमं ण याणासि कराहस्स वासुदेवस्स भगिणिं दोवतिं देविं इहं हव्वं आणमाणे ?, तं एयमवि गए पच्चप्पिणाहि णं तुमं दोवतिं देविं कराहस्स वासुदेवस्स अहव णं जुद्धसज्जे णिग्गच्छाहि, एस णं कराहे वासुदेव पंचहिं पंडवेहिं अप्पछट्ठे दोवतीदेवीए कूवं हव्वमागए १४। तते णं से दारुए सारही कराहेणं वासुदेवेणं एवं वुत्ते समाणे हट्ठतुट्ठे जाव पडिसुणेइ २ अमरकंकारायहाणिं अणुपविसति २ जेणेव पउमनाहे तेणेव उवागच्छति २ करयल जाव वद्धावेत्ता एवं वयासी–एस णं सामी ! मम विणयपडिवित्ती, इमा अन्ना मम सामिस्स समुहाणत्तित्तिकट्टु आसुरुत्ते वामपाएणं पायपीढं अणुक्कमति २ कोंतग्गेणं लेहं पणामति २ त्ता जाव कूवं हव्वमागए १५। तते णं से पउमणाभे दारुणेणं सारहिणा एवं वुत्ते समाणे आसुरुत्ते तिवलिं भिउडिं निडाले साहट्टु एवं वयासी–णो अप्पि-

णामि णं अहं देवाणुप्पिया ! कराहस्स वासुदेवस्स दोवतिं, एस णं अहं सयमेव जुज्झसज्जो णिग्गच्छामित्तिकट्टु दारुयं सारहिं एवं वयासी–केवलं भो ! रायसत्थेसु दूये अवज्झेत्तिकट्टु असकारिय असम्माणिय अवद्दारेणं णिच्छुभावेति १६ । तते णं से दारुए सारही पउमणाभेणं असकारिय जाव णिच्छूढे समाणे जेणेव कराहे वासुदेवे तेणेव उवागच्छति २ करयल जाव कराहं जाव एवं वयासी–एवं खलु अहं सामी ! तुब्भं वयणेणं जाव णिच्छुभावेति, तते णं से पउमणाभे बलवाउयं सद्दावेति २ एवं वयासी–खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया ! आभिसेक्कं हत्थिरयणं पडिकप्पेह, तयाणंतरं च णं छेयायरिय-उवदेसमइ-विकप्पणाविगप्पेहिं जाव उवणेति. तते णं से पउमनाहे सन्नद्ध-हत्थिखंधवरगये अभिसेयं० दूरूहति २ हयगय जेणेव कराहे वासुदेवे तेणेव पहोरत्थ गमणाए १७ । तते णं से कराहे वासुदेवे पउमणाभं रायाणं एज्जमाणं पासति २ ते पंच पंडवे एवं वयासी–हं भो दारगा ! किन्नं तुब्भे पउमनाभेणं सद्धिं जुज्झिहिह उयाहु पेच्छिहिह ?, तते णं ते पंच पंडवा कराहं वासुदेवं एवं वयासी–अम्हे णं सामी ! जुज्झामो तुब्भे पेच्छह, तते णं पंच पंडवे सराणद्ध जाव पहरणा रहे दुरूहंति २ जेणेव पउमनाभे राया तेणेव उगच्छंति २ एवं वयासी–अम्हे पउमणाभे वा रायत्तिकट्टु पउमनाभेणं सद्धिं संपलग्गा यावि होत्था, तते णं से पउमनाभे राया ते पंच पंडवे खिप्पामेव हयमहिय-पवर-बिवडिय-चिन्ध-द्धय-पडागा जाव दिसोदिसिं पडिसेहेतित्ति १८। तते णं ते पंच पंडवा पउमनाभेणं रन्ना हयमहियपवरविवडिय जाव पडिसेहिया समाणा अत्थामा जाव अधारणिज्जत्तिकट्टु जेणेव कराहे वासुदेवे तेणेव उवागच्छंति तते णं से कराहे वासुदेवे ते पंच पंडवे एवं वयासी–कहराणं तुब्भे देवाणुप्पिया ! पउमणाभेण रन्ना सद्धिं संपलग्गा ?, तते णं ते पंच पंडवा कराहं वासुदेव एवं वयासी–एवं खलु देवाणुप्पिया ! अम्हे तुब्भेहिं अब्भणुन्नाया

समाणा सन्नद्ध जाव गहियाउहपहरणा रहे दुरूहामो २ जेणेव पउमनाभे जाव पडिसेहेति १९ । तते णं से कण्हे वासुदेवे ते पंच पंडवे एवं वयासी–जति णं तुब्भे देवाणुप्पिया ! एवं वयंता अम्हे णो पउमनाभे रायत्तिकट्टु पउमनाभेणं सद्धिं संपलग्गंता तो णं तुब्भे णो पउमणाहे हयमहियपवर जाव पडिसेहिया, तं पेच्छह णं तुब्भे देवाणुप्पिया ! अहं नो पउमणाभे रायत्तिकट्टु पउमनाभेणं रन्ना सद्धिं जुज्झामि, रहं दुरूहति २ जेणेव पउमनाभे राया तेणेव उवागच्छति २ सेयं गोखीरहारधवलं तण-सोल्लिय-सिंदुवार-कुंदेंदु-सन्निगासं नियबलस्स हरिसजणणं रिउसेणण-विणासकरं पंचयणं संखं परामुसति २ मुहवायपूरियं करेति, तते णं तस्स पउमणाहस्स तेणं संखसद्देणं बलतिभाए हते जाव पडिसेहिए, तते णं से कण्हे वासुदेवे धणुं परामुसति वेढो, धणुं पूरेति २ धणुसद्दं करेति, तते णं तस्स पउमनाभस्स दोच्चे बलतिभाए तेणं धणुसद्देणं हयमहिय जाव पडिसेहिए २० । तते णं से पउमणाभे राया तिभाग-बलावसेसे अत्थामे अबले अवीरिए अपुरिसक्कार-परक्कमे अधारणिज्जत्तिकट्टु सिग्घं तुरियं जेणेव अमरकंका तेणेव उवागच्छति २ अमरकंकं रायहाणिं अणुपविसति २ दाराति पिहेति २ रोहसज्जे चिट्ठति २१ । तते णं से कण्हे वासुदेवे जेणेव अमरकंका तेणेव उवागच्छति २ रहं ठवेति २ रहातो पच्चोरूहति २ वेउव्विय-समुग्घाएणं समोहणति, एगं महं णरसीहरूवं विउव्वति २ महया २ सद्देणं पाददद्दरियं करेति, तते णं से कण्हेणं वासुदेवेणं महया २ सद्देणं पाददद्दरएणं कएणं समाणेणं अमरकंका रायहाणी संभग्ग-पागार-गोपुरट्टालय-चरिय-तोरण-पल्हत्थिय-पवर-भवण-सिरि-घरा सरस्सरस्स धरणियले सन्निवइया, तते णं से पउमणाभे राया अमर-कंकं रायहाणिं संभग्ग जाव पासित्ता भीए दोवतिं देविं सरणं उवेति, तते णं सा दोवई देवी पउमनाभं रायं एवं वयासी–किण्णं तुमं देवाणुप्पिया !

न जाणसि कण्हस्स वासुदेवस्स उत्तमपुरिसस्स विप्पियं करेमाणे ममं इह हव्वमाणेसि, तं एवमवि गए गच्छह णं तुमं देवाणुप्पिया ! ण्हाय उल्लपडसाडए अवचूलगवत्थणियत्थे अंतेउर-परियाल-संपरिवुडे अग्गाइं वराइं रयणाइं गहाय ममं पुरतो काउं कण्हं वासुदेवं करयलपायपडिए सरणं उवेहि, पणिवइय-वच्छला णं देवाणुप्पिया ! उत्तमपुरिसा, तते णं से पउमनाभे दोवतीए देवीए एयमट्ठं पडिसुणेति २ ण्हाए जाव सरणं उवेति २ करयल जाव एवं वयासी—दिट्ठा णं देवाणुप्पियाणं इड्ढी जाव परक्कमे तं खामेमि णं देवाणुप्पिया ! जाव खमंतु णं जाव णाहं भुज्जो २ एवंकरणयाएत्तिकट्टु पंजलिवुडे पायवडिए कण्हस्स वासुदेवस्स दोवतिं देविं साहत्थिं उवणेति २२ । तते णं से कण्हे वासुदेवे पउमणाभं एवं वयासी—हं भो पउमणाभा ! अप्पत्थियपत्थिया ४ किण्णं तुमं ण जाणसि मम भगिणि दोवतीं देवीं इह हव्वमाणमाणे ? तं एवमवि गए णत्थि ते ममाहितो इयाणि भयमत्थित्तिकट्टु पउमणाभं पडिविसज्जेति, दोवतिं देविं गिण्हति २ रहं दुरूहेति २ जेणेव पंच पंडवे तेणेव उवागच्छति २ पंचण्हं पंडवाणं दोवतिं देविं साहत्थिं उवणेति, तते णं से कण्हे पंचहिं पंडवेहिं सद्धिं अप्पछट्ठे छहिं रहेहिं लवणसमुद्दं मज्झंमज्झेणं जेणेव जंबुद्दीवे २ जेणेव भारहे वासे तेणेव पहारेत्थ गमणाए २३ ॥ सूत्रं १३० ॥

ते णं काले णं २ धायतिसंडे दीवे पुरच्छिमद्धे भारहे वासे चंपा णामं णयरी होत्था, पुण्णभद्दे चेतिए, तत्थ णं चंपाए नयरीए कविले णामं वासुदेवे राया होत्था, महया हिमवंत-महंत-मलय-मंदर-महिंदसारे जाव पसंतडिंब-डमरं रज्जं पसासेमाणे विहरति, वण्णओ १ । तेणं कालेणं २ मुणिसुव्वए अरहा चंपाए पुण्णभद्दे समोसढे, कपिले वासुदेवे धम्मं सुणेति, तते णं से कविले वासुदेवे मुणिसुव्वयस्स अरहतो धम्मं सुणेमाणे कण्हस्स वासुदेवस्स संखसद्दं सुणेति २ । तते णं तस्स कविलस्स

वासुदेवस्स इमेयारूवे अब्भत्थिए समुप्पज्जित्था–किं मराणे धायइसंडे दीवे भारहे वासे दोच्चे वासुदेवे समुप्पराणे ? जस्स णं अयं संखसद्दे ममंपिव मुहवायपूरिते वियंभति, कविले वासुदेवे सद्दातिं सुणेइ, मुणिसुव्वए अरहा कविलं वासुदेवं एवं वयासी–से णूणं ते कविला वासुदेवा ! मम अंतिए धम्मं णिसामेमाणस्स संखसद्दं आकरिणत्ता इमेयारूवे अब्भत्थिए–किं मन्ने जाव वियंभइ, से णूणं कविला वासुदेवा ! अयमट्ठे समट्ठे ?, हंता ! अत्थि, नो खलु कविला ! एवं भूयं वा ३ जन्नं एगे खेत्ते एगे जुगे एगे समए दुवे अरहंता वा चक्कवट्टी वा बलदेवा वा वासुदेवा वा उप्पज्जिसु उप्पज्जिंति उप्पज्जिस्संति वा, एवं खलु वासुदेवा ! जंबुद्दीवाओ भारहाओ वासाओ हत्थिणाउरणयराओ पंडुस्स रराणो सुराहा पंचराहं पंडवाणं भारिया दोवती देवी तव पउमनाभस्स रराणो पुव्वसंगतिएणं देवेणं अमरकंकाणयरिं साहरिया, तते णं से कराहे वासुदेवे पंचहिं पंडवेहिं सद्धिं अप्पछट्ठे छहिं रहेहिं अमरकंकं रायहाणिं दोवतीए देवीए कूवं हव्वमागए, तते णं तस्स कराहस्स वासुदेवस्स पउमणाभेणं रराणा सद्धिं संगामं संगामेमाणस्स अयं संखसद्दे तव मुहवायपूरिते इव इट्ठे कंते इहेव वियंभति २। तए णं से कविले वासुदेवे मुणिसुव्वयं वंदति २ एवं वयासी–गच्छामि णं अहं भंते ! कराहं वासुदेवं उत्तमपुरिसं सरिसपुरिसं पासामि, तए णं मुणिसुव्वए अरहा कविलं वासुदेवं एवं वयासी–नो खलु देवाणुप्पिया ! एवं भूयं वा ३ जराणं अरहंता वा अरहंतं पासंति चक्कवट्टी वा चक्कवट्टिं पासंति बलदेवा वा बलदेवं पासंति वासुदेवा वा वासुदेवं पासंति, तहवि य णं तुमं कराहस्स वासुदेवस्स लवणसमुद्दं मज्झंमज्झेणं वीतिवयमाणस्स सेयापीयाइं धयग्गातिं पासिहिसि ३। तते णं से कविले वासुदेवे मुणिसुव्वयं वंदति २ हत्थिखंधं दुरूहति २ सिग्घं २ जेणेव वेलाउले तेणेव उवागच्छति २ कराहस्स वासुदेवस्स लवणसमुद्दं मज्झंमज्झेणं वीतिवयमाणस्स सेयापीयाहिं

धयग्गाति पासति २ एवं वयइ—एस णं मम सरिसपुरिसे उत्तमपुरिसे कराहे वासुदेवे लवणसमुद्दं मज्झंमज्झेणं वीतीवयतित्तिकट्टु पंचयन्नं संखं परामुसति मुहवायपूरियं करेति, तते णं से कराहे वासुदेवे कविलस्स वासुदेवस्स संखसद्दं आयन्नेति २ पंचयन्नं जाव पूरियं करेति, तते णं दोवि वासुदेवा संखसद्दसामायारिं करेति, तते णं से कविले वासुदेवे जेणेव अमरकंका तेणेव उवागच्छति २ अमरकंकं रायहाणिं संभग्गतोरणं जाव पासति २ पउमणाभं एवं वयासी—किन्नं देवाणुप्पिया ! एसा अमरकंका संभग्ग जाव सन्निवइया ?, तते णं से पउमणाहे कविलं वासुदेवं एवं वयासी-एवं खलु सामी ! जंबुद्दीवाओ दीवाओ भारहाओ वासाओ इह हव्वमागम्म कराहेणं वासुदेवेणं तुब्भे परिभूय अमरकंका जाव सन्निवाडिया ४ । तते णं से कविले वासुदेवे पउमणाहस्स अंतिए एयमट्ठं सोचा पउमणाहं एवं वयासी—हं भो ! पउमणाभा ! अपत्थियपत्थिया किन्नं तुमं न जाणसि मम सरिसपुरिसस्स कराहस्स वासुदेवस्स विप्पियं करेमाणे ?, आसुरुत्ते जाव पउमणाहं णिव्विसयं आणवेति, पउमणाहस्स पुत्तं अमरकंकारायहाणीए महया २ रायाभिसेएणं अभिसिंचति जाव पडिगते ५ ॥ सूत्रं १३१ ॥ तते णं से कराहे वासुदेवे लवणसमुद्दं मज्झंमज्झेणं वीतिवयति, ते पंच पंडवे एवं वयासी—गच्छह णं तुब्भे देवाणुप्पिया ! गंगामहानदिं उत्तरह जाव ताव अहं सुट्ठियं लवणाहिवइं पासामि १ । तते णं ते पंच पंडवा कराहेणं वासुदेवेणं एवं वुत्ता समाणा जेणेव गंगामहानदी तेणेव उवागच्छंति २ एगट्ठियाए णावाए मग्गणगवेसणं करेंति २ एगट्ठियाए नावाए गंगामहानदिं उत्तरंति २ अरणमरणं एवं वयन्ति—पहू णं देवाणुप्पिया ! कराहे वासुदेवे गंगामहाणदिं बाहाहिं उत्तरित्तए उदाहु णो पभू उत्तरित्तएत्तिकट्टु एगट्ठियाओ नावाओ णूमेंति २ कराहं वासुदेवं पडिवालेमाणा २ चिट्ठंति २ । तते णं से कराहे वासुदेवे सुट्ठियं लवणाहि-

वइं पासति २ जेणेव गंगा महाणदी तेणेव उवागच्छति २ एगट्ठियाए सव्वश्रो समंता मग्गणगवेसणं करेति २ एगट्ठियं अपासमाणे एगाए बाहाए रहं सतुरगं ससारहिं गेराहइ एगाए बाहाए गंगं महाणदिं बासट्ठिं जोयणाति अद्धजोयणं विच्छिन्नं उत्तरिउं पयत्ते यावि होत्था, तते णं से कराहे वासुदेवे गंगामहाणदीए बहुमज्झदेसभागं संपत्ते समाणे संते तंते परितंते बद्धसेए जाए यावि होत्था ३। तते णं कराहस्स वासुदेवस्स इमे एयारूवे अब्भत्थिए जाव समुप्पज्जित्था—अहो णं पंच पंडवा महाबलवगा जेहिं गंगामहाणदी बासट्ठिं जोयणाइं अद्धजोयणं च विच्छिराणा बाहाहिं उत्तिराणा, इच्छंतएहिं णं पंचहिं पंडवेहिं पउमणाभे राया जाव णो पडिसेहिए ४। तते णं गंगादेवी कराहस्स वासुदेवस्स इमं एयारूवं अब्भत्थियं जाव जाणित्ता थाहं वितरति ४। तते णं से कराहे वासुदेवे मुहुत्तंतरं समासासति २ गंगामहाणदिं बावट्ठिं जाव उत्तरति जेणेव पंच पंडवा तेणेव उवागच्छति पंच पंडवे एवं वयासी—अहो णं तुब्भे देवाणुप्पिया! महाबलवगा जेणं तुब्भेहिं गंगामहाणदी बासट्ठिं जाव उत्तिराणा, इच्छंतएहिं तुब्भेहिं पउम जाव णो पडिसेहिए, तते णं ते पंच पंडवा कराहेणं वासुदेवेणं एवं वुत्ता समाणा कराहं वासुदेवं एवं वयासी—एवं खलु देवाणुप्पिया! अम्हे तुब्भेहिं विसज्जिया समाणा जेणेव गंगा महाणदी तेणेव उवागच्छामो २ एगट्ठियाए मग्गणगवेसणं तं चेव जाव णूमेमो तुब्भे पडिवालेमाणा चिट्ठामो ५। तते णं से कराहे वासुदेवे तेसिं पंचराहं पांडवाणं एयमट्ठं सोच्चा णिसम्म आसुरुत्ते जाव तिवलियं एवं वयासी—अहो णं जया मए लवणसमुद्दं दुवे जोयणसयसहस्सा विच्छिराणं वीतीवइत्ता पउमणाभं हयमहिय जाव पडिसेहित्ता अमरकंका संभग्गतोरणा दोवती साहत्थिं उवणीया तया णं तुब्भेहिं मम माहप्पं ण विराणायं इयाणिं जाणिस्सहत्तिकट्टु लोहदंडं परामुसति, पंचराहं पंडवाणं रहे चूरेति २

णिव्विसए आणवेति २ तत्थ णं रहमद्दणे णामं कोड्डे णिविट्ठे ६। तते णं से कण्हे वासुदेवे जेणेव सए खंधावारे तेणेव उवागच्छइ २ सएणं खंधावारेणं सद्धिं अभिसमन्नागए यावि होत्था, तते णं से कण्हे वासुदेवे जेणेव बारवई णयरी तेणेव उवागच्छति २ अणुपविसति ७ ॥सूत्रं १३२॥ तते णं ते पंच पंडवा जेणेव हत्थिणाउरे तेणेव उवागच्छन्ति २ जेणेव पंडू तेणेव उवागच्छंति २ करयल जाव एवं वयासी—एवं खलु ताओ! अम्हे कण्हेणं णिव्विसया आणत्ता, तते णं पंडुराया ते पंच पंडवे एवं वयासी—कहण्णं पुत्ता! तुब्भे कण्हेणं वासुदेवेणं णिव्विसया आणत्ता ?, तते णं ते पंच पंडवा पंडुरायं एवं वयासी—एवं खलु ताओ! अम्हे अमरकंकातो पडिणियत्ता लवणसमुद्दं दोन्नि जोयणसयसहस्साइं वीतिवतित्ता-(त्था), तए णं से कण्हे अम्हे एवं वयासि—गच्छह णं तुब्भे देवाणुप्पिया! गंगामहाणदिं उत्तरह जाव चिट्ठह ताव अहं एवं तहेव ताव चिट्ठामो १। तते णं से कण्हे वासुदेवे सुट्ठियं लवणाहिवइं दट्ठूण तं चेव सव्वं नवरं कण्हस्स चिंता ण जुज्ज(वुच्च)ति जाव अम्हे णिव्विसए आणवेति २। तए णं से पंडुराया ते पंच पंडवे एवं वयासी—दुट्ठु णं पुत्ता! कयं कण्हस्स वासुदेवस्स विप्पियं करेमाणेहिं, तते णं से पंडू राया कोंतिं देविं सद्दावेति २ एवं वयासी—गच्छ णं तुमं देवाणुप्पिया! बारवतिं कण्हस्स वासुदेवस्स णिवेदेहि—एवं खलु देवाणुप्पिया! तुम्हे पंच पंडवा णिव्विसया आणत्ता तुमं च णं देवाणुप्पिया! दाहिणड्ढभरहस्स सामी तं संदिसंतु णं देवाणुप्पिया! ते पंच पंडवा कयरं दिसिं वा विदिसं वा गच्छंतु ?, तते णं सा कोंती पंडुणा एवं वुत्ता समाणी हत्थिखंधं दुरूहति २ जहा हेट्ठा जाव संदिसंतु णं पिउत्था! किमागमण-पओयणं ?, तते णं सा कोंती कण्हं वासुदेवं एवं वयासी—एवं खलु पुत्ता! तुमे पंच पंडवा णिव्विसया आणत्ता तुमं च णं दाहिणड्ढभरह जाव विदिसं वा गच्छंतु ?, तते णं से कण्हे वासुदेवे कोंतिं

देविं एवं वयासी---अपूईवयणा णं पिउत्था ! उत्तमपुरिसा वासुदेवा बलदेवा चक्कवट्टी, तं गच्छंतु णं देवाणुप्पिया ! पंच पंडवा दाहिणिल्लं वेयालिं तत्थ पंडुमहुरं णिवेसंतु ममं अदिट्ठसेवगा भवंतुत्तिकट्टु कोंतिं देविं सक्कारेति सम्माणेति जाव पडिविसज्जेति ३ । तते णं सा कोंती देवी जाव पंडुस्स एयमट्ठं णिवेदेति, तते णं पंडू पंच पंडवे सद्दावेति २ एवं वयासी--गच्छह णं तुब्भे पुत्ता ! दाहिणिल्लं वेयालिं तत्थ णं तुब्भे पंडुमहुरं णिवेसेह, तते णं पंच पंडवा पंडुस्स रगणो जाव तहत्ति पडिसुणेंति सबलवाहणा हयगय-रह-पवरजोहकलियाए चाउरंगिणीए सेणाए सद्धिं संपरिवुडा हत्थिणाउराओ पडिणिक्खमंति २ जेणेव दक्खिणिल्ले वेयाली तेणेव उवागच्छंति २ पंडुमहुरं नगरिं निवेसेति २ तत्थ णं ते विपुलभोगसमितिसमणागया यावि होत्था ४ ॥ सूत्रं १३३ ॥ तते णं सा दोवई देवी अन्नया कयाइं आवरणसत्ता जाया यावि होत्था, तते णं सा दोवती देवी णवराहं मासाणं जाव सुरूवं दारगं पयाया सूमालं णिव्वत्तबारसाहस्स इमं एयारूवं जम्हा णं अम्हं एस दारए पंचराहं पंडवाणं पुत्ते दोवतीए अत्तए तं होउ अम्हं इमस्स दारगस्स णामधेज्जं पंडुसेणे, तते णं तस्स दारगस्स अम्मापियरो णामधेज्जं करेन्ति पंडुसेणत्ति, बावत्तरिं कलाओ जाव भोगसमत्थे जाए जुवराया जाव विहरति १ । थेरा समोसढा परिसा निग्गया पंडवा निग्गया धम्मं सोचा एवं वयासी-- जं णवरं देवाणुप्पिया ! दोवतिं देविं आपुच्छामो पंडुसेणं च कुमारं रज्जे ठवेमो ततो पच्छा देवाणुप्पियाणं अंतिए मुंडे भवित्ता जाव पव्वयामो, अहासुहं देवाणुप्पिया !, तते णं ते पंच पंडवा जेणेव सए गिहे तेणेव उवागच्छंति २ दोवतिं देविं सद्दावेंति २ एवं वयासी--एवं खलु देवाणुप्पिया ! अम्हेहिं थेराणं अंतिए धम्मे णिसंते जाव पव्वयामो, तुमं देवाणुप्पिए ! किं करेसि ?, तते णं सा दोवती देवी ते पंच पंडवे एवं वयासी--जति णं तुब्भे देवाणुप्पिया ! संसारभउव्विग्गा पव्वयह

ममं के अराणे आलंबे वा जाव भविस्सति ?, अहंपि य णं संसारभउव्विग्गा देवाणुप्पिएहिं सद्धिं पव्वतिस्सामि, तते णं ते पंच पंडवा पंडुसेणस्स अभिसेओ जाव राया जाए जाव रज्जं पसाहेमाणे विहरति २। तते णं ते पंच पंडवा दोवती य देवी अन्नया कयाइं पंडुसेणं रायाणं आपुच्छंति, तते णं से पंडुसेणे राया कोडुंबियपुरिसे सद्दावेति २ एवं वयासी--खिप्पामेव भो ! देवाणुप्पिया ! निक्खमणाभिसेयं जाव उवट्ठवेह पुरिस-सहस्स-वाहणीओ सिबियाओ उवट्ठवेह जाव पच्चोरुहंति जेणेव थेरा तेणेव उवागच्छंति २ जाव आलित्ते णं जाव समणा जाया चोद्दस्स पुव्वाइं अहिज्जंति २ बहूणि वासाणि छट्ठ-ट्ठम-दसम-दुवालसेहिं मासद्धमासखमणेहिं अप्पाणं भावेमाणा विहरंति ३। ॥ सूत्रं १३४ ॥ तते णं सा दोवती देवी सीयातो पच्चोरूहति जाव पव्वतिया सुव्वयाए अज्जाए सिस्सिणीयत्ताए दलयति, इक्कारस अंगाइं अहिज्जइ बहूणि वासाणि छट्ठट्ठम-दसम-दुवालसेहिं जाव विहरति ॥ सूत्रं १३५ ॥

तते णं थेरा भगवंतो अन्नया कयाई पंडुमहुरातो णयरीतो सहसंबवणाओ उज्जाणाओ पडिणिक्खमंति २ बहिया जणवयविहारं विहरंति १। तेणं कालेणं २ अरिहा अरिट्ठनेमी जेणेव सुरट्ठाजणवए तेणेव उवागच्छति २ सुरट्ठाजणवयंसि संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे विहरति, तते णं बहुजणो अन्नमन्नस्स एवमातिक्खइ एवं खलु देवाणुप्पिया ! अरिहा अरिट्ठनेमी सुरट्ठाजणवए जाव विहरति २। तते णं से जुहिट्ठिल्लपामोक्खा पंच अणगारा बहुजणस्स अंतिए एयमट्ठं सोच्चा अन्नमन्नं सद्दावेंति २ एवं वयासी--एवं खलु देवाणुप्पिया ! अरहा अरिट्ठनेमी पुव्वाणुपुव्वीए जाव विहरइ ३। तं सेयं खलु अम्हं थेरा आपुच्छित्ता अरहं अरिट्ठनेमिं वंदणाए गमित्तए, अन्नमन्नस्स एयमट्ठं पडिसुणेंति २ जेणेव थेरा भगवंतो तेणेव उवागच्छंति २ थेरे भगवंते वंदंति णमंसंति २

त्ता एवं वयासी--इच्छामो णं तुब्भेहिं अब्भणुन्नाया समाणा अरहं अरिट्ठनेमि जाव गमित्तए, अहासुहं देवाणुप्पिया ! ४ । तते णं ते जुहिट्ठिलपामोक्खा पंच अणगारा थेरेहिं अब्भणुन्नाया समाणा थेरे भगवंते वंदंति णमंसंति २ थेराणं अंतियाओ पडिणिक्खमंति मासंमासेणं अणिक्खित्तेणं तवोकम्मेणं गामाणुगामं दूईज्जमाणा जाव जेणेव हत्थकप्पे नयरे तेणेव उवागच्छंति हत्थकप्पस्स बहिया सहसंबवणे उज्जाणे जाव विहरंति ५ । तते णं ते जुहिट्ठिलवज्जा चत्तारि अणगारा मासखमण-पारणए पढमाए पोरसीए सज्झायं करेंति बीयाए एवं जहा गोयमसामी णवरं जुहिट्ठिल्लं आपुच्छंति जाव अडमाणा बहुजणसद्दं णिसामेंति--एवं खलु देवाणुप्पिया ! अरहा अरिट्ठनेमी उज्जितसेलसिहरे मासिएणं भत्तेणं अपाणएणं पंचहिं छत्तीसेहिं अणगारसएहिं सद्धिं कालगए जाव पहीणे ६ । तते णं ते जुहिट्ठिलवज्जा चत्तारि अणगारा बहुजणस्स अंतिए एयमट्ठं सोचा हत्थकप्पाओ पडिणिक्खमंति २ जेणेव सहसंबवणे उज्जाणे जेणेव जुहिट्ठिल्ले अणगारे तेणेव उवागच्छंति २ भत्तपाणं पच्चुवेक्खंति २ गमणागमणस्स पडिक्कमंति २ एसणमणेसणं आलोएंति २ भत्तपाणं पडिदसेंति २ एवं वयासी--एवं खलु देवाणुप्पिया ! जाव कालगए तं सेयं खलु अम्हं देवाणुप्पिया ! इमं पुव्वगहियं भत्तपाणं परिट्ठवेत्ता सेत्तुञ्जं पव्वयं सणियं सणियं दुरूहित्तए संलेहणाए भूसणाभूसियाणं कालं अणवकंखमाणाणं विहरित्तएत्तिकट्टु अण्णमण्णस्स एयमट्ठं पडिसुणेंति २ तं पुव्वगहियं भत्तपाणं एगंते परिट्ठवेंति २ जेणेव सेत्तुञ्जे पव्वए तेणेव उवागच्छंति २ त्ता सेत्तुञ्जं पव्वयं दुरूहंति २ जाव कालं अणवकंखमाणा विहरंति ७ । तते णं ते जुहिट्ठिलपामोक्खा पंच अणगारा सामाइय-मातियाति चोद्दस पुव्वाइं बहूणि वासाणि दोमासियाए संलेहणाए अत्ताणं झोसित्ता जस्सट्ठाए कीरति णग्गभावे जाव तमट्ठमाराहेंति २ अणंते जाव केवलवरणाणदंसणे

समुप्पन्ने जाव सिद्धा ८ ॥ सूत्रं १३६ ॥ तते णं सा दोवती अज्जा सुव्वयाणं अज्जियाणं अंतिए सामाइयमाइयाइं एक्कारस अंगाति अहिज्जति २ बहूणि वासाणि सामण्णपरियागं पालयित्ता मासियाए संलेहणाए अप्पाणं झोसेत्ता सट्ठिं भत्ताइं अणसणाए छेदेत्ता आलोइयपडिक्कंता कालमासे कालं किच्चा बंभलोए उववन्ना, तत्थ णं अत्थेगतियाणं देवाणं दस सागरोवमाइं ठिती पन्नत्ता, तत्थ णं दुवतिस्स देवस्स दस सागरोवमाइं ठिती पन्नत्ता, से णं भंते ! दुवए देवे ततो जाव महाविदेहे वासे जाव अंतं काहिति। एवं खलु जंबू ! समणेणं भगवया महावीरेणं आइगरेणं तित्थगरेण जाव संपत्तेणं सोलमस्स नायज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्तेत्तिबेमि ॥ सूत्रं १३७ ॥ सोलसमं नायज्झयणं समत्तं ॥

॥ इति षोडशमध्ययनम् ॥ १६ ॥

॥१७॥ अथ श्री अश्वाख्यं सप्तदशमध्ययनम् ॥

जति णं भंते ! समणेणं भगवया महावीरेणं जाव संपत्तेणं सोलसमस्स णायज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते सत्तरसमस्स णं भंते णायज्झयणस्स समणेणं जाव संपत्तेणं के अट्ठे पन्नत्ते ?, एवं खलु जंबू ! तेणं कालेणं २ हत्थिसीसे नयरे होत्था, वण्णओ, तत्थ णं कणगकेऊ णामं राया होत्था, वण्णओ १ । तत्थ णं हत्थिसीसे णयरे बहवे संजुत्ताणावावाणियगा परिवसंति अड्ढा जाव बहुजणस्स अपरिभूया यावि होत्था, तते णं तेसिं संजुत्ताणावावाणियगाणं अन्नया एगयओ जहा अरहण्णओ जाव लवणसमुद्दं अणेगाइं जोयणसयाइं ओगाढा यावि होत्था, तते णं तेसिं जाव बहूणि उप्पातियसयाति जहा मागंदियदारगाणं जाव कालियवाए य तत्थ समुत्थिए, तते णं सा णावा तेणं कालियवाएणं आघोलिज्जमाणी २ संचालिज्जमाणी २ संखोहिज्जमाणी २ तत्थेव परिभमति २ । तते णं से

णिज्जामए णट्ठमतीते णट्ठसुतीते णट्ठसण्णे मूढदिसाभाए जाए यावि होत्था, ण जाणइ कयरं देसं वा दिसं वा विदिसं वा पोयवहणे अवहितत्तिकट्टु ओहयमणसंकप्पे जाव झियायति, तते णं ते बहवे कुच्छिधारा य कण्णधारा य गब्भिल्लगा य संजुत्ताणावावाणियगा य जेणेव से णिज्जामए तेणेव उवागच्छंति २ एवं वयासी—किन्नं तुमं देवाणुप्पिया! ओहयमणसंकप्पा जाव झियायह ?, तते णं से णिज्जामए ते बहवे कुच्छिधारा य ४ एवं वयासी—एवं खलु देवाणुप्पिया! णट्ठमतीते जाव अवहिएत्तिकट्टु ततो ओहयमणसंकप्पे जाव झियामि, तते णं ते कण्णधारा तस्स णिज्जामयस्स अंतिए एयमट्ठं सोच्चा णिसम्म भीया ५ ण्हाया कयबलिकम्मा करयल जाव बहूणं इंदाण य खंधाण य जहा मल्लिनाए जाव उवायमाणा २ चिट्ठंति ३। तते णं से णिज्जामए ततो मुहुत्तंतरस्स लद्धमतीते ३ अमूढदिसाभाए जाए यावि होत्था, तते णं से णिज्जामए ते बहवे कुच्छिधारा य ४ एवं वयासी—एवं खलु अहं देवाणुप्पिया! लद्धमतीए जाव अमूढदिसाभाए जाए, अम्हे णं देवाणुप्पिया! कालियदीवंतेणं संवूढा, एस णं कालियदीवे आलोकति, तते णं ते कुच्छिधारा य ४ तस्स णिज्जागमस्स अंतिए सोच्चा हट्ठतुट्ठा पयक्खिणाणुकूलेणं वाएणं जेणेव कालीयदीवे तेणेव उवागच्छंति २ पोयवहणं लंबेंति २ एगट्ठियाहिं कालियदीवं उत्तरंति ४। तत्थ णं बहवे हिरण्णागरे य सुवण्णागरे य रयणागरे य वइरागरे य बहवे तत्थ आसे पासंति, किं ते ?, हरिरेणुसोणिसुत्तगा आईणवेढो, तते णं ते आसा ते वाणियए पासंति तेसिं गंधं अग्घायंति २ भीया तत्था उव्विग्गा उव्विग्गमणा ततो अणेगाइं जोइणाति उब्भमंति, ते णं तत्थ पउरगोयरा पउरतण-पाणिया निब्भया निरुव्विग्गा सुहंसुहेणं विहरंति ५। तए णं संजुत्तानावा-वाणियगा अण्णमण्णं एवं वयासी—किण्हं अम्हे देवाणुप्पिया! आसेहिं ?, इमे णं बहवे हिरण्णागरा य सुवण्णागरा य रयणागरा य वइरागरा य तं सेयं

खलु अम्हं हिरगणस्स य सुवगणस्स य रयणस्स य वइरस्स य पोयवहणं भरित्तएत्तिकट्टु अन्नमन्नस्स एयमट्ठं पडिसुणेंति २ हिरगणस्स य सुवगणस्स य रयणस्स य वइरस्स य तणस्स य अगणस्स य कट्ठस्स य पाणियस्स य पोयवहणं भरेंति २ पयक्खिणाणुकूलेणं वाएणं जेणेव गंभीर-पोयवहण-पट्टणे तेणेव उवागच्छंति २ पोयवहणं लंबेंति २ सगडीसागडं सज्जेंति २ तं हिरगणं जाव वइरं च एगट्ठियाहिं पोयवहणाओ संचारेंति २ सगडी-सागडं संजोइंति २ जेणेव हत्थिसीसए नयरे तेणेव उवागच्छंति २ हत्थि-सीसयस्स नयरस्स बहिया अग्गुज्जाणे सत्थणिवेसं करेंति २ सगडीसागडं मोएंति २ महत्थं जाव पाहुडं गेराहंति २ हत्थिसीसं च नगरं अणुपविसंति २ जेणेव कणगकेऊ तेणेव उवागच्छंति २ जाव उवणेंति, तते णं से कणगकेऊ तेसिं संजुत्ताणावा-वाणियगाणं तं महत्थं जाव पडिच्छति ६ ॥ सूत्रं १३८ ॥ ते संजुत्ताणावा-वाणियगा एवं वयासी—तुब्भे णं देवाणु-प्पिया ! गामागर जाव आहिंडह लवणसमुदं च अभिक्खणं २ पोयवहणेणं ओगाहह तं अत्थि याइं केइ भे कहिंचि अच्छेरए दिट्ठपुव्वे ?, तते णं ते संजुत्ताणावा-वाणियगा कणगकेउं एवं वयासी—एवं खलु अम्हे देवाणुप्पिया! इहेव हत्थिसीसे नयरे परिवसामो तं चेव जाव कालियदीवंतेणं संवूढा १। तत्थ णं बहवे हिरगणागरा य जाव बहवे तत्थ आसे, किं ते हरिरेणु जाव अणेगाइं जोयणाइं उब्भमंति, तते णं सामी ! अम्हेहिं कालियदीवे ते आसा अच्छेरए दिट्ठपुव्वे २ । तते णं से कणगकेऊ तेसिं संजत्तगाणं अंतिए एयमट्ठं सोच्चा ते संजुत्तए एवं वयासी—गच्छह णं तुब्भे देवाणुप्पिया ! मम कोडुं-बियपुरिसेहिं सद्धिं कालियदीवाओ ते आसे आणेह, तते णं से संजुत्ता नावा-वाणियगा कणगकेउं एवं वयासी—एवं सामित्तिकट्टु आणाए विणएणं वयणं पडिसुणेंति ३। तते णं कणगकेऊ कोडुंबियपुरिसे सद्दावेति २ एवं वयासी—गच्छह णं तुब्भे देवाणुप्पिया ! संजुत्तएहिं सद्धिं कालियदी-

वाओ मम आसे आरोह, तेवि पडिसुणेंति, तते णं ते कोडुंबियपुरिसा सगडीसागडं सज्जेंति २ तत्थ णं बहूणं वीणाण य वल्लकीण य भामरीण य कच्छभीण य भंभाण य छब्भामरीण य विचित्तवीणाण य अन्नेसिं च बहूणं सोतिंदिय-पाउग्गाणं दव्वाणं सगडीसागडं भरेंति २ बहूणं किण्हाण य जाव सुक्किलाण य कट्ठकम्माण य ४ गंथिमाण य ४ जाव संघाइमाण य अन्नेसिं च बहूणं चक्खिंदिय-पाउग्गाणं दव्वाणं सगडीसागडं भरेंति २ बहूणं कोट्ठपुडाण य केयइपुडाण य जाव अन्नेसिं च बहूणं घाणिंदिय-पाउग्गाणं दव्वाणं सगडीसागडं भरेंति २ बहुस्स खंडस्स य गुलस्स य सक्कराए य मच्छंडियाए य पुप्फुत्तरपउमुत्तर० अन्नेसिं च जिब्भिंदियपाउ-ग्गाणं दव्वाणं भरेंति २ बहूणं कोयवयाण य कंबलाण य पावरणाण य नवतयाण य मलया(सगा)ण य मसूराण य सिलावट्टाण जाव हंसगब्भाण य अन्नेसिं च फासिंदिय-पाउग्गाणं दव्वाणं जाव भरेंति २ सगडीसागडं जोएंति २ जेणेव गंभीरए पोयट्ठाणे तेणेव य उवागच्छंति २ सगडीसागडं मोएंति २ पोयवहणं सज्जेंति २ तेसिं उक्किट्ठाणं सद्दफरिस-रसरूवगंधाणं कट्ठस्स य तणस्स य पाणियस्स य तंदुलाण य समियस्स य गोरसस्स य जाव अन्नेसिं च बहूणं पोयवहण-पाउग्गाणं पोयवहणं भरेंति २ दक्खि-णाणुकूलेणं वाएणं जेणेव कालियदीवे तेणेव उवागच्छंति २ पोयवहणं लंबेंति २ ताइं उक्किट्ठाइं सद्दफरिस-रसरूवगंधाइं एगट्ठियाहिं कालियदीवं उत्तारेंति २ जहिं २ च णं ते आसा आसयंति वा सयंति वा चिट्ठंति वा तुयट्टंति वा तहिं २ च णं ते कोडुंबियपुरिसा ताओ वीणाओ य जाव विचित्तवीणातो य अन्नाणि बहूणि सोइंदिय-पाउग्गाणि य दव्वाणि समुदीरेमाणा चिट्ठंति, तेसिं परिपेरंतेणं पासए ठवेंति २ णिच्चला णिप्फंदा तुसिणीया चिट्ठंति ४। जत्थ २ ते आसा आसयंति वा जाव तुयट्टंति वा तत्थ तत्थ णं ते कोडुंबियपुरिसा बहूणि किण्हाणि य ५ कट्ठकम्माणि

य जाव संचाइमाणि य अन्नाणि य बहूणि चक्खिदिय-पाउग्गाणि य दव्वाणि ठवेंति तेसिं परिपेरंतेणं पासए ठवेंति २ णिचला णिप्फंदा० चिट्ठंति, जत्थ २ ते आसा आसयंति ४ तत्थ २ णं तेसिं बहूणं कोट्ठ-पुडाण य अन्नेसिं च घाणिंदिय-पाउग्गाणं दव्वाणं पुंजे य णियरे य करेंति २ तेसिं परिपेरंते जाव चिट्ठंति, जत्थ २ णं ते आसा आसयंति ४ तत्थ २ गुलस्स जाव अन्नेसिं च बहूणं जिब्भिदिय-पाउग्गाणं दव्वाणं पुंजे य निकरे य करेंति २ वियरए खणंति २ गुलपाणगस्स खंडपाण-गस्स पा(पो)रपाणगस्स अन्नेसिं च बहूणि पाणगाणं वियरे भरेंति २ तेसिं परिपेरंतेणं पासए ठवेंति जाव चिट्ठंति ५। जहिं २ च णं ते आसा आसयंति ४ तहिं २ च ते बहवे कोयवया य जाव सिलावट्टया अत्थाणि य फासिंदिया-पाउगाइं अत्थुयपचत्थुयाइं ठवेंति २ तेसिं परिपेरंतेणं जाव चिट्ठंति, तते णं ते आसा जेणेव एते उक्किट्ठा सद्दफरिस-रसरूवगंधा तेणेव उवा-गच्छंति २ तत्थ णं अत्थेगतिया आसा अपुव्वा णं इमे सद्दफरिस-रसरूवगंधा इतिकट्टु तेसु उक्किट्ठेसु सद्दफरिस-रसरूवगंधेसु अमुच्छिया ४ तेसिं उक्किट्ठाणं सद्द जाव गंधाणं दूरंदूरेणं अवकमंति, ते णं तत्थ पउरगोयरा पउरतण-पाणिया णिब्भया णिरुव्विग्गा सुहंसुहेणं विहरंति, एवामेव समणाउसो ! जो अम्हं णिग्गंथो वा २ सद्दफरिस-रसरूवगंधा णो सज्जति से णं इहलोए चेव बहूणं समणाणं ४ अच्चणिज्जे जाव वीतिवयति ६ ॥ सूत्रं १३१ ॥ तत्थ णं अत्थेगतिया आसा जेणेव उक्किट्ठ-सद्दफरिस-रसरू-वगंधा तेणेव उवागच्छंति २ तेसु उक्किट्ठेसु सद्दफरिस ५ मुच्छिया जाव अज्झोववण्णा आसेविउं पयत्ते यावि होत्था, तते णं ते आसा एए उक्किट्ठे सद्द ५ आसेवमाणा तेहिं बहूहिं कूडेहि य पासेहि य गलएसु य पाएसु य बज्झंति १। तते णं ते कोडुंबिया एए आसे गिरहंति २ एगट्ठियाहिं पोयवहणे संचारेंति २ तणस्स कट्ठस्स जाव भरेंति, तते णं ते संजुत्ता

दक्खिणाणुकूलेणं वाएणं जेणेव गंभीर-पोयपट्टणे तेणेव उवागच्छंति २ पोयवहणं लंबेंति २ ते आसे उत्तारेंति २ जेणेव हत्थिसीसे णयरे जेणेव कणगकेऊ राया तेणेव उवागच्छंति २ त्ता करयल जाव वद्धावेंति २ ते आसे उवणेंति २। तते णं से कणगकेऊ तेसिं संजुत्तानावावाणियगाणं उस्सुक्कं वितरति २ सक्कारेति संमाणेति २ त्ता पडिविसज्जेति, तते णं से कणगकेऊ कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ २ सक्कारेति संमाणेति २ त्ता पडिविसज्जेति ३। तते णं से कणगकेऊ आसमद्दए सद्दावेति २ एवं वयासी—तुब्भे णं देवाणुप्पिया! मम आसे विणएह, तते णं ते आसमद्दगा तहत्ति पडिसुणंति २ ते आसे बहूहिं मुहबंधेहि य कण्णबंधेहि य णासाबंधेहि य वालबंधेहि य खुरबंधेहि य कडगबंधेहि य खलिणबंधेहि य उ(क)वीलणेहि (अहिलाणेहि) य पडियाणेहि य अंकणाहि य वेलप्पहारेहि य चि(वि)त्तप्पहारेहि य लयप्पहारेहि य कसप्पहारेहि य छिवप्पहारेहि य विणयंति २ कणगकेउस्स रन्नो उवणेंति २ तते णं से कणगकेऊ ते आसमद्दए सक्कारेति २ पडिविसज्जेति ४। तते णं ते आसा बहूहिं मुहबंधेहि य जाव छिवप्पहारेहि य बहूणि सारीर-माणसाणि दुक्खाणि पावेंति, एवामेव समणाउसो! जो अम्हं णिग्गंथो वा २ पव्वइए समाणे इट्ठेसु सद्दफरिस जाव गंधेसु य सज्जति रज्जति गिज्झति मुज्झति अज्झोववज्जति से णं इहलोए चेव बहूणं समणाण य जाव सावियाण य हीलणिज्जे जाव अणुपरियट्टिस्सति ५॥ सूत्रं १४०॥

कल-रिभिय-महुर-तंती-तल-ताल-वंस-कउहाभिरामेसु। सद्देसु रज्जमाणा रमंती सोइंदियवसट्टा ॥ १ ॥ सोइंदिय-दुद्दन्तत्तणस्स अह एत्तिओ हवति दोसो। दीविगरुय-मसहंतो वहबंधं तित्तिरो पत्तो ॥ २ ॥ थण-जहण-वयण-कर-चरण-णयण-गव्विय-विलासिय-गतीसु। रूवेसु रज्जमाणा रमंति चक्खिदियवसट्टा ॥ ३ ॥ चक्खिदिय-दुद्दंतत्तणस्स अह एत्तिओ भवति

दोसो । जं जलणंमि जलंते पडति पयंगो अबुद्धीओ ॥ ४ ॥ अगुरु-वर-पवर-धूवण-उउय-मल्लाणुलेवण-विहीसु । गंधेसु रज्जमाणा रमंति घाणिंदिय-वसट्टा ॥ ५ ॥ घाणिंदिय-दुद्दंतत्तणस्स अह एतिओ हवइ दोसो । जं ओसहिगंधेणं बिलाओ निद्धावती उरगो ॥ ६ ॥ तित्तकडुयं कसायंब-महुरं बहुखज्ज-पेज्जलेज्झेसु । आसायंमि उ गिद्धा रमंति जिब्भिंदियवसट्टा ॥ ७ ॥ जिब्भिंदिय-दुद्दंतत्तणस्स अह एत्तिओ हवइ दोसो । जं गललग्गुक्खित्तो फुरइ थलविरल्लिओ मच्छो ॥ ८ ॥ उउ-भयमाण-सुहेहि य सविभव-हियय-गमण-निव्वुइकरेसु । फासेसु रज्जमाणा रमंति फासिंदिय-वसट्टा ॥९॥ फासिंदिय-दुद्दंतत्तणस्स अह एत्तिओ हवइ दोसो । जं खणइ मत्थयं कुंजरस्स लोहंकुसो तिक्खो ॥ १० ॥ कल-रिभिय-महुर-तंती-तल-ताल-वंस-कउहाभिरामेसु । सद्देसु जे न गिद्धा वसट्टमरणं न ते मरए ॥ ११ ॥ थण-जहण-वयण-कर-चरण-नयण-गव्विय-विलासिय-गतीसु । रूवेसु जे न रत्ता वसट्टमरणं न ते मरए ॥१२॥ अगरु-वर-पवर-धूवण-उउय-मल्लाणुलेवण-विहीसु । गंधेसु जे न गिद्धा वसट्टमरणं न ते मरए ॥ १३ ॥ तित्तकडुयं कसायंब-महुरं बहुखज्ज-पेज्जलेज्झेसु । आसाये जे न गिद्धा वसट्टमरणं न ते मरए ॥ १४ ॥ उउ-भयमाण-सुहेसु य सविभव-हियय-मणणिव्वुइकरेसु । फासेसु जे न गिद्धा वसट्टमरणं न ते मरए ॥ १५ ॥ सद्देसु य भद्दयपावएसु सोयविसयं उवगएसु । तुट्ठेण व रुट्ठेण व समणेण सया ण होयव्वं ॥ १६ ॥ रूवेसु य भद्दग-पावएसु चक्खुविसयं उवगएसु । तुट्ठेण व रुट्ठेण व समणेण सया ण होयव्वं ॥ १७ ॥ गंधेसु य भद्दयपावएसु घाणविसयं उवगएसु । तुट्ठेण व रुट्ठेण व समणेण सया ण होयव्वं ॥ १८ ॥ रसेसु य भद्दयपावएसु जिब्भविसयं उवगएसु । तुट्ठेण व रुट्ठेण व समणेण सया ण होयव्वं ॥ १९ ॥ फासेसु य भद्दयपावएसु कायविसयं उवगएसु । तुट्ठेण व रुट्ठेण व समणेण सया ण होयव्वं ॥ २० ॥ एवं

खलु जंबू ! समणेणं भगवया महावीरेणं जाव संपत्तेणं सत्तरसमस्स णायज्झ-यणस्स अयमट्ठे पन्नत्तेत्तिबेमि ॥ सूत्रं १४१ ॥ सत्तरसमं नायज्झयणं समत्तं ॥

॥ इति सप्तदशमध्ययनम् ॥ १७ ॥

॥१८॥ अथ श्रीसुसुमाख्यं अष्टादशमध्ययनम् ॥

जति णं भंते ! समणेणं जाव संपत्तेणं सत्तरसमस्स नायज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते अट्ठारसमस्स णं भंते ! नायज्झयणस्स समणेणं जाव संपत्तेणं के अट्ठे पन्नत्ते ?, एवं खलु जंबू ! तेणं कालेणं २ रायगिहे णामं नयरे होत्था वण्णओ १ । तत्थ णं धणे सत्थवाहे भद्दा भारिया, तस्स णं धणस्स सत्थवाहस्स पुत्ता भद्दाए अत्तया पंच सत्थवाहदारगा होत्था, तंजहा–धणे धणपाले धणदेवे धणगोवे धणरक्खिए, तस्स णं धणस्स सत्थवाहस्स धूया भद्दाए अत्तया पंचण्हं पुत्ताणं अणुमग्गजातीया सुंसुमा-*णामं दारिया होत्था सूमालपाणिपाया २ । तस्स णं धणस्स सत्थवाहस्स* चिलाए नामं दासचेडे होत्था अहीण-पंचिंदियसरीरे मंसोवचिए बाल-कीला-वण-कुसले यावि होत्था, तते णं से दासचेडे सुंसुमाए दारियाए बालग्गाहे जाए यावि होत्था, सुंसुमं दारियं कडीए गिण्हति २ बहूहिं दारएहि य दारियाहि य डिंभएहि य डिंभियाहिं य कुमारएहि य कुमारियाहि य सद्धिं अभिरममाणे २ विहरति ३ । तते णं से चिलाए दासचेडे तेसिं बहूणं दारियाण य ६ अप्पेगतियाणं खलए अवहरति, एवं वट्टए आडो-लियातो तेंदुसए पोत्तुलए साडोलए अप्पेगतियाणं आभरणमल्लालंकारं अवहरति अप्पेगतिया आउस्सति एवं अवहसइ निच्छोडेति निब्भच्छेति तज्जेति अप्पेगतिया तालेति, तते णं ते बहवे दारगा य ६ रोयमाणा य ५ साणं २ अम्मापिऊणं णिवेदेंति तते णं तेसिं बहूणं दारगाण य ६ अम्मापियरो जेणेव धणे सत्थवाहे तेणेव उवागच्छंति धणं सत्थवाहं

बहूहिं खेज्जणाहि य रुंटणाहि य उवलंभणाहि य खेज्जमाणा य रुंटमाणा य उवलंभमाणा य धरणस्स एयमट्ठं णिवेदेंति ४। तते णं धरणे सत्थवाहे चिलायं दासचेडं एयमट्ठं भुज्जो २ णिवारेंति, णो चेव णं चिलाए दासचेडे उवरमति, तते णं से चिलाए दासचेडे तेसिं बहूणं दारगाण य ६ अप्पेगतियाणं खुल्लए अवहरति जाव तालेति, तते णं ते बहवे दारगा य ६ रोयमाणा य जाव अम्मापिऊणं णिवेदेंति, तते णं ते आसुरुत्ता ५ जेणेव धरणे सत्थवाहे तेणेव उवागच्छंति २ त्ता बहूहिं खिज्ज जाव एयमट्ठं णिवेदेंति, ५। तते णं से धरणे सत्थवाहे बहूणं दारगाणं ६ अम्मापिऊणं अंतिए एयमट्ठं सोच्चा आसुरुत्ते चिलायं दासचेडं उच्चावयाहिं आउसणाहिं आउसति उद्धंसति णिब्भच्छेति निच्छोडेति तज्जेति उच्चावयाहिं तालणाहिं तालेति साती गिहातो णिच्छुभति ६ ॥ सूत्रं १४२ ॥ तते णं से चिलाए दासचेडे साती गिहातो निच्छूढे समाणे रायगिहे नयरे सिंघाडए जाव पहेसु देवकुलेसु य सभासु य पवासु य जयखलएसु य वेसाघरेसु य पाणघरएसु य सुहंसुहेणं परिवड्ढति १। तते णं से चिलाए दासचेडे अणोहट्टिए अणिवारिए सच्छंदमई सइरप्पयारी मज्जपसंगी चोज्जपसंगी मंसपसंगी जूयप्पसंगी वेसापसंगी परदारप्पसंगी जाए यावि होत्था २। तते णं रायगिहस्स नगरस्स अदूरसामंते दाहिणपुरत्थिमे दिसिभाए सीहगुहा नामं चोरपल्ली होत्था विसम-गिरि-कडग-कोडंब-संनिविट्ठा वंसी-कलंक(कड) पागार-परिक्खित्ता छिण्ण-सेल-विसम-प्पवाय-फरिहोवगूढा एगदुवारा अणेग-खंडी विदित-जणणिग्गमपवेसा अब्भितर-पाणिया सुदुल्लभ-जलपेरंता (जत्थ चउरंगबलनिउत्तावि कूवियबला-हयमहियपवर-वीर-घाइय-निवडिय-चिन्धधय-वडया कीरंति) सुबहुस्सवि कूवियबलस्स आगयस्स दुप्पहंसा यावि होत्था ३। तत्थ णं सीहगुहाए चोरपल्लीए विजए णामं चोरसेणावती परिवसति अहम्मिए जाव अधम्मे केऊ समुट्ठिए बहुणगर-णिग्गयजसे सूरे दढप्पहारी

साहसीए सद्दवेही, से णं तत्थ सीहगुहाए चोरपल्लीए पंचण्हं चोरसयाणं आहेवच्चं जाव विहरति ४। तते णं से विजए तक्करे चोरसेणावती बहूणं चोराण य पारदारियाण य गंठिभेयगाण य संधिच्छेयगाण य खत्तखणगाण य रायावगारीण य अणधारगाण य बाल-घायगाण य वीसंभ-घायगाण य जूयकाराण य खंडरक्खाण य अन्नेसिं च बहूणं छिन्नभिन्न-बहिराहयाणं कुडंगे यावि होत्था ५। तते णं से विजए तक्करे चोरसेणावती रायगिहस्स दाहिणपुरच्छिमं जणवयं बहूहिं गामघाएहि य नगरघाएहि य गोग्गहणेहि य बंदिग्गहणेहि य पंथकुट्टणेहि य खत्तखणणेहि य उवीलेमाणे २ विद्धंसेमाणे २ णित्थाणं णिद्धणं करेमाणे विहरति ६। तते णं से चिलाए दासचेडे रायगिहे बहूहिं अत्थाभिसंकीहि य चोज्जाभिसंकीहि य दारभिसंकीहि य धणिएहि य जूइकरेहि य परब्भवमाणे २ रायगिहाओ नगरीओ णिग्गच्छति २ जेणेव सीहगुफा चोरपल्ली तेणेव उवागच्छति २ विजयं चोरसेणावति उवसंपज्जित्ताणं विहरति ७। तते णं से चिलाए दासचेडे विजयस्स चोरसेणावइस्स अग्गे असिलट्ठिग्गाहे जाए यावि होत्था, जाहेविय णं से विजए चोरसेणावती गामघायं वा जाव पंथकोट्टिं वा काउं वच्चति ताहेविय णं से चिलाए दासचेडे सुबहुंपि हु कूवियबलं हयविमहिय जाव पडिसेहति पुणरवि लद्धट्ठे कयकज्जे अणहसमग्गे सीहगुहं चोरपल्लिं हव्वमागच्छति, तते णं से विजए चोरसेणावती चिलायं तक्करं बहुईओ चोरविज्जाओ य चोरमंते य चोरमायाओ य चोरनिगडीओ य सिक्खावेइ ८। तते णं से विजए चोरसेणावई अन्नया कयाई कालधम्मुणा संजुत्ते यावि होत्था, तते णं ताइं पंचचोरसयाति विजयस्स चोरसेणावइस्स महया २ इड्डीसक्कारसमुदएणं णीहरणं करेंति २ बहूइं लोइयाति मयकिच्चाइं करेइ २ जाव विगयसोया जाया यावि होत्था ९। तते णं ताइं पंच चोरसयाति अन्नमन्नं सद्दावेंति २ एवं वयासी—एवं खलु अम्हं देवाणुप्पिया! विजए

चोरसेणावई कालधम्मुणा संजुत्ते अयं च णं चिलाए तक्करे विजएणं चोरसेणावइणा बहूईओ चोरविज्जाओ य जाव सिक्खाविए तं सेयं खलु अम्हं देवाणुप्पिया ! चिलायं तक्करं सीहगुहाए चोरपल्लीए चोरसेणावइत्ताए अभिसिंचित्तएत्तिकट्टु अन्नमन्नस्स एयमट्ठं पडिसुणेंति २ चिलायं तीए सीहगुहाए चोरसेणावइत्ताए अभिसिंचंति, तते णं से चिलाए चोरसेणावती जाए अहम्मिए जाव विहरति १० । तए णं से चिलाए चोरसेणावती चोरणायगे जाव कुडंगे यावि होत्था, से णं तत्थ सीहगुहाए चोरपल्लीए पंचण्हं चोरसयाण य एवं जहा विजओ तहेव सव्वं जाव रायगिहस्स दाहिणपुरच्छिमिल्लं जणवयं जाव णित्थाणं निद्धणं करेमाणे विहरति ११ ॥ सूत्रं १४३ ॥

तते णं से चिलाए चोरसेणावती अन्नया कयाई विपुलं असणं ४ उवक्खडावेत्ता पंच चोरसए आमंतेइ तओ पच्छा ण्हाए कयबलिकम्मे भोयणमंडवंसि तेहिं पंचहिं चोरसएहिं सद्धिं विपुलं असणं ४ सुरं च जाव पसण्णं च आसाएमाणे ४ विहरति १ । जिमिय-भुत्तुत्तरागए ते पंच चोरसए विपुलेणं धूवपुप्फ-गंधमल्लालंकारेणं सक्कारेति सम्माणेति २ एवं वयासी—एवं खलु देवाणुप्पिया ! रायगिहे णयरे धणे णामं सत्थवाहे अड्ढे जाव अपरिभूए, तस्स णं धूया भद्दाए अत्तया पंचण्हं पुत्ताणं अणुमग्गजातिया सुंसुमाणामं दारिया यावि होत्था अहीणा जाव सुरूवा, तं गच्छामो णं देवाणुप्पिया ! धणस्स सत्थवाहस्स गिहं विलुंपामो तुब्भं विपुले धणकणग जाव सिलप्पवाले ममं सुंसुमा दारिया २ । तते णं ते पंच चोरसया चिलायस्स वयणं पडिसुणेंति, तते णं से चिलाए चोरसेणावती तेहिं पंचहिं चोरसएहिं सद्धिं अल्लचम्मं दुरूहति २ पुव्वा-(पच्चा)वरण्हकाल-समयंसि पंचहिं चोरसएहिं सद्धिं सण्णद्ध जाव गहियाउह-पहरणा माइयगोमुहिएहिं फलएहिं णिकट्ठाहिं असिलट्ठीहिं अंसगएहिं तोणेहिं सजीवेहिं धणूहिं समुक्खित्तेहिं सरेहि समुल्लालियाहिं दी(दा)हाहिं

ओसारियाहिं उरुघंटियाहिं छिप्पतूरेहिं वज्जमाणेहिं महया २ उक्किट्ठ-सीहणाय-चोर-कलकलरवं जाव समुद्दरवभूयं करेमाणा सीहगुहातो चोर-पल्लीओ पडिनिक्खमंति २ जेणेव रायगिहे नगरे तेणेव उवागच्छंति २ रायगिहस्स अदूरसामंते एगं महं गहणं अणुपविसंति २ दिवसं खवेमाणा चिट्ठंति ३ । तते णं से चिलाए चोरसेणावई अद्धरत्तकाल-समयंसि निसंत-पडिनिसंतंसि पंचहिं चोरसएहिं सद्धिं माइयगोमुहितेहिं फलएहिं जाव मूइयाहिं उरुघंटियाहिं जेणेव रायगिहे पुरत्थिमिल्ले दुवारे तेणेव उवागच्छति २ उदगवत्थिं परामुसति आयंते ३ तालुग्घाडणिविज्जं आवाहेइ २ रायगिहस्स दुवारकवाडे उदएणं अच्छोडेति कवाडं विहाडेति २ रायगिहं अणुपविसति २ महया २ सद्देणं उग्घोसेमाणे २ एवं वयासी—एवं खलु अहं देवाणुप्पिया ! चिलाए णामं चोरसेणावई पंचहिं चोरसएहिं सद्धिं सीहगुहातो चोरपल्लीओ इह हव्वमागए धणस्स सत्थवाहस्स गिहं घाउकामे तं जो णं णवियाए माउयाए दुद्धं पाउकामे से णं निग्गच्छउत्तिकट्टु जेणेव धणस्स सत्थवाहस्स गिहे तेणेव उवागच्छति २ धणस्स गिहं विहाडेति ४ । तते णं से धणे चिलाएणं चोरसेणावतिणा पंचहिं चोरसएहिं सद्धिं गिहं घाइज्जमाणं पासति २ भीते तत्थे ४ पंचहिं पुत्तेहिं सद्धिं एगंतं अवक्कमति, तते णं से चिलाए चोरसे-णावती धणस्स सत्थवाहस्स गिहं घाएति २ सुबहुँ धणकणग जाव सावएज्जं सुंसुमं च दारियं गेण्हति २ त्ता रायगिहाओ पडिणि-क्खमति २ जेणेव सीहगुहा तेणेव पहारेत्थ गमणाए ५ ॥ सूत्रं १४४ ॥

तते णं से धणे सत्थवाहे जेणेव सए गिहे तेणेव उवागच्छति २ सुबहुं धणकणग जाव सावएज्जं सुंसुमं च दारियं अवहरियं जाणित्ता महत्थं ३ पाहुडं गहाय जेणेव णगरगुत्तिया तेणेव उवागच्छति २ तं महत्थं पाहुडं जाव उवणेंति २ एवं वयासी—एवं खलु देवाणुप्पिया ! चिलाए चोरसेणावती सीहगुहातो चोरपल्लीओ इहं हव्वमागम्म पंचहिं

चोरसएहिं सद्धिं मम गिहं घाएत्ता सुबहुं धणकणग जाव सावएज्जं सुंसुमं च दारियं गहाय जाव पडिगए, तं इच्छामो णं देवाणुप्पिया ! सुंसुमादारियाए कूवं गमित्तए, तुब्भे णं देवाणुप्पिया ! से विपुले धणकणगे ममं सुंसुमा दारिया०, तते णं ते णयरगुत्तिया धणस्स एयमट्ठं पडिसुणेंति २ सन्नद्ध जाव गहियाउहपहरणा महया २ उक्किट्ठसीहणाय-चोर-कलकलरवं जाव समुद्दरवभूयंपिव करेमाणा रायगिहाओ णिग्गच्छंति २ जेणेव चिलाए चोरे तेणेव उवागच्छंति २ चिलाएणं चोरसेणावतिणा सद्धिं संपलग्गा यावि होत्था १। तते णं णगरगुत्तिया चिलायं चोरसेणावतिं हयमहिया जाव पडिसेहेंति, तते णं ते पंच चोरसया णगरगोत्तिएहिं हयमहिय जाव पडिसेहिया समाणा तं विपुलं धणकणगं विच्छड्डेमाणा य विप्पकिरेमाणा य सव्वतो समंता विप्पलाइत्था २। तते णं ते णयरगुत्तिया तं विपुलं धणकणगं गेण्हंति २ जेणेव रायगिहे तेणेव उवागच्छंति, तते णं से चिलाए तं चोरसेणणं तेहिं णयरगुत्तिएहिं हयमहिय जाव भीते तत्थे सुंसुमं दारियं गहाय एगं महं अगामियं दीहमद्धं अडविं अणुपविट्ठे ३। तते णं धणे सत्थवाहे सुंसुमं दारियं चिलाएणं अडवीमुहिं अवहीरमाणिं पासित्ताणं पंचहिं पुत्तेहिं सद्धिं अप्पछट्ठे सन्नद्धबद्ध जाव गहियाउह-पहरणा चिलायस्स पदमग्गविहिं अभिगच्छति, अणुगज्जेमाणे हक्कारेमाणे पुक्कारेमाणे अभितज्जेमाणे अभितासेमाणे पिट्ठओ अणुगच्छति ४। तते णं से चिलाए तं धणणं सत्थवाहं पंचहिं पुत्तेहिं अप्पछट्ठं सन्नद्धबद्धं समणुगच्छमाणं पासति २ अत्थामे ४ जाहे णो संचाएति सुंसुमं दारयं णिव्वाहित्तए ताहे संते तंते परिसंते नीलुप्पलं असिं परामुसति २ सुंसुमाए दारियाए उत्तमंगं छिंदति २ तं गहाय तं अगामियं अडविं अणुपविट्ठे, तते णं चिलाए तीसे अगामियाए अडवीए तण्हाते अभिभूते समाणे पम्हुट्ठदिसाभाए सीहगुहं चोरपल्लिं असंपत्ते अंतरा चेव कालगए ५। एवामेव समणाउसो ! जाव पव्वतिए

समाणे इमस्स ओरालिय-सरीरस्स वंतासवस्स जाव विद्धंसण-धम्मस्स वणहेउं जाव आहारं आहरेति से णं इहलोए चेव बहूणं समणाणं ४ हीलणिज्जे जाव अणुपरियट्टिस्सति जहा व से चिलाए तक्करे ६। तते णं से धणे सत्थवाहे पंचहिं पुत्तेहिं अप्पछट्ठे चिलायं परिधाडेमाणे २ तण्हाए छुहाए य संते तंते परितंते नो संचाइए चिलातं चोरसेणावतिं साहत्थिं गिण्हित्तए, से णं तओ पडिनियत्तइ २ जेणेव सा सुंसुमा दारिया चिलाएणं जीवियाओ ववरोविलिया तेणंतेणेव उवागच्छति २ सुंसुमं दारियं चिलाएणं जीवियाओ ववरोवियं पासइ २ परसुनियंतेव चंपगपायवे, तते णं से धणे सत्थवाहे अप्पछट्ठे आसत्थे कूवमाणे कंदमाणे विलवमाणे महया २ सद्देणं कुह २ सुपरुन्ने सुचिरं कालं वाहमोक्खं करेति ७। तते णं से धणे पंचहिं पुत्तेहिं अप्पछट्ठे चिलायं तीसे अगामियाए अडवीए सव्वतो समंता परिधाडेमाणा तण्हाए छुहाए य परिब्भं(रद्धं)ते समाणे तीसे आगामियाए अडवीए सव्वत्तो समंता उदगस्स मग्गणगवेसणं करेंति २ संते तंते परितंते णिव्विन्ने तीसे आगामियाए अडवीए उदगस्स मग्गणगवेसणं करेमाणे नो चेव णं उदगं आसादेति ८। तते णं उदगं अणासाए-माणे जेणेव सुंसमा जीवियातो ववरोएल्लिया तेणेव उवागच्छंति २ जेट्ठं पुत्तं धणे सद्दावेइ २ एवं वयासी–एवं खलु पुत्ता! सुंसुमाए दारियाए अट्ठाए चिलायं तक्करं सव्वतो समंता परिधाडेमाणा तण्हाए छुहाए य अभिभूया समाणा इमीसे आगामियाए अडवीए उदगस्स मग्गणगवेसणं करेमाणा णो चेव णं उदगं आसादेमो ९। तते णं उदगं अणासाएमाणा णो संचाएमो रायगिहं संपावित्तए, तण्णं तुब्भे ममं देवाणुप्पिया! जीवियाओ ववरोवेह मंसं च सोणियं च आहारेह २ तेणं आहारेणं अवहिट्ठा समाणा ततो पच्छा इमं आगामियं अडविं णित्थरिहिह रायगिहं च संपाविहिह मित्तणाइय० अभिसमागच्छिहिह अत्थस्स य धम्मस्स य पुण्णस्स य आभागी भविस्सह

१० । तते णं से जेट्ठपुत्ते धरायेणं एवं वुत्ते समाणे धरणं सत्थवाहं एवं वयासी—तुब्भे णं ताओ ! अम्हं पिया गुरूजणया देवयभूया ठवका पतिट्ठवका संरक्खगा संगोवगा तं कहराणं अम्हे तातो ! तुब्भे जीवियाओ ववरोवेमो तुब्भं णं मंसं च सोणियं च आहारेमो ? तं तुब्भे णं तातो ! ममं जीवियाओ ववरोवेह मंसं च सोणियं च आहारेह आगामियं अडविं णित्थरह तं चेव सव्वं भणइ जाव अत्थस्स जाव पुराणस्स आभागी भविस्सह, तते णं धरणं सत्थवाहं दोच्चे पुत्ते एवं वयासी—मा णं ताओ ! अम्हे जेट्ठं भायरं गुरुं देवयं जीवियाओ ववरोवेमो तुब्भे णं ताओ ! मम जीवियाओ ववरोवेह जाव आभागी भविस्सह, एवं जाव पंचमे पुत्ते ११ । तते णं से धरणे सत्थवाहे पंच पुत्ताणं हियइच्छियं जाणित्ता ते पंच पुत्ते एवं वयासी—मा णं अम्हे पुत्ता ! एगमवि जीवियाओ ववरोवेमो एस णं सुंसुमाए दारियाए सरीरए णिप्पाणे जाव जीवविप्पजढे तं सेयं खलु पुत्ता ! अम्हं सुंसुमाए दारियाए मंसं च सोणियं च आहारेत्तए, तते णं अम्हे तेणं आहारेणं अवत्थद्धा समाणा रायगिहं संपाउणिस्सामो, तते णं ते पंच पुत्ता धरणेणं सत्थवाहेणं एवं वुत्ता समाणा एयमट्ठं पडिसुणेंति १२ । तते णं धरणे सत्थवाहे पंचहिं पुत्तेहिं सद्धिं अरणिं करेति २ सरगं च करेति २ सरएणं अरणिं महेति २ अग्गिं पाडेति २ अग्गिं संधुक्खेति २ दारुयातिं परिक्खेवेति २ अग्गिं पज्जालेति २ सुंसुमाए दारियाए मंसं च सोणियं च आहारेंति, तेणं आहारेणं अवत्थद्धा समाणा रायगिहं नयरिं संपत्ता मित्तणाईअभिसमरणागया तस्स य विउलस्स धणकणगरयण जाव आभागी जायावि होत्था, तते णं से धरणे सत्थवाहे सुंसुमाए दारियाए बहूइं लोइयातिं जाव विगयसोए जाए यावि होत्था १३ ॥ सूत्रं १४५ ॥

तेणं कालेणं २ समणे भगवं महावीरे गुणसिलए चेइए समोसढे १ । से णं धरणे सत्थवाहे संपत्ते धम्मं सोच्चा पव्वतिए एकारसंगवी मासियाए

संलेहणाए सोहंमे उववरणो महाविदेहे वासे सिज्झिहिति २ । जहाविय णं जंबू ! धरणेणं सत्थवाहेणं णो वरणहेउं वा नो रूवहेउं वा णो बलहेउं वा नो विसयहेउं वा सुंसुमाए दारियाए मंससोणिए आहारिए नन्नत्थ एगाए रायगिहं संपावणट्ठयाए, एवामेव समणाउसो ! जो अम्हं निग्गंथो वा २ इमस्स ओरालियसरीरस्स वंतासवस्स पित्तासवस्स सुक्कासवस्स सोणियासवस्स जाव अवस्सं विप्पजहियव्वस्स वा नो वरणहेउं वा नो रूवहेउं वा नो बलहेउं वा नो विसयहेउं वा आहारं आहारेति नन्नत्थ एगाए सिद्धिगमण-संपावणट्ठयाए ३ । से णं इहभवे चेव बहूणं समणाणं २ बहूणं सावयाणं बहूणं साविगाणं अच्चणिज्जे जाव वीतीवतीस्सति, एवं खलु जंबू ! समणेणं भगवया महावीरेणं जाव संपत्तेणं अट्ठारसमस्स नायज्झयणस्स अयमट्ठे पराणत्तेत्तिबेमि ४ ॥ सूत्रं १४६ ॥ अट्ठारसमं णायज्झयणं समत्तं ॥

॥ इति अष्टादशममध्ययनम् ॥ १८ ॥

॥१९॥ अथ श्रीपुण्डरीकाख्यं एकोनविंशतितममध्ययनम् ॥

जति णं भंते ! समणेणं भगवया महावीरेणं जाव संपत्तेणं अट्ठारसमस्स नायज्झयणस्स अयमट्ठे पन्नत्ते एगूणवीसइमस्स नायज्झयणस्स के अट्ठे पन्नत्ते ?, एवं खलु जंबू ! तेणं कालेणं २ इहेव जंबुद्दीवे दीवे पुव्वविदेहे सीयाए महाणदीए उत्तरिल्ले कूले नीलवंतस्स दाहिणेणं उत्तरिल्लस्स सीतामुहवणसंडस्स पच्छिमेणं एगसेलगस्स वक्खारपव्वयस्स पुरत्थिमेणं एत्थ णं पुक्खलावई णामं विजए पन्नत्ते, तत्थ णं पुंडरीगिणी णामं रायहाणी पन्नत्ता णवजोयण-विच्छिरणा दुवालस-जोयणायामा जाव पच्चक्खं देवलोयभूया पासातीया ४, १ । तीसे णं पुंडरीगिणीए णयरीए उत्तरपुरच्छिमे दिसिभाए णलिणिवणे

णामं उज्जाणे, तत्थ णं पुंडरीगिणीए रायहाणीए महापउमे णामं राया होत्था, तस्स णं पउमावती णामं देवी होत्था, तस्स णं महापउमस्स रन्नो पुत्ता पउमावतीए देवीए अत्तया दुवे कुमारा होत्था, तंजहा—पुंडरीए य कंडरीए य सुकुमाल-पाणिपाया०, पुंडरीयए जुवराया २। तेणं कालेणं २ थेरागमणं महापउमे राया णिग्गए धम्मं सोच्चा पोंडरीयं रज्जे ठवेत्ता पव्वतिए, पोंडरीए राया जाए, कंडरीए जुवराया, महापउमे अणगारे चोद्दसपुव्वाइं अहिज्जइ, तते णं थेरा बहिया जणवयविहारं विहरंति, तते णं से महापउमे बहूणि वासाणि जाव सिद्धे ३ ॥ सूत्रं १४७ ॥ तते णं थेरा अन्नया कयाई पुणरवि पुंडरीगिणीए रायहाणीए णलिणवणे उज्जाणे समोसढा, पोंडरीए राया णिग्गए, कंडरीए महाजणसद्दं सोच्चा जहा महब्बलो जाव पज्जुवासति, थेरा धम्मं परिकहेंति, पुंडरीए समणोवासए जाए जाव पडिगते १। तते णं कंडरीए उट्ठाए उट्ठेति उट्ठाए उट्ठेत्ता जाव से जहेयं तुब्भे वदह जं णवरं पुंडरीयं रायं आपुच्छामि तए णं जाव पव्वयामि, अहासुहं देवाणुप्पिया! मा पडिबंधं करेह, २। तए णं से कंडरीए जाव थेरे वंदइ नमंसइ २ थेराणं अंतियाओ पडिनिक्खमइ तमेव चाउघंटं आसरहं दुरूहति जाव पच्चोरुहइ जेणेव पुण्डरीए राया तेणेव उवागच्छति करयल जाव पुंडरीयं एवं वयासी—एवं खलु देवाणुप्पिया! मए थेराणं अंतिए जाव धम्मे निसंते से धम्मे अभिरुइए, तए णं देवाणुप्पिया! जाव पव्वइत्तए, तए णं से पुंडरीए कंडरीयं एवं वयासी—मा णं तुमं देवाणुप्पिया! इदाणिं मुंडे जाव पव्वयाहि, अहं णं तुमं महया २ रायाभिसेएणं अभिसिंचयामि, तए णं से कंडरीए पुंडरीयस्स रण्णो एयमट्ठं णो आढाति जाव तुसिणीए संचिट्ठति ३। तते णं पुंडरीए राया कंडरीयं दोच्चंपि तच्चंपि एवं वयासी—जाव तुसिणीए संचिट्ठति, तते णं पुंडरीए कंडरीयं कुमारं जाहे नो संचाएति बहूहिं आघवणाहिं पराणवणाहि य ४ ताहे

अकामए चेव एयमट्ठं अणुमन्नित्था जाव णिक्खमणाभिसेएणं अभिसिंचति जाव थेराणं सीसभिक्खं दलयति, पव्वतिए अणगारे जाए एकारसंगविऊ, तते णं थेरा भगवंतो अन्नया कयाई पुंडरीगिणीओ नयरीओ णलिणीवणाओ उज्जाणाओ पडिणिक्खमंति बहिया जणवयविहारं विहरंति ४ ॥ सूत्रं १४८ ॥ तते णं तस्स कंडरीयस्स अणगारस्स तेहिं अंतेहि य पंतेहि य जहा सेलगस्स जाव दाहवक्कंतीए यावि विहरति, तते णं थेरा अन्नया कयाई जेणेव पोंडरीगिणी तेणेव उवागच्छंति २ णलिणिवणे समोसढा १ । पोंडरीए णिग्गए धम्मं सुणेति; तए णं पोंडरीए राया धम्मं सोच्चा जेणेव कंडरीए अणगारे तेणेव उवागच्छति कंडरीयं वंदति णमंसति २ कंडरीयस्स अणगारस्स सरीरगं सव्वाबाहं सरोयं पासति २ जेणेव थेरा भगवंतो तेणेव उवागच्छति २ थेरे भगवंते वंदति णमंसइ २ त्ता एवं वयासी–अहण्णं भंते ! कंडरीयस्स अणगारस्स सरीरगं सव्वाबाहं सरोगं अहापवत्तेहिं ओसहभेसज्जेहिं जाव तेइच्छं आउट्टामि तं तुब्भे णं भंते ! मम जाणसालासु समोसरह, तते णं थेरा भगवंतो पुंडरीयस्स वयणं पडिसुणेंति २ जाव उवसंपज्जित्ताणं विहरंति २ । तते णं पुंडरीए राया जहा मंडुए सेलगस्स जाव बलियसरीरे जाए, तते णं थेरा भगवंतो पोंडरीयं रायं पुच्छंति २ बहिया जणवयविहारं विहरंति ३ । तते णं से कंडरीए ताओ रोयायंकाओ विप्पमुक्के समाणे तंसि मणुण्णंसि असण-पाण-खाइम-साइमंसि मुच्छिए गिद्धे गढिए अज्झोववण्णे णो संचाएइ पोंडरीयं आपुच्छित्ता बहिया अब्भुज्जएणं जणवयविहारं विहरित्तए, तत्थेव ओसण्णे जाए ४ । तते णं से पोंडरीए इमीसे कहाए लद्धट्ठे समाणे ण्हाए अंतेउर-परियाल-संपरीवुडे जेणेव कंडरीए अणगारे तेणेव उवागच्छति २ कंडरीयं तिक्खुत्तो आयाहिणं पयाहिणं करेइ २ २ एवं वयासी–धन्नेसि णं तुमं देवाणुप्पिया ! कयत्थे

कयपुन्ने कयलक्खणे सुलद्धे णं देवाणुप्पिया ! तव माणुस्सए जम्मजीवियफले जे णं तुमं रज्जं च जाव अंतेउरं च छड्डइत्ता विगोवइत्ता जाव पव्वतिए, अहं णं अहरणे अकयपुन्ने रज्जे जाव अंतेउरे य माणुस्सएसु य कामभोगेसु मुच्छिए जाव अज्झोववन्ने नो संचाएमि जाव पव्वतित्तए, तं धन्नेऽसि णं तुमं देवाणुप्पिया ! जाव जीवियफले, तते णं से कंडरीए अणगारे पुंडरीयस्स एयमट्ठं णो आढाति जाव संचिट्ठति, तते णं कंडरीए पोंडरीएणं दोच्चंपि तच्चंपि एवं वुत्ते समाणे अकामए अवस्सवसे लज्जाए गारवेण य पोंडरीयं रायं आपुच्छति २ थेरेहिं सद्धिं बहिया जणवयविहारं विहरति ५ । तते णं से कंडरीए थेरेहिं सद्धिं किंचि कालं उग्गंउग्गेणं विहरति, ततो पच्छा समणत्तण-परितंते समणत्तण-णिव्विरणे समणत्तण-णिब्भत्थिए समणगुण-मुक्कजोगी थेराणं अंतियाओ सणियं २ पच्चोसक्कति २ जेणेव पुंडरीगिणी णयरी जेणेव पुंडरीयस्स भवणे तेणेव उवागच्छति असोगवणियाए असोगवरपायवस्स अहे पुढवीसिलापट्टगंसि णिसीयति २ ओहयमणसंकप्पे जाव झियायमाणे संचिट्ठति ६ । तते णं तस्स पोंडरीयस्स अम्मधाती जेणेव असोगवणिया तेणेव उवागच्छति २ कंडरीयं अणगारं असोगवरपायवस्स अहे पढवीसिलावट्टयंसि ओहय-मण-संकप्पं जाव झियायमाणं पासति २ जेणेव पोंडरीए राया तेणेव उवागच्छति २ पोंडरीयं रायं एवं वयासी—एवं खलु देवाणुप्पिया ! तव पिउभाउए कंडरीए अणगारे असोगवणियाए असोगवरपायवस्स अहे पुढवीसिलावट्टे ओहयमणसंकप्पे जाव झियायति, तते णं पोंडरीए अम्मधाईए एयमट्ठं सोच्चा णिसम्म तहेव संभंते समाणे उट्ठाए उट्ठेति २ अंतेउर-परियाल-संपरिवुडे जेणेव असोगवणिया जाव कंडरीयं तिक्खुत्तो आयाहिणं पयाहिणं करेइ २ एवं वयासी—धरणेसि णं तुमं देवाणुप्पिया ! जाव पव्वतिए, अहण्णं अधरणे ३ जाव पव्वइत्तए, तं धन्नेऽसि णं तुमं देवाणुप्पिया ! जाव जीवि-

यफले, तते गां कंडरीए पुंडरीएणं एवं वुत्ते समाणे तुसिणीए संचिट्ठति दोच्चंपि तच्चंति जाव चिट्ठति ७। तते णं पुंडरीए कंडरीयं एवं वयासी--अट्ठो भंते! भोगेहिं ?, हंता! अट्ठो, तते णं से पोंडरीए राया कोडुंबिय पुरिसे सद्दावेइ २ एवं वयासी--खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया! कंडरीयस्स महत्थं जाव रायाभिसेअं उवट्ठवेह जाव रायाभिसेएणं अभिसिंचति ८ ॥ सूत्रं १४६ ॥ तते णं पुंडरीए सयमेव पंचमुट्ठियं लोयं करेति २ सयमेव चाउज्जामं धम्मं पडिवज्जति २ कंडरीयस्स संतियं आयारभंडयं गेराहति २ इमं एयारूवं अभिग्गहं अभिगिराहइ--कप्पति मे थेरे वंदित्ता णमंसित्ता थेराणं अंतिए चाउज्जामं धम्मं उवसंपज्जित्ता णं ततो पच्छा आहारं आहारित्तएत्तिकट्टु, इमं च एयारूवं अभिग्गहं अभिगिराहेत्ता णं पोंडरीगिणीए पडिनिक्खमति २ पुव्वाणुपुव्विं चरमाणे गामाणुगामं दूइज्जमाणे जेणेव थेरा भगवंतो तेणेव पहारेत्थ गमणाए ॥ सूत्रं १५० ॥

तते णं तस्स कंडरीयस्स रगणो तं पणीयं पाणभोयणं आहारियस्स समाणस्स अतिजागरिएण य अइभोयणप्पसंगेण य से आहारे णो सम्मं परिणामइ, तते णं तस्स कंडरीयस्स रगणो तंसि आहारंसि अपरिणाममाणंसि पुव्वरत्तावरत्त-कालसमयंसि सरीरंसि वेयणा पाउब्भूया उज्जला विउला पगाढा जाव दुरहियासा पित्तज्जर-परिगय-सरीरे दाहवक्कंतीए यावि विहरति १। तते णं कंडरीए राया रज्जे य रट्ठे य अंतेउरे य जाव अज्झोववन्ने अट्टदुहट्टवसट्टे अकामते अवस्सवसे कालमासे कालं किच्चा अहे सत्तमाए पुढवीए उक्कोस-काल-ट्ठिइयंसि नरयंसि नेरइयत्ताए उववरागो। एवामेव समणाउसो! जाव पव्वतिए समाणे पुणरवि माणुस्सए कामभोगे आसाएइ जाव अणुपरियट्टिस्सति जहा व से कंडरीए राया २॥ सूत्रं १५१ ॥ तते णं पोंडरीए अणगारे जेणेव थेरा भगवंतो तेणेव उवागच्छति २ थेरे भगवंते वंदति नमंसति २ थेराणं अंतिए दोच्चंपि चाउज्जामं धम्मं पडि-

वज्जति, छट्ठक्खमण-पारणगंसि पढमाए पोरिसीए सज्झायं करेति २ जाव अडमाणे सीयलुक्खं पाणभोयणं पडिगाहेति २ अहापज्जत्तमितिकट्टु पडिणियत्तति, जेणेव थेरा भगवंतो तेणेव उवागच्छति २ भत्तपाणं पडिदंसेति २ थेरेहिं भगवंतेहिं अब्भणुन्नाए समाणे अमुच्छिते ४ बिलमिव पण्णगभूएणं अप्पाणेणं तं फासुएसणिज्जं असणं ४ सरीरकोट्ठगंसि पक्खिवति १। तते णं तस्स पुंडरीयस्स अणगारस्स तं कालाइक्कंतं अरसं विरसं सीयलुक्खं पाणभोयणं आहारियस्स समाणस्स पुव्वरत्तावरत्त-कालसमयंसि धम्मजागरियं जागरमाणस्स से आहारे णो सम्मं परिणमति, तते णं तस्स पुंडरीयस्स अणगारस्स सरीरगंसि वेयणा पाउब्भूया उज्जला जाव दुरहियासा पित्तज्जर-परिगय-सरीरे दाहवक्कंतीए विहरति २। तते णं से पुंडरीए अणगारे अत्थामे अबले अवीरिए अपुरिसकार-परक्कमे करयल जाव एवं वयासी—णमोऽत्थु णं अरिहंताणं जाव संपत्ताणं णमोऽत्थु णं थेराणं भगवंताणं मम धम्मायरियाणं धम्मोवएसयाणं पुव्विंपि य णं मए थेराणं अंतिए सव्वे पाणातिवाए पच्चक्खाए जाव मिच्छादंसणसल्ले णं पच्चक्खाए जाव आलोइयपडिक्कंते कालमासे कालं किच्चा सव्वट्ठसिद्धे उववन्ने ३। ततो अणंतरं उव्वट्टित्ता महाविदेहे वासे सिज्झिहिति जाव सव्वदुक्खाणमंतं काहिति ४। एवामेव समणाउसो! जाव पव्वतिए समाणे माणुस्सएहिं कामभोगेहिं णो सज्जति नो रज्जति जाव नो विप्पडीघायमावज्जति से णं इहभवे चेव बहूणं समणाणं बहूणं समणीणं बहूणं सावयाणं बहूणं साविगाणं अच्चणिज्जे वंदणिज्जे पूयणिज्जे सक्कारणिज्जे सम्माणणिज्जे कल्लाणं मंगलं देवयं चेइयं पज्जुवासणिज्जेत्तिकट्टु परलोएऽविय णं णो आगच्छति बहूणि दंडणाणि य मुंडणाणि य तज्जणाणि य ताडणाणि य जाव चाउरंतं संसारकंतारं जाव वीतीवइस्सति जहा व से पोंडरीए अणगारे ५। एवं खलु जंबू! समणेणं भगवया महावीरेणं

आदिगरेणं तित्थगरेणं जाव सिद्धिगइ-णामधेज्जं ठाणं संपत्तेणं एगूणवीस-इमस्स नायज्झयणस्स अयमट्ठे पन्नत्ते ६ ॥ इति पोंडरीयज्झयणं ॥

एवं खलु जंबू ! समणेणं भगवया महावीरेणं जाव सिद्धिगइणामधेज्जं ठाणं संपत्तेणं छट्ठस्स अंगस्स पढमस्स सुयक्खंधस्स अयमट्ठे पराणत्तेत्तिबेमि ७ ॥ सूत्रं १५२ ॥ तस्स णं सुयक्खंधस्स एगूणवीसं अज्झयणाणि एक्कसरगाणि एगूणवीसाए दिवसेसु समप्पंति ॥ सूत्रं १५३ ॥ पढमो सुयक्खंधो समत्तो ॥

॥ इति एकोनविंशतितममध्ययनम् १९ ॥

॥ इति प्रथमः श्रुतस्कंधः समाप्त ॥

॥ अथ द्वितीय श्रुतस्कंधः ॥

॥१॥ अथ प्रथमो वर्ग्गः ॥

तेणं कालेणं २ रायगिहे नामं नयरे होत्था, वराणओ, तस्स णं रायगिहस्स बहिया उत्तरपुरच्छिमे दिसिभाए तत्थ णं गुणासीलए णामं चेइए होत्था वराणओ १ । तेणं कालेणं २ समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतेवासी अज्जसुहम्मा णामं थेरा भगवंतो जातिसंपन्ना कुलसंपन्ना जाव चउद्दसपुव्वी चउणाणोवगया पंचहिं अणगारसएहिं सद्धिं संपरिवुडा पुव्वाणुपुव्विं चरमाणा गामाणुगामं दूइज्जमाणा सुहंसुहेणं विहरमाणा जेणेव रायगिहे णयरे जेणेव गुणासीलए चेइए जाव संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणा विहरंति, परिसा निग्गया, धम्मो कहिओ, परिसा जामेव दिसिं पाउब्भूया तामेव दिसिं पडिगया २ । तेणं कालेणं २ अज्जसुहम्मस्स अणगारस्स अंतेवासी अज्जजंबू णामं अणगारे जाव पज्जुवासमाणे एवं वयासी–जति णं भंते ! समणेणं जाव संपत्तेणं छट्ठस्स अंगस्स पढमसुयक्खंधस्स णायसुयाणं अयमट्ठे पन्नत्ते दोच्चस्स णं भंते ! सुयक्खंधस्स धम्मकहाणं समणेणं जाव संपत्तेणं के अट्ठे पन्नत्ते ?, एवं खलु

जंबू ! समणेणं जाव संपत्तेणं धम्मकहाणं दस वग्गा पन्नत्ता, तंजहा—चमरस्स अग्गमहिसीणं पढमे वग्गे १, बलिस्स वइरोयणिंदस्स वइरोयणरन्नो अग्गमहिसीणं बीए वग्गे २, असुरिंदवज्जाणं दाहिणिल्लाणं इंदाणं अग्गमहिसीणं तइए वग्गे ३, उत्तरिल्लाणं असुरिंदवज्जियाणं भवणवासिइंदाणं अग्गमहिसीणं चउत्थे वग्गे ४, दाहिणिल्लाणं वाणमंतराणं इंदाणं अग्गमहिसीणं पंचमे वग्गे ५, उत्तरिल्लाणं वाणमंतराणं इंदाणं अग्गमहिसीणं छट्ठे वग्गे ६, चंदस्स अग्गमहिसीणं, सत्तमे वग्गे ७, सूरस्स अग्गमहिसीणं अट्ठमे वग्गे ८, सक्कस्स अग्गमहिसीणं, णवमे वग्गे ९, ईसाणस्स अग्गमहिसीणं दसमे वग्गे १०, ३ । जति णं भंते ! समणेणं जाव संपत्तेणं धम्मकहाणं दस वग्गा पन्नत्ता, पढमस्स णं भंते ! वग्गस्स समणेणं जाव संपत्तेणं के अट्ठे पन्नत्ते ?, एवं खलु जंबू ! समणेणं जाव संपत्तेणं पढमस्स वग्गस्स पंच अज्झयणा पन्नत्ता—तंजहा—काली राई रयणी विज्जू मेहा, जइ णं भंते ! समणेणं जाव संपत्तेणं पढमस्स वग्गस्स पंच अज्झयणा पन्नत्ता पढमस्स णं भंते ! अज्झयणस्स समणेणं जाव संपत्तेणं के अट्ठे पन्नत्ते ?, एवं खलु जंबू ! तेणं कालेणं २ रायगिहे णयरे गुणसीलए चेइए सेणिए राया चेलणा देवी सामी समोसरिए परिसा णिग्गया जाव परिसा पज्जुवासति ४ । तेणं कालेणं २ काली नामं देवी चमरचंचाए रायहाणीए कालवडिंसग-भवणे कालंसि सीहासणंसि चउहिं सामाणिय-साहस्सीहिं चउहिं मयहरियाहिं सपरिवाराहिं तीहिं परिसाहिं सत्तहि अणीएहिं सत्तहिं अणियाहिवतीहिं सोलसहिं आयरक्ख-देवसाहस्सीहिं अराणेहिं बहुएहि य कालवडिंसयभवण-वासीहिं असुरकुमारेहिं देवीहिं देवेहि य सद्धिं संपरिवुडा महयाहय जाव विहरइ, इमं च णं केवलकप्पं जंबुद्दीवं २ विउलेणं ओहिणा आभोएमाणी २ पासइ ५ । तत्थ समणं भगवं महावीरं जंबुद्दीवे २ भारहे वासे रायगिहे नगरे गुणसिलए चेइए अहापडिरूवं उग्गहं उग्गिण्हित्ता संजमेणं तवसा

अप्पाणं भावेमाणं पासति २ त्ता हट्ठतुट्ठचित्तमाणंदिया पीतिमणा जाव हय-हियया सीहासणाओ अब्भुट्ठेति २ पायपीढाओ पच्चोरुहति २ पाउयाओ ओमुयति २ तित्थगराभिमुही सत्तट्ठ पयाइं अणुगच्छति २ वामं जाणुं अंचेति २ दाहिणं जाणुं धरणियलंसि निहट्टु तिक्खुत्तो मुद्धाणं धरणिय-लंसि निवेसेति २ ईसिं पच्चुण्णमइ २ कडयतुडियथंभियातो भुयातो साहरति २ करयल जाव कट्टु एवं वयासी—णमोऽत्थु णं अरहंताणं जाव संपत्ताणं, णमोऽत्थु णं समणस्स भगवओ महावीरस्स जाव संपाविउका-मस्स, वंदामि णं भगवंतं तत्थगयं इह गए पासउ मे समणे भगवं महावीरे तत्थ गए इह गयंतिकट्टु वंदति २ नमंसति २ सीहासणवरंसि पुरत्थाभि-मुहा निसण्णा ५। तते णं तीसे कालीए देवीए इमेयारूवे जाव समुप्प-ज्जित्था—सेयं खलु मे समणं भगवं महावीरं वंदित्ता जाव पज्जुवासित्तए-त्तिकट्टु एवं संपेहेति २ आभिओगिए देवे सद्दावेति २ एवं वयासी—एवं खलु देवाणुप्पिया ! समणे भगवं महावीरे एवं जहा सूरियाभो तहेव आणत्तियं देइ जाव दिव्वं सुरवराभिगमणजोग्गं करेह २ जाव पच्चप्पिणह, तेवि तहेव करेत्ता जाव पच्चप्पिणंति, णवरं जोयण-सहस्स-विच्छिण्णं जाणं सेसं तहेव तहेव णामगोयं साहेइ तहेव नट्टविहिं उवदंसेइ जाव पडिगया ६। भंतेत्ति भगवं गोयमे समणं भगवं महावीरं वंदति णमंसति २ एवं वयासी—कालीए णं भंते ! देवीए सा दिव्वा देविड्ढी ३ कहिं गया कहिं अणुपविट्ठा ? कूडागार-सालादिट्ठंतो, अहो णं भंते ! काली देवी महि-ड्ढिया, कालीए णं भंते ! देवीए सा दिव्वा देविड्ढी ३ किण्णा लद्धा किण्णा पत्ता किण्णा अभिसमण्णागया ?, एवं जहा सूरियाभस्स जाव एवं खलु गोयमा ! तेणं कालेणं २ इहेव जंबुद्दीवे २ भारहे वासे आमल-कप्पा णाम णयरी होत्था वण्णओ अंबसालवणे चेइए जियसत्तू राया, तत्थ णं आमलकप्पाए नयरीए काले नामं गाहावती होत्था अड्ढे जाव

अपरिभूए, तस्स णं कालस्स गाहावइस्स कालसिरी णामं भारिया होत्था, सुकुमाल जाव सुरूवा, तस्स णं कालगस्स गाहावतिस्स धूया कालसिरीए भारीयाए अत्तया काली णामं दारिया होत्था, वड्ढा वड्ढकुमारी जुण्णा जुण्णकुमारी पडियपुयत्थणी णिव्विन्नवरा वरपरिवज्जिया यावि होत्था ७। तेणं कालेणं २ पासे अरहा पुरिसादाणीए आइगरे जहा वद्धमाणसामी णवरं णवहत्थुस्सेहे सोलसहि समणसाहस्सीहिं अट्ठत्तीसाए अज्जियासाहस्सीहिं सद्धिं संपरिवुडे जाव अंबसालवणे समोसढे परिसा णिग्गया जाव पज्जुवासति, तते णं सा काली दारिया इमीसे कहाए लद्धट्ठा समाणी हट्ठ जाव हियया जेणेव अम्मापियरो तेणेव उवागच्छति २ करयल जाय एवं वयासी—एवं खलु अम्मयाओ ! पासे अरहा पुरिसादाणीए आइगरे जाव विहरति, तं इच्छामि णं अम्मयाओ ! तुब्भेहिं अब्भणुन्नाया समाणी पासस्स अरओ पुरिसादाणीयस्स पायवंदिया गमित्तए ?, अहासुहं देवाणुप्पिया ! मा पडिबंधं करेहि, तते णं सा कालिया दारिया अम्मापिईहिं अब्भणुन्नाया समाणी हट्ठ जाव हियया ण्हाया कयबलिकम्मा कयकोउय-मंगल-पायच्छित्ता सुद्धप्पावेसाइं मंगलातिं वत्थातिं पवर परिहिया अप्प-महग्घाभरणालंकिय-सरीरा चेडिया-चक्कवाल-परिकिण्णा सातो गिहातो पडिणिक्खमति २ जेणेव बाहिरिया उवट्ठाणसाला जेणेव धम्मिए जाणप्पवरे तेणेव उवागच्छति २ धम्मियं जाणपवरं दुरूढा, तते णं सा काली दारिया धम्मियं जाणपवरं एवं जहा दोवती जाव पज्जुवासति ८। तते णं पासे अरहा पुरिसादाणीए कालीए दारियाए तीसे य महति-महालयाए परिसाए धम्मं कहेइ, तते णं सा काली दारिया पासस्स अरहओ पुरिसादाणीयस्स अंतिए धम्मं सोच्चा णिसम्म हट्ठ जाव हियया पासं अरहं पुरिसादाणीयं तिक्खुत्तो वंदति नमंसति २ एवं वयासी—सद्दहामि णं भंते ! णिग्गंथं पावयणं जाव से जहेयं तुब्भे वयह, जं णवरं देवाणुप्पिया ! अम्मापियरो

आपुच्छामि, तते णं अहं देवाणुप्पियाणं अंतिए जाव पव्वयामि, अहासुहं देवाणुप्पिया ! मा पडिबद्धं करेहि ९ । तते णं सा काली दारिया पासेणं अरहया पुरिसादाणीएणं एवं वुत्ता समाणी हट्ठ जाव हियया पासं अरहं वंदति नमंसति २ तमेव धम्मियं जाणप्पवरं दुरुहति २ पासस्स अरहओ पुरिसादाणीयस्स अंतियातो अंबसालवणाओ चेइयाओ पडिणिक्खमति २ जेणेव आमलकप्पा नयरी तेणेव उवागच्छति २ आमलकप्पं णयरिं मज्झंमज्झेणं जेणेव बाहिरिया उवट्ठाणसाला तेणेव उवागच्छति २ धम्मियं जाणपवरं ठवेति २ धम्मियाओ जाणप्पवराओ पच्चोरुहति २ जेणेव अम्मापियरो तेणेव उवागच्छति २ करयल जाव एवं वयासी—एवं खलु अम्मयाओ ! मए पासस्स अरहतो अंतिए धम्मे णिसंते सेऽविय धम्मे इच्छिए पडिच्छिए अभिरुतिए, तए णं अहं अम्मयाओ ! संसारभउव्विग्गा भीया जम्मणमरणाणं इच्छामि णं तुब्भेहिं अब्भणुन्नाया समाणी पासस्स अरहतो अंतिए मुंडा भवित्ता आगारातो अणगारियं पव्वतित्तए, अहासुहं देवाणुप्पिया ! मा पडिबंधं करेहि १० । तते णं से काले गाहावई विपुलं असणं ४ उवक्खडावेति २ मित्तणाइ-णियग-सयण-संबंधिपरियणं आमंतेति २ ततो पच्छा ण्हाए जाव विपुलेणं पुप्फवत्थ-गंध-मल्लालंकारेणं सक्कारेत्ता सम्माणेत्ता तस्सेव मित्तणाति-णियग-सयण-संबंधि-परियणस्स पुरतो कालियं दारियं सेयापीएहिं कलसेहिं ण्हावेति २ सव्वालंकारविभूसियं करेति २ पुरिस-सहस्स-वाहिणीयं सीयं दुरुहेति २ मित्तणाइ-णियग-सयण-संबंधि-परियणेणं सद्धिं संपरिवुडे सव्विड्ढीए जाव रवेणं आमलकप्पं नयरिं मज्झंमज्झेणं णिग्गच्छति २ जेणेव अंबसालवणे चेइए तेणेव उवागच्छति २ छत्ताइए तित्थगराइसए पासति २ सीयं ठवेइ २ कालियं दारियं सीयातो पच्चोरुहति २ कालियं दारियं अम्मापियरो पुरओ काउं जेणेव पासे अरहा पुरिसादाणीए तेणेव उवागच्छति २ वंदइ नमंसइ २ त्ता एवं वयासी—एवं

खलु देवाणुप्पिया ! काली दारिया अम्हं धूया इट्ठा कंता जाव किमंग पुण पासणयाए ?, एस णं देवाणुप्पिया ! संसारभउव्विगा इच्छइ देवाणुप्पियाणं अंतिए मुंडा भवित्ताणं जाव पव्वइत्तए, तं एयं णं देवाणुप्पियाणं सिस्सिणिभिक्खं दलयामो पडिच्छंतु णं देवाणुप्पिया ! सिस्सिणिभिक्खं, अहासुहं देवाणुप्पिया ! मा पडिबंधं करेहि ११ । तते णं काली कुमारी पासं अरहं वंदति २ उत्तरपुरच्छिमं दिसिभागं अवक्कमति २ सयमेव आभरण-मल्लालंकारं ओमुयति २ सयमेव लोयं करेति २ जेणेव पासे अरहा पुरिसादाणीए तेणेव उवागच्छति २ पासं अरहं तिक्खुत्तो वंदति २ एवं वयासी--आलित्ते णं भंते ! लोए एवं जहा देवाणंदा जाव सयमेव पव्वाविउं १२ । तते णं पासे अरहा पुरिसादाणीए कालिं सयमेव पुप्फचूलाए अज्जाए सिस्सिणियत्ताए दलयति, तते णं सा पुप्फचूला अज्जा कालिं कुमारिं सयमेव पव्वावेति जाव उवसंपज्जित्ताणं विहरति, तते णं सा काली अज्जा जाया ईरियासमिया जाव गुत्तबंभयारिणी, तते णं सा काली अज्जा पुप्फचूला-अज्जाए अंतिए सामाइय-माइयाति एक्कारस अंगाइं अहिज्जइ बहूहिं चउत्थ जाव विहरति १३ । तते णं सा काली अज्जा अन्नया कयाति सरीर-बाउसिया जाया यावि होत्था, अभिक्खणं २ हत्थे धोवइ पाए धोवइ सीसं धोवइ मुहं धोवइ थणंतराइं धोवइ कक्खंतराणि धोवति गुज्झंतराइं धोवइ जत्थ २ विय णं ठाणं वा सेज्जं वा णिसीहियं वा चेतेइ तं पुव्वामेव अब्भुक्खेत्ता ततो पच्छा आसयति वा सयइ वा, तते णं सा पुप्फचूला अज्जा कालिं अज्जं एवं वयासी--नो खलु कप्पति देवाणुप्पिया ! समणीणं णिग्गंथीणं सरीर-बाउसियाणं होत्तए, तुमं च णं देवाणुप्पिया ! सरीर-बाउसिया जाया अभिक्खणं २ हत्थे धोवसि जाव आसयाहि(यसि) वा सयाहि(यसि) वा, तं तुमं देवाणुप्पिए ! एयस्स ठाणस्स आलोएहि जाव पायच्छित्तं पडिवज्जाहि, तते णं सा काली अज्जा पुप्फचूलाए अज्जाए

एयमट्ठं नो आढाति जाव तुसिणीया संचिट्ठति १४। तते णं ताओ पुप्फचूलाइओ अज्जाओ कालिं अज्जं अभिक्खणं २ हीलेंति णिंदंति खिंसंति गरिहंति अवमराणंति अभिक्खणं २ एयमट्ठं निवारेंति, तते णं तीसे कालीए अज्जाए समणीहिं णिग्गंथीहिं अभिक्खणं २ हीलिज्जमाणीए जाव वारिज्जमाणीए इमेयारूवे अब्भत्थिए जाव समुप्पज्जित्था-जया णं अहं आगारवासं मज्जे वसित्था तया णं अहं सयंवसा जप्पिभिइं च णं अहं मुंडे भवित्ता आगाराओ अणगारियं पव्वतिया तप्पभिइं च णं अहं परवसा जाया, तं सेयं खलु मम कल्लं पाउप्पभायाए रयणीए जाव जलंते पाडिक्कियं उवस्सयं उवसंपज्जित्ता णं विहरित्तएत्तिकट्टु एवं संपेहेति २ कल्लं जाव जलंते पाडिएक्कं उवस्सयं गिराहति १५। तत्थ णं अणिवारिया अणोहट्टिया सच्छंदमती अभिक्खणं २ हत्थे धोवेति जाव आसयइ वा सयइ वा, तए णं सा काली अज्जा पासत्था पासत्थविहारी ओसराणा ओसराणविहारी कुसीला २ अहाछंदा २ संसत्ता २ बहूणि वासाणि सामन्नपरियागं पाउणइ २ अद्धमासियाए संलेहणाए अत्ताणं भूसेति २ तीसं भत्ताइं अणसणाए छेएइ २ तस्स ठाणस्स अणालोइयअपडिक्कंता कालमासे कालं किच्चा चमरचंचाए रायहाणीए कालवडिंसए भवणे उववायसभाए देवसयणिज्जंसि देवदूसंतरिया अंगुलस्स असंखेज्जाइ-भागमेत्ताए ओगाहणाए कालीदेवीत्ताए उववराणा १६। तते णं सा काली देवी अहुणोववराणा समाणी पंचविहाए पज्जत्तीए जहा सूरियाभो जाव भासामणपज्जत्तीए, तते णं सा काली देवी चउराहं सामाणिय-साहस्सीणं जाव अराणेसिं च बहूणं काल(ली)वडेंसग-भवणवासीणं असुरकुमाराणं देवाण य देवीण य आहेवच्चं जाव विहरति १७। एवं खलु गोयमा! कालीए देवीए सा दिव्वा देविड्ढी ३ लद्धा पत्ता अभिसमराणागया, कालीए णं भंते! देवीए केवतियं कालं ठिती पन्नत्ता?, गोयमा! अड्ढाइज्जाइं पलि-

ओवमाइं ठिई पन्नत्ता, काली णं भंते ! देवी ताओ देवलोगाओ अणंतरं उववट्टित्ता कहिं गच्छिहिति कहं उववज्जिहिति ?, गोयमा ! महाविदेह वासे सिज्झिहिति, एवं खलु जंबू ! समणेणं जाव संपत्तेणं पढमवग्गस्स पढमज्झयणस्स अयमट्ठे पराणत्तेत्तिबेमि १८ ॥ सूत्रं १५४ ॥ धम्मकहाणं पढमज्झयणं समत्तं ॥१—१॥ जति णं भंते ! समणेणं जाव संपत्तेणं धम्मकहाणं पढमस्स वग्गस्स पढमज्झयणस्स अयमट्ठे पन्नत्ते बितियस्स णं भंते ! अज्झयणस्स समणेणं भगवया महावीरेणं जाव संपत्तेणं के अट्ठे पराणत्ते ?, एवं खलु जंबू ! तेणं कालेणं २ रायगिहे नगरे गुणसीलए चेइए सामी समोसढे परिसा णिग्गया जाव पज्जुवासति १ । तेणं कालेणं २ राई देवी चमरचंचाए रायहाणीए एवं जहा काली तहेव आगया णट्टविहिं उवदंसेत्ता पडिगया, भंतेत्ति भगवं गोयमा ! पुव्वभवपुच्छा, एवं खलु गोयमा ! तेणं कालेणं २ आमलकप्पा णयरी अंबसालवणे चेइए जियसत्तू राया राई गाहावती राईसिरी भारिया राई दारिया पासस्स समोसरणं, राई दारिया जहेव काली तहेव निक्खंता तहेव सरीरबाउसिया तं चेव सव्वं जाव अंतं काहिति । एवं खलु जंबू ! बिइयज्झयणस्स निक्खेवओ ॥ १—२ ॥ जति णं भंते ! तइयज्झयणस्स उक्खेवतो, एवं खलु जंबू । रायगिहे णयरे गुणसिलए चेइए एवं जहेव राती तहेव रयणीवि, णवरं आमलकप्पा नयरी रयणी गाहावती रयणसिरी भारिया रयणी दारिया सेसं तहेव जाव अंतं काहिति ॥ १—३ ॥ एवं विज्जूवि आमलकप्पा नयरी विज्जुगाहावती विज्जुसिरिभारिया विज्जुदारिया सेसं तहेव ॥ १—४ ॥ एवं मेहावि आमलकप्पाए नयरीए मेहे गाहावती मेहसिरि भारिया मेहा दारिया सेसं तहेव ॥ १—५ ॥ एवं खलु जंबू ! समणेणं जाव संपत्तेणं धम्मकहाणं पढमस्स वग्गस्स अयमट्ठे पराणत्ते ॥ सूत्रं १५५ ॥

॥ इति प्रथमो वर्गः ॥ २—१ ॥

॥२॥ अथ द्वितीयो वर्ग्गः ॥

जति णं भंते ! समणेणं जाव संपत्तेणं दोच्चस्स वग्गस्स उक्खेवओ, एवं खलु जंबू ! समणेणं जाव संपत्तेणं दोच्चस्स वग्गस्स पंच अज्झयणा पन्नत्ता, तंजहा–सुंभा निसुंभा रंभा निरुंभा मदणा १। जति णं भंते ! समणेणं जाव संपत्तेणं धम्मकहाणं दोच्चस्स वग्गस्स पंच अज्झयणा पन्नत्ता, दोच्चस्स णं भंते ! वग्गस्स पढमज्झयणस्स के अट्ठे पन्नत्ते ?, एवं खलु जंबू ! तेणं कालेणं २ रायगिहे णयरे गुणसीलए चेइए सामी समोसढो परिसा णिग्गया जाव पज्जुवासति २। तेणं कालेणं २ सुंभा देवी बलिचंचाए रायहाणीए सुंभवडेंसए भवणे सुभंसि सीहासणंसि कालीगमएणं जाव णट्टविहिं उवदंसेत्ता जाव पडिगया ३। पुव्वभवपुच्छा, सावत्थी णयरी कोट्ठए चेइए जियसत्तू राया सुंभे गाहावती सुंभसिरी भारिया सुंभा दारिया सेसं जहा कालिया णवरं अद्धुट्ठातिं पलिओवमाइं ठिती ४। एवं खलु जंबू ! निक्खेवओ अज्झयणस्स एवं सेसावि चत्तारि अज्झयणा, सावत्थीए नवरं माया पिया सरिसनामया ५। एवं खलु जंबू ! निक्खेवओ बितीयवग्गस्स २, ६ ॥ सूत्रं १५६ ॥

॥ इति द्वितीयो वर्ग्गः ॥ २–२ ॥

॥३॥ अथ तृतीयो वर्ग्गः ॥

उक्खेवओ तइयवग्गस्स एवं खलु जंबू ! समणेणं भगवया महावीरेणं जाव संपत्तेणं तइयस्स वग्गस्स चउपण्णं अज्झयणा पन्नत्ता, तंजहा–पढमे अज्झयणे जाव चउपण्णतिमे अज्झयणे १। जति णं भंते ! समणेणं जाव संपत्तेणं धम्मकहाणं तइयस्स वग्गस्स चउप्पन्नज्झयणा पन्नत्ता पढमस्स णं भंते ! अज्झयणस्स समणेणं जाव संपत्तेणं के अट्ठे पण्णत्ते ?, एवं खलु जंबू ! तेणं कालेणं २ रायगिहे णयरे गुणसीलए चेइए सामी समोसढे परिसा

णिग्गया जाव पज्जुवासति, तेणं कालेणं २ इला देवी धरणीए रायहाणीए इलावडंसए भवणे इलंसि सीहासणंसि एवं कालीगमएणं जाव णट्टविहिं उवदंसेत्ता पडिगया, पुव्वभवपुच्छा, वाणारसीए णयरीए काममहावणे चेइए इले गाहावती इलासिरी भारिया इला दारिया सेसं जहा कालीए णवरं धरणस्स अग्गमहिसित्ताए उववाओ, सातिरेग-अद्धपलिओवम-ठिती सेसं तहेव, एवं खलु णिक्खेवओ पढमज्झयणस्स १। एवं कमा(मक्का) सतेरा सोयामणी इंदा घणा विज्जुयावि, सव्वाओ एयाओ धरणस्स अग्गमहिसीओ एव, एते छ अज्झयणा वेणुदेवस्सवि अविसेसिया भाणियव्वा २। एवं जाव घोसस्सवि एए चेव छ अज्झयणा ३। एवमेते दाहिणिल्लाणं इंदाणं चउप्पणणं अज्झयणा भवंति ४। सव्वाओवि वाणारसीए काममहावणे चेइए, तइयवग्गस्स णिक्खेवओ ५॥ सूत्रं १५७॥

॥ इति तृतीयो वर्गः ॥ २-३ ॥

॥४॥ अथ चतुर्थो वर्गः ॥

चउत्थस्स उक्खेवओ, एवं खलु जंबू ! समणेणं जाव संपत्तेणं धम्मकहाणं चउत्थवग्गस्स चउप्पणणं अज्झयणा पन्नत्ता तंजहा—पढमे अज्झयणे जाव चउप्पण्णइमे अज्झयणे १। पढमस्स अज्झयणस्स उवखेवओ एवं खलु जंबू ! तेणं कालेणं २ रायगिहे समोसरणं जाव परिसा पज्जुवासति, तेणं कालेणं २ रूया देवी रूयाणंदा रायहाणी रूयगवडिंसए भवणे रूयगंसि सीहासणंसि जहा कालीए तहा नवरं पुव्वभवे चंपाए पुण्णभद्दे चेतिए रूयग-गाहावई रूयगसिरी भारिया रूया दारिया सेसं तहेव, णवरं भूयाणंद-अग्गमहिसित्ताए उववाओ, देसूणं पलिओवमं ठिई, णिक्खेवओ २। एवं खलु सुरूयावि रूयंसावि रूयगावतीवि रूयकंतावि रूयप्पभावि ३। एयाओ चेव उत्तरिल्लाणं इंदाणं भाणियव्वाओ जाव महाघोसस्स ४। णिक्खेवओ चउत्थवग्गस्स ॥ सूत्रं १५८॥

॥ इति चतुर्थो वर्गः ॥ २-४ ॥

॥५॥ अथ पञ्चमो वर्गः ॥

पंचमवग्गस्स उक्खेवओ, एवं खलु जंबू ! जाव बत्तीसं अज्झयणा पन्नत्ता, तंजहा—कमला कमलप्पभा चेव, उप्पला य सुदंसणा। रूववती बहुरूवा, सुरूवा सुभगावि य ॥ १ ॥ पुण्णा बहुपुत्तिया चेव, उत्तमा भारियावि य । पउमा वसुमती चेव, कणगा कणगप्पभा ॥ २ ॥ वडेंसा केउमती चेव, वइरसेणा रयिप्पिया। रोहिणी नमिया चेव, हिरी पुप्फवतीतिय ॥ ३ ॥ भुयगा भुयगवती चेव, महाकच्छाऽपराइया। सुघोसा विमला चेव, सुस्सरा य सरस्सती ॥ ४ ॥ १ । उक्खेवओ पढमज्झयणस्स, एवं खलु जंबू ! तेणं कालेणं २ रायगिहे समोसरणं जाव परिसा पज्जुवासति, तेणं कालेणं २ कमला देवी कमलाए रायहाणीए कमलवडेंसए भवणे कमलंसि सीहासणंसि सेसं जहा कालीए तहेव णवरं पुव्वभवे नागपुरे नयरे सहसंबवणे उज्जाणे कमलस्स गाहावतिस्स कमलसिरीए भारियाए कमला दारिया पासस्स पुरिसादाणीयस्स अंतिए निक्खंता कालस्स पिसाय-कुमारिंदस्स अग्गमहिसी अद्धपलिओवमं ठिती २। एवं सेसावि अज्झयणा दाहिणिल्लाणं वाणमंतरिंदाणं ३। भाणियव्वाओ सव्वाओ णागपुरे सहसंबवणे उज्जाणे माया पिया धूया सरिसनामया, ठिती अद्धपलिओवमं ४ ॥ सूत्रं १५९ ॥ पंचमो वग्गो समत्तो ॥

॥ इति पञ्चमो वर्गः ॥ १–५ ॥

॥६॥ अथ षष्ठो वर्गः ॥

छट्ठोवि वग्गो पंचमवग्गसरिसो, णवरं महाकालिंदाणं उत्तरिल्लाणं इंदाणं अग्गमहिसीओ पुव्वभवे सागेयनयरे उत्तरकुरुउज्जाणे माया पिया धूया सरिसणामया सेसं तं चेव ॥ सूत्रं १६० ॥ छट्ठो वग्गो समत्तो ।

॥ इति षष्ठो वर्गः ॥ २–६ ॥

॥७॥ अथ सप्तमो वर्गः ॥

सत्तमस्स वग्गस्स उक्खेवश्रो, एवं खलु जंबू! जाव चत्तारि अज्झयणा पन्नत्ता, तंजहा–सूरप्पभा आयवा अच्चिमाली पभंकरा १। पढमज्झयणस्स उक्खेवश्रो, एवं खलु जंबू! तेणं कालेणं २ रायगिहे समोसरणं जाव परिसा पज्जुवासइ, तेणं कालेणं २ सूरप्पभा देवी सूरंसि विमाणंसि सूरप्पभंसि सीहासणंसि सेसं जहा कालीए तहा णवरं पुव्वभवो अरक्खुरीए नयरीए सूरप्पभस्स गाहावइस्स सूरसिरीए भारियाए सूरप्पभाए दारिया सूरस्स अग्गमहिसी ठिती अद्धपलिश्रोवमं पंचहिं वाससएहिं अब्भहियं सेसं जहा कालीए २। एवं सेसाश्रोवि सव्वाश्रो अरक्खुरीए णयरीए ३॥ सूत्रं १६१॥ सत्तमो वग्गो समत्तो।

॥ इति सप्तमो वर्गः ॥ २–७॥

॥८॥ अथ अष्टमो वर्गः ॥

अट्ठमस्स उक्खेवश्रो, एवं खलु जंबू! जाव चत्तारि अज्झयणा पन्नत्ता तंजहा–चंदप्पभा दोसिणाभा अच्चिमाली पभंकरा–१। पढमस्स अज्झयणस्स उक्खेवश्रो, एवं खलु जंबू! तेणं कालेणं २ रायगिहे समोसरणं जाव परिसा पज्जुवासती, तेणं कालेणं २ चंदप्पभा देवी चंदप्पभंसि विमाणंसि चंदप्पभंसि सीहासणंसि सेसं जहा कालीए, णवरं पुव्वभवे महुराए णयरीए भंडिवडेंसए उज्जाणे चंदप्पभे गाहावती चंदसिरी भारिया चंदप्पभा दारिया चंदस्स अग्गमहिसी ठिती अद्धपलिश्रोवमं पराणासाए वाससहस्सेहिं अब्भहियं सेसं जहा कालीए २। एवं सेसाश्रोवि महुराए णयरीए मायापियरोवि धूयासरिसणामा ३॥ सूत्रं १६२॥ अट्ठमो वग्गो समत्तो।

॥ इति अष्टमो वर्गः ॥ २–८॥

॥९॥ अथ नवमो वग्गः ॥

णवमस्स उक्खेवओ, एवं खलु जंबू ! जाव अट्ठ अज्झयणा पन्नत्ता, तंजहा–पउमा सिवा सती अंजू रोहिणी णवमिया(याइया) अचला अ(म)-च्छरा १। पढमज्झयणस्स उक्खेवओ, एवं खलु जंबू ! तेणं कालेणं रायगिहे समोसरणं जाव परिसा पज्जुवासइ, तेणं कालेणं २ पउमावई देवी सोहम्मे कप्पे पउमवडेंसए विमाणे सभाए सुहम्माए पउमंसि सीहास-णंसि जहा कालीए एवं अट्ठवि अज्झयणा कालीगमएणं नायव्वा २। णवरं सावत्थीए दो जणीओ हत्थिणाउरे दो जणीओ, कंपिल्लपुरे दो जणीओ सागेयनयरे दो जणीओ, पउमे पियरो विजया मायराओ, सव्वा-ओऽवि पासस्स अंतिए पव्वतियाओ सक्कस्स अग्गमहिसीओ ठिई सत्त पलिओवमाइं महाविदेहे वासे अंतं काहिंति ३ ॥ सूत्रं १६३ ॥ णवमो वग्गो समत्तो ॥

॥ इति नवमो वग्गः ॥ २–९ ॥

॥१०॥ अथ दशमो वग्गः ॥

दसमस्स उक्खेवओ, एवं खलु जंबू ! जाव अट्ठ अज्झयणा पन्नत्ता, तंजहा–कण्हा य कण्हराती रामा तह रामरक्खिया वसू या। वसुगुत्ता वसुमित्ता वसुंधरा चेव ईसाणे ॥ १ ॥ १। पढमज्झयणस्स उक्खेवओ, एवं खलु जंबू ! तेणं कालेणं तेणं समएणं रायगिहे समोसरणं जाव परिसा पज्जुवासति, तेणं कालेणं २ कण्हा देवी ईसाणे कप्पे कण्हवडेंसए विमाणे सभाए सुहम्माए कण्हंसि सीहासणंसि सेसं जहा कालीए, एवं अट्ठवि अज्झयणा कालीगमएणं णेयव्वा २। णवरं पुव्वभवे वाणारसीए नयरीए दो जणीओ रायगिहे नयरे दो जणीओ सावत्थीए नयरीए दो जणीओ कोसंबीए नयरीए दो जणीओ ३। रामे पिया,

धम्मा माया, सव्वाओऽवि पासस्स अरहओ अंतिए पव्वइयाओ पुप्फचूलाए अज्जाए सिस्सिणीयत्ताए ईसाणस्स अग्गमहिसीओ ठिती णव पलिओवमाइं महाविदेहे वासे सिज्भिहिंति बुज्भिहिंति मुच्चिहिंति सव्वदुक्खाणं अंतं काहिंति ४ । एवं खलु जंबू ! णिक्खेवओ दसमवग्गस्स ५ ॥सूत्रं १६४॥ दसमो वग्गो समत्तो ॥

॥ इति दशमो वर्गः ॥ २–१० ॥

एवं खलु जंबू ! समणेणं भगवया महावीरेणं आदिगरेणं तित्थगरेणं सयंसंबुद्धेणं पुरिसोत्तमेणं जाव संपत्तेणं छट्ठस्स अंगस्स दोच्चस्स णं सुयक्खंधस्स णायसुयाणं अयमट्ठे पन्नत्ते । धम्मकहा सुयक्खंधो समत्तो दसहिं वग्गेहिं नायाधम्मकहाओ समत्ताओ ॥ सूत्रं १६५ ॥

॥ इति द्वितीयः श्रुतस्कन्धः समाप्तः ॥ २ ॥

॥ इति श्री ज्ञाताधर्मकथाङ्ग-सूत्रम् ॥६॥

(ग्रन्थाग्रं ५४६४)

॥ इति

श्रीज्ञाताधर्मकथाङ्ग-सूत्रं

॥ समाप्तम् ॥

॥ अर्हम् ॥

॥ पञ्चमगणभृत्श्रीमत्सुधर्मस्वामिप्रणीतं ॥

॥ श्रीमदुपासकदशाङ्गसूत्रम् ॥

॥१॥ अथ श्री आनन्दाख्यं प्रथममध्ययनम् ॥

॥ ऍं ॥ ते णं काले णं ते णं समए णं चम्पा नामं नयरी होत्था, वरणओ, पुणभद्दे चेइए, वरणओ ॥ सूत्रं १ ॥ ते णं काले णं ते णं समए णं अज्जसुहम्मे समोसरिए जाव जम्बू पज्जुवासमाणे एवं वयासी–जइ णं भन्ते ! समणेणं भगवया महावीरेणं जाव सम्पत्तेणं छट्ठस्स अङ्गस्स नायाधम्मकहाणं अयमट्ठे पराणत्ते सत्तमस्स णं भन्ते ! अङ्गस्स उवासगदसाणं समणेणं जाव संपत्तेणं के अट्ठे पराणत्ते ?, एवं खलु जम्बू ! समणेणं जाव संपत्तेणं सत्तमस्स अङ्गस्स उवासगदसाणं दस अज्झयणा पराणत्ता, तंजहा–आणन्दे १ कामदेवे य २, गाहावइ चुलणीपिया ३ । सुरादेवे ४ चुल्लसयए ५, गाहावइ कुराडकोलिए ६ ॥ १ ॥ सद्दालपुत्ते ७ महासयए ८, नन्दिणीपिया ९ सालिहीपिया १०, १ । जइ णं भन्ते ! समणेणं जाव संपत्तेणं सत्तमस्स अङ्गस्स उवासगदसगाणं दस अज्झयणा पराणत्ता, पढमस्स णं भन्ते ! समणेणं जाव संपत्तेणं के अट्ठे पराणत्ते ? २ ॥ सू० २ ॥

एवं खलु जम्बू ! तेणं कालेणं तेणं समएणं वाणियगामे नामं नयरे होत्था, वराणओ, तस्स णं वाणियगामस्स नयरस्स बहिया उत्तर-पुरच्छि(त्थि)मे दिसीभाए दूइपलासए नामं चेइए, तत्थ णं वाणियगामे नयरे जियसत्तू राया होत्था वराणओ, तत्थ णं वाणियगामे आणन्दे नामं

गाहावई परिवसइ, अड्ढे जाव अपरिभूए १। तस्स णं आणंदस्स गाहावइस्स चत्तारि हिरणकोडीओ निहाणपउत्ताओ चत्तारि हिरणकोडीओ वुड्ढिपउत्ताओ चत्तारि हिरणकोडिओ पवित्थरपउत्ताओ चत्तारि वया दसगोसाहस्सिएणं वएणं होत्था २। से णं आणन्दे गाहावई बहूणं राईसर जाव सत्थवाहाणं बहूसु कज्जेसु य कारणेसु य मन्तेसु य कुडुम्बेसु य गुज्झेसु य रहस्सेसु य निच्छएसु य ववहारेसु य आपुच्छणिज्जे पडिपुच्छणिज्जे, सयस्सवि य णं कुडुम्बस्स मेढी पमाणं आहारे आलम्बणं चक्खू मेढीभूए जाव सव्वकज्जवड्ढावए यावि होत्था ३। तस्स णं आणन्दस्स गाहावइस्स सिवानन्दा नामं भारिया होत्था, अहीण जाव सुरूवा, आनन्दस्स गाहावइस्स इट्ठा आणन्देणं गाहावइणा सद्धिं अणुरत्ता अविरत्ता इट्ठा सद्द जाव पञ्चविहे माणुस्सए कामभोए पच्चणुभवमाणी विहरइ ४। तस्स णं वाणियगामस्स बहिया उत्तरपुरच्छिमे दिसीभाए एत्थ णं कोल्लाए नामं सन्निवेसे होत्था, रिद्धत्थिमिय जाव पासादीए, तत्थ णं कोल्लाए सन्निवेसे आणन्दस्स गाहावइस्स बहुए मित्तनाइ-नियगसयण-सम्बन्धिपरिजणे परिवसइ, अड्ढे जाव अपरिभूए ५। तेणं कालेणं तेणं समएणं समणे भगवं महावीरे जाव समोसरिए, परिसा निग्गया, कोणिए राया जहा तहा जियसत्तू निग्गच्छइ २ त्ता जाव पज्जुवासइ ६। तए णं से आणन्दे गाहावई इमीसे कहाए लद्धट्ठे समाणे, एवं खलु समणे जाव विहरइ, तं महाफलं जाव गच्छामि णं जाव पज्जुवासामि, एवं सम्पेहेइ २ त्ता ण्हाए सुद्धप्पावेसाइं जाव अप्पमहग्घाभरणालङ्कियसरीरे सयाओ गिहाओ पडिणिक्खमइ २ त्ता सकोरण्ट-मल्लदामेणं छत्तेणं धरिज्जमाणेणं मणुस्सवग्गुरापरिक्खित्ते पायविहारचारेणं वाणियगामं नयरं मज्झंमज्झेणं निग्गच्छइ २ त्ता जेणामेव दूइपलासे चेइए जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छइ २ त्ता तिक्खुत्तो आयाहिणं पयाहिणं करेइ २ त्ता वंदइ

नमंसइ जाव पज्जुवासइ ७ ॥ सू० ३ ॥ तए णं समणे भगवं महावीरे आणन्दस्स गाहावइस्स तीसे य महइमहालियाए जाव धम्मकहा, परिसा पडिगया, राया य गए ॥ सू० ४ ॥ तए णं से आणन्दे गाहावई समणस्स भगवओ महावीरस्स अन्तिए धम्मं सोच्चा निसम्म हट्ठतुट्ठ जाव एवं वयासी--सद्दहामि णं भन्ते ! निग्गंथं पावयणं, पत्तियामि णं भन्ते ! निग्गन्थं पावयणं, रोएमि णं भन्ते ! निग्गंथं पावयणं, एवमेयं भन्ते ! तहमेयं भन्ते ! अवितहमेयं भन्ते ! इच्छियमेयं भन्ते ! पडिच्छियमेयं भन्ते ! इच्छियपडिच्छियमेयं भन्ते ! से जहेयं तुब्भे वयहत्तिकट्टु, जहा णं देवाणुप्पियाणं अन्तिए बहवे राईसर-तलवर-माडम्बिय-कोडुम्बिय-सेट्ठिसेणावइ-सत्थवाहप्पभिइ(आ)ओ मु(ण्डा)ण्डे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइया नो खलु अहं तहा संचाएमि मुण्डे जाव पव्वइत्तए, अहं णं देवाणुप्पियाणं अन्तिए पञ्चाणुव्वइयं सत्तसिक्खावइयं दुवालसविहं गिहि-धम्मं पडिवज्जिस्सामि, अहासुहं देवाणुप्पिया ! मा पडिबन्धं करेह ॥सू०५॥

तए णं से आणन्दे गाहावई समणस्स भगवओ महावीरस्स अन्तिए तप्पढमयाए थूलगं पाणाइवायं पच्चक्खाइ जावज्जीवाए दुविहं तिविहेणं न करेमि न कारवेमि मणसा वयसा कायसा १ । तयाणन्तरं च णं थूलगं मुसावायं पच्चक्खाइ जावज्जीवाए दुविहं तिविहेणं न करेमि न कारवेमि मणसा वयसा कायसा २ । तयाणन्तरं च णं थूलगं अदिण्णादाणं पच्चक्खाइ जावज्जीवाए दुविहं तिविहेणं न करेमि न कारवेमि मणसा वयसा कायसा ३ । तयाणन्तरं च णं सदारसन्तोसिए परिमाणं करेइ, नन्नत्थ एक्काए सिवा(व)नन्दाए भारियाए अवसेसं सव्वं मेहुणविहिं पच्चक्खामि मणसा (३), ४ । तयाणन्तरं च णं इच्छाविहिपरिमाणं करेमाणे हिरण्ण-सुवण्णविहि-परिमाणं करेइ, नन्नत्थ चउहिं हिरण्णकोडीहिं निहाणपउत्ताहि चउहिं वुड्ढिपउत्ताहिं चउहिं पवित्थरपउत्ताहिं, अवसेसं सव्वं हिरण्णसुव-

णविहिं पच्चक्खामि (३), ५। तयाणन्तरं च णं चउप्पयविहि-परिमाणं करेइ, नन्नत्थ चउहिं वएहिं दसगोसाहस्सिएणं वएणं, अवसेसं सव्वं चउप्पयविहिं पच्चक्खामि (३), ६। तयाणन्तरं च णं खेत्तवत्थुविहि-परिमाणं करेइ, नन्नत्थ पञ्चहिं हलसएहिं नियत्तणसइएणं हलेणं, अवसेसं सव्वं खेत्तवत्थुविहिं पच्चक्खामि (३), ७। तयाणन्तरं च णं सगडविहिपरिमाणं करेइ, नन्नत्थ पञ्चहिं सगडसएहिं दिसायत्तिएहिं पञ्चहिं सगडसएहिं संवाहणिएहिं, अवसेसं सव्वं सगडविहिं पच्चक्खामि (३), ८। तयाणन्तरं च णं वाहणविहि-परिमाणं करेइ, नन्नत्थ चउहिं वाहणेहिं दिसायत्तिएहिं चउहिं वाहणेहिं संवाहणिएहिं, अवसेसं सव्वं वाहणविहिं पच्चक्खामि (३), ९। तयाणन्तरं च णं उवभोग-परिभोगविहिं पच्चक्खाएमाणे उल्लणिया-विहि-परिमाणं करेइ, नन्नत्थ एगाए गन्धकासाईए, अवसेसं सव्वं उल्लणियाविहिं पच्चक्खामि (३), १०। तयाणन्तरं च णं दन्तवण-विहिपरिमाणं करेइ, नन्नत्थ एगेणं अल्ललट्ठी-महुएणं, अवसेसं दन्तवणविहिं पच्चक्खामि (३), ११। तयाणन्तरं च फलविहिपरिमाणं करेइ, नन्नत्थ एगेणं खीरामलएणं, अवसेसं फलविहिं पच्चक्खामि (३), १२। तयाणन्तरं च णं अब्भङ्गण-विहिपरिमाणं करेइ, नन्नत्थ सयपाग-सहस्सपागेहिं तेल्लेहिं, अवसेसं अब्भङ्गणविहिं पच्चक्खामि (३), १३। तयाणन्तरं च णं उव्वट्टणा-विहि-परिमाणं करेइ, नन्नत्थ एगेणं सुरहिणा गन्धट्टएणं, अवसेसं उव्वट्टणाविहिं पच्चक्खामि (३), १४। तयाणन्तरं च णं मज्जण-विहिपरिमाणं करेइ, नन्नत्थ अट्ठहिं उट्टिएहिं उदगस्स घडएहिं, अवसेसं मज्जणविहिं पच्चक्खामि (३), १५। तयाणन्तरं च णं वत्थविहिपरिमाणं करेइ, नन्नत्थ एगेणं खोमजुयलेणं, अवसेसं वत्थविहिं पच्चक्खामि (३), १६। तयाणन्तरं च णं विलेवणविहिपरिमाणं करेइ, नन्नत्थ अगरुकुङ्कुम-चन्दणमादिएहिं, अवसेसं विलेवणविहिं पच्चक्खामि (३), १७। तयाणन्तरं च णं पुप्फविहिपरिमाणं

करेइ, नन्नत्थ एगेणं सुद्धपउमेणं मालइकुसुमदामेणं वा, अवसेसं पुप्फविहिं पच्चक्खामि (३), १८। तयाणन्तरं च णं आभरणविहिपरिमाणं करेइ, नन्नत्थ मट्ठकण्णेज्जएहिं नाममुद्दाए य, अवसेसं आभरणविहिं पच्चक्खामि (३), १९। तयाणन्तरं च णं धूवणविहिपरिमाणं करेइ, नन्नत्थ अगरुतुरुक्कधूवमादिएहिं, अवसेसं धूवणविहिं पच्चक्खामि (३), २०। तयाणन्तरं च णं भोयणविहिपरिमाणं करेमाणे पेज्जविहिपरिमाणं करेइ, नन्नत्थ एगाए कट्ठपेज्जाए, अवसेसं पेज्जविहिं पच्चक्खामि (३), २१। तयाणन्तरं च णं भक्खविहिपरिमाणं करेइ, नन्नत्थ एगेहिं घयपुण्णेहिं खण्डखज्जएहिं वा, अवसेसं भक्खविहिं पच्चक्खामि (३), २२। तयाणन्तरं च णं ओदणविहिपरिमाणं करेइ, नन्नत्थ कलमसालिओदणेणं, अवसेसं ओदणविहिं पच्चक्खामि (३), २३। तयाणन्तरं च णं सूवविहिपरिमाणं करेइ, नन्नत्थ कलायसूवेण वा मुग्गमाससूवेण वा, अवसेसं सूवविहिं पच्चक्खामि (३) २४। तयाणन्तरं च णं घयविहिपरिमाणं करेइ, नन्नत्थ सारइएणं गोघयमण्डेणं अवसेसं घयविहिं पच्चखामि (३), २५। तयाणन्तरं च णं सागविहिपरिमाणं करेइ, नन्नत्थ वत्थुसाएण वा (चुच्चुसाएणं वा तुंबसाएण वा) सुत्थियसाएण वा मण्डुक्कियसाएण वा, अवसेसं सागविहिं पच्चक्खामि (३), २६। तयाणन्तरं च णं माहुरय-विहिपरिमाणं करेइ, नन्नत्थ एगेणं पालङ्गामाहुरएणं, अवसेसं माहुरयविहिं पच्चक्खामि (३), २७। तयाणन्तरं च णं जेमणविहिपरिमाणं करेइ, नन्नत्थ सेहंबदालियंबेहिं, अवसेसं जेमणविहिं पच्चक्खामि (३), २८। तयाणन्तरं च णं पाणियविहिपरिमाणं करेइ, नन्नत्थ एगेणं अन्तलिक्खोदएणं, अवसेसं पाणियविहिं पच्चक्खामि (३), २९। तयाणन्तरं च णं मुहवासविहिपरिमाणं करेइ, नन्नत्थ पञ्चसोगन्धिएणं तम्बोलेणं, अवसेसं मुहवासविहिं पच्चक्खामि (३), ३०। तयाणन्तरं च णं चउव्विहं अणट्ठादण्डं पच्चक्खाइ, तंजहा–अवज्झाणायरियं पमाया-

यरियं हिंसप्पयाणं पावकम्मोवएसे (३), ३१ ॥ सू० ६ ॥

इह खलु आणन्दाइ ! समणे भगवं महावीरे आणन्दं समणोवासगं एवं वयासी–एवं खलु आणन्दा ! समणोवासएणं अभिगयजीवाजीवेणं जाव अणइक्कमणिज्जेणं सम्मत्तस्स पञ्च अइयारा पेयाला जाणियव्वा न समायरियव्वा, तंजहा–सङ्का कङ्खा विइगिच्छा परपासण्डपसंसा परपासण्डसंथवे। तयाणन्तरं च णं थूलगस्स पाणाइवायवेरमणस्स समणोवासएणं पञ्च अइयारा पेयाला जाणियव्वा न समायरियव्वा, तंजहा–बन्धे वहे छविच्छेए अइभारे भत्तपाणवोच्छेए १। तयाणन्तरं च णं थूलगस्स मुसावायवेरमणस्स पञ्च अइयारा जाणियव्वा न समायरिव्वा, तंजहा–सहसा-अब्भक्खाणे रहसाअब्भक्खाणे सदारमन्तभेए मोसोवएसे कूडलेहकरणे (कन्नालियं गवालियं भूमालियं नासावहारे कूडसक्खिज्जं संधिकरणे) २। तयाणन्तरं च णं थूलगस्स अदिण्णादाण-वेरमणस्स पञ्च अइयारा जाणियव्वा न समायरियव्वा, तंजहा–तेणाहडे तक्करप्पओगे विरुद्धरज्जाइक्कमे कूडतुलकूडमाणे तप्पडिरूवगववहारे ३। तयाणन्तरं च णं सदारसन्तोसिए पञ्च अइयारा जाणियव्वा न समायरियव्वा, तंजहा–इत्तरिय-परिग्गहियागमणे अपरिग्गहियागमणे अणङ्गकीडा परविवाहकरणे कामभोगतिव्वाभिलासे ४। तयाणन्तरं च इच्छापरिमाणस्स समणोवासएणं पञ्च अइयारा जाणियव्वा न समायरियव्वा, तंजहा–खेत्तवत्थु-पमाणाइक्कमे हिरण्णसुवण्ण-पमाणाइक्कमे दुपयचउप्पय-पमाणाइक्कमे धणधन्न-पमाणाइक्कमे कुविय-पमाणाइक्कमे ५। तयाणन्तरं च णं दिसिवयस्स पञ्च अइयारा जाणियव्वा न समायरियव्वा, तंजहा–उड्ढदिसि-पमाणाइक्कमे अहोदिसि-पमाणाइक्कमे तिरियदिसि-पमाणाइक्कमे खेत्तवुड्ढी सइअन्तरद्धा ६। तयाणन्तरं च णं उवभोगपरिभोगे दुविहे पण्णत्ते, तंजहा–भोयणओ य कम्मओ य, तत्थ णं भोयणओ समणोवासएणं पञ्च अइयारा जाणियव्वा न समायरियव्वा, तंजहा–सचि-

त्ताहारे सचित्तपडिबद्धाहारे अप्पउलिओसहिभक्खणया दुप्पउलिओसहि-भक्खणया तुच्छोसहिभक्खणया, कम्मओ णं समणोवासएणं पण्णरस कम्मा-दाणाइं जाणियव्वाइं न समायरिपव्वाइं, तंजहा—इङ्गालकम्मे वणकम्मे साडीकम्मे भाडीकम्मे फोडीकम्मे, दन्तवाणिज्जे लक्खवाणिज्जे रसवा-णिज्जे विसवाणिज्जे केसवाणिज्जे, जन्तपीलणकम्मे निल्लञ्छणकम्मे दवग्गि-दावणया सरदहतलाव(गपरि)-सोसणया असईजणपोसणया ७ । तयाणन्तरं च णं अणट्ठादण्डवेरमणस्स समणोवासएणं पञ्च अइयारा जाणियव्वा न समायरियव्वा, तंजहा—कन्दप्पे कुक्कुइए मोहरिए सञ्जुत्ताहिगरणे उवभोग-परिभोगाइरित्ते ८ । तयाणन्तरं च णं सामाइयस्स समणोवासएणं पञ्च अइयारा जाणियव्वा न समायरियव्वा, तंजहा—मणदुप्पणिहाणे वयदुप्पणिहाणे कायदुप्प-णिहाणे सामाइयस्स सइअकरणया सामाइयस्स अणवट्ठियस्स करणया ९ । तयाणन्तरं च णं देसावगासियस्स समणोवासएणं पञ्च अइयारा जाणि-यव्वा न समायरियव्वा, तंजहा—आणवणप्पओगे पेसवणप्पओगे सद्दाणुवाए रूवाणुवाए बहिया पोग्गलपक्खेवे १० । तयाणन्तरं च णं पोसहोववासस्स समणोवासएणं पञ्च अइयारा जाणियव्वा, न समायरियव्वा, तंजहा—अप्प-डिलेहिय-दुप्पडिलेहिय-सिज्जासंथारे अप्पमज्जिय-दुप्पमज्जिय-सिज्जासंथारे अप्प-डिलेहिय-दुप्पडिलेहिय-उच्चारपासवणभूमी अप्पमज्जिय-दुप्पमज्जिय-उच्चारपास-वणभूमी पोसहोववासस्स सम्मं अणणुपालणया ११ । तयाणन्तरं च णं अहा(अतिहि)संविभागस्स समणोवासएणं पञ्च अइयारा जाणियव्वा न समायरियव्वा, तजहा—सचित्तनिक्खेवणया सचित्तपिहणया कालाइक्कमे परवव-देसे मच्छरिया १२ । तयाणन्तरं च णं अपच्छिममारणन्तिय-संलेहणा-भूसणाराहणाए पञ्च अइयारा जाणियव्वा, न समायरियव्वा तंजहा—इह-लोगासंसप्पओगे परलोगासंसप्पओगे जीवियासंसप्पओगे मरणासंसप्पओगे कामभोगासंसप्पओगे १३ ॥ सू० ७ ॥

तए णं से आणन्दे गाहावई समणस्स भगवओ महावीरस्स अन्तिए पञ्चाणुव्वइयं सत्तसिक्खावइयं दुवालसविहं सावयधम्मं पडिवज्जइ २ समणं भगवं महावीरं वन्दइ नमंसइ २ एवं वयासी—"नो खलु मे भन्ते ! कप्पइ अज्जप्पभिइं अन्नउत्थिए वा अन्नउत्थियदेवयाणि वा अन्नउत्थियपरिग्गहियाणि अरिहंतचेइयाणि वा वन्दित्तए वा नमंसित्तए वा, पुव्विं अणालत्तेणं आलवित्तए वा संलवित्तए वा, तेसिं असणं वा पाणं वा खाइमं वा साइमं वा दाउं वा अणुप्पदाउं वा, नन्नत्थ रायाभिओगेणं गणाभिओगेणं बलाभिओगेणं देवयाभिओगेणं गुरुनिग्गहेणं वित्तिकन्तारेणं कप्पइ मे समणे निग्गन्थे फासुएणं एसणिज्जेणं असणपाण-खाइमसाइमेणं वत्थपडिग्गह-कम्बलपायपुञ्छणेणं पीढफलग-सिज्जासंथारएणं ओसहभेसज्जेण य पडिलाभेमाणस्स विहरित्तएत्तिकट्टु इमं एयारूवं अभिग्गहं अभिगिण्हइ २ त्ता पसिणाइं पुच्छइ २ त्ता अट्ठाइं आदियइ २ त्ता समणं भगवं महावीरं तिक्खुत्तो वन्दइ २ त्ता समणस्स भगवओ महावीरस्स अन्तियाओ दूइपलासाओ चेइयाओ पडिणिक्खमइ २ त्ता जेणेव वाणियगामे नयरे जेणेव सए गिहे तेणेव उवागच्छइ २ त्ता सिवानन्दं भारियं एवं वयासी—एवं खलु देवाणुप्पिए ! मए समणस्स भगवओ महावीरस्स अन्तिए धम्मे निसन्ते, सेऽवि य धम्मे मे इच्छिए पडिच्छिए अभिरुइए, तं गच्छ णं तुमं देवाणुप्पिए ! समणं भगवं महावीरं वन्दाहि जाव पज्जुवासाहि, समणस्स भगवओ महावीरस्स अन्तिए पञ्चाणुव्वइयं सत्तसिक्खावइयं दुवालसविहं गिहिधम्मं पडिवज्जाहि ॥ सू० ८ ॥

तए णं सा सिवानन्दा भारिया आणन्देणं समणोवासएणं एवं वुत्ता समाणा हट्ठतुट्ठा कोडुम्बियपुरिसे सद्दावेइ २ एवं वयासी—खिप्पामेव लहुकरण जाव पज्जुवासइ, तए णं समणे भगवं महावीरे सिवानन्दाए तीसे य महइ जाव धम्मं कहेइ, धम्मकहा, तए णं सा शिवानन्दा समणस्स

भगवओ महावीरस्स अन्तिए धम्मं सोच्चा निसम्म हट्ठ जाव गिहिधम्मं पडिवज्जइ २ तमेव धम्मियं जाणप्पवरं दुरूहइ २ जामेव दिसिं पाउब्भूया तामेव दिसिं पडिगया ॥ सू० ६ ॥

भन्ते त्ति भगवं गोयमे समणं भगवं महावीरं वन्दइ नमंसइ २ एवं वयासी—पहू णं भन्ते ! आणन्दे समणोवासए देवाणुप्पियाणं अन्तिए मुण्डे जाव पव्वइत्तए ?, नो तिणट्ठे समट्ठे, गोयमा ! आणन्दे णं समणोवासए बहूइं वासाइं समणोवासगपरियागं पाउणिहिइ २ जाव सोहम्मे कप्पे अरुणे विमाणे देवत्ताए उववज्जिहिइ। तत्थ णं अत्थेगइयाणं देवाणं चत्तारि पलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता। तत्थ णं आणन्दस्सवि समणोवासगस्स चत्तारि पलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता। तए णं समणे भगवं ! महावीरे अन्नया कयाइ बहिया जाव विहरइ ॥ सू० १० ॥ तए णं से आणन्दे समणोवासए जाए अभिगयजीवाजीवे जाव पडिलाभेमाणे विहरइ। तए णं सा सिवानन्दा भारिया समणोवासिया जाया जाव पडिलाभेमाणी विहरइ ॥सू० ११॥ तए णं तस्स आणन्दस्स समणोवासगस्स उच्चावएहिं सीलव्वय-गुणवेरमण-पच्चक्खाण-पोसहोववासेहिं अप्पाणं भावेमाणस्स चोद्दस संवच्छराइं वइक्कन्ताइं, पण्णरसमस्स संवच्छरस्स अन्तरा वट्टमाणस्स अन्नया कयाइं पुव्वरत्तावरत्तकालसमयंसि धम्मजागरियं जागरमाणस्स इमेयारूवे अज्झत्थिए चिन्तिए पत्थिए मणोगए सङ्कप्पे समुप्पज्जित्था—एवं खलु अहं वाणियगामे नयरे बहूणं राईसर जाव सयस्सवि य णं कुडुम्बस्स जाव आधारे, तं एएणं विक्खेवेणं अहं नो संचाएमि समणस्स भगवओ महावीरस्स अन्तियं धम्मपण्णत्तिं उवसम्पज्जित्ता णं विहरित्तए १। तं सेयं खलु ममं कल्लं जाव जलन्ते विउलं असणं जहा पूरणो जाव जेट्ठपुत्तं कुडुम्बे ठवेत्ता तं मित्तं जाव जेट्ठपुत्तं च आपुच्छित्ता कोल्लाए सन्निवेसे नायकुलंसि पोसहसालं पडिलेहित्ता समणस्स भगवओ महावीरस्स अन्तियं धम्मपण्णत्तिं उवसम्पज्जित्ता णं

विहरित्तए। एवं सम्पेहेइ २ कल्लं जाव जलंते विउलं तहेव जिमियभुत्तुत्तरागए तं मित्त जाव विउलेणं पुप्फ ५ सक्कारेइ सम्माणेइ २ तस्सेव मित्त जाव पुरओ जेट्ठपुत्तं सद्दावेइ २ एवं वयासी–एवं खलु पुत्ता! अहं वाणियगामे बहूणं राईसर जहा चिन्तियं जाव विहरित्तए, तं सेयं खलु मम इदाणिं तुमं सयस्स कुडुम्बस्स आलम्बणं ४ ठवेत्ता जाव विहरित्तए २। तए णं जेट्ठपुत्ते आणन्दस्स समणोवासगस्स तहत्ति एयमट्ठं विणएणं पडिसुणेइ, तए णं से आणन्दे समणोवासए तस्सेव मित्त जाव पुरओ जेट्ठपुत्तं कुडुम्बे ठवेइ २ एवं वयासी–मा णं देवाणुप्पिया! तुब्भे अज्जप्पभिई केई मम बहूसु कज्जेसु जाव आपुच्छउ वा पडिपुच्छउ वा ममं अट्ठाए असणं वा ४ उवक्खडेउ वा उवकरेउ वा ३। तए णं से आणन्दे समणोवासए जेट्ठपुत्तं मित्तनाइ आपुच्छइ २ सयाओ गिहाओ पडिणिक्खमइ २ वाणियगामं नयरं मज्झंमज्झेणं निग्गच्छइ २ जेणेव कोल्लाए सन्निवेसे जेणेव नायकुले जेणेव पोसहसाला तेणेव उवागच्छइ २ पोसहसालं पमज्जइ २ उच्चारपासवणभूमिं पडिलेहेइ २ दब्भसंथारयं संथरइ, दब्भसंथारयं दुरूहइ २ पोसहसालाए पोसहिए दब्भसंथारोवगए समणस्स भगवओ महावीरस्स अन्तियं धम्मपण्णत्तिं उवसम्पज्जित्ता णं विहरइ ४॥ सू० १२॥

तए णं से आणन्दे समणोवासए उवासगपडिमाओ उवसम्पज्जिता णं विहरइ, पढमं उवासगपडिमं अहासुत्तं अहाकप्पं अहामग्गं अहातच्चं सम्मं काएणं फासेइ, पालेइ सोहेइ तीरेइ कित्ते(ट्टे)इ आराहेइ १। तए णं से आणन्दे समणोवासए दोच्चं उवासगपडिमं एवं तच्चं चउत्थं पञ्चमं छट्ठं सत्तमं अट्ठमं नवमं दसमं एकारसमं जाव आराहेइ २॥ सू० १३॥

तए णं से आणन्दे समणोवासए इमेणं एयारूवेणं उरालेणं विउलेणं पयत्तेणं पग्गहियेणं तवोकम्मेणं सुक्के जाव किसे धमणिसन्तए जाए १। तए णं तस्स आणन्दस्स समणोवासगस्स अन्नया कयाई पुव्वरत्ता जाव

धम्मजागरियं जागरमाणस्स अयं अज्झत्थिए ४—एवं खलु अहं इमेणं जाव धमणिसन्तए जाए, तं अत्थि ता मे उट्ठाणे कम्मे बले वीरिए पुरिसकारपरक्कमे सद्धाधिइसंवेगे, तं जाव ता मे अत्थि उट्ठाणे सद्धाधिइसंवेगे जाव य मे धम्मायरिए धम्मोवएसए समणे भगवं महावीरे जिणे सुहत्थी विहरइ ताव ता मे सेयं कल्लं जाव जलन्ते अपच्छिममारणन्तिय-संलेहणा-भूसणाभूसियस्स भत्तपाणपडियाइक्खियस्स कालं अणवकङ्खमाणस्स विहरित्तए, एवं सम्पेहेइ २ त्ता कल्लं पाउ जाव अपच्छिममारणन्तिय जाव कालं अणवकङ्खमाणे विहरइ २। तए णं तस्स आणन्दस्स समणोवासगस्स अन्नया कयाई सुभेणं अज्झवसाणेणं सुभेणं (सोहणेणं) परिणामेणं लेसाहिं विसुज्भमाणीहिं तदावरणिज्जाणं कम्माणं खओवसमेणं ओहिनाणे समुप्पन्ने, पुरत्थिमेणं लवणसमुद्दे पञ्चजोयणसइयं खेत्तं जाणइ पासइ, एवं दक्खिणेणं पञ्चत्थिमेण य, उत्तरेणं जाव चुल्लहिमवन्तं वासधरपव्वयं जाणइ पासइ, उड्ढं जाव सोहम्मं कप्पं जाणइ पासइ, अहे जाव इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए लोलुयच्चुयं नरयं चउरासीइ-वाससहस्सट्ठिइयं जाणइ पासइ ३ ॥ सू० १४ ॥

ते णं काले णं ते णं समए णं समणे भगवं महावीरे समोसरिए, परिसा निग्गया, जाव पडिगया, ते णं काले णं ते णं समए णं समणस्स भगवओ महावीरस्स जेट्ठे अन्तेवासी इन्दभूई नामं अणगारे गोयमगोत्तेणं सत्तुस्सेहे समचउरंस-संठाणसंठिए वज्जरिसह-नारायसङ्घयणे कणग-पुलग-निघस-पम्हगोरे उग्गतवे दित्ततवे तत्ततवे घोरतवे महातवे उराले घोरगुणे घोरतवस्सी घोरबम्भचेरवासी उच्छूढसरीरे सङ्खित्त-विउल-तेउलेसे छट्ठं छट्ठेणं अणिक्खित्तेणं तवोकम्मेणं संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे विहरइ १। तए णं से भगवं गोयमे छट्ठक्खमणपारणगंसि पढमाए पोरिसीए सज्झायं करेइ बिइयाए पोरिसीए झाणं झायइ, तइयाए पोरिसीए अतुरियं अचवलं

असम्भन्ते मुहपत्तिं पडिलेहेइ २ त्ता भायणवत्थाइं पडिलेहेइ २ त्ता भायणवत्थाइं पमज्जइ २ त्ता भायणाइं उग्गाहेइ २ त्ता जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छइ २ त्ता समणं भगवं महावीरं वन्दइ नमंसइ २ त्ता एवं वयासी–इच्छामि णं भन्ते ! तुब्भेहिं अब्भणुराणाए छट्ठक्खमण-पारणगंसि वाणियगामे नयरे उच्चनीयमज्झिमाइं कुलाइं घरसमुदाणस्स भिक्खायरियाए अडित्तए, 'अहासुहं देवाणुप्पिया ! मा पडिबन्धं करेह' २ । तए णं भगवं गोयमे समणेणं भगवया महावीरेण अब्भणुराणाए समाणे समणस्स भगवओ महावीरस्स अन्तियाओ दूइपलासाओ चेइयाओ पडिणि-क्खमइ २ अतुरियमचलवमसम्भन्ते जुगन्तरपरिलोयणाए दिट्ठीए पुरओ ईरियं सोहेमाणे जेणेव वाणियगामे नयरे तेणेव उवागच्छइ २ वाणियगामे-नयरे उच्चनीयमज्झिमाइं कुलाइं घरसमुदाणस्स भिक्खायरियाए अडइ ३ । तए णं से भगवं गोयमे वाणियगामे नयरे जहा पराणत्तीए तहा जाव भिक्खायरियाए अडमाणे अहापज्जत्तं भत्तपाणं सम्मं पडिग्गाहेइ २ वाणियगामाओ पडिणि-ग्गच्छइ २ त्ता कोल्लायस्स सन्निवेसस्स अदूरसामन्तेणं वीईवयमाणे बहुजण-सद्दं निसामेइ, बहुजणो अन्नमन्नस्स एवमाइक्खइ ४–एवं खलु देवाणुप्पिया ! समणस्स भगवओ महावीरस्स अन्तेवासी आणन्दे नामं समणोवासए पोसहसालाए अपच्छिम जाव अणवकङ्खमाणे विहरइ ४ । तए णं तस्स गोयमस्स बहुजणस्स अन्तिए एयमट्ठं सोच्चा निसम्म अयमेयारूवे अज्झत्थिए ४–तं गच्छामि णं आणन्दं समणोवासयं पासामि, एवं सम्पेहेइ २ जेणेव कोल्लाए सन्निवेसे जेणेव आणन्दे समणोवासए जेणेव पोसहसाला तेणेव उवागच्छइ, तए णं से आणन्दे समणोवासए भगवं गोयमं एज्जमाणं पासइ २ त्ता हट्ठ जाव हियए, भगवं गोयमं वन्दइ नमंसइ २ त्ता एवं वयासी–एवं खलु भन्ते ! अहं इमेणं उरालेणं जाव धमणिसन्तए जाए, न संचाएमि देवाणुप्पियस्स अन्तियं पाउब्भवित्ता णं तिक्खुत्तो मुद्धाणेणं पाए

अभिवन्दित्तए, तुब्भे णं भन्ते ! इच्छाकारेणं अणभिओगेणं इओ चेव एह, जा णं देवाणुप्पियाणं तिक्खुत्तो मुद्धाणेणं पाएसु वन्दामि नमंसामि ५ । तए णं से भगवं गोयमे जेणेव आणन्दे समणोवासए तेणेव उवागच्छइ ६ ॥ सू० १५ ॥

तए णं से आणन्दे समणोवासए भगवओ गोयमस्स तिक्खुत्तो मुद्धाणेणं पाएसु वन्दइ नमंसइ २ त्ता एवं वयासी—अत्थि णं भन्ते ! गिहिणो गिहिमज्झावसन्तस्स ओहिनाणे समुप्पज्जइ ?, हन्ता अत्थि, जइ णं भन्ते ! गिहिणो जाव समुप्पज्जइ, एवं खलु भन्ते ! ममवि गिहिणो गिहिमज्झावसन्तस्स ओहिनाणे समुप्पन्ने—पुरत्थिमेणं लवणसमुद्दे पञ्च जोयणसयाइं जाव लोलुयच्चुयं नरयं जाणामि पासामि १ । तए णं से भगवं गोयमे आणंदं समणोवासयं एवं वयासी-अत्थि णं आणन्दा ! गिहिणो जाव समुप्पज्जइ, नो चेव णं ए(अ)महालए, तं णं तुमं आणन्दा ! एयस्स ठाणस्स आलोएहि जाव तवोकम्मं पडिवज्जाहि २ । तए णं से आणन्दे समणोवासए भगवं गोयमं एयं वयासी—अत्थि णं भन्ते ! जिणवयणे सन्ताणं तच्चाणं तहियाणं सब्भूयाणं भावाणं आलोइज्जइ जाव पडिवज्जिज्जइ ?, नो इणट्ठे समट्ठे, जइणं भन्ते ! जिणवयणे सन्ताणं जाव भावाणं नो आलोइज्जइ जाव तवोकम्मं नो पडिवज्जिज्जइ, तं णं भन्ते ! तुब्भे चेव एयस्स ठाणस्स आलोएह जाव पडिवज्जह ३ । तए णं से भगवं गोयमे आणन्देणं समणोवासएणं एवं वुत्ते समाणे सङ्किए कङ्खिए विइगिच्छा-समावन्ने आणन्दस्स अन्तियाओ पडिणिक्खमइ २ जेणेव दूइपलासे चेइए जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छइ २ समणस्स भगवओ महावीरस्स अदूरसामन्ते गमणागमणाए पडिक्कमइ २ एसणमणेसणं आलोएइ २ भत्तपाणं पडिदंसेइ २ त्ता समणं भगवं महावीरं वन्दइ नमंसइ २ त्ता एवं वयासी—एवं खलु भन्ते ! अहं तुब्भेहिं अब्भणुण्णाए

तं चेव सव्वं कहेइ जाव तए णं अहं संकिए ३ आणन्दस्स समणोवासगस्स अन्तियाओ पडिणिक्खमामि २ जेणेव इहं तेणेव हव्वमागए, तं णं भन्ते ! किं आणन्देणं समणोवासएणं तस्स ठाणस्स आलोएयव्वं जाव पडिवज्जेयव्वं उदाहु मए ?, गोयमा इ समणे भगवं महावीरे भगवं गोयमं एवं वयासी--गोयमा ! तुमं चेव णं तस्स ठाणस्स आलोएहि जाव पडिवज्जाहि, आणन्दं च समणोवासयं एयमट्ठं खामेहि ४ । तए णं से भगवं गोयमे समणस्स भगवओ महावीरस्स तहत्ति एयमट्ठं विणएणं पडिसुणेइ २ त्ता तस्स ठाणस्स आलोएइ जाव पडिवज्जइ, आणन्दं च समणोवासयं एयमट्ठं खामेइ ५ । तए णं समणे भगवं महावीरे अन्नया कयाई बहिया जणवयविहारं विहरइ ६ ॥ सू० १६ ॥

तए णं से आणन्दे समणोवासए बहूहिं सीलव्वएहिं जाव अप्पाणं भावेत्ता वीसं वासाइं समणोवासगपरियागं पाउणित्ता एक्कारस य उवासगपडिमाओ सम्मं काएणं फासित्ता मासियाए संलेहणाए अत्ताणं झूसित्ता सट्ठिं भत्ताइं अणसणाए छेदेत्ता आलोइयपडिक्कन्ते समाहिपत्ते कालमासे कालं किच्चा सोहम्मे कप्पे सोहम्मवडिंसगस्स महाविमाणस्स उत्तरपुरच्छिमेणं अरुणे विमाणे देवत्ताए उववन्ने १ । तत्थ णं अत्थेगइयाणं देवाणं चत्तारि पलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता, तत्थ णं आणन्दस्सवि देवस्स चत्तारि पलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता २ । आणन्दे भन्ते ! देवे ताओ देवलोगाओ आउक्खएणं ३ अणन्तरं चयं चइत्ता कहिं गच्छिहिइ कहिं उववज्जिहिइ ?, गोयमा ! महाविदेहे वासे सिज्झिहिइ ३ । निक्खेवो ॥ सू० १७ ॥ सत्तमस्स अङ्गस्स उवासगदसाणं पढमं अज्झयणं समत्तं ॥

॥ इति प्रथमध्ययनम् ॥ १ ॥

—:०:—

॥२॥ अथ श्रीकामदेवाख्यं द्वितीयमध्ययनम् ॥

जइ णं भन्ते ! समणेणं भगवया महावीरेणं जाव सम्पत्तेणं सत्तमस्स अङ्गस्स उवासगदसाणं पढमस्स अज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते, दोच्चस्स णं भन्ते ! अज्झयणस्स के अट्ठे पण्णत्ते ?, एवं खलु जम्बू ! तेणं कालेणं तेणं समएणं चम्पा नामं नयरी होत्था, पुण्णभद्दे चेइए, जियसत्तू राया, कामदेवे गाहावई, भद्दा भारिया, छ हिरण्णकोडीओ निहाणपउत्ताओ, छ वुड्ढिपउत्ताओ, छ पवित्थरपउत्ताओ, छ वया दसगोसाहस्सिएणं वएणं १। समोसरणं, जहा आणन्दो तहा निग्गओ, तहेव सावयधम्मं पडिवज्जइ, सा चेव वत्तव्वया जाव जेट्ठपुत्तं मित्तनाइं आपुच्छित्ता जेणेव पोसहसाला तेणेव उवागच्छइ २ जहा आणन्दो जाव समणस्स भगवओ महावीरस्स अन्तियं धम्मपण्णत्तिं उवसम्पज्जित्ता णं विहरइ २ ॥ सू० १८ ॥

तए णं तस्स कामदेवस्स समणोवासगस्स पुव्वरत्तावरत्तकालसमयंसि एगे देवे मायी मिच्छद्दिट्ठी अन्तियं पाउब्भूए, तए णं से देवे एगं महं पिसायरूवं विउव्वइ, तस्स णं देवस्स पिसायरूवस्स इमे एयारूवे वण्णावासे पण्णत्ते— सीसं से गोकिलञ्ज-संठाणसंठियं (विगय-कप्पयनिभं वियड-कोप्परनिभं) सालिभ-सेलसरिसा से केसा कविलतेएणं दिप्पमाणा महल्ल-उट्टियाकभल्ल-संठाणसंठियं (महल्ल-उट्टियाकभल्ल-सरिसोवमं) निडालं मुगुंसपुंछं व तस्स भुमगाओ फुग्गफुग्गाओ (जडिलकुजडिलाओ) विगयबीभच्छ-दंसणाओ सीसघडि-विणिग्गयाइं अच्छीणि विगय-बीभच्छदंसणाइं कण्णा जह सुप्प-कत्तरं चेव विगय-बीभच्छदंसणिज्जा, उरब्भपुड-सन्निभा (हुरब्भपुड-संठाण-संठिया) से नासा, झुसिरा जमल-चुल्ली-संठाणसंठिया दोवि तस्स नासा पुडया (महल्ल-कुब्बसंठिया दोवि से कपोला) घोडयपुंछं व तस्स मंसूइं कविलकविलाइं विगय-बीभच्छदंसणाइं, (घोडयपुछं व तस्स कविलफरुसाओ उद्धलोमाओ दाढियाओ) उट्ठा उट्टस्स चेव लम्बा (उट्ठा से घोडगस्स जहा

दोऽवि लंबमाणा) फालसरिसा से दन्ता (हिङ्गुलुय-धाउकन्दरबिलं व तस्स वयणं), जिब्भा जहा सुप्पकत्तरं चेव विगय-बीभच्छ-दंसणिज्जा, हलकुद्दाल-संठिया से हणुया, गल्लकडिल्लं व तस्स खड्डं फुट्टं कविलं फरुसं महल्लं, मुइङ्गा-कारोवमे से खन्धे, पुरवरकवाडोवमे से वच्छे, कोट्ठियासंठाणसंठिया दोऽवि तस्स बाहा, निसापाहाण-संठाणसंठिया दोऽवि तस्स अग्गहत्था, निसा-लोढ-संठाणसंठियाओ हत्थेसु अङ्गुलीओ सिप्पिपुडगसंठिया से नक्खा (अडया-लग-संठिओ उरो तस्स रोमगुविलो) ण्हावियपसेवओ व्व उरंसि लम्बन्ति दोऽवि तस्स थणया, पोट्टं अयकोट्ठओ व्व वट्टं, पाणकलन्दसरिसा से नाही, (भग्गकडी विगयवंकपट्ठी असरिसा देवि तस्स फिसगा), सिक्कग-संठाणसंठिया से नेत्ते, किण्णपुड-संठाणसंठिया दोऽवि तस्स वसणा, जमलकोट्ठिया संठाण-संठिया दोवि तस्स ऊरू, अज्जुणगुट्ठं व तस्स जाणूइं कुडिलकुडिलाइं विगयबीभच्छ-दंसणाइं, जङ्घाओ कक्खडीओ लोमेहिं उवचियाओ, अहरीलोढ-संठाणसंठिया दोऽवि तस्स पाया, अहरीलोढ-संठाणसंठियाओ पाएसु अङ्गुलीओ, सिप्पि-पुडसंठिया से नक्खा लडहमडहजाणुए विगयभग्ग-भुग्गभुमए (मसि-मुसग-महिसकालए भरिय मेहवण्णे लम्बोट्ठे निग्गयदन्ते) अवदालिय-वयणविवर-निल्लालियग्गजीहे सरडकय-मालियाए उन्दुरमाला-परिणद्ध-सुकयचिंधे नउल-कयकण्णपूरे सप्पकय-वेगच्छे (मूसगकय-भुंभलए विच्छुय-कय-वेगच्छे सप्पकय-जण्णोवइए, अभिन्न-मुहनयण-नक्ख-वरवग्घ-चित्तकत्ति-नियंसणे सरस-रुहिर-मंसावलित्तगत्ते) अप्फोडन्ते अभिगज्जन्ते भीम-मुक्कट्टट्ट-हासे नाणाविह-पञ्चवण्णेहिं लोमेहिं उवचिए एगं महं नीलुप्पल-गवलगु-लिय-अयसि-कुसुमप्पगासं असिं खुरधारं गहाय जेणेव पोसहसाला जेणेव कामदेवे समणोवासए तेणेव उवागच्छइ २ आसुरत्ते रुट्ठे कुविए चण्डि-क्किए मिसिमिसीयमाणे कामदेवं समणोवासयं एवं वयासी—हं भो कामदेवा

समणोवासया अप्पत्थियपत्थिया दुरन्तपन्त-लक्खणा हीणपुराण-चाउद्दसिया सिरिहिरि-सिरिधिइ-कित्तिपरिवज्जिया ! धम्मकामया पुराणकामया सग्ग-कामया मोक्खकामया धम्मकङ्खिया पुराणकङ्खिया सग्गकङ्खिया मोक्खकङ्खिया धम्मपिवासिया पुराणपिवासिया सग्गपिवासिया मोक्खपिवासिया ! नो खलु कप्पइ तव देवाणुप्पिया ! जं सीलाइं वयाइं वेरमणाइं पच्चक्खाणाइं पोसहो-ववासाइं चालित्तए वा खोभित्तए वा खण्डित्तए वा भञ्जित्तए वा उज्झितए वा परिचइत्तए, वा, तं जइ णं तुमं अज्ज सीलाइं जाव पोसहोववासाइं न छड्डेसि न भंजेसि तो ते अहं अज्ज इमेणं नीलुप्पल जाव असिणा खण्डाखण्डि करेमि, जहा णं तुमं देवाणुप्पिया ! अट्टदुहट्टवसट्टे अकाले चेव जीवियाओ ववरोविज्जसि, तए णं से कामदेवे समणोवासए तेणं देवेणं पिसायरूवेणं एवं वुत्ते समाणे अभीए अतत्थे अणुव्विग्गे अक्खुभिए अचलिए असम्भन्ते तुसिणीए धम्मज्झाणोवगए विहरइ ॥ सूत्रं १९ ॥

तए णं से देवे पिसायरूवे कामदेवं समणोवासयं अभीयं जाव धम्म-झाणोवगयं विहरमाणं पासइ २ दोच्चंपि तच्चंपि कामदेवं एवं वयासी—हं भो कामदेवा ! समणोवासया अपत्थियपत्थिया, जइ णं तुमं अज्ज जाव ववरोविज्जसि, तए णं से कामदेवे समणोवासए तेणं देवेणं दोच्चंपि तच्चंपि एवं वुत्ते समाणे अभीए जाव धम्मज्झाणोवगए विहरइ, तए णं से देवे पिसायरूवे कामदेवं समणोवासयं अभीयं जाव विहरमाणं पासइ २ आसुरुत्ते रूट्ठे कुविए चण्डिकिए मिसिमिसियमाणे तिवलियं भिउडिं निडाले साहट्टु कामदेवं समणोवासयं नीलप्पल जाव असिणा खण्डाखण्डि करेइ, तए णं से कामदेवे समणोवासए तं उज्जलं जाव दुरहियासं वेयणं सम्मं सहइ जाव अहियासेइ ॥ सूत्रं २० ॥

तए णं से देवे पिसायरूवे कामदेवं समणोवासयं अभीयं जाव विह-रमाणं पासइ २ जाहे नो संचाएइ कामदेवं समणोवासयं निग्गन्थाओ पाव-

यणाओ चालित्तए वा खोभित्तए वा विपरिणामित्तए वा ताहे सन्ते तन्ते परितन्ते सणियं सणियं पच्चोसक्कइ २ त्ता पोसहसालाओ पडिणिक्खमइ २ दिव्वं पिसायरूवं विप्पजहइ २ एगं महं दिव्वं हत्थिरूवं विउव्वइ १। सत्तङ्गपइट्ठियं सम्मं संठियं सुजायं पुरओ उदग्गं पिट्ठओ वराहं अयाकुच्छिं अलम्बकुच्छिं पलम्ब-लम्बोदराधर-करं अब्भुग्गय-मउल-मल्लियाविमल-धवल-दन्तं कञ्चणकोसी-पविट्ठदन्तं आणामिय-चावललिय-संविल्लियग्गसोण्डं कुम्म-पडिपुण्णचलणं वीसइनक्खं अल्लीणपमाणजुत्तपुच्छं मत्तं मेहमिव गुलगुलेन्तं मणपवणजइणवेगं दिव्वं हत्थिरूवं विउव्वइ २ जेणेव पोसहसाला जेणेव कामदेवे समणोवासए तेणेव उवागच्छइ २ कामदेवं समणोवासयं एवं वयासी–हं भो कामदेवा ! समणोवासया तहेव भणइ जाव न भंजेसि तो ते अज्ज अहं सोण्डाए गिण्हामि २ पोसहसालाओ नीणेमि २ उड्ढं वेहासं उव्विहामि २ तिक्खेहिं दन्तमुसलेहिं पडिच्छामि २ अहे धरणि-तलंसि तिक्खुत्तो पाएसु लोलेमि जहा णं तुमं अट्टदुहट्टवसट्टे अकाले चेव जीवियाओ ववरोविज्जसि, तए णं से कामदेवे समणोवासए तेणं देवेणं हत्थिरूवेणं एवं वुत्ते समाणे अभीए जाव विहरइ २। तए णं से देवे हत्थिरूवे कामदेवं समणोवासयं अभीयं जाव विहरमाणं पासइ २ दोच्चंपि तच्चंपि कामदेवं समणोवासयं एवं वयासी–हं भो कामदेवा ! तहेव जाव सोऽवि विहरइ, तए णं से देवे हत्थिरूवे कामदेवं समणोवासयं अभीयं जाव विहरमाणं पासइ २ आसुरुत्ते ४ कामदेवं समणोवासयं सोण्डाए गिण्हेइ २ उड्ढं वेहासं उव्विहइ २ तिक्खेहिं दन्तमुसलेहिं पडिच्छइ २ अहे धरणितलंसि तिक्खुत्तो पाएसु लोलेइ, तए णं से कामदेवे समणो-वासए तं उज्जलं जाव अहियासेइ ३ ॥ सूत्रं २१ ॥

तए णं से देवे हत्थिरूवे कामदेवं समणोवासयं जाहे नो संचाएइ जाव सणियं सणियं पच्चोसक्कइ २ पोसहसालाओ पडिणिक्खमइ २ दिव्वं हत्थिरूवं

विप्पजहइ २ एगं महं दिव्वं सप्परूवं विउव्वइ उग्गविसं चण्डविसं घोरविसं महाकायं मसी-मूसाकालगं नयणविस-रोसपुण्णं अंजणपुंज-निगर-प्पगासं रत्तच्छं लोहियलोयणं जमल-जुयल-चञ्चलजीहं धरणीयल-वेणिभूयं उक्कड-फुडकुडिल--जडिल--कक्कसवियड--फडाडोव--करणदच्छं लोहागर--धम्ममाण-धमधमेन्तघोसं अणागलिय-तिव्वचण्डरोसं सप्परूवं विउव्वइ २ जेणेव पोसहसाला जेणेव कामदेवे समणोवासए तेणेव उवागच्छइ २ कामदेवं समणोवासयं एवं वयासी—हं भो कामदेवा ! समणोवासया जाव न भंजेसि तो ते अज्जेव अहं सरसरस्स कायं दुरूहामि २ पच्छिमेणं भाएणं तिक्खुत्तो गीवं वेढेमि २ तिक्खाहिं विसपरिगयाहिं दाढाहिं उरंसि चेव निकुट्टेमि जहा णं तुमं अट्टदुहट्ट-वसट्टे अकाले चेव जीवियाओ ववरोविज्जसि १। तए णं से कामदेवे समणोवासए तेणं देवेणं सप्परूवेणं एवं वुत्ते समाणे अभीए जाव विहरइ, सोऽवि दोच्चंपि तच्चंपि भणइ, कामदेवोऽवि जाव विहरइ २। तए णं से देवे सप्परूवे कामदेवं समणोवासयं अभीयं जाव पासइ २ आसुरुत्ते ४ कामदेवस्स समणोवासयस्स सरसरस्स कायं दुरूहइ २ पच्छिमभाएणं तिक्खुत्तो गीवं वेढेइ २ तिक्खाहिं विसपरिगयाहिं दाढाहिं उरंसि चेव निकुट्टेइ, तए णं से कामदेवे समणोवासए तं उज्जलं जाव अहियासेइ ३ ॥ सूत्रं २२ ॥

तए णं से देवे सप्परूवे कामदेवं समणोवासयं अभीयं जाव पासइ २ जाहे नो संचाएइ कामदेवं समणोवासयं निग्गन्थाओ पावयणाओ चालित्तए वा खोभित्तए वा विपरिणामित्तए वा ताहे सन्ते ३ सणियं सणियं पच्चोसक्कइ पोसहसालाओ पडिणिक्खमइ २ त्ता दिव्वं सप्परूवं विप्पजहइ २ एगं महं दिव्वं देवरूवं विउव्वइ १। हारविराइयवच्छं जाव दस दिसाओ उज्जोवेमाणं पभासेमाणं पासाईयं दरिसणिज्जं अभिरूवं पडिरूवं दिव्वं देवरूवं विउव्वइ २ कामदेवस्स समणोवासयस्स पोसहसालं अणुप्पविसइ २ अन्तलिक्खपडिवन्ने सखिङ्खि-

णियाइं पञ्चवराणाइं वत्थाइं पवरपरिहिए कामदेवं समणोवासयं एवं वयासी—"हं भो कामदेवा समणोवासया ! धन्ने सि णं तुमं देवाणुप्पिया ! सपुरणे कयत्थे कयलक्खणे सुलद्धे णं तव देवाणुप्पिया ! माणुस्सए जम्मजीवियफले, जस्स णं तव निग्गन्थे पावयणे इमेयारूवा पडिवत्ती लद्धा पत्ता अभिसमन्नागया २। एवं खलु देवाणुप्पिया ! सक्के देविन्दे देवराया जाव सक्कंसि सीहासणंसि चउरासीईए सामाणियसाहस्सीणं जाव अन्नेसिं च बहूणं देवाण य देवीण य मज्झगए एवमाइक्खइ ४—एवं खलु देवाणुप्पिया ! जम्बुद्दीवे दीवे भारहे वासे चम्पाए नयरीए कामदेवे समणोवासये पोसहसालाए पोसहिय(ए)बम्भचारी जाव दब्भसंथारोवगए समणस्स भगवओ महावीरस्स अन्तियं धम्मपराणत्तिं उवसम्पज्जित्ता णं विहरइ ३। नो खलु से सक्को केणई देवेण वा दाणवेण वा जाव गन्धव्वेण वा निग्गन्थाओ पावयणाओ चालित्तए वो खोभित्तए वा विपरिणामित्तए वा, तए णं अहं सक्कस्स देविन्दस्स देवरराणो एयमट्ठं असद्दहमाणे ३ इहं हव्वमागए, तं अहो णं देवाणुप्पिया ! इड्ढी ६ लद्धा ३, तं दिट्ठा णं देवाणुप्पिया ! इड्ढी जाव अभिसमन्नागया, तं खामेमि णं देवाणुप्पिया ! खमन्तु मज्झ देवाणुप्पिया ! खमन्तुमरहन्ति णं देवाणुप्पिया नाइं भुज्जो करणयाएत्ति कट्टु पायवडिए पञ्जलिउडे एयमट्ठं भुज्जो भुज्जो खामेइ २ जामेव दिसं पाउब्भूए तामेव दिसं पडिगए, तए णं से कामदेवे समणोवासए निरुवसग्गं तिकट्टु पडिमं पारेइ ४ ॥ सू० २३ ॥

ते णं काले णं ते णं समए णं समणे भगवं महावीरे जाव विहरइ १। तए णं से कामदेवे समणोवासए इमीसे कहाए जाव लद्धट्ठे समाणे एवं खलु समणे भगवं महावीरे जाव विहरइ, तं सेयं खलु मम समणं भगवं महावीरं वन्दित्ता नमंसित्ता तओ पडिणियत्तस्स पोसहं पारित्तएत्तिकट्टु एवं सम्पेहेइ २ सुद्धप्पावेसाइं वत्थाइं जाव अप्पमहग्घ जाव मणुस्सवग्गुरा-

परिक्खित्ते सयाओ गिहाओ पडिणिक्खमइ २ चम्पं नगरिं मज्झंमज्झेणं निग्गच्छइ २ जेणेव पुण्णभद्दे चेइए जहा सङ्खो जाव पज्जुवासइ २। तए णं समणे भगवं महावीरे कामदेवस्स समणोवासयस्स तीसे य जाव धम्मकहा समत्ता ३ ॥ सू० २४ ॥

कामदेवाइ ! समणे भगवं महावीरे कामदेवं समणोवासयं एवं वयासी–से नूणं कामदेवा तुब्भं पुव्वरत्तावरत्तकालसमयंसि एगे देवे अन्तिए पाउब्भूए, तए णं से देवे एगं महं दिव्वं पिसायरूवं विउव्वइ २ आसुरुत्ते ४ एगं महं नीलुप्पल जाव असिं गहाय तुमं एवं वयासी–हं भो कामदेवा ! जाव जीवियाओ ववरोविज्जसि, तं तुमं तेणं देवेणं एवं वुत्ते समाणे अभीए जाव विहरसि, एवं वण्णगरहिया तिण्णिवि उवसग्गा तहेव पडिउच्चारेयव्वा जाव देवो पडिगओ, से नूणं कामदेवा ! अट्ठे समट्ठे ?, हन्ता, अत्थि, अज्जो इ, १। समणे भगवं महावीरे बहवे समणे निग्गन्थे य निग्गन्थीओ य आमन्तेत्ता एवं वयासी–जइ ताव अज्जो ! समणोवासगा गिहिणो गिहमज्झावसन्ता दिव्वमाणुसतिरिक्खजोणिए उवसग्गे सम्मं सहन्ति जाव अहियासेन्ति, सक्का पुणाइं अज्जो ! समणेहिं निग्गन्थेहिं दुवालसङ्गं गणिपिडगं अहिज्जमाणेहिं दिव्वमाणुस्सतिरिक्ख-जोणिए सम्मं सहित्तए जाव अहियासित्तए, तओ ते बहवे समणा निग्गन्था य निग्गथीओ य समणस्स भगवओ महावीरस्स तहत्ति एयमट्ठं विणएणं पडिसुणन्ति २। तए णं से कामदेवे समणोवासए हट्ठ जाव समणं भगवं महावीरं पसिणाइं पुच्छइ अट्ठमादियइ, समणं महावीरं तिक्खुत्तो वन्दइ नमंसइ २ जामेव दिसिं पाउब्भूए तामेव दिसिं पडिगए ३। तए णं समणे भगवं महावीरे अन्नया कयाइ चम्पाओ पडिणिक्खमइ २ बहिया जणवयविहारं विहरइ ४ ॥ सू० २५ ॥

तए णं से कामदेवे समणोवासए पढमं उवासगपडिमं उवसम्पज्जित्ताणं

विहरइ १। तए णं से कामदेवे समणोवासए बहूहिं जाव भावेत्ता वीसं वासाइं समणोवासगपरियागं पाउणित्ता एक्कारस उवासगपडिमाओ सम्मं काएणं फासेत्ता मासियाए संलेहणाए अप्पाणं झूसित्ता सट्ठिं भत्ताइं अणसणाए छेदेत्ता आलोइय-पडिक्कन्ते समाहिपत्ते कालमासे कालं किच्चा सोहम्मे कप्पे सोहम्मवडिंसयस्स महाविमाणस्स उत्तरपुरच्छि(त्थि)मेणं अरुणाभे विमाणे देवत्ताए उववन्ने २। तत्थ णं अत्थेगइयाणं देवाणं चत्तारि पलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता कामदेवस्स वि देवस्स चत्तारि पलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता, से णं भन्ते! कामदेवे ताओ देवलोगाओ आउक्खएणं भवक्खएणं ठिइक्खएणं अणन्तरं चयं चइत्ता कहिं गमिहिइ कहिं उववज्जिहिइ? गोयमा! महाविदेहे वासे सिज्झिहिइ ३। निक्खेवो ॥ सू० २६ ॥
॥ सत्तमस्स अङ्गस्स उवासगदसाणं बीयं अज्झयणं समत्तं ॥

॥ इति द्वितीयमध्ययनम् ॥ २ ॥

॥३॥ अथ श्री चुलनीपितृनामकं तृतीयमध्ययनम् ॥

उक्खेवो तइयस्स अज्झयणस्स–एवं खलु जम्बू! तेणं कालेणं तेणं समएणं वाणारसी नामं नयरी, कोट्ठए (महा-कामवणे) चेइए जियसत्तू राया १। तत्थ णं वाणारसीए नगरीए चुलणीपिया नामं गाहावई परिवसइ, अड्ढे जाव अपरिभूए, सामा भारिया २। अट्ठ हिरण्णकोडीओ निहाणपउत्ताओ अट्ठ वुड्ढिपउत्ताओ अट्ठ पवित्थरपउत्ताओ अट्ठ वया दसगोसाहस्सिएणं वएणं जहा आणन्दो राईसर जाव सव्वकज्जवट्टावए यावि होत्था, ३। सामी समोसढे, परिसा निग्गया, चुलणीपियावि जहा आणन्दो तहा निग्गओ, तहेव गिहिधम्मं पडिवज्जइ, गोयमपुच्छा तहेव सेसं जहा कामदेवस्स जाव पोसहसालाए पोसहिए बम्भचारी समणस्स भगवओ महावीरस्स अन्तियं धम्मपण्णत्तिं उवसम्पज्जित्ता णं विहरइ ४॥ सू० २७॥

तए णं तस्स चुलणीपियस्स समणोवासयस्स पुव्वरत्तावरत्तकालसमयंसि एगे देवे अन्तियं पाउब्भूए १। तए णं से देवे एगं नीलुप्पल जाव असिं गहाय चुलणीपियं समणोवासयं एवं वयासी—हं भो चुलणीपिया! समणोवासया जहा कामदेवो जाव न भंजेसि तो ते अहं अज्ज जेट्ठं पुत्तं साओ गिहाओ नीणेमि २ तव अग्गओ घाएमि २ तओ मंससोल्ले(ल्लए) करेमि २ आदाणभरियंसि कडाहयंसि अद्दहेमि २ तव गायं मंसेण य सोणिएण य आयञ्चामि, जहा णं तुमं अट्टदुहट्टवसट्टे अकाले चेव जीवियाओ ववरोविज्जसि २। तए णं से चुलणीपिया समणोवसाए तेणं देवेणं एवं वुत्ते समाणे अभीए जाव विहरइ ३। तए णं से देवे चुलणीपियं समणोवासयं अभीयं जाव पासइ २ दोच्चंपि तच्चंपि चुलणीपियं समणोवासयं एवं वयासी—हं भो चुलणीपिया समणोवासया! तं चेव भणइ, सो जाव विहरइ ४। तए णं से देवे चुलणीपियं समणोवासयं अभीयं जाव पासित्ता आसुरुत्ते ४ चुलणीपियस्स समणोवासयस्स जेट्ठं पुत्तं गिहाओ नीणेइ २ त्ता अग्गओ घाएइ २ तओ मंससोल्लए करेइ २ आदाणभरियंसि कडाहयंसि अद्दहेइ २ चुलणीपियस्स समणोवासयस्स गायं मंसेण य सोणियेण य आयञ्चइ ५। तए णं से चुलणीपिया समणोवासए तं उज्जलं जाव अहियासेइ, तए णं से देवे चुलणीपियं समणोवासयं अभीयं जाव पासइ २ दोच्चंपि तच्चंपि चुलणीपियं समणोवासयं एवं वयासी—हं भो चुलणीपिया समणोवासया! अपत्थियपत्थया जाव न भंजेसि तो ते अहं अज्ज मज्झिमं पुत्तं साओ गिहाओ नीणेमि २ तव अग्गओ घाएमि जहा जेट्ठं पुत्तं तहेव भणइ तहेव करेइ, एवं तच्चंपि कणीयसं जाव अहियासेइ ६। तए णं से देवे चुलणीपियं समणोवासयं अभीयं जाव पासइ २ चउत्थंपि चुलणीपियं समणोवासयं एवं वयासी—"हं भो चुलणीपिया! समणोवासया! अपत्थियपत्थया! ४ जइ णं तुमं जाव न भञ्जेसि तओ अहं अज्ज जा इमा तव

माया भद्दा सत्थवाही देवयगुरुजणणी दुक्करदुक्करकारिया तं ते साओ गिहाओ नीणेमि २ तव अग्गओ घाएमि २ तओ मंससोल्लए करेमि २ आदा(अद्दह)णभरियंसि कडाहयंसि अद्दहेमि २ तव गायं मंसेण य सोणिएण य आयञ्चामि जहा णं तुमं अट्टदुहट्टवसट्टे अकाले चेव जीवियाओ ववरोविज्जसि, तए णं से चुलणीपिया समणोवासए तेणं देवेणं एवं वुत्ते समाणे अभीए जाव विहरइ ७। तए णं से देवे चुलणीपियं समणोवासयं अभीयं जाव विहरमाणं पासइ २ चुलणीपियं समणोवासयं दोच्चंपि तच्चंपि वयासी–हं भो चुलणीपिया समणोवासया ! तहेव जाव ववरोविज्जसि ८। तए णं तस्स चुलणीपियस्स समणोवासयस्स तेणं देवेणं दोच्चंपि तच्चंपि एवं वुत्तस्स समाणस्स इमेयारूवे अज्झत्थिए ५–अहो णं इमे पुरिसे अणारिए अणारियबुद्धी अणारियाइं पावाइं कम्माइं समायरइ, जेणं ममं जेट्ठं पुत्तं साओ गिहाओ नीणेइ २ मम अग्गओ घाएइ २ जहा कयं तहा चिन्तेइ जाव गायं आयञ्चइ, जेणं ममं मज्झिमं पुत्तं साओ गिहाओ जाव सोणिएण य आयञ्चइ, जेणं ममं कणीयसं पुत्तं साओ गिहाओ तहेव जाव आयञ्चइ, जाऽवि य णं इमा मम माया भद्दा सत्थवाही देवयगुरुजणणी दुक्करदुक्करकारिया तंपि य णं इच्छइ साओ गिहाओ नीणेत्ता मम अग्गओ घाएत्तए, तं सेयं खलु ममं एयं पुरिसं गिण्हित्तएत्ति कट्टु उद्धाइए ९। सेऽवि य आगासे उप्पइए, तेणं च खम्भे आसाइए, महया महया सद्देणं कोलाहले कए, तए णं सा भद्दा सत्थवाही तं कोलाहलसद्दं सोच्चा निसम्म जेणेव चुलणीपिया समणोवासए तेणेव उवागच्छइ २ चुलणीपियं समणोवासयं एवं वयासी–किण्णं पुत्ता ! तुमं महया महया सद्देणं कोलाहले कए ?, १०। तए णं से चुलणीपिया समणोवासए अम्मयं भद्दं सत्थवाहिं एवं वयासी–एवं खलु अम्मो ! न जाणामि केवि पुरिसे आसुरुत्ते ५ एगे महं नीलुप्पल जाव असिं गहाय ममं एवं वयासी–हं भो चुलणी-

पिया समणोवासया ! अपत्थियपत्थया ४ जइ णं तुमं जाव ववरोविज्जसि, तए णं अहं तेणं पुरिसेणं एवं वुत्ते समाणे अभीए जाव विहरामि, तए णं से पुरिसे ममं अभीयं जाव विहरमाणं पासइ २ ममं दोच्चंपि तच्चंपि एवं वयासी–हं भो चुलणीपिया समणोवासया ! तहेव जाव गायं आयञ्चइ, तए णं अहं तं उज्जलं जाव अहियासेमि, एवं तहेव उच्चारेयव्वं सव्वं जाव कणीयसं जाव आयञ्चइ, अहं तं उज्जलं जाव अहियासेमि, तए णं से पुरिसे ममं अभीयं जाव पासइ २ मम चउत्थंपि एवं वयासी–हं भो चुलणीपिया समणोवासया ! अपत्थियपत्थया जाव न भञ्जसि तो ते अज्ज जा इमा माया गुरु जाव ववरोविज्जसि, तए णं अहं तेणं पुरिसेणं एवं वुत्ते समाणे अभीए जाव विहरामि, तए णं से पुरिसे दोच्चंपि तच्चंपि ममं एवं वयासी–हं भो चुलणीपिया समणोवासया ! अज्ज जाव ववरोविज्जसि, तए णं तेणं पुरिसेणं दोच्चंपि तच्चंपि ममं एवं वुत्तस्स समाणस्स इमेयारूवे अज्झत्थिए ५ अहो णं इमे पुरिसे अणारिए जाव समायरइ, जेणं ममं जेट्ठं पुत्तं साओ गिहाओ तहेव जाव कणीयसं जाव आयञ्चइ, तुब्भेऽवि य णं इच्छइ साओ गिहाओ नीणेत्ता मम अग्गओ घाएत्तए, तं सेयं खलु ममं एयं पुरिसं गिण्हित्तएत्तिकट्टु उद्धाइए, सेऽवि य आगासे उप्पइए, मएऽवि य खम्भे आसाइए महया महया सद्देणं कोलाहले कए ११ । तए णं सा भद्दा सत्थवाही चुलणीपियं समणोवासयं एवं वयासी–नो खलु केई पुरिसे तव जाव कणीयसं पुत्तं साओ गिहाओ निणेइ २ तव अग्गओ घाएइ एस णं केइ पुरिसे तव उवसग्गं करेइ, एस णं तुमे विदरिसणे, दिट्ठे, तं णं तुमं इयाणिं भग्गव्वए भग्गनियमे भग्गपोसहे विहरसि, तं णं तुमं पुत्ता ! एयस्स ठाणस्स आलोएहि जाव पडिवज्जाहि, तए णं से चुलणीपिया समणोवासए अम्मगाए भद्दाए सत्थवाहीए तहत्ति एयमट्ठं विणएणं पडिसुणेइ २ त्ता तस्स ठाणस्स आलोएइ जाव पडिवज्जइ १२ ॥ सू० २८ ॥

तए णं से चुलणीपिया समणोवासए पढमं उवासगपडिमं उवसम्पज्जित्ता णं विहरइ, पढमं उवासगपडिमं अहासुत्तं जहा आणन्दो जाव एकारसवि, तए णं से चुलणीपिया समणोवासए तेणं उरालेणं जहा कामदेवो जाव सोहम्मे कप्पे सोहम्मवडिंसगस्स महाविमाणस्स उत्तरपुरच्छिमेणं अरुणप्पभे विमाणे देवत्ताए उववन्ने । चत्तारि पलिओवमाइं ठिई पराणत्ता । महाविदेहे वासे सिज्झिहिइ ५ ॥ निक्खेवो ॥ सू० २१ ॥ ॥ सत्तमस्स अङ्गस्स उवासगदसाणं तइयं अज्झयणं समत्तं ॥

॥ इति तृतीयमध्ययनम् ॥ ३ ॥

॥४॥ अथ श्री सुरादेवाख्यं चतुर्थमध्ययनम् ॥

उक्खेवओ चउत्थस्स अज्झयणस्स, एवं खलु जम्बू ! ते णं काले णं ते णं समए णं वाणारसी नामं नयरी, कोट्ठए (महाकामववणे) चेइए, जियसत्तू राया, सुरादेवे गाहावई अड्ढे छ हिरराणकोडीओ जाव छ वया दसगोसाहस्सिएणं वएणं धन्ना भारिया, सामी समोसढे, जहा आणन्दो तहेव पडिवज्जइ गिहिधम्मं, जहा कामदेवो जाव समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतिअं धम्मपराणत्तिं उवसम्पज्जित्ताणं विहरइ ॥ सू० ३० ॥

तए णं तस्स सुरादेवस्स समणोवासयस्स पुव्वरत्तावरत्तकालसमयंसि एगे देवे अन्तियं पाउब्भवित्था, से देवे एगं महं नीलुप्पल जाव असिं गहाय सुरादेवं समणोवासयं एवं वयासी—हं भो सुरादेवा समणोवासया ! अपत्थियपत्थिया ४ जइ णं तुमं सीलाइं जाव न भञ्जसि तो ते जेट्ठं पुत्तं साओ गिहाओ नीणेमि २ तव अग्गओ घाएमि २ पञ्च पञ्च सोल्लए करेमि २ आदाणभरियंसि कडाहयंसि अद्दहेमि २ तव गायं मंसेण य सोणिएण य आयञ्चामि जहा णं तुमं अकाले चेव जीवियाओ ववरोविज्जसि, एवं मज्झिमयं, कणीयसं, एक्केक्के पञ्च सोल्लया, तहेव करेइ,

जहा चुलणीपियस्स, नवरं एक्केक्के पञ्च सोलया १। तए णं से देवे सुरादेवं समणोवासयं चउत्थंपि एवं वयासी—हं भो सुरादेवा! समणोवासया अपत्थियपत्थिया ४ जाव न परिच्चयसि तो ते अज्ज सरीरंसि जमगसमगमेव सोलस रोगायङ्के पक्खिवामि, तंजहा—सासे कासे जाव कोढे, जहा णं तुमं अट्टदुहट्ट जाव ववरोविज्जसि, तए णं से सुरादेवे समणोवासए जाव विहरइ, एवं देवो दोच्चंपि तच्चंपि भणइ जाव ववरोविज्जसि २। तए णं तस्स सुरादेवस्स समणोवासयस्स तेणं देवेणं दोच्चंपि तच्चंपि एवं वुत्तस्स समाणस्स इमेयारूवे अज्झत्थिए ४ अहो णं इमे पुरिसे अणारिए जाव समायरइ, जेणं ममं जेट्ठं पुत्तं जाव कणीयसं जाव आयञ्चइ, जेऽवि य इमे सोलस रोगायङ्का तेऽवि य इच्छइ मम सरीरगंसि पक्खिवित्तए, तं सेयं खलु ममं एयं पुरिसं गिण्हित्तएत्ति कट्टु उद्धाइए, सेऽवि य आगासे उप्पइए तेण य खम्भे आसाइए महया महया सद्देणं कोलाहले कए ३। तए णं सा धन्ना भारिया कोलाहलं सोच्चा निसम्म जेणेव सुरादेवे समणोवासए तेणेव उवागच्छइ २ एवं वयासी—किण्णं देवाणुप्पिया! तुब्भेहिं महया महया सद्देणं कोलाहले कए?, तए णं से सुरादेवे समणोवासए धन्नं भारियं एवं वयासी—एवं खलु देवाणुप्पिए! केऽवि पुरिसे तहेव कहेइ जहा चुलणीपिया, धन्नाऽवि पडिभणइ जाव कणीयसं, नो खलु देवाणुप्पिया! तुब्भं के वि पुरिसे सरीरंसि जमगसमगं सोलस रोगायङ्के पक्खिवइ, एस णं केवि पुरिसे तुब्भं उवसग्गं करेइ, सेसं जहा चुलणीपियस्स तहा भणइ, एवं निरवसेसं जाव सोहम्मे कप्पे अरुणकन्ते विमाणे उववन्ने ४। चत्तारि पलिओवमाइं ठिई, महाविदेहे वासे सिज्झिहिइ ५, निक्खेवो ५ ॥ सू० ३१ ॥ सत्तमस्स अङ्गस्स उवासगदसाणं चउत्थं अज्झयणं समत्तं ॥

॥ इति चतुर्थमध्ययनम् ॥ ४ ॥

॥५॥ अथ चुल्लशतकाख्यं पञ्चममध्ययनम् ॥

उक्खेवो पञ्चमस्स, एवं खलु जम्बू ! ते णं काले णं ते णं समए णं आलभिया नामं नयरी, सङ्खवणे उज्जाणे जियसत्तू राया चुल्लसयए गाहावई अड्ढे जाव छ हिरण्णकोडीओ जाव छ वया दसगोसाहस्सिएणं वएणं बहुला भारिया, सामी समोसढे, जहा आणन्दो तहा गिहिधम्मं पडिवज्जइ, सेसं जहा कामदेवो जाव धम्मपण्णत्ति उवसम्पज्जित्ताणं विहरइ ॥ सू० ३२ ॥

तए णं तस्स चुल्लसयगस्स समणोवासयस्स पुव्वरत्तावरत्तकालसमयंसि एगे देवे अन्तियं जाव असिं गहाय एवं वयासी–हं भो चुल्लसयगा समणोवासया ! जाव न भञ्जसि तो ते अज्ज जेट्ठं पुत्तं साओ गिहाओ नीणेमि एवं जहा चुलणीपियं नवरं एक्केक्के सत्त मंससोल्लया जाव कणीयसं जाव आयञ्चामि, तए णं से चुल्लसयए समणोवासए जाव विहरइ १ । तए णं से देवे चुल्लसयगं समणोवासयं चउत्थंपि एवं वयासी–हं भो चुल्लसयगा ! समणोवासया जाव न भञ्जसि तो ते अज्ज जाओ इमाओ छ हिरण्णकोडिओ निहाणपउत्ताओ छ वुड्ढिपउत्ताओ छ पवित्थरपउत्ताओ ताओ साओ गिहाओ नीणेमि २ आलभियाए नयरीए सिङ्घाडग जाव पहेसु सव्वओ समन्ता विप्पइरामि, जहा णं तुमं अट्टदुहट्टवसट्टे अकाले चेव जीवियाओ ववरोविज्जसि, तए णं से चुल्लसयए समणोवासए तेणं देवेणं एवं वुत्ते समाणे अभीए जाव विहरइ २ । तए णं से देवे चुल्लसयगं समणोवासयं अभीयं जाव पासित्ता दोच्चंपि तच्चंपि तहेव भणइ जाव ववरोविज्जसि, तए णं तस्स चुल्लसयगस्स समणोवासयस्स तेणं देवेणं दोच्चंपि तच्चंपि एवं वुत्तस्स समाणस्स अयमेयारूवे अज्झत्थिए ४–अहो णं इमे पुरिसे अणारिए जहा चुलणीपिया तहा चिन्तेइ जाव कणीयसं जाव आयञ्चइ, जाओऽवि य णं इमाओ ममं छ

हिरराणकोडीओ छ निहाणपउत्ताओ छ वुड्ढिपउत्ताओ छ पवित्थरपउत्ताओ ताओऽवि य णं इच्छइ ममं साओ गिहाओ नीणेत्ता आलभीयाए नयरीए सिङ्घाडग जाव विप्पइरित्तए तं सेयं खलु ममं एयं पुरिसं गिरिहत्तएत्ति-कट्टु उद्धाइए जहा सुरादेवो तहेव भारिया पुच्छइ तहेव कहेइ ५, २ ॥ सू० ३३ ॥

सेसं जहा चुलणीपियस्स जाव सोहम्मे कप्पे अरुणासिट्ठे विमाणे उववन्ने, चत्तारि पलिओवमाइं ठिई। सेसं तहेव जाव महाविदेहे वासे सिज्झिहिइ ५ ॥ निक्खेवो ॥ सू० ३४ ॥ इइ सत्तमस्स अङ्गस्स उवासग दसाणं पञ्चमं अज्झयणं समत्तं ॥

॥ इति पञ्चममध्ययनम् ॥ ५ ॥

॥६॥ अथ कुण्डकोलिकाख्यं षष्ठमध्ययनम् ॥

छट्ठस्स उक्खेवओ—एवं खलु जम्बू ! ते णं काले णं ते णं समए णं कम्पिल्लपुरे नयरे सहसम्बवणे उज्जाणे पुढवीसिलापट्टए चेइए जियसत्तू राया कुराडकोलिए गाहावई पूसा भारिया छ हिरराणकोडीओ निहाणपउत्ताओ छ वुड्ढिपउत्ताओ छ पवित्थरपउत्ताओ छ वया दसगोसाहस्सिएणं वएणं। सामी समोसढे, जहा कामदेवो तहा सावयधम्मं पडिवज्जइ। सच्चेव वत्तव्वया जाव पडिलाभेमाणे विहरइ ॥ सू० ३५ ॥

तए णं से कुराडकोलिए समणोवासए अन्नया कयाइ पुव्वावरराह-कालसमयंसि जेणेव असोगवणिया जेणेव पुढविसिलापट्टए तेणेव उवागच्छइ २ नाममुद्दगं च उत्तरिज्जगं च पुढविसिलापट्टए ठवेइ २ समणस्स भगवओ महावीरस्स अन्तियं धम्मपराणत्ति उवसम्पज्जित्ता णं विहरइ १। तए णं तस्स कुराडकोलियस्स समणोवासयस्स एगे देवे अन्तियं पाउब्भवित्था, तए णं से देवे नाममुद्दं च उत्तरिज्जं च पुढविसिलापट्टयाओ गेराहइ २

सखिङ्खिणिं अन्तलिक्खपडिवन्ने कुराडकोलियं समणोवासयं एवं वयासी–हं भो कुराडकोलिया ! समणोवासया सुन्दरी णं देवाणुप्पिया गोसालस्स मङ्खलिपुत्तस्स धम्मपराणत्ती–नत्थि उट्ठाणे इ वा कम्मे इ वा बले इ वा वारिए इ वा पुरिसकारपरक्कमे इ वा नियया सव्वभावा, मङ्गुली णं समणस्स भगवओ महावीरस्स धम्मपराणत्ती अत्थि उट्ठाणे इ वा जाव परक्कमे इ वा अणियया सव्वभावा २। तए णं से कुराडकोलिए समणोवासए तं देवं एवं वयासी–जइ णं देवा ! सुन्दरी गोसालस्स मङ्खलिपुत्तस्स धम्मपराणत्ती नत्थि उट्ठाणे इ वा जाव नियया सव्वभावा, मङ्गुली णं समणस्स भगवओ महावीरस्स धम्मपराणत्ती अत्थि उट्ठाणे इ वा जाव अणियया सव्वभावा, तुमे णं देवाणुप्पिया ! इमा एयारूवा दिव्वा देविड्ढी दिव्वा देवज्जुई दिव्वे देवाणुभावे किणा लद्धे किणा पत्ते किणा अभिसमन्नागए किं उट्ठाणेणं जाव पुरिसकारपरक्कमेणं उदाहु अणुट्ठाणेणं अकम्मेणं जाव अपुरिसकार-परक्कमेणं ? तए णं से देवे कुराडकोलियं समणोवासयं एवं वयासी–एवं खलु देवाणुप्पिया ! मए इमेयारूवा दिव्वा देविड्ढी ३ अणुट्ठाणेणं जाव अपुरिस-कारपरक्कमेणं लद्धा पत्ता अभिसमन्नागया ३। तए णं से कुराडकोलिए समणोवासए तं देवं एवं वयासी–जइ णं देवा ! तुमे इमा एयारूवा दिव्वा देविड्ढी ३ अणुट्ठाणेणं जाव अपुरिसकापरक्कमेणं लद्धा पत्ता अभिसमन्नागया, जेसिं णं जीवाणं नत्थि उट्ठाणेइ वा जाव परक्कमेइ वा पते किं न देवा ?, अह णं देवा ! तुमे इमा एयारूवा दिव्वा देविड्ढी ३ उट्ठाणेणं जाव परक्कमेणं लद्धा पत्ता अभिसमन्नागया तो जं वदसि–सुन्दरी णं गोसालस्स मङ्खलिपुत्तस्स धम्मपराणत्ती–नत्थि उट्ठाणे इ वा जाव नियया सव्वाभावा, मङ्गुली णं समणस्स भगवओ महावीरस्स धम्मपराणत्ती–अत्थि उट्ठाणे इ वा जाव अणियया सव्वभावा, तं ते मिच्छा ४। तए णं से देवे कुराड-कोलिएणं समणोवासएणं एवं वुत्ते समाणे सङ्किए जाव कलुससमावन्ने नो

संचाएइ कुण्डकोलियस्स समणोवासयस्स किंचि पामोक्खमाइक्खित्तए नाममुद्दयं च उत्तरिज्जयं च पुढविसिलापट्टए ठवेइ २ जामेव दिसिं पाउब्भूए तामेव दिसिं पडिगए ५। तेणं कालेणं तेणं समएणं सामी समोसढे तए णं से कुण्डकोलिए समणोवासए इमीसे कहाए लद्धट्ठे हट्ठ जहा कामदेवो तहा निग्गच्छइ जाव पज्जुवासइ, धम्मकहा ६॥ सू० ३६॥

कुण्डकोलिया इ समणे भगवं महावीरे कुण्डकोलियं समणोवासयं एवं वयासी—से नूणं कुण्डकोलिया! कल्लं तुब्भे पुव्वा(पच्चा)वरण्हकाल-समयंसि असोगवणियाए एगे देवे अन्तियं पाउब्भवित्था, तए णं से देवे नाममुद्दं च तहेव जाव पडिगए। से नूणं कुण्डकोलिया (आमन्तेति २) अट्ठे समट्ठे ?, हन्ता अत्थि, धन्ने सि णं तुमं कुण्डकोलिया! जहा कामदेवो अज्जो इ समणे भगवं महावीरे समणे निग्गन्थे य निग्गन्थीओ य आमन्तित्ता एवं वयासी—जइ ताव अज्जो गिहिणो गिहिमज्झा(ज्झि) वसन्ता णं अन्नउत्थिए अट्ठेहि य हेऊहि य पसिणेहि य कारणेहि य वागरणेहि य निप्पट्ठपसिणवागरणे करेन्ति, सक्का पुणाइं अज्जो समणेहिं निग्गन्थेहिं दुवालसङ्गं गणिपिडगं अहिज्जमाणेहिं अन्नउत्थिया अट्ठेहि य जाव निप्पट्ठपसिणवागरणा करित्तए १। तए णं समणा निग्गन्था य निग्गन्थीओ य समणस्स भगवओ महावीरस्स तहत्ति एयमट्ठं विणएणं पडिसुणेन्ति २। तए णं से कुण्डकोलिए समणोवासए समणं भगवं महावीरं वन्दइ नमंसइ २ पसिणाइं पुच्छइ २ अट्ठमादियइ २ जामेव दिसं पाउब्भूए तामेव दिसं पडिगए, सामी बहिया जणवयविहारं विहरइ ३ ॥ सू० ३७॥

तए णं तस्स कुण्डकोलियस्स समणोवासयस्स बहूहिं सील जाव भावेमाणस्स चोद्दस्स संवच्छराइं वइक्कन्ताइं पण्णरसमस्स संवच्छरस्स अन्तरा वट्टमाणस्स अन्नया कयाइ जहा कामदेवो तहा जेट्ठपुत्तं ठवेत्ता तहा

पोसहसालाए जाव धम्मपरणत्तिं उवसम्पज्जित्ता णं विहरइ, एवं एक्कारस उवासगपडिमाओ तहेव जाव सोहम्मे कप्पे अरुणज्झए विमाणे जाव अन्तं काहिइ ॥ निक्खेवो ॥ सू० ३८ ॥ सत्तमस्स अङ्गस्स उवासगदसाणं छट्ठं अज्झयणं समत्तं ॥

॥ इति षष्ठमध्ययनम् ॥ ६ ॥

॥७॥ अथ श्री सद्दालपुत्राख्यं सप्तममध्ययनम् ॥

सत्तमस्स उक्खेवो ॥ पोलासपुरे नामं नयरे सहस्सम्बवणे उज्जाणे, जियसत्तू राया, तत्थ णं पोलासपुरे नयरे सद्दालपुत्ते नामं कुम्भकारे आजीविओवासए परिवसइ, आजीवियसमयंसि लद्धट्ठे गहियट्ठे पुच्छियट्ठे विणिच्छियट्ठे अभिगयट्ठे अट्ठिमिंज-पेमाणुरागरत्ते य अयमाउसो ! आजीवियसमए अट्ठे अयं परमट्ठे सेसे अणट्ठेत्ति आजीवियसमएणं अप्पाणं भावेमाणे विहरइ १। तस्स णं सद्दालपुत्तस्स आजीवीओवासगस्स एक्का हिरण्णकोडी निहाणपउत्ता एक्का वुड्ढिपउत्ता एक्का पवित्थरपउत्ता एक्के वए दसगोसाहस्सिएणं वएणं, तस्स णं सद्दालपुत्तस्स आजीविओवासगस्स अग्गिमित्ता नामं भारिया होत्था, तस्स णं सद्दालपुत्तस्स आजीविओवासगस्स पोलासपुरस्स नगरस्स बहिया पञ्च कुम्भकारावणसया होत्था २। तत्थ णं बहवे पुरिसा दिण्णभइभत्तवेयणा कल्लाकल्लिं बहवे करए य वारए य पिहडए य घडए य उद्धघडए य कलसए य अलिञ्जरए य जम्बूलए य उट्टियाओ य करेन्ति, अन्ने य से बहवे पुरिसा दिन्नभइभत्तवेयणा कल्लाकल्लिं तेहिं बहूहिं करएहि य जाव उट्टियाहि य रायमग्गंसि वित्तिं कप्पेमाणा विहरन्ति ३ ॥ सू० ३९ ॥

तए णं से सद्दालपुत्ते आजीविओवासए अन्नया कयाइ पुव्वावरण्हकालसमयंसि जेणेव असोगवणिया तेणेव उवागच्छइ २ गोसालस्स

मङ्खलिपुत्तस्स अन्तियं धम्मपण्णत्तिं उवसम्पज्जित्ता णं विहरइ १। तए णं तस्स सद्दालपुत्तस्स आजीविओवासगस्स एगे देवे अन्तियं पाउब्भवित्था, तए णं से देवे अन्तलिक्खपडिवन्ने सखिङ्खिणियाइं जाव परिहिए सद्दाल-पुत्तं आजीविओवासयं एवं वयासी—एहिइ णं देवाणुप्पिया! कल्लं इहं महामाहणे उप्पन्नणाणदंसणधरे तीयपडुपन्नमणागयजाणए अरहा जिणे केवली सव्वण्णू सव्वदरिसी तेलोक्क-वहिय-महियपूइए सदेवमणुयासुरस्स लोगस्स अच्चणिज्जे वन्दणिज्जे पूयणिज्जे सक्कारणिज्जे संमाणणिज्जे कल्लाणं मङ्गलं देवयं चेइयं जाव पज्जुवासणिज्जे तच्चकम्मसम्पउत्ते, तं णं तुमं वन्देज्जाहि जाव पज्जुवासेज्जाहि, पाडिहारिएणं पीढफलग-सिज्जासंथार-एणं उवनिमन्तेज्जाहि, दोच्चंपि तच्चंपि एवं वयइ २ जामेव दिसं पाउब्भूए तामेव दिसं पडिगए २। तए णं तस्स सद्दालपुत्तस्स आजीविओवासगस्स तेणं देवेणं एवं वुत्तस्स समाणस्स इमेयारूवे अज्झत्थिए ४ समुप्पन्ने—एवं खलु ममं धम्मायरिए धम्मोवएसए गोसाले मङ्खलिपुत्ते से णं महामाहणे उप्पन्न-णाणदंसण-धरे जाव तच्चकम्म-सम्पयासम्पउत्ते से णं कल्लं इहं हव्वमागच्छिस्सइ, तए णं तं अहं वन्दिस्सामि जाव पज्जुवासिस्सामि पाडि-हारिएणं जाव उवनिमन्तिस्सामि ३ ॥ सू० ४० ॥

तए णं कल्लं जाव जलन्ते समणे भगवं महावीरे जाव समोसरिए, परिसा निग्गया जाव पज्जुवासइ १। तए णं से सद्दालपुत्ते आजीविओवा-सए इमीसे कहाए लद्धट्ठे समाणे—एवं खलु समणे भगवं महावीरे जाव विहरइ, तं गच्छामि णं समणं भगवं महावीरं वन्दामि जाव पज्जुवासामि, एवं सम्पेहेइ २ ण्हाए जाव पायच्छित्ते सुद्धप्पावेसाइं जाव अप्पमहग्घाभर-णालङ्कियसरीरे मणुस्सवग्गुरापरिगए साओ गिहाओ पडिणिक्खमइ २ पोलासपुरं नयरं मज्झंमज्झेणं निग्गच्छइ २ जेणेव सहस्सम्बवणे उज्जाणे जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छइ २ तिक्खुत्तो आयाहिणं

पयाहिणं करेइ २ वन्दइ नमंसइ २ जाव पज्जुवासइ २। तए णं समणे भगवं महावीरे सद्दालपुत्तस्स आजीविओवासगस्स तीसे य महइ जाव धम्मकहा समत्ता, सद्दालपुत्ता इ ! समणे भगवं महावीरे सद्दालपुत्तं आजीविओवासयं एवं वयासी–से नूणं सद्दालपुत्ता ! कल्लं तुमं पुव्वावरण्हकालसमयंसि जेणेव असोगवणिया जाव विहरसि, तए णं तुब्भं एगे देवे अन्तियं पाउब्भवित्था, तए णं से देवे अन्तलिक्खपडिवन्ने एवं वयासी–हं भो सद्दालपुत्ता ! तं चेव सव्वं जाव पज्जुवासिस्सामि, से नूणं सद्दालपुत्ता ! अट्ठे समट्ठे ? हंता अत्थि, नो खलु सद्दालपुत्ता ! तेणं देवेणं गोसालं मङ्खलिपुत्तं पणिहाय एवं वुत्ते ३। तए णं तस्स सद्दालपुत्तस्स आजीविओवासयस्स समणेणं भगवया महावीरेणं एवं वुत्तस्स समाणस्स इमेयारूवे अज्झत्थिए ४–एस णं समणे भगवं महावीरे महामाहणे उप्पन्नणाणदंसणधरे जाव तच्चकम्म-सम्पयासम्पउत्ते, तं सेयं खलु ममं समणं भगवं महावीरं वन्दित्ता नमंसित्ता पाडिहारिएणं पीढफलग जाव उवनिमन्तित्तए, एवं सम्पेहेइ २ उट्ठाए उट्ठेइ २ समणं भगवं महावीरं वन्दइ नमंसइ २ एवं वयासी–एवं खलु भन्ते ! ममं पोलासपुरस्स नयरस्स बहिया पञ्च कुम्भकारावणसया, तत्थ णं तुब्भे पाडिहारियं पीढ जाव संथारयं ओगिण्हित्ता णं विहरह ४। तए णं समणे भगवं महावीरे सद्दालपुत्तस्स आजीविओवासगस्स एयमट्ठं पडिसुणेइ २ सद्दालपुत्तस्स आजीविओवासगस्स पञ्चकुम्भकारावणसएसु फासुएसणिज्जं पाडिहारियं पीढफलग जाव संथारयं ओगिण्हित्ता णं विहरइ ५ ॥ सू० ४१ ॥

तए णं से सद्दालपुत्ते आजीविओवासए अन्नया कयाई वायाहययं कोलालभण्डं अन्तो सालाहिंतो बहिया नीणेइ २ आयवंसि दलयइ १। तए णं समणे भगवं महावीरे सद्दालपुत्तं आजीविओवासयं एवं वयासी–सद्दालपुत्ता ! एस णं कोलालभण्डे कओ ? २। तए णं से सद्दालपुत्ते

आजीविओवासए समणं भगवं महावीरं एवं वयासी—एस णं भन्ते ! पुव्विं मट्टिया आसी, तओ पच्छा उदएणं निगिज्जइ २ छारेण य करिसेण य एगयओ मीसिज्जइ २ चक्के आरोहिज्जइ, तओ बहवे करगा य जाव उट्टि(ट्टि)याओ य कज्जति ३। तए णं समणे भगवं महावीरे सद्दालपुत्तं आजीविओवासयं एवं वयासी—सद्दालपुत्ता एस णं कोलालभण्डे किं उट्ठाणेणं जाव पुरिसकारपरक्कमेणं कज्जति उदाहु अणुट्ठाणेणं जाव अपुरिसकारपरक्कमेणं कज्जति ?, तए णं से सद्दालपुत्ते आजीविओवासए समणं भगवं महावीरं एवं वयासी—भन्ते ! अणुट्ठाणेणं जाव अपुरिसकारपरक्कमेणं, नत्थि उट्ठाणे इ वा जाव परक्कमे इ वा, नियया सव्वभावा ४। तए णं समणे भगवं महावीरे सद्दालपुत्तं आजीविओवासयं एवं वयासी—सद्दालपुत्ता ! जइ णं तुब्भं केई पुरिसे वायाहयं वा पक्केलयं वा कोलालभण्डं अवहरेज्जा वा विक्खिरेज्जा वा भिन्देज्जा वा अच्छिन्देज्जा वा परिट्ठवेज्जा वा अग्गिमित्ताए वा भारियाए वा सद्धिं विउलाइं भोगभोगाइं भुञ्जमाणे विहरेज्जा, तस्स णं तुमं पुरिसस्स किं दण्डं वत्तेज्जासि ?, भन्ते ! अहं णं तं पुरिसं आओसेज्जा वा हणेज्जा वा बन्धेज्जा वा महेज्जा वा तज्जेज्जा वा तालेज्जा वा निच्छोडेज्जा वा निब्भच्छेज्जा वा अकाले चेव जीवियाओ ववरोवेज्जा ५। सद्दालपुत्ता ! नो खलु तुब्भ केई पुरिसे वायाहयं वा पक्केल्लयं वा कोलालभण्डं अवहरइ वा जाव परिट्ठवेइ वा अग्गिमित्ताए वा भारियाए सद्धिं विउलाइं भोगभोगाइं भुञ्जमाणे विहरइ, नो वा तुमं तं पुरिसं आओसेज्जसि वा हणिज्जसि वा जाव अकाले चेव जीवियाओ ववरोवेज्जसि, जइ नत्थि उट्ठाणे इ वा जाव परक्कमे इ वा नियया सव्वभावा, अह णं तुब्भ केई पुरिसे वायाहयं जाव परिट्ठवेइ वा अग्गिमित्ताए वा जाव विहरइ, तुमं ता(वा) तं पुरिसं आओसेसि वा जाव ववरोवेसि तो जं वदसि नत्थि उट्ठाणे इ वा जाव नियया सव्वभावा, तं ते मिच्छा ६। एत्थ

णं से सद्दालपुत्ते आजीविओवासए सम्बुद्धे, तए णं से सद्दालपुत्ते आजीविओवासए समणं भगवं महावीरं वन्दइ नमंसइ २ एवं वयासी–इच्छामि णं भन्ते! तुब्भं अन्तिए धम्मं निसामेत्तए, तए णं समणे भगवं महावीरे सद्दालपुत्तस्स आजीविओवासगस्स तीसे य जाव धम्मं परिकहेइ ७ ॥ सू० ४२ ॥

तए णं से सद्दालपुत्ते आजीविओवासए समणस्स भगवओ महावीरस्स अन्तिए धम्मं सोच्चा निसम्म हट्ठतुट्ठ जाव हियए जहा आणन्दो तहा गिहिधम्मं पडिवज्जइ, नवरं एगा हिरण्णकोडी निहाणपउत्ता एगा हिरण्णकोडी वुड्ढिपउत्ता, एगा हिरण्णकोडी पवित्थरपउत्ता एगे वए दसगोसाहस्सिएणं वएणं जाव समणं भगवं महावीरं वन्दइ नमंसइ २ जेणेव पोलासपुरे नयरे तेणेव उवागच्छइ २ पोलासपुरं नयरं मज्झंमज्झेणं जेणेव सए गिहे जेणेव अग्गिमित्ता भारिया तेणेव उवागच्छइ २ अग्गिमित्तं भारियं एवं वयासी–एवं खलु देवाणुप्पिए! समणे भगवं महावीरे जाव समोसढे, तं गच्छाहि णं तुमं समणं भगवं महावीरं वन्दाहि जाव पज्जुवासाहि, समणस्स भगवओ महावीरस्स अन्तिए पंचाणुव्वइयं सत्तसिक्खावइयं दुवालसविहं गिहिधम्मं पडिवज्जाहि, तए णं सा अग्गिमित्ता भारिया सद्दालपुत्तस्स समणोवासगस्स तहत्ति एयमट्ठं विणएणं पडिसुणेइ १। तए णं से सद्दालपुत्ते समणोवासए कोडुम्बियपुरिसे सद्दावेइ २ एवं वयासी–खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया! लहुकरणजुत्तजोइयं समखुर-वालिहाण-समलिहिय-सिङ्गएहिं जम्बूणयामय-कलाव-जोत्तपइविसिट्ठएहिं रययामयघण्टसुत्त-रज्जुग वरकंचणखइय-नत्थापग्गहोग्गहियएहिं नीलुप्पल-कयामेलएहिं पवर गोणजुवाणएहिं नाणामणिकणग-घण्टियाजालपरिगयं सुजायजुगजुत्त-उज्जुगपसत्थ-सुविरइयनिम्मियं पवरलक्खणोववेयं जुत्तामेव धम्मियं जाणपवरं उवट्ठवेह २ मम एयमाणत्तियं पच्चप्पिणह, तए णं ते कोडुम्बियपुरिसा जाव

पञ्चणिणन्ति २ । तए णं सा अग्गिमित्ता भारिया ण्हाया जाव पायच्छित्ता सुद्धप्पावेसाइं जाव अप्पमहग्घाभरणालङ्कियसरीरा चेडिया-चक्कवाल-परि-किण्णा धम्मियं जाणप्पवरं दुरुहइ २ पोलासपुरं नगरं मज्झंमज्झेणं निग्गच्छइ २ जेणेव सहस्सम्बवणे उज्जाणे जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छइ २ धम्मियाओ जाणाओ पचोरुहइ २ चेडियाचक्कवाल-परिवुडा जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छइ २ तिक्खुत्तो जाव वन्दइ नमंसइ १ नच्चासन्ने नाइदूरे जाव पञ्जलिउडा ठिइया चेव पज्जुवासइ ३ । तए णं समणे भगवं महावीरे अग्गिमित्ताए तीसे य जाव धम्मं कहेइ, तए णं सा अग्गिमित्ता भारिया समणस्स भगवओ महावीरस्स अन्तिए धम्मं सोच्चा निसम्म हट्ठतुट्ठा समणं भगवं महावीरं वन्दइ नमंसइ २ त्ता एवं वयासी—सद्दहामि णं भन्ते ! निग्गन्थं पावयणं जाव से जहेयं तुब्भे वयह, जहा णं देवाणुप्पियाणं अन्तिए बहवे उग्गा भोगा जाव पव्वइया नो खलु अहं तहा संचाएमि देवाणुप्पियाणं अन्तिए मुण्डा भवित्ता जाव अहं णं देवाणुप्पियाणं अन्तिए पंचाणुव्वइयं सत्तसिक्खावइयं दुवालसविहं गिहिधम्मं पडिवज्जिस्सामि, अहासुहं देवाणुप्पिया ! मा पडिबन्धं करेह ४ । तए णं सा अग्गिमित्ता भारिया समणस्स भगवओ महावीरस्स अन्तिए पंचाणुव्वइयं सत्तसिक्खावइयं दुवालसविहं सावगधम्मं पडिवज्जइ २ समणं भगवं महावीरं वन्दइ नमंसइ २ तमेव धम्मियं जाणप्पवरं दुरुहइ २ जामेव दिसं पाउब्भूया तामेव दिसं पडिगया ५ । तए णं समणे भगवं महावीरे अन्नया कयाइ पोलासपुराओ नयराओ सहस्सम्बवणाओ पडिनिग्गच्छ-(निक्ख)इ २ बहिया जणवयविहारं विहरइ ६ ॥ सू० ४३ ॥

तए णं से सद्दालपुत्ते समणोवासए जाए अभिगयजीवाजीवे जाव विहरइ १ । तए णं से गोसाले मङ्खलिपुत्ते इमीसे कहाए लद्धट्ठे समाणे—एवं खलु सद्दालपुत्ते आजीवियसमयं वमित्ता समणाणं निग्गन्थाणं दिट्ठिं

पडिवन्ने, तं गच्छामि णं सद्दालपुत्तं आजीविओवासयं समणाणं निग्गन्थाणं दिट्ठिं वामेत्ता पुणरवि आजीवियदिट्ठिं गेण्हावित्तए त्ति कट्टु एवं सम्पेहेइ २ आजीविय-सङ्घसम्परिवुडे जेणेव पोलासपुरे नयरे जेणेव आजीवियसभा तेणेव उवागच्छइ २ आजीवियसभाए भण्डगनिक्खेवं करेइ २ कइवएहिं आजीविएहि सद्धिं जेणेव सद्दालपुत्ते समणोवासए तेणेव उवागच्छइ २। तए णं से सद्दालपुत्ते समणोवासए गोसालं मङ्खलिपुत्तं एज्जमाणं पासइ २ नो आढाइ नो परिजाणाइ अणाढायमाणे अपरिजाणमाणे तुसिणीए संचिट्ठइ ३। तए णं से गोसाले मङ्खलिपुत्तं सद्दालपुत्तेणं समणोवासएणं अणाढाइज्जमाणे अपरिजाणिज्जमाणे पीढफलग-सिज्जा-संथारट्ठयाए समणस्स भगवओ महावीरस्स गुणकित्तणं करेमाणे सद्दालपुत्तं समणोवासयं एवं वयासी—आगए णं देवाणुप्पिया! इहं महामाहणे ?, तए णं से सद्दालपुत्ते समणोवासए गोसालं मङ्खलिपुत्तं एवं वयासी—के णं देवाणुप्पिया! महामाहणे ?, तए णं से गोसाले मङ्खलिपुत्ते सद्दालपुत्तं समणोवासयं एवं वयासी—समणे भगवं महावीरे महामाहणे, से केणट्ठेणं देवाणुप्पिया! एवं वुच्चइ—समणे भगवं महावीरे महामाहणे ?, एवं खलु सद्दालपुत्ता! समणे भगवं महावीरे महामाहणे उप्पन्नणाणदंसणधरे जाव महियपूइए जाव तच्चकम्मसम्पया-सम्पउत्ते, से तेणट्ठेणं देवाणुप्पिया! एवं वुच्चइ—समणे भगवं महावीरे महामाहणे ४। आगए णं देवाणुप्पिया! इहं महागोवे ?, के णं देवाणुप्पिया! महागोवे ? सद्दालपुत्ता! समणे भगवं महावीरे महागोवे, से केणट्ठेणं देवाणुप्पिया! जाव महागोवे ?, एवं खलु देवाणुप्पिया! समणे भगवं महावीरे संसाराडवीए बहवे जीवे नस्समाणे विणस्समाणे खज्जमाणे छिज्जमाणे भिज्जमाणे लुप्पमाणे विलुप्पमाणे धम्ममएणं दण्डेणं सारक्खमाणे संगोवेमाणे निव्वाणमहावाडं साहत्थिं सम्पावेइ, से तेणट्ठेणं सद्दालपुत्ता! एवं वुच्चइ—समणे भगवं महा-

वीरे महागोवे ५। आगए णं देवाणुप्पिया ! इहं महासत्थवाहे ?, के णं देवाणुप्पिया ! महासत्थवाहे ? सद्दालपुत्ता ! समणे भगवं महावीरे महासत्थवाहे, से केणट्ठे णं देवाणुप्पिया महासत्थवाहे ? एवं खलु देवाणुप्पिया ! समणे भगवं महावीरे संसाराडवीए बहवे जीवे नस्समाणे विणस्समाणे जाव विलुप्पमाणे उम्मग्गपडिवन्ने धम्ममएणं पन्थेणं सारक्खमाणे संगोवेमाणे निव्वाणमहापट्टणाभिमुहे साहत्थिं सम्पावेइ, से तेणट्ठेणं सद्दालपुत्ता एवं वुच्चइ–समणे भगवं महावीरे महासत्थवाहे ६। आगए णं देवाणुप्पिया ! इहं महाधम्मकही ?, के णं देवाणुप्पिया महाधम्मकही ? समणे भगवं महावीरे महाधम्मकही, से केणट्ठेणं समणे भगवं महावीरे महाधम्मकही ?, एवं खलु देवाणुप्पिया ! समणे भगवं महावीरे महइमहालयंसि संसारंसि बहवे जीवे नस्समाणे विणस्समाणे खज्जमाणे छिज्जमाणे भिज्जमाणे लुप्पमाणे विलुप्पमाणे उम्मग्गपडिवन्ने सप्पहविप्पणट्ठे मिच्छत्तबलाभिभूए अट्ठविहकम्म-तमपडल-पडोच्छन्ने बहूहिं अट्ठेहि य जाव वागरणेहि य चाउरन्ताओ संसारकन्ताराओ साहत्थिं नित्थारेइ, से तेणट्ठेणं देवाणुप्पिया ! एवं वुच्चइ–समणे भगवं महावीरे महाधम्मकही ७। आगए णं देवाणुप्पिया ! इहं महानिज्जामए ?, के णं देवाणुप्पिया ! महानिज्जामए ?, समणे भगवं महावीरे महानिज्जामए, से केणट्ठेणं समणे भगवं महावीरे महानिज्जामए ?, एवं खलु देवाणुप्पिया ! समणे भगवं महावीरे संसारमहासमुद्दे बहवे जीवे नस्समाणे विणस्समाणे जाव विलुप्पमाणे बुड्डमाणे निबुड्डमाणे उप्पियमाणे धम्ममईए नावाए निव्वाणतीराभिमुहे साहत्थिं सम्पावेइ, से तेणट्ठेणं देवाणुप्पिया ! एवं वुच्चइ–समणे भगवं महावीरे महानिज्जामए ८। तए णं से सद्दालपुत्ते समणोवासए गोसालं मङ्खलिपुत्तं एवं वयासी–तुब्भे णं देवाणुप्पिया ! इयच्छेया जाव इयनिउणा इयनयवादी इयउवएसलद्धा इयविण्णाणपत्ता (इयमेहाविणो), पभू णं तुब्भे मम धम्मायरिएणं धम्मोवएसएणं भगवया महावीरेणं सद्धिं

विवादं करेत्तए ?, नो तिणट्ठे समट्ठे, से केणट्ठेणं देवाणुप्पिया ! एवं वुच्चइ—नो खलु पभू तुब्भे मम धम्मायरिएणं जाव महावीरेणं सद्धिं विवादं करेत्तए ?, सद्दालपुत्ता ! से जहानामए केई पुरिसे तरुणे जुगवं जाव निउणसिप्पोवगए एगं महं अयं वा एलयं वा सूयरं वा कुक्कुडं वा तित्तिरं वा वट्टयं वा लावयं वा कवोयं वा कविञ्जलं वा वायसं वा सेणयं वा हत्थंसि वा पायंसि वा खुरंसि वा पुच्छंसि वा पिच्छंसि वा सिङ्गंसि वा विसाणंसि वा रोमंसि वा जहिं जहिं गिण्हइ तहिं तहिं निच्चलं निप्फन्दं धरेइ एवामेव समणे भगवं महावीरे ममं बहूहिं अट्ठेहि य हेऊहि य जाव वागरणेहि य जहिं जहिं गिण्हइ तहिं तहिं निप्पट्ठपसिणवागरणं करेइ, से तेणट्ठेणं सद्दालपुत्ता ! एवं वुच्चइ—नो खलु पभू अहं तव धम्मायरिएणं जाव महावीरेणं सद्धिं विवादं करेत्तए ९। तए णं से सद्दालपुत्ते समणोवासए गोसालं मङ्खलिपुत्तं एवं वयासी—जम्हा णं देवाणुप्पिया ! तुब्भे मम धम्मायरियस्स जाव महावीरस्स संतेहिं तच्चेहिं तहिएहिं सब्भूएहिं भावेहिं गुणकित्तणं करेह तम्हा णं अहं तुब्भे पाडिहारिएणं पीढ जाव संथारएणं उवनिमन्तेमि, नो चेव णं धम्मोत्ति वा तवोत्ति वा, तं गच्छह णं तुब्भे मम कुम्भारावणेसु पाडिहारियं पीढफलग जाव ओगिण्हित्ताणं विहरइ १०। तए णं से गोसाले मङ्खलिपुत्ते सद्दालपुत्तस्स समणोवासयस्स एयमट्ठं पडिसुणेइ २ कुम्भारावणेसु पाडिहारियं पीढ जाव ओगिण्हित्ता णं विहरइ, तए णं से गोसाले मङ्खलिपुत्ते सद्दालपुत्तं समणोवासयं जाहे नो संचाएइ बहूहिं आघवणाहि य पण्णवणाहि य सण्णवणाहि य विण्णवणाहि य निग्गन्थाओ पावयणाओ चालित्तए वा खोभित्तए वा विपरिणामित्तए वा ताहे सन्ते तन्ते परितन्ते पोलासपुराओ नगराओ पडिणिक्खमइ २ बहिया जणवयविहारं विहरइ ११ ॥ सू० ४४ ॥

तए णं तस्स सद्दालपुत्तस्स समणोवासयस्स बहूहिं सील जाव भावे-

माणस्स चोद्दस संवच्छरा वइक्कन्ता, पराणरसमस्स संवच्छरस्स अन्तरा वट्टमाणस्स पुव्वरत्तावरत्तकाले जाव पोसहमालाए समणस्स भगवओ महावीरस्स अन्तियं धम्मपराणत्तिं उवसम्पज्जित्ता णं विहरइ १। तए णं तस्स सद्दालपुत्तस्स समणोवासयस्स पुव्वरत्तावरत्तकाले एगे देवे अन्तियं पाउब्भवित्था, तए णं से देवे एगं महं नीलुप्पल जाव असिं गहाय सद्दालपुत्तं समणोवासयं एवं वयासी, जहा चुलणीपियस्स तहेव देवो उवसग्गं करेइ, नवरं एक्केक्के पुत्ते नव मंससोल्लए करेइ जाव कणीयसं घाएइ २ त्ता जाव आयंचइ, तए णं से सद्दालपुत्ते समणोवासए अभीए जाव विहरइ २। तए णं से देवे सद्दालपुत्तं समणोवासयं अभीयं जाव पासित्ता चउत्थंपि सद्दालपुत्तं समणोवासयं एवं वयासी–हं भो सद्दालपुत्ता! समणोवासया अपत्थियपत्थिया जाव न भञ्जसि तओ ते जा इमा अग्गिमित्ता भारिया धम्मसहाइया धम्मविइज्जिया धम्माणुरागरत्ता समसुहदुक्खसहाइया तं ते साओ गिहाओ नीणेमि २ तव अग्गओ घाएमि २ नव मंससोल्लए करेमि २ आदाणभरियंसि कडाहयंसि अद्दहेमि २ तव गायं मंसेण य सोणिएण य आयंचामि, जहा णं तुमं अट्टदुहट्ट जाव ववरोविज्जसि, तए णं से सद्दालपुत्ते समणोवासए तेणं देवेणं एवं वुत्ते समाणे अभीए जाव विहरइ ३। तए णं से देवे सद्दालपुत्तं समणोवासयं दोच्चंपि तच्चंपि एवं वयासी–हं भो सद्दालपुत्ता समणोवासया! तं चेव भणइ, तए णं तस्स सद्दालपुत्तस्स समणोवासयस्स तेणं देवेणं दोच्चंपि तच्चंपि एवं वुत्तस्स समाणस्स अयं अज्झत्थिए ४ समुप्पन्ने, एवं जहा चुलणीपिया तहेव चिन्तेइ जेणं ममं जेट्ठं पुत्तं जेणं ममं मज्झिमयं पुत्तं जेणं ममं कणीयसं पुत्तं जाव आयंचइ जावि य णं ममं इमा अग्गिमित्ता भारिया समसुहदुक्खसहाइया तंपिय इच्छइ साओ गिहाओ नीणेत्ता ममं अग्गओ घाएत्तए, तं सेयं खलु ममं एयं पुरिसं गिण्हित्तएत्ति कट्टु उद्धाइए जहा चुलणीपिया तहेव सव्वं

भाणियव्वं, नवरं अग्गिमित्ता भारिया कोलाहलं सुणित्ता भणइ सेसं जहा चुलणीपियावत्तव्वया नवरं अरुणभू(च्चु)ए विमाणे उववन्ने जाव महाविदेहे वासे सिज्झिहिइ, निक्खेवओ ४ ॥ सू० ४५ ॥ सत्तमस्स अङ्गस्स उवासगदसाणं सत्तमं अज्झयणं समत्तं ॥

॥ इति सप्तममध्ययनम् ॥ ७ ॥

॥८॥ अथ श्री महाशतकाख्य-मष्टममध्ययनम् ॥

अट्ठमस्स उक्खेवओ, एवं खलु जम्बू ! तेणं कालेणं तेणं समएणं रायगिहे नयरे गुणसिले चेइए सेणिए राया, तत्थ णं रायगिहे महासयए नामं गाहावई परिवसइ, अड्ढे जहा आणन्दो, नवरं अट्ठ हिरण्णकोडिओ सकंसाओ निहाणपउत्ताओ अट्ठ हिरण्णकोडिओ सकंसाओ वुड्ढिपउत्ताओ अट्ठ हिरण्णकोडिओ सकंसाओ पवित्थरपउत्ताओ अट्ठ वया दसगोसाहस्सिएणं वएणं, तस्स णं महासयगस्स रेवईपामोक्खाओ तेरस भारियाओ होत्था, अहीण जाव सुरूवाओ, तस्स णं महासयगस्स रेवईए भारियाए कोलघरियाओ अट्ठ हिरण्णकोडिओ अट्ठ वया दसगोसाहस्सिएणं वएणं होत्था, अवसेसाणं दुवालसण्हं भारियाणं कोलघरिया एगमेगा हिरण्णकोडी एगमेगे य वए दसगोसाहस्सिएणं वएणं होत्था ॥सू० ४६॥

ते णं काले णं ते णं समए णं सामी समोसढे, परिसा निग्गया, जहा आणन्दो तहा निग्गच्छइ तहेव सावयधम्मं पडिवज्जइ, नवरं अट्ठ हिरण्णकोडिओ सकंसाओ निहाणपउत्ताओ उच्चारेइ, अट्ठ वया, रेवईपामोक्खाहिं तेरसहिं भारियाहिं अवसेसं मेहुणविहिं पच्चक्खाइ, सेसं सव्वं तहेव, इमं च णं एयारूवं अभिग्गहं अभिगिण्हइ कल्लाकल्लिं च णं कप्पइ मे बेदोणियाए कंसपाईए हिरण्णभरियाए संववहरित्तए, तए णं से महासयए समणोवासए जाए अभिगयजीवाजीवे जाव विहरइ, तए णं समणे भगवं महावीरे बहिया जणवयविहारं विहरइ २ ॥ सू० ४७ ॥

तए णं तीसे रेवईए गाहावइणीए अन्नया कयाई पुव्वरत्तावरत्तकाल-समयंसि कुडुम्ब जाव इमेयारूवे अज्झत्थिए ४, एवं खलु अहं इमासिं दुवालसराहं सवत्तीणं विघाएणं नो संचाएमि महासयएणं समणोवासएणं सद्धिं उरालाइं माणुस्सयाइं भोगभोगाइं भुञ्जमाणी विहरित्तए, तं सेयं खलु ममं एयाओ दुवालसवि सवत्तियाओ अग्गिप्पओगेणं वा सत्थप्पओगेणं वा विसप्पओगेणं वा जीवियाओ ववरोवित्ता एयासिं एगमेगं हिरण्णकोडिं एगमेगं वयं च सयमेव उवसम्पज्जित्ता णं महासयएणं समणोवासएणं सद्धिं उरालाइं जाव विहरित्तए, एवं सम्पेहेइ २ तासिं दुवालसराहं सवत्तीणं अन्तराणि य छिद्दाणि य विवराणि (विरहाणि) य पडिजागरमाणी विहरइ १। तए णं सा रेवई गाहावइणी अन्नया कयाई तासिं दुवालसराहं सवत्तीणं अन्तरं जाणित्ता छ सवत्तीओ सत्थप्पओगेणं उद्दवेइ २ छ सवत्तीओ विसप्पओगेणं उद्दवेइ २ तासिं दुवालसराहं सवत्तीणं कोलघरियं एगमेगं हिरण्णकोडिं एगमेगं वयं सयमेव पडिवज्जइ २ महासयएणं समणोवासएणं सद्धिं उरालाइं भोगभोगाइं भुञ्जमाणी विहरइ २। तए णं सा रेवई गाहावइणी मंसलोलुया मंसेसु मुच्छिया जाव अज्झोववन्ना बहुविहेहिं मंसेहि य सोल्लेहि य तलिएहि य भज्जिएहि य सुरं च महुं च मेरगं च मज्जं च सीधुं च पसन्नं च आसाएमाणी ४ विहरइ २॥ सू० ४८॥

तए णं रायगिहे नयरे अन्नया कयाई अमाघाए घुट्ठे यावि होत्था, तए णं सा रेवई गाहावइणी मंसलोलुया मंसेसु मुच्छिया ४ कोलघरिए पुरिसे सद्दावेइ २ एवं वयासी—तुब्भे देवाणुप्पिया! मम कोलघरिएहिंतो वएहिंतो कल्लाकल्लिं दुवे दुवे गोणपोयए उद्दवेह २ ममं उवणेह १। तए णं ते कोलघरिया पुरिसा रेवईए गाहावइणीए तहत्ति एयमट्ठं विणएणं पडिसुणन्ति २ रेवईए गाहावइणीए कोलघरिएहिंतो वएहिंतो कल्लाकल्लिं दुवे दुवे गोणपोयए वहेन्ति २ रेवईए गाहावइणीए उवणेन्ति तए णं सा

रेवई गाहावइणी तेहिं गोणमंसेहिं सोल्लेहि य ४ सुरं च ६ आसाएमाणी ४ विहरइ २ ॥ सू० ४९ ॥

तए णं तस्स महासयगस्स समणोवासगस्स बहूहिं सील जाव भावेमाणस्स चोद्दस संवच्छरा वइक्कन्ता, एवं तहेव जेट्ठं पुत्तं ठवेइ जाव पोसहसालाए धम्मपण्णत्तिं उवसम्पजित्ता णं विहरइ १। तए णं सा रेवई गाहावइणी मत्ता लुलिया विइण्णकेसी उत्तरिज्जयं विकड्ढेमाणी २ जेणेव पोसहसाला जेणेव महासयए समणोवासए तेणेव उवागच्छइ २ मोहुम्मायजणणाइं सिङ्गारियाइं इत्थिभावाइं उवदंसेमाणी २ महासययं समणोवासयं एवं वयासी--हं भो महासयया! समणोवासया! धम्मकामया पुण्णकामया सग्गकामया मोक्खकामया धम्मकङ्खिया ४ धम्मपिवासिया ४ किण्णं तुब्भं देवाणुप्पिया! धम्मेण वा पुण्णेण वा सग्गेण वा मोक्खेण वा? जण्णं तुमं मए सद्धिं उरालाइं जाव भुञ्जमाणे नो विहरसि? तए णं से महासयए समणोवासए रेवईए गाहावइणीए एयमट्ठं नो आढाइ नो परियाणाइ अणाढाइज्जमाणे अपरियाणमाणे तुसिणीए धम्मज्झाणोवगए विहरइ २। तए णं सा रेवई गाहावइणी महासययं समणोवासयं दोच्चंपि तच्चंपि एवं वयासी--हं भो तं चेव भणइ, सो वि तहेव जाव अणाढाइज्जमाणे अपरियाणमाणे विहरइ ३। तए णं सा रेवई गाहावइणी महासयएणं समणोवासएणं अणाढाइज्जमाणी अपरियाणिज्जमाणी जामेव दिसं पाउब्भूया तामेव दिसं पडिगया ४ ॥ सू० ५० ॥

तए णं से महासयए समणोवासए पढमं उवासगपडिमं उवसम्पज्जित्ता णं विहरइ, पढमं अहासुत्तं जाव एक्कारसऽवि, तए णं से महासयए समणोवासए तेणं उरालेणं जाव किसे धमणिसन्तए जाए १। तए णं तस्स महासययस्स समणोवासयस्स अन्नया कयाई पुव्वरत्तावरत्तकाले धम्मजागरियं जागरमाणस्स अयं अज्झत्थिए ४--एवं खलु अहं इमेणं उरालेणं जहा

आणन्दो तहेव अपच्छिम-मारणन्तिय-संलेहणाझूसियसरीरे भत्तपाणपडियाइक्खिए कालं अणवकङ्खमाणे विहरइ २। तए णं तस्स महासयगस्स समणोवासगस्स सुभेणं अज्झवसाणेणं जाव खओवसमेणं ओहिणाणे समुप्पन्ने पुरत्थिमेणं लवणसमुद्दे जोयणसाहस्सियं खेत्तं जाणइ पासइ, एवं दक्खिणेणं पच्चत्थिमेणं उत्तरेणं जाव चुल्लहिमवन्तं वासहरपव्वयं जाणइ पासइ, अहे इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए लोलुयच्चुयं नरयं चउरासीइवाससहस्सट्ठिइयं जाणइ पासइ ३ ॥ सू० ५१ ॥

तए णं सा रेवई गाहावइणी अन्नया कयाई मत्ता जाव उत्तरिज्जयं विकड्ढेमाणी २ जेणेव महासयए समणोवासए जेणेव पोसहसाला तेणेव उवागच्छइ २ महासययं तहेव भणइ जाव दोच्चंपि तच्चंपि एवं वयासी—हं भो तहेव तए णं से महासयए समणोवासए रेवईए गाहावइणीए दोच्चंपि तच्चंपि एवं वुत्ते समाणे आसुरुत्ते ४ ओहिं पउञ्जइ २ ओहिणा आभोएइ २ रेवइं गाहावइणिं एवं वयासी—हं भो रेवई! अपत्थियपत्थिए ४ एवं खलु तुमं अन्तो सत्तरत्तस्स अलसएणं वाहिणा अभिभूया समाणी अट्टदुहट्टवसट्टा असमाहिपत्ता कालमासे कालं किच्चा अहे इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए लोलुयच्चुए नरए चउरासीइवाससहस्सट्ठिइएसु नेरइएसु नेरइयत्ताए उववज्जिहिसि १। तए णं सा रेवई गाहावइणी महासयएणं समणोवासएणं एवं वुत्ता समाणी एवं वयासी—रुट्ठे णं ममं महासयए समणोवासए, हीणे णं ममं महासयए समणोवासए, अवज्झाया णं अहं महासयएणं समणोवासएणं, न नज्जइ णं अहं केणावि कुमारेणं मारिज्जिस्सामित्तिकट्टु भीया तत्था तसिया उव्विग्गा सञ्जायभया सणियं २ पच्चोसक्कइ २ जेणेव सए गिहे तेणेव उवागच्छइ २ ओहय जाव झियायइ २। तए णं सा रेवई गाहावइणी अन्तो सत्तरत्तस्स अलसएणं वाहिणा अभिभूया अट्टदुहट्टवसट्टा कालमासे कालं किच्चा इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए लोलुयच्चुए नरए

चउरासीइवाससहस्सट्ठिइएसु नेरइएसु नेरइयत्ताए उववन्ना ३ ॥ सू० ५२ ॥

ते णं काले णं ते णं समए णं समणे भगवं महावीरे समोसरणं जाव परिसा पडिगया, गोयमाइ समणे भगवं महावीरे एवं वयासी—एवं खलु गोयमा ! इहेव रायगिहे नयरे ममं अन्तेवासी महासयए नामं समणोवासए पोसहसालाए अपच्छिम-मारणन्तिय-संलेहणाए भूसियसरीरे (संलेहणा-भूसणा-भूसियसरीरे) भत्तपाण-पडियाइक्खिए कालं अणवकङ्खमाणे विहरइ १ । तए णं तस्स महासयगस्स रेवई गाहावइणी मत्ता जाव विकड्ढेमाणी २ जेणेव पोसहसाला जेणेव महासयए तेणेव उवागच्छइ २ मोहुम्माय जाव एवं वयासी—तहेव जाव दोच्चंपि तच्चंपि एवं वयासी २ । तए णं से महासयए समणोवासए रेवइए गाहावइणीए दोच्चंपि तच्चंपि एवं वुत्ते समाणे आसुरुत्ते ४ ओहिं पउंजइ २ ओहिणा आभोएइ २ रेवइं गाहावइणिं एवं वयासी—जाव उववज्जिहिसि, नो खलु कप्पइ गोयमा ! समणोवासगस्स अपच्छिम जाव भूसियसरीरस्स भत्तपाणपडियाइक्खियस्स परो सन्तेहिं तच्चेहिं तहिएहिं सब्भूएहिं अणिट्ठेहिं अकन्तेहिं अप्पिएहिं अमणुण्णेहिं अमणामेहिं वागरणेहिं वागररित्तए, तं गच्छ णं देवाणुप्पिया ! तुमं महासययं समणोवासयं एवं वयाहि—नो खलु देवाणुप्पिया ! कप्पइ समणोवासगस्स अपच्छिम जाव भत्तपाणपडियाइक्खियस्स परो सन्तेहिं जाव वागरित्तए, तुमे य णं देवाणुप्पिया ! रेवई गाहावइणी सन्तेहिं ४ अणिट्ठेहिं ६ वागरणेहिं वागरिया, तं णं तुमं एयस्स ठाणस्स आलोएहि जाव जहारिहं च पायच्छित्तं पडिवज्जाहि ३ । तए णं से भगवं गोयमे समणस्स भगवओ महावीरस्स तहत्ति एयमट्ठं विणएणं पडिसुणेइ २ तओ पडिणिक्खमइ २ रायगिहं नयरं मज्झंमज्झेणं अणुप्पविसइ २ जेणेव महासयगस्स समणोवासयस्स गिहे जेणेव महासयए समणोवासए तेणेव उवागच्छइ, तए णं से महासयए समणोवासए भगवं गोयमं एज्जमाणं पासइ

२ हट्ठ जाव हियए भगवं गोयमं वन्दइ नमंसइ, तए णं से भगवं गोयमे महासययं समणोवासयं एवं वयासी—एवं खलु देवाणुप्पिया ! समणे भगवं महावीरे एवामाइक्खइ भासइ पण्णवेइ परूवेइ—नो खलु कप्पइ देवाणुप्पिया ! समणोवासगस्स अपच्छिम जाव वागरित्तए, तुमे णं देवाणुप्पिया ! रेवई गाहावइणी सन्तेहिं जाव वागरिया, तं णं तुमं देवाणुप्पिया ! एयस्स ठाणस्स आलोएहि जाव पडिवज्जाहि ४ । तए णं से महासयए समणोवासए भगवओ गोयमस्स तहत्ति एयमट्ठं विणएणं पडिसुणेइ २ तस्स ठाणस्स आलोएइ जाव अहारिहं च पायच्छित्तं पडिवज्जइ, तए णं से भगवं गोयमे महासयगस्स समणोवासयस्स अन्तियाओ पडिणिक्खमइ २ रायगिहं नगरं मज्झंमज्झेणं निग्गच्छइ २ जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छइ २ समणं भगवं महावीरं वन्दइ नमंसइ २ संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे विहरइ ५ । तए णं समणे भगवं महावीरे अन्नया कयाई रायगिहाओ नयराओ पडिनिक्खमइ २ बहिया जणवयविहारं विहरइ ६ ॥ सू० ५३ ॥

तए णं से महासयए समणोवासए बहूहिं सील जाव भावेत्ता वीसं वासाइं समणोवासग—परियायं पाउणित्ता एकारस उवासगपडिमाओ सम्मं काएणं फासित्ता मासियाए संलेहणाए अप्पाणं भूसित्ता सट्ठिं भत्ताइं अणसणाए छेदेत्ता आलोइयपडिक्कन्ते समाहिपत्ते कालमासे कालं किच्चा सोहम्मे कप्पे अरुणवडिंसए विमाणे देवत्ताए उववन्ने । चत्तारि पलिओवमाइं ठिई । महाविदेहे वासे सिज्झिहिइ ॥ निक्खेवो ॥ सू० ५४ ॥ सत्तमस्स अङ्गस्स उवासगदसाणं अट्ठमं अज्झयणं समत्तं ॥

॥ इति अष्टममध्ययनम् ॥ ८ ॥

—:o:—

॥९॥ अथ श्री नन्दिनीपितृनामकं नवममध्ययनम् ॥

नवमस्स उक्खेवो, एवं खलु जम्बू ! ते णं काले णं ते णं समए णं सावत्थी नयरी कोट्ठए चेइए जियसत्तू राया, तत्थ णं सावत्थीए नयरीए नन्दिणीपिया नामं गाहावई परिवसइ अड्ढे जहा आणंदो नवरं चत्तारि हिरण्णकोडीओ निहाणपउत्ताओ चत्तारि हिरण्णकोडिओ वुड्ढिपउत्ताओ चत्तारि हिरण्ण-कोडीओ पवित्थरपउत्ताओ चत्तारि वया दसगोसाहस्सिएणं वएणं अस्सिणी भारिया १। सामी समोसढे जहा आनन्दो तहेव गिहिधम्मं पडिवज्जइ, सामी बहिया विहरइ, तए णं से नन्दिणीपिया समणोवासए जाए जाव विहरइ २। तए णं तस्स नन्दिणीपियस्स समणोवासयस्स बहूहिं सीलव्व-यगुण जाव भावेमाणस्स चोद्दस संवच्छराइं वइक्कन्ताइं तहेव जेट्ठं पुत्तं ठवेइ धम्मपण्णत्तिं उवसंपज्जिता णं विहरइ, वीसं वासाइं परियागं नाणत्त (पाउणित्ता जाव) अरुणगवे विमाणे उववाओ। महाविदेहे वासे सिज्झिहिइ ३॥ निक्खेवो ॥ सूत्रं ५५ ॥ उवासगदसाणं नवमं अज्झयणं समत्तं ॥

॥ इति नवममध्ययनम् ॥ ९ ॥

॥१०॥ अथ श्री सालिहीपितृनामकं दशममध्ययनम् ॥

दसमस्स उक्खेवो, एवं खलु जम्बू ! तेणं कालेणं तेणं समएणं सावत्थी नयरी कोट्ठए चेइए जियसत्तू राया, तत्थ णं सावत्थीए नयरीए सालिहीपिया नामं गाहावई परिवसइ अड्ढे दित्ते जहा आणंदो, नवरं चत्तारि हिरण्णकोडीओ निहाणपउत्ताओ चत्तारि हिरण्णकोडिओ वुड्ढिपउत्ताओ चत्तारि हिरण्णकोडीओ पवित्थरपउत्ताओ चत्तारि वया दसगोसाहस्सिएणं वएणं फग्गुणी भारिया १। सामी समोसढे जहा आणन्दो तहेव गिहिधम्मं पडिवज्जइ, जहा कामदेवो तहा जेट्ठं पुत्तं ठवेत्ता पोसहसालाए समणस्स भगवओ महावीरस्स धम्मपण्णत्तिं उवसम्पज्जित्ता

णं विहरइ २ । नवरं निरुवसग्गाओ एकारसवि उवासगपडिमाओ तहेव भाणियव्वाओ, एवं कामदेवगमेणं नेयव्वं जाव सोहम्मे कप्पे अरुणकीले विमाणे देवत्ताए उववन्ने चत्तारि पलिओवमाइं ठिई महाविदेहे वासे सिज्झिहिइ ३ ॥ सू० ५६ ॥

दसराहवि पणरसमे संवच्छरे वट्टमाणाणं चिन्ता । दसराहवि वीसं वासाइं समणोवासयपरियाओ ॥ एवं खलु जम्बू ! समणेणं जाव सम्पत्तेणं सत्तमस्स अङ्गस्स उवासगदसाणं दसमस्स अज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते ॥ सू० ५७ ॥

वाणियगामे चम्पा दुवे य वाणारसीए नयरीए । आलभिया य पुरवरी कम्पिल्लपुरं च बोद्धव्वं ॥ १ ॥ पोलासं रायगिहं सावत्थीए पुरीए दोन्नि भवे । एए उवासगाणं नयरा खलु होन्ति बोद्धव्वा ॥ २ ॥ सिवनन्द भद्द सामा धन्न बहुल पूस अग्गिमित्ता य । रेवइ अस्सिणि तह फग्गुणी य भज्जाण नामाइं ॥ ३ ॥ ओहिण्णाण पिसाए माया वाहिधण-उत्तरिज्जे य । भज्जा य सुव्वया दुव्वया निरुवसग्गया दोन्नि ॥ ४ ॥ अरुणे अरुणाभे खलु अरुणप्पहअरुणकन्तसिट्ठे य । अरुणज्झए य छट्ठे भू(चू)यवडिंसे गवे कीले ॥ ५ ॥ चाली सट्ठि असीई सट्ठी सट्ठी य सट्ठि दस सहस्सा । असिई चत्ता चत्ता एए वइयाण य सहस्साणं ॥ ६ ॥ बारस अट्ठारस चउवीसं तिविहं अट्ठरसाइ नेयं । धन्नेण तिचोविसं बारस बारस य कोडीओ ॥ ७ ॥ उल्लणदन्तवणफले अब्भिङ्गणुव्वट्टणे सिणाणे य । वत्थ विलेवण पुप्फे आभरणं धूवपेज्जाइ ॥ ८ ॥ भक्खोयण सूय घए सागे माहुरजेमणऽन्नपाणे य । तम्बोले इगवीसं आणन्दाईण अभिग्गहा ॥ ९ ॥ उड्ढं सोहम्मपुरे लोलुए अहे उत्तरे हिमवन्ते । पंचसए तह तिदिसिं ओहिण्णाणं तु दसगणस्स ॥ १० ॥ दंसण-वय-सामाइय पोसह-पडिमा-अबम्भ-सच्चित्ते । आरम्भ-पेस-उद्दिट्ठ-वज्जए समणभूए य ॥ ११ ॥ इक्कारस

पडिमाओ वीसं परियाओ अणसणं मासे। सोहम्मे चउपलिया महाविदेहम्मि सिज्झिहिइ ॥ सू० ५८ ॥ उवासगदसाणं दसमं अज्झयणं समत्तं ॥

॥ इति दशममध्ययनम् ॥ १० ॥

उवासगदसाओ समत्ताओ ॥ उवासगदसाणं सत्तमस्स अङ्गस्स एगो सुयखन्धो दस अज्झयणा, एकसरगा दससु चेव दिवसेसु उद्दिस्सिज्जंति (उद्दिस्संति) तओ सुयखन्धो समुद्दिस्सिज्जइ (समुद्दिस्सइ) अणुण्णविज्जइ दोसु दिवसेसु, अङ्गं तहेव ॥ सू० ५९ ॥

॥ इति श्रीमदुपासकदशाङ्ग-सूत्रं समाप्तम् ॥

(ग्रन्थाग्रं ८१२)

—:०:—

॥ अर्हम् ॥

पंचमगणभृत्श्रीमत्सुधर्मस्वामि-प्रणीतं

॥ श्रीमदन्तकृद्दशाङ्गसूत्रम् ॥

—:०:—

॥१॥ अथ प्रथमो वर्गः ॥

ते णं काले णं ते णं समए णं चंपानामं नगरी होत्था पुन्नभद्दे चेतिए वणसंडे उज्जाणे वन्नओ, ते णं काले णं ते णं समए णं अज्ज-सुहम्मे समोसरिए परिसा निग्गया जाव पडिगया, तेणं कालेणं २ अज्जसुहम्मस्स अंतेवासी अज्जजंबू जाव पज्जुवासति, एवं वदासि—जति णं भंते ! समणेणं भगवया महावीरेणं आदिकरेणं जाव संपत्तेणं सत्तमस्स अंगस्स उवासगदसाणं अयमट्ठे पन्नत्ते, अट्ठमस्स णं भंते ! अंगस्स अंतगड-दसाणं समणेणं भगवया महावीरेणं जाव संपत्तेणं के अट्ठे पराणत्ते ? एवं खलु जंबू ! समणेणं भगवया महावीरेणं जाव संपत्तेणं अट्ठमस्स अंगस्स अंतगडदसाणं अट्ठ वग्गा पन्नत्ता १। जति णं भंते ! समणेणं जाव संपत्तेणं अट्ठमस्स अंगस्स अंतगडदसाणं अट्ठ वग्गा पन्नत्ता, पढमस्स णं भंते ! वग्गस्स अंतगडदसाणं समणेणं जाव संपत्तेणं कइ अज्झयणा पन्नत्ता ?, एवं खलु जंबू ! समणेणं जाव संपत्तेणं अट्ठमस्स अंगस्स अंतगडदसाणं पढमस्स वग्गस्स दस अज्झयणा पन्नत्ता, तंजहा—गोयम समुद्द सागर गंभीरे चेव होइ थिमिते य। अयले कंपिल्ले खलु अक्खोभ पसेणती विराहू ॥ १ ॥ २। जति णं भंते ! समणेणं जाव संपत्तेणं अट्ठमस्स अंगस्स अंतगडदसाणं पढमस्स वग्गस्स दस अज्झयणा पन्नत्ता,

पढमस्स णं भंते ! अज्झयणस्स अंतगडदसाणं समणेणं जाव संपत्तेणं के अट्ठे पन्नत्ते ?, एवं खलु जंबू ! ते णं काले णं २ बारवतीणामं नगरी होत्था, दुवालसजोयणायामा नवजोअणवित्थिण्णा धणवइमतिनिम्माया चामीकरपागारा नाणामणिपंचवन्नकविसीसगमंडिया सुरम्मा अलकापुरिसंकासा पमुदितपक्कीलिया पच्चक्खं देवलोगभूया पासादीया ४, तीसे णं बारवतीनयरीए बहिया उत्तरपुरच्छिमे दिसीभागे एत्थ णं रेवतते नामं पव्वते होत्था, वण्णतो, तत्थ णं रेवतते पव्वते नंदणवणे नामं उज्जाणे होत्था वन्नओ, सुरप्पिए नामं जक्खायतणे होत्था पोराणे०, से णं एगेणं वणसंडेणं०, असोगवरपायवे ३। तत्थ णं बारवतीनयरीए कण्हे णामं वासुदेवे राया परिवसति महता हिमवंतमहंत-मलय-मंदरमहिंदसारे, रायवन्नतो, से णं तत्थ समुद्दविजयपामोक्खाणं दसण्हं दसाराणं बलदेवपामोक्खाणं पंचण्हं महावीराणं पज्जुन्नपामोक्खाणं अद्धुट्ठाणं कुमारकोडीणं संबपामोक्खाणं सट्ठीए दुद्दंतसाहस्सीणं महसेणपामोक्खाणं छप्पण्णाए बलवगसाहस्सीणं वीरसेणपामोक्खाणं एगवीसाते वीरसाहस्सीणं उग्गसेणपामोक्खाणं सोलसण्हं रायसाहस्सीणं रुप्पिणियापामोक्खाणं सोलसण्हं देविसाहस्सीणं अणंगसेणापामोक्खाणं अणेगाणं गणियासाहस्सीणं अन्नेसिं च बहूणं ईसर जाव सत्थवाहाणं बारवतीए नयरीए अद्धभरहस्स य समत्थस्स आहेवच्चं जाव विहरति ४। तत्थ णं बारवतीए नयरीए अंधगवण्ही णामं राया परिवसति, महता हिमवंत महंत-मलय-मंदर-महिंदसारे जाव पसंतडिंबडमरं रज्जं पसासेमाणे विहरति, तस्स णं अंधकवण्हिस्स रन्नो धारिणी नामं देवी होत्था वन्नओ, तते णं सा धारिणी देवी अन्नदा कदाइं तंसि तारिसगंसि सयणिज्जंसि एवं जहा महब्बले, सुमिणदंसणकहणा जम्मं बालत्तणं कलातो य। जोव्वणपाणिग्गहणं कंता(णा) पासायभोगा य॥ १॥ नवरं गोयमो नामेणं अट्ठण्हं रायवरकन्नाणं एगदिवसेणं पाणिं गेण्हावेंति अट्ठट्ठओ

दाओ ५ । ते णं काले णं २ अरहा अरिट्ठनेमी आदिकरे जाव विहरति चउव्विहा देवा आगया कराहेवि णिग्गए, तते णं तस्स गोयमस्स कुमारस्स जहा मेहे तहा णिग्गते धम्मं सोचा जं नवरं देवाणुप्पिया ! अम्मापियरो आपुच्छामि देवाणुप्पियाणं तओ पच्छा मुंडे भवित्ताणं पव्वइस्सामि, अहासुहं देवाणुप्पिया ! एवं जहा मेहे जाव अणगारे जाते जाव इणमेव णिग्गंथं पावयणं पुरओ काउं विहरति ६ । तते णं से गोयमे अन्नदा कयाइ अरहतो अरिट्ठनेमिस्स तहारूवाणं थेराणं अंतिए सामाइयमाइयाइं एक्कारस अंगाइं अहिज्जति २ बहूहिं चउत्थ जाव भावेमाणे विहरति, ते अरिहा अरिट्ठनेमी अन्नदा कदाइ बारवतीतो नंदणवणातो पडिनिक्खमति बहिया जणवयविहारं विहरति ७ । तते णं से गोयमे अणगारे अन्नदा कदाई जेणेव अरहा अरिट्ठनेमी तेणेव उवागच्छति २ अरहं अरिट्ठनेमिं तिक्खुत्तो आदाहिण पदाहिणं तिक्खुत्तोकट्टु एवं वयासी—इच्छामि णं भंते ! तुब्भेहिं अब्भणुराणाते समाणे मासियं भिक्खुपडिमं उवसंपज्जित्ताणं विहरेत्तए, एवं जहा खंदतो तहा बारस भिक्खुपडिमातो फासेति २ गुणरयणंपि तवोकम्मं तहेव फासेति निरवसेसं जहा खंदतो तहा चिंतेति तहा आपुच्छति तहा थेरेहिं सद्धिं सेत्तुञ्जं दुरूहति मासियाए संलेहणाए बारस वरिसाइं परिताते जाव सिद्धे ५, ८ ॥ सूत्रं १ ॥ एवं खलु जंबू ! समणेणं जाव संपत्तेणं अट्ठमस्स अंगस्स अंतगडदसाणं पढमवग्गपढमअज्झयणस्स अयमट्ठे पन्नत्ते त्तिबेमि ॥ पढमं अज्झयणं सम्मत्तं ॥ एवं जहा गोयमो तहा सेसा अंधयवरिह पिया धारिणी माता समुद्दे सागरे गंभीरे थिमिए अयले कंपिल्ले अक्खोभे पसेणाती विराहुए एए एगगमा, पढमो वग्गो दस अज्झयणा पन्नत्ता ॥ सू० २ ॥ पढमो वग्गो समत्तो ॥ १ ॥

—:०:—

॥२॥ अथ द्वितीयो वर्गः ॥

जति दोच्चस्स वग्गस्स उक्खेवतो, तेणं कालेणं २ बारवतीते णगरीए वण्हि पिया धारिणी माता–अक्खोभसागरे खलु समुद्दहिमवंत अचलनामे य। धरणे य पूरणेवि य अभिचंदे चेव अट्ठमते ॥ १ ॥ जहा पढमो वग्गो तहा सव्वे अट्ठ अज्झयणा गुणरयणतवोकम्मं, सोलस वासाइं परियाओ सेत्तुंजे मासियाए संलेहणाए सिद्धी ॥ सू० ३ ॥ बीओ वग्गो सम्मत्तो ॥ २ ॥

॥३॥ अथ तृतीयो वर्गः ॥

जति तच्चस्स उक्खेवतो, एवं खलु जंबू ! तच्चस्स वग्गस्स अंतगडदसाणं तेरस अज्झयणा पन्नत्ता, तंजहा–अणीयसे १ अणंतसेणे २ अणिहय ३ वि(रि)ऊ ४ देवजसे(सेणे) ५ सत्तुसेणे ६ सारणे ७ गए ८ सुमुहे ९ दुम्मुहे १० कूवए ११ दारुए १२ अणादिट्ठी १३, १। जति णं भंते ! समणेणं जाव संपत्तेणं अट्ठमस्स अंगस्स अंतगडदसाणं तच्चस्स वग्गस्स तेरस अज्झयणा पन्नत्ता, तच्चस्स णं भंते ! वग्गस्स पढमअज्झयणस्स अंतगडदसाणं के अट्ठे पन्नत्ते ? एवं खलु जंबू ! तेणं कालेणं २ भद्दिलपुरे नामं नगरे होत्था, वन्नओ २। तस्स णं भद्दिलपुरस्स उत्तरपुरच्छिमे दिसीभाए सिरिवणे नामं उज्जाणे होत्था वन्नओ, जितसत्तु राया, तत्थ णं भद्दिलपुरे नयरे नागे नामं गाहावती होत्था अड्ढे जाव अपरिभूए परिवसइ, तस्स णं नागस्स गाहावतिस्स सुलसा नामं भारिया होत्था सूमाला (सोमाला) जाव सुरूवा, तस्स णं नागस्स नाहावतिस्स पुत्ते सुलसाए भारियाए अत्तए अणीय(ज)से नाम कुमारे होत्था सूमाले (सुकुमाले) जाव सुरूवे पंचधातिपरिक्खित्ते, तंजहा–खीरधाती मज्जणधाई-मंडणधाई-कीलावणधाती-अंकधाई जहा दढपइन्ने जाव गिरि-कंदरमल्लीणेव्व

चंपगवरपायवे सुहंसुहेणं परिवड्ढति ३। तते णं तं अणियसं कुमारं सातिरेगअट्ठवासजायं अम्मापियरो कलायरिय जाव भोगसमत्थे जाते यावि होत्था, तते णं तं अणियसं कुमारं उम्मुक्कबालभावं जाणेत्ता अम्मापियरो सरिसियाणं जाव बत्तीसाए इब्भवरकन्नगाणं एगदिवसे पाणिं गेराहावेंति, तते णं से नागे गाहावती अणीयसस्स कुमारस्स इमं एयारूवं पीतिदाणं दलयति, तंजहा— बत्तीसं हिरन्नकोडीओ जहा महब्बलस्स जाव उप्पिं पासायवरगए फुट्टमाणेहिं मुइंगमत्थएहिं भोगभोगाइं भुंजमाणे विहरति ४। ते णं काले णं २ अरहा अरिट्ठ जाव समोसढे सिरिवणे उज्जाणे जहा जाव विहरति परिसा णिग्गया, तते णं तस्स अणीयसस्स तं महा जहा गोयमे तहा नवरं सामाइयमातियाइं चोद्दस पुव्वाइं अहिज्जति वीसं वासातिं परिताओ सेसं तहेव जाव सेत्तुञ्जे पव्वते मासियाए संलेहणाए जाव सिद्धे ५। एवं खलु जंबू! समणेणं जाव संपत्तेणं अट्ठमस्स अंगस्स अंतगडदसाणं तच्चस्स वग्गस्स पढमअज्झयणस्स अयमट्ठे पन्नत्ते, एवं जहा अणीयसे एवं सेसावि अणंतसेणे जाव सत्तुसेणे छअज्झयणा एकगमा बत्तीसदो दाओ वीसं वासा परियातो चोद्दस सेत्तुञ्जे सिद्धा ५॥ सू० ४॥ छट्ठमज्झयणं समत्तं॥ ते णं काले णं २ बारवतीए नयरीए जहा पढमे नवरं वसुदेवे राया धारिणी देवी सीहो सुमिणे सारणे कुमारे पन्नासतो दातो चोद्दस पुव्वा वीसं वासा परिताओ सेसं जहा गोयमस्स जाव सेत्तुञ्जे सिद्धे॥ सू० ५॥ जति उक्खेओ अट्ठमस्स एवं खलु जंबू! ते णं काले णं २ बारवतीए नगरीए जहा पढमे जाव अरहा अरिट्ठनेमी सामी समोसढे १। ते णं काले णं २ अरहतो अरिट्ठनेमिस्स अंतेवासी छ अणगारा भायरो सहोदरा होत्था सरिसया सरित्तया सरिव्वया नीलुप्पल-गवलगुलिय-अयसिकुसुमप्पगासा सिरिवच्छंकियवच्छा कुसुमकुंडलभद्दलया नलकुब्बरसमाणा, तते णं ते छ अणगारा जं चेव दिवसं मुंडा भवेत्ता अगाराओ अणगारियं पव्वतिया

तं चेव दिवसं अरहं अरिट्ठनेमीं वंदंति णमंसंति २ एवं वयासी—इच्छामो णं भंते ! तुब्भेहिं अब्भणुन्नाया समाणा जावज्जीवाए छट्ठंछट्ठे णं अणिक्खित्तेणं तवकम्म(तवोकम्मेणं)संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे विहरित्तते, अहासुहं देवाणुप्पिया ! मा पडिबंध करेह, तते णं छ अणगारा अरहया अरिट्ठनेमिणा अब्भणुराणाया समाणा जावज्जीवाए छट्ठंछट्ठे णं जाव विहरति, तते णं छ अणगारा अन्नया कयाइं छट्ठक्खमणपारणयंसि पढमाए पोरिसीए सज्झायं करेंति जह गोयमो जाव इच्छामो णं छट्ठक्खमणस्स पारणए तुब्भेहिं अब्भणुन्नाया समाणा तिहिं संघाडएहिं बारवतीए नगरीए जाव अडित्तते, अहासुहं, देवाणुप्पिया ! तते णं ते छ अणगारा अरहया अरिट्ठनेमिणा अब्भणुराणाता समाणा अरहं अरिट्ठनेमिं वंदंति णमंसंति २ अरहतो अरिट्ठनेमिस्स अंतियातो सहसंबवणातो पडिनिक्खमंति २ तिहिं संघाडएहिं अतुरियं जाव अडंति, तत्थ णं एगे संघाडए बारवतीए नगरीए उच्चनीयमज्झिमाइं कुलाइं घरसमुदाणस्स भिक्खायरियाते अडमाणे २ वसुदेवस्स रन्नो देवतीए देवीते गेहं अणुपविट्ठे, तते णं सा देवती देवी ते अणगारे एज्जमाणे पासति पासेत्ता हट्ठ जाव हियया आसणातो अब्भुट्ठेति २ सत्तट्ठ पयाइं तिक्खुत्तो आयाहिणपयाहिणं करेति २ वंदति णमंसति २ जेणेव भत्तघरते तेणेव उवागच्छति २ (उवागया) सीहकेसराणं मोयगाणं थालं भरेति ते अणगारे पडिलाभेति वंदति णमंसति २ पडिविसज्जेति, तदाणंतरं च णं दोच्चे संघाडते बारवतीते उच्च जाव विसज्जेति ३। तदाणंतरं च णं तच्चे संघाडते बारवतीए नगरीए उच्चनीए जाव पडिलाभेति २ एवं वदासि—किराणं देवाणुप्पिया ! कराहस्स वासुदेवस्स इमीसे बारवतीए नगरीते नवजोयण० पच्चक्खदेवलोगभूताए समणा निग्गंथा उच्चणीय जाव अडमाणा भत्तपाणं णो लभंति जन्नं ताइं चेव कुलाइं भत्तपाणाए भुज्जो २ अणुप्पविसंति ?, तते णं ते अणगारा देवतिं देवीं एवं वयासि—नो खलु देवाणु-

प्पिया ! कण्हस्स वासुदेवस्स इमीसे बारवतीते नगरीते जाव देवलोग-भूयाते समणा निग्गंथा उच्चनीय जाव अडमाणा भत्तपाणं णो लभंति नो (जं) चेव णं ताइं ताइं कुलाइं दोच्चंपि तच्चंपि भत्तपाणाए अणुपविसंति, एवं खलु देवाणुप्पिया ! अम्हे भद्दिलपुरे नगरे नागस्स गाहावतिस्स पुत्ता सुलसाते भारियाए अत्तया छ भायरो सहोदरा सरिसया जाव नलकुब्बर-समाणा अरहओ अरिट्ठनेमिस्स अंतिए धम्मं सोचा संसारभउव्विग्गा भीया जम्मणमरणाणं मुंडा जाव पव्वइया, तते णं अम्हे जं चेव दिवसं पव्वतिता तं चेव दिवसं अरहं अरिट्ठनेमिं वंदामो नमंसामो २ इमं एयारूवं अभिग्गहं अभिगेण्हामो–इच्छामो णं भंते ! तुब्भेहिं अब्भणुराणाया समाणा जाव अहासुहं देवाणुप्पिया ! मा पडिबंधं करेह, तते णं अम्हे अरहतो अब्भ-णुराणाया समाणा जावज्जीवाए छट्टंछट्टेणं जाव विहरामो, तं अम्हे अज्ज छट्ठक्खमणपारणयंसि पढमाए पोरिसिए जाव अडमाणा तव गेहं अणुप्प-विट्ठा, तं नो खलु देवाणुप्पिए ! ते चेव णं अम्हे, अम्हे णं अन्ने, देवतिं देविं एवं वदंति २ जामेव दिसं पाउब्भूया तामेव दिसं पडिगता ४। तीसे देवतीते देवीए अयमेयारूवे अज्झत्थिए ४ समुप्पन्ने, एवं खलु अहं पोला-सपुरे नगरे अतिमुत्तेणं कुमारसमणेणं बालत्तणे वागरिता तुमणणं देवाणु-प्पिया ! अट्ठ पुत्ते पयातिस्ससि सरिसए जाव नलकुब्बरसमाणे नो चेव णं भरहे वासे अन्नातो अम्मयातो तारिसए पुत्ते पयातिस्संति तं णं मिच्छा, इमं णं पच्चक्खमेव दिस्सति भरहे वासे अन्नातोवि अम्मताओ खलु एरिसए जाव पुत्ते पयायाओ, तं गच्छामि णं अरहं अरिट्ठनेमिं वंदामि २ इमं च णं एयारूवं वागरणं पुच्छिस्सामीतिकट्टु एवं संपेहेति २ कोडुं-बियपुरिसा सद्दावेति २ एवं वयासी–लहुकरणप्पवरं (तुब्भे य लहुकरण-जाणप्पवरं) जाव उवट्ठवेंति, जहा देवाणंदा जाव पज्जुवासति, तए णं ते अरहा अरिट्ठनेमी देवतिं देवं एवं वयासी–से नूणं तव देवती ! इमे छ

अणगारे पासेत्ता अयमेयारूवे अब्भत्थिए ४–एवं खलु अहं पोलासपुरे नगरे अइमुत्तेणं तं चेव जाव णिग्गच्छसि २ जेणेव ममं अंतियं हव्वमागया से नूणं देवती अत्थे समट्ठे ?, हंता अत्थि, एवं खलु देवाणुप्पिया ! ५ । ते णं काले णं २ भद्दिलपुरे नगरे नागे नामं गाहावती परिवसति अड्ढे० तस्स णं नागस्स गाहावइस्स सुलसानामं भारिया होत्था, सा सुलसा गाहावइणी बालत्तणे चेव निमित्तएणं वागरिता–एस णं दारिया णिंदू भविस्सति, तते णं सा सुलसा बालप्पभिति चेव हरिणेगमेसीभत्तया यावि होत्था, तते णं सा हरिणेगमेसिस्स पडिमं करेति २ कल्लाकल्लिं ण्हाता जाव पायच्छित्ता उल्लपडसाडया महरिहं पुप्फच्चणं करेति २ जंनुपायपडिया पणामं करेति ततो पच्छा आहारेति वा नीहारेति वा वरति वा, तते णं तीसे सुलसाए गाहावइणीए भत्तिबहुमाणसुस्सूसाए हरिणेगमेसीदेवे आराहिते यावि होत्था ६ । तते णं से हरिणेगमेसी देवे सुलसाए गाहावइणीए अणुकंपणट्ठयाए सुलसं गाहावतिणिं तुमं च दोवि समउउयाओ करेति, तते णं तुब्भे दोवि सममेव गब्भे गिण्हह सममेव गब्भे परिवहह सममेव दारए पयायह, तए णं सा सुलसा गाहावतिणी विणिहायमावन्ने दारए पयाइति, तते णं से हरिणेगमेसी देवे सुलसाए अणुकंपणट्ठाते विणिहायमावण्णए दारए करयलसंपुडेणं गेण्हति २ तव अंतियं साहरति २ तं समयं च णं तुमंपि णवण्हं मासाणं० सुकुमालदारए पसवसि, जेवि अ णं देवाणुप्पिए ! तव पुत्ता तेवि य तव अंतिताओ करयलसंपुडेणं गेण्हति २ सुलसाए गाहावइणीए अंतिए साहरति, तं तव चेव णं देवइ ! एए पुत्ता णो चेव सुलसाते गाहाववइणीए तते णं सा देवती देवी अरहओ अरिट्ठनेमिस्स अंतिए एयमट्ठं सोच्चा निसम्म हट्ठतुट्ठ जाव हियया अरहं अरिट्ठनेमिं वंदति नमंसति २ जेणेव ते छ अणगारा तेणेव उवागच्छति ते छप्पि अणगारा वंदति णमंसति २ आगतपण्हुत्ता

पप्फुतलोयणा कंचुयपडिक्खित्तया दरियवलयबाहा धाराहयकलंबपुप्फगंपिव समूससियरोमकूवा ते छप्पि अणगारे अणिमिसाते दिट्ठीए पेहमाणी २ सुचिरं निक्खिति २ वंदति णमंसति २ जेणेव अरिहा अरिट्ठनेमी तेणेव उवागच्छति अरहं अरिट्ठनेमीं तिक्खुत्तो आयाहिणपयाहिणं करेति २ वंदति णमंसति २ तेणेव धम्मियं जाणं दुरूहति २ जेणेव बारवतीणगरी तेणेव उवागच्छति २ बारवतिं नगरिं अणुप्पविसति २ जेणेव सते गिहे जेणेव बाहिरिया उवट्ठाणसाला तेणेव उवागच्छति २ त्ता धम्मियातो जाणप्पवरातो पच्चोरुहति २ जेणेव सते वासघरे जेणेव सए सयणिज्जे तेणेव उवागच्छति २ त्ता सयंसि सयणिज्जंसि निसीयति ७। तते णं तीसे देवतीते देवीए अयं अब्भत्थिते ४ समुप्पणे—एवं खलु अहं सरिसते जाव नलकुब्बरसमाणे सत्त पुत्ते पयाता, नो चेव णं मए एगस्सवि बालत्तणाते समुब्भूते, एसविय णं कण्हे वासुदेवे छण्हं छण्हं मासाणं ममं अंतियं पायवंदते हव्वमागच्छति, तं धन्नातो णं ताओ अम्माओ जासिं मराणे णियगकुच्छिसंभूतयाइं थणदुद्धलुद्धयाइं महुरसमुल्लावयाइं मंमणपजंपियाइं थणमूलकक्खदेसभागं अभिसरमाणाति मुद्धयाइं पुणो य कोमलकमलोवमेहिं हत्थेहिं गिण्हिऊण उच्छंगि णिवेसियाइं देंति समुल्लावते सुमहुरे पुणो २ मंजुलप्पभणिते, अहं णं अधन्ना अपुन्ना अकयपुन्ना एत्तो एक्कतरमपि न पत्ता, ओहयमणसंकप्पा जाव झियायति ८। इमं च णं कण्हे वासुदेवे ण्हाते जाव विभूसिते देवतीए देवीए पायवंदते हव्वमागच्छति, तते णं से कण्हे वासुदेवे देवइं देविं जाव पासति २ त्ता देवतीए देवीए पायग्गहणं करेति २ देवतीं देवीं एवं वदासि—अन्नदा णं अम्मो ! तुब्भे ममं एज्जमाणं पासेत्ता हट्ठ जाव भवह, किराणं अम्मो ! अज्ज तुब्भे ओहय जाव झियायह ?, तए णं सा देवती देवी कण्हं वासुदेवं एवं वयासि—एवं खलु अहं पुत्ता ! सरिसए जाव समाणे सत्त पुत्ते पयाया

नो चेव णं मए एगस्सवि बालत्तणे अणुब्भूते तुमंपिय णं पुत्ता ! ममं छराहं २ मासाणं ममं अंतियं पादवंदते हव्वमागच्छसि तं धन्नाओ णं ताओ अम्मयातो जाव झियायामि, तए णं से कराहे वासुदेवे देवतिं देविं एवं वयासि—मा णं तुब्भे अम्मो ! ओहय जाय झियायह अहरणं तहा घत्तिस्सामि जहा णं ममं सहोदरे कणीयसे भाउए भविस्सतीतिकट्टु देवतिं देविं ताहिं इट्ठाहिं वग्गूहिं समासासेति २ ततो पडिनिक्खमति २ जेणेव पोसहसाला तेणेव उवागच्छइ २ जहा अभओ नवरं हरिणेगमेसिस्स अट्ठमभत्तं पगेराहति जाव अंजलिं कट्टु एवं वदासि—इच्छामि णं देवाणुप्पिया ! सहोदरं कणीयसं भाउयं विदिराणं, तते णं से हरिणेगमेसी कराहं वासुदेवं एवं वदासी—होहिति णं देवाणुप्पिया ! तव देवलोयचुते सहोदरे कणीयसे भाउए से णं उम्मुक्क जाव अणुप्पत्ते अरहतो अरिट्ठनेमिस्स अंतियं मुंडे जाव पव्वतिस्सति, कराहं वासुदेवं दोच्चंपि तच्चंपि एवं वदति २ जामेव दिसं पाउब्भूए तामेव दिसं पडिगते ९। तते णं से कराहे वासुदेवे पोसहसालाओ पडिनिक्खमति २ जेणेव देवती देवी तेणेव उवागच्छति २ देवताए देवीए पायग्गहणं करेति २ एवं वयासि—होहिति णं अम्मो ! मम सहोदरे कणीयसे भाउएत्तिकट्टु देवतिं देविं ताहिं इट्ठाहिं जाव आसासेति २ जामेव दिसं पाउब्भूते तामेव दिसं पडिगते १०। तए णं सा देवती देवी अन्नदा कदाइं तंसि तारिसगंसि जाव सीहं सुमिणे पासेत्ता पडिबुद्धा जाव पाढया हट्ठहियया परिवहति, तते णं सा देवती देवी नवराहं मासाणं जासुमिणारत्त-बंधुजीवत-लक्खारससरसपारिजातक-तरुणदिवाकर-समप्पभं सव्वनयणकंतं सुकुमालं जाव सुरूवं गजतालुयसमाणं दारयं पयाया जम्मणं जहा मेहकुमारे जाव जम्हा णं अम्हं इमे दारते गजतालुसमाणे तं होउ णं अम्ह एतस्स दारगस्स नामधेज्जे गयसुकुमाले २, तते णं तस्स दारगस्स अम्मापियरे नामं करेंति गयसुकुमालोत्ति

सेसं जहा मेहे जाव अलं भोगसमत्थे जाते यावि होत्था ११। तत्थ णं बारवतीए नगरीए सोमिले नामं माहणे परिवसति, अड्ढे रिउव्वेद जाव सुपरिनिट्ठिते यावि होत्था, तस्स णं सोमिलस्स माहणस्स सोमसिरी नामं माहणी होत्था सूमाला जाव सुरूवा, तस्स णं सोमिलस्स धूता सोमसिरीए माहणीए अत्तया सोमानामं दारिया होत्था, सोमाला जाव सुरूवा, रूवेणं जाव लावण्णेणं उक्किट्ठा उक्किट्ठसरीरा यावि होत्था, तते णं सा सोमा दारिया अन्नया कदाइ राहाता जाव विभूसिया बहूहिं खुज्जाहिं जाव परिक्खित्ता सताती गिहातो पडिनिक्खमति २ जेणेव रायमग्गे तेणेव उवागच्छति २ रायमग्गंसि कणगतिंदूसएणं कीलमाणी चिट्ठति १२। ते णं काले णं २ अरहा अरिट्ठनेमी समोसढे परिसा निग्गया, तते णं से कराहे वासुदेवे इमीसे कहाए लद्धट्ठे समाणे राहाते जाव विभूसिए गयसुकुमालेणं कुमारेणं सद्धिं हत्थिखंधवरगते सकोरंट-मल्लदामेणं छत्तेणं धरेज्जमाणेणं सेअवरचामराहिं उद्धुव्वमाणीहिं बारवईए नयरीए मज्झंमज्झेणं अरहतो अरिट्ठनेमिस्स पायवंदते णिग्गच्छमाणे सोमं दारियं पासति २ सोमाए दारियाए रूवेण य जोव्वणेण य लावण्णेण य जाव विम्हिए, तए णं कराहे वासुदेवे कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ २ एवं वदासि—गच्छह णं तुब्भे देवाणुप्पिया सोमिलं माहणं जायित्ता सोमं दारियं गेराहह २ कन्नंतेउरंसि पक्खिवह, तते णं एसा गयसुकुमालस्स कुमारस्स भारिया भविस्सति, तते णं कोडुंबिय जाव पक्खिवंति १३। तते णं से कराहे वासुदेवे बारवतीए नगरीए मज्झंमज्झेणं निग्गच्छति णिग्गच्छित्ता जेणेव सहसंबवणे उज्जाणे जाव पज्जुवासति, तते णं अरहा अरिट्ठनेमी कराहस्स वासुदेवस्स गयसुकुमालस्स कुमारस्स तीसे य धम्मकहाए कराहे पडिगते १४। तते णं से गयसुकुमाले अरहतो अरिट्ठनेमिस्स अंतियं धम्मं सोच्चा जं नवरं अम्मापियरं आपुच्छामि, जहा मेहो महेलियावज्जं जाव

वड्ढियकुले, तते णं से कराहे वासुदेवे इमीसे कहाए लद्धट्ठे समाणे जेणेव गयसुकुमाले तेणेव उवागच्छति २ गयसुकुमालं आलिंगति २ उच्छंगे निवेसेति २ एवं वदासि–तुमं णं ममं सहोदरे कणीयसे भाया तं मा णं तुमं देवाणुप्पिया इयाणिं अरहतो मुंडे जाव पव्वयाहि, अहरणं बारवतीए नयरीए महया २ रायाभिसेएणं अभिसिंचिस्सामि, तते णं से गयसुकुमाले कराहेणं वासुदेवेणं एवं वुत्ते समाणे तुसिणीए संचिट्ठति १५ । तए णं से गयसुकुमाले कराहं वासुदेवं अम्मापियरो य दोच्चंपि तच्चंपि एवं वदासि–एवं खलु देवाणुप्पिया ! माणुस्सया कामा खेलासवा जाव विप्पजहियव्वा भविस्संति, तं इच्छामि णं देवाणुप्पिया ! तुब्भेहिं अब्भणुन्नाये अरहतो अरिट्ठनेमिस्स अंतिए जाव पव्वइत्तए, तते णं तं गयसुकुमालं कराहे वासुदेवे अम्मापियरो य जाहे नो संचाएति बहुयाहिं अणुलोमाहिं जाव आघवित्तते वा ताहे अकामाइं चेव एवं वदासी–तं इच्छामो णं ते जाया ! एगदिवसमवि रज्जसिरिं पासित्तए, निक्खमणं जहा महाबलस्स जाव तमाणाते तहा तहा जाव संजमित्तते, से गयसुकुमाले अणगारे जाते ईरियासमिए जाव गुत्तबंभयारी १६ । तते णं से गयसुकुमाले जं चेव दिवसं पव्वतिते तस्सेव दिवसस्स पुव्वावरराहकालसमयंसि जेणेव अरहा अरिट्ठनेमी तेणेव उवागच्छति २ अरहं अरिट्ठनेमीं तिक्खुत्तो आयाहिणपयाहिणं जाव वंदति णमंसति २ एवं वदासि–इच्छामि णं भंते ! तुब्भेहिं अब्भणुरणाते समाणे महाकालंसि सुसाणंसि एगराइयं महापडिमं उवसंपज्जित्ता णं विहरेत्तते, अहासुहं देवाणुप्पिया !, तते णं से गयसुकुमाले अणगारे अरहता अरिट्ठनेमिणा अब्भणुन्नाए समाणे अरहं अरिट्ठनेमीं वंदति णमंसति २ अरहतो अरिट्ठनेमिस्स अंतियाओ सहसंबवणाओ उज्जाणाओ पडिणिक्खमति २ जेणेव महाकाले सुसाणे तेणेव उवागते २ थंडिल्लं पडिलेहेति २ उच्चारपासवणभूमिं पडिलेहेति २ ईसिंपब्भारगएणं काएणं जाव दोवि

पाए साहट्टु एगराइं महापडिमं उवसंपज्जित्ताणं विहरति १७। इमं च णं सोमिले माहणे सामिधेयस्स अट्ठाते बारवतीओ नगरीओ बहिया पुव्वणिग्गते समिहातो य दब्भे य कुसे य पत्तामोडं च गेराहति २ ततो पडिनियत्तति २ महाकालस्स सुसाणस्स अदूरसामंतेणं वीईवयमाणे २ संझाकालसमयंसि पविरलमणुस्संसि गयसुकुमालं अणगारं पासति २ तं वेरं सरति २ आसुरुत्ते ५ एवं वदासि—एस णं भो ! से गयसूमाले कुमारे अप्पत्थिय जाव परिवज्जिते, जे णं मम धूयं सोमसिरीए भारियाए अत्तयं सोमं दारियं अदिट्ठदोसपइयं कालवत्तिणिं विप्पजहेत्ता मुंडे जाव पव्वतिते, तं सेयं खलु ममं गयसुकुमालस्स कुमारस्स वेरनिज्जायणं करेत्तते, एवं संपेहेति २ दिसापडिलेहणं करेति २ सरसं मट्टियं गेराहति २ जेणेव गयसूमाले अणगारे तेणेव उवागच्छति २ गयसूमालस्स कुमारस्स (गयसुकुमालस्स अणगारस्स) मत्थए मट्टियाए पालिं बंधइ २ जलंतीओ चिययाओ फुल्लियकिंसुयसमाणे खयरंगारे कहल्लेणं गेराहइ २ गयसूमालस्स अणगारस्स मत्थए पक्खिवति २ भीए ५ तओ खिप्पामेव अवक्कमइ २ जामेव दिसं पाउब्भूते तामेव दिसं पडिगते १८। तते णं तस्स गयसूमालस्स अणगारस्स सरीरयंसि वेयणा पाउब्भूता, उज्जला जाव दुरहियासा, तते णं से गयसुकुमाले अणगारे सोमिलस्स माहणस्स मणसावि अप्पदुस्समाणे तं उज्जलं जाव अहियासेति, तए णं तस्स गयसुकुमालस्स अणगारस्स तं उज्जलं जाव अहियासेमाणस्स सुभेणं परिणामेणं पसत्थज्झवसाणेणं तदावरणिज्जाणं कम्माणं खएणं कम्मरयविकिरणकरं अपुव्वकरणं अणुपविट्ठस्स अणंते अणुत्तरे जाव केवलवरनाणदंसणे समुप्पराणे, ततो पच्छा सिद्धे जावप्पहीणे, तत्थ णं अहासंनिहितेहिं देवेहिं सम्मं आराहितंतिकट्टु दिव्वे सुरभिगंधोदए वुट्ठे दसद्धवन्ने कुसुमे निवाडिते चेलुक्खेवे कए दिव्वे य गीयगंधव्वनिनाये कए यावि होत्था १९। तते णं से कराहे वासुदेवे कल्लं

पाउप्पभायाते जाव जलंते रहाते जाव विभूसिए हत्थिखंधवरगते सकोरेंट-मल्लदामेणं छत्तेणं धरेज्जमाणेहिं सेयवरचामराहिं उद्धुव्वमाणीहिं महया भड-चडगर-पहकर वंदपरिक्खित्ते बारवतिं णगरिं मज्झंमज्झेणं जेणेव अरहा अरिट्ठनेमी तेणेव पहारेत्थ गमणाए, तते णं से कण्हे वासुदेवे बारवतीए नयरीए मज्झंमज्झेणं निग्गच्छमाणे एक्कं पुरिसं पासति जुन्नं जराजज्जरियदेहं जाव किलंतं महतिमहालयाओ इट्टगरासीओ एगमेगं इट्टगं गहाय बहियारत्थापहातो अंतोगिहं अणुप्पविसमाणं पासति २ तए णं से कण्हे वासुदेवे तस्स पुरिसस्स अणुकंपणट्ठाए हत्थिखंधवरगते चेव एगं इट्टगं गेण्हति २ बहिया रत्थापहाओ अंतोगिहं अणुप्पवेसेति, तते णं कण्हेणं वासुदेवेणं एगाते इट्टगाते गहिताते समाणीते अणेगेहिं पुरिससतेहिं से महालए इट्टगस्स रासी बहिया रत्थापहातो अंतोघरंसि अणुप्पवेसिए २० । तते णं से कण्हे वासुदेवे बारवतीए नगरीए मज्झंमज्झेणं णिग्गच्छति २ जेणेव अरहा अरिट्ठनेमी तेणेव उवागते २ जाव वंदति णमंसति २ गयसुकुमालं अणगारं अपासमाणे अरहं अरिट्ठनेमिं वंदति णमंसति २ एवं वयासि--कहि(हं) णं भंते ! से ममं सहोदरे कणीयसे भाया गयसुकुमाले अणगारे जाणं अहं वंदामि नमंसामि, तते णं अरहा अरिट्ठनेमी कण्हं वासुदेवं एवं वदासि—साहिए णं कण्हा ! गयसुकुमालेणं अणगारेणं अप्पणो अट्ठे, तते णं से कण्हे वासुदेवे अरहं अरिट्ठनेमिं एवं वदासि—कहण्णं भंते ! गयसूमालेणं अणगारेणं साहिते अप्पणो अट्ठे ?, तते णं अरहा अरिट्ठनेमी कण्हं वासुदेवं एवं वयासि—एवं खलु कण्हा ! गयसुकुमालेणं अणगारे णं ममं कल्लं पुव्वावरण्हकालसमयंसि वंदइ णमंसति २ एवं वयासि—इच्छामि णं जाव उवसंपज्जित्ताणं विहरति, तए णं तं गयसुकुमालं अणगारं एगे पुरिसे पासति २ आसुरुत्ते ५ जाव सिद्धे, तं एवं खलु कण्हा ! गयसुकुमालेणं अणगारेणं साहिते अप्पणो अट्ठे २, २१ । तते णं से कण्हे वासुदेवे अरहं

अरिट्ठनेमिं एवं वयासि—केस णं भंते ! से पुरिसे अप्पत्थियपत्थिए जाव परिवज्जिते, जे णं ममं सहोदरं कणीयसं भायरं गयसुकुमालं अणगारं अकाले चेव जीवियातो ववरोविते, तए णं अरहा अरिट्ठनेमी कराहं वासुदेवं एवं वयासि—मा णं कराहा ! तुमं तस्स पुरिसस्स पदोसमावज्जाहि, एवं खलु कराहा ! तेणं पुरिसेणं गयसुकुमालस्स अणगारस्स साहिज्जे दिन्ने, कहराणं भंते ! तेणं पुरिसेणं गयसुकुमालस्स णं साहेज्जे दिन्ने ?, तए णं अरहा अरिट्ठनेमी कराहं वासुदेवं एवं वयासि—से नूणं कराहा ! ममं तुमं पायवंदए हव्वमागच्छमाणे बारवतीए नयरीए पुरिसं पाससि जाव अणुपविसिते, जहा णं कराहा ! तुमं तस्स पुरिसस्स साहिज्जे दिन्ने एवमेव कराहा ! तेणं पुरिसेणं गयसुकुमालस्स अणगारस्स अणेग-भवसय-सहस्ससंचितं कम्मं उदीरेमाणेणं बहुं कम्मं उदीरमाणेणं बहुकम्म-णिज्जरत्थ—साहिज्जे दिन्ने, तते णं से कराहे वासुदेवे अरहं अरिट्ठनेमिं एवं वयासि—से णं भंते ! पुरिसे मते कहं जाणियव्वे ?, तए णं अरहा अरिट्ठनेमी कराहं वासुदेवं एवं वयासि—जे णं कराहा ! तुमं बारवतीए नयरीए अणुपविसमाणं पासेत्ता ठितए चेव ठितिभेएणं कालं करिस्सति तराणं तुमं जाणेज्जासि एस णं से पुरिसे २२। तते णं से कराहे वासुदेवे अरहं अरिट्ठनेमिं वंदति नमंसति २ जेणेव आभिसेयं हत्थि-रयणं तेणेव उवागच्छति २ हत्थिं दुरूहति २ जेणेव बारवती णगरी जेणेव सते गिहे तेणेव पहारेत्थ गमणाए, तस्स सोमिलमाहणस्स कल्लं जाव जलंते अयमेयारूवे अब्भत्थिए ४ समुप्पन्ने—एवं खलु कराहे वासुदेवे अरहं अरिट्ठनेमिं पायवंदए निग्गते तं नायमेयं अरहता विन्नायमेयं अरहता सुतमेयं अरहता सिट्ठमेयं अरहया भविस्सइ कराहस्स वासुदेवस्स, तं न नज्जति णं कराहे वासुदेवे ममं केणवि कुमारेणं मारिस्सतित्ति-कट्टु भीते ४ सयातो गिहातो पडिनिक्खमति, कराहस्स वासुदेवस्स

बारवतिं नगरिं अणुपविसमाणस्स पुरतो सपक्खि सपडिदिसिं हव्वमागते, तते णं से सोमिले माहणे कराहं वासुदेवं सहसा पासेत्ता भीते ४ ठिते य चेव ठितिभेयं कालं करेति धरणितलंसि सव्वंगेहिं धसत्ति संनिवडिते २३। तते णं से करहे वासुदेवे सोमिलं माहणं पासति २ एवं वयासि—एस णं देवाणुप्पिया ! से सोमिले माहणे अप्पत्थियपत्थिए जाव परिवज्जिते जेण ममं सहोयरे कनीयसे भायरे गयसुकुमाले अणगारे अकाले चेव जीवियाओ ववरोविएत्तिकट्टु सोमिलं माहणं पाणेहिं कड्ढावेति २ तं भूमिं पाणिएणं अब्भोक्खावेति २ जेणेव सते गिहे तेणेव उवागते सयं गिहं अणुपविट्ठे, एवं खलु जंबू ! समणेणं जाव संपत्तेणं अट्ठमस्स अंगस्स अंतगडदसाणं तच्चस्स वग्गस्स अट्ठमज्झयणस्स अयमट्ठे पन्नत्ते २३ ॥ सू० ६ ॥ नवमस्स उ उक्खेवओ, एवं खलु जंबू ! ते णं काले णं २ बारवतीए नयरीए जहा पढमए जाव विहरति, तत्थ णं बारवतीए बलदेवे नामं राया होत्था वन्नओ, तस्स णं बलदेवस्स रन्नो धारिणीनामं देवी होत्था वन्नओ, तते णं सा धारिणी सीहं सुमिणे जहा गोयमे नवरं सुमुहे नामं कुमारे पन्नासं कन्नाओ पन्नासदाओ चोद्दसपुव्वाइं अहिज्जति वीसं वासाइं परियातो, सेसं तं चेव, सेत्तुञ्जे सिद्धे, निक्खेवओ। एवं दुम्मुहेवि कूवदारएवि, तिन्नि वि बलदेवधारिणीसुया, दारुएवि एवं चेव, नवरं वसुदेवधारिणिसुते। एवं अणादिट्ठीवि वसुदेवधारिणीसुते, एवं खलु जंबू ! समणेणं जाव संपत्तेणं अट्ठमस्स अंगस्स अंतगडदसाणं तच्चस्स वग्गस्स तेरसमस्स अज्झयणस्स अयमट्ठे पन्नत्ते ३, ॥ सू० ७ ॥ ततिओ वग्गो समत्तो तेरसहिं अज्झयणेहिं ३ ॥

॥४॥ अथ चतुर्थो वर्गः ॥

जति णं भंते ! समणेणं जाव संपत्तेणं अट्ठमस्स अंगस्स अंतगडदसाणं तच्चस्स वग्गस्स अयमट्ठे पन्नत्ते चउत्थस्स वग्गस्स के अट्ठे पन्नत्ते ?, एवं खलु जंबू ! समणेणं जाव संपत्तेणं चउत्थस्स वग्गस्स दस अज्झयणा

पन्नत्ता, तं जहा—जालि १ मयालि २ उवयाली ३ पुरिससेणे य ४ वारिसेणे य ५। पज्जुन्न ६ संब ७ अनिरुद्धे ८ सच्चनेमी य ९ दढनेमी १० ॥ १ ॥ जति णं भंते ! समणेणं जाव संपत्तेणं चउत्थस्स वग्गस्स दस अज्झयणा पन्नत्ता, पढमस्स णं अज्झयणस्स के अट्ठे पन्नत्ते ?, एवं खलु जंबू ! ते णं काले णं ते णं समए णं बारवती णगरी तीसे जहा पढमे कण्हे वासुदेवे आहेवच्चं जाव विहरति, तत्थ णं बारवतीए णगरीए वसुदेवे राया धारिणी वन्नतो, जहा गोयमो, नवरं जालिकुमारे पन्नासतो दातो बारसंगी, सोलस वासा परिताओ सेसं जहां गोयमस्स जाव सेत्तुञ्जे सिद्धे १। एवं मयाली उवयाली पुरिससेणे य वारिसेणे य २। एवं पज्जुन्नेविति, नवरं कण्हे वासुदेवे पिया रुप्पिणी से माता। एवं संबेवि, नवरं जंबवती माता। एवं अनिरुद्धेवि नवरं पज्जुन्ने पिया वेदब्भी माया एवं सच्चनेमी, नवरं समुद्दविजये पिता सिवा माता, दढनेमीवि, सव्वे एगगमगा, चउत्थस्स वग्गस्स निक्खेवओ ३ ॥ सू० ८ ॥ चउत्थो वग्गो समत्तो ४ ॥

॥५॥ अथ पंचमो वर्गः ॥

जति णं भंते ! समणेणं जाव संपत्तेणं चउत्थस्स वग्गस्स अयमट्ठे पन्नत्ते पंचमस्स वग्गस्स अंतगडदसाणं समणेणं जाव संपत्तेणं के अट्ठे पन्नत्ते ? एवं खलु जंबू ! समणेणं जाव संपत्तेणं पंचमस्स वग्गस्स दस अज्झयणा पन्नत्ता, तंजहा—पउमावती १ य गोरी २ गंधारी ३ लक्खणा ४ सुसीमा ५ य। जंबवइ ६ सच्चभामा ७ रुप्पिणि ८ मूलसिरि ९ मूलदत्तावि १० ॥ १ ॥ १। जति णं भंते ! पंचमस्स वग्गस्स दस अज्झयणा पन्नत्ता, पढमस्स णं भंते ! अज्झयणस्स के अट्ठे पन्नत्ते ? एवं जंबू ! तेणं कालेणं २ बारवती नगरी जहा पढमे जाव कण्हे वासुदेवे आहे जाव विहरति, तस्स णं कण्हस्स वासुदेवस्स पउमावती नाम

देवी होत्था वन्नओ, तेणं कालेणं २ अरहा अरिट्ठनेमी समोसढे जाव विहरती, कराहे वासुदेवे णिग्गते जाव पज्जुवासति, तते णं सा पउमावती देवी इमीसे कहाए लद्धट्ठा हट्ठतुट्ठा जहा देवती जाव पज्जुवासति, तए णं अरिहा अरिट्ठनेमी कराहस्स वासुदेवस्स पउमावतीए य धम्मकहा परिसा पडिगता २। तते णं कराहे वासुदेवे अरहं अरिट्ठनेमिं वंदति णमंसति २ एवं वदासि–इमीसे णं भंते ! बारवतीए नगरीए नवजोयण जाव देवलोगभूताए किंमूलाते विणासे भविस्सति ?, कराहाति ! अरहं अरिट्ठनेमी कराहं वासुदेवं एवं वदासि–एवं खलु कराहा ! इमोसे बारवतीएं नयरीए नवजोयणा जाव भूयाए सुरग्गिदीवायणमूलाए विणासे भविस्सति, ता णं कराहस्स वासुदेवस्स अरहतो अरिट्ठनेमिस्स अंतिए एयं सोचा निसम्म एयं अब्भत्थिए ४ समुप्पज्जित्था-धन्ना णं ते जालिमयालि–पुरिससेण–वारिसेण-पज्जुन्नसंब–अनिरुद्ध–दढनेमिसच्चनेमिप्पभियतो कुमारा जे णं चइत्ता हिरन्नं जाव परिभाएत्ता अरहतो अरिट्ठनेमिस्स अंतियं मुंडा जाव पव्वतिया, अहराणं अधन्ने अकयपुन्ने रज्जे य जाव अंतेउरे य माणुस्सएसु य कामभोगेसु मुच्छिते ४ नो संचाएमि अरहतो अरिट्ठ जाव पव्वतित्तए, कराहाइ ! अरहा अरिट्ठनेमी कराहं वासुदेवं एवं वयासि–से नूणं कराहा ! तव अयमब्भत्थिए ४–धन्ना णं ते जाव पव्वतित्तते, से नूणं कराहा ! अट्ठे समट्ठे ?, हंता अत्थि, तं नो खलु कराहा ! तं एवं भूतं वा भव्वं वा भविस्सति वा जन्नं वासुदेवा चइत्ता हिरन्नं जाव पव्वइस्संति, से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ–न एयं भुयं वा जाव पव्वतिस्संति ?, कराहाति ! अरहा अरिट्ठनेमी कराहं वासुदेवं एवं वयासि–एवं खलु कराहा ! सव्वेवि य णं वासुदेवा पुव्वभवे निदाणकडा, से एतेणट्ठेणं कराहा ! एवं वुच्चति–न एयं भूयं जाव पव्वइस्संति ३। तते णं से कराहे वासुदेवे अरहं अरिट्ठनेमिं एवं वयासि–अहं णं भंते ! इतो कालमासे

कालं किच्चा कहिं गमिस्सामि ? कहिं उववज्जिस्सामि ?, तते णं अरिहा अरिट्ठनेमी कण्हं वासुदेवं एवं वयासि—एवं खलु कण्हा ! बारवतीए नयरीए सुरदीवायणकोवनिद्दड्ढाए अम्मापिइनियगविप्पहूणे रामेण बलदेवेण सद्धिं दाहिणवेयालिं अभिमुहे जोहिट्ठिलपामोक्खाणं पंचण्हं पंडवाणं पंडुरायपुत्ताणं पासं पंडुमहुर संपत्थिते कोसंबवणकाणणे (कासंबकाणणे) नग्गोहवरपायवस्स अहे पुढविसिलापट्टए पीतवत्थपच्छाइयसरीरे जर(रा)कुमारेणं तिक्खेणं कोदंडविप्पमुक्केणं इसुणा वामे पादे विद्धे समाणे कालमासे कालं किच्चा तच्चाए वालुयप्पभाए पुढवीए उज्जलिए नरए नेरइयत्ताए उववज्जिहिसि ४। तते णं कण्हे वासुदेवे अरहतो अरिट्ठनेमिस्स अंतिए एयमट्ठं सोच्चा निसम्म ओहय जाव झियाति, कण्हाति ! अरहा अरिट्ठनेमी कण्हं वासुदेवं एवं वदासि—मा णं तुमं देवाणुप्पिया ! ओहय जाव झियाहि, एवं खलु तुमं देवाणुप्पिया ! तच्चातो पुढवीओ उज्जलियाओ अणंतरं उव्वट्टित्ता इहेव जंबुद्दीवे भारहे वासे आगमेसाए उस्सप्पिणीए पुंडेसु जणवतेसु सयदुवारे नगरे बारसमे अममे नामं अरहा भविस्ससि, तत्थ तुमं बहूइं वासाइं केवलपरियागं पाउणेत्ता सिज्झिहिसि ५, ५। तते णं से कण्हे वासुदेवे अरहतो अरिट्ठनेमिस्स अंतिए एयमट्ठं सोच्चा निसम्म हट्ठतुट्ठ जाव अप्फोडेति २ वग्गति २ तिवतिं छिंदतिं २ सीहनायं करेति २ अरहं अरिट्ठनेमिं वंदति णमंसति २ तमेव अभिसेक्कं हत्थिं दुरूहति २ जेणेव बारवती णगरी जेणेव सते गिहे तेणेव उवागच्छति २ (उवागते) अभिसेयहत्थिरयणातो पच्चोरुहति जेणेव बाहिरिया उवट्ठाणसाला जेणेव सते सीहासणे तेणेव उवागच्छति २ सीहासणवरंसि पुरत्थाभिमुहे निसीयति २ कोडुंबियपुरिसे सद्दावेति २ एवं वयासि—गच्छह णं तुब्भे देवाणुप्पिया ! बारवतीए नयरीए सिंघाडग जाव उवघोसेमाणा एवं वयह—एवं खलु देवाणुप्पिया !

बारवतीए नयरीए नवजोयण जाव भूयाए सुरग्गिदीवायणमूलाते विणासे भविस्सति, तं जो णं देवाणुप्पिया ! इच्छति बारवतीए नयरीए राया वा जुवराया वा ईसरे तलवरे माडंबियकोडुंबिय इब्भसेट्ठी वा देवी वा कुमारो वा कुमारी वा अरहतो अरिट्ठनेमिस्स अंतिए मुंडे जाव पव्वइत्तए तं णं कण्हे वासुदेवे विसज्जेति, पच्छातुरस्सवि य से अहापवित्तं वित्ति अणुजाणाति महता इड्ढीसक्कारसमुदएण य से निक्खमणं करेति दोच्चंपि तच्चंपि घोसणयं घोसेह २ मम एयं पच्चप्पिणाह ६ । तए णं ते कोडुंबिय जाव पच्चप्पिणंति, तते णं सा पउमवती देवी अरहतो अरिट्ठनेमिस्स अंतिए धम्मं सोच्चा निसम्म हट्ठतुट्ठ जाव हियया अरहं अरिट्ठनेमीं वंदति णमंसति २ एवं वयासी—सद्दहामि णं भंते ! णिग्गंथं पावयणं से जहेतं तुब्भे वदह जं नवरं देवाणुप्पिया ! कण्हं वासुदेवं आपुच्छामि, तते णं अहं देवाणुप्पियस्स अंतिए मुंडा जाव पव्वयामि, अहासुहं देवाणुप्पिया ! मा पडिबंधं करेह, तते णं सा पउमावती देवी धम्मियं जाणप्पवरं दुरूहति २ जेणेव बारवती नगरी जेणेव सते गिहे तेणेव उवागच्छति २ धम्मियातो जाणातो पच्चोरुभति २ जेणेव कण्हे वासुदेवे तेणेव उवागच्छति करयल जाव कट्टु एवं वयासि—इच्छामि णं देवाणुप्पिया ! तुब्भेहिं अब्भणुण्णाता समाणी अरहतो अरिट्ठनेमिस्स अंतिए मुंडा जाव पव्वयामि अहासुहं ७ । तए णं से कण्हे वासुदेवे कोडुंबिते सद्दावेति २ एवं वयासि—खिप्पामेव पउमावतीते महत्थं निक्खमणाभिसेयं उवट्ठवेह २ एयमाणत्तियं पच्चप्पिणह, तते णं ते जाव पच्चप्पिणंति, तए णं से कण्हे वासुदेवे पउमावतीं देवीं पट्टयं डुहेति (पट्टयंसि दुरुहेति २) अट्ठसतेणं सोवन्नकलस जाव महानिक्खमणाभिसेएणं अभिसिंचति २ सव्वालंकारविभूसियं करेति २ पुरिससहस्सवाहिणिं सिबियं रदावेति (दुरुहावेति) बारवतीणगरीमज्झंमज्झेणं निग्गच्छति २ जेणेव रेवतते पव्वए जेणेव सहसंबवणे उज्जाणे तेणेव उवागच्छइ २

सीयं ठवेति पउमावती देवी सीतातो पच्चोरुभति २ जेणेव अरहा अरिट्ठनेमी तेणेव उवागच्छति २ अरहं अरिट्ठनेमीं तिक्खुत्तो आयाहीणं पयाहीणं करेइ २ वंदइ नमंसइ २ एवं वयासि—एस णं भंते ! मम अग्गमहिसी पउमावती-नामं देवी इट्ठा कंता पिया मणुन्ना मणामा अभिरामा जाव किमंग पुण पासणयाए ?, तन्नं अहं देवाणुप्पिया ! सिस्सिणिभिक्खं दलयामि, पडिच्छंतु णं देवाणुप्पिया ! सिस्सिणिभिक्खं, अहासुहं देवाणुप्पिया ! मा पडिबंधं करेह, तते णं सा पउमावती उत्तरपउच्छिमं दिसीभागं अवक्कमति २ सयमेव आभरणालंकारं ओमुयति २ सयमेव पंचमुट्ठियं लोयं करेति २ जेणेव अरहा अरिट्ठनेमी तेणेव उवागच्छति २ अरहं अरिट्ठनेमिं वंदति णमंसति २ एवं वयासी—आलित्ते जाव धम्ममाइक्खितं, तते णं अरहा अरिट्ठनेमी पउमावतीं देवीं सयमेव पव्वावेति २ सयमेव मुंडावेइ २ सयमेव जक्खिणीते अज्जाते सिस्सिणिं दलयति, तते णं सा जक्खिणी अज्जा पउमावइं देवीं सयं पव्वावियव्वं जाव संजमियव्वं, तते णं सा पउमावती जाव संजमइ, तते णं सा पउमावती अज्जा जाता ईरियासमिया जाव गुत्तबंभयारिणी ८। तते णं सा पउमावती अज्जा जक्खिणीते अज्जाते अंतिए सामाइयमा-इयाइं एक्कारस अंगाइं अहिज्जति, बहूहिं चउत्थछट्ठट्ठमदसमदुवालसेहिं मासद्धमास-खमणेहिं विविहेहिं तवोकम्मेहिं अप्पाणं भावेमणा विहरति, तते णं सा पउमावती अज्जा बहुपडिपुन्नाइं वीसं वासाइं सामन्नपरियागं पाउणित्ता मासियाए संलेहणाए अप्पाणं झोसेति २ सट्ठिं भत्ताइं अणसणाए छेदेति २ जस्सट्ठाते कीरइ नग्गभावे जाव तमट्ठं आराहेति चरिमुस्सासेहिं सिद्धा ५, १ ॥ सू० १ ॥ इति पंचमस्स वग्गस्स पढमं अज्झयणं समत्तं।

ते णं काले णं २ बारवईनयरीए रेवतए पव्वए नंदणवणे उज्जाणे, तत्थ णं बारवईनयरीए कण्हे वासुदेवे तस्स णं कण्हवासुदेवस्स गोरी देवी वन्नतो, अरहा समोसढे कण्हे णिग्गते, गोरी जहा पउमावती तहा णिग्गया,

धम्मकहा परिसा पडिगता, कराहेवि, तए णं सा गोरी जहा पउमावती तहा णिक्खंता जाव सिद्धा ५। एवं गंधारी। लक्खणा। सुसीमा। जंबवई। सच्चभामा। रूप्पिणी। अट्ठवि पउमावतीसरिसाओ अट्ठ अज्झयणा ॥ सू० १० ॥ ते णं काले णं २ बारवतीनगरीए रेवतते नंदणवणे कराहे वासुदेवे, तत्थ णं बारवतीए नयरीए कराहस्स वासुदेवस्स पुत्ते जंबवतीए देवीए अत्तते संबे नामं कुमारे होत्था, अहीण जाव सुरूवे, तस्स णं संबस्स कुमारस्स मूलसिरीनामं भारिया होत्था वन्नओ, अरहा समोसढे कराहे णिग्गते मूलसिरीवि णिग्गया जहा पउमावती देवी नवरं देवाणुप्पिया! कराहं वासुदेवं आपुच्छामि जाव सिद्धा। एवं मूलदत्तावि ॥ सू० ११ ॥ पंचमो वग्गो समत्तो ५ ॥

॥६॥ अथ षष्ठो वर्गः ॥

जति छट्ठस्स उक्खेवओ, नवरं सोलस अज्झयणा पन्नत्ता, तंजहा– 'मंकाती (मकाथी) किंकमे चेव, मोग्गरपाणी य कासवे। खेमते धितिधरे चेव, केलासे हरिचंदणे ॥ १ ॥ वारत्तसुदंसणपुन्नभद्द सुमणभद्द सुपइट्ठे मेहे। अइमुत्ते अ अलक्खे अज्झयणाणं तु सोलसयं ॥ २ ॥' १। जइ सोलस अज्झयणा पन्नत्ता, पढमस्स अज्झयणस्स के अट्ठे पन्नत्ते?, एवं खलु जंबू! ते णं काले णं २ रायगिहे नगरे गुणसिलए चेतिते सेणिए राया, मंकातीनामं गाहावती परिवसति अड्ढे जाव परिभूते, ते णं काले णं २ समणे भगवं महावीरे आदिकरे गुणसिलए जाव विहरति, परिसा निग्गया, तते णं से मंकाती गाहावती इमीसे कहाए लद्धट्ठे (ट्ठयाए) समाणे जहा पन्नत्तीए गंगदत्ते तहेव इमोऽवि जेट्ठपुत्तं कुडुंबे ठवेत्ता पुरिससहस्सवाहिणीए सीताते णिक्खंते जाव अणगारे जाते, ईरियासमिते जाव गुत्तबंभयारी २। तते णं से मंकाती अणगारे समणस्स भगवतो महावीरस्स तहारूवाणं थेराणं अंतिए सामाइयमाइयाइं एकारस अंगाइं अहिज्जति सेसं जहा

खंदगस्स, गुणरयणं तवोकम्मं सोलसवासाइं परियाओ तहेव विपुले सिद्धे । किंकमेवि एवं चेव जाव विपुले सिद्धे ३ ॥ सू० १२ ॥ दोचस्स निक्खेवो तचस्स उक्खेवो, ते णं काले णं २ रायगिहे गुणसिलते चेतिते सेणिए राया चेल्लणादेवी, तत्थ णं रायगिहे अज्जुणए नामं मालागारे परिवसति, अड्ढे जाव परिभूते, तस्स णं अज्जुणयस्स मालायारस्स बंधुमतीणामं भारिया होत्था सूमाला, तस्स णं अज्जुणयस्स मालायारस्स रायगिहस्स नगरस्स बहिया एत्थ णं महं एगे पुप्फारामे होत्था कराहे जाव निउरंबभूते दसद्धवन्नकुसुमकुसुमिते पासातीए ४, तस्स णं पुप्फारामस्स अदूरसामंते तत्थ णं अज्जुणयस्स मालायारस्स अज्जतपज्जत-पितिपज्जयागए अणेगकुल-पुरिसपरंपरागते मोग्गरपाणिस्स जक्खस्स जक्खाययणे होत्था, पोराणे दिव्वे सच्चे जहा पुराणभद्दे, तत्थ णं मोग्गरपाणिस्स पडिमा एगं महं पलसहस्सणिप्फराणं अयोमयं मोग्गरं गहाय चिट्ठति, तते णं से अज्जुणाते मालागारे बालप्पभितिं चेव मोग्गरपाणिजक्खभत्ते यावि होत्था, कल्लाकल्लिं पच्छियपिडगाइं गेराहति २ रायगिहातो नगरातो पडिनिक्खमति २ जेणेव पुप्फारामे तेणेव उवागच्छति २ महरिहं पुप्फुचयं करेति २ अग्गाइं वराइं पुप्फाइं गहाइ २ जेणेव मोग्गरपाणिस्स जक्खाययणे तेणेव उवागच्छति मुग्गरपाणिस्स जक्खस्स महरिहं पुप्फच्चणायं करेति २ जंनुपायवडिए पणामं करेति, ततो पच्छा रायमग्गंसि वित्तिं कप्पेमाणे विहरति १ । तत्थ णं रायगिहे नगरे ललिया नामं गोट्ठी परिवसति अड्ढा जाव परिभूता, जंकयसुकया यावि होत्था, तते णं रायगिहे णगरे अन्नदा कदाइ पमोदे घुट्ठे यावि होत्था, तते णं से अज्जुणाते मालागारे कल्लं पभूयतराएहिं पुप्फेहिं कज्जमितिकट्टु पच्चूसकालसमयंसि बंधुमतीते भारियाते सद्धिं पच्छिय-पिडयाति गेराहति २ सयातो गिहातो पडिनिक्खमति २ रायगिहं नगरं मज्झंमज्झेणं णिग्गच्छति २ जेणेव पुप्फारामे तेणेव उवागच्छति २

बंधुमतीते भारियाए सद्धिं पुप्फुचयं करेति, तते णं तीसे ललियाते गोट्ठीते छ गोट्ठिल्ला पुरिसा जेणेव मोग्गरपाणिस्स जक्खस्स जक्खाययणे तेणेव उवागता अभिरममाणा चिट्ठंति, तते णं से अज्जुणाते मालागारे बंधुमतीए भारियाए सद्धिं पुप्फुच्चयं करेति पच्छियं भरेति। अग्गातिं वरातिं, पुप्फातिं गहाय जेणेव मोग्गरपाणिस्स जक्खस्स जक्खाययणे तेणेव उवागच्छति, तते णं छ गोट्ठिल्ला पुरिसा अज्जुणायं मालागारं बंधुमतीए भारियाए सद्धिं एज्जमाणं पासंति २ अन्नमन्नं एवं वयासि–एस णं देवाणुप्पिया ! अज्जुणाते मालागारे बंधुमतीते भारियाते सद्धिं इहं हव्वमागच्छति, तं सेयं खलु देवाणुप्पिया ! अम्हं अज्जुणायं मालागारं अवओडयबंधणयं करेत्ता बंधुमतीते भारियाए सद्धिं विपुलाइं भोगभोगाइं भुंजमाणाणं विहरित्तएत्तिकट्टु एयमट्ठं अन्नमन्नस्स पडिसुणेंति २ कवाडंतरेसु निलुक्कंति निच्चला निप्फंदा तुसिणीया पच्छन्ना चिट्ठंति २। तते णं से अज्जुणाते मालागारे बंधुमतिभारियाते सद्धिं जेणेव मोग्गरजक्खाययणे तेणेव उवागच्छति २ आलोए पणामं करेति महरिहं पुप्फच्चणं करेति जंनुपायपडिए पणामं करेति, तते णं छ गोट्ठेल्ला पुरिसा दवदवस्स कवाडंतरेहिंतो णिग्गच्छंति २ अज्जुणायं मालागारं गेण्हंति २ अवओडगबंधणं करेंति, बंधुमतिए मालागारीए सद्धिं विपुलाइं भोगभोगाइं भुंजमाणा विहरंति ३। तते णं तस्स अज्जुणायस्स मालागारस्स अयमज्झत्थिए ४, एवं खलु अहं बालप्पभितिं चेव मोग्गरपाणिस्स भगवओ कल्लाकल्लिं जाव कप्पेमाणे विहरामि, तं जति णं मोग्गरपाणिजक्खे इह संनिहिते होंते से णं किं ममं एयारूवं आवइं पावेज्जमाणं पासंते ? तं नत्थि णं मोग्गरपाणी जक्खे इह संनिहिते, सुव्वत्तं णं (सुव्वत्तणं) एस कट्ठे, तते णं से मोग्गरपाणी जक्खे अज्जुणायस्स मालागारस्स अयमेयारूवं अब्भत्थियं जाव वियाणेत्ता अज्जुणायस्स मालागारस्स सरीरयं

अणुपविसति २ तडतडतडस्स बंधाइं छिंदति, तं पलसहस्सणिप्फरणं अयोमयं मोग्गरं गेगहति २ ते इत्थिसत्तमे पुरिसे घातेति, तते णं से अज्जुणते मालागारे मोग्गरपाणिणा जक्खेणं अरणाइट्ठे समाणे राय-गिहस्स नगरस्स परिपेरंतेणं कल्लाकल्लिं छ इत्थिसत्तमे पुरिसे घातेमाणे विहरति ४। रायगिहे णगरे सिंघाडग जाव महापहपहेसु बहुजणो अन्नमन्नस्स एवमाइक्खति ४—एवं खलु देवाणुप्पिया ! अज्जुणते मालागारे मोग्गरपाणिणा अरणाइट्ठे समाणे रायगिहे णगरे बहिया छ इत्थिसत्तमे पुरिसे घायेमाणे विहरति, तते णं से सेणिए राया इमीसे कहाए लद्धट्ठे समाणे कोडुंबियपुरिसे सद्दावेति २ एवं वयासी—एवं खलु देवा ! अज्जुणते मालागारे जाव घातेमाणे जाव विहरति, तं मा णं तुब्भे केती कट्ठस्स वा तणस्स वा पाणियस्स वा पुप्फफलाणं वा अट्ठाते सइरं निग्गच्छतु, मा णं तस्स सरीरस्स वावत्ती भविस्सतित्तिकट्टु दोच्चंपि तच्चंपि घोसणयं घोसेह २ खिप्पामेव ममेयं पच्चप्पिणह, तते णं ते कोडुंबिय जाव पच्चपिणंइ, तत्थ णं रायगिहे नगरे सुदंसणे नामं सेट्ठी परिवसति, अड्ढे०, तते णं से सुदंसणे समणोवासते यावि होत्था अभिगय-जीवाजीवे जाव विहरति ५। तेणं कालेणं २ समणे भगवं जाव समोसढे जाव विहरति, तते णं रायगिहे नगरे सिंघाडग-तिय-चउक्क-चच्चर-महापह-पहेसु बहुजणो अन्नमन्नस्स एवमाइक्खति जाव किमंग पुण विपुलस्स अट्ठस्स गहणयाए एवं तस्स सुदंसणस्स बहुजणस्स अंतिए एयं सोचा निसम्म अयं अब्भत्थिते ४—एवं खलु समणे जाव विहरति, तं गच्छामि णं वंदामि नमंसामि, एवं संपेहेति २ जेणेव अम्मापियरो तेणेव उवागच्छति २ करयल जाव एवं वयासी—एवं खलु अम्मताओ ! समणे जाव विहरति, तं गच्छामि णं समणं भगवं महावीरं वंदामि नमंसामि जाव पज्जुवासामि, तते णं सुदंसणं सेट्ठिं अम्मापियरो एवं वदासि—एवं खलु पुत्ता ! अज्जुणे

मालागारे जाव घातेमाणे विहरति, तं मा णं तुमं पुत्ता ! समणं भगवं महावीरं वंदए णिग्गच्छाहि, मा णं तव सरीरयस्स वावत्ती भविस्सति, तुमराणं इहगते चेव समणं भगवं महावीरं वंदाहि णमंसाहि, तते णं सुदंसणे सेट्ठी अम्मापियरं एवं वयासी–किराणं अहं अम्मयातो ! समणं भगवं महावीरं इहमागयं इहपत्तं इह समोसढं इहगते चेव वंदिस्सामि ? (कहं वंदिज्जामि ?) तं गच्छामि णं अहं अम्मताओ ! तुब्भेहिं अब्भणुन्नाते समाणे भगवं महावीरे वंदते, तते णं सुदंसणं सेट्ठिं अम्मापियरो जाहे नो संचायंति बहूहिं आघवणाहिं ४ जाव परूवेत्तते ताहे एवं वदासि–अहासुहं, तते णं से सुदंसणे अम्मापितीहिं अब्भणुरणाते समाणे राहाते सुद्धप्पावेसाइं जाव सरीरे सयातो गिहातो पडिनिक्खमति २ पायविहार-चारेणं रायगिहं णगरं मज्झंमज्झेणं णिग्गच्छति २ मोग्गरपाणिस्स जक्खस्स जक्खाययणस्स अदूरसामंतेणं जेणेव गुणसिलते चेतिते जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव पहारेत्थ गमणाए ६ । तते णं से मोग्गरपाणी जक्खे सुदंसणं समणोवासतं अदूरसामंतेणं वीतीवयमाणं २ पासइ २ आसुरुत्ते ५, तं पलसहस्सनिप्फन्नं अयोमयं मोग्गरं उल्लालेमाणे २ जेणेव सुदंसणे समणोवासते तेणेव पहारेत्थ गमणाते, तते णं से सुदंसणे समणो-वासते मोग्गरपाणिं जक्खं एज्जमाणं पासति २ अभीते अतत्थे अणु-व्विग्गे अक्खुभिते अचलिए असंभंते वत्थंतेणं भूमीं पमज्जति २ करतल जाव एवं वदासी–नमोऽत्थु णं अरहंताणं जाव संपत्ताणं, नमोऽत्थु णं समणस्स जाव संपाविउकामस्स, पुव्विं च णं मते समणस्स भगवतो महावीरस्स अंतिए थूलते पाणातिवाते पच्चक्खाते जावज्जीवाते थूलते मुसावाते थूलते अदिन्नादाणे सदारसंतोसे कते जावज्जीवाते इच्छापरिमाणे कते जावज्जीवाते तं इदाणिंपि णं तस्सेव अंतियं सव्वं पाणातिवातं पच्चक्खामि जावज्जीवाए मुसावायं अदत्तादाणं मेहुणं परिग्गहं पच्चक्खामि जावज्जीवाए सव्वं कोहं जाव

मिच्छादंसणसल्लं पचक्खामि जावज्जीवाए सव्वं असणं पाणं खाइमं साइमं चउव्विहंपि आहारं पच्चक्खामि जावज्जीवाए, जति णं एत्तो उवसग्गातो मुच्चिस्सामि तो मे कप्पेति पारेत्तते अह णो एत्तो उवसग्गातो मुच्चिस्सामि ततो मे तहा पच्चक्खाते चेव त्तिकट्टु सागारं पडिमं पडिवज्जति ७। तते णं से मोग्गरपाणिजक्खे तं पलसहस्सनिष्फन्नं अयोमयं मोग्गरं उल्लालेमाणे २ जेणेव सुदंसणे समणोवासते तेणेव उवागच्छति २ नो चेव णं संचाएति सुदंसणं समणोवासयं तेयसा समभिपडित्तते, तते णं से मोग्गर-पाणीजक्खे सुदंसणं समणोवासतं सव्वओ समंताओ परिघोलेमाणे २ जाहे नो चेव णं संचाएति सुदंसणं समणोवासयं तेयसा समभिपडित्तते ताहे सुदंसणस्स समणोवासयस्स पुरतो सपक्खिं सपडिदिसिं ठिच्चा सुदंसणं समणोवासयं अणिमिसाते दिट्ठीए सुचिरं निरिक्खति २ अज्जुणयस्स मालागारस्स सरीरं विप्पजहति २ तं पलसहस्सनिष्फन्नं अयोमयं मोग्गरं गहाय जामेव दिसं पाउब्भूते तामेव दिसं पडिगते, तते णं से अज्जुणते मालागारे मोग्गरपाणिणा जक्खेणं विप्पमुक्के समाणे धसत्ति धरणियलंसि सव्वंगेहिं निवडिते ८। तते णं से सुदंसणे समणोवासते निरुवसग्गमिति-कट्टु पडिमं पारेति, तते णं से अज्जुणते मालागारे तत्तो मुहुत्तंतरेणं आसत्थे समाणे उट्ठेति २ सुदंसणं समणोवासयं एवं वयासी—तुब्भे णं देवाणुप्पिया! के कहिं वा संपत्थिया? तते णं से सुदंसणे समणोवासते अज्जुणयं मालागारं एवं वयासी—एवं खलु देवाणुप्पिया! अहं सुदंसणे नामं समणोवासते अभिगयजीवाजीवे गुणसिलते चेतिते समणं भगवं महावीरं वंदते संपत्थिते, तते णं से अज्जुणते मालागारे सुदंसणं समणो-वासयं एवं वयासी—तं इच्छामि णं देवाणुप्पिया! अहमवि तुमए सद्धिं समणं भगवं महावीरं वंदेत्तए जाव पज्जुवासेत्तए, अहासुहं देवाणुप्पिया! ९। तते णं से सुदंसणे समणोवासते अज्जुणएणं मालागारेणं सद्धिं जेणेव

गुणसिलए चेतिते जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छति २ अज्जुणएणं मालागारेणं सद्धिं समणं भगवं महावीरं तिक्खुत्तो जाव पज्जुवासति, तते णं समणे भगवं महावीरे सुदंसणस्स समणोपासगस्स अज्जुणयस्स मालागारस्स तीसे य धम्मकहा, सुदंसणे पडिगते १०। तए णं से अज्जुणते समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतिए धम्मं सोच्चा हट्ठतुट्ठ जाव हियया करयल-परिग्गहियं दसनहं सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं कट्टु एवं वयासि—सद्दहामि णं भंते ! णिग्गंथं पावयणं जाव अब्भुट्ठेमि, अहासुहं देवाणुप्पिया ! मा पडिबंधं करेह, तते णं से अज्जुणते मालागारे उत्तरपुरत्थिमं दिसीभागं अवक्कमति २ सयमेव पंचमुट्ठियं लोयं करेति जाव अणगारे जाते जाव विहरति ११। तते णं से अज्जुणते अणगारे जं चेव दिवसं मुंडे जाव पव्वइते तं चेव दिवसं समणं भगवं महावीरं वंदति २ इमं एयारूवं अभिग्गहं उग्गिरहति—कप्पइ मे जावज्जीवाते छट्ठंछट्ठेणं अनिक्खत्तेणं तवोकम्मेणं अप्पाणं भावेमाणस्स विहरित्तएत्तिकट्टु, अयमेयारूवं अभिग्गहं ओगेरहति २ जावज्जीवाए जाव विहरति, तते णं से अज्जुणते अणगारे छट्ठक्खमणपारणयंसि पढमपोरिसीए सज्झायं करेति जहा गोयमसामी जाव अडति, तते णं तं अज्जुणयं अणगारं रायगिहे नगरे उच्च जाव अडमाणं बहवे इत्थीओ य पुरिसा य डहरा य महल्ला य जुवाणा य एवं वदासी—इमे णं मे पितामारते इमे णं मे मातामारिते भायामारते भगिणीमारते भज्जामारते पुत्तमारते धूयामारते सुराहामारते, इमेण मे अन्नतरे सयणसंबंधिपरियणे मारिएतिकट्टु अप्पेगतिया अकोसंति अप्पेगतिया हीलंति निंदंति खिंसंति गरिहंति तज्जेंति तालेंति १२। तते णं से अज्जुणते अणगारे तेहिं बहूहिं इत्थीहि य पुरिसेहि य डहरेहि य महल्लेहि य जुवाणएहि य आतो(को)सेज्जमाणे जाव तालेज्जमाणे तेसिं मणसावि अपउस्समाणे सम्मं सहति सम्मं खमति तितिक्खति अहियासेति सम्मं सहमाणे खममाणे

तितिक्खमाणे अहियासेमाणे रायगिहे णगरे उच्चणीयमज्झिमकुलाइं अडमाणे जति भत्तं लहति तो पाणं ण लभति, जइ पाणं लभति तो भत्तं न लभति, तते णं से अज्जुणते अदीणे अविमणे अकलुसे अणाइले अविसादी अपरितंतजोगी अडति २ रायगिहातो नगरातो पडिनिक्खमति २ जेणेव गुणसिलए चेतिते जेणेव समणे भगवं महावीरे जहा गोयमसामी जाव पडिदंसेति २ समणेणं भगवया महावीरेणं अब्भणुराणाते अमुच्छिते ४ बिलमिव पराणगभूतेणं अप्पाणेणं तमाहारं आहारेति, तते णं समणे भगवं महावीरे अन्नदा रायगिहातो नगरातो पडिनिक्खमति २ बहिं जणवयविहार विहरति, तते णं से अज्जुणते अणगारे तेणं ओरालेणं पयत्तेणं पग्गहिएणं महाणुभागेणं तवोकम्मेणं अप्पाणं भावेमाणे बहुपुराणे छम्मासे सामराणपरियागं पाउणति, अद्धमासियाए संलेहणाए अप्पाणं झूसेति तीसं भत्ताइं अणसणाते छेदेति २ जस्सट्ठाते कीरति जाव सिद्धे ३, १३ ॥ सू० १३ ॥ ते णं काले णं २ रायगिहे नगरे गुणसिलए चेतिते तत्थ णं सेणिए राया कासवे णामं गाहावती परिवसति जहा मंकाती, सोलस वासा परियाओ विपुले सिद्धे ४ । एवं खेमतेऽवि गाहावती, नवरं काकंदी नगरी सोलस परिताओ विपुले पव्वए सिद्धे ५ । एवं धितिहरेवि गाहावती नवरं काकंदीए नगरीए सोलस वासा परियाओ जाव विपुले सिद्धे ६ । एवं केलासेवि गाहावती नवरं सागेए नगरे बारस वासाइं परियाओ विपुले सिद्धे ७ । एवं हरिचंदणेवि गाहावती साएए बारस वासा परियाओ विपुले सिद्धे ८ । एवं बारत्ततेवि गाहावती नवरं रायगिहे नगरे बारस वासा परियाओ विपुले सिद्धे ९ । एवं सुदंसणेवि गाहावती नवरं वाणियगामे नयरे दूतिपलासते चेइते पंच वासा परियाओ विपुले सिद्धे १० । एवं पुन्नभद्दे वि गाहावती वाणियगामे नगरे पंच वासा विपुले सिद्धे ११ । एवं सुमणभद्दे वि सावत्थीए नगरीए बहुवासपरियाए विपुले सिद्धे १२ । एवं

सुपइट्ठे वि गाहावती सावत्थीए नगरीए सत्तावीसं वासा परियाओ विपुले सिद्धे १३। मेहे रायगिहे नगरे बहूइं वासातिं परिताओ विपुले सिद्धे १४ ॥ सू० १४ ॥ ते णं काले णं २ पोलासपुरे नगरे सिरिवणे उज्जाणे, तत्थ णं पोलासपुरे नगरे विजये नामं राया होत्था, तस्स णं विजयस्स रन्नो सिरी नामं देवी होत्था वन्नतो, तस्स णं विजयस्स रन्नो पुत्ते सिरीए देवीते अत्तते अतिमुत्ते नामं कुमारे होत्था सूमाले (सुकुमाले जाव सुरूवे), ते णं काले णं २ समणे भगवं महावीरे जाव सिरिवणे विहरति २। ते णं काले णं २ समणस्स भगवओ महावीरस्स जेट्ठे अंतेवासी इंदभूती जहा पन्नत्तीए जाव पोलासपुरे नगरे उच्च जाव अडइ, इमं च णं अइमुत्ते कुमारे रहाते जाव विभूसिते बहूहिं दारएहि य दारियाहि य डिंभएहि य डिंभियाहि य कुमारएहि य कुमारियाहि य सद्धिं संपरिवुडे सतो गिहातो पडिनिक्खमति २ जेणेव इंदट्ठाणे तेणेव उवागते तेहिं बहूहिं दारएहि य ६ संपरिवुडे अभिरममाणे २ विहरति, तते णं भगवं गोयमे पोलासपुरे नगरे उच्चनीय जाव अडमाणे इंदट्ठाणस्स अदूरसामंतेणं वीतीवयति ३। तते णं से अइमुते कुमारे भगवं गोयमं अदूरसामंतेणं वीतीवयमाणं पासति २ जेणेव भगवं गोयमे तेणेव उवागते २ भगवं गोयमं एवं वदासी–के णं भंते ! तुब्भे ? किं वा अडह ?, तते णं भगवं गोयमे आइमुत्तं कुमारं एवं वयासी–अम्हे णं देवाणुप्पिया ! समणा णिग्गंथा ईरियासमिया जाव बंभयारी, उच्चनीय जाव अडामो, तते णं अतिमुत्ते कुमारे भगवं गोयमं एवं वयासी–एह णं भंते ! तुब्भे जा णं अहं तुब्भं भिक्खं दवावेमीतिकट्टु भगवं गोयमं अंगुलीए गेराहति २ जेणेव सते गिहे तेणेव उवागते तते णं सा सिरीदेवी भगवं गोयमं एज्जमाणं पासति पासेत्ता हट्ठतुट्ठा आसणातो अब्भुट्ठेति २ जेणेव भगवं गोयमे तेणेव उवागया भगवं गोयमं तिक्खुत्तो आयाहिणपयाहिणं वंदति २ विउलेणं असण-पाणखाइमसाइमेणं पडिलाभेइ

२, पडिविसज्जेति ४। तते णं से अतिमुत्ते कुमारे भगवं गोयमं एवं वयासी—कहि णं भंते ! तुब्भे परिवसह ?, तते णं भगवं गोयमं अइमुत्तं कुमारं एवं वयासी—एवं खलु देवाणुप्पिया ! मम धम्मायरिए धम्मोवतेसते धम्मनेतारे भगवं महावीरे आदिकरे जाव संपाविउकामे इहेव पोलासपुरस्स नगरस्स बहिया सिरिवणे उज्जाणे अहापडिरूवं उग्गहं उग्गिराहइ २ संजमेणं जाव भावेमाणे विहरति, तत्थ णं अम्हे परिवसामो, तते णं से अइमुत्ते कुमारे भगवं गोयमं एवं वयासी—ग(इ)च्छामि णं भंते ! अहं तुब्भेहिं सद्धिं समणं भगवं महावीरं पायवंदते, अहासुहं, तते णं से अतिमुत्ते कुमारे भगवं गोतमेणं सद्धिं जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छति २ समणं भगवं महावीरं तिक्खुत्तो आयाहिणपयाहिणं करेति २ वंदति जाव पज्जुवासति, तते णं भगवं गोयमे जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागते जाव पडिदंसेति २ संजमेण तवसा य अप्पाणं भावेमाणे विहरति, तते णं समणे २ अतिमुत्तस्स कुमारस्स तीसे य धम्मकहा, तते णं से अतिमुत्ते समणस्स भगवओ महावीररस्स अंतीए धम्मं सोच्चा निसम्म हट्ठतुट्ठे, जं नवरं देवाणुप्पिया ! अम्मापियरो आपुच्छामि, तते णं अहं देवाणुप्पिया ! अंतिए जाव पव्वयामि, अहासुहं देवाणुप्पिया मा पडिबंधं करेह, ५। तते णं से अतिमुत्ते जेणेव अम्मापियरो तेणेव उवागते जाव पव्वतित्तए, अतिमुत्तं कुमारं अम्मापितरो एवं वयासी—बालेसि ताव तुमं पुत्ता ! असंबुद्धेसि०, किं नं तुमं जाणासि धम्मं ?, तते णं से अतिमुत्ते कुमारे अम्मापियरो एवं वयासी—एवं खलु अम्मयातो ! जं चेव जाणामि तं चेव न याणामि, जं चेव न याणामि तं चेव जाणामि, तते णं तं अइमुत्तं कुमारं अम्मापियरो एवं वयासी—कहं णं तुमं पुत्ता ! जं चेव जाणसि जाव तं चेव जाणसि ?, तते णं से अतिमुत्ते कुमारे अम्मापितरो एवं वयासी—जाणामि अहं अम्मतातो ! जहा जाएणं अवस्स मरियव्वं, न जाणामि अहं

अम्मतातो ! काहे वा कहिं वा कहं वा केच्चिरेण वा ?, न जाणामि अम्मयातो ! केहिं कम्माय(व)यणेहिं जीवा नेरइयतिरिक्खजोणिमणुस्सदेवेसु उववज्जंति, जाणामि णं अम्मयातो ! जहा सतेहिं कम्मायाणेहिं जीवा नेरइय जाव उववज्जंति, एवं खलु अहं अम्मतातो ! जं चेव जाणामि तं चेव न याणामि, जं चेव न याणामि तं चेव जाणामि, तते णं इच्छामि णं अम्मतातो ! तुब्भेहिं अब्भणुणाते जाव पव्वइत्तते, तते णं तं अइमुत्तं कुमारं अम्मापियरो जाहे नो संचाएंति बहूहिं आघवणाहिं ४ जाव वयासी–तं इच्छामो ते जाता ! एगदिवसमवि रायसिरिं पासेत्तते ६ । तते णं से अतिमुत्ते कुमारे अम्मापिउवयण-मणुयत्तमाणे तुसिणीए संचिट्ठति, अभिसेओ जहा महाबलस्स, निक्खमणं जाव सामाइयमाइयाइं अहिज्जति, बहूइं वासाइं सामण्णपरियागं गुणरयणं जाव विपुले सिद्धे १५, ७ । ते णं काले णं २ वाणारसीए नयरीए काममहावणे चेतिते, तत्थ णं वाणारसीइ अलक्खे णामं राया होत्था, ते णं काले णं २ समणे जाव विहरति, परिसा निग्गया, तते णं अलक्खे राया इमीसे कहाते लद्धट्ठे हट्ठ जहा कूणिए जाव पज्जुवासति, धम्मकहा, तते णं से अलक्खे राया समणस्स भगवओ महावीरस्स जहा उदायणे तहा णिक्खंते णवरं जेट्ठपुत्तं रज्जे अहिसिंचति, एक्कारस अंगा, बहू वासा परियाओ जाव विपुले सिद्धे १६ । एवं जंबू ! समणेणं जाव छट्ठस्स वग्गस्स अयमट्ठे पन्नत्ते ॥ सू० १५ ॥ छट्ठो वग्गो समत्तो ६ ॥

॥७॥ अथ सप्तमो वर्गः ॥

जति णं भंते ! सत्तमस्स वग्गस्स उक्खेवओ जाव तेरस अज्झयणा पण्णत्ता–नंदा १ तह नंदमती २ नंदोत्तर ३ नंदसेणिया ४ चेव । महया ५ सुमरुत ६ महमरुय ७ मरुद्देवा ८ य अट्ठमा ॥१॥ भद्दा ९ य सुभद्दा १० य, सुजाता ११ सुमणातिया १२ । भूयदित्ता १३ य बोद्धव्वा, सेणियभज्जाण नामइं ॥२॥ जइ णं भंते ! तेरस अज्झयणा पन्नत्ता, पढमस्स

णं भंते ! अज्झयणस्स समणेणं जाव संपत्तेणं के अट्ठे पन्नत्ते ?, एवं खलु जंबू ! ते णं काले णं २ रायगिहे नगरे गुणसिलते चेतिते सेणिते राया वन्नतो, तस्स णं सेणियस्स रगणो नंदा नामं देवी होत्था वन्नश्रो, सामी समोसढे परिसा निग्गता, तते णं सा नंदादेवी इमीसे कहाते लद्धट्ठा कोडुंबियपुरिसे सद्दावेति २ जाणं जहा पउमावती जाव एकारस अंगाइं अहिज्जित्ता वीसं वासाइं परियातो जाव सिद्धा। एवं तेरसवि देवीओ णंदागमेण णेयव्वातो ॥ सू० १६ ॥ सत्तमो वग्गो समत्तो–७ ॥

॥८॥ अथ अष्टमो वर्गः ॥

जति णं भंते ! अट्ठमस्स वग्गस्स उक्खेवश्रो जाव दस अज्झयणा पगणत्ता, तं जहा–काली १ सुकाली २ महाकाली ३ कगहा ४ सुकगहा ५ महाकगहा ६ । वीरकगहा ७ य बोद्धव्वा रामकगहा ८ तहेव य ॥१॥ पिउसेणकगहा ९ नवमी दसमी महासेणकगहा १० य ॥ १ । जति णं भंते ! अट्ठमस्स वग्गस्स दस अज्झयणा, पढमस्स अज्झयणस्स के अट्ठे पन्नत्ते ?, एवं खलु जंबू ! ते णं काले णं २ चंपा नाम नगरी होत्था, पुन्नभद्दे चेतिते, तत्थ णं चंपाए नयरीए कोणिए राया वगणतो, तत्थ णं चंपाए नयरीए सेणियस्स रन्नो भज्जा कोणियस्स रगणो चुलमाउया काली नामदेवी होत्था, वगणतो, जहा नंदा जाव सामातियमातियातिं एकारस अंगाइं अहिज्जति, बहूहिं चउत्थ-छट्ठट्ठम-दसमदुवालसेहिं जाव अप्पाणं भावेमाणी विहरति, तते णं सा काली अगणया कदाइ जेणेव अज्जचंदणा अज्जा तेणेव उवागच्छति २ एवं वयासी–इच्छामि णं अज्जाओ ! तुब्भेहिं अब्भणुगणाता समाणा रयणावलिं तवं उवसंपज्जेत्ताणं विहरेत्तते, अहासुहं, देवाणुप्पिया, २ । तते णं सा काली अज्जा अज्जचंदणाए अब्भणुगणाया समाणा रयणावलिं उवसंपजित्ताणं विहरति, तंजहा–चउत्थं करेति चउत्थं करेत्ता सव्वकामगुणियं पारेति, सव्वकामगुणियं पारेत्ता छट्ठं करेति २

सव्वकामगुणियं पारेति २ अट्ठमं करेति २ सव्वकामगुणियं पारेति २ अट्ठ छट्ठाइं करेति २ सव्वकामगुणियं पारेति २ चउत्थं करेति २ सव्वकामगुणियं पारेति २ छट्ठं करेति २ सव्वकामगुणियं पारेति २ अट्ठमं करेति २ सव्वकामगुणियं पारेति २ दसमं करेति २ सव्वकामगुणियं पारेति २ दुवालसमं करेति २ सव्वकामगुणियं पारेति २ चोद्दसमं करेति २ सव्वकामगुणियं पारेति २ सोलसमं करेति २ सव्वकामगुणियं पारेति २ अट्ठारसमं करेति २ सव्वकामगुणियं पारेति २ वीसइमं करेति २ सव्वकामगुणियं पारेति २ बावीसइमं करेति २ सव्वकामगुणियं पारेति २ चउवीसइमं करेति २ सव्वकामगुणियं पारेति २ छव्वीसइमं करेति २ सव्वकामगुणियं पारेति २ अट्ठावीसइमं करेति २ सव्वकामगुणियं पारेति २ तीसइमं करेति २ सव्वकामगुणियं पारेति २ बत्तीसइमं करेति २ सव्वकामगुणियं पारेति २ चोत्तीसइमं करेति २ सव्वकामगुणियं पारेति २ चोत्तीसं छट्ठाइं करेति २ सव्वकामगुणियं पारेति २ चोत्तीसं करेति २ सव्वकामगुणियं पारेति २ बत्तीसं करेति २ सव्वकामगुणियं पारेति २ तीसं करेति २ सव्वकामगुणियं पारेति २ अट्ठावीसं करेति २ सव्वकामगुणियं पारेति २ छव्वीसं करेति २ सव्वकामगुणियं पारेति २ चउवीसं करेति २ सव्वकामगुणियं पारेति २ बावीसं करेति २ सव्वकामगुणियं पारेति २ वीसं करेति २ सव्वकामगुणियं पारेति २ अट्ठारसं करेति २ सव्वकामगुणियं पारेति २ सोलसमं करेति २ सव्वकामगुणियं पारेति २ चोद्दसमं करेति २ सव्वकागुणियं पारेति २ बारसमं करेति २ सव्वकामगुणियं पारेति २ दसमं करेति २ सव्वकामगुणियं पारेति २ अट्ठमं करेति २ सव्वकामगुणियं पारेति २ छट्ठं करेति २ सव्वकामगुणियं पारेति २ चउत्थं करेति २ सव्वकामगुणियं पारेति २ अट्ठ छट्ठाइं करेति २ सव्वकामगुणियं पारेति २ अट्ठमं करेति २ सव्वकामगुणियं पारेति २

छट्ठं करेति २ सव्वकामगुणियं पारेति २ चउत्थं करेति २ सव्वकाम-गुणियं पारेति, एवं खलु एसा रयणावलीए तवोकम्मस्स पढमा परिवाडी एगेणं संवच्छरेणं तिहिं मासेहिं बावीसाए य अहोरत्तेहिं अहासुत्ता जाव आराहिया भवति,' तदाणंतरं च णं दोच्चाए परिवाडीए चउत्थं करेति विगतिवज्जं पारेति २ छट्ठं करेति २ विगतिवज्जं पारेति एवं जहा पढमाएवि नवरं सव्वपारणाते विगतिवज्जं पारेति जाव आराहिया भवति, तयाणंतरं च णं तच्चाए परिवाडीए चउत्थं करेति चउत्थं करेत्ता अलेवाडं पारेति सेसं तहेव, एवं चउत्था परिवाडी नवरं सव्वपारणाते आयंबिलं पारेति सेसं तं चेव,—पढमंमि सव्वकामं पारणयं बितियते विगति-वज्जं। ततियंमि अलेवाडं आयंबिलमो चउत्थंमि ॥ १ ॥ तते णं सा काली अज्जा रयणावलीतवोकम्मं पंचहिं संवच्छरेहिं दोहि य मासेहिं अट्ठावीसाए य दिवसेहिं अहासुत्तं जाव आराहेत्ता जेणेव अज्जचंदणा अज्जा तेणेव उवागच्छति २ अज्जचंदणं अज्जं वंदति णमंसति २ बहूहिं चउत्थ जाव अप्पाणं भावेमाणी विहरति ३। तते णं सा काली अज्जा तेणं ओरालेणं जाव धमणिसंतया जाया यावि होत्था, से जहा इंगाल सगडिगाइ जाव सुहुयहुयासणे इव भासरासिपलिच्छण्णा तवेणं तेएणं तवतेयसिरीए अतीव २ उवसोभेमाणी २ चिट्ठति, तते णं तीसे कालीए अज्जाए अन्नदा कदाइ पुव्वरत्तावरत्तकाले अयं अब्भत्थिते ४—जहा खंदयस्स चिंता जहा जाव अत्थि उट्ठाणे, कम्मे बले वीरिए पुरिसक्कारपरक्कमे, ताव ताव मे सेयं कल्लं पाउप्पभायाए रयणीए जाव तेयसा जलंते सूरे अज्जचंदणं अज्जं आपु-च्छित्ता अज्जचंदणाए अज्जाए अब्भणुन्नायाए समाणीए संलेहणाझूसणा झूसिया भत्तपाणपडियाइक्खिया पओवगया कालं अणवकंखमाणे विहरेत्तए-त्तिकट्टु एवं संपेहेति २ कल्लं जेणेव अज्जचंदणा अज्जा तेणेव उवागच्छति २ अज्जचंदणं वंदति णमंसति २ एवं वयासी—इच्छामि णं

अज्जो ! तुब्भेहिं अब्भणुराणाता समाणी संलेहणाभूसणा-भूसिया जाव विहरेत्तते, अहासुहं देवाणुप्पिया ! ४। तए णं काली अज्जा अज्जचंदणाते अब्भणुराणाता समाणी संलेहणाभूसिया जाव विहरति, तए णं सा काली अज्जा अज्जचंदणाए अंतिते सामाइयमाइयाइं एक्कारस अंगाइं अहिज्जित्ता (ज्जति २) बहुपडिपुन्नाइं अट्ठ संवच्छराइं सामराणपरियागं पाउणित्ता मासियाए संलेहणाए अत्ताणं भूसेत्ता सट्ठिं भत्तातिं अणसणाते छेदेत्ता जस्सट्ठाए कीरति जाव चरिमुस्सासनीसासेहिं सिद्धा ५, ५ ॥ सू० १७ ॥ णिक्खेवो पढमं अज्झयणं ॥ ते णं काले णं २ चंपा नाम नगरी पुन्नभद्दे चेतिते कोणिए राया, तत्थ णं सेणियस्स रन्नो भज्जा कोणियस्स रराणो चुल्लमाउया सुकालीनाम देवी होत्था, जहा काली तहा सुकालीवि णिक्खंता जाव बहूहिं चउत्थ जाव भावेमाणी विहरति, तते णं सा सुकाली अज्जा अन्नया कयाइ जेणेव अज्जचंदणा अज्जा जाव इच्छामि णं अज्जो ! तुब्भेहिं अब्भणुन्नाता समाणी कणगावलीतवोकम्मं उवसंपज्जित्ताणं विहरेत्तते, एवं जहा रयणावली तहा कणगावलीवि, नवरं तिसु ठाणेसु अट्ठमाइं करेति जहा रयणावलीए छट्ठाइं एक्काए परिवाडीए संवच्छरो पंच मासा बारस य अहोरत्ता चउराहं पंच वरिसा नव मासा अट्ठारस दिवसा सेसं तहेव, नव वासा परियातो जाव सिद्धा ॥ सू० १८ ॥ एवं महाकालीवि, नवरं खुड्डागं सीहनिकीलियं तवोकम्मं उवसंपज्जित्ताणं विहरति, तं जहा— चउत्थं करेति २ सव्वकामगुणियं पारेति पारेत्ता छट्ठं करेति २ सव्वकामगुणियं पारेति २ चउत्थं करेति २ सव्वकामगुणियं पारेति २ अट्ठम करेति २ सव्वकामगुणियं पारेति २ छट्ठं करेति २ सव्वकामगुणियं पारेति २ दसमं करेति २ सव्वकामगुणियं पारेति २ अट्ठमं करेति २ सव्वकामगुणियं पारेति २ दुवालसं करेति २ सव्वकामगुणियं पारेति २ दसमं करेति २ सव्वकामगुणियं पारेति २ चोद्दसं करेति २ सव्वकामगुणियं

पारेति २ बारसमं करेति २ सव्वकामगुणियं पारेति २ सोलसमं करेति २ सव्वकामगुणियं पारेति २ चोद्दसमं करेति २ सव्वकामगुणियं पारेति २ अट्ठारसं करेति २ सव्वकामगुणियं पारेति २ सोलसमं करेति २ सव्वकामगुणियं पारेति २ वीसइमं करेति २ सव्वकामगुणियं पारेति २ अट्ठारसमं करेति २ सव्वकामगुणियं पारेति २ वीसइमं करेति २ सव्वकामगुणियं पारेति २ सोलसमं करेति २ सव्वकामगुणियं पारेति २ अट्ठारसमं करेति २ सव्वकमागुणियं पारेति २ चोद्दसमं करेति २ सव्वकामगुणियं पारेति २ सोलसमं करेति २ सव्वकामगुणियं पारेति २ बारसमं करेति २ सव्वकामगुणियं पारेति २ चोद्दसमं करेति २ सव्वकामगुणियं पारेति २ दसमं करेति २ सव्वकामगुणियं पारेति २ बारसमं करेति २ सव्वकामगुणियं पारेति २ अट्ठमं करेति २ सव्वकामगुणियं पारेति २ दसमं करेति २ सव्वकामगुणियं पारेति २ छट्ठं करेति २ सव्वकामगुणियं पारेति २ अट्ठमं करेति २ सव्वकामगुणियं पारेति २ चउत्थं करेति २ सव्वकामगुणियं पारेति २ छट्ठं करेति २ सव्वकामगुणियं पारेति २ चउत्थं करेति २ सव्वकामगुणियं पारेति २, तहेव चत्तारि परिवाडीओ, एकाए परिवाडीए छम्मासा सत्त य दिवसा, चउरहं दो वरिसा अट्ठावीसा य दिवसा जाव सिद्धा ॥ सू० ११ ॥ एवं कराहावि नवरं महालयं सीहणिकीलियं तवोकम्मं जहेव खुड्डागं नवरं चोत्तीसइमं जाव णेयव्वं तहेव ऊसारेयव्वं, एकाए वरिसं छम्मासा अट्ठारस य दिवसा, चउरहं छव्वरिसा दो मासा बारस य अहोरत्ता, सेसं जहा कालीए जाव सिद्धा ॥ सू० २० ॥ एवं सुकराहावि णवरं सत्तसत्तमियं भिक्खुपडिमं उवसंपज्जित्ताणं विहरति, पढमे सत्तए एक्केक्कं भोयणस्स दत्तिं पडिगाहेति एक्केक्कं पाणयस्स, दोच्चे सत्तए दो दो भोयणस्स दो दो पाणयस्स पडिगाहेति, तच्चे सत्तते तिन्नि भोयणस्स तिन्नि पाणयस्स, चउत्थे पंचमे छट्ठे सत्तमे सत्तते सत्त दत्तीतो

भोयणस्स पडिग्गाहेत्ति सत्त पाणयस्स, एवं खलु एयं सत्तसत्तमियं भिक्खुपडिमं एगूणपन्नाते रातिंदिएहिं एगेण य छन्नउएणं भिक्खासतेणं अहासुत्तं जाव आराहेत्ता जेणेव अज्ज चंदणा अज्जा तेणेव उवागया अज्जचंदणं अज्जं वंदति नमंसति २ एवं वयासी–इच्छामि णं अज्जातो ! तुब्भेहिं अब्भणुराणाता समाणी अट्ठट्ठमियं भिक्खुपडिमं उवसंपज्जित्ताणं विहरेत्तते, अहासुहं देवाणुप्पिया ! १ । तते णं सा सुकरहा अज्जा अज्जचंदणाए अब्भणुराणाया समाणी अट्ठट्ठमियं भिक्खुपडिमं उवसंपज्जित्ताणं विहरति, पढमे अट्ठए एक्केक्कं भोयणस्स दत्तिं पडिगाहेति एक्केक्कं पाणगस्स जाव अट्ठमे अट्ठए अट्ठट्ठ भोयणस्स पडिगाहेति अट्ठ पाणगस्स, एवं खलु एयं अट्ठट्ठमियं भिक्खुपडिमं चउसट्ठीए रातिंदिएहिं दोहि य अट्ठासीतेहिं भिक्खासतेहिं अहा जाव नवनवमियं भिक्खुपडिमं उवसंपज्जित्ता णं विहरति, पढमे नवए एक्केक्कं भोयणस्स दत्तिं पडिगाहेति एक्केक्कं पाणयस्स जाव नवमे नवए नव नव दत्तिओ भोयणस्स पडिगाहेति नव २ पाणयस्स, एवं खलु नवनवमियं भिक्खुपडिमं एकासीतीराइंदिएहिं चउहिं पंचोत्तरेहिं भिक्खासतेहिं अहासुत्तं जाव अराहेत्ता, दसदसमियं भिक्खुपडिमं उवसंपज्जित्ताणं विहरति, पढमे दसते एक्केक्कं भोयणस्स पडिगाहेति एक्केक्कं पाणयस्स जाव दसमे दसए दस २ भोयणस्स दत्ती पडिग्गाहेति दस २ पाणस्स, एवं खलु एयं दसदसमियं भिक्खुपडिमं एक्केणं राइंदियसतेणं अद्धछट्ठेहिं भिक्खासतेहिं अहासुत्तं जाव आराहेति २ बहूहिं चउत्थ जाव मासद्धमास-विविहतवोकम्मेहिं अप्पाणं भावेमाणी विहरति, तए णं सा सुकरहा अज्जा तेणं ओरालेणं जाव सिद्धा, निक्खेवो अज्झयणा २ ॥ सू० २१ ॥ एवं महाकरहावि णवरं खुड्डागं सव्वओभद्दं पडिमं उवसंपज्जित्ताणं विहरति, चउत्थं करेति २ सव्वकामगुणियं पारेति सव्वकामगुणियं पारेत्ता छट्ठं करेति छट्ठं करेत्ता सव्व० २ अट्ठमं करेति २ सव्व० २ दसमं

करेति २ सव्व० २ दुवालसमं करेति २ सव्व० २ अट्ठमं करेति २ सव्व० २ दसमं करेति २ सव्व० २ दुवालसमं करेति २ सव्व० २ चउत्थं करेति २ सव्व० २ छट्ठं करेति २ सव्व० २ दुवालसं करेति २ सव्व० २ चउत्थं करेति २ सव्व० २ छट्ठं करेति २ सव्व० २ अट्ठमं करेति २ सव्व० २ दसमं करेति २ सव्व० २ छट्ठं करेति २ सव्व०२अट्ठमं करेति २ सव्व० २ दसमं करेति २ सव्व० २ दुवालसमं करेति २ सव्व० २ चउत्थं करेति २ सव्व० २ दसमं करेति २ सव्व० २ दुवालसमं करेति २ सव्व० २ चउत्थं करेति २ सव्व० २ छट्ठं करेति २ सव्व० २ अट्ठमं करेति २ सव्व० २, एवं खलु एवं खुड्डागसव्वतोभद्दस्स तवोकम्मस्स पढमं परिवाडिं तिहिं मासेहिं दसहिं दिवसेहिं अहासुत्तं जाव आराहेता दोच्चाए परिवाडीए चउत्थं करेति २ विगतिवज्जं पारेति २ जहा रयणावलीए तहा एत्थवि चत्तारि परिवाडीतो पारणा तहेव, चउण्हं कालो संवच्छरो मासो दस य दिवसा सेसं तहेव जाव सिद्धा, निक्खेवो अज्झयणं ॥ सू० २२ ॥ एवं वीरकराहावि नवरं महालयं सव्वतोभद्दं तवोकम्मं उवसंपजित्ताणं विहरति, तं जहा—चउत्थं करेति २ सव्वकामगुणियं पारेति २ छट्ठं करेति २ सव्वकामगुणियं पारेति २ अट्ठमं करेति २ सव्वकामगुणियं पारेति २ दसमं करेति २ सव्वकामगुणियं पारेति २ दुवालसमं करेति २ सव्व० २ चोद्दसमं करेति २ सव्व० २ सोलसमं करेति २ (एका लया—१), सव्व० २ दसमं करेति २ सव्व० २ दुवालसमं करेति २ सव्व० २ चउदसमं करेति २ सव्व० २ सोलसमं करेति २ सव्व० २ चउत्थं करेति २ सव्व० २ छट्ठं करेति २ सव्व० २ अट्ठमं करेति २ (बीया लया २), सव्व० २ सोलसमं करेति २ सव्व० २ चउत्थं करेति २ सव्व० २ छट्ठं करेति २ सव्व २ अट्ठमं करेति २ सव्व० २ दसमं करेति २ सव्व० २ दुवालसमं करेति २ सव्व० २ चोद्दसमं करेति २ (तईया लया—३), सव्व० २ अट्ठमं करेति २ सव्व० २ दसमं

करेइ २ सव्व० २ दुवालसमं करेति २ सव्व० २ चोद्दसमं करेति २ सव्व० २ सोलसमं करेति २ सव्व० २ चउत्थं करेति २ सव्व० २ छट्ठं करेति २ (चउत्थी लया) सव्व० २ चोद्दसमं (दसमं) करेति २ सव्व० २ सोलसमं करेति २ सव्व० २ चउत्थं करेति २ सव्व० २ छट्ठं करेति २ सव्व० २ अट्ठमं करेति २ सव्व० २ दसमं करेति २ सव्व० २ दुवालसमं करेति २ (पंचमी लया–५), सव्व० २ छट्ठं करेति २ सव्व० २ अट्ठमं करेति २ सव्व० २ दसमं करेति २ सव्व० २ दुवालसमं करेति २ सव्व० २ चोद्दसमं करेति २ सव्व० २ सोलसमं करेति २ सव्व० २ चउत्थं करेति २ (छट्ठी लया–६), सव्व० २ दुवालसमं करेति २ सव्व० २ चोद्दसमं करेति २ सव्व० २ सोलसमं करेति २ सव्व० २ चउत्थं करेति २ सव्व० २ छट्ठं करेति २ सव्व० २ अट्ठमं करेति २ सव्व० २ दसमं करेति २ (सत्तमी लया–७), एक्केकाए लयाए अट्ठ मासा पंच य दिवसा चउण्हं दो वासा अट्ठ मासा वीसं दिवसा सेसं तहेव जाव सिद्धा ॥ सू० २३ ॥ एवं रामकण्हावि नवरं भद्दोत्तरपडिमं उवसंपज्जित्ताणं विहरति, तंजहा–दुवालसमं करेति २ सव्वकामगुणियं पारेति २ चोद्दसमं करेति २ सव्व० २ अट्ठारसमं करेति २ सव्व० २ वीसइमं करेति २ सव्व० २ सोलसमं करेति २ सव्व० २ अट्ठारसमं करेति २ सव्व० २ वीसइमं करेति २ सव्व० २ दुवालसमं करेति २ सव्व० २ चोद्दसमं करेति २ सव्व० २ वीसतिमं करेति २ सव्व० २ दुवालसमं करेति २ सव्व० २ चोद्दसमं करेति २ सव्व० २ सोलसमं करेति २ सव्व० २ अट्ठारसं करेति २ सव्व० २ चोद्दसमं करेति २ सव्व० २ सोलसमं करेति २ सव्व० २ अट्ठारसमं करेति २ सव्व० २ वीसइमं करेति २ सव्व० २ दुवालसमं करेति २ सव्व० २ अट्ठारसमं करेति २ सव्व० २ वीसतिमं करेति २ सव्व० २ दुवालसमं करेति २ सव्व० २ चोद्दसमं करेति २ सव्व० २ सोलसमं करेति, एकाये

कालो छम्मासा वीस य दिवसा, चउण्हं कालो दो वरिसा दो मासा वीस य दिवसा, सेसं तहेव जहा काली जाव सिद्धा ॥ सू० २४ ॥ एवं पितुसेणकण्हावि नवरं मुत्तावलीतवोकम्मं उवसंपज्जित्ताणं विहरति, तंजहा–चउत्थं करेति २ सव्वकामगुणियं पारेति २ छट्ठं करेति २ सव्व० २ चउत्थं करेति २ सव्व० २ अट्ठमं करेति २ सव्व० २ चउत्थं करेति २ सव्व० २ दसमं करेति २ सव्व० २ चउत्थं करेति २ सव्व० २ दुवालसमं करेति २ सव्व० २ चउत्थं करेति २ सव्व० २ चोद्दसमं करेति २ सव्व० २ चउत्थं करेति २ सव्व० २ सोलसमं करेति २ सव्व० २ चउत्थं करेति २ सव्व० २ अट्ठारसं करेति २ सव्व० २ चउत्थं करेति २ सव्व० २ वीसतिमं करेति २ सव्व० २ चउत्थं करेति २ सव्व० २ बावीसइमं करेति २ सव्व० २ चउवीसतिमं करेति २ सव्व० २ चउत्थं करेति २ सव्व० २ छव्वीसइमं करेति २ सव्व० २ चउत्थं करेति २ सव्व० २ अट्ठावीसं करेति २ सव्व० २ चउत्थं करेति २ सव्व० २ तीसइमं करेति २ सव्व० २ चउत्थं करेति २ सव्व० २ बत्तीसइमं करेति २ सव्व० २ चउत्थं करेति २ सव्व० २ चोत्तीसइमं करेति, एवं तहेव ओसारेति जाव चउत्थं करेति चउत्थं करेत्ता सव्वकामगुणियं पारेति, एक्काए कालो एक्कारस मासा पनरस य दिवसा चउण्हं तिण्णि वरिसा दस य मासा सेसं जाव सिद्धा ॥ सू० २५ ॥ एवं महासेणकण्हावि, नवरं आयंबिलवड्ढमाणं तवोकम्मं उवसंपज्जित्ताणं विहरति, तंजहा–आयंबिलं करेति २ चउत्थं करेति २ बे आयंबिलाइं करेति २ चउत्थं करेति २ तिन्नि आयंबिलाइं करेति २ चउत्थं करेति २ चत्तारि आयंबिलाइं करेति २ चउत्थं करेति २ पंच आयंबिलाइं करेति २ चउत्थं करेति २ छ आयंबिलाइं करेति २ चउत्थं करेति २ एवं एक्कोत्तरियाए वड्ढीए आयंबिलाइं वड्ढंति चउत्थंतरियाइं जाव आयंबिलसयं करेति २ चउत्थं करेति, तते णं सा महासेणकण्हा

अज्जा आयंबिलवड्ढमाणं तवोकम्मं चोद्दसहिं वासेहिं तिहि य मासेहिं वीसहि य अहोरत्तेहिं अहासुत्तं जाव सम्मं काएणं फासेति जाव आराहेत्ता जेणेव अज्जचंदणा अज्जा तेणेव उवागच्छति वंदति नमंसति वंदित्ता नमंसित्ता बहूहिं चउत्थेहिं जाव भावेमाणी विहरति, तते णं सा महासेणकण्हा अज्जा तेणं ओरालेणं जाव उवसोभेमाणी चिट्ठइ, तए णं तीसे महसेणकण्हाए अज्जाए अन्नया कयाति पुव्वरत्तावरत्तकाले चिंता जहा खंदयस्स जाव अज्जचंदणं पुच्छइ जाव संलेहणा, कालं अणवकंखमाणी विहरति, तते णं सा महसेणकण्हा अज्जा अज्जचंदणाए अज्जाए अंतिए सामाइयाति एक्कारस अंगाइं अहिज्जित्ता बहुपडिपुन्नातिं सत्तरस वासातिं परियायं पालइत्ता मासियाए संलेहणाए अप्पाणं भूसेत्ता सट्ठिं भत्ताइं अणसणाए छेदेत्ता जस्सट्ठाए कीरइ जाव तमट्ठं आराहेति चरिमउस्सासणीसासेहिं सिद्धा बुद्धा। अट्ठ य वासा आदी एकोत्तरियाए जाव सत्तरस। एसो खलु परितात्रो सेणियभज्जाण णायव्वो ॥ १ ॥ एवं खलु जंबू! समणेणं भगवता महावीरेणं आदिगरेणं जाव संपत्तेणं अट्ठमस्स अंगस्स अंतगडदसाणं अयमट्ठे पन्नत्ते ति बेमि। अट्ठमो वग्गो समत्तो ८॥ अट्ठमं अंगं समत्तं ॥ सू० २६ ॥ अंतगडदसाणं अंगस्स एगो सुयखंधो अट्ठ वग्गा णट्ठसु चेव दिवसेसु उद्दिसिज्जंति, तत्थ पढमवितियवग्गे दस २ उद्देसगा, तईयवग्गे तेरस उद्देसगा, चउत्थपंचमवग्गे दस २ उद्देसया, छट्ठवग्गे सोलस उद्देसगा, सत्तमवग्गे तेरस उद्देसगा, अट्ठमवग्गे दस उद्देसगा, सेसं जहा नायाधम्मकहाणं ॥ सू० २७ ॥

॥ इति श्रीअन्तकृद्दशाङ्ग-सूत्रं समाप्तम् ।

(ग्रन्थाग्रं ७९०)

—:०:—

॥ अर्हम् ॥

पञ्चमगणभृत्श्रीमत्सुधर्मस्वामि-प्रणीतं

॥ श्रीमदनुत्तरोपपातिकदशांग-सूत्रम् ॥

—:०:—

॥१॥ अथ प्रथमो वर्ग्गः ॥

ते णं काले णं ते णं समए णं रायगिहे नगरे अज्जसुहम्मस्स समोसरणं परिसा णिग्गया जाव जंबू पज्जुवासति, २ एवं वयासी—जति णं भंते ! समणेणं जाव संपत्तेणं अट्ठमस्स अंगस्स अंतगडदसाणं अयमट्ठे पराणत्ते, नवमस्स णं भंते ! अंगस्स अणुत्तरोववाइयदसाणं समणेणं जाव संपत्तेणं के अट्ठे पराणत्ते ? ते णं काले णं ते णं समए णं से सुधम्मे अणगारे जंबु अणगारं एवं वयासी—एवं खलु जम्बू ! समणेणं जाव संपत्तेणं नवमस्स अंगस्स अणुत्तरोववाइयदसाणं तिणिण वग्गा पन्नत्ता १ । जति णं भंते ! समणेणं जाव संपत्तेणं नवमस्स अंगस्स अणुत्तरोववाइयदसाणं ततो वग्गा पन्नता, पढमस्स णं भंते ! वग्गस्स अणुत्तरोववाइयदसाणं समणेणं जाव संपत्तेणं कइ अज्झयणा पन्नत्ता ?, एवं खलु जंबू ! समणेणं जाव संपत्तेणं अणुत्तरोववाइयदसाणं पढमस्स वग्गस्स दस अज्झयणा पराणत्ता, तंजहा—जाली १ मयालि २ उवयाली ३ पुरिससेणे ४ य वारिसेणे ५ य दीहदंते ६ य लट्ठदंते ७ य वेहल्ले ८ वेहासे (विहायसे) ९ अभये १० ति य कुमारे ॥ २ । जइ णं भंते ! समणेणं जाव संपत्तेणं अणुत्तरोववाइयदसाणं पढमस्स वग्गस्स दस अज्झयणा पराणत्ता, पढमस्स णं भंते ! अज्झयणस्स अणुत्तरोववाइयदसाणं समणेणं

जाव संपत्तेणं के अट्ठे पराणत्ते ?, एवं खलु जंबू ! ते णं काले णं ते णं समए णं रायगिहे णगरे रिद्धत्थिमियसमिद्धे गुणसिलए चेतिते, सेणिए राया धारिणीदेवी सीहो सुमिणे, जालीकुमारो जहा मेहो अट्ठट्ठओ दाओ जाव उप्पिं पासातवरगते फुट्टमाणेहिं मुइंगमत्थएहिं भोगभोगाइं भुंजमाणे विहरति, सामी समोसढे, सेणिओ णिग्गओ, जहा मेहो तहा जालीवि णिग्गतो, तहेव णिक्खंतो जहा मेहो, एक्कारस अंगाइं अहिज्जति, गुणरयणं तवोकम्मं, एवं जा चेव खंदगवत्तव्वया सा चेव चिंतणा आपुच्छणा, थेरेहिं सद्धिं विपुलं तहेव दुरूहति, नवरं सोलस वासाइं सामन्नपरियागं पाउणित्ता कालमासे कालं किच्चा उड्ढं चंदिम० सोहम्मीसाण जाव आरणच्चुए कप्पे नव य गेवेज्जे विमाणपत्थडे उड्ढं दूरं वीतीवतित्ता विजयविमाणे देवत्ताए उववरणे ३ । तते णं ते थेरा भगवं जालिं अणगारं कालगयं जाणेत्ता परिनिव्वाणवत्तियं काउस्सग्गं करेंति २ पत्तचीवराइं गेराहंति तहेव ओयरंति जाव इमे से आयारभंडए, भंते ! त्ति भगवं गोयमे जाव एवं वयासी— एवं खलु देवाणुप्पियाणं अंतेवासी जालीनामं अणगारे पगतिभद्दए से णं जाली अणगारे कालगते कहिं गते ? कहिं उववन्ने ? एवं खलु गोयमा ! ममं अंतेवासी तहेव जधा खंदयस्स जाव कालगयस्स उड्ढं चंदिम जाव विजए विमाणे देवत्ताए उववरणे ४ । जालिस्स णं भंते ! देवस्स केवतियं कालं ठिती पराणत्ता ?, गोयमा ! बत्तीसं सागरोवमाइं ठिती पराणत्ता ५ । से णं भंते ! ताओ देवलोयाओ आउक्खएणं ३ कहिं गच्छिहिति २ ?, गोयमा ! महाविदेहे वासे सिज्झिहिति, ता एवं जंबू ! समणेणं जाव संपत्तेणं अणुत्तरोववाइयदसाणं पढमवग्गस्स पढमज्झयणस्स अयमट्ठे पराणत्ते ६ । एवं सेसाणवि अट्ठरहं भाणियव्वं, नवरं सत्त धारिणिसुआ वेहल्लवेहासा चेल्लणाए, अभए णंदाते. आइल्लाणं पंचरहं सोलस वासातिं सामन्नपरियातो, तिरहं बारस वासातिं, दोरहं पंच वासातिं, आइल्लाणं

पंचरहं आणुपुव्वीए उववायो विजये वेजयंते जयंते अपराजिते सव्वट्ठसिद्धे, दीहदंते सव्वट्ठसिद्धे, उक्कमेणं सेसा, अभअो विजए, सेसं जहा पढमे ७। अभयस्स णाणत्तं, रायगिहे नगरे सेणिए राया नंदा देवी माया सेसं तहेव, एवं खलु जंबू ! समणेणं जाव संपत्तेणं अणुत्तरोववाइयदसाणं पढमस्स वग्गस्स अयमट्ठे पन्नत्ते ८ ॥ सूत्रं १ ॥

॥२॥ अथ द्वितीयो वर्ग्गः ॥

जति णं भंते ! समणेणं जाव संपत्तेणं अणुत्तरोववाइयदसाणं पढमस्स वग्गस्स अयमट्ठे पन्नत्ते, दोच्चस्स णं भंते ! वग्गस्स अणुत्तरोववाइयदसाणं समणेणं जाव संपत्तेणं के अट्ठे पन्नत्ते ?, एवं खलु *जंबू ! समणेणं जाव संपत्तेणं दोच्चस्स वग्गस्स अणुत्तरोववाइयदसाणं* तेरस अज्झयणा पन्नत्ता, तंजहा–दीहसेणे १ महासेणे २ लट्ठदंते य ३ गूढदंते य ४ सुद्धदंते ५ हल्ले ६ दुमे ७ दुमसेणे ८ महादुमसेणे य ९ आहिते सीहे य १० सीहसेणे य ११ महासीहसेणे य आहिते १२ पुन्नसेणे य १३ बोद्धव्वे तेरसमे होति अज्झयणे १। जति णं भंते ! समणेणं जाव संपत्तेणं अणुत्तरोववाइयदसाणं दोच्चस्स वग्गस्स तेरस अज्झयणा पन्नत्ता, दोच्चस्स भंते ! वग्गस्स पढमज्झयणस्स समणेणं ३ जाव संपत्तेणं के अट्ठे पन्नत्ते ? एवं खलु जंबू ! ते णं काले णं ते णं समए णं रायगिहे णगरे गुणसिलते चेतिते सेणिए राया धारिणी देवी, सीहो सुमिणे जहा जाली तहा जम्मं, बालत्तणं कलातो नवरं दीहसेणे कुमारे सच्चेव वत्तव्वया जहा जालिस्स जाव अंतं काहिति, एवं तेरसवि रायगिहे सेणिओ पिता धारिणी माता, तेरसरहवि सोलसवासा परियातो, आणुपुव्वीए विजए दोन्नि वेजयंते दोन्नि जयंते दोन्नि अपराजिते दोन्नि, सेसा महादुमसेणमाती पंच सव्वट्ठसिद्धे २। एवं खलु जंबू ! समणेणं जाव संपत्तेणं अणुत्तरोववा-

इयदसाणं दोच्चस्स वग्गस्स अयमट्ठे पन्नत्ते, मासियाए संलेहणाए दोसुवि वग्गेसु ३ ॥ सूत्रं २ ॥

॥३॥ अथ तृतीयो वर्ग्गः ॥

जति णं भंते ! समणेणं जाव संपत्तेणं अणुत्तरोववाइयदसाणं दोच्चस्स वग्गस्स अयमट्ठे पन्नत्ते तच्चस्स णं भंते ! वग्गस्स अणुत्तरोववाइयदसाणं समणेणं जाव संपत्तेणं के अट्ठे पन्नत्ते ?, एवं खलु जंबू ! समणेणं अणुत्तरोववाइयदसाणं तच्चस्स वग्गस्स दस अज्झयणा पन्नत्ता, तंजहा–धण्णे य सुणक्खत्ते, इसिदासे अ आहिते । पेल्लए रामपुत्ते य, चंदिमा पिट्ठिमाइया ॥ १ ॥ पेढालपुत्ते अणगारे, नवमे पुट्टिले इ य । वेहल्ले दसमे वुत्ते, इमेते दस आहिते ॥ २ ॥ १ । जति णं भंते ! समणेणं जाव संपत्तेणं अणुत्तरोववाइयदासणं तच्चस्स वग्गस्स दस अज्झयणा पन्नत्ता, पढमस्स णं भंते ! अज्झयणस्स समणेणं जाव संपत्तेणं के अट्ठे पन्नत्ते ?, एवं खलु जंबू ! ते णं काले णं २ कागंदी णाम णगरी होत्था रिद्धत्थिमियसमिद्धा सहसंबवणे उज्जाणे सव्वोदुए जियसत्तू राया. तत्थ णं कागंदीए नगरीए भद्दा णामं सत्थवाही परिवसइ अड्ढा जाव अपरिभूआ २ । तीसे णं भद्दाए सत्थवाहीए पुत्ते धन्ने नामं दारए होत्था, अहीण जाव सुरूवे, पंचधातीपरिग्गहिते तं जहा–खीरधाती जहा महब्बले जाव बावत्तरिं कलातो अहीए जाव अलंभोगसमत्थे जाते यावि होत्था, तते णं सा भद्दा सत्थवाही धन्नं दारयं उम्मुक्कबालभावं जाव भोगसमत्थं वावि जाणेत्ता (च वियाणित्ता) बत्तीसं पासायवडिंसते कारेति अब्भुग्गतमूसिते जाव तेसिं मज्झे भवणं अणेगखंभसयसन्निविट्ठं जाव बत्तीसाए इब्भवरकन्नगाणं एगदिवसेणं पाणिं गेण्हावेति २ बत्तीसओ दाओ जाव उप्पिं पासायवरगते फुट्टंतेहिं जाव विहरति २ । ते णं काले णं २ समणे भगवं महावीरे समोसढे परिसा निग्गया, राया जहा कोणितो तहा जियसत्तू णिग्गतो, तते णं तस्स

धन्नस्स तं महता जहा जमाली तहा णिग्गतो नवरं पायचारेणं जाव जं नवरं अम्मयं भद्दं सत्थवाहिं आपुच्छामि, तते णं अहं देवाणुप्पियाणं अंतिते जाव पव्वयामि जाव जहा जमाली तहा आपुच्छइ, मुच्छिया वुत्तपडिवुत्तया जहा महब्बले जाव जाहे णो संचाएति जहा थावच्चापुत्तो जियसत्तुं आपुच्छति छत्तचामरातो सयमेव जियसत्तू णिक्खमणं करेति जहा थावच्चापुत्तस्स कराहो जाव पव्वतिते, तते णं से धन्ने अणगारे जाते, ईरियासमिते जाव गुत्तबंभयारी ३। तते णं से धन्ने अणगारे जं चेव दिवसं मुंडे भवित्ता जाव पव्वतिते तं चेव दिवसं समणं भगवं महावीरं वंदति णमंसति २ एवं वयासी—इच्छामि णं भंते! तुब्भेणं अब्भणुराणाते समाणे जावज्जीवाए छट्ठंछट्ठेणं अणिक्खित्तेणं आयंबिलपरिग्गहिएणं तवोकम्मेणं अप्पाणं भावेमाणे विहरेत्तते छट्ठस्सविय णं पारणयंसि कप्पति से आयंबिलं पडिग्गहित्तते नो चेव णं अणायंबिलं तंपि य संसट्ठं णो चेव णं असंसट्ठं तंपिय णं उज्झियधम्मियं नो चेव णं अणुज्झियधम्मियं तंपि य जं अन्ने बहवे समणमाहण-अतिहिकिवण-वणीमगा णावकंखंति, अहासुहं देवाणुप्पिया! मा पडिबंधं करेह, तते णं से धन्ने अणगारे समणेणं भगवता महावीरेणं अब्भणुन्नाते समाणे हट्ठ० जावज्जीवाए छट्ठंछट्ठेणं अणिक्खित्तेणं तवोकम्मेणं अप्पाणं भावेमाणे विहरति ४। तते णं से धणे अणगारे पढमछट्ठक्खमण-पारणगंसि पढमाए पोरसीए सज्झायं करेति जहा गोतमसामी तहेव आपुच्छति जाव जेणेव कायंदी णगरी तेणेव उवागच्छति २ कायंदीणगरीए उच्च जाव अडमाणे आयंबिलं जाव णावकंखंति, तते णं से धन्ने अणगारे ताए अब्भुज्जताए पयययाए पयत्ताए पग्गहियाए एसणाए एसमाणे जति णं भत्तं लभति तो पाणं ण लभति अह पाणं लभति तो भत्तं न लभति, तते णं से धन्ने अणगारे अदीणे अविमणे अकलुसे अविसादी अपरितंतजोगी

जयणघडणजोगचरित्ते अहापज्जत्तं समुदाणं पडिगाहेति २ काकंदीओ णगरीतो पडिणिक्खमति जहा गोतमे तहा जाव पडिदंसेति, तते णं से धन्ने अणगारे समणेणं भगवया महावीरेणं अब्भणुन्नाते समाणे अमुच्छिते जाव अण-ज्झोववन्ने बिलमिव पराणगभूतेणं अप्पाणेणं आहारं आहारेति २ संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे विहरति, समणे भगवं महावीरे अराणया कयाइ काकंदीए णगरीतो सहसंबवणातो उज्जाणातो पडिणिक्खमति २ बहिया जणवयविहारं विहरति ५। तते णं से धन्ने अणगारे समणस्स भगवओ महावीरस्स तहारूवाणं थेराणं अंतिते सामाइयमाइयाइं एकारस अंगाइं अहिज्जति, संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे विहरति, तते णं से धन्ने अणगारे तेणं ओरालेणं जहा खंदतो जाव सुहुय-हुयासणे इव भासरासि-पलिच्छराणा तवेण तेएणं तवतेयसिरीए अतीव २ उवसोभेमाणे २ चिट्ठति ६। धन्नस्स णं अणगारस्स पादाणं अयमेयारूवे तवरूवलावन्ने होत्था, से जहाणामते सुकछल्लीति वा कट्ठपाउयाति वा जरग्गओवाहणाति वा, एवामेव धन्नस्स अणगारस्स पाया सुक्का णिम्मंसा अट्ठिचम्मछिरत्ताए पराणायंति णो चेव णं मंससोणियत्ताए, धन्नस्स णं अणगारस्स पायंगु-लियाणं अयमेयारूवे तवरूवलावणे होत्था से जहाणामते कलसंगलियाति वा मुग्गसंगलियाति वा माससंगलियाति वा तरुणिया छिन्ना उराहे दिन्ना सुक्का समाणी मिलायमाणी २ चिट्ठति, एवामेव धन्नस्स पायंगुलियातो सुक्कातो जाव सोणियत्ताते, धन्नस्स जंघाणं अयमेयारूवे तवरूवलावणे होत्था से जहानामते काकजंघाति वा कंकजंघाति वा ढेणियालियाजंघाति वा जाव णो सोणियत्ताए, धन्नस्स जाणूणं अयमेयारूवे तवरूवलावणे होत्था से जहानामते कालिपोरेति वा मयूरपोरेति वा ढेणियालियपोरेति वा, एवं जाव सोणियत्ताए, धराणस्स उरुस्स जहानामते सामकरेल्लेति वा बोरीक-रील्लेति वा सल्लतिकरील्लेति वा सामलि(सामा) करील्लेति वा तरुणिते तस्स णं

तेच्छिरो उराहे जाव चिट्ठति एवामेव धन्नस्स उरू जाव सोणियत्ताए, धन्नस्स कडिपत्त(ट्ट)स्स इमेयारूवे तवरूवलावराणे होत्था से जहानामते उट्टपादेति वा जरग्गपादेति वा महिसपादेति वा जाव सोणियत्ताए, धन्नस्स उदरभायणस्स इमेयारूवे तवरूवलावराणे होत्था से जहानामते सुक्कदिएति वा भज्जणयकभल्लेति वा कट्ठकोलंबएति वा, एवामेव उदरं सुक्कं, धन्नस्स पांसुलियकडयाणं इमेयारूवे तवरूवलावराणे होत्था से जहानामते थासयावलीति वा पाणावलीति वा मुंडावलीति वा, धन्नस्स पिट्ठकरंडयाणं अयमेयारूवे तवरूवलावराणे होत्था से जहानामते कन्नावलीति वा गोलावलीति वा वट्टयावलीति वा, एवामेव०, धन्नस्स उरकडयस्स अयमेयारूवे तवरूवलावराणे होत्था से जहानामते चित्तकट्टरेति वा वियणपत्तेत्ति वा तालियंटपत्तेत्ति वा एवामेव०, धन्नस्स बाहाणं अयमेयारूवे तवरूवलावराणे होत्था से जहनामते समिसंगलियाति वा वाहायासंगलियाति वा अगत्थियसंगलियाति वा एवामेव०, धन्नस्स हत्थाणं अयमेयारूवे तवरूवलावराणे होत्था से जहाणामते सुक्कछगणियाति वा वडपत्तेति वा पलासपत्तेति वा, एवामेव०, धन्नस्स हत्थंगुलियाणं अयमेयारूवे तवरूवलावराणे होत्था से जहानामते कलायसंगलियाति (कलसंगुलिया) वा मुग्गसंगलियाति वा माससंगलियाति वा तरुणिया छिन्ना आयवे दिन्ना सुक्का समाणी एवामेव०, धन्नस्स गीवाए अयमेयारूवे तवरूवलावराणे होत्था से जहानामते करगगीवाति वा कुंडियागीवाति वा उच्चट्ठवणतेति वा एवामेव०, धन्नस्स णं हणुआए अयमेयारूवे तवरूवलावराणे होत्था से जहानामते लाउयफलेति वा हकुवफलेति वा अंबगट्ठियाति वा एवामेव०, धन्नस्स उट्ठाणं अयमेयारूवे तवरूवलावराणे होत्था से जहानामते सुक्कजलोयाति वा सिलेसगुलियाति वा अलत्तगगुलियाति वा एवामेव०, धराणस्स जिब्भाए अयमेयारूवे तवरूवलावराणे होत्था से जहानामते वडपत्तेइ वा पलासपत्तेइ वा सागपत्तेति वा

एवामेव०, धन्नस्स नासाए अयमेयारूवे तवरूवलावरणो होत्था से जहानामते अंबगपेसियाति वा अंबाडगपेसियाति वा मातुलुंगपेसियाति वा तरुणिया एवामेव०, धन्नस्स अच्छीणं अयमेयारूवे तवरूवलावरणो होत्था से जहा-नामते वीणाछिड्डे ति वा वद्धीसगछिड्डे ति वा पासाइयतारिगा(पाभातिय-तारिगा)इ वा एवामेव०, धन्नस्स कराणाणं अयमेयारूवे तवरूवलावरणो होत्था से जहा नामते मूलाछलियाति वा वालुंकच्छलियाति वा कारेलयच्छलियाति वा एवामेव०, धन्नस्स सीसस्स अयमेयारूवे तवरूवलावरणो होत्था से जहा-नामते तरुणगलाउएति वा तरुणगएलालुयत्ति वा सिराहालएति वा तरुणए जाव चिट्ठति एवामेव०, धन्नस्स अणगारस्स सीसं सुक्कं लुक्खं णिम्मंसं अट्ठिचम्मच्छिरत्ताए पन्नायति नो चेव णं मंससोणियत्ताए, एवं सव्वत्थ, णवरं उदरभायणकन्नजीहा उट्ठा एएसिं अट्ठी ण भन्नति चम्मच्छिरत्ताए पराणायइत्ति भन्नति ७। धन्ने णं अणगारे णं सुक्केणं भुक्खेणं पातजं-घोरुणा विगततडिकरालेणं कडिकडाहेणं पिट्ठमवस्सिएणं उदरभायणेणं जोइज्जमाणेहिं (जातिद्धमाणेणं, जातिजमाणेहिं) पांसुलिकडएहिं अक्खसुत्त-मालाति वा गणिज्जमालाति वा गणेज्जमाणेहिं पिट्ठिकरंडगसंधीहिं गंगात-रंगभूएणं उरकडगदेसभाएणं सुक्कसप्पसमाणाहिं बाहाहिं सिढिलकडालीविव चलंतेहि य अग्गहत्थेहिं कंपणवातिओविव वेवमाणीए सीसघडीए पव्वादव-दणकमले उब्भडघडामुहे उब्बुड्डणयणकोसे जीवं जीवेणं गच्छति जीवं जीवेणं चिट्ठति भासं भासिस्सामीति गिलाति ३ से जहा णामते इंगाल-सगडियाति वा जहा खंदओ तहा जाव हुयासणे इव भासरासिपलिच्छन्ने तवेणं तवतेयसिरीए उवसोभेमाणे २ चिट्ठति ८॥ सूत्रं ३॥ ते णं काले णं २ रायगिहे णगरे गुणसिलए चेतिते सेणिए राया, ते णं काले णं २ समणे भगवं महावीरे समोसढे, परिसा णिग्गया सेणिते निग्गते धम्मकहा परिसा पडिगया १। तते णं से सेणिए राया समणस्स ३ अंतिए धम्मं

सोच्चा निसम्म समणं भगवं महावीरं वंदति णमंसति २ एवं वयासी–इमासि णं भंते ! इंदभूतिपामोक्खाणं चोद्दसण्हं समणसाहस्सीणं कतिरे अणगारे महादुक्करकारए चेव महाणिज्जरतराए चेव !, एवं खलु सेणिया ! इमासिं इंदभूतिपामोक्खाणं चोद्दसण्हं समणसाहस्सीणं धन्ने अणगारे महादुक्करकारए चेव महाणिज्जरतराए चेव, से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चति इमासि जाव साहस्सीणं धन्ने अणगारे महादुक्करकारए चेव महाणिज्जरतराए ?, एवं खलु सेणिया ! ते णं काले णं ते णं समए णं काकंदी नामं नगरी होत्था उप्पिं पासायवडिंसए विहरति, तते णं अहं अन्नया कदाति पुव्वाणुपुव्वीए चरमाणे गामाणुगामं दूतिज्जमाणे जेणेव काकंदी णगरी जेणेव सहसंबवणे उज्जाणे तेणेव उवागते अहापडिरूवं उग्गहं उग्गिण्हामि २ संजमे जाव विहरामि, परिसा निग्गता, तहेव जाव पव्वइते जाव बिलमिव जाव आहारेति, धण्णस्स णं अणगारस्स पादाणं सरीरवन्नओ सव्वो जाव उवसोभेमाणे २ चिट्ठति, से तेणट्ठेणं सेणिया ! एवं वुच्चति–इमासिं चउदसण्हं साहस्सीणं धण्णे अणगारे महादुक्करकारए महानिज्जरतराए चेव २। तते णं से सेणिए राया समणस्स भगवतो महावीरस्स अंतिए एयमट्ठं सोच्चा णिसम्म हट्ठतुट्ठ जाव समणं भगवं महावीरं तिक्खुत्तो आयाहिणपयाहिणं करेति २ वंदति नमंसति २ जेणेव धन्ने अणगारे तेणेव उवागच्छति २ धन्नं अणगारं तिक्खुत्तो आयाहिणपयाहिणं करेति २ वंदति णमंसति २ एवं वयासी–धण्णेऽसि णं तुमं देवाणुप्पिया ! सुपुण्णे सुकयत्थे कयलक्खणे सुलद्धे णं देवाणुप्पिया ! तव माणुस्सए जम्मजीवीयफलेत्तिकट्टु वंदति णमंसति २ जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छति २ समणं भगवं महावीरं तिक्खुत्तो वंदति णमंसति २ जामेव दिसं पाउब्भूते तामेव दिसिं पडिगए ३ ॥ सूत्रं ४ ॥ तए णं तस्स धण्णस्स अणगारस्स अन्नया कयाति पुव्वरत्तावरत्तकाले-(लसमयंसि) धम्मजागरियं

जागरमाणस्स इमेयारूवे अब्भत्थिते ५–एवं खलु अहं इमेणं ओरालेणं जहा खंदओ तहेव चिंता आपुच्छणं थेरेहिं सद्धिं विउलं दुरूहंति मासिया(ए) संलेहणा(ए) नवमास परियातो जाव कालमासे कालं किच्चा उड्ढं चंदिम जाव णव य गेविज्जविमाणपत्थडे उड्ढं दूरं वीतीवतित्ता सव्वट्ठसिद्धे विमाणे देवत्ताए उववन्ने १। थेरा तहेव उयरंति जाव इमे से आयारभंडए, भंतेत्ति भगवं गोतमे तहेव पुच्छति जहा खंदयस्स भगवं वागरेति जाव सव्वट्ठसिद्धे विमाणे उववरणे २। धरणस्स णं भंते! देवस्स केवतियं कालं ठिती पराणत्ता ?, गोतमा! तेत्तीसं सागरोवमाइं ठिती पन्नत्ता। से णं भंते! ततो देवलोगाओ कहिं गच्छिहिति कहिं उववज्जिहिति ?, गोयमा! महाविदेहे वासे सिज्झिहिति ५, ३। तं एवं खलु जंबू! समणेणं जाव संपत्तेणं पढमस्स अज्झयणस्स अयमट्ठे पन्नत्ते ४॥ सूत्रं ५॥ पढमं अज्झयणं समत्तं॥ जति णं भंते! उक्खेवओ, एवं खलु जंबू! ते णं काले णं ते णं समए णं कागंदीए णगरीए (काकंदी नगरी) जियसत्तू राया तत्थ णं भद्दाणामं सत्थवाही परिवसति अड्ढा जाव अपरिभूआ १। तीसे णं भद्दाए सत्थवाहीए पुत्ते सुणक्खत्ते णामं दारए होत्था, अहीण जाव सुरूवे, पंचधातिपरिक्खित्ते जहा धरणो तहा बत्तीस दाओ जाव उप्पिं पासायवडेंसए विहरति २। ते णं काले णं २ सामी समोसढे समोसरणं जहा धन्नो तहा सुणक्खत्तेऽवि णिग्गते जहा थावच्चापुत्तस्स तहा णिक्खमणं जाव अणगारे जाते ईरियासमिते जाव बंभयारी ३। तते णं से सुणक्खत्ते अणगारे जं चेव दिवसं समणस्स भगवतो महावीरस्स अंतिते मुंडे जाव पव्वतिते तं चेवं दिवसं अभिग्गहं तहेव जाव बिलमिव आहारेति, संजमेणं (संजमिणं) जाव विहरति, बहिया जणवयविहारं विहरति एक्कारस अंगाइं अहिज्जति संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे विहरति ४। तते णं से सुणक्खत्ते ओरालेणं जहा खंदतो, तेणं कालेणं २ रायगिहे

णगरे गुणसिलए चेतिए सेणिए राया सामी समोसढे परिसा णिग्गता राया णिग्गतो धम्मकहा राया पडिगओ परिसा पडिगता, तते णं तस्स सुणक्खत्तस्स अन्नया कयाति पुव्वरत्तावरत्तकालसमयंसि धम्मजागरियं जागरमाणस्स जहा खंदयस्स, बहू वासा परियातो गोतमपुच्छा तहेव कहेति जाव सव्वट्ठसिद्धे विमाणे देवे उववरणे, तेत्तीसं सागरोवमाइं ठिती पराणत्ता, से णं भंते ! ततो देवलोगाओ कहिं गच्छिहिति ? कहिं उववज्जिहिति ? गोयमा ! महाविदेहे सिज्झिहिति ५। बीयज्झयणं समत्तं। एवं सुणक्खत्तगमेणं सेसावि अट्ठ भाणियव्वा, णवरं आणुपुव्वीए दोन्नि रायगिहे दोन्नि साएए दोन्नि वाणियग्गामे नवमो हत्थिणपुरे दसमो रायगिहे १। नवरहं भद्दाओ जणणीओ, नवराहवि बत्तीसओ दाओ, नवरहं निक्खमणं थावच्चापुत्तस्स सरिसं वेहल्लस्स पिया करेति, छम्मासा वेहल्लते, नव धराणे, सेसाणं बहू वासा, मासं संलेहणा सव्वट्ठसिद्धे, महाविदेहे सिज्झणा २। एवं खलु जंबू ! समणेणं भगवता महावीरेणं आइगरेणं तित्थगरेणं सयंसंबुद्धेणं लोगनाहेणं लोगप्पदीवेणं लोगपज्जोयगरेणं अभयदएणं सरणदएणं चक्खुदएणं मग्गदएणं धम्मदएणं धम्मदेसएणं धम्मवरचाउरंतचक्कवट्टिणा अप्पडिहयवरनाणदंसणधरेणं जिणेणं जाणएणं बुद्धेणं बोहएणं मोक्केणं मोयएणं तिन्नेणं तारयेणं सिव-मयल-मरुय-मणंत-मक्खय-मव्वाबाह-मपुणरावत्तयं सिद्धिगतिनामधेयं ठाणं संपत्तेणं अणुत्तरोववाइयदसाणं तच्चस्स वग्गस्स अयमट्ठे पन्नत्ते ३ ॥ सूत्रं ६ ॥ अणुत्तरोववाइयदसातो समत्तातो ॥ अणुत्तरोववाइयदसाणामं सुत्तं नवममंगं समत्तं ॥ अणुत्तरोववाइयदसाणं एगो सुयखंधो, तिरिण वग्गा, तिसु चेव दिवसेसु उद्दिसिज्जंति, तत्थ पढमे वग्गे दस उद्देसगा, बीए वग्गे तेरस उद्देसगा, सेसं जहा धम्मकहा णेयव्वा ॥

॥ इति श्री अनुत्तरोपपातिकदशाङ्ग-सूत्रं समाप्तम् ॥

(ग्रन्थाग्रं-१९२)

॥ इति

श्री अनुत्तरोपपातिकदशाङ्ग-

सूत्रं समाप्तम् ॥

॥ अर्हम् ॥

पञ्चमगणभृत्श्रीमत्सुधर्मस्वामि-प्ररूपितं

॥ श्रीमत्प्रश्नव्याकरण-दशांग-सूत्रम् ॥

—:•:—

॥१॥ अथ हिंसाकर्माश्रवाख्यं प्रथममध्ययनम् ॥

नमो अरिहंताणं ॥ (तेणं कालेणं तेणं समएणं चंपानाम नगरी होत्था, पुण्णभद्दे चेइए वणसंडे असोगवरपायवे पुढविसिलापट्टए, तत्थ णं चंपाए नयरीए कोणिए नामं राया होत्था, धारिणी देवी। तेणं कालेणं २ समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतेवासी अज्जसुहम्मे नामं थेरे जाइसंपन्ने कुलसंपन्ने बलसंपन्ने रूवसंपन्ने विणयसंपन्ने नाणसंपन्ने दंसणसंपन्ने चरित्तसंपन्ने लज्जासंपन्ने लाघवसंपन्ने ओयंसी तेयंसी वच्चंसी जसंसी जियकोहे जियमाणे जियमाए जियलोभे जियनिद्दे जियइंदिए जियपरीसहे जीवियास-मरणभय-विप्पमुक्के तवप्पहाणे गुणप्पहाणे मुत्तिप्पहाणे विज्जाप्पहाणे मंतप्पहाणे बंभप्पहाणे वयप्पहाणे नयप्पहाणे नियमप्पहाणे सच्चप्पहाणे सोयप्पहाणे नाणप्पहाणे दंसणप्पहाणे चरित्तप्पहाणे चोद्दसपुव्वी चउनाणोवगए पंचहिं अणगारसएहिं सद्धिं संपरिवुडे पुव्वाणुपुव्विं चरमाणे गामाणुगामं दूइज्जमाणे जेणेव चंपा नयरी तेणेव उवागच्छइ जाव अहापडिरूवं उग्गहं उग्गिण्हित्ता संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे विहरति। तेणं कालेणं तेणं समएणं अज्जसुहम्मस्स अंतेवासी अज्जजंबू नामं अणगारे कासवगोत्तेणं सत्तुस्सेहे जाव संखित्त-विपुल-तेयलेस्से अज्जसुहम्मस्स थेरस्स अदूरसामन्ते उड्ढंजाणू जाव संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे विहरइ। तए णं

से अज्जजंबू जायसड्ढे जायसंसए जायकोउहल्ले उप्पन्नसड्ढे ३ संजायसड्ढे ३ समुप्पन्नसड्ढे ३ उट्ठाए उट्ठेइ २ जेणेव अज्जसुहम्मे थेरे तेणेव उवागच्छइ २ अज्जसुहम्मे थेरे तिक्खुत्तो आयाहिणपयाहिणं करेइ २ वंदइ नमंसइ नच्चासन्ने नाइदूरे विणएणं पंजलिपुडे पज्जुवासमाणे एवं वयासी—जइ णं भंते ! समणेणं भगवया महावीरेणं जाव संपत्तेणं णवमस्स अंगस्स अणुत्तरोववाइयदसाणं अयमट्ठे पन्नत्ते, दसमस्स णं अंगस्स पराहावागरणाणं समणेणं जाव संपत्तेणं के अट्ठे पन्नत्ते ? जंबू ! दसमस्स अंगस्स समणेणं जाव संपत्तेणं दो सुयक्खंधा पराणत्ता—आसवदारा य संवरदारा य, पढमस्स णं भंते ! सुयक्खंधस्स समणेणं जाव संपत्तेणं कइ अज्झयणा पराणत्ता ?, जम्बू ! पढमस्स णं सुयक्खंधस्स समणेणं जाव संपत्तेणं पंच अज्झयणा पराणत्ता, दोच्चस्स णं भंते ! ? एवं चेव, एएसि णं भंते ! अराहयसंवराणं समणेणं जाव संपत्तेणं के अट्ठे पराणत्ते ?, तते णं अज्जसुहम्मे थेरे जंबूनामेणं अणगारेणं एवं वुत्ते समाणे जंबूं अणगारं एवं वयासी—)

जंबू ! इणमो । अराहय-संवर-विणिच्छियं पवयणस्स निस्संदं । वोच्छामि णिच्छयत्थं सुहासियत्थं महेसीहिं ॥ १ ॥ पंचविहो पराणत्तो जिणेहिं इह अराहओ अणादीओ । हिंसा मोसमदत्तं अबंभ-परिग्गहं चेव ॥२॥ जारिसओ जं नामा जह य कओ जारिसं फलं देति । जेवि य करेंति पावा पाणवहं तं निसामेह॥३॥ पाणवहो नाम एस णिच्चं जिणेहिं भणिओ—पावो १ चण्डो २ रुद्दो ३ खुद्दो ४ साहसिओ ५ अणारिओ ६ णिग्घिणो ७ णिस्संसो ८ महब्भओ ९ पइभओ १० अतिभओ ११ बीहणओ १२ तासणओ १३ अणज्जो १४ उव्वेयणओ य १५ णिरवयक्खो १६ णिद्धम्मो १७ णिप्पिवासो १८ णिक्कलुणो १९ निरयवासगमणनिधणो २० मोहमहब्भयपयट्ट(ड्ढ)ओ २१ मरणवेमणस्सो २२, पढमं अहम्मदारं ॥ सूत्रं १ ॥ तस्स य नामाणि इमाणि गोणणाणि होंति तीसं, तंजहा—पाणवहं १ उम्मूलणा

सरीराओ २ अवीसंभो ३ हिंसविहिंसा ४ तहा अकिच्चं च ५ घायणा ६ मारणा य ७ वहणा ८ उद्दवणा ६ निवायणा य १० आरंभसमारंभो ११ आउय-कम्मस्सुवद्दवो भेयणिट्ठवणा-गालणा य संवट्टगसंखेवो १२ मच्चू १३ असंजमो १४ कडगमद्दणं १५ वोरमणं १६ परभवसंकामकारओ १७ दुग्गतिप्पवाओ १८ पावकोवो य १६ पावलोभो २० छविच्छेओ(य-करो) २१ जीवियंतकरणो २२ भयंकरो २३ अणकरो य २४ वज्जो(सावज्जो) २५ परित्तावणअराहओ २६ विणासो २७ निज्जवणा २८ लुंपणा २६ गुणाणं विराहणत्ति ३० विय तस्स एवमादीणि णामधेज्जाणि होंति तीसं पाणवहस्स कडुयफलदेसगाइं ॥ सू० २ ॥ तं च पुण करेंति केई पावा असंजया अविरया अणिहुय-परिणाम-दुप्पयोगी पाणवहं भयंकरं बहुविहं बहुप्पगारं परदुक्खुप्पायणप्पसत्ता इमेहिं तसथावरेहिं जीवेहिं पडिणिविट्ठा, किं ते ? पाठीन-तिमितिमिंगिल-अणेगझस-विविहजातिमंडुक-दुविहकच्छभ-णक(चक)- मगरदुविह(मुसंढ-विविह)गाह-दिलिवेढय-मंडुयसीमागार-पुलक-सुंसुमार-बहुप्पगारा जलयरविहाणा कए य एवमादी १ । कुरंग-रुरु-सरह-चमर-संबर-उरब्भ-ससय-पसय-गोण-रोहिय-हय-गय-खर-करभ-खग्गी-वानर-गवय-विग-सियाल-कोल-मज्जार-कोलसुणक-सिरियंदलगा-वत्त-कोकंतिय-गोकन्न-मिय-महिस-वियग्घ-छगल-दीविय-साण-तरच्छ-अच्छभल्ल-सद्दूल-सीह-चिल्लल-चउप्पयविहाणाकए य एवमादी २ । अयगर-गोणस-वराहि-मउलि-काकोदर-दब्भपुप्फ-आसालिय-महोरगोरगविहाणाकए य एवमादी ३ । छीरल-सरंब-सेह सेल्लग-गोधा-उंदर-णउल-सरड-जाहग-मुगुंस-खाडहिला-चाउप्पाइया-घिरोलिया-सिरीसिव-गणे य एवमादी ४ । कादंबक-बक-बलाका-सारस-आडा-सेतीय-कुलल-वंजुल-पारिप्पव-कीरव-सउण-दीविय-पीपीलिय-हंस-धत्त-रिट्ठग-भास-कुलीकोस-कोंच-दगतुंड-ढेणियालग-सुचीमुह-कविल-पिंगल-क्खग-कारंडग-चक्कवाग-उक्कोस-गरुल-पिंगुल-सुय-बरहिण-मयणसाल-नंदीमुह-नंदमा-

णग-कोरंग-भिंगारग-कोणालग—जीवजीवक-तित्तिर—वट्टग-लावग-कपिंजलक-कवोतक—पारेवग—चटग(चिडिग)—ढिंक—कुक्कुड—रमसर—मयूरग-चउरग—हयपोंडरीय(सालग)करल(करक)-वीरल्ल-सेण-वायस-विहंग-भेणासिश्र-चास-वग्गुलि-चम्मट्ठिल-विततपक्खी (समुग्गपक्खी) खहयर-विहाणाकए य एवमादी ५। जलथलखगचारिणो उ पंचिंदिए पसुगणे बियतियचउरिंदिए विविहे जीवे पियजीविए मरणदुक्खपडिकूले वराए हणंति बहुसंकिलिट्ठकम्मा ६। इमेहिं विविहेहिं कारणेहिं, किं ते ?, चम्म-वसा-मंस-मेय-सोणिय-जग-फिप्फिस-मत्थुलुंग-हिययंतपित्त-फोफस-दंतट्ठा अट्ठिमिंज-नह-नयण-कण्णण्हारुणि-नक्क-धमणि-सिंग-दाढि-पिच्छ-विस-विसाणवालहेउं हिंसंति य भमरमधुकरिगणे रसेसु गिद्धा तहेव, तेइंदिए सरीरोवकरणट्ठयाए किवणे बेइंदिए बहवे वत्थोहरपरिमंडणट्ठा, अरणेहि य एवमाइएहिं बहूहिं कारणसएहिं अबुहा इह हिंसंति ७। तसे पाणे इमे य एगिंदिए बहवे वराए तसे य अरणे तदस्सिए चेव तणुसरीरे समारंभंति। अत्ताणे, असरणे अणाहे, अबंधवे, कम्मनिगडबद्धे, अकुसलपरिणाम-मंदबुद्धिजणदुव्विजाणए पुढविमये पुढविसंसिए, जलमए, जलगए, अणलाणिल-तणवणस्सइ-गणनिस्सिए य तम्मयतज्जिए चेव तदाहारे तप्परिणय-वण्णगंध-रसफास(फरिस)बोंदिरूवे अचक्खुसे य चक्खुसे य तसकाइए असंखे थावरकाइए य सुहुम-बायर-पत्तेय-सरीरनामसाधारणे अणंते हणंति अविजाणओ य परिजाणओ य जीवे इमेहिं विविहेहिं कारणेहिं, किं ते ?, ८। करिसण पोक्खरणी-वावि-वप्पिणि-कूव-सर-तलाग-चिति-चेतिय-खाइय-आराम-विहार-थूभ-पागार-दार-गोउर-अट्टालग-चरिया-सेउ-संकम-पासाय-विकप्प-भवण-घर-सरण-लयण-आवण-चेइय-देवकुल-चित्तसभा-पवा-आयतणा-वसह-भूमिघर-मंडवाण य कए भायण-भंडोवगरणस्स य विविहस्स य अट्ठाए पुढविं हिंसंति मंदबुद्धिया ९। जलं च मज्जणय-पाण-भोयण-वत्थधोवण-सोयमादिएहिं १०। पयण-पयावण-जलावण-

विदंसणेहिं अगणिं ११। सुप्प-वियण तालयंट-(परिथुनक)-हुणमुह-करयल-सागपत्त-वत्थएवमादिएहिं अणिलं १२। अगार-परिया[डिया]र-भक्ख-भोयण-सयणासण-फलक-मुसल-उखल-तत-विततातोज्ज-वहणवाहणमंडव-विविहभवण-तोरण—विटंग-देवकुल—जालय-द्धचंद—निज्जुहग-चंदसालिय—वेतिय-णिस्सेणि-दोणि-चंगेरी-खील-मेढक--सभा-पवा—वसह-गंध—मल्लाणुलेवणंबर—जुय—नंगल-मइय-कुलिय-संदण-सीया--रह—सगड-जाणजोग्ग—अट्टालग-चरिअ--दार-गोपुर-फलिहा-जंत—सूलिया-लउड—मुसुंढि-सयग्घि-बहुपहरणा—वरणुवक्खराण-कए, अराणेहि य एवमाइएहिं बहुहिं कारणसएहिं हिंसन्ति ते तरुगणा भणिता भणिए य एवमादी १३। सत्ते सत्तपरिवज्जिया उवहणन्ति दढमूढा दारुणमती कोहा माणा माया लोभा हासा रती अरती सोय वेदत्थ-जीयधम्मत्थकामहेउ सवसा अवसा अट्ठा अणट्ठा एय तसपाणे थावरे य हिंसंति १४। मंदबुद्धीया सवसा हणंति, अवसा हणंति, सवसा अवसा दुहओ हणंति, अट्ठा हणंति अणट्ठा हणंति, अट्ठा अणट्ठा दुहओ हणंति, हस्सा हणंति, वेरा हणंति, रती य हणंति, हस्सावेरारती य हणंति, कुद्धा हणंति, लुद्धा हणंति, मुद्धा हणंति, कुद्धा लुद्धा मुद्धा हणंति, अत्था हणंति, धम्मा हणंति, कामा हणंति अत्था धम्मा कामा हणंति १५ ॥ सू० ३ ॥ कयरे ते ?, जे ते सोयरिया मच्छबंधा साउणिया वाहा कूरकम्मा(वाउरिया) दीवित-बंधणप्पओग-तप्पगलजाल—वीरल्लगायसीदब्भ-वग्गुरा—कूडछलियाहत्था(दीविया) हरिएसा कुणिया (साउणिया) य वीदंसगपासहत्था वणचरगा लुद्धगा महुघाया पोतघाया एणीयारा पएणियारा सर-दह-दीहिअ-तलाग-पल्लल-परिगालण-मलण-सोत्तबंधण-सलिलासयसोसगा विसगरस्स य दायगा उत्तणवल्लर-दवग्गिणिद्दय-पलीवका कूरकम्मकारी इमे य बहवे मिलक्खुया. के ते ?, १। सक-जवण-सबर-बब्बर-काय-मुरुंडोदभडग-तित्तिय-पक्कणिय-कुलक्ख-गोड—सींहल-पारस-कोचंध-दविल-बिल्लल-पुलिंद-अरोस—डोंब-पोक्कण—गंधहारग—बहलीय-जल्ल—रोम-मास-बउस-

मलया चुंचुया य चूलिया य कोंकणगा-(कणग-सेय)-मेत-पराहव-मालव-महुर-आभासिय-अणक्ख-चीण-लासिय-खस-खासिया नेट्ठुर-मरहट्ठ(मुढ)-मुट्ठिअ-आरब-डोबिलग-कुहण-केकय-हूण-रोमग-रुरु-मरुया चिलायविसयवासी य पावमतिणो, जलयर-थलयर–सणप्फतोरग–खहचर-संडासतोंड-जीवोवग्घाय-जीवी सण्णी य असण्णिणो पज्जत्ता असुभलेस्सपरिणामे एते अण्णे य एवमादी करेंति पाणाइवायकरणं, पावा पावाभिगमा पावरुई (पावमइ) पाणवहकयरती पाणवहरूवाणुट्ठाणा पाणवहकहासु अभिरमंता तुट्ठा पावं करेत्तु होति य बहुप्पगारं २ । तस्स य पावस्स फलविवागं अयाणमाणा वड्ढंति महब्भयं अविस्सामवेयणं दीहकाल-बहुदुक्खसंकडं नरयतिरिक्खजोणिं, इओ आउक्खए चुया असुभकम्मबहुला उववज्जंति नरएसु हुलियं महालएसु ३ । वयरामय-कुड्ड-रुद्द-निस्संधि-दारविरहिय-निम्मद्दव–भूमितल–खरामरिस-विसम-णिरयघरचारएसु महोसिण–सयापतत्त-दुग्गंध-विस्स-उव्वेयजणगेसु बीभच्छदरिसणिज्जेसु य निच्चं हिमपडलसीयलेसु कालोभासेसु य भीमगंभीरलोमहरिसणेसु णिरभिरामेसु निप्पडियार-वाहिरो-गजरापीलिएसु अतीव निच्चंधयार-तिमिस्सेसु पतिभएसु ववगयगह-चंद-सूर-णक्खत्त-जोइसेसु मेय-वसा-मंसपडल-पोच्चड-पूय-रुहिरुक्किण्ण-विलीण-चिक्कण-रसियावावण्ण-कुहिय-चिक्खल्लकद्दमेसु कुकूलानल-पलित्तजालमुम्मुर-असिक्खुर-करवत्तधारासु निसियविच्छुय-डंकनिवातोवम-फरिसअतिदुस्सहेसु य अत्ताणा असरणा कडुयदुक्ख-परितावणेसु अणुबद्ध-निरंतरवेयणेसु जमपुरिससंकुलेसु ४ । तत्थ य अन्तोमुहुत्तलद्धि-भवपच्चएणं निव्वत्तेंति उ ते सरीरं हुंडं बीभच्छ-दरिसणिज्जं बीहणगं अट्ठिण्हारुणह-रोमवज्जियं असुभगन्ध-दुक्खविसहं (असुभगं दुक्खविसहं), तत्तो य पज्जत्तिमुवगया इंदिएहिं पंचहिं वेदेंति वेदणं असुहाए वेयणाए उज्जल-बलवि(ति)उल-उक्कड(कक्खड)-खरफरुसपयंड-घोर-बीहणगदारुणाए, किं ते? ५ । कंदुमहाकुंभिए-पयण-पउलण-तवग-तलण-भट्ठभ-

जणाणि य लोहकडाहुकड्ढणाणि य कोट्ट(ट्टा)बलिकरण-कोट्टणाणि य सामलि-तिक्खग्ग-लोहकंटक-अभिसरण-पसारणाणि फालण-विदारणाणि य अवकोडक-बंधणाणि लट्ठिसयतालणाणि य गलगबलुल्लंबणाणि सूलग्ग-भेयणाणि य आएसपवंचणाणि खिंसणविमाणणाणि विघुट्ठपणिज्जणाणि वज्झसयमातिकाति य ६ । एवं ते पुव्वकम्मकय-संचओवतत्ता निरयग्गिमहग्गि-संपलित्ता गाढदुक्खं महब्भयं कक्कसं असायं सारीरं मानसं च तिव्वं दुविहं वेदेंति वेयणं पावकम्मकारी । बहूणि पलिओवमसागरोवमाणि कलुणं पालेन्ति ते अहाउयं जमकातियतासिया य सद्दं करेंति भीया, किं ते ?, ७। अविभाय सामि भाय बप्प ताय जितवं मुय मे मरामि दुब्बलो वाहिपीलि-ओऽहं किं दाणिऽसि ? एवं दारुणो णिद्दओ य मा देहि मे पहारे उस्सासेतं (एयं) मुहुत्तगं मे देहि, पसायं करेह, मा रुस, वीसमामि गेविज्जं मुयह मे, मरामि, गाढं तण्हाइओ अहं, देहि पाणीयं ८ । हंता तं पि य इमं जलं विमलं सीयलंति घेत्तूण य नरयपाला तवियं तउयं से दिंति कलसेण अंजलीसु दट्ठूण य तं पवेवियंगोवंगा अंसुपगलंतपप्पुतच्छा छिणा तण्हाइयम्ह कलुणाणि जंपमाणा विप्पेक्खन्ता दिसोदिसिं अत्ताणा असरणा अणाहा अबंधवा बंधुविप्पहीणा विपलायंति य मियविव वेगेण भओव्विग्गा, घेत्तूण बला पलायमाणाणं निरणुकंपा मुहं विहाडेत्तुं लोहदंडेहिं कलकलं ण्हं वयणंसि छुभंति केइ जमकाइया हसंता ९ । तेण दड्ढा संतो रसंति य भीमाइं विस्सराइं रुवंति य कलुणगाइं पारेवयगा इव एवं पलवित-विलाव-कलुणाकंदिय-बहुरुन्नरुदियसद्दो परिदेवि(वेपि)य-रुद्धबद्धय-नारकारवसंकुलो णीसिट्ठो १० । रसिय-भणिय-कुविय-उक्कूइय-निरयपालतज्जियं गेण्ह कम पहर छिंद भिंद उप्पाडेहुक्खणाहि कत्ताहि विकत्ताहि य भुज्जो हण विहण विच्छुभोच्छुब्भ आकड्ढ विकड्ढ किं ण जंपसि ? सराहि पावकम्माइं दुक्कयाइं, एवं वयणमहप्पगब्भो पडिसुयासद्दसंकुलो तासओ (वीहणओ तासणओ पइभओ

अइभग्रो) सया निरयगोयराण महाणगर-डज्झमाणसरिसो निग्घोसो सुच्चए, अणिट्ठो तहियं नेरइयाणं जाइज्जंताणं जायणाहिं ११। किं ते? असिवण-दब्भवण-जंतपत्थर--सूइतल-क्खारवावि--कलकलंतवेयरणि-कलंबवालुया-जलिय--गुहनिरु भणं उसिणोसिण--कंटइल्ल--दुग्गमरहजोयण--तत्तलोहपह(मग्ग)गमण-वाहणाणि इमेहिं विविहेहिं आयुहेहिं १२। किं ते? मुग्गर-मुसुंढि-करकय-सत्ति-हल-गय-मुसल--चक्क-कुंत--तोमर-सूल--लउल-भिंडिमाल-सखद्धल-पट्टिस--चम्मेट्ठ-दुहण-मुट्ठिय--असिखेडग--खग्ग--चाव--नाराय--कणक-कप्पणि-वासि-परसु-टंकतिक्ख-निम्मल-अरणेहि य एवमादिएहिं असुभेहिं वेउव्विएहि पहरणसतेहिं अणुबद्धतिव्ववेरा परोप्परं वेयणं उदीरंति अभिहणंता १३। तत्थ य मोग्गर-पहारचुरिणय-मुसुंढिसंभग्गमहितदेहा जंतोवपीलण-फुरंतकप्पिया के इत्थ सचम्मका विगत्ता णिम्मूलुल्लूणय-कणो-ट्ठणासिका छिण्णहत्थपादा, असि-करकय-तिक्खकोंत--परसुप्पहार-फालियवासी-संतच्छितंगमंगा कलकलमाण-खारपरिसित्त--गाढडज्झंतगत्ता कुंतग्ग-भिगण-जज्जरियसव्वदेहा विलोलंति महीतले विसूणियंगमंगा(निग्गयग्गजीहा) १४। तत्थ य विग-सुणग-सियाल-काक-मज्जार-सरभ-दीविय-वियग्घ-सद्दूल-सीहदप्पिय-खुहाभिभूतेहिं णिच्चकालमणसिएहिं घोरा रसमाणभीमरूवेहिं अक्कमित्ता ददढाढा-गाढडक्क-कड्ढिय-सुतिक्ख-नह-फालियउद्धदेहा विच्छिप्पंते समंतओ विमुक्कसंधिबंधणावियंगमंगा कंक-कुरर-गिद्ध-घोरकट्ठवायसगणेहि य पुणो खरथिर-ददणक्ख-लोहतुंडेहिं ओवतित्ता पक्खा-हय-तिक्ख-णक्खविकिन्न-जिब्भंछिय नयणनिद्द ओलुग्ग-विगतवयणा(गत्ता), उक्कोसंता य उप्पयंता निपतंता भमंता, पुव्वकम्मोदयोवगता पच्छाणुसएण डज्झमाणा णिंदंता १५। पुरेकडाइं कम्माइं पावगाइं तहिं तहिं तारिसाणि ओसण्ण-चिक्कणाइं दुक्खाति अनुभवित्ता तत्तो य आउक्खएणं उव्वट्टिया समाणा बहवे गच्छंति, तिरियवसहिं दुक्खुत्तारं सुदारुणं जम्मणमरण-जरावाहि-परियट्ट-

णारहट्टं, जल-थल-खहचर-परोप्पर-विहिंसणपवंचं, इमं च जगपागडं वरागा दुक्खं पावेन्ति दीहकालं, किं ते ?, १६ । सीउण्ह-तण्हा-खुह-वेयण-अप्पईकार—अडविजम्मण—णिच्चभउव्विग्गवास--जग्गण--वह—बंधण—ताडणंकण—निवायण--अट्ठिभंजण—नासाभेय--प्पहारदूमण—छविच्छेयण—अभिओगपावण-कसंकुसारनिवाय-दमणाणि वाहणाणि य १७ । मायापितिविप्पयोग-सोयपरिपीलणाणि य, सत्थग्गिविसाभिघाय-गलगवलावलण-मारणाणि य, गलजालुच्छिप्पणाणि य, पउलण-विकप्पणाणि य, जावज्जीविगबंधणाणि य, पंजरनिरोहणाणि य, सयूहनिद्धाडणाणि य, धमणाणि य, दोहणाणि य, कुदंडगलबंधणाणि य, वाडगपरिवारणाणि य, पंकजलनिमज्जणाणि य, वारिप्पवेसणाणि य-ओवाय-णिभंगविसम-णिवडण-दवग्गिजालदहणाइं याइं य, १८ । एवं ते दुक्खसयसंपलित्ता नरगाओ आगया इहं सावसेसकम्मा तिरिक्खपंचेंदिएसु पाविंति पावकारी कम्माणि, पमाय-राग-दोस-बहुसंचियाइं अतीव अस्सायकक्कसाइं १६ । तहेव चउरिंदिएसु भमर-मसग-मच्छिमाइएसु य जाइकुलकोडिसयसहस्सेहिं नवहिं चउरिंदियाण तहिं तहिं चेव जम्मणमरणाणि अणुहवंता कालं संखिज्जं भमंति नेरइयसमाण-तिव्वदुक्खा फरिस-रसणघाणचक्खुसहिया २० । तहेव तेइंदिएसु कुंथु-पिप्पीलिया-अवधिकादिकेसु य जातिकुलकोडिसयसहस्सेहिं अट्ठहिं अणूणगेहिं तेइंदियाण तहिं तहिं चेव जम्ममरणाणि अणुहवंता कालं संखेज्जगं भमंति नेरइयसमाणतिव्वदुक्खा फरिसरसणघाणसंपउत्ता २१ । तहेव बेइंदिएसु गंडूलय-जलूय-किमिय-चंदणगमादिएसु य जातीकुलकोडिसयसहस्सेहिं सत्तहिं अणूणएहिं बेइंदियाण तहिं तहिं चेव जम्मणमरणाणि अणुहवंता कालं संखिज्जकं भमंति नेरइयसमाणतिव्वदुक्खा फरिसरसणसंपउत्ता २२ । पत्ता एगिंदियत्तणंपि य पुढवि-जल-जलण-मारुय-वणप्फति सुहुमबायरं च पज्जत्तमपज्जत्तं पत्तेयसरीर-णामसाहारणं च पत्तेयसरीरजीविएसु य तत्थवि कालमसंखेज्जं भमंति अणंतकालं च

अणंतकाए, फासिंदियभावसंपउत्ता दुक्खसमुदयं इमं अणिट्ठं पावंति पुणो पुणो तहिं तहिं चेव परभव-तरुगणगहणे २३। कोद्दाल-कुलिय-दालण-सलिल-मलण-खुंभण-रुंभण-अणलाणिल-विविहसत्थघट्टण-परोप्पराभिहणण-मारण-विराहणाणि य अकामकाइ परप्पओगोदीरणाहि य कज्जपओयणेहि य पेस्सपसुनिमित्त-ओसहाहारमाइएहिं उक्खणण-उक्कत्थण-पयण-कोट्टण-पीसण-पिट्टण-भज्जण-गालण-आमोडण-सडण-फुडण-भंजण-छेयण-तच्छण—विलुंचण-पत्तज्झोडण-अग्गिदहणाइ याति, २४। एवं ते भवपरंपरा-दुक्ख-समणुबद्धा अडंति संसारबीहणकरे जीवा पाणाइवायनिरया अणंतकालं जे विय इह माणुसत्तणं आगया कहिं वि नरगा उव्वट्टिया अधन्ना तेवि य दीसंति पायसो विकय-विगलरूवा खुज्जा वडभा य वामणा य बहिरा काणा कुंटा पंगुला विगला य मूका य मंमणा य अंधिल्लगा एगचक्खू विणिहयसचिल्लया(सपिसल्लया) वाहि-रोगपीलिय-अप्पाउय-सत्थवज्झबाला कुलक्खणुक्किन्नदेहा दुब्बल-कुसंघयण-कुप्पमाण-कुसंठिया कुरूवा किविणा य हीणा हीणसत्ता निच्चंसोक्खपरि-वज्जिया असुहदुक्खभागी णरगाओ इहं सावसेसकम्मा उवट्टा समाणा २५। एवं णरगं तिरिक्खजोणिं कुमाणुसत्तं च हिंडमाणा पावंति अणंताइं दुक्खाइं पावकारी एसो सो पाणवहस्स फलविवागो इहलोइओ पारलोइओ अप्पसुहो बहुदुक्खो महब्भयो बहुरयप्पगाढो दारुणो कक्कसो असाओ वाससहस्सेहिं मुच्चती, न य अवेदयित्ता अत्थि हु मोक्खोत्ति २६। एवमाहंसु, नायकुल-नंदणो महप्पा जिणो उ वीरवरनामधेज्जो कहइ पाणवहणस्स फलविवागं, एसो सो पाणवहो चंडो रुद्दो खुद्दो अणारिओ निग्घिणो निसंसो महब्भओ बीहणओ तासओ अणज्जो उव्वेयणओ य णिरवयक्खो निद्धम्मो निप्पिवासो निक्कलुणो निरयवास-गमणनिधणो मोहमहब्भय-पवड्ढओ मरणवेमणसो, पढमं अहम्मदारं समत्तं ति बेमि २७॥ १॥ सू० ४॥

॥ इति प्रथममध्ययनम्॥ १॥

॥२॥ अथ मृषावादकर्म्माश्रवाख्यं द्वितीयमध्ययनम् ॥

इह खलु जंबू ! बितियं च अलियवयणं लहुसग-लहुचवलभणियं, भयकरं, दुहकरं, अयसकरं, वेरकरगं, अरति-रति-राग-दोस-मणसंकिलेसवियरणं अलियं नियडिसातिजोयबहुलं, नीयजणनिसेवियं निस्संसं, अप्पच्चयकारकं, परमसाहु-गरहणिज्जं, परपीलाकारगं परमकिण्हलेस्ससहियं, दुग्गइविणिवायविवड्ढणं, भवपुणब्भवकरं चिरपरिचियमणुगतं, दुरन्तं, कित्तियं, बितियं अधम्मदारं ॥ सू० ५ ॥ तस्स य णामाणि गोणाणि होंति तीसं, तंजहा—अलियं १ सढं २ अणज्जं ३ मायामोसो ४ असंतकं ५ कूडकवडमवत्थुगं च ६ निरत्थयवमत्थयं च ७ विद्देसगरहणिज्जं ८ अणुज्जुकं ९ कक्कणा य १० वंचणा य ११ मिच्छापच्छाकडं च १२ साती उ १३ उच्छन्नं [उच्छूत्तं] १४ उक्कूलं च १५ अट्टं १६ अब्भक्खाणं च १७ किब्बिसं १८ वलयं १९ गहणं च २० मम्मणं च २१ नूमं २२ नियती २३ अप्पच्चओ २४ असमओ २५ असच्चसंधत्तणं २६ विवक्खो २७ अवहीयं (आणाइयं) २८ उवहिअसुद्धं २९ अवलोवोत्ति ३०, बिइयस्स इमाणि एवमाइयाणि एयाणि नामधेज्जाणि होंति तीसं सावज्जस्स अलियस्स वयजोगस्स अणेगाइं ॥ सू० ६ ॥ तं च पुण वदंति केइ अलियं पावा असंजया, अविरया, कवड-कुडिल-कडुयचटुलभावा, कुद्धा, लुद्धा, भयाय हस्सट्ठिया(हासट्ठा) य, सक्खी, चोरा, चारभडा, खंडरक्खा, जियजूइकरा य गहियगहणा, कक्कुरुगकारगा, कुलिंगी, उवहिया वाणियगा य, कूडतुलकूडमाणी, कुडकाहावणोवजीविया, पडगारका कलाया कारुइज्जा वंचणपरा, चारियचाडुयार-नगरगोत्तिय-परियारगा दुट्ठवायि-सूयक-अणबल-भणिया य पुव्वकालिय-वयणदच्छा, साहसिका, लहुस्सगा, असच्चा, गारविया, असच्चट्ठावणाहिचित्ता, उच्चच्छंदा, अणिग्गहा, अणियता, छंदेण मुक्कवाया भवंति, अलियाहिं जे अविरया, १ । अवरे नत्थिकवाइणो वामलोकवादी भणंति [सुणंति] नत्थि जीवो न जाइ इह

परे वा लोए न य किंचिवि फुसति पुन्नपावं, नत्थि फलं सुकयदुक्कयाणं, पंचमहाभूतियं सरीरं भासंति हे ! वातजोगजुतं २। पंच य खंधे भणंति केई, मणं च मणजीविका वदंति, वाउजीवोत्ति एवमाहंसु, सरीरं सादियं सनिधणं इह भवे एगे भवे तस्स विप्पणासंमि सव्वनासोत्ति, एवं जंपंति मुसावादी, तम्हा दाणवयपोसहाणं तवसंजम-बंभचेर-कल्लाणमाइयाणं नत्थि फलं, नवि य पाणवहे अलियवयणं न चेव चोरिक्ककरण-परदारसेवणं वा सपरिग्गहपावकरणंपि नत्थि किंचि न नेरइयतिरियमणुयाण जोणी, न देवलोको वा अत्थि, न य अत्थि सिद्धिगमणं, अम्मापियरो नत्थि, नवि अत्थि पुरिसकारो, पच्चक्खाणमवि नत्थि, नवि अत्थि कालमच्चू य ३। अरिहंता चक्कवट्टी बलदेवा वासुदेवा नत्थि, नेवत्थि केइ रिसओ, धम्माधम्मफलं च नवि अत्थि किंचि बहुयं च थोवगं वा, तम्हा एवं विजाणिऊण जहा सुबहु इंदियाणुकूलेसु सव्वविसएसु वट्टह, णत्थि काइ किरिया वा अकिरिया वा एवं भणंति नत्थिकवादिणो वामलोगवादी, ४। इमंपि बितीयं कुदंसणं असब्भाववाइणो पण्णवेंति मूढा—संभूतो अंडकाओ लोगो सयंभुणा सयं च निम्मिओ, ५। एवं एयं अलियं पयंपंति पयावइणा इस्सरेण य कयंति केति, एवं विण्हुकयं भूयाण सपंचनिमिणो कसिणमेव य जगं केई, एवमेके वदंति मोसं, एगो आया अकारको अवेदको य सुकयस्स य दुक्कयस्स य करणाणि कारणाणि सव्वहा सव्वहिं च निच्चो य निक्किओ निग्गुणो य, अणुव(अन्नो अ)लेवओ त्ति विय एवमाहंसु असब्भावं, जंपि इहं किंचि जीवलोके दीसइ सुकयं वा दुकयं वा एवं जदिच्छाए वा सहावेण वावि दइवतप्पभावओ वावि भवति, नत्थेत्थं(नत्थि) किंचि कयकं(कयं) तत्तं लक्खणविहाणनियतीए कारियं, एवं केइ जंपंति ६। इड्ढिरससायगारवपरा, बहवे धम्मकरणालसा परूवेंति धम्मवीमंसएण मोसं ७। अवरे अहम्मओ रायदुट्ठं अब्भक्खाणं भणंति—अलियं चोरोत्ति

अचोरयं करेंतं डामरिउत्तिवि य एमेव उदासीणं दुस्सीलोत्ति य परदारं गच्छतित्ति मइलिंति सीलकलियं अयंपि गुरुतप्पओ, अरणो एमेव भणंति उवाहणंता मित्तकलत्ताइं सेवंति अयंपि लुत्तधम्मो, इमोवि विस्संभवाइओ पावकम्मकारी अगम्मगामी अयं दुरप्पा बहुएसु य पापगेसु जुत्तोत्ति एवं जंपंति मच्छरी, भद्दके वा गुणकित्ति-नेहपरलोग-निप्पिवासा ८। एवं ते अलियवयणदच्छा परदोसुप्पायणप्पसत्ता वेढेन्ति, अक्खातियबीएण अप्पाणं कम्मबंधणेण, मुहरी असमिक्खियप्पलावा निक्खेवे अवहरंति, परस्स अत्थंमि गढियगिद्धा अभिजुंजंति य परं असंतएहिं लुद्धा य करेंति कूडसक्खित्तणं, असच्चा अत्थालियं च कन्नालियं च भोमालियं च तह गवालियं च गरुयं भणंति अहरगतिगमणं, ९। अन्नंपि य जातिरूवकुलसीलपच्चयं मायाणिगुणं, चवलपिसुणं, परमट्ठभेदकमसकं, विद्देसमणत्थकारकं, पावकम्ममूलं, दुदिट्ठं, दुस्सुयं, अमुणियं, निलज्जं, लोकगरहणिज्जं, वहबंधपरिकिलेसबहुलं, जरामरणदुक्खसोयनिम्मं, असुद्धपरिणामसंकिलिट्ठं भणंति, अलिया हिंसंति संनिविट्ठा असंतगुणुदीरका य संतगुणनासका य हिंसाभूतोवघातितं अलियसंपउत्ता वयणं सावज्जमकुसलं साहुगरहणिज्जं अधम्मजणणं भणंति अणभिगयपुन्नपावा, पुणोवि अधिकरणकिरियापवत्तका बहुविहं अणत्थं अवमद्दं अप्पणो परस्स य करेंति, एमेव जंपमाणा १०। महिससूकरे य साहिंति घायगाणं, ससयपसयरोहिए य साहिंति वागुराणं, तित्तिरवट्ट-कलावके व कविंजल-कवोयके य साहिंति साउणीणं, झसमगरकच्छभे य साहिंति मच्छियाणं, संखंके खुल्लए य साहिंति मगराणं-(मग्गिणं), अयगर-गोणसमंडलिदव्वीकरे मउली य साहिंति वालवीणं, गोहा सेहग सल्लगसरडके य साहिंति लुद्धगाणं, गयकुलवानरकुले य साहिंति पासियाणं, सुक-बरहिण-मयण-सालकोइल-हंसकुले सारसे य साहिंति पोसगाणं, वधबंधजायणं च साहिंति गोम्मियाणं धणधन्नवेलए य

साहिंति तक्कराणं, गामागरनगरपट्टणे य साहिंति चारियाणं, पारघाइय-पंथवातियाओ साहंति य गंठिभेयाणं, कयं च चोरियं नगरगोत्तियाणं ११। लंछण–निलंछण–धमण–दुहण–पोसण–वणण-दवण-वाहणादियाइं साहिंति बहूणि गोमियाणं धातुमणिसिल-प्पवाल-रयणागरे य साहिंति आगरीणं पुप्फविहिं फलविहिं च साहिंति मालियाणं, अग्घमहुकोसए य साहिंति वणचराणं १२। जंताइं विसाइं मूलकम्मं ओहेव(हिव्व)ण(आविंधण) आभिओग–मंतोसहिप्पओगे चोरियपरदारगमण-बहुपावकम्मकरणं उक्खंधे गामघातियाओ वणदहण-तलागभेयणाणि बुद्धिविसविणासणाणि वसीकरण-मादियाइं भयमरण-किलेसदोस-जणणाणि भावबहुसंकिलिट्ठ-मलिणाणि भूतघातोवघातियाइं सच्चाइंपि ताइं हिंसकाइं वयणाइं उदाहरंति, पुट्ठा वा अपुट्ठा वा परतत्तियवावडा य असमिक्खियभासिणो १३। उवदिसंति सहसा उट्ठा, गोणा, गवया दमंतु परिणयवया, अस्सा हत्थी गवेलगकुक्कुडा य किज्जंतु, किणावेध य विक्केह पयह य सयणस्स देह पियय(खादत पिबत दत्त य) दासिदासभयकभाइलका, य सिस्सा य, पेसकजणो, कम्मकरा य, किंकरा य, एए सयणपरिजणो य कीस अच्छंति, भारिया मे करित्तु कम्मं गहणाइं वणाइं खेत्तखिलभूमिवल्लराइं (छिन्दा-खिलभूमिवल्लराणि) उत्तणघणसंकडाइं डज्झंतु सुडिज्जंतु य रुक्खा भिज्जंतु जंतभंडाइयस्स उवहिस्स कारणाए बहुविहस्स य अट्ठाए उच्छु दुज्जंतु पीलिज्जंतु य तिला, पयावेह य इट्ठकाउ, मम घरट्ठयाए खेत्ताइं कसह कसावेह य, लहुं गाम-आगर-नगर-खेडकब्बडे निवेसेह अडवीदेसेसु विपुलसीमे, पुप्फाणि य फलाणि य कंदमूलाइं कालपत्ताइं गेण्हेह, करेह संचयं परिजणट्ठयाए, साली वीही जवा य लुच्चंतु मलिज्जंतु उप्पणिज्जंतु य लहुं च पविसंतु य कोट्ठागारं, अप्पमहउक्कोसगा य हंमंतु, पोयसत्था सेणा णिज्जाउ, जाउ डमरं, घोरा वट्टंतु च संगामा, पवहंतु य सगडवाहणाइं,

उवणयणं चोलगं विवाहो जन्नो अमुगम्मि उ होउ दिवसेसु करणेसु मुहुत्तेसु नक्खत्तेसु तिहिसु य १४ । अज्ज होउ एहवणं मुदितं बहुखज्जपिज्ज-कलियं कोतुकं विण्हावणकं, संतिकम्माणि कुणह, ससिरवि-गहोवराग-विसमेसु सज्जणपरियणस्स य नियकस्स य जीवियस्स परिरक्खणट्ठयाए पडिसीसकाइं च देह दह य सीसोवहारे विविहोसहि-मज्जमंस-भक्खन्नपाण-मल्लाणुलेवण-पईव-जलिउज्जल-सुगंधिधूवावकार-पुप्फफलसमिद्धे पायच्छित्ते करेह, पाणाइवाय-करणेणं बहुविहेणं विवरीउप्पाय-दुस्सुमिण-पावसउण-असोमग्गहचरिय-अमंगलनिमित्तपडीघायहेउं वित्तिच्छेयं करेह, मा देह किंचि दाणं, सुट्ठु हओ (सुट्ठु हओ,) सुट्ठु छिन्नो भिन्नति उवदिसंता एवंविहं करेंति, अलियं मणेण वायाए कम्मुणा य १५ । अकुसला अणज्जा अलियाणा अलीयधम्मणिरया, अलियासु कहासु अभिरमंता, तुट्ठा अलियं करेत्तु होति य बहुप्पयारं १६ ॥ सू० ७ ॥ तस्स य अलियस्स फलविवागं, अयाणमाणा वड्ढेंति, महब्भयं अविस्सामवेयणं दीहकालं बहुदुक्खसंकडं नरयतिरियजोणिं, तेण य अलिएण समणुबद्धा आइद्धा पुणब्भवंधकारे भमंति भीमे दुग्गतिवसहि-मुवगया, ते य दीसंतिह दुग्गया, दुरंता, परवस्सा अत्थभोगपरिवज्जिया, असुहिता, फुडियच्छवि-बीभच्छविवन्ना, खर–फरुस-विरत्तज्झामज्झुसिरा, निच्छाया, लल्लविफलवाया, असक्कतमसक्कया, अगंधा, अचेयणा, दुभगा, अकंता, काकस्सरा, हीणभिन्नघोसा, विहिंसा, जडबहिरन्धया (जडबहिर-मूया) य मम्मणा, अकंत(अकय)विकयकरणा, णीया णीयजणनिसेविणो लोगगरहणिज्जा, भिच्चा असरिसजणस्स पेस्सा, दुम्मेहा, लोकवेदअज्झप्प-समयसुतिवज्जिया, नरा धम्मबुद्धिवियला १ । अलिएण य तेणं पडज्झमाणा य असंतएण अवमाणण-पिट्ठिमंसाहिक्खेव-पिसुण-भेयण-गुरुबंधव-सयण-मित्तवक्खारणादियाइं अब्भक्खाणाइं बहुविहाइं पावेंति, अणुवमाणि (अमणोरमाइं) हियय-मणदूमकाइं जावज्जीवं दुरुद्धराइं अणिट्ठखर-

फरुसवयण-तज्जणनिब्भच्छण-दीणवदणविमणा कुभोयणा, कुवाससा, कुवस-हीसु किलिस्संता नेव सुहं नेव निव्वुइं उवलभंति अच्चंतविपुल-दुक्खसयसंप-लि(उ)त्ता २। एसो सो अलियवयणस्स फलविवाओ इहलोइओ, परलोइओ, अप्पसुहो, बहुदुक्खो, महब्भओ, बहुरयप्पगाढो, दारुणो, ककसो, असाओ वाससहस्सेहिं मुचइ, न य अवेदयित्ता अत्थि हु मोक्खोत्ति, एवमाहंसु नायकुलनंदणो महप्पा जिणो उ वीरवरनामधेज्जो कहेसी य अलियवयणस्स फलविवागं, एयं तं बितीयंपि अलियवयणं लहुसग-लहुचवलभणियं, भयंकरं, दुहकरं, अयसकरं, वेरकरगं, अरतिरति-रागदोस-मणसंकिलेसवियरणं, अलिय-णियडिसादि-जोगबहुलं नीयजणनिसेवियं, निसे(स्सं)सं, अपच्चयकारकं, परमसाहुगरहणिज्जं परपीलाकारकं परमकण्हलेससहियं, दुग्गतिविनिवाय-वड्ढणं, पुणब्भवकरं, चिरपरिचियमणुगयं, दुरुत्तं त्तिबेमि, २ । बितियं अधम्मदारं समत्तं ॥ २ ॥ सू० ८ ॥

॥ इति द्वितीयमध्ययनम् ॥ २ ॥

॥३॥ अथ अदत्तादानाश्रवकर्म्माख्यं तृतीयमध्ययनम् ॥

जंबू ! तइयं च अदत्तादाणं हर-दह-मरण-भय-कलुसतासण परसंतिग-ऽभेज्जलोभमूलं, कालविसमसंसियं, अहोऽच्छिन्न-तण्हपत्थाण-पत्थोइमइयं, अकित्तिकरणं, अणज्जं, छिद्दमंतर-विधुर-वसण-मग्गण-उस्सव-मत्तप्पमत्त-पसुत्तवंचण-क्खिवण-घायण-पराणिहुयपरिणाम-तक्करजणबहुमयं १। अकलुण-रायपुरिस-रक्खियं, सया साहु-गरहणिज्ज, पियजण-मित्तजण-भेदविप्पीतिकारकं, रागदोसबहुलं पुणो य उप्पूर-(थुर)समर-संगाम-डमर-कलि-कलह-वे(व)हकरणं, दुग्गइ-विणिवाय-वड्ढणं, भव-पुणब्भव-करं, चिर-परिचित मणुगयं दुरंतं तइयं अधम्मदारं २ ॥ सू० ९ ॥ तस्स य णामाणि गोन्नाणि होंति तीसं, तंजहा—चोरिक्कं १ परहडं २ अदत्तं ३ कूरिकडं (कुसडयकयं) ४ परलाभो

५ असंजमो ६ परधणंमि गेही ७ लोलिक्कं ८ तक्करत्तणंति य ९ अवहारो १० हत्थलहुत्तणं ११ पावकम्मकरणं १२ तेणिक्कं १३ हरणविप्पणासो १४ आदियणा १५ लुंपणा धणाणं १६ अपच्चओ १७ अ(ओ)वीलो १८ अक्खेवो १९ खेवो २० विक्खेवो २१ कूडया २२ कुलमसी य २३ कंखा २४ लालप्पणपत्थणा य (आसायणा य) २५ आससणा य वसणं २६ इच्छामुच्छा य २७ तण्हागेहि २८ नियडिकम्मं २९ अपरच्छंतिवि य ३० तस्स एयाणि एवमादीणि नामधेज्जाणि होंति तीसं अदिन्नादाणस्स पाव-कलि-कलुसकम्म-बहुलस्स अणेगाइं ॥ सू० १० ॥ तं पुण करेंति चोरियं तक्करा परदव्वहरा, छेया कयकरण-लद्धलक्खा, साहसिया, लहुस्सगा अतिमहिच्छा, लोभगच्छा, दद्दरओवीलका य, गेहिया, अहिमरा, अणभंजका भग्गसंधिया, रायदुट्ठकारी य विसय-निच्छूढ-लोकवज्झा, उद्दोहक-गामघायक-पुरघायग-पंथघायग-आलीवग-तित्थभेया, लहुहत्थ-संपउत्ता, जुइकरा, खंडरक्ख-त्थीचोर-पुरिसचोर-संधिच्छेया य, गंथिभेदग-परधणहरण-लोमावहारा अक्खेवी (परधणलोमावहार-अक्खेव-) हडकारका, निम्मद्दग-गूढचोरक-गोचोरग-अस्सचोरग-दासिचोरा य, एकचोरा, ओकड्ढक-संपदायक-उच्छिपक-सत्थघायक-बिलचोरी-(कोली)—कारका य, निग्गाह-विप्पलुंपगा, बहुविह-तेणिक(तहव)हरणबुद्धी, एते अन्ने य एवमादी परस्स दव्वाहि जे अविरया १ । विपुल-बलपरिग्गहा य बहवे रायाणो परधणंमि गिद्धा, सए व दव्वे असंतुट्ठा परविसए अहिहणंति ते लुद्धा, परधणस्स कज्जे चउरंग-विभत्त(समत्त)बलसमग्गा, निच्छिय-वरजोह-जुद्ध—सद्धिय—अहमहमिति-दप्पिएहिं सेन्नेहिं संपरिवुडा, पउम-सगड-सूइ-चक्क-सागर-गरुल-वूहातिएहिं अणिएहिं उत्थरंता, अभिभूय हरंति परधणाइं २ । अवरे रणसीस-लद्धलक्खा संगामंमि अतिवयंति, सन्नद्ध-बद्ध-परियर-उप्पीलिय—चिंध-पट्ट-गहियाउह-पहरणा, माढि(गूढ)-वर-वम्म गुंडिया, आविद्ध-जालिका, कवय-कंक-डइया ३ । उर-सिर-मुहबद्ध—

कंठ-तोणमाइत—वरफलह—रचित-पहकर-सरहस-खरचावकर-करंछिय-सुनिसित-सरवरिस—चडकरक—मुयंत(मत्त)—घणचंड—वेगधारा—निवायमग्गे(मंते) ३ । अणेग-धनुमंडलग्ग-संधिताउच्छलिय-सत्ति-सूल-कणग-वामकर-गहिय—खेडग-निम्मल-निकिट्ठ-खग्ग-पहरंत-कोंत-तोमर-चक्क-गया—परसु—मुसल—लंगल-सूल-लउल-भिंडिमाला-सब्बल-पट्टिस-चम्मेट्ठ-दुघण—मोट्ठिय-मोग्गर—वरफलिह-जंत-पत्थर-दुहण-तोण-कुवेणी-पीढकलिय—ईलीपहरण-मिलिमिलिमिलंत-खिप्पंत—विज्जुज्जल-विरचित-समप्पहण-भूतले, फुडपहरणे, महारण-संख-भेरि-दुंदुभि-वरतूर-पउर-पडुपहडाहय-णिणाय-गंभीर-णंदित्तं पक्खुभिय-विपुलघोसे, ४ । हय-गय-रह-जोह-तुरित—पसरित-उद्धत—तमंधकार-बहुले, कातरनर—णयण-हियय-वाउलकरे ॥ विलुलिय—उक्कड—वरमउड—तिरीड—कुंडलोडुदामाडोविया पागड-पडाग-उसिय-ज्भय-वेजयंति-चामर-चलंतछत्तंधकार-गम्भीरे, हयहेसिय-हत्थिगुलुगुलाइय-रहघणघणाइय-पाइक्कहरहराइय-अप्फाडियसीहनाया, छेलिय-विघुट्ठुक्कुट्ठ-कंठगय-सद्द-भीम-गज्जिए, सयराह-हसंत-रूसंत-कलकलरवे, ५ । आसूणिय-वयणरुद्दे, भीम-दसणाधरोट्ठ-गाढदट्ठे, सप्पहार-णुज्जयकरे, अमरिस-वस—तिव्व-रत्त-निद्दारितच्छे, वेरदिट्ठि-कुद्ध-चिट्ठिय—तिवली—कुडिल-भिउडि-कयनिलाडे, वह—परिणय—नरसहस्स—विक्कम—वियंभिय—बले ६ । वग्गंत—तुरग-रह-पहाविय-समरभडा, आवडिय-छेय—लाघव-पहारसाधिता, समूस्सिय—बाहुजुयलं मुक्कट्टहास-पुक्कंत-बोलबहुले, फुरफलगावरण-गहिय-गयवर-पत्थित—दरिय—भडखल—परोप्पर—पलग्ग—जुद्ध—गव्वित—विउसित-वरासि—रोस-तुरिय-अभिमुह-पहरित-छिन्न-करिकर-वियंगियकरे, अवइद्ध-निसुद्ध-भिन्न-फालिय-पगलिय-रुहिर-कंत-भूमिकद्दम-चिलिचिलपहे, कुच्छि-दालिय-गलित-रुलित-निभेलंतंत-फुरफुरंत-विगल-मम्माहय-विकय-गाढ—दिन्नपहार-समुच्छित—रुलंत-वेंभल-विलाव-कलुणे, ७ । हय-जोह-भमंत—तुरग-उद्दाम-मत्त-कुंजर-परिसंकित-जण-निब्बुकच्छिन्नधय-भग्ग-रहवर-नट्ठ-सिर-करि-कलेवराकिन्न-पति-

त-पइरण-विकिन्नाभरण-भूमिभागे, नच्चंतकबंध—पउरभयंकरवायस—परिलित-गिद्ध-मंडल-भमंत-च्छायंधकार-गंभीरे, वसु-वसुह विकंपितव्व पिच्चक्ख-पउवणं परम-रुद्द-बीहणगं दुप्पवेसतरगं अभिवयंति संगाम-संकडं परधणं महता, ८। अवरे पाइक्क-चोरसंघा सेणावति-चोरवंद-पागड्ढिका य अडवीदेस-दुग्गवासी काल-हरित-रत्त-पीत-सुक्किल-अणेग-सयचिंध-पट्टबद्धा परविसए अभिहणंति ९। लुद्धा धणस्स कज्जे रयणागर-सागरं उम्मी-सहस्स मालाउलाकुल-वितोयपोत-कलकलेंत-कलियं, पायाल-सहस्स—वायवस—वेग सलिल-उद्धम्ममाणदगरय-रयंधकारं, वरफेण-पउर-धवल-पुलंपुल-समुट्ठियट्टहासं, मारुय-विच्छुभमाण-पाणियं, जलमालुप्पील-हुलियं, अविय समंतओ, १०। खुभिय-लुलिय-खोखुब्भमाण पक्खलिय-चलिय-विपुल-जलचक्कवाल-महानई-वेग-तुरिय-आपूरमाण-गंभीर-विपुल-आवत्त-चवल—भममाण—गुप्पमाणुच्छलंत-पच्चोणियत्त-पाणिय-पधाविय-खर-फरुस पयंड-वाउलिय—सलिल-फुट्टंत—वीति-कल्लोल-संकुलं, महामगर-मच्छ-कच्छभोहार-गाह-तिमि-सुंसुमार-सावय-समाहय-समुद्धायमाण कपूर-घोरपउरं, कायरजण-हिययकंपणं, घोरमारसंतं, महब्भयं, भयंकरं, ११। पतिभयं, उत्तासणगं, अणोरपारं, आगासं चेव निरवलंबं, उप्पाइय-पवण-धणित-नोल्लिय-उवरुवरि—तरंग-दरिय—अतिवेग-वेग—चक्खुपह-मुच्छरंतं, कच्छइ-गंभीर-विपुल-गज्जिय-गुंजिय-निग्घाय-गरुय-निवतित-सुदीह-नीहारि—दूरसुव्वंत—गंभीर-धुगधुगंत—सद्दं, पडिपह-रुंभंत—जक्ख—रक्खस-कुहंड-पिसाय-पगज्जिय(रुसिय—तज्जाय)—उवसग्ग—सहस्स-संकुलं, बहूप्पाइय-(उवद्दव)भूयं, विरचित-बलि-होम-धूव-उवचार-दिन्न—रुधिरच्चणा करण—पयत-जोगपय-यचरियं, परियन्त-जुगंत-काल-कप्पोवमं, दुरंतं महानई-नई-वई-महा-भीम-दरिसणिज्जं, दुरणुचरं, विसमप्पेवसं, दुक्खुत्तारं, दुरासयं, लवण-सलिल-पुण्णं, असिय-सिय-समूसिय-गेहिं दच्छतरकेहिं वाहणेहिं अइवइत्ता समुद्दमज्झे हणंति, गंतूण जणस्स पोते १२। परदव्वहरा नरा निरणुकंपा

निरावयक्खा गामागर–नगर–खेड–कब्बड–मडंब–दोणमुह–पट्टणा-सम–णिगम–जणवय ते य धणसमिद्धे हणंति, थिरहिया य छिन्न-लज्जा बंदिग्गाह–गोग्गहे य गेण्हंति, १३। दारुणमती णिक्किवा णियं हणंति. छिंदंति गेहसंधिं, निक्खित्ताणि य हरंति, धण-धन्न-दव्वजायाणि जणवय-कुलाणं णिग्घिणमती परस्स दव्वाहिं जे अविरया १४। तहेव केई अदिन्नादाणं गवेसमाणा कालाकालेसु संचरंता चियका-पज्जलिय-सरस–दर-दड्ढकड्ढिय-कलेवरे रुहिर-लित्त-वयणा-अखत(अद्र)खातिय-पीत-डाइणि भमंत–भयकरं–जंबुयक्खिक्खियंते, घुय कय-घोरसद्दे, वेयालुट्ठिय-निसुद्ध-कहकहित-पहसित-बीहणक-निरभिरामे, अति-बीभच्छ-दुब्भि-गंध,-(दुरभिगंध)बीभच्छ-दरस-णिज्जे सुसाण-वण-सुन्नघर-लेण-अंतरावण-गिरिकंदर-विसम-सावय-समाकुलासु वसहीसु किलिस्संता, सीतातव-सोसिय-सरीरा-दड्ढच्छवी निरय-तिरिय-भव-संकड-दुक्ख-संभार-वेयणिज्जाणि पावकम्माणि संचिणंता, १५। दुल्लह-भक्खन्न-पाणभोयणा, पिवासिया, भुंझिया, किलंता, मंस-कुणिम-कंदमूल-जंकिंचि-कयाहारा, उव्विगा, उप्पुया, असरणा, अडवी वासं उवेंति १६। वाल-सत-संकणिज्जं अयसकरा तक्करा भयंकरा कस्स हरामोत्ति अज्ज दव्वं इति सामत्थं करेंति, गुज्झं बहुयस्स जणस्स कज्जकरणेसु विग्घकरा मत्त-पमत्त-पसत्त-वीसत्थ-छिद्दघाती वसणब्भुदएसु हरणबुद्धि विगव्व-रुहिर-महिया परेंति नरवति-मज्जाय-मतिक्कंता सजण-जण-दुगंछिया सकम्मेहिं पाव-कम्मकारी असुभ-परिणया य दुक्खभागी निच्चाउल-दुहमनिव्वुइमणा इहलोके चेव किलिस्संता परदव्वहरा नरा वसणसय-समावण्णा १७॥ सू० ११॥

तहेव केइ परस्स दव्वं गवेसमाणा गहिता य हया य बद्धरुद्धा य तुरियं अतिधाडिगा पुरवरं समप्पिया चोरग्गह-चार-भड-चाडुकराण तेहि य कप्पडप्पहार-निद्दयआरक्खिय-खर-फरुसवयण–तज्जण–गलच्छल्लुच्छल्लणाहिं विमणा चारगवसहिं पवेसिया निरय-वसहि-सरिसं तत्थवि १। गोमिय-

प्पहार-दूमण—निब्भच्छण-कडुय-वद(य)ण-भेसणग(गा)भयाभिभूया, अक्खित्त-नियंसणा, मलिण-दंडि-खंड-वसणा, उक्कोडा-लंच-पासमग्गण-परायणेहिं [दुक्खसमुदीरणेहिं] गोम्मियभडेहिं विविहेहिं बंधणेहिं, किं ते ? २। हडि निगड-वालरज्जुय-कुदंडग-वरत्त-लोहसंकल-हत्थुंदुय-वज्झपट्ट-दामक-णिक्कोडणेहिं अन्नेहि य एवमादिएहि गोम्मिक-भंडोवकरणेहिं दुक्खसमुदीरणेहिं संकोड-मोडणाहिं बज्झंति मंदपुन्ना, संपुड कवाड-लोहपंजर-भूमिघर निरोह-कूव-चारग-कीलग-जूय-चक्क-विततबंधण-खंभालण-उद्ध चलण-बंधण-विहम्मणाहि य विहेडयन्ता, ३। अवकोडक-गाढ-उर-सिर-बद्ध-उद्धपूरित(पुरीय)-अशुभ-परिणया य फुरंत-उर-कडग-मोडणामेडणाहिं बद्धा य नीससंता, सीसावेढ-उरुयाल(यावल)चप्पडग-संधिबंधण-तत्त-सलाग-सूइयाकोडणाणि तच्छण-विमाणणाणि य खार-कडुयतित्त-नावण-जायणा-कारणसयाणि बहुयाणि पावियंता, उरक्खोडीका-दिन्न-गाढपेल्लण-अट्ठिक-संभग्ग-सुपांसुलिगा गल-कालक-लोहदंड-उर-उदर-बत्थि परिपीलिता, मच्छंत-हियय-संचुण्णियंगमंगा, आणत्ती-किंकरेहिं, केति अविराहिय-वेरिएहिं जमपुरिस-सन्निहेहिं पहया, ४। ते तत्थ मंदपुण्णा चडवेला-वज्झपट्ट-पाराइं-छिव-कस-लत्ता-वरत्त-नेत्तप्पहार-सय-तालियंगमंगा, किवणा, लंबंत चम्मवण-वेयण-विमुहिय-मणा, घण-कोट्टिम-नियल-जुयल-संकोडिय-मोडिया य किरंति, निरुच्चारा असंचरणा एया अन्ना य एवमादीओ वेयणाओ पावा पावेंति ५। अदंतिंदिया वसट्टा बहुमोहमोहिया, परधणंमि लुद्धा, फासिंदिय-विसय-तिव्वगिद्धा, इत्थि-गय-रूव-सद्द-रस-गंध-इट्ठरति-महित-भोग-तण्हाइया य धणतोसगा, गहिया य जे नरगणा ६। पुणरवि ते कम्म-दुव्वियद्धा उवणीया रायकिंकराण तेसिं वह-सत्थग-पाढयाणं, विलउली-कारकाणं, लंचसय-गेण्हगाणं, कूड-कवड-माया-नियडि-आयरण-पणिहि-वंचण-विसारयाणं, बहुविह-अलिय-सत-जंपकाणं, परलोक-परम्मुहाणं. निरयगति-गामियाणं तेहि य आणत्त-

जीयदंडा तुरियं उग्घाडिया पुरवरे सिंघाडग-तिय-चउक्क-चच्चर-चउम्मुह-महापह-पहेसु वेत्तदंड-लउड-कट्ठ-लेट्ठु-पत्थर-पणालि-पणोल्लि-मुट्ठिलया-पादपण्हि-जाणु-कोप्पर-पहार-संभग्ग महियगत्ता, ७। अट्ठारस-कम्मकारणा, जाइयंगमंगा, कलुणा, सुकोट्ठ-कंठ-गलक-तालु-जीहा, जायंता, पाणीयं विगय-जीवियासा, तण्हादिया, वराणा तंपि य ण लभंति वज्झपुरिसेहिं निघाडियंता, ८। तत्थ य खर-फरुस-पडह-घट्टित-कूडग्गह-गाढ-रुट्ठ-निसट्ठ-परामुट्ठा, वज्झ-करकुडि-जुय-नियत्था, सुरत्त-कणवीर-गहिय-विमुकुल-कंठगुण-वज्झदूत-आविद्ध-मल्लदामा, मरणभयुप्पण्ण-सेद-आयतणोहुत्तुपिय-किलिन्नगत्ता, चुण्णगुंडियसरीर-रयरेणुभरियकेसा, कुंसुंभ-गोकिन्न-मुद्धया (कुसुमगोरवन्न-मुद्धया) छिन्नजी-वियासा, घुन्नंता, वज्झपाणपीया-(याणभीया) तिलं तिलं चेव छिज्ज-माणा, सरीर-विकिन्त-लोहि-ओलित्त-कागणिमंसाणि खावियंता, पावा खरफरुसएहिं तालिज्जमाणदेहा, वातिकर-नरनारि-संपरिवुडा, पेच्छिज्जंता य नागरजणेणं वज्झनेवत्थिया पणेज्जंति नयरमज्झेण किवणकलुणा, अत्ताणा, असरणा, अणाहा, अबंधवा, बंधुविप्पहीणा, विपिक्खिता, दिसोदिसिं मरणभयुव्विग्गा, आघायण-पडिदुवार-संपाविया, अधन्ना, सूलग्ग-विलग्ग-भिन्नदेहा, ते य तत्थ कीरंति परिकप्पियंगमंगा उल्लंबि-ज्जंति रुक्खसालासु, केइ कलुणाइं विलवमाणा, ९। अवरे चउरंग-धणिय-बद्धा पव्वय-कडगा पमुच्चंते दूरपात बहुविसम-पत्थर-सहा, अन्ने य गय-चलण-मलणय-निम्मद्दिया कीरंति, पावकारी अट्ठारस-खंडिया य कीरंति मुंड-परसूहिं, केइ उक्कत्त-कन्नोट्ठ-नासा, उप्पाडिय-नयण-दसण-वसणा, जिब्भिंदिय-छिया, छिन्नकन्नसिरा पणिज्जंते छिज्जन्ते य, असिणा, निव्विसया छिन्नहत्थपाया पमुच्चंते, जावज्जीवबंधणा य कीरंति, केइ परदव्व-हरण-लुद्धा, कारग्गल-नियल-जुयल-रुद्धा, चारगावहतसारा, १०। सयण-विप्पमुक्का मित्तजण-निरक्खि(रक्खि)या, निरासा, बहुजण-धिकार-सद्द-

लज्जायिता [अलज्जाविया] अलज्जा, अणुबद्धखुहा, पारद्धा, सी-उराह-तराह-वेयणा-दुग्घट्ट-घट्टिया, विवन्न-मुह-विच्छविया, विहल-मलिन-दुब्बला, किलंता, कासता, वाहिया य आमाभिभूय-गत्ता परूढ-नह-केस-मंसु-रोमा छगमुत्तंमि णियगंमि खुत्ता तत्थेव मया अकामका ११। बंधिऊण पादेसु कड्डिया खाइयाए छूढा, तत्थ य विग-सुणग-सियाल-कोल-मज्जार-चंड-संदंसग-तुंड-पक्खिगण-विविह-मुह-सय-विलुत्तगत्ता, केइ विहंगा, केइ किमिणा य कुहियदेहा, अणिट्ठवयणेहिं सप्पमाणा, सुट्ठु कयं जं मउत्ति पावो तुट्ठेणं जणेण हम्ममाणा, लज्जावणाका च होंति सयणस्सवि य दीहकालं १२। मया संता, पुणो परलोग-समावन्ना नरए गच्छंति निरभिरामे अंगार-पलित्तक-कप्प-अचत्थ-सीतवेदण-अस्साउदिन्न-सय—तद्‌दुक्ख—सय—समभिद्‌दुते १३। ततोवि उव्वट्टिया समाणा पुणोवि पवज्जंति तिरियजोणिं, तहिंवि निरयोवमं अणुहवंति वेयणं, ते अणंतकालेण जति नाम कहिंवि मणुयभावं लभति णेगेहिं णिरयगतिगमण-तिरियभव-सयसहस्स—परियट्टेहिं १४। तत्थवि य भमंतऽणारिया नीचकुल—समुप्पराणा आरियजणेवि लोगवज्झा तिरिक्खभूता य अकुसला कामभोगतिसिया जहिं निबंधंति निरयवत्तणि-भवप्पवंच—करण—पणोल्लि(या) पुणोवि संसार(रावत्त)णेममूले धम्मसुति—विवज्जिया अणज्जा कूरा मिच्छत्तसुति-पवन्ना य होंति एगंत—दंड-रुइणो वेदेंता कोसिकार—कीडोव्व अप्पगं अट्ठकम्म—तंतु—घणबंधणेणं १५। एवं नरग—तिरिय—नर—अमर—गमण—पेरंत—चक्कवालं, जम्म—जरा—मरण—करण—गम्भीर—दुक्ख—पक्खुभिय—पउरसलिलं, संजोग—वियोग—वीची—चिंता—पसंग—पसरिय—वह—बंध—महल्ल—विपुल—कल्लोल—कलुण—विलवित—लोभ—कलक—लित—बोलबहुलं, अवमाणण—फेणं, तिव्व—खिसण—पुलंपुल-प्पभूय—रोग—वेयण—पराभव—विणिवात—फरुस—धरिसण—समावडिय—कढिण-कम्म—पत्थर—तरंग—रंगंत—निच्च—मच्चुभय—तोयपट्ठं, कसाय—पायाल—कलस-

संकुलं, भव–सयसहस्स–जलसंचयं, अणंतं, उव्वेवणयं, अणोरपारं, महब्भयं भयंकरं, पइभयं, अपरिमिय–महिच्छ–कलुसमति–वाउ–वेग–उद्धम्ममाण–आसा–पिवास–पायाल–काम–रति–राग–दोस–बंधण–बहुविह–संकप्प–विपुल–दगरय–रयंधकारं, मोह–महावत्त–भोग-भममाण–गुप्पमाणुच्छलंत–बहु–गब्भवास–पच्चोणियत्त–पाणियं, पधावित(वाहिय)–वसण–समावन्न–रुन्न–चंड–मारुत–समाहया–मणुन्न–वीची–वाकुलित–भंग–फुट्टंत–णिट्ठ–कल्लोल–संकुलजलं, पमाय–बहुचंड-दुट्ठ–सावय–समाहय–उद्धायमाणग–पूर-घोरविद्धंसणत्थ–बहुलं, अणाणा–भमंत–मच्छपरिहत्थं अनिहुतिंदिय–महामगर–तुरिय–चरिय–खोखुब्भमाण–संताव-निचय–चलंत–चवल–चंचल-अत्ताणऽसरण–पुव्वकय–कम्म–संचयोदिन्न–वज्ज–वेइज्जमाण-दुहसय–विपाक-घुन्नंत–जलसमूहं, इड्ढि–रस–सोय–गारवोहार–गहिय–कम्मपडिबद्ध–सत्त–कड्ढिज्जमाण–निरयतल–हुत्तसन्न–विसन्न–बहुलं, अरइ–रइ–भय–विसाय–सोग–मिच्छत्त–सेलसंकडं, अणाति–संताण–कम्मबंधण–किलेस–चिक्खिल्ल-सुदुत्तारं, अमर–नर–तिरिय–निरय-गतिगमण-कुडिल–परियत्त–विपुलवेलं, हिंसालिय–अदत्तादाण–मेहुण–परिग्गहारंभ–करण–कारावणाणुमोदण–अट्ठविह–अणिट्ठकम्म–पिंडित–गुरुभारक्कंत–दुग्ग–जलोघ–दूरनिबो(पणो)-लिज्जमाण–उम्मग्गनिमग्ग–दुल्लभ–तलं, सारीर–मणोमयाणि दुक्खाणि उप्पियंता सातस्स य परित्तावणमयं उब्बुड्डनिबुड्डयं करेंता, चउरंत–महंत–मणवयग्गं, रुद्दं, संसारसागरं, अट्ठियं, अणालंबण–मपतिट्ठाण–मप्पमेयं, चुलसीति–जोणि–सयसहस्स–गुविलं अनालोक–मंधकारं अणंतकालं निच्चं उत्तत्थ–सुण्ण–भयसण्णसंपउत्ता वसंति १६ । उव्विगा वासवसहिं जहिं आउयं निबंधंति पावकम्मकारी बंधवजण–सयण–मित्त–परिवज्जिया, अणिट्ठा भवंति, अणादेज्ज–दुव्विणीया कुठाणासण–कुसेज्ज–कुभोयणा, असुइणो, कुसंघयणा–कुप्पमाण–कुसंठिया, कुरूवा, बहु–कोह–माण–माया–

लोभा, बहुमोहा, धम्म-सन्न-सम्मत्त-परिब्भट्ठा, दारिद्दोवद्दवाभिभूया, निच्चं परकम्मकारिणो जीवणत्थरहिया, किविणा, परपिंडतक्कका, दुक्खल-द्धाहारा, अरस-विरस-तुच्छ-कयकुच्छिपूरा, परस्स पेच्छंता, रिद्धि-सक्कार-भोयण-विसेस-समुदयविहिं निंदंता, अप्पकं कयंतं च परिवयंता, इह य पुरेकडाइं कम्माइं पावगाइं विमणसो सोएण डज्झमाणा, परिभूता होंति। सत्तपरिवज्जिया य छोभा-सिप्पकला-समयसत्थपरिवज्जिया, जहाजायपसुभूया, अवियत्ता, णिच्च-नीयकम्मोवजीविणो, लोयकुच्छणिज्जा मोघमणोरहा, निरास-बहुला, आसापास-पडिबद्धपाणा, अत्थोपायाण-कामसोक्खे य लोयसारे होंति १७। अफलवंतका य सुट्ठुविय उज्जमंता, तद्दिवसेसुज्जुत्त-कम्म-कयदुक्ख-संठविय-सित्थपिंड-संचया पक्खीण-दव्वसारा, निच्चं अधुव-धण-धरण-कोस-परिभोग-विवज्जिया, रहिय-काम-भोग-परिभोग-सव्वसोक्खा, परसिरि-भोगोवभोग-निस्साण-मग्गण-परायणा, वरागा, अकामिकाए विणेंति १८। दुक्खं णेव सुहं णेव निव्वुतिं उवलभंति, अच्चंत-विपुल-दुक्ख-सय-संपलित्ता परस्स दव्वेहिं जे अविरया एसो सो अदिण्णादाणस्स फलविवागो इहलोइओ, पारलोइओ, अप्पसुहो, बहुदुक्खो, महब्भओ बहुरयप्पगाढो, दारुणो, ककसो, असाओ, वाससहस्सेहिं मुच्चति, न य अवेयइत्ता अत्थि उ मोक्खोत्ति, एवमाहंसु णायकुलनंदणो महप्पा जिणो उ वीरवरनामधेज्जो कहेसी य अदिण्णादाणस्स फलविवागं एयं तं ततियंपि अदिन्नादाणं हर-दह-मरण-भय-कलुस-तासण-परसंतिकभेज्ज-लोभमूलं एवं जाव चिरपरिगत-मणुगतं दुरंतं तिबेमि ११ ॥ ३ ॥ सू० १२ ॥ ततियं अहम्मदारं समत्तं ॥

॥ इति तृतीयमध्ययनम् ॥ ३ ॥

—:०:—

॥४॥ अथ अब्रह्माश्रवाख्यं चतुर्थमध्ययनम् ॥

जंबू ! अबंभं च चउत्थं सदेवमणुयासुरस्स लोयस्स पत्थणिज्जं, पंक-पणय-पास-जालभूयं, थी-पुरिस-नपुंस-वेद-चिंधं, तव-संजम-बंभचेर-विग्घं, भेदायतण-बहुपमाद-मूलं, कायर-कापुरिस-सेवियं, सुयणजण-वज्जणिज्जं, उड्ढ-नरय-तिरिय-तिलोक-पइट्ठाणं, जरा-मरणरोग-सोग-बहुलं, वध-बंध-विघात-दुव्विघायं, दंसण-चरित्त-मोहस्स हेउभूयं, चिरपरिगयमणुगयं दुरंतं चउत्थं अधम्मदारं ॥ सूत्रं १३ ॥ तस्स य णामाणि गोन्नाणि इमाणि होंति तीसं, तंजहा-अबंभं १ मेहुणं २ चरंतं ३ संसग्गि ४ सेवणाधिकारो ५ संकप्पो ६ बाहणा पदाणं ७ दप्पो ८ मोहो ९ मणसंखोभो १० अणिग्गहो ११ वुग्गहो १२ विघाओ १३ विभंगो १४ विब्भमो १५ अधम्मो १६ असीलया १७ गामधम्मतित्ती १८ रती १९ रागचिंता २० कामभोगमारो २१ वेरं २२ रहस्सं २३ गुज्झं २४ बहुमाणो २५ बंभचेर-विग्घो २६ वावत्ति २७ विराहणा २८ पसंगो २९ कामगुणो ३० त्ति विय तस्स एयाणि एवमादीणि नामधेज्जाणि होंति तीसं ॥ सूत्रं १४ ॥ तं च पुण निसेवंति सुरगणा सअच्छरा मोहमोहियमती, असुर-भुयग-गरुल-विज्जु-जलण-दीव-उदहि-दिसि-पवण-थणिया, अणवंनि-पण-वंनिय-इसिवादिय-भूयवादिय-कंदिय-महाकंदिय-कूहंड-पयंगदेवा, पिसाय-भूय-जक्ख-रक्खस-किंनर-किंपुरिस-महोरग-गंधव्वा, तिरिय-जोइस-विमाणवासि-मणुयगणा, जलयर-थलयर-खहयरा य, मोहपडिबद्धचित्ता, अवितण्हा, कामभोगतिसिया, तण्हाए बलवईए महइए समभिभूया गढिया य अतिमुच्छिया य, अबंभे उस्सण्णा तामसेण भावेण अणुम्मुक्का, दंसण-चरित्तमोहस्स पंजरं पिव करेंति १। अन्नोऽन्नं सेवमाणा, भुज्जो असुर-सुर-तिरिय-मणुअ-भोगरति-विहार-संपउत्ता य चक्कवट्टी सुरनरवतिसक्कया, सुरवरुव्व देवलोए भरह-णग-णगर-णियम-जणवय-पुरवर-दोणमुह-

खेड–कव्वड–मडंब–संबाह–पट्टणसहस्समंडियं थिमियमेयणियं एगच्छत्तं ससागरं भुंजिऊण वसुहं, नरसीहा, नरवई, नरिंदा, नरवसभा, मरुयवसभ–कप्पा, अब्भहियं रायतेयलच्छीए दिप्पमाणा, सोमा, रायवंसतिलगा २। रवि–ससि–संख–वरचक्क–सोत्थिय–पडाग–जव–मच्छ–कुम्म–रहवर–भग–भवण–विमाण–तुरय–तोरण–गोपुर–मणि-रयण-नंदियावत्त मुसल–णंगर–सुरइयवरकप्परुक्ख–मिगपति–भद्दासण–सुरुचि–थूम-वरमउड–सरिय-कुंडल-कुंजर–वरवसभ–दीव–मंदर–गरुल–ज्झय–इंदकेउ-दप्पण–अट्ठावय–चाव–बाण–नक्खत्त–मेह–मेहल–वीणा–जुग–छत्त-दाम–दामिणि–कमंडलु-कमल घंटा–वरपोत–सूइ–सागर–कुमुदागर–मगर–हार-गागर–नेउर-णग-णगर–वइर–किन्नर–मयूर–वररायहंस–सारस–चकोर–चक्कवाग–मिहुण–चामर–खेडग–पव्वीसग–विपंचि–वरतालियंट–सिरियाभिसेय–मेइणि–खग्गं-कुस–विमलकलस–भिंगार-वद्धमाणग-पसत्थ-उत्तम-विभत्त-वरपुरिस-लक्खणधरा, ३। बत्तीसं वरराय-सहस्साणुजायमग्गा, चउसट्ठि-सहस्स-पवर-जुवतीण णयणकंता, रत्ताभा, पउम-पम्ह-कोरंटग-दामचंपक-सुतयवर-कणक निह-सवन्ना, सुवण्णा, सुजाय-सव्वंग-सुदरंगा, महग्घ-वर-पट्टणुग्गय-विचित्त-राग-एणिमे-(पे)णिणिम्मिय–दुगुल्ल–वर–चीणपट्ट–कोसेज्ज–सोणीसुत्तक(ज्जा–खोमिय)–विभूसियंगा, वरसुरभि-गंधवर-चुण्णवास-वरकुसुम-भरियसिरया, कप्पिय-छेयारिय-सुकय-रइत-मालकडग–कुंडलंगय-तुडिय–पवर–भूसण–पिणद्धदेहा एकावलि-कंठ-सुरइय-वच्छा पालंब-पलंबमाण-सुकय-पडउत्तरिज्ज-मुद्दियापिंग-लंगुलिया, उज्जल-नेवत्थ-रइय-चेल्लग-विरायमाणा, तेएण दिवाकरोव्व दित्ता सारय-नवत्थणिय-महुर-गंभीर-निद्धघोसा, ४। उप्पन्न-समत्तरयण-चक्करयण–प्पहाणा, नवनिहिवइणो, समिद्धकोसा, चाउरंता, चाउराहिं सेणाहिं समणु-जातिज्जमाणमग्गा, तुरगपती गयवती रहवती नरवती विपुल-कुल–वीसुयजसा, सारय-ससि-सकल-सोमवयणा, सूरा, तेलोक-निग्गय-पभाव–

लद्धसद्दा समत्त-भरहाहिवा, नरिंदा, ससेल-वण-काणणं च हिमवंत-सागरंतं धीरा भूत्तुण भरहवासं जियसत्तू, पवर-रायसीहा, पुव्व-कड-तवप्पभावा, निविट्ठ-संचियसुहा, अणेग-वाससयमायुवंतो भज्जाहि य जणवयप्पहाणाहिं लालियंता अतुल-सद्द-फरिस-रस-रूवगंधे य अणुभवेत्ता(न्ता) तेवि उवणमंति मरणधम्मं अवितत्ता कामाणं ५ । भुज्जो भुज्जो बलदेववासुदेवा य पवरपुरिसा, महाबल-परक्कमा, महाधणु-वियट्टका, महासत्त-सागरा, दुद्धरा, धणुद्धरा, नरवसभा, रामकेसवा, सभायरो सपरिसा, वसुदेव-समुद्दविजय-मादिय-दसाराणं पज्जुन्न-पतिव-संब-अनिरुद्ध-निसह-उम्मुय-सारण-गय-सुमुह-दुम्मुहादीण जायवाणं अद्धुट्ठाणवि कुमारकोडीणं हिययदयिया, देवीए रोहिणीए देवीए देवकीए य आणंद-हियय-भावनंदणकरा, सोलस-रायवर-सहस्साणुजातमग्गा, सोलस-देवीसहस्स-वर-णयण-हिययदइया, णाणा-मणि-कणग-रयणमोत्तिय-पवाल-धण-धन्न-संचय-रिद्धि-समिद्धकोसा, हय-गय-रह-सहस्ससामी, ६ । गामागर-नगर-खेड-कब्बड-मडंब-दोणमुह-पट्टणासम-संबाह-सहस्स-थिमिय-णिव्वुयपमुदितजण-विविह-सास-निप्फ-ज्जमाण-मेइणि-सर-सरिय-तलाग-सेल-काणण-आरामुज्जाण-मणाभिराम-परिमंडियस्स दाहिणड्ढ-वेयड्ढ-गिरिविभत्तस्स लवण-जलहि-परिगयस्स छव्विह-काल-गुणकामजुत्तस्स अद्धभरहस्स सामिका ७ । धीरकित्तिपुरिसा, ओह-बला, अइबला, अनिहया, अपराजिय-सत्तुमद्दण-रिपु-सहस्समाणमहणा, साणुक्कोसा, अमच्छरी, अचवला, अचंडा, मित-मंजुल-पलावा, हसिय-गंभीर-महुरभणिया, (महुपरिपुराण-सच्चवयणा), अब्भुवगय-वच्छला, सरण्णा, लक्खण-वंजण-गुणोववेया, माणुम्माण-पमाण-पडिपुन्न-सुजाय-सव्वंगसुंदरंगा ८ । ससिसोमागार-कंतपियदंसणा, अमरिसणा, पयंड-डंडप्पयार-गंभीर-दरिस-णिज्जा, तालद्ध-उव्विद्ध-गरुलकेऊ, बलव-गज्जंत-दरित-दप्पित-मुट्ठिय-चाणूरमूरगा, रिट्ठ-वसभ-घातिणो, केसरिमुह-विप्फाडगा, दरितनाग-

दप्पमहणा जमलज्जुणभंजगा, महासउणि–पूतणा–रिवू, कंस–मउड–तोडगा, जरासिंघ–माणमहणा, तेहि य (अभपडल–पिंगल–उज्जलेहिं) अविरल–समसहिय–चंदमंडल–समप्पभेहिं सूर–मिरीय–कवयविणिम्मुयंतेहिं सपति–दंडेहिं आयवत्तेहिं धरिज्जंतेहिं विरायंता, ९ । ताहि य पवर–गिरिकुहर–विहरण–समुट्ठियाहिं, निरुवहय–चमर–पच्छिम–सरीरसंजाताहिं अमइल–सेय–कमल–विमुकुलुज्जलित–रयणगिरिसिहर–विमल–ससिकिरण–सरिस–कलहोयनिम्मलाहिं पवणाहय–चवल–चलिय–सललिय–पणच्चिय–वीइ–पसरिय–खीरोदग–पवर-सागरुप्पूर–चंचलाहिं माणस–सर–पसर–परिचिया–वास–विसदवेसाहिं कणगगिरि–सिहर–संसिताहिं उवाय–उप्पात–चवल–जयिण-सिग्घवेगाहिं हंसवधूयाहिं चेव कलिया, १० । नाणामणि–कणग–महरिह–तवणिज्जुज्जल–विचित्तडंडाहिं सललियाहिं नरवति–सिरिसमुदय–प्पगासणकरीहिं वरपट्टणुग्गयाहिं समिद्ध–रायकुल–सेवियाहिं कालागुरु–पवरकुंदुरुक्क–तुरुक्क–धूव-वास-विसद-गंधुद्धूयाभिरामाहिं चिल्लिकाहिं उभयो–पासंपि चामराहिं उक्खिप्पमाणाहिं सुह–सीतल–वातवीतियंगा, अजिता, अजितरहा, हल–मुसल–कणगपाणी, संख–चक्क–गय–सत्ति–णंदगधरा, पवरुज्जलसुकत–विमल–कोथूभ–तिरीडधारी, ११ । कुंडल–उज्जोविया–णणा, पुंडरीय–णयणा, एगावली–कंठ-रतियवच्छा, सिरिवच्छ-सुलंछणा, वरजसा, सव्वोउय–सुरभि–कुसुम–सुरइय–पलंब-सोहंत–वियसंत–चित्त(त्त) वण–माल–रतियवच्छा, अट्ठसय–विभत्त–लक्खण–पसत्थ–सुंदर–विराइयं-गमंगा, मत्त–गयवरिंद–ललिय–विक्कम–विलसियगती, कडिसुत्तग–नील–पीत–कोसिज्जवाससा, पवरदित्ततेया, सारय-नवथणिय–महुर–गंभीर–निद्धघोसा, नरसीहा, सीहविक्कमगई, अत्थमिय-पवर-रायसीहा, सोमा, बारवइपुन्नचंदा, पुव्वकय-तवप्पभावा, निविट्ठ–संचियसुहा, अणेग–वाससयमा-उवंता भज्जाहि य जणवयप्पहाणाहिं लालियंता, अतुल–सद्द–फरिस–रस–

रूवगंधे अणुभवेन्ता(त्ता) तेवि उवणमंति मरणधम्मं अवितत्ता कामाणं १२। भुज्जो मंडलिय-नरवरेंदा, सबला, सअंतेउरा, सपरिसा, सपुरोहियामच्च-दंडनायक-सेणावति-मंति-नीतिकुसला, नाणामणिरयण-विपुलधण-धन्न-संचय-निही-समिद्धकोसा, रज्जसिरिं विपुल-मणुभविन्ता(त्ता) विकोसंता, बलेण मत्ता तेवि उवणमंति मरणधम्मं अवितत्ता कामाणं १३। भुज्जो उत्तरकुरु-देवकुरु-वणविवर-पादचारिणो नरगणा भोगुत्तमा भोग-लक्खणधरा, भोग-सस्सिरीया, पसत्थ-सोम-पडिपुण्ण-रूव-दरसणिज्जा, सुजात-सव्वंग-सुंदरंगा, रत्तुप्पल-पत्त-कंत-करचरण-कोमलतला, सुपइट्ठिय-कुम्म-चारुचलणा, अणुपुव्व-सुसंहयं(जायपवरं)गुलीया, उन्नय-तणुतंब-निद्धनखा, संठित-सुसिलिट्ठ-गूढगोंफा, एणी-कुरुविंद-वत्त-वट्टाणुपुव्विजंघा, समुग्ग-निसग्ग-गूढजाणू, गयगयण-सुजाय-संनिभोरु च वरवारण-मत्त-तुल्लविक्कम-विलासितगती, वरतुरग-सुजाय-गुज्झदेसा, आइन्न-हयव्व निरुवलेवा, पमुइय-वरतुरग-सीह-अतिरेग-वट्टियकडी, गंगावत्त-दाहिणावत्त-तरंगभंगुर-रविकिरण-बोहिय-विकोसायंत-पम्ह-गंभीर-विगडनाभी, साहत-सोणंद-मुसल-दप्पण-निगरिय-वरकणग-च्छरु-सरिस-वर-वइर-वलियमज्झा, उज्जुग-सम-सहिय-जच्चतणु-कसिण-णिद्ध-आदेज्ज-लडह-सूमाल-मउय-रोमराई, झस-विहग-सुजात-पीणकुच्छी, झसोदरा, पम्ह-विगडनाभा संनत-पासा संतत-पासा, सुंदरपासा, सुजातपासा, मित-माइय-पीण-रइयपासा, अकरंडुय-कणग-रुयग-निम्मल-सुजाय-निरुवहयदेहधारी, १४। कणग-सिलातल-पसत्थ-समतल-उवइय-विच्छिन्न-पिहुलवच्छा, जुय-संनिभ-पीण-रइयपीवर पउट्ठ-संठिय-सुसिलिट्ठ-विसिट्ठ-लट्ठ-सुनिचित-घणथिर सुबद्ध-संधी, पुरवर-वर-फलिह-वट्टियभुया, भुय-ईसर-विपुल भोग-आयाण-फलि-उच्छूढ-दीहबाहू, रत्त-तलोवतिय-मउय-मंसल-सुजाय-लक्खण-पसत्थ-अच्छिद्द-जालपाणी पीवर-सुजाय-कोमल-वरंगुली, तंब-तलिण-सुइ-रुइल-निद्धनक्खा, निद्ध-पाणिलेहा, चंदपाणिलेहा, सूरपाणिलेहा, संखपाणिलेहा, चक्कपाणिलेहा,

दिसा-सोवत्थिय-पाणिलेहा, रवि-ससि-संख-वरचक्क-दिसासोवत्थिय-विभत्त-सुविरइयपाणिलेहा, वर-महिस-वराह-सीह-सद्दूल-रिसह-नाग-वरपडिपुन्न-विउलखंधा, चउरंगुल-सुप्पमाण-कंबु-वर-सरिसग्गीवा, अवट्ठिय-सुविभत्त-चित्तमंसू, उवचिय-मंसल-पसत्थ-सद्दूल-विपुलहणुया, ओयविय-सिल-प्पवाल-बिंबफल-संनिभाधरोट्ठा, पंडुर-ससिकल-विमल-संख-गोखीर-फेण कुंद-दगरय-मुणालिया धवलदंतसेढी, अखंडदंता, अप्फुडियदंता, अविरलदंता, सुणिद्धदंता, सुजायदंता, एतदंतसेढिव्व अणेगदंता, हुयवह-निद्धत-धोय-तत्त-तवणिज्ज-रत्ततला, तालुजीहा, गरुलायत-उज्जु-तुंगनासा, अवदालिय-पोंडरीय-नयणा, कोकासिय-धवलपत्तलच्छा, आणामिय-चावरुइल-किण्हब्भ-राजि-संठिय-संगयायय-सुजाय-भुमगा, अल्लीण-पमाण-जुत्तसवणा, सुसवणा पीण-मंसल-कवोल-देसभागा, अचिरुग्गय-बालचंद-संठिय-महानिलाडा, उडुवतिरिव पडिपुन्नसोमवयणा, छत्तागारुत्तमंगदेसा, घणनिचिय-सुबद्ध-लक्खणुन्नय-कूडागार-निभ-पिंडियग्गसिरा, हुयवह-निद्धंत-धोयतत्त-तवणिज्ज-रत्तकेसंत-केसभूमी, सामली-पोंड-घण-निचिय-छोडिय-मिउ-विसत-पसत्थ-सुहुम-लक्खण-सुगंधि-सुंदर-भुयमोयग-भिंग-नीलकज्जल-पहट्ठभमरगण-निद्धनिगुरुंब, निचिय-कुंचिय-पयाहिणावत्त-मुद्धसिरया १५ । सुजात-सुविभत्त-संगयंगा, लक्खण-वंजण-गुणोववेया, पसत्थ-बत्तीस-लक्खणधरा, हंसस्सरा, कुंचस्सरा, दुंदुभि-स्सरा, सीहस्सरा, उज्ज(ओघ)सरा, मेघसरा, सुस्सरा, सुसरनिग्घोसा, वज्जरिसह-नाराय-संघयणा, समचउरंस-संठाण-संठिया, छायाउज्जोवियंगमंगा पसत्थच्छवी निरातंका, कंकग्गहणी, कवोत-पविस-परिणामा, सउणि-पोस-पिट्ठंतरोरु-परिणाया, पउमुप्पल-सरिस-गंधुस्सास-सुरभिवयणा, अणुलोम-वाउवेगा, अवदाय-निद्धकाला, विग्गहिय-उन्नय-कुच्छी, अमयरस-फलाहारा, तिगाउय-समूसिया, तिपलिओवमट्ठितीका, तिन्नि य पलिओवमाइं परमाउं पालयित्ता तेवि उवणमंति मरणधम्मं अवितित्ता कामाणं १६ । पमयावि य तेसिं होंति

सोम्मा सुजाय-सव्वंग-सुंदरीओ पहाण-महिलागुणेहिं जुत्ता, अतिकंत-विसप्पमाण-मउदय-सुकुमाल-कुम्मसंठिय-विसिट्ठ-चलणा, उज्जु-मउय-पीवर-सुसाहतं-गुलीओ, अब्भुन्नत-रतित-तलिण-तंब-सुइ-निद्धनखा. रोमरहिय-वट्टसंठिय-अजहन्न-पसत्थ-लक्खण-अकोप्प-जंघजुयला, सुणिम्मित-सुनिगूढजाणु-मंसल-पसत्थ-सुबद्धसंधी, कयली-खंभातिरेक-संठिय-निव्वण-सुकुमाल-मउय-कोमल-अविरल-समसहित-सुजाय-वट्टमाण-पीवर-निरन्तरोरू अट्ठावय-वीइ-पट्ट-संठिय-पसत्थ-विच्छिन्न-पिहुलसोणी, वयणायाम-प्पमाण-दुगुणिय-विसाल-मंसल-सुबद्ध-जहण-वर-धारिणीओ, वज्ज-विराइय-पसत्थ-लक्खण-निरोदरीओ १७। तिवलि-वलिय-तणुनमिय-मज्झियाओ, उज्जुय-समसहिय-जच्च-तणु-कसिण-निद्ध-आदेज्ज-लडह-सुकुमाल-मउय-सुविभत्त-रोमराजीओ गंगावत्तग-पदाहिणावत्त-तरंगभंग-रविकिरण-तरुण-बोधित-आकोसायंत-पउम-गंभीर-विगड-नाभा, अणुब्भड-पसत्थ-सुजात-पीणकुच्छी, सन्नतपासा, सुजातपासा, संगतपासा, मिय-मायिय-पीण-रतितपासा, अकरंडुय-कणग-रुयग-निम्मल-सुजाय-निरुवहय-गाय-लट्ठी, कंचण-कलस-पमाण-समसहिय-लट्ठचुचूय-आमेलग-जमल-जुयल-वट्टिय-पओहराओ भुयंग-अणुपुव्व-तणुय-गोपुच्छ-वट्ट-समसहिय-नमियआदेज्ज-लडहबाहा, १८। तंबनहा, मंसलग्गहत्था कोमल-पीवर-वरंगुलीया, निद्ध-पाणिलेहा, ससि-सूर-संख-चक्क-वर-सोत्थिय-विभत्त-सुविरइय-पाणिलेहा, पीणुणय-कक्ख-वत्थिप्पदेस-पडिपुन्न-गल-कवोला, चउरंगुल-सुप्पमाण-कंबु-वर-सरिसगीवा, मंसल-संठिय-पसत्थ-हणुया, दालिम-पुप्फ-प्पगास-पीवर-पलंब-कुंचित-वराधरा, सुंदरोत्तरोत्तरोट्ठा, दधि-दगरय-कुंद-चंद-वासंति-मउल-अच्छिद्द-विमलदसणा, रत्तुप्पल-पउमपत्त-सुकुमाल-तालुजीहा, कणवीर-मुउलऽकुडिलऽब्भुन्नय-उज्जु-तुंगनासा, सारद-नवकमल-कुमुत-कुवलय-दल-निगर-सरिस-लक्खण-पसत्थ-अजिम्ह(निम्मल)कंतनयणा, १९। आना-

मिय-चाव-रुइल-किराहब्भराइ-संगय-सुजाय-तणु-कसिण-निद्धसुमगा, अल्लीण-पमाण-जुत्तसवणा, सुस्सवणा, पीण-मट्ठ-गंडलेहा, चउरंगुल-विसाल-सम-निलाडा, कोमुदि-रयणिकर-विमल-पडिपुन्न-सोमवदणा, छत्तुन्नय-उत्तमंगा, अकविल-सुसिणिद्ध-दीहसिरया, छत्तज्भय-जूव-थूभ-दामिणि कमंडलु-कलस-वावि-सोत्थिय-पडाग-जव-मच्छ-कुम्म-रथ-वर-मकरज्भय-अंक-थाल-अंकुस-अट्ठा-वय-सुपइट्ठ-अमर-मयूर-सिरियाभिसेय-तोरण-मेइणि-उदधिवर-पवरभवण-गिरि-वर-वरायंस-सललियगय-उसभ-सीह-चामर-पसत्थ-बत्तीस-लक्खणधरीओ, हंस-सरित्थ-गतीओ, कोइल-महुर-गिराओ, कंता, सव्वस्स अणुमयाओ, ववगयवलि-पलित-वंग-दुव्वन्नवाधि-दोहग्ग-सोयमुक्काओ, उच्चत्तेण य नराण थोवूण-मूसियाओ, सिंगारागार-चारुवेसाओ, सुंदरथण-जहण-वयण-कर-चरण-णयणा, लावन्न-रूव-जोव्वण-गुणोववेया, नंदण-वण-विवर-चारिणीओ व्व अच्छराओ उत्तरकुरु-माणुसच्छराओ अच्छेरग-पेच्छणिज्जियाओ तिन्नि य पलिओवमाइं परमाउं पालयित्ता ताओऽवि उवणमंति मरणधम्मं अवितित्ता कामाणं २० ॥ सू० १५ ॥ मेहुणसन्ना-संपगिद्धा य मोहभरिया सत्थेहिं हणंति एक्कमेक्कं विसयविस-उदीरएसु, अवरे परदारेहिं (उदारपरदारेहिं) हम्मंति विसुणिया धणनासं सयण-विप्पणासं च पाउणंति, परस्स दाराओ जे अवि-रया मेहुणसन्न-संपगिद्धा य मोहभरिया अस्सा हत्थी गवा य महिसा मिगा य मारेंति एक्कमेक्कं, मणुयगणा वानरा य पक्खी य विरुज्भंति, मित्ताणि खिप्पं भवंति सत्तू, समये धम्मे गणे य भिंदंति पारदारी, धम्मगुणरया य बंभयारी खणेण उल्लोट्टए चरित्ताओ जसमंतो सुव्वया य पावेंति अयसकित्तिं रोगत्ता वाहिया पवड्ढिंति रोयवाही, दुवे य लोया दुआराहगा भवंति-इहलोए चेव परलोए परस्स दाराओ जे अविरया, तहेव केइ परस्स दारं गवेसमाणा गहिया य हया य बद्धरुद्धा य एवं जाव गच्छंति विपुल-मोहाभिभूय-सन्ना १ । मेहुणमूलं च सुव्वए तत्थ तत्थ वत्तपुव्वा संगामा जणक्खयकरा सीयाए

दोवईए कए रुप्पिणीए पउमावईए ताराए कंचणाए रत्तसुभद्दाए अहिन्नियाए सुवन्नगुलियाए किन्नरीए सुरूवविज्जुमतीए य २ । अन्नेसु य एवमादिएसु बहवो महिलाकएसु सुव्वंति अइक्कंता संगामा गामधम्ममूला अबंभसेविणो इहलोए वि ताव नट्ठा (नट्ठकीत्ति) परलोएवि य णट्ठा महया मोह तिमिसंधकारे घोरे तस-थावर-सुहुम-बादरेसु पज्जत्त-मपज्जत्त-साहारण-सरीर-पत्तेय-सरीरेसु य अंडज-पोतज-जराउय-रसज-संसेइम-संमुच्छिम-उब्भिय-उववादिएसु य नरग-तिरिय-देव-माणुसेसु जरा—मरण-रोग—सोगबहुले पलिओवम—सागरोवमाइं अणादियं अणवदग्गं दीहमद्धं चाउरंत संसारकंतारं अणुपरियट्टंति जीवा मोहवसं निविट्ठा ३ । एसो सो अबंभस्स फलविवागो इहलोइओ परलोइओ य अप्पसुहो बहुदुक्खो महब्भओ बहुरयप्पगाढो दारुणो कक्कसो असाओ वाससहस्सेहिं न मुच्चति, न य अवेदइत्ता अत्थि हु मोक्खोत्ति, एवमाहंसु नायकुलनंदणो महप्पा जिणो उ वीरवरनामधेज्जो कहेसी य अबंभस्स फलविवागो एयं तं अबंभंपि चउत्थं सदेवमणुयासुरस्स लोगस्स पत्थणिज्जं एवं चिर-परिचिय-मणुगयं दुरंतं चउत्थं अधम्मदारं समत्तं तिबेमि ४ ॥ ४ ॥ सू० १६ ॥

॥ इति चतुर्थमध्ययनम् ॥

॥ अथ पञ्चम-परिग्रहाश्रवाख्यं पञ्चममध्ययनम् ॥

जंबू ! इत्तो परिग्गहो पंचमो उ नियमा, णाणामणि-कणग-रयण-महरिह-परिमल-सपुत्तदार-परिजण-दासी-दास-भयग-पेस-हयागय-गो-महिस-उट्ट-खर-अय-गवेलग-सीया-सगड-रह-जाण-जुग्ग संदण—सयणासण-वाहण-कुविय-धण-धन्न-पाण-भोयणाच्छायण-गंध-मल्ल-भायण-भवणविहिं चेव बहुविहीयं भरहं णग-णगर—णियम—जणवय-पुरवर—दोणमुह-खेड—कब्बड-मडंब—संबाह-पट्टण-सहस्सपरिमंडियं थिमिय-मेइणीयं एगच्छत्तं ससागरं भुंजिऊण वसुहं

अपरिमिय-मणंत-तण्ह—मणुगय-महिच्छ-सार—निरयमूलो १ । लोभ-कलि-कसाय-महक्खंधो, चिंतासय-निचिय-विपुल-सालो, गारव-पविरल्लियग्ग-विडवो, नियडि-तया-पत्त-पल्लव-धरो, पुप्फफलं जस्स कामभोगा आयास-विसूरणा-कलह-पकंपियग्ग-सिहरो, नरवति-संपूजितो, बहुजणस्स हिययदइओ, इमस्स मोक्ख-वर-मोत्ति-मग्गस्स फलिहभूओ चरिमं अहम्मदारं २ ॥ सू० १७ ॥

तस्स य नामाणि इमाणि गोणाणि होंति तीसं, तंजहा—परिग्गहो १ संचयो २ चयो ३ उवचओ ४ निहाणं ५ संभारो ६ संकरो ७ आयरो ८ पिंडो ९ दव्वसारो १० तहा महिच्छा ११ पडिबंधो १२ लोहप्पा १३ महिड्ढि-हद्दी (महपरिव्वया)(महइ) १४ उवकरणं १५ संरक्खणा य १६ भारो १७ संपाय-उप्पायको १८ कलि-करंडो १९ पवित्थरो २० अणत्थो २१ संथवो २२ अगुत्ती (अकीत्ति) २३ आयासो २४ अविओगो २५ अमुत्ती २६ तण्हा २७ अणत्थको २८ आसत्ती २९ असंतोसोत्तिविय ३०, तस्स एयाणि एयाणि एवमादीणि नामधेज्जाणि होंति तीसं ॥ सू० १८ ॥

तं च पुण परिग्गहं ममायंति लोभघत्था भवण-वर-विमाण-वासिणो परिग्ग-हरुती परिग्गहे विविह-करणबुद्धी देवनिकाया य, असुर-भुयग-सुवण्णो(गरुल)-विज्जु-जलण-दीव-उदहि-दिसि-पवण-थणिय—अणवंनिय-पणवंनिय-इसिवातिय-भूतवाइय-कंदिय-महाकंदिय-कुहंड-पतंगदेवा पिसाय-भूय-जक्ख-रक्खस-किंनर-किंपुरिस-महोरग-गंधव्वा य १ । तिरियवासी पंचविहा जोइसिया य देवा बहस्सती-चंद-सूर-सुक्क-सनिच्छरा राहु-धूमकेउ-बुधा य अंगारका य तत्त-तवणिज्ज—कणयवण्णा जे य गहा जोइसम्मि चारं चरंति केऊ य, गतिरतीया अट्ठावीसति-विहा य नक्खत्त-देवगणा, नाणासंठाण-संठियाओ य तारगाओ, ठियलेस्सा चारिणो य अविस्साम-मंडलगती २ । उवरिचरा उड्ढलोगवासी दुविहा वेमाणिया य देवा, सोहम्मीसाण—सणंकुमार—माहिंद—बंभलोग—लंतक-महासुक्क-सहस्सार-आणय—पाणय-आरण-अच्चुया, कप्पवरविमाण—

वासिणो सुरगणा, गेवेज्जा अणुत्तरा दुविहा कप्पातीया, विमाणवासी महिड्ढिका उत्तमा सुरवरा ३। एवं च ते चउव्विहा सपरिसावि देवा ममायंति, भवण-वाहण-जाण-विमाण-सयणासणाणि य नाणाविह-वत्थ-भूसणा पवर-पहरणाणि य नाणामणि-पंचवन्न-दिव्वं च भायणविहिं नाणाविह-कामरूवे वेउव्वित-अच्छरगण-संघाते ४। दीवसमुद्दे दिसाओ विदिसाओ चेतियाणि वणसंडे पव्वते य, गामनगराणि य, आरामुज्जाण-काणणाणि य, कूव-सर-तलाग-वावि-दीहिय-देवकुल-सभ-प्पव-वसहिमाइयाइं बहुकाइं कित्तणाणि य परिगेण्हित्ता परिग्गहं विपुलदव्वसारं देवावि सइंदगा न तित्तिं न तुट्ठिं उवलभंति, ५। अच्चंत-विपुल-लोभाभिभूत-सन्ना वासहर-इक्खुगार-वट्टपव्वय-कुंडल-रुचग-वरमाणुसोत्तर-कालोदधि-लवण-सलिल-दहपति-रतिकर-अंजणकसेल-दहिमुह-वपातुप्पाय-कंचणक-चित्तविचित्त-जमक-वरसिहर-कूडवासी वक्खार-अकम्मभूमिसु सुविभत्त-भाग-देसासु कम्मभूमिसु, जेऽवि य नरा चाउरंतचक्कवटी वासुदेवा बलदेवा मंडलीया इस्सरा तलवरा सेणावती इब्भा सेट्ठी रट्ठिया पुरोहिया कुमारा दंडणायगा गणनायगा माडंबिया सत्थवाहा कोडुंबिया अमच्चा एए अन्ने य एवमाती परिग्गहं संचिणंति, अणंतं, असरणं, दुरंतं, अधुवमणिच्चं, असासयं, पावकम्मनेम्मं, अवकिरियव्वं, विणासमूलं, वहबंध-परिकिलेस-बहुलं, अणंत-संकिलेस-कारणं ६। ते तं घण-कणग-रयण-निचयं पिंडिता चेव लोभघत्था संसारं अतिवयंति सव्वदुक्ख(भय)संनिलयणं, परिग्गहस्स य अट्ठाए सिप्पसयं सिक्खए बहुजणो कलाओ य बावत्तरिं सुनिपुणाओ लेहाइयाओ, सउणरुयावसाणाओ गणियप्पहाणाओ चउसट्ठिं च महिलागुणे रतिजणणे, सिप्पसेवं असि-मसि-किसि-वाणिज्जं, ववहारं अत्थ-सत्थ-इसत्थ-च्छरुप्पवा(ग)यं विविहाओ य जोगजुंजणाओ अन्नेसु एवमादिएसु बहूसु कारणसएसु जावज्जीवं नडिज्जए, संचिणंति मंदबुद्धी परिग्गहस्सेव

य अट्ठाए करंति पाणाण वहकरणं ७। अलिय-नियडि-साइसंपओगे परदव्वे अभिज्जा सपरदार-अभिगमण-सेवणाए आयास-विसूरणं कलह-भंडण-वेराणि य अवमाणण-विमाणणाओ इच्छा-महिच्छ-प्पिवास-सतत-तिसिया तण्हगेहि लोभघत्था अत्ताणा अणिग्गहिया करेंति कोह-माण-माया-लोभे, अकित्तणिज्जे परिग्गहे चेव होंति नियमा सल्ला दंडा य गारवा य कसाया सन्ना य कामगुण-अण्हगा य इंदियलेसाओ सयणसंपओगा सचित्ताचित्तमीसगाइं दव्वाइं अणंतकाइं इच्छंति परिघेत्तुं सदेवमणुयासुरम्मि लोए लोभपरिग्गहो जिणवरेहिं भणिओ ८। नत्थि एरिसो पासो पडिबंधो अत्थि सव्वजीवाणं सव्वलोए ९ ॥ सू० १९ ॥ परलोगम्मि य नट्ठा तमं पविट्ठा महया-मोह-मोहियमती तिमिसंधकारे तस-थावर-सुहुम-बादरेसु पज्जत्त-मपज्जत्तग एवं जाव परियट्टंति दीहमद्धं जीवा लोभवस-संनिविट्ठा। एसो सो परिग्गहस्स फलविवाओ इहलोइओ, परलोइओ, अप्पसुहो, बहुदुक्खो, महब्भओ, बहुरयप्पगाढो, दारुणो, कक्कसो, असाओ वाससहस्सेहिं मुच्चइ, न अवेतित्ता अत्थि हु मोक्खोत्ति १। एवमाहंसु नायकुल-नंदणो महप्पा जिणो उ वीरवर-नामधेज्जो कहेसी य परिग्गहस्स फल-विवागं २। एसो सो परिग्गहो पंचमो उ नियमा नाणामणि-कणग-रयण-महरिह एवं जाव इमस्स मोक्ख-वर-मोत्तिमग्गस्स फलिहभूयो, चरिमं अधम्मदारं समत्तं ॥ सू० २० ॥ एएहिं पंचहिं आसवेहिं रयमादिणि तु अणुसमयं। चउविहगइ दुह (जीव) पेरंत अणुपरियट्टंति संसारं ॥ १ ॥ सव्वगई पक्खंदे काहंति अणंतए अकयपुण्णा। जे य न सुणंति धम्मं सोऊण य जे पमायंति ॥ २ ॥ अणुसिट्ठंपि बहुविहं मिच्छदिट्ठीओ जे नरा। अहमा बद्ध-निकाइय-कम्मा सुणंति धम्मं न य करंति ॥ ३ ॥ किं सक्का काउं जे जं नेच्छह ओसहं मुहा पाओ। जिणवयणं गुणमहुरं विरेयणं सव्वदुक्खाणं ॥ ४ ॥ पंचेव य उज्झिऊण पंचेव य रक्खिऊण भावेण। कम्मरय-विप्पमुक्का सिद्धि-वर-मणुत्तरं जंति ॥ ५ ॥

॥ इति आसवदारा सम्मत्ता ॥ ॥ इति पञ्चममध्ययनम ॥५॥

॥ अथ प्रथमसंवरा अहिंसाख्यं षष्ठमध्ययनम् ॥

जंबू !—एत्तो संवरदाराइं पंच वोच्छामि आणुपुव्वीए । जह भणियाणि भगवया सव्वदुह-विमोक्खणट्ठाए ॥ १ ॥ पढमं होइ अहिंसा बितियं सच्चवयणंति पन्नत्तं । दत्तमणुन्नाय संवरो य बंभचेरमपरिग्गहत्तं च ॥ २ ॥ तत्थ पढमं अहिंसा तसथावर-सव्वभूय-खेमकरी । तीसे सभावणाओ किंची वोच्छं गुणुद्देसं ॥ ३ ॥ ताणि उ इमाणि सुव्वय ! महव्वयाइं लोकहिय-सव्वयाइं सुयसागर-देसियाइं तवसंजम-महव्वयाइं सीलगुण-वरव्वयाइं सच्चज्जवव्वयाइं नरग-तिरिय-मणुय-देवगति-विवज्जकाइं सव्वजिण-सासणगाइं कम्मरय-विदारगाइं भवसय-विणासणकाइं दुहसय-विमोयणकाइं सुहसय-पवत्तणकाइं कापुरिस-दुरुत्तराइं सप्पुरिस-निसेवि(तीरि)याइं निव्वाण-गमणमग्ग-सग्गप्पयाणगाइं(णायकाइं) संवरदाराइं पंच कहियाणि उ भगवया १ । तत्थ पढमं अहिंसा जा सा सदेव-मणुयासुरस्स लोगस्स भवति दीवो ताणं सरणं गती पइट्ठा, निव्वाणं १ निव्वुई २ समाही ३ सत्ती ४ कित्ती ५ कंती ६ रती य ७ विरती य ८ सुयंगतित्ती ९–१० दया ११ विमुत्ती १२ खन्ती १३ सम्मत्ताराहणा १४ महंती १५ बोही १६ बुद्धी १७ धिती १८ समिद्धी १९ रिद्धि २० विद्धी २१ ठिती २२ पुट्ठी २३ नंदा २४ भद्दा २५ विसुद्धी २६ लद्धी २७ विसिट्ठदिट्ठी २८ कल्लाणं २९ मंगलं ३० पमोओ ३१ विभूती ३२ रक्खा ३३ सिद्धवासो ३४ अणासवो ३५ केवलीण ठाणं ३६ सिवं ३७ समिई ३८ सील ३९ संजमो ४० त्ति य सीलपरिघरो ४१ संवरो ४२ य गुत्ती ४३ ववसाओ ४४ उस्सओ ४५ जन्नो ४६ आयतणं ४७ जतण ४७ मप्पमातो ४९ अस्सासो ५० वीसासो ५१ अभओ ५२ सव्वस्सवि अमाघाओ ५३ चोक्ख ५४ पवित्ता ५५ सूती ५६ पूया ५७ विमल ५८ पभासा ५९ य निम्मलतर ६० त्ति एवमादीणि निययगुणनिम्मियाइं पज्जवनामाणि होंति अहिंसाए भगवतीए

२ ॥ सूत्रं २१ ॥ एसा सा भगवती अहिंसा जा सा भीयाण विव सरणं, पक्खीणं पिव गमणं, तिसियाणं पिव सलिलं, खुहियाणं पिव असणं, समुद्दमज्झे व पोतवहणं, चउप्पयाणं व आसमपयं, दुहट्टि(दुहदुहि)हियाणं च ओसहिबलं, अडवीमज्झे विसत्थगमणं १। एत्तो विसिट्ठतरिका अहिंसा जा सा पुढवि-जल-अगणि-मारुय-वणस्सइ-बीज-हरित-जलचर-थलचर-खहचर-तस-थावर-सव्वभूय-खेमकरी एसा भगवती अहिंसा जा सा २। अपरिमिय-नाण–दंसणधरेहिं सीलगुण–विणय–तव–संयम–नायकेहिं तित्थंकरेहिं सव्वजगजीव वच्छलेहिं तिलोग–महिएहिं जिणचंदेहिं सुट्ठु दिट्ठा (उवलद्धा), ओहिजिणेहिं विण्णाया, उज्जुमतीहिं विदिट्ठा, विपुलमतीहिं विदिता, पुव्वधरेहिं अधीता, वेउव्वीहिं पतिन्ना ३। आभिणिबोहियनाणीहिं, सुय–नाणीहिं, मणपज्जवनाणीहिं, केवलनाणीहिं, आमोसहिपत्तेहिं, खेलोसहि–पत्तेहिं, विप्पोसहिपत्तेहिं, जल्लोसहिपत्तेहिं, सव्वोसहिपत्तेहिं, बीजबुद्धीहिं, कुट्ठबुद्धीहिं, पदाणुसारीहिं, संभिन्नसोतेहिं, सुयधरेहिं, मणबलिएहिं, वय–बलिएहिं, कायबलिएहिं नाणबलिएहिं, दंसणबलिएहिं, चरित्तबलिएहिं, खीरासवेहिं, मधुआसवेहिं, सप्पियासवेहिं, अक्खीणमहाणसिएहिं चारणेहिं, विज्जाहरेहिं, (जंघाचारणेहिं विज्जाचारणेहिं) चउत्थभत्तिएहिं ४। एवं जाव छम्मासभत्तिएहिं, उक्खित्तचरएहिं, निक्खित्तचरएहिं, अंतचरएहिं, पंतचरएहिं, लूहचरएहिं, अन्नइलाएहिं, समुदाणचरएहिं, मोणचरएहिं, संसट्ठकप्पिएहिं, तज्जायसंसट्ठकप्पिएहिं, उवनिहिएहिं, सुद्धेसणिएहिं, संखादत्तिएहिं, दिट्ठ-लाभिएहिं, अदिट्ठलाभिएहिं, पुट्ठलाभिएहिं, आयंबिलिएहिं, पुरिमड्ढिएहिं, एकासणिएहिं, निव्वितिएहिं, भिन्नपिंडवाइएहिं, परिमियपिंडवाइएहिं, अंता-हारेहिं, पंताहारेहिं, अरसाहारेहिं, विरसाहारेहिं, लूहाहारेहिं, तुच्छाहारेहिं, अंतजीविहिं, पंतजीविहिं, लूहजीविहिं, तुच्छजीविहिं, उवसंतजीविहिं, पसंतजीविहिं, विवित्तजीविहिं, अखीरमहुसप्पिएहिं, अमज्जमंसासिएहिं,

ठाणाइएहिं, पडिमंठाईहिं, ठाणुक्कडिएहिं, वीरासणिएहिं, णेसज्जिएहिं, डंडाइएहिं, लगंडसाईहिं, एगपास(सण्पि)गेहिं, आयावएहिं, अप्पावएहिं, अणिट्ठुभएहिं, अकंडुयएहिं, धुत-केस-मंसु-लोम-नखेहिं, सव्वगाय-पडिकम्म-विप्पमुक्केहिं, समणुचिन्ना ५। सुयधर-विदितत्थकाय-बुद्धिहिं धीर-मति-बुद्धिणो, य जे ते आसीविस-उग्गतेयकप्पा, निच्छय-ववसाय(विणीय) पज्जत्त-कयमतीया, णिच्चं सज्झाय-ज्झाण-अणुबद्ध-धम्मज्झाणा, पंचमहव्वय-चरित्तजुत्ता, समिता समितिसु, समितपावा, छव्विह-जग-वच्छला, निच्चमप्पमत्ता ६। एएहिं अन्नेहि य जा सा अणुपालिया भगवती इमं च पुढवि-दग-अगणि-मारुय-तरुगण-तस-थावर-सव्वभूय-संयम-दयट्ठयाते सुद्धं उञ्छं गवेसियव्वं अकत-मकारि-मणाहूय-मणुद्दिट्ठं, अकीयकडं, नवहि य कोडिहिं सुपरिसुद्धं, दसहि य दोसेहिं विप्पमुक्कं, उग्गम-उप्पायणेसणासुद्धं; ववगय-चुय-चाविय-चत्तदेहं च फासुयं च न निसज्ज-कहा-पओयणक्खासु-ओवणीयंति न तिगिच्छा-मंत-मूल-भेसज्ज-कज्जहेउं, न लक्खणुप्पाय-सुमिण-जोइस-निमित्त-कहकप्पउत्तं ७। नवि डंभणाए, नवि रक्खणाते, नवि सासणाते, नवि दंभण-रक्खण-सासणाते भिक्खं गवेसियव्वं, नवि वंदणाते, नवि माणणाते, नवि पूयणाते नवि वंदण-माणण-पूयणाते भिक्खं गवेसियव्वं, नवि हीलणाते नवि निंदणाते नवि गरहणाते नवि हीलण-निंदण-गरहणाते भिक्खं गवेसियव्वं, नवि भेसणाते नवि तज्जणाते नवि तालणाते नवि भेसण-तज्जण-तालनाते भिक्खं गवेसियव्वं, नवि गारवेणं नवि कुहण(प्प)णायाते नवि वणीमयाते नवि गारव-कुहण-वणीमगयाए भिक्खं गवेसियव्वं, नवि मित्तयाए नवि पत्थणाए नवि सेवणाए नवि मित्त-पत्थण-सेवणाते भिक्खं गवेसियव्वं ८। अन्नाए, अगढिए (अगिद्धे), अदुट्ठे, अदीणे अविमणे, अकलुणे, अविसाती, अपरितंतजोगी, जयण-घडण-करण-चरिय-विणय-गुण-जोग-संपउत्ते, भिक्खु भिक्खेसणाते

निरते ९। इमं च णं सव्वजग-जीव-रक्खण-दयट्ठाते पावयणं भगवया सुकहियं अत्तहियं पेच्चाभावियं आगमेसिभद्दं सुद्धं नेयाउयं अकुडिलं अणुत्तरं सव्वदुखपावाण विउसमणं १० ॥ सू० २२ ॥ तस्स इमा पंच भावणातो पढमस्स वयस्स होंति, पाणातिवाय-वेरमण-परिरक्खणट्ठयाए पढमं ठाणगमण-गुणजोग-जुंजण-जुगंतर-निवातियाए दिट्ठिए ईरियव्वं, कीड-पयंग-तस-थावर-दयावरेण निच्चं पुप्फ-फल-तय-पवाल-कंदमूल-दगमट्टिय-बीज-हरिय-परिवज्जिएण संमं, एवं खलु सव्वपाणा न हीलियव्वा, न निंदियव्वा, न गरहियव्वा, न हिंसियव्वा, न छिंदियव्वा, न भिंदियव्वा, न वहेयव्वा, न भयं दुक्खं च किंचि लब्भा पावेउं एवं ईरियासमितिजोगेण भावितो भवति अंतरप्पा असबल-मसंकिलिट्ठ-निव्वण-चरित्त-भावणाए अहिंसओ सुसंजओ सुसाहू बितीयं च मणेण पावएणं पावकं अहम्मियं दारुणं निस्संसं वहबंध-परिकिलेस-बहुलं मरणभय-परिकिलेस-संकिलिट्ठं न कयावि मणेण पावतेणं पावगं किंचिवि झायव्वं १। एवं मणसमितिजोगेण भावितो ण भवति अंतरप्पा असबल-मसंकिलिट्ठ-निव्वण-चरित्त-भावणाए अहिंसओ संजओ सुसाहू २। ततियं च वतीते पावियाते पावकं अहम्मियं दारुणं निसंसं वह-बंध-परिकिलेस-बहुलं जरमरण-परिकिलेस-संकिलिट्ठं न कयावि (वईए) तीए पावियाते पावकं न किंचिवि भासियव्वं एवं वयसमितिजोगेण भावितो भवति अंतरप्पा असबल-मसंकिलिट्ठ-निव्वण-चरित्त-भावणाए अहिंसओ संजओ सुसाहू ३। चउत्थं आहार-एसणाए सुद्धं उञ्छं गवेसियव्वं अन्नाए अकहिए, (अगढिते अदुट्ठे) अदीणे, अकलुणे, अविसादी, अपरितंतजोगी, जयण-घडण-करण-चरिय-विणिय-गुण-जोग-संपओग-जुत्तो, भिक्खू, भिक्खेसणाते जुत्ते, समुदाणेऊण भिक्खाचरियं उंछं घेत्तूण आगतो गुरुजणस्स पासं गमणागमणातिचारे पडिकमेपडिक्कंते, आलोयणादायणं च दाऊण गुरुजणस्स गुरुसंदिट्ठस्स वा जहोवएसं निरइयारं

च अप्पमत्तो, पुणरवि अणेसणाते पयतो, पडिकमित्ता पसंते आसीण-सुहनिसन्ने मुहुत्तमेत्तं च झाणसुहजोग-नाण-सज्झाय-गोवियमणे, धम्ममणे, अविमणे, सुहमणे, अविग्गहमणे, समाहियमणे, सद्धा-संवेग-निज्जरमणे, पवतण-वच्छल-भावियमणे उट्ठेऊण य पहट्ठतुट्ठे जहारायणियं निमंतइत्ता य साहवे भावओ य विइणो य गुरुजणेणं उपविट्ठे संपमज्जिऊण ससीसं कायं तहा करतलं अमुच्छिते, अगिद्धे, अगढिए, अगरहिते, अणज्झोववण्णे अणाइले, अलुद्धे, अणुतट्ठिते, असुरसरं अचवचवं अदुतमविलंबियं अपरिसाडिं आलोयभायणे जयं पय(जयमप्पम)त्तेण (जयमप्पमत्तेण) ववगय-संजोग-मणिंगालं च विगयधूमं अक्खोवंजण-वणाणुलेवण-भूयं संजम-जाया-माया-निमित्तं संजम-भार-वहणट्ठयाए भुंजेज्जा (भोत्तव्वं) पाण-धारणट्ठयाए संजएण समियं एवं आहार-समिति-जोगेणं भाविओ भवति अंतरप्पा असबल-मसंकिलिट्ठ-निव्वण-चरित्त-भावणाए अहिंसए संजए सुसाहू, ४। पंचमं आदान-निक्खेवण-समिई पीढ-फलग-सिज्जा-संथारग-वत्थ-पत्त-कंबल-दंडग-रयहरण-चोलपट्टग-मुहपोत्तिग-पायपुञ्छणादी वा एयंपि संजमस्स उववूहणट्ठयाए, वातातव-दंस-मसग-सीय-परिरक्खणट्ठयाए, उवगरणं रागदोस-रहितं परिहरितव्वं, संजयेण निच्चं पडिलेहण-पप्फोडण-पमज्जणाए अहो य राओ य अप्पमत्तेण होइ सययं, निक्खियव्वं, च गिण्हियव्वं च भायण-भंडोवहि-उवगरणं, एवं आयाण-भंडनिक्खेवणा-समितिजोगेण भाविओ भवति अंतरप्पा असबल-मसंकिलिट्ठ-निव्वण-चरित्तभावणाए अहिंसए संजते सुसाहू ५। एवमिणं संवरस्स दारं सम्मं संवरियं होति सुप्पणिहियं इमेहिं पंचहिं वि कारणेहिं मण-वयण-काय-परिरक्खिएहिं, णिच्चं आमरणंतं च एस जोगो णेयव्वो, धितिमया मतिमया अणासवो अकलुसो अच्छिद्दो अपरिस्सावी असंकिलिट्ठो सुद्धो सव्वजिणमणुन्नातो, एवं पढमं संवरदारं फासियं पालियं सोहियं तिरियं किट्टियं आराहियं आणाते अणुपालियं

भवति, एयं नायमुणिणा भगवया पन्नवियं परूवियं पसिद्धं सिद्धं, सिद्धवरसासणमिणं, आघवितं, सुदेसितं, पसत्थं, पढमं संवरदारं समत्तं ति बेमि १, ६ ॥ सूत्रं २२ ॥

॥ इति षष्ठं अध्ययनम् ॥ ६ ॥

॥ अथ द्वितीयसंवर-सत्याख्यं सप्तमध्ययनम् ॥

जंबू ! बितियं च सच्चवयणं सुद्धं, सुचियं, सिवं, सुजायं, सुभासियं, सुव्वयं, सुकहियं, सुदिट्ठं, सुपतिट्ठियं, सुपइट्ठियजसं, सुसंजमियवयणबुइयं, सुरवर--नरवसभ--पवरबलवग--सुविहियजणबहुमयं, परम--साहुधम्म--चरणं, तवनियम-परिग्गहियं, सुगतिपहदेसकं, च लोगुत्तमं वयमिणं १। विज्जाहर-गगण-गमण-विज्जाण-साहकं सग्गमग्ग-सिद्धिपह-देसकं, अवितहं तं सच्चं २। उज्जुयं, अकुडिलं, भूयत्थं अत्थतो, विसुद्धं, उज्जोयकरं, पभासकं भवति सव्वभावाण जीवलोगे ३। अविसंवादि, जहत्थमधुरं पच्चक्खं दयिवयंव जं तं अच्छेरकारकं अवत्थंतरेसु बहुएसु माणुसाणं ४। सच्चेण महासमुद्दमज्झेवि मूढाणियावि पोया सच्चेण य उदगसंभमंमिवि न वुज्झंति, न य मरंति थाहं ते लभंति ५। सच्चेण य अगणिसंभमंमिवि न डज्झंति उज्जुगा मणूसा ६। सच्चेण य तत्ततेल-तउ-लोह-सीसकाइं छिवंति धरेंति न य डज्झंति मणूसा ७। पव्वय-कडकाहिं मुच्चंते न य मरंति सच्चेण य परिग्गहिया ८। असिपंजरगया समराओवि णिइंति अणहा य सच्चवादी ९। वह-बंधभियोग-वेरघोरेहिं पमुच्चंति य अमित्तमज्झाहिं निइंति अणहा य सच्चवादी १०। सादेव्वाणि (सणिणज्झाणिवि) य देवयाओ करेंति सच्चवयणे रताणं ११। तं सच्चं भगवं तित्थकर-सुभासियं दसविहं, चोद्दसपुव्वीहिं पाहुडत्थविदितं, महरिसीण य समयप्पइन्नं (महरिसि-समय-पइन्नचिन्नं), देविंद-नरिंद-भासियत्थं, वेमाणिय--साहियं, महत्थं,

मंतोसहि-विज्जा-साहणत्थं, चारण-गण-समण-सिद्धविज्जं, मणुयगणाणं वंदणिज्जं, अमरगणाणं अच्चणिज्जं, असुरगणाणं च पूयणिज्जं, अणेग-पाखंडि-परिग्गहितं, जं तं लोकंमि सारभूयं, गंभीरतरं महासमुद्दाओ, थिरतरगं मेरुपव्वयाओ, सोमतरगं चंदमंडलाओ, दित्ततरं सूरमंडलाओ, विमलतरं सरयनहयलाओ, सुरभितरं गंधमादणाओ, जेविय लोगम्मि अपरिसेसा मंतजोगा जवा य विज्जा य जंभका य अत्थाणि य सत्थाणि य सिक्खाओ य आगमा य सव्वाणिवि ताइं सच्चे पइट्ठियाइं, सच्चंपिय संजमस्स उवरोहकारकं किंचि न वत्तव्वं, हिंसासावज्जसंपउत्तं, भेयविकहकारकं, अणत्थवायकलहकारकं, अणज्जं, अव(आ)वायविवायसपउत्तं, वेलंबं, ओजधेज्जबहुलं, निल्लज्जं, लोयगरहणिज्जं, दुद्दिट्ठं, दुस्सुयं, अमुणियं। अप्पणो थवणा परेसु निंदा—न तंसि मेहावी, ण तंसि धन्नो, न तंसि पियधम्मो, न तंसि कुलीणो, न तंसि दाणपती, न तंसि सूरो, न तंसि पडिरूवो, न तंसि लट्ठो, न पंडिओ, न बहुस्सुओ, नवि य तंसि तवस्सी, ण यावि परलोगणिच्छिय-मतीऽसि, सव्वकालं जाति-कुल-रूव-वाहि-रोगेण वावि जं होइ वज्जणिज्जं दुहिलं (दुहओ) उवयार-मतिक्कंतं एवंविहं सच्चंपि न वत्तव्वं १२। अह केरिसकं पुणाइ सच्चं तु भासियव्वं ?, जं तं दव्वेहिं पज्जवेहि य गुणेहिं कम्मेहिं बहुविहेहिं सिप्पेहिं आगमेहि य नाम-क्खाय-निवाउवसग्ग-तद्धिय-समास-संधि—पद-हेउ—जोगिय-उणादि—किरियाविहाण—धातु-सर(रस)-विभत्ति-वन्नजुत्तं तिकल्लं १३। दसविहंपि सच्चं जह भणियं तह य कम्मुणा होइ दुवालसविहा होइ भासा १४। वयणंपिय होइ सोलसविहं १५। एवं अरहंतमणुन्नायं समिक्खियं संजएण कालंमि य वत्तव्वं १७॥ सू०२४॥ इमं च अलियं पिसुण-फरुस-कडुय-चवल-वयण-परिरक्खणट्ठयाए पावयणं भगवया सुकहियं, अत्तहियं, पेच्चाभाविकं, आगमेसिभद्दं, सुद्धं, नेयाउयं, अकुडिलं, अणुत्तरं, सव्वदुक्खपावाणं विओसमणं, तस्स इमा पंच

भावणाओ १ । बितियस्स वयस्स अलियवयणस्स वेरमण-परिरक्खणट्टयाए पढमं सोऊण संवरट्टं परमट्टं सुद्धं जाणिऊण न वेगियं, न तुरियं, न चवलं, न कडुयं, न फरुसं, न साहसं, न य परस्स पीलाकरं सावज्जं, सच्चं च हियं च मियं च गाहगं च सुद्धं संगयमकाहलं च समिक्खितं संजतेण कालंमि य वत्तव्वं २ । एवं अणुवीति-समिति-जोगेण भाविओ भवति अंतरप्पा संजय-कर-चरण-नयण-वयणो सूरो सच्चज्जव-संपुन्नो ३ । बितियं कोहो ण सेवियव्वो, कुद्धो चंडिक्किओ मणूसो अलियं भणेज्ज, पिसुणं भणेज्ज, फरुसं भणेज्ज, अलियं पिसुणं फरुसं भणेज्ज, कलहं करेज्जा, वेरं करेज्जा, विकहं करेज्जा, कलहं वेरं विकहं करेज्जा, सच्चं हणेज्ज, सीलं हणेज्ज, विणयं हणेज्ज, सच्चं सीलं विणयं हणेज्ज, वेसो हवेज्ज, वत्थुं भवेज्ज, गम्मो भवेज्ज, वेसो वत्थुं गम्मो भवेज्ज, एयं अन्नं च एवमादियं भणेज्ज कोहग्गिसंपलित्तो तम्हा कोहो न सेवियव्वो ४ । एवं खंतीइ भाविओ भवति अंतरप्पा संजयकरचरणनयणवयणो सूरो सच्चज्जवसंपन्नो ५ । ततियं लोभो न सेवियव्वो लुद्धो लोलो भणेज्ज अलियं, खेत्तस्स व वत्थुस्स व कतेण १ लुद्धो लोलो भणेज्ज अलियं, कित्तीए लोभस्स व कएण २ लुद्धो लोलो भणेज्ज अलियं, रिद्धीय व सोक्खस्स व कएण ३ लुद्धो लोलो भणेज्ज अलियं, भत्तस्स व पाणस्स व कएण ४ लुद्धो लोलो भणेज्ज अलियं, पीढस्स व फलगस्स व कएण ५ लुद्धो लोलो भणेज्ज अलियं, सेज्जाए व संथारकस्स व कएण ६ लुद्धो लोलो भणेज्ज अलियं, वत्थस्स व पत्तस्स व कएण ७ लुद्धो लोलो भणेज्ज अलियं, कंबलस्स व पायपुंछणस्स व कएण ८ लुद्धो लोलो भणेज्ज अलियं, सीसस्स व सिस्सीणीए व कएण ९ लुद्धो लोलो भणेज्ज अलियं, अन्नेसु य एवमादिसु बहुसु कारणसतेसु लुद्धो लोलो भणेज्ज अलियं ६ । तम्हा लोभो न सेवियव्वो, एवं मुत्तीय भाविओ भवति अंतरप्पा संजय-करचरण-

नयणवयणो सूरो सच्चज्जवसंपन्नो ७। चउत्थं न भाइयव्वं भीतं खु भया अइंति लहुयं भीतो अबितिज्जओ मणूसो भीतो भूतेहि घिप्पइ भीतो अन्नंपिहु भेसेज्जा, भीतो तवसजमंपिहु मुएज्जा, भीती य भरं न नित्थरेज्जा, सप्पुरिसनिसेवियं च मग्गं भीतो न समत्थो अणुचरिउं, तम्हा न भातियव्वं, भयस्स वा वाहिस्स वा रोगस्स वा जराए वा मच्चुस्स वा एगस्स वा (अन्नस्स वा) एवमादियस्स एवं धेज्जेण भाविओ भवति अंतरप्पा संजय-कर-चरण-नयण-वयणो सूरो सच्चज्जवसंपन्नो ८। पंचमकं हासं न सेवियव्वं अलियाइं असंतकाइं जंपंति हासइत्ता परपरिभवकारणं च हासं, परपरिवाय-प्पियं च हासं, परपीलाकारगं च हासं, भेदविमुत्तिकारकं च हासं, अन्नोन्नजणियं च होज्ज हासं, अन्नोन्नगमणं च होज्ज मम्मं अन्नोन्नगमणं च होज्ज कम्मं कंदप्पाभियोगगमणं च होज्ज हासं, आसुरियं किब्विसत्तणं च जणेज्ज हासं, तम्हा हासं न सेवियव्वं, एवं मोणेण भाविओ भवइ अंतरप्पा संजय-करचरण-नयणवयणो सूरो सच्चज्जवसंपन्नो ९। एवमिणं संवरस्स दारं सम्मं संचरियं होइ सुप्पणिहियं इमेहिं पंचहिवि कारणेहिं मणवयण-काय-परिरक्खिएहिं निच्चं आमरणंतं च एस जोगो णेयव्वो धितिमया मतिमया अणासवो अकलुसो अच्छिद्दो अपरिस्सावी असंकिलिट्ठो सव्वजिणमणुन्नाओ १०। एवं बितियं संवरदारं फासियं पालियं सोहियं तीरियं किट्टियं अणुपालियं आणाए आराहियं भवति, एवं नायमुणिणा भगवया पन्नवियं परूवियं पसिद्धं सिद्धवरसासणमिणं आघवितं सुदेसियं पसत्थं बितियं संवरदारं समत्तं तिबेमि २, ११ ॥ सू० २५ ॥

॥ इति सप्तममध्ययनम् ॥ ७ ॥

॥ अथ तृतीयसंवरादत्तादानविरमणाख्यं अष्टममध्ययनम् ॥

जंबू ! दत्त-मणुण्णाय-संवरो नाम होति ततियं सुव्वता ! महव्वतं गुणव्वतं परदव्वहरण-पडिविरइ-करणजुत्तं अपरिमिय-मणंत-तण्हाणुगय-महिच्छ-मण-वयण-कलुस-आयाण-सुनिग्गहियं, सुसंजमिय-मणहत्थ-पायनिहुयं निग्गंथं, णोट्ठिकं, निरुत्तं, निरासवं, निब्भयं, विमुत्तं, उत्तमनरवसभ-पवरबलवग-सुविहित-जणसंमतं, परमसाहु-धम्मचरणं १ । जत्थ य गामागर-नगर-निगम-खेड-कब्बड मडंब-दोणमुह-संवाह-पट्टणासमगयं च किंचि दव्वं मणि-मुत्त-सिलप्पवाल-कंस-दूस–रयय–वरकणग–रयणमादि पडियं पम्हुट्ठं विप्पणट्ठं न कप्पति कस्सति कहेउं वा गेण्हिउं वा अहिरन्न-सुवन्निकेण सम-लेट्ठु-कंचणेणं अपरिग्गह-संवुडेणं लोगंमि विहरियव्वं २ । जंपिय होज्जाहि दव्वजातं खलगतं खेत्तगतं रन्न(जलथलगयं खेत्त)मंतरगतं वा किंचि पुप्फ-फल-तयप्पवाल कंद-मूल तण-कट्ठसक्करादि अप्पं च बहुं च अणुं च थूलगं वा न कप्पती उग्गहंमि अदिण्णंमि गिण्हिउं जे, हणि हणि उग्गहं अणुन्नविय गेण्हियव्वं ३ । वज्जेयव्वो सव्वकालं अचियत्त-घरपवेसो, अचियत्त-भत्तपाणं अचियत्त-पीढ-फलग-सेज्जा–संथारग-वत्थ-पत्त–कंबल–दंडग-रयहरण-निसेज्ज-चोलपट्टग-मुहपोत्तिय-पायपुंछणाइ भायण-भंडोवहि-उवकरणं, परपरिवाओ, परस्स दोसो परववएसेणं जं च गेण्हइ, परस्स नासेइ जं च सुकयं, दाणस्स य अंतरातियं दाणविप्पणासो, पेसुन्नं चेव मच्छरित्तं च, जेविय पीढ-फलग-सेज्जा-संथारग-वत्थ-पाय–कंबल-दंडग-रयहरण–निसिज्ज–चोलपट्टय-मुहपोत्तिय-पायपुंछणादि-भायण भंडोवहि-उवकरणं असंविभागी ४ । असंगहरुती, तवतेणे य, वइतेणे य रूवतेणे य, आयारे चेव भावतेणे य, सद्दकरे, झंझकरे, कलहकरे, वेरकरे, विकहकरे, असमाहिकरे, सया अप्पमाणभोती सततं अणुबद्धवेरे य, तिव्वरोसी, से तारिसए नाराहए वयमिणं ५ । अह केरिसए पुणाइं आराहए वयमिणं ?, जे से उवहि-भत्त–

पाण–संगहण–दाण–कुसले, अच्चंत–बाल–दुब्बल–गिलाण–वुड्ढ–खवग–पवत्तिआयरिय–उवज्झाए, सेहे, साहम्मिके, तवस्सी-कुल-गण–संघ-चेइयट्ठे य निज्जरट्ठी वेयावच्चं अणिस्सियं बहुविहं दसविहं करेति, न य अचियत्तस्स गिहं पविसइ, न य अचियत्तस्स गेण्हइ भत्तपाणं, न य अचियत्तस्स सेवइ, पीढ–फलग–सेज्जा–संथारग–वत्थ–पाय–कंबल–डंडग–रयहरण–निसेज्ज–चोलपट्टय–मुहपोत्तिय–पायपुंछणाइ–भायण–भंडोवहिउवगरणं न य परिवायं परस्स जंपति, ण यावि दोसे परस्स गेण्हति, परववएसेणवि न किंचि गेण्हति, न य विपरिणामेति किंचि जणं न यावि णासेति, दिन्नसुकयं दाऊण य न होइ पच्छाताविए संविभागसीले संग्गहोवग्गह-कुसले से तारिसे आराहते वयमिणं ६। इमं च परदव्व-हरण-वेरमण-परिरक्खणट्ठयाए पावयणं भगवया सुकहितं, अत्तहितं, पेच्चाभावितं, आगमेसिभद्दं, सुद्धं, नेयाउयं, अकुडिलं, अणुत्तरं, सव्वदुक्खपावाण विओवसमणं ७। तस्स इमा पंच भावणातो ततियस्स होंति परदव्व–हरण-वेरमण-परिरक्खणट्ठयाए, पढमं देवकुल–सभा–प्पवा–वसह–रुक्खमूल–आराम–कंदरागर–गिरिगुहा–कम्मउज्जाण-जाणसाला कुवितसाला मंडव-सुन्नघर-सुसाणलेणआवणे अन्नंमि य एवमादियंमि दग-मट्टिय-बीज-हरित-तसपाण-असंसत्ते अहाकडे फासुए विवित्ते पसत्थे उवस्सए होइ विहरियव्वं, आहाकम्मबहुले य जे से आसित-संमज्जि-ओवलित्त-सोहिय-छायण-(छगण)दूमणलिंपण-अणुलिंपण-जलण-भंडचालण अंतो बहिं च असंजमो जत्थ वड्ढती संजयाण अट्ठा वज्जेयव्वो हु उवस्सओ से तारिसए सुत्तपडिकुट्ठे। एवं विवित्तवास-वसहि-समिति-जोगेण भावितो भवति अंतरप्पा निच्चं अहिकरण-करण-कारावण-पावकम्मविरतो दत्तमणुन्नाय-ओग्गहरुती ८। बितीयं आरामुज्जाण-काणण-वणप्पदेस-भागे जं किंचि इक्कडं वा कठिणगं च जंतुगं [जवगं] च परा-मेर-कुच्च-कुस-डब्भ-पलाल-मूयग-पव्वय-पुप्फ–फल–तय–प्पवाल–कंद–मूल–तण–कट्ठ–सक्करादी गेण्हइ

सेज्जोवहिस्स अट्ठा न कप्पए उग्गहे अदिन्नंमि गिराहेउं जे हणि हणि उग्गहं अणुन्नविय गेरिहयव्वं एवं उग्गह-समिति-जोगेण भावितो भवति अंतरप्पा निच्चं अहिकरण-करण-कारावण-पावकम्म-विरते दत्त-मणुन्नाय-ओग्गहरुती ९ । ततीयं पीढ-फलग-सेज्जा-संथारगट्टयाए रुक्खो न छिंदियव्वो न छेदणेण भेयणेण सेज्जा कारेयव्वा जस्सेव उवस्सते वसेज्ज सेज्जं तत्थेव गवेसेज्जा, न य विसमं समं करेज्जा, न निवाय-पवाय-उस्सुगत्तं न डंसमसगेसु खुभियव्वं अग्गी धूमो न कायव्वो, एवं संजमबहुले संवरबहुले संवुडबहुले समाहिबहुले धीरे काएण फासयंतो सययं अज्झप्पज्झाणजुत्ते समिए एगे चरेज्ज धम्मं, एवं सेज्जासमितिजोगेण भावितो भवति अंतरप्पा निच्चं अहि-करण-करण-कारावण-पावकम्मविरते दत्त-मणुन्नाय-उग्गहरुती १० । चउत्थं साहारण-पिंडपात-लाभे सति भोत्तव्वं संजएण समियं न सायसूपाहिकं, न खद्धं, ण वेगितं, न तुरियं, न चवलं, न साहसं, न य परस्स पीलाकरसावज्जं तह भोत्तव्वं जह से ततियवयं न सीदति, साहारणपिंडपायलाभे सुहुमं अदिन्नादाण-विरमणवय-नियमणं (वय-नियमवेरमणं) एवं साहारण-पिंडवायलाभे समितिजोगेण भावितो भवति अंतरप्पा निच्चं अहिकरण-करण-कारावण-पावकम्मविरते दत्तमणुन्नाय-उग्गहरुती ११ । पंचमगं साहम्मिए विणओ पउंजियव्वो, उवकरणपारणासु विणओ पउंजियव्वो, वायण-परियट्टणासु विणओ पउंजियव्वो, दाणगहण-पुच्छणासु विणओ पउंजियव्वो, निक्खमण-पवेसणासु विणओ पउंजियव्वो, अन्नेसु य एवमादिसु बहुसु कारणसएसु विणओ पउंजियव्वो, विणओवि तवो तवोवि धम्मो तम्हा विणओ पउंजियव्वो, गुरुसु साहूसु तवस्सीसु य, विणओ पउंजियव्वो एवं विणतेण भाविओ भवइ अंतरप्पा णिच्चं अधिकरण-करण-कारावण-पावकम्मविरते दत्तमणुन्नायउग्गहरुइ १२ । एवमिणं संवरस्स दारं सम्मं संचरियं होइ सुपणिहियं एवं जाव आघवियं सुदेसितं पसत्थं १३ ॥ सू० २६ ॥ ततियं संवरदारं समत्तं तिबेमि ॥ ३ ॥

॥ इति अष्टममध्ययनम् ॥ ८ ॥

॥ अथ चतुर्थसंवर-ब्रह्मचर्याख्यं नवममध्ययनम् ॥

जंबू ! एत्तो य बंभचेरं उत्तम-तव-नियम-णाण-दंसण-चरित्त-सम्मत्त-विणयमूलं, संयम-नियम-गुणप्पहाणजुत्तं, हिमवंत-महंत-तेयमंतं, पसत्थ-गंभीर-थिमितमज्झं (-मज्झत्थ-) अज्जव-साहुजणाचरितं (-त-) मोक्खमग्गं विसुद्ध-सिद्धिगति-निलयं, सासय(-मव्वाबाह-) मपुणब्भवं, पसत्थं, सोमं, सुभं, सिव(मयल)मक्खयकरं, जतिवर-सारक्खितं सुचरियं, सुसाहियं, नवरि मुणिवरेहिं महापुरिस-धीर-सूर-धम्मिय-धितिमंताण य सया विसुद्धं सव्व-भव्व-जणाणुचिन्नं, निस्संकियं, निब्भयं, नित्तुसं, निरायासं, निरुवलेवं, निव्वुतिघरं, नियमनिप्पकंपं, तव-संजम-मूल-दलियणेम्मं, पंचमहव्वय-सुरक्खियं, समितिगुत्तिगुत्तं, झाण वर-कवाड-सुकय-रक्खण-मज्झप्प-दिन्नफलिहं, सन्नद्ध-बद्धोच्छइय-दुग्गइपहं, सुगतिपहदेसगं च लोगुत्तमं, च वयवयविणं पउमसर-तलाग-पालिभूयं, महासगड-अरग-तुंबभूयं, महाविडिम-रुक्ख-क्खंधभूयं, महानगर-पागार-कवाड-फलिहभूयं रज्जुपिणिद्धो व इंदकेतू विसुद्ध-णेग गुण-संपिणद्धं १ । जंमि य भग्गंमि होइ सहसा सव्वं संभग्ग-मद्दिय--मथिय--चुन्निय--कुसल्लिय--पव्वयपडिय--खंडिय--परिसडिय--विणासियं विणय-सील-तव-नियम-गुणसमूहं २ । तं बंभं भगवंतं गहगण-नक्खत्त-तारगाणं वा जहा उडुपत्ती १, मणि-मुत्त-सिलप्पवाल-रत्तरयणागराणं च जहा समुद्दो २, वेरुलिओ चेव जहा मणीणं ३, जहा मउडो चेव भूसणाणं ४, वत्थाणं चेव खोमजुयलं ५, अरविंदं चेव पुप्फजेट्ठं ६, गोसीसं चेव चंदणाणं ७, हिमवंतो चेव ओसहीणं ८, सीतोदा चेव निन्नगाणं ९, उदहीसु जहा सयंभुरमणो १०, रुयगवर चेव मंडलिकपव्वयाणं ११, पवरो एरावण इव कुंजराणं १२, सीहोव्व जहा मिगाणं १३, पवरो पवकाणं चेव वेणुदेवे १४, धरणो जह पणगइंदराया १५, कप्पाणं चेव बंभलोए १६, सभासु य जहा भवे सुहम्मा १७, ठितिसु लवसत्तमव्व पवरा

१८, दाणाण चेव अभयदाणं १९, किमिराउ चेव कंबलाणं २१, संघयणे चेव वज्जरिसभे २१, संठाणे चेव समचउरंसे २२, झाणेसु य परमसुक्कज्झाणं २३, णाणेसु य परमकेवलं तु सिद्धं २४, लेसासु य परमसुक्कलेस्सा २५, तित्थंकरे जहा चेव मुणीणं २६, वासेसु जहा महाविदेहे २७, गिरिसु गिरिराया चेव मंदरवरे २८, वणेसु जह नंदणवणं २९, पवरं दुमेसु जहा जंबू ३०, सुदंसणा वीसुयजसा जीए नामेण य अयं दीवो ३१, ३। तुरगवती, गयवती रहवती, नरवती, जह वीसुए चेव, राया रहिए चेव जहा महारहगते, एवमणेगा गुणा अहीणा भवंति एक्कंमि बंभचेरे जंमि य आराहियंमि आराहियं वयमिणं सव्वं, सीलं तवो य विणओ य, संजमो य, खंती गुत्ती मुत्ती तहेव इहलोइय-पारलोइयजसे य, कित्ती य, पच्चओ य, तम्हा निहुएण बंभचेरं चरियव्वं, सव्वओ विसुद्धं, जावज्जीवाए जाव सेयट्ठिसंजउत्ति ४। एवं भणियं वयं भगवया, तं च इमं–पंचमहव्वय-सुव्वयमूलं, समण-मणाइल-साहुसुचिन्नं। वेरविरमण-पज्जवसाणं, सव्वसमुद्द-महोदधितित्थं ॥१॥ तित्थकरेहि सुदेसियमग्गं, निरयतिरिच्छ-विवज्जियमग्गं। सव्वपवित्त-सुनिम्मियसारं, सिद्धिविमाण-अवंगुयदारं ॥२॥ देवनरिंद-नमंसियपूयं, सव्वजगुत्तम-मंगलमग्गं। दुद्धरिसं गुणनायकमेक्कं, मोक्खपहस्सऽवडिंसगभूयं ॥३॥ जेण सुद्धचरिएण भवइ सुबंभणो सुसमणो सुसाहू सुइसी सुमुणी ससंजए (स इसी स मुणी स संजए) स एव भिक्खू जो सुद्धं चरति बंभचेरं ५। इमं च रति-राग-दोस-मोह-पवड्ढणकरं किमज्झ–पमाय–दोसपासत्थ–सीलकरणं अब्भंगणाणि य तेलमज्जणाणि य अभिक्खणं कक्ख–सीस–कर–चरण–वदण–धोवण–संबाहण–गायकम्म-परिमद्दणाणुलेवण-चुन्नवास-धूवण-सरीरपरिमंडण-बाउसिकं नह–केस–वत्थु–समारचणादिकं हसिय–भणिय–नट्ट-गीय-वाइय-नड-नट्टक-जल्ल-मल्ल-पेच्छण-वेलंबक जाणि य सिंगारागाराणि (रकारणाणि) य अन्नाणि

य एवमादियाणि तव-संजम-बंभचेर-घातोवघातियाइं अणुचरमाणेणं बंभचेरं वज्जेयव्वाइं सव्वकालं ६। भावेयव्वो भवइ य अंतरप्पा इमेहिं तव-नियम-सीलजोगेहिं निच्चकालं, किं ते ?-अराहाणक-अदंतधावणसे पमल-जल्लधारणं मूणवय-केसलोए य सम-दम-अचेलग-खुप्पिवास-लाघव सीतोसिण-कट्ठसेज्जा-भूमिनिसेज्जा-परघरपवेस-लद्धावलद्ध-माणावमाणा निंदण-दंसमसग-फास-नियम-तव-गुण-विणयमादिएहिं जहा से थिरतरकं होइ बंभचेरं ७। इमं च अबंभचेर-विरमण-परिरक्खणट्ठयाए पावयणं भगवया सुकहियं, पेच्चाभाविकं, आगमेसिभद्दं, सुद्धं, नेयाउयं, अकुडिलं, अणुत्तरं सव्वदुक्खपावाण विउसवणं ८। तस्स इमा पंच भावणाओ चउत्थयस्स होंति अबंभचेर-वेरमण-परिरक्खणट्ठयाए, पढमं सयणासण-घर-दुवार-अंगण-आगास-गवक्ख-साल-अभिलोयण-पच्छवत्थुक-पसाहणक-राहाणिकावकासा अवकासा जे य वेसियाणं अच्छंति य जत्थ इत्थिकाओ अभिक्खणं मोहदोस-रतिराग-वड्ढणीओ कहिंति य कहाओ बहुविहाओ तेऽवि हु वज्जणिज्जा, इत्थिसंसत्त-संकिलिट्ठा अन्नेवि य एवमादी अवकासा ते हु वज्जणिज्जा। जत्थ मणोविब्भमो वा भंगो वा भंसणा वा अट्टं रुद्दं च हुज्ज झाणं तं तं वज्जेज्जऽवज्जभीरू अणायतणं अंतपंतवासी एवम-संसत्तवासवसही-समितिजोगेण भावितो भवति, अंतरप्पा आरतमण-विरयगामधम्मे, जितेंदिए, बंभचेरगुत्ते १, ६। बितियं नारीजणस्स मज्झे न कहेयव्वा कहा विचित्ता विब्बोय-विलाससंपउत्ता, हास-सिंगार-लोइयकहव्व मोहजणणी न आवाह-विवाह-वरकहाविव इत्थीणं वा सुभग-दुभगकहा चउसट्ठिं च महिलागुणा न वन्न-देस-जाति-कुल-रूव-नाम-नेवत्थ-परिजणकहावि इत्थियाणं कन्नावि य एवमादियाओ कहाओ सिंगारकलुणाओ तव-संजम-बंभचेर-घातोवघातियाओ अणुचरमाणेणं बंभचेरं न कहेयव्वा, न सुणेयव्वा, न चिंतेयव्वा, एवं इत्थीकह-विरति-समितिजोगेणं भावितो भवति अंतरप्पा

आरत-मण-विरय-गामधम्मे जितिंदिए बंभचेरगुत्ते २, १० । ततीयं नारीण हसित-भणितं चेट्ठिय-विप्पेक्खित-गइ-विलासकीलियं विब्बोतिय-नट्ट-गीत-वातिय-सरीरसंठाण-वन्न-करचरण-नयणलावन्न-रूव-जोव्वण-पयोहराधर-वत्थालंकारभूसणाणि य गुज्झोवकासियाइं अन्नाणि य एवमादियाइं तवसंजम-बंभचेर-घातोवघातियाइं अणुचरमाणेणं बंभचेरं न चक्खुसा न मणसा न वयसा पत्थेयव्वाइं पावकम्माइं । एवं इत्थीरूव-विरति-समितिजोगेण भावितो भवति अंतरप्पा आरतमण-विरयगामधम्मे जिइंदिए बंभचेरगुत्ते ३, ११ । चउत्थं पुव्वरय-पुव्वकीलिय-पुव्वसंगंथ-गंथसंथुया जे ते आवाह-विवाहचोलकेसु य तिथिसु जन्नेसु उस्सवेसु व सिंगारागार-चारुवेसाहिं हावभाव-पललिय-विक्खेव-विलास-(गति)सालिणीहिं अणुकूल-पेम्मिकाहिं सद्धिं अणुभूया सयणसंपओगा उदुसुह-वरकुसुम-सुरभिचंदण-सुगंधिवरवास-धूव-सुहफरिस-वत्थ-भूसणगुणोववेया रमणिज्जाउज्जगेय-पउरनड—नट्टक-जल्ल-मल्ल-मुट्ठिक—वेलंबग—कहग-पवग-लासग-आइक्खग-लंख-मंख—तूणइल्ल-तुंबवीणि-य—तालायर—पकरणाणि य बहूणि महुर-सर-गीत-सुस्सराइं अन्नाणि य एवमादियाणि तवसंजम-बंभचेर-घातोवघातियाइं अणुचरमाणेणं बंभचेरं न तातिं समणेण लब्भा दट्ठुं न कहेउं नवि सुमरिउं जे, एवं पुव्वरय-पुव्वकीलिय-विरति-समितिजोगेण भावितो भवति अंतरप्पा आरयमणविरतगा-मधम्मे जिइंदिए बंभचेरगुत्ते ४, १२ । पंचमगं आहार-पणीय-निद्ध-भोयण-विवज्जते संजते सुसाहू, ववगयखीर-दहि-सप्पि-नवनीय-तेल्ल-गुल-खंड-मच्छंडिक-महु-मज्ज-मंस-खज्जक-विगति-परिचत्तकयाहारे णं दप्पणं, न बहुसो, न नितिकं, न सायसूपाहिकं, न खद्धं, तहा भोत्तव्वं जह से जायामाता य भवति, न य भवति विब्भमो, न भंसणा य धम्मस्स, एवं पणीयाहार-विरति-समितिजोगेण भावितो भवति अंतरप्पा आरतमण-विरतगामधम्मे जिइंदिए बंभचेरगुत्ते ५, १३ । एवमिणं संवरस्स दारं सम्मं संवरियं होइ

सुपणिहितं इमेहिं पञ्चहिवि कारणेहिं मणवयण-काय-परिरक्खिएहिं णिच्चं आमरणंतं च एसो जोगो णेयव्वो धितिमया मतिमया अणासवो अकलुसो अच्छिद्दो अपरिस्सावी असंकिलिट्ठो सुद्धो सव्वजिणमणुन्नातो, एवं चउत्थं संवरदारं फासियं पालितं सोहितं तिरितं किट्टितं आणाए अणुपालियं भवति, एवं नायमुणिणा भगवया पन्नवियं परूवियं पसिद्धं सिद्धवरसासणमिणं आघवियं सुदेसितं पसत्थं १४ ॥ सू० २७ ॥ चउत्थं संवरद्दारं समत्तं त्तिबेमि ॥ ४ ॥

॥ इति नवममध्ययनम् ॥ ९ ॥

॥ अथ पञ्चमसंवर-परिग्रहविरमणाख्यं दशममध्ययनम् ॥

जंबू ! अपरिग्गह-संवुडे य समणे आरंभ-परिग्गहातो विरते विरते कोह-माण-माया-लोभा एगे असंजमे १ दो चेव रागदोसा २ तिन्नि य दंडगारवा य गुत्तीओ तिन्नि तिन्नि य विराहणाओ ३ चत्तारि कसाया झाण-सन्ना-विकहा तहा य हुंति चउरो ४ पंच य किरियाओ समितिइंदिय-महव्वयाइं च ५ छज्जीवनिकाया छच्च लेसाओ ६ सत्त भया ७ अट्ठ य मया ८ नव चेव य बंभचेरवयगुत्ती ९ दसप्पकारे य समणधम्मे १० एक्कारस य उवासकाणं ११ बारस य भिक्खुपडिमा १२ किरियठाणा य १३ भूयगामा १४ परमाधम्मिया १५ गाहासोलसया १६ असंजम १७ अबंभ १८ णाय १९ असमाहिठाणा २० सबला २१ परिसहा २२ सूयगडज्झयण २३ देव २४ भावण २५ उद्देस २६ गुण २७ पकप्प २८ पावसुत २९ मोहणिज्जे ३० सिद्धातिगुणा य ३१ जोगसंगहे ३२ तित्तीसा आसातणा सुरिंदा आदिं एकातियं करेत्ता एक्कुत्तरियाए वड्ढिए तीसातो जाव उ भवे एकाहिका विरतीपणिहीसु, अविरतीसु य एवमादिसु बहूसु ठाणेसु, जिणपसाहिएसु, अवितहेसु, सासयभावेसु, अवट्ठिएसु संकं कंखं निराकरेत्ता सद्दहते सासणं भगवतो अणियाणे, अगारवे, अलुद्धे,

अमूढ-मण-वयण-कायगुत्ते ॥ सू० २८ ॥ जो सो वीर-वर-वयण-विरति-पवित्थर-बहुविहप्पकारो, सम्मत्त-विसुद्धमूलो, धितिकंदो, विणयवेतितो, निग्गत-तिलोक्क-विपुल-जस-निविड-(निचिन)-पीण-पवर-सुजातखंधो, पंचमहव्वय-विसालसालो, भावणातय(यंत)ज्झाण-सुभ-जोग-नाण पल्लव-वरंकुरधरो, बहुगुण-कुसुमसमिद्धो, सीलसुगंधो, अणाहवफलो, पुणो य मोक्खवर-बीजसारो, मंदरगिरि-सिहरचूलिका इव इमस्स मोक्खवर-मुत्तिमग्गस्स सिहरभूओ, संवरवरपादपो चरिमं संवरदारं १। जत्थ न कप्पइ गामागर-नगर-खेड-कब्बड-मडंब-दोणमुह-पट्टणासमगयं च किंचि अप्पं व बहुं व अणुं व थूलं व तस-थावर-कायदव्वजायं मणसावि परिघेत्तुं ण हिरन्न-सुवन्न-खेत्तवत्थु, न दासीदास-भयक-पेस-हय-गय-गवेलगं च, न जाण-जुग्ग-सयणाइ, ण छत्तकं, न कुंडिया, न उवाणहा, न पेहुण-वीयण-तालियंटका, ण यावि अय-तउय-तंब-सीसक-कंस--रयत--जातरूव--मणि--मुत्ताधारपुडक-संख-दंतमणि--सिंग-सेल(लेस)-काय-वरचेल-चम्मपत्ताइं महरिहाइं परस्स अज्झोववाय-लोभजणणाइं परियड्ढे(ट्टि)उं गुणवओ न यावि पुप्फफल-कंदमूलादियाइं सण-सत्तरसाइं सव्वधन्नाइं तिहिवि जोगेहिं परिघेत्तुं ओसह-भेसज्ज--भोयणट्टयाए संजयणं २। किं कारणं ?, अपरिमित-णाण-दंसणधरेहिं, सीलगुण-विणय-तव-संजमनायकेहिं, तित्थयरेहिं, सव्व-जगज्जीव-वच्छलेहिं, तिलोयमहिएहिं, जिणवरिंदेहिं एस जोणी जंगमाणं दिट्ठा न कप्पइ ३। जोणिसमुच्छेदोत्ति तेण वज्जंति समणसीहा, जंपिय ओदण--कुम्मास-गंज-तप्पण-मंथु-भुज्जिय-पलल-सूप-सक्कुलि-वेढिम-वरस(सा)रक--चुन्नकोसग-पिंड--सिहरिणि-वट्टमोयग-खीर-दहि-सप्पि-नवनीत-तेल्ला-गुल-खंड-मच्छंडिय-मधु-मज्ज-मंस-खज्जक-वंजण-विधिमादिकं पणीयं उवस्सए परघरे व रन्ने न कप्पती तंपि सन्निहिं काउं सुविहियाणं ४। जंपिय उद्दिट्ठ-ठविय-रचियग-पज्जवजातं पकिरण--पाउकरण--पामिच्चं, मीसकजायं, कीय--कडपाहुडं च दाणट्ठ--

पुव्वपगडं समण-वणीमगट्ठयाए वा कयं, पच्छाकम्मं, पुरेकम्मं, नितिकम्मं, मक्खियं, अतिरित्तं, मोहरं चेव सयग्गहमाहडं, मट्टिउवलित्तं, अच्छेज्जं चेव अणीसट्ठं जं तं तिहीसु जन्नेसु ऊसवेसु य अंतो वा बहिं व होज्ज समणट्ठयाए ठवियं हिंसासावज्ज-संपउत्तं न कप्पती तंपिय परिघेत्तुं ५। अह केरिसयं पुणाइ कप्पति ?, जं तं एक्कारस-पिंडवायसुद्धं, किणण-हणण-पयण-कयकारियाणुमोयण-नवकोडीहिं सुपरिसुद्धं, दसहि य दोसेहिं विप्पमुक्कं, उग्गम-उप्पायणेसणाए सुद्धं, ववगय-चुय-चविय-चत्तदेहं च फासुयं ववगय-संजोग-मणिगालं, विगयधूमं, छट्ठाणनिमित्तं, छकाय-परिरक्खणट्ठा हणिं हणिं फासुकेण भिक्खेण वट्टियव्वं ६। जंपिय समणस्स सुविहियस्स उ रोगायंके बहुप्पकारंमि सम्मुप्पन्ने वाताहिक-पित्त-सिंभाइरित्त-कुविय तह सन्निवातजाते, व उदयपत्ते, उज्जल-बल-विउल-कक्खड-पगाढदुक्खे, असुभ-कडुय-फरुसे, चंड-फलविवागे, महब्भए जीवियंत-करणे, सव्व-सरीर-परितावणकरे ७। न कप्पती तारिसेवि तह अप्पणो परस्स वा ओसहभेसज्जं भत्तपाणं च तंपि संनिहिकयं, जंपिय समणस्स सुविहियस्स तु पडिग्गहधारिस्स भवति भायण-भंडोवहिउवकरणं पडिग्गहो पादबंधणं पादकेसरिया पादठवणं च पडलाइं तिन्नेव रयत्ताणं च गोच्छओ तिन्नेव य पच्छ वा रयोहरण-चोलपट्टक-मुहणंतकमादीयं, एयंपि य संजमस्स उववूहणट्ठयाए वायायवदंस-मसग-सीय-परिरक्खणट्ठयाए उवगरणं रागदोस-रहियं परिहरियव्वं संजएण णिच्चं पडिलेहण-पप्फोडण-पमज्जणाए अहो य राओ य अप्पमत्तेण होइ सततं निक्खिवियव्वं च गिण्हियव्वं च भायण-भंडोवहि उवकरणं ८। एवं से संजते, विमुत्ते, निस्संगे, निप्परिग्गहरुई, निम्ममे, निन्नेहबंधणे, सव्वपावविरते, वासीचंदणसमाणकप्पे, सम-तिण-मणि-मुत्ता-लेट्ठु-कंचणे, समे य माणावमाणणाए समियरते, समितरागदोसे, समिए, समितीसु सम्मदिट्ठी समे य जे सव्वपाणभूतेसु से हु समणे, सुयधारते,

उजु(ज्जु)ते, संजए, सुसाहू, सरणं सव्वभूयाणं, सव्वजगवच्छले, सच्चभासके, य संसारंत-ट्ठिते, य संसार-समुच्छिन्ने, सततं मरणाणुपारते, पारगे य सव्वेसिं संसयाणं, पवयणमायाहिं अट्ठहिं अट्ठकम्म-गंठी-विमोयके, अट्ठमयमहणे, ससमयकुसले य भवति १ । सुहदुक्ख-निव्विसेसे, अब्भिंतर-बाहिरंमि सया तवोवहाणंमि य सुट्ठुज्जुते, खंते, दंते य हिय(धिइ)निरते, ईरियासमिते, भासासमिते एसणासमिते, आयाण-भंड-मत्त-निक्खेवणासमिते, उच्चार-पासवण-खेल-सिंघाण-जल्ल-पारिट्ठावणियासमिते, मणगुत्ते वयगुत्ते, कायगुत्ते, गुत्तिंदिए, गुत्तबंभयारी, चाई, सज्जू, धन्ने, तवस्सी, खंतिखमे, जितिंदिए, सोधिए अणियाणे, अबहिल्लेसे, अममे, अकिंचणे, छिन्नग्गंथे (छिन्नसोये, छिन्नसोए) निरुवलेवे, सुविमल-वर कंस-भायणं व मुक्कतोए, संखेविव निरंजणे, विगय-राग-दोस-मोहे, कुम्मो इव इंदिएसु गुत्ते, जच्चकंचणगंव जायरूवे, पोक्खरपत्तं व निरुवलेवे, चंदो इव सोमयाए(सोमभावयाए) सूरो व्व दित्ततेए, अचले जह मंदरे गिरिवरे, अक्खोभे सागरो व्व थिमिए, पुढवी व सव्वफाससहे, तवसा च्चिय भासरासिछन्निव्व जाततेए, जलियहुयासणो विव तेयसा जलंते, गोसीस-चंदणंपिव सीयले, सुगंधे य, हरयो विव समियभावे, उग्घोसिय-सुनिम्मलं व आयंसमंडलतलं व पागडभावेण सुद्धभावे, सोंडीरे कुंजरोव्व, वसभेव्व जायथामे, सीहे वा जहा मिगाहिवे होति दुप्पधरिसे, सारयसलिलं व सुद्धहियये, भारंडे चेव अप्पमत्ते, खग्गिविसाणं व एगजाते, खाणुं चेव उड्ढकाए, सुन्नागारेव्व अप्पडिकम्मे, सुन्नागारावणस्संतो निवाय-सरण-प्पदीव-ज्झाणमिव निप्पकंपे, जहा खुरो चेव एगधारे, जहा अही चेव एगदिट्ठी, आगासं चेव निरालंबे, विहगे विव सव्वओ विप्पमुक्के, कयपरनिलए जहा चेव उरए, अप्पडिबद्धे अनिलोव्व, जीवोव्व अप्पडिहयगती, गामे गामे एकरायं नगरे नगरे य पंचरायं दूइज्जंते य जितिंदिए, जितपरीसहे, निब्भओ विऊ(विसुद्धे)

सचित्ताचित्त-मीसकेहिं दव्वेहिं विरायं गते, संचयातो विरए, मुत्ते, लहुके, निरवकंखे, जीविय-मरणास-विप्पमुक्के निस्संधं निव्वणं चरित्तं धीरे काएण फासयंते, अज्झप्पज्झाणजुत्ते, निहुए, एगे चरेज्ज धम्मं १० । इमं च अपरिग्गह-वेरमण-परिरक्खणट्ठयाए पावयणं भगवया सुकहियं, अत्तहियं, पेच्चाभाविकं, आगमेसिभद्दं, सुद्धं, नेयाउयं, अकुडिलं, अणुत्तरं, सव्वदुक्ख-पावाण विओसमणं ११ । तस्स इमा पंच भावणाओ चरिमस्स वयस्स होंति परिग्गह-वेरमण-रक्खणट्ठयाए—पढमं सोइंदिएण सोच्चा सद्दाइं मणुन्न-भद्दगाइं, किं ते ?, वरमुरय—मुइंग—पणव—दद्दुर—कच्छभि—वीणा—विपंची—वल्लयि—वद्धीसक—सुघोस—नंद—सूसरपरिवादिणि-वंस—तूणक-पव्वक—तंती—तल—ताल-तुडिय—निग्घोसगीयवाइयाइं । नड-नट्टक—जल्ल—मल्ल—मुट्ठिक—वेलंबक—कहक—पवक—लासग—आइक्खक—लंख—मंख—तूणइल्ल—तुंबवीणिय-तालायर—पकरणाणि य बहूणि महुरसरगीतसुस्सराति १२ । कंची—मेहला—कलाव—पत्तरक—पहेरक—पायजालग—घंटिय—खिंखिणि—रयणोरुजा-लिय—छुड्डिय—नेउर—चलणमालिय—कणगनियलजाल—भूसणसद्दाणि । लीलचंकम्ममाणाणुदीरियाइं तरुणीजण—हसियभणिय-कल-रिभितमंजुलाइं गुणवयणाणि व बहूणि महुरजणभासियाइं अन्नेसु य एवमादिएसु सद्देसु मणुन्नभद्दएसु ण तेसु समणेण सज्जियव्वं, न रज्जियव्वं, न गिज्झियव्वं, न हसियव्वं, न मुज्झियव्वं, न विनिग्घायं, आवज्जियव्वं, न लुभियव्वं, न तुसियव्वं, न सइं च मइं च तत्थ कुज्जा, पुणरवि सोइंदिएण सोच्चा सद्दाइं अमणुन्न-पावकाइं, किं ते ?, अक्कोस—फरुस—खिंसण—अवमाणण—तज्जण—निब्भंछण—दित्तवयण—तासण—उक्कूजिय—रुन्न—रडिय—कंदिय—निग्घुट्ठर-सिय—कलुण—विलवियाइं अन्नेसु य एवमादिएसु सद्देसु अमणुण्ण-पावएसु न तेसु समणेण रूसियव्वं, न हीलियव्वं, न निंदियव्वं, न खिंसियव्वं, न छिंदियव्वं, न भिंदियव्वं, न वहेयव्वं, न दुगुंछावत्तियाए लब्भा उप्पाएउं, एवं

सोतिंदियभावणाभावितो भवति अंतरप्पा मणुन्नाऽमणुन्न-सुब्भिदुब्भि-रागदोस-प्पणिहियप्पा साहू मणवयण-कायगुत्ते संवुडे पणिहितिंदिए चरेज्ज धम्मं १, १३। बितियं चक्खिदिएण पासिय रूवाणि मणुन्नाइं भद्दकाइं सचित्ताचित्तमीसकाइं कट्ठे, पोत्थे य, चित्तकम्मे लेप्पकम्मे, सेले य, दंतकम्मे य, पंचहिं वण्णेहिं अणेग-संठाण-संठियाइं, गंठिम-वेढिम-पूरिम-संघातिमाणि, य मल्लाइं बहुविहाणि य अहियं नयण-मण-सुहकराइं, वणसंडे पव्वते य गामागरनगराणि य खुद्दिय-पुक्खरिणि-वावी-दीहिय—गुंजालिय-सरसरपंतिय—सागर-बिलपंतिय—खादिय-नदी-सर-तलाग-वप्पिणी-फुल्लुप्पल-पउम-परिमंडियाभिरामे, अणेग-सउण-गण-मिहुणविचरिए, वरमंडव-विविहभवण-तोरण-चेतिय-देवकुल-सभ-प्पवावसह-सुकयसयणासण-सीय-रह-सयड-जाण-जुग्ग-संदण-नरनारिगणे य, सोम-पडिरूव-दरिसणिज्जे, अलंकित-विभूसिते, पुव्वकय-तवप्पभाव-सोहग्ग-संपउत्ते, नड-नट्टग-जल्ल-मल्ल-मुट्ठिय-वेलंबग-कहग-पवग-लासग-आइक्खग-लंख-मंख-तूणइल्ल-तुंबवीणिय-तालायरकरणाणि य बहूणि सुकरणाणि अन्नेसु य एवमादिएसु रूवेसु मणुन्नभद्दएसु न तेसु समणेण सज्जियव्वं, न रज्जियव्वं, जाव न सइं च मइं च तत्था कुज्जा, पुणरवि चक्खिदिएण पासिय रूवाइं अमणुन्नपावकाइं, किं ते ?, गंडि-कोढि-कुणि-उदरि-कच्छुल्ल-पइल्ल-कुज्ज-पंगुल-वामण-अंधिल्लग-एगचक्खु-विणिहय-सप्पिसल्लग-वाहिरोगपीलियं विगयाणि य मयक-कलेवराणि सकिमिण-कुहियं च दव्वरासिं अन्नेसु य एवमादिएसु अमणुन्न-पावकेसु न तेसु समणेण रूसियव्वं जाव न दुगुंछावत्तियावि लब्भा उप्पातेउं, एवं चक्खिदिय-भावणाभावितो भवति अंतरप्पा जाव चरेज्ज धम्मं २, १४। ततियं घाणिंदिएण अग्घाइय गंधाति मणुन्नभद्दगाइं, किं ते ?, जलयर-थलयर-सरस-पुप्फफल-पाण-भोयण-कुट्ठ-तगर-पत्त-चोद-दमणक-मरुय-एलारस-पक्कमंसि-गोसीस—सरसचंदण—कप्पूर-लवंग—अगर-कुंकुम-कक्कोल-उसीर-सेयचंदण-सुगन्ध-सारंग-जुत्ति-वरधूववासे उउय-पिंडिम-णिहारिम-

गंधिएसु अन्नेसु य एवमादिसु गंधेसु मणुन्नभद्दएसु न तेसु समणेण सज्जियव्वं जाव न सतिं च मइं च तत्थ कुज्जा, पुणरवि घाणिंदिएण अग्घातिय गंधाणि अमणुन्न-पावकाइं, किं ते ?, अहिमड-अस्समड-हत्थिमड-गोमड-विग-सुणग-सियाल-मणुय-मज्जार-सीह-दीविय-मयकुहिय-विणट्ठकिविण-बहुदुरभिगंधेसु अन्नेसु य एवमादिसु गंधेसु अमणुन्नपावएसु न तेसु समणेण रूसियव्वं न हीलियव्वं जाव पिहिय-घाणिंदिय चरेज्ज धम्मं ३, १५। चउत्थं जिब्भिंदिएण साइय रसाणि उ मणुन्नभद्दकाइं, किं ते ?, उग्गाहिम-विविहपाण-भोयण-गुलकय खंडकय तेल्ल-घयकयभक्खेसु बहुविहेसु लवण-रससंजुत्तेसु महु-मंस बहुप्पगार-मज्जिय-निट्ठाणग-दालियंब-सेहंबदुद्ध-दहि-सरयमज्ज-वरवारुणी-सीहु-काविसायण-सायट्ठारस-बहुप्पगारेसु भोयणेसु य मणुन्न-वन्न-गंध-रस-फास-बहुदव्वसंभितेसु अन्नेसु य एवमादिएसु रसेसु मणुन्नभद्दएसु न तेसु समणेण सज्जियव्वं जाव न सइं च मतिं च तत्थ कुज्जा, पुणरवि जिब्भिंदिएण सायिय रसाति अमणुन्नपावगाइं, किं ते ?, अरस-विरस-सीय-लुक्ख-णिज्जप्प-पाणभोयणाइं दोसीण-वावन्न-कुहिय-पूइय-अमणुन्न-विणट्ठपसूय-बहुदुब्भिगंधियाइं तित्त-कडुय-कसाय-अंबिलरस-लिंड-नीरसाइं अन्नेसु य एमातिएसु रसेसु अमणुन्नपावएसु न तेसु समणेण रूसियव्वं जाव चरेज्ज धम्मं ४, १६। पंचमगं पुण फासिंदिएण फासिय फासाइं मणुन्नभद्दकाइं, किं ते ?, दग-मंडव-हीर-सेयचंदण-सीयल-विमलजल-विविह-कुसुमसत्थर-ओसीरमुत्तिय-मुणालदोसिणा-पेहुण-उक्खेवग-तालियंटवीयणग-जणिय-सुहसीयले य पवणे गिम्हकाले सुहफासाणि य बहूणि सयणाणि आसणाणि य पाउरणगुणे य सिसिरकाले अंगारपतावणा य आयव-निद्ध-मउय-सीय-उसिणलहुया य जे उउसुहफासा अंगसुह-निव्वुइकरा ते अन्नेसु य एवमादितेसु फासेसु मणुन्नभद्दएसु न तेसु समणेण सज्जियव्वं न रज्जियव्वं, न गिज्झियव्वं, न मुज्झियव्वं, न विणिग्घायं

आवज्जियव्वं, न लुभियव्वं, न अज्झोववज्जियव्वं, न तूसियव्वं, न हसियव्वं, न सतिं च मतिं च तत्थ कुज्जा, पुणरवि फासिंदिएण फासिय फासाति अमणुन्नपावकाइं, किं ते ?, अणेगवध–बंध–तालणंकण–अतिभारारोवणए अंगभंजण–सूतीनखप्पवेस-गायपच्छण-लक्खारस-खार-तेल्ल कलकलंत-तउअ-सीसक–काललोह–सिंचण–हडिबंधण रज्जुनिगल–संकलहत्थंडुय–कुंभिपाकदहण–सीहपुच्छण–उब्बंधण–सूलभेय–गय–चलणमलण–कर–चरण–कन्न–नासोट्ठ–सीसछेयण–जिब्भछेयण–वसण–नयण–हियय–दंत–भंजण–जोत्तलय–कसप्पहार–पादपण्हि–जाणुपत्थर–निवाय–पीलण–कविकच्छुअगणि विच्छुय–डक–वायातव–दंस–मसकनिवाते दुट्ठणिसज्ज–दुन्निहिया–दुब्भिकक्खड–गुरुसीयउसिणलुक्खेसु बहुविहेसु अन्नेसु य एवमाइएसु फासेसु अमणुन्नपावकेसु न तेसु समणेण रूसियव्वं, न हीलियव्वं, न निंदियव्वं, न गरहियव्वं, न खिंसियव्वं, न छिंदियव्वं, न भिंदियव्वं, न वहेयव्वं, न दुगुंछावत्तियव्वं च लब्भा उप्पाएउं, एवं फासिंदिय–भावणाभावितो भवति अंतरप्पा। मणुन्नामणुन्न–सुब्भिदुब्भि–रागदोस–पणिहियप्पा साहू मण–वयण–कायगुत्ते संवुडेणं पणिहितिंदिए चरेज्ज धम्मं ५, १७। एवमिणं संवरस्स दारं सम्मं संवरियं होइ सुप्पणिहियं इमेहिं पंचहिंवि कारणेहिं, मणवयकाय–परिरक्खिएहिं निच्चं आमरणंतं च एस जोगो नेयव्वो धितिमया मतिमया। अणासवो, अकलुसो, अच्छिद्दो, अपरिस्सावी, असंकिलिट्ठो, सुद्धो, सव्वजिणमणुन्नातो, एवं पंचमं संवरदारं फासियं पालियं सोहियं तीरियं किट्टियं अणुपालियं आणाए आराहियं भवति १८। एवं नायमुणिणा भगवया महावीरेण पन्नवियं, परूवियं, पसिद्धं, सिद्धं, सिद्धवर–सासणमिणं आघवियं, सुदेसियं, पसत्थं, पंचमं संवरदारं सम्मत्तं ति बेमि॥ एयाति वयाइं पंचवि सुव्वय ! महव्वयाइं हेउसय–विचित्तपुक्खलाइं कहियाइं अरिहंतसासणे पंच समासेण

संवरा वित्थरेण उ पणवीसति-समिय—सहियसंवुडे सया जयण-घडण—सुविसुद्धदंसणे एए अणुचरिय संजते चरमसरीरधरे भविस्सतीति १९। वायणांतरे पुण एयाणि पंचवि सुव्वय! महव्वयाणि लोकधिइकराणि, सुयसागर-देसियाणि संयम-सीलव्वय-सच्चज्जवमयाणि, नरय-तिरिय-देव-मणुय-गइविवज्जयाणि, सव्वजिण—सासणाणि, कम्मरयवियारकाणि, भवसय—विमोयगाणि, दुःक्खसय-विणासकाणि, सुक्खसय-पवत्तयाणि कापुरुषसुदुरुत्तराणि सप्पुरिस-जणतीरियाणि, निव्वाणगमणजाणाणि कहियाणि सग्ग-पवायकाणि पंचावि महव्वयाणि कहियाणि २० ॥सूत्रं २९॥ पण्हावागरणे णं एगो सुयक्खंधो दस अज्झयणा एक्कसरगा दससु चेव दिवसेसु उद्दिसिज्जंति एगंतरेसु आयंबिलेसु निरुद्धेसु आउत्तभत्त पाणणं अंगं जहा आयारस्स ॥ सूत्रं ३० ॥

॥ इति दशममध्ययनम् ॥

॥ इति प्रश्न-व्याकरण-सूत्रं दशमाङ्गं समाप्तम् ॥

[ग्रन्थाग्रं १३००]

—:०:—

॥ अर्हम् ॥

पञ्चमगणभृत्श्रीमत्सुधर्मस्वामिप्रणीतं

॥ श्रीमद्-विपाकसूत्रम् ॥

—:०:—

॥ अथ दुःखविपाकाख्यः प्रथमः श्रुतस्कन्धः ॥

॥१॥ अथ श्री मृगापुत्रीयं प्रथममध्ययनम् ॥

ते णं काले णं ते णं समए णं चंपा णामं णयरी होत्था वराणओ, पुन्नभद्दे चेइए १। ते णं काले णं ते णं समएणं समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतेवासी अज्जसुहम्मे णामं अणगारे जाइसंपन्ने वराणओ चउद्दसपुव्वी चउनाणोवगए पंचहिं अणगारसएहिं सद्धिं संपरिवुडे पुव्वाणुपुव्विं जाव जेणेव पुराणभद्दे चेइए अहापडिरूवं जाव विहरइ, परिसा निग्गया धम्मं सोचा निसम्म जामेव दिसं पाउब्भूया तामेव दिसं पडिगया २। ते णं काले णं ते णं समए णं अज्जसुहम्मअंतेवासी अज्जजंबूनामं अणगारे सत्तुस्सेहे जहा गोयमसामी तहा जाव झाणकोट्ठोवगए जाव विहरति ३। तए णं अज्जजंबूनामे अणगारे जायसड्ढे जाव जेणेव अज्जसुहुमे अणगारे तेणेव उवागए तिक्खुत्तो आयाहिणपयाहिणं करेति २ त्ता वंदति २ त्ता नमंसति २ त्ता जाव पज्जुवासति, एवं वयासी ४। ॥ सूत्रं १ ॥ जइ णं भंते! समणेणं भगवया महावीरेणं जाव संपत्तेणं दसमस्स अंगस्स पराहावागरणाणं अयमट्ठे पन्नत्ते, एक्कारसमस्स णं भंते! अंगस्स विवागसुयस्स समणेणं जाव संपत्तेणं के अट्ठे पन्नत्ते?, तते णं अज्जसुहम्मे अणगारे जंबुं अणगारं एवं वयासी—एवं खलु जंबू!

समणेणं जाव संपत्तेणं एकारसमस्स अंगस्स विवागसुयस्स दो सुयक्खंधा पन्नत्ता, तंजहा–दुहविवागा य १ सुहविवागा य २, जइ णं भंते! समणेणं जाव संपत्तेणं एकारसमस्स अंगस्स विवागसुयस्स दो सुयक्खंधा पन्नत्ता, तंजहा–दुहविवागा य १ सुहविवागा य २, १। पढमस्स णं भंते! सुयक्खंधस्स दुहविवागाणं समणेणं जाव संपत्तेणं कइ अज्झयणा पन्नत्ता?, तते णं अज्जसुहम्मे अणगारे जंबूअणगारं एवं वयासी–एवं खलु जंबू! समणेणं भगवया महावीरेणं आइगरेणं तित्थगरेणं जाव संपत्तेणं दुहविवागाणं दस अज्झयणा पन्नत्ता, तंजहा–'मियउत्ते १ य उज्झिदए २ अभग्ग ३ सगडे ४ वहस्सई ५ नंदी ६। उंबर ७ सोरियदत्ते ८ य देवदत्ता य ९ अंजू य १० ॥१॥' २। जइ णं भंते! समणेणं भगवया महावीरेणं आइगरेणं तित्थयरेणं जाव संपत्तेणं दुहविवागाणं दस अज्झयणा पन्नत्ता, तंजहा–मियउत्ते य १ जाव अंजू य १०, पढमस्स णं भंते! अज्झयणस्स दुहविवागाणं समणेणं जाव संपत्तेणं के अट्ठे पन्नत्ते?, तते णं से सुहम्मे अणगारे जंबूं अणगारं एवं वयासी–एवं खलु जंबू! ते णं काले णं ते णं समएणं मियगामे नामे णगरे होत्था वरणओ, तस्स णं मियगामस्स णयरस्स बहिया उत्तरपुरिच्छमे दिसीभाए चंदणपायवे नामं उज्जाणे होत्था, सव्वोउयवरणओ, तत्थ णं सुहम्मस्स जक्खस्स जक्खाययणे होत्था चिरातीए जहा पुन्नभद्दे, तत्थ णं मियग्गामे णगरे विजएनामं खत्तिए राया परिवसइ वन्नओ, तस्स णं विजयस्स खत्तियस्स मिया नामं देवी होत्था अहीण-वन्नओ, तस्स णं विजयस्स खत्तियस्स पुत्ते मियाए देवीए अत्तए मियापुत्ते नामं दारए होत्था, जातिअंधे जाइमूए जातिबहिरे जातिपंगुले य हुंडे य वायव्वे य, नत्थि णं तस्स दारगस्स हत्था वा पाया वा कन्ना वा अच्छी वा नासा वा, केवलं से तेसिं अंगोवंगाणं आगिई आगितिमित्ते ३। तते णं सा मियादेवी तं मियापुत्तं दारगं रहस्सियंसि भूमिघरंसि रहस्सिएणं

भत्तपाणेणं पडिजागरमाणी २ विहरइ ४ ॥ सू० २ ॥ तत्थ णं मियग्गामे णगरे एगे जातिअंधे पुरिसे परिवसइ, से णं एगेणं सचक्खुतेणं पुरिसेणं पुरओ दंडएणं पगढिज्जमाणे २ फुट्टहडाहडसीसे मच्छिया-चडगर-पहकरेणं अणिणज्जमाणमग्गे मियग्गामे नयरे गेहे २ यालुणवडियाए वित्तिं कप्पेमाणे विहरइ १। ते णं काले णं ते णं समए णं समणे भगवं महावीरे जाव समोसरिए जाव परिसा निग्गया २। तए णं से विजए खत्तिए इमीसे कहाए लद्धट्ठे समाणे जहा कोणिए तहा निग्गते जाव पज्जुवासइ ३। तते णं से जातिअंधे पुरिसे तं महया जणसद्दं जाव सुणेत्ता तं पुरिसं एवं वयासी–किन्नं देवाणुप्पिया! अज्ज मियग्गामे णगरे इंदमहेइ वा जाव निग्गच्छइ?, तते णं से पुरिसे तं जाति(य)अंधपुरिसं एवं वयासी–नो खलु देवाणुप्पिया! अज्ज मियग्गामे नयरे इंदमहे वा जाव जत्ताइ वा जन्नं एए उग्गा जाव एगदिसिं एगाभिमुहा णिग्गच्छंति, एवं खलु देवाणुप्पिया! समणे भगवं महावीरे जाव इह समागते इह संपत्ते इहेव मियगामे णगरे मिगवणुज्जाणे अहापडिरूवं उग्गहं उग्गिणिहत्ता संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे विहरति (इंदमहेइ वा जाव णिग्गच्छंति, एवं खलु देवाणुप्पिया! समणे जाव विहरति,) तते णं एते जाव निग्गच्छंति ४। तते णं से अंधपुरिसे तं पुरिसं एवं वयासी–गच्छामो णं देवाणुप्पिया! अम्हेवि समणं भगवं जाव पज्जुवासामो, तते णं से जातिअंधे पुरिसे पुरतो दंडएणं पगढिज्जमाणे २ जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागए २ त्ता तिक्खुत्तो आयाहिणपयाहिणं करेइ २ त्ता वंदति नमंसति २ त्ता जाव पज्जुवासति ५। तते णं समणे भगवं महावीरे विजयस्स रन्नो तीसे य महइमहालियाते परिसाए विचित्तं धम्ममाइक्खति जहा जीवा वज्झंति, परिसा जाव पडिगया, विजएवि गते ६ ॥ सू० ३ ॥ ते णं काले णं ते णं समएणं समणस्स भगवओ महावीरस्स जेट्ठे अंतेवासी इंदभूतिनामं अणगारे जाव विहरइ १।

तते णं से भगवं २ गोयमे तं जातिग्रंधपुरिसं पासइ २ त्ता जायसड्ढे जाव एवं वयासी–ग्रत्थि णं भंते ! केई पुरिसे जातिग्रंधे जाय(ति)ग्रंधारूवे ?, हंता ग्रत्थि, कहणणं भंते ! से पुरिसे जातिग्रंधे जातिग्रंधारूवे ?, एवं खलु गोयमा ! इहेव मियग्गामे नगरे विजयस्स खत्तियस्स पुत्ते मियादेवीए ग्रत्तए मियापुत्ते नामं दारए जातिग्रंधे जातिग्रंधारूवे, नत्थि णं तस्स दारगस्स जाव ग्रागतिमित्ते २। तते णं सा मियादेवी जाव पडिजागरमाणी २ विहरति, तते णं से भगवं गोयमे समणं भगवं महावीरं वंदइ नमंसति २ त्ता एवं वयासी–इच्छामि णं भंते ! ग्रहं तुब्भेहिं ग्रब्भणुन्नाए समाणे मियापुत्तं दारगं पासित्तए, ग्रहासुहं देवाणुप्पिया !, ३। तते णं से भगवं गोयमे समणेणं भगवया महावीरेण ग्रब्भणुन्नाए समाणे हट्ठे तुट्ठे समणस्स भगवग्रो महावीरस्स ग्रंतियाग्रो पडिनिक्खमइ २ त्ता ग्रतुरियं जाव सोहेमाणे २ जेणेव मियग्गामे णगरे तेणेव उवागच्छति २ त्ता मियग्गामं नगरं मज्झंमज्झेणं ग्रणुपविसइ २ जेणेव मियादेवीए गेहे तेणेव उवागए, ४। तते णं सा मियादेवी भगवं गोयमं एज्जमाणं पासइ २ त्ता हट्ठतुट्ठ जाव एवं वयासी–संदिसंतु णं देवाणुप्पिया ! किमागमण-पयोयणं ?, तते णं भगवं गोयमे मियं देविं एवं वयासी–ग्रहणणं देवाणुप्पिए ! तव पुत्तं पासितुं हव्वमागए ५। तते णं सा मियादेवी मियापुत्तस्स दारगस्स ग्रणुमग्गजायते चत्तारि पुत्ते सव्वालंकारविभूसिए करेति २ त्ता भगवतो गोयमस्स पादेसु पाडेति २ त्ता एवं वयासी–एए णं भंते ! मम पुत्ते पासह, तते णं से भगवं गोयमे मियादेवीं एवं वयासी–नो खलु देवाणुप्पिया ! ग्रहं एए तव पुत्ते पासिउं हव्वमागते, तत्थ णं जे से तव जेट्ठे पुत्ते मियापुत्ते दारए जाइग्रंधे जातिग्रंधारूवे जं णं तुमं रहस्सियंसि भूमिघरंसि रहस्सिएणं भत्तपाणेणं पडिजागरमाणी २ विहरसि तं णं ग्रहं पासिउं हव्वमागए ६। तते णं सा मियादेवी भगवं गोयमं एवं वयासी–से के णं गोयमा ! से

तहारूवे णाणी वा तवस्सी वा जेणं तव एसमट्ठे मम ताव रहस्सिकए तुब्भं हव्वमक्खाए जओ णं तुब्भे जाणह ?, तते णं भगवं गोयमे मियादेवीं एवं वयासि—एवं खलु देवाणुप्पिया ! मम धम्मायरिए जाव समणे भगवं महावीरे जाव ज(त)तो णं अहं जाणामि, जावं च णं मियादेवी भगवया गोयमेण सद्धिं एयमट्ठं संलवति तावं च णं मियापुत्तस्स दारगस्स भत्तवेला जाया यावि होत्था ७। तते णं सा मियादेवी भगवं गोयमं एवं वयासी—तुब्भे णं भंते ! इहं चेव चिट्ठह जा णं अहं तुब्भं मियापुत्तं दारगं उवदंसेमित्ति-कट्टु जेणेव भत्तपाणघरे तेणेव उवागच्छति उवागच्छित्ता वत्थपरियट्टं करेति वत्थपरियट्टं करित्ता कट्ठसगडियं गिण्हति कट्ठसगडियं गिण्हित्ता विपुलस्स असणपाणखाइमसाइमस्स भरेति विपुलस्स असणपाणखाइम-साइमस्स भरित्ता तं कट्ठसगडियं अणुकड्ढमाणी २ जेणामेव भगवं गोयमे तेणेव उवागच्छति उवागच्छित्ता भगवं गोयमं एवं वयासी—एह णं तुब्भे भंते ! मम (मए सद्धिं) अणुगच्छह जा णं अहं तुब्भं मियापुत्तं दारगं उवदंसेमि, तते णं से भगवं गोयमे मियं देविं पिट्ठओ समणुगच्छति ८। तते णं सा मियादेवी तं कट्ठसगडियं अणुकड्ढमाणी २ जेणेव भूमिघरे तेणेव उवागच्छइ २ त्ता चउप्पुडेणं वत्थेणं मुहं बंधेति मुहं बंधमाणि भगवं गोयमं एवं वयासी—तुब्भेऽवि य णं भंते ! मुहपोत्तियाए मुहं बंधह ९। तते णं से भगवं गोयमे मियादेवीए एवं वुत्ते समाणे मुहपोत्तियाए मुहं बंधेति, तते णं सा मियादेवी परम्मुही भूमिघरस्स दुवारं विहाडेति, तते णं गंधे निग्गच्छति से जहानामए अहिमडेति वा सप्पकडेवरे इ वा जाव ततोऽवि णं अणिट्ठतराए चेव जाव गंधे पन्नत्ते १०। तते णं से मियापुत्ते दारए तस्स विपुलस्स असणपाणखाइम-साइमस्स गंधेणं अभिभूते समाणे तंसि विपुलंसि असणपाण-खाइमसाइमंसि मुच्छिते (गढिते गिद्धे अज्झोववन्ने) ३ तं विपुलं असणं ४ आसएणं आहारेति आहारित्ता

खिप्पामेव विद्धंसेति विद्धंसेत्ता ततो पच्छा पूयत्ताए य सोणियत्ताए य परिणामेति, तंपि य णं पूयं च सोणियं च आहारेति ११। तते णं भगवओ गोयमस्स तं मियापुत्तं दारयं पासित्ता अयमेयारूवे अज्झत्थिए (चिंतिए कप्पिए पत्थिए मणोगए संकप्पे) समुप्पज्जित्था—अहो णं इमे दारए पुरापोराणाणं दुच्चिराणाणं दुप्पडिक्कंताणं असुभाणं पावाणं कडाणं कम्माणं पावगं फलवित्तिविसेसं पच्चणुब्भवमाणे विहरति, ण मे दिट्ठा णरगा वा णेरइया वा पच्चक्खं खलु अयं पुरिसे नरयपडिरूवियं वेयणं वेयतित्तिकट्टु मियं देविं आपुच्छति २ त्ता मियाए देवीए गिहाओ पडिनिक्खमति गिहा २ त्ता मियग्गामं णगरं मज्झंमज्झेणं निग्गच्छति २ त्ता जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उडागच्छति २ त्ता समणं भगवं महावीरं तिक्खुत्तो आयाहिणपयाहिणं करेइ २ त्ता वंदति नमंसति २ त्ता एवं वयासी—एवं खलु अहं तुब्मेहिं अब्भणुराणाए समाणे मियग्गामं नगरं मज्झंमज्झेणं अणुप्पविसामि जेणेव मियाए देवीए गेहे तेणेव उवागते, तते णं सा मियादेवी ममं एज्जमाणं पासइ २ त्ता हट्ठा तं चेव सव्वं जाव पूयं च सोणियं च आहारेति, तते णं मम इमे अज्झत्थिए ५ समुप्पज्जित्था—अहो णं इमे दारए पुरा जाव विहरइ १२ ॥ सू० ४ ॥ से णं भंते ! पुरिसे पुव्वभवे के आसि किंनामए वा किंगोत्तए वा कयरंसि गामंसि वा नगरंसि वा किं वा दच्चा किं वा भोच्चा किं वा समायरित्ता केसिं वा पुरा पोराणाणं दुच्चिन्नाणं दुप्पडिक्कंताणं असुहाणं पावाणं कम्माणं पावगं फलवित्तिविसेसं पच्चणुब्भवमाणे विहरति ?, गोयमाइ ! समणे भगवं महावीरे भगवं गोयमं एवं वयासी—एवं खलु गोयमा ! तेणं कालेणं तेणं समएणं इहेव जंबुद्दीवे २ भारहे वासे सयदुवारे नामं नगरे होत्था रिद्धत्थिमिए वन्नओ, तत्थ णं सयदुवारे नगरे धणवई नामं राया हुत्था, वराणओ, तस्स णं सयदुवारस्स नगरस्स अदूरसामंते दाहिणपुरच्छिमे दिसीभाए विजयवद्धमाणे णामं खेडे होत्था

रिद्धत्थिमिय-समिद्धे, तस्स णं विजयवद्धमाणस्स खेडस्स पंच गामसयाइं आभोए यावि हुत्था, तत्थ णं विजयवद्धमाणे खेडे इकाई णामं रट्ठकूडे होत्था अहम्मिए जाव दुप्पडियाणंदे, से णं इकाई रट्ठकूडे विजयवद्धमाणस्स खेडस्स पंचरहं गामसयाणं आहेवच्चं जाव पालेमाणे विहरइ, तए णं से इकाई विजयवद्धमाणस्स खेडस्स पंच गामसयाइं बहूहिं करेहि य भरेहि य विद्धीहि य उक्कोडाहि य पराभवेहि य दिज्जेहि य भेज्जेहि य कुंतेहि य लंछपोसेहि य आलीवणेहि य पंथकोट्टेहि य उवीलेमाणे २ विहम्मेमाणे २ तज्जेमाणे २ तालेमाणे २ निद्धणे करेमाणे २ विहरति १। तते णं से इकाई रट्ठकूडे विजयवद्धमाणस्स खेडस्स बहूणं राईसर-तलवर-माडंबिय-कोडुंबिय-सेट्ठि-सत्थवाहाणं अन्नेसिं च बहूणं गामेलगपुरिसाणं बहुसु कज्जेसु य कारणेसु य संतेसु य गुज्झेसु य निच्छएसु य ववहारेसु य सुणमाणे भणति-न सुणेमि, असुणमाणे भणति—सुणेमि, एवं पस्समाणे भासमाणे गिराहमाणे जाणमाणे, तते णं से इकाई रट्ठकूडे एयकम्मे एयप्पहाणे एयविज्जे एयस-मायारे सुबहुं पावकम्मं कलिकलुसं समज्जिणमाणे विहरति २। तते णं तस्स इकाइयस्स रट्ठकूडस्स अन्नया कयाइं सरीरगंसि जमगसमगमेव सोलस रोगायंका पाउब्भूया, तंजहा—सासे १ कासे २ जरे ३ दाहे ४, कुच्छिसूले ५ भगंदरे ६। अरिसे ७ अजीरए ८ दिट्ठी ९, मुद्धसूले १० अकारए ११ ॥ १ ॥ अच्छिवेयणा १२ कन्नवेयणा १३ कंडू १४ उदरे १५ कोढे १६, ३। तते णं से इकाई रट्ठकूडे सोलसहिं रोगायंकेहिं अभिभूए समाणे कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ २ त्ता एवं वयासी—गच्छह णं तुब्भे देवाणुप्पिया! विजयवद्धमाणे खेडे संघाडग-तिग-चउक्क-चच्चर-महापहपहेसु महया २ सद्देणं उग्घोसेमाणा २ एवं वदह—इहं खलु देवाणुप्पिया! इकाईरट्ठकुडस्स सरीरगंसि सोलस रोगायंका पाउब्भूया, तंजहा—सासे १ कासे २ जरे ३ जाव कोढे १६, मं जो णं इच्छति देवाणुप्पिया! विज्जो वा विज्जपुत्तो वा जाणुओ

वा जाणुयपुत्तो वा तेगिच्छी वा तेगिच्छिपुत्तो वा इक्काई-रट्ठकूडस्स तेसिं सोलसण्हं रोगायंकाणं एगमवि रोगायंकं उवसामित्तए तस्स णं इक्काई रट्ठकूडे विपुलं अत्थसंपयाणं दलयति, दोच्चंपि तच्चंपि उग्घोसेह २ त्ता एयमाणत्तियं पच्चप्पिणह ४। तते णं ते कोडुंबियपुरिसा जाव पच्चप्पिणंति, तते णं से विजयवद्धमाणे खेडे इमं एयारूवं उग्घोसणं सोच्चा निसम्म बहवे विज्जा य ६ सत्थकोस-हत्थगया सएहिं २ गिहेहिंतो पडिनिक्खमंति २ त्ता विजयवद्धमाणस्स खेडस्स मज्झंमज्झेणं जेणेव इक्काइ-रट्ठकूडस्स गिहे तेणेव उवागच्छइ २ त्ता इक्काई-रट्ठकूडस्स सरीरगं परामुसंति २ त्ता तेसिं रोगाणं निदाणं पुच्छंति २ त्ता इक्काई-रट्ठकूडस्स बहूहिं अब्भंगेहि य उव्वट्टणाहि य सिणेहपाणेहि य वमणेहि य विरेयणाहि य (सेयणाहि य) अवद्दहणाहि य अवण्हाणेहि य अणुवासणाहि य वत्थिकम्मेहि य निरूहेहि य सिरोवेहेहि य तच्छणेयि य पच्छणेहि य सिरोवत्थीहि य तप्पणाहि य पुडपागेहि य छल्लीहि य मूलेहि य कंदेहि य पत्तेहिं य पुप्फेहि य फलेहि य बीएहि य सिलियाहि य गुलियाहि य ओसहेहिं य भेसज्जेहिं य इच्छंति तेसिं सोलसण्हं रोगायंकाणं एगमवि रोगायंकं उवसमावित्तए (उवसामित्तए), नो चेव णं संचाएंति उवसामित्तए ५। तते णं ते बहवे विज्जा य विज्जपुत्ता य जाणुआ य जाणुअपुत्ता य तेगिच्छी य तेगिच्छिपुत्ता य जाहे नो संचाएंति तेसिं सोलसण्हं रोगायंकाणं एगमवि रोगायंकं उवसामित्तए ताहे संता तंता परितंता जामेव दिसिं पाउब्भूया तामेव दिसिं पडिगया ६। तते णं इक्काईरट्ठकूडे विज्जेहि य ६ पडियाइक्खिए परियारगपरिचत्ते निविण्णोसहभेसज्जे सोलसरोगायंकेहिं अभिभूए समाणे रज्जे य रट्ठे य जाव अंतेउरे य मुच्छिए रज्जं च रट्ठं च आसाएमाणे पत्थेमाणे पीहेमाणे अभिलसमाणे अट्टदुहट्टवसट्टे अड्ढाइज्जाइं वाससयाइं परमाउयं पालइत्ता काल-मासे कालं किच्चा इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए उक्कोसेणं सागरोवमट्ठितीएसु

नेरइएसु नेरइयत्ताए उववन्ने ७। से णं ततो अणंतरं उव्वट्टित्ता इहेव मियग्गामे णगरे विजयस्स खत्तियस्स मियाए देवीए कुच्छिसि पुत्तत्ताए उववन्ने, तते णं तीसे मियाए देवीए सरीरे वेयणा पाउब्भूया उज्जला जाव जलंता, जप्पभिइं च णं मियापुत्ते दारए मियाए देवीए कुच्छिसि गब्भत्ताए उववन्ने तप्पभिइं च णं मियादेवी विजयस्स खत्तियस्स अणिट्ठा अकंता अप्पिया अमणुन्ना अमणामा जाया यावि होत्था १। तते णं तीसे मियाए देवीए अन्नया कयाइं पुव्वरत्तावरत्त-कालसमयंसि कुडुंबजागरियाए जागर-माणीए इमे एयारूवे अज्झत्थिए जाव समुप्पज्जित्था—एवं खलु अहं विजयस्स खत्तियस्स पुव्विं इट्ठा ६ धेज्जा वेसासिया अणुमया आसी, जप्पभिइं च णं मम इमे गब्भे कुच्छिसि गब्भत्ताए उववन्ने तप्पभिइं च णं अहं विजयस्स खत्तियस्स अणिट्ठा जाव अमणामा जाया यावि होत्था, नेच्छति णं विजए खत्तिए मम नामं वा गोयं वा गिण्हित्तए, किमंग पुण दंसणं वा परिभोगं वा ?, तं सेयं खलु मम एयं गब्भं बहूहिं गब्भसाडणाहि य पाडणाहि य गालणाहि य मारणाहि य साडित्तए वा ४, एवं संपेहेइ संपेहित्ता बहूणि खाराणि य कडुयाणि य तूवराणि य गब्भसाडणाणि य खायमाणी य पीयमाणी य इच्छति, तं गब्भं साडित्तए वा ४ नो चेव णं से गब्भे सडइ वा ४, ८। तते णं सा मियादेवी जाहे नो संचाएति तं गब्भं साडेत्तए वा ४ ताहे संता तंता परितंता अकामिया असयंवसा (असवसा) तं गब्भं दुहंदुहेणं परिवहइ, १। तस्स णं दारगस्स गब्भगयस्स चेव अट्ठ नालीओ अब्भिंतरप्पवहाओ अट्ठ नालीओ बाहिरपवहाओ अट्ठ पूयप्पवहाओ अट्ठ सोणियप्पवहाओ दुवे दुवे कण्णंतरेसु दुवे दुवे अच्छितरेसु दुवे दुवे नक्कंतरेसु दुवे दुवे धमणिअंतरेसु अभिक्खणं अभिक्खणं पूयं च सोणियं च परिसवमाणीओ २ चेव चिट्ठंति, तस्स णं दारगस्स गब्भगयस्स चेव अग्गिए नामं वाही पाउब्भूए जे णं से दारए आहारेति से णं

खिप्पामेव विद्धंसमागच्छति पूयत्ताए सोणियत्ताए य परिणामति, तंपि य से पूयं च सोणियं च आहारेति, १०। तते णं सा मियादेवी अन्नया कयाइं नवराहं मासाणं बहुपडिपुन्नाणं दारगं पयाया, जातिअंधे जाव आगिइमित्ते, तते णं सा मियादेवी तं दारगं हुँडं अंधारूवं पासति २ त्ता भीया ४ अम्मधाइं सद्दावेति २ त्ता एवं वयासी–गच्छह णं देवाणुप्पिया! तुमं एयं दारगं एगंते उक्कुरुडियाए उज्झाहि ११। तते णं सा अम्मधाई मियादेवीए तहत्ति एयमट्ठं पडिसुणेति २ त्ता जेणेव विजए खत्तिए तेणेव उवागच्छइ तेणेव उवागच्छित्ता करयलपरिग्गहियं जाव एवं वयासी–एवं खलु सामि! मियादेवी नवराहं मासाणं जाव आगितिमित्ते, तते णं सा मियादेवी तं हुंडं अंधारूवं पासति २ त्ता भीया तत्था उव्विग्गा संजायभया ममं सद्दावेइ २ त्ता एवं वयासी–गच्छह णं तुब्भे देवाणुप्पिया! एयं दारगं एगंते उक्कुरुडियाए उज्झाहि, तं संदिसह णं सामी! तं दारगं अहं एगंते उज्झामि उदाहु मा ?, तते णं से विजए खत्तिये तीसे अम्मधाईए अंतिए एयमट्ठं सोचा तहेव संभंते उट्ठाए उट्ठेति उट्ठाए उट्ठित्ता जेणेव मियादेवी तेणेव उवागच्छति २ त्ता मियादेवीं एवं वयासी–देवाणुप्पिया! तुब्भं पढमं गब्भे तं जइ णं तुब्भे एयं एगंते उक्कुरुडियाए उज्झासि ततो णं तुब्भे पया नो थिरा भविस्सति, तो णं तुमं एयं दारगं रहस्सियगंसि भूमिघरंसि रहस्सिएणं भत्तपाणेणं पडिजागरमाणी २ विहराहि तो णं तुब्भं पया थिरा भविस्सति १२। तते णं सा मियादेवी विजयस्स खत्तियस्स तहत्ति एयमट्ठं विणएणं पडिसुणेति २ त्ता तं दारगं रहस्सियंसि भूमिघरंसि रहघरंसि भत्तपाणेणं पडिजागरमाणी विहरति, एवं खलु गोयमा! मियापुत्ते दारए पुरापुराणाणं जाव पच्चणुभवमाणे विहरति १३। ॥ सू० ५ ॥ मियापुत्ते णं भंते! दारए इओ कालमासे कालं किच्चा कहिं गमिहिति? कहिं उववज्जिहिति?, गोयमा! मियापुत्ते दारए छव्वीसं

वासाइं परमाउयं पालइत्ता कालमासे कालं किच्चा इहेव जंबुद्दीवे दीवे भारहे वासे वेयड्ढगिरिपायमूले सीहकुलंसि सीहत्ताए पच्चायाहिति, से णं तत्थ सीहे भविस्सति अहम्मिए जाव साहसिए सुबहुं पावकम्मं जाव समज्जिणाति जाव समज्जिणित्ता कालमासे कालं किच्चा इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए उक्कोस-सागरोवमट्ठितीएसु जाव उववज्जिहिति १। से णं ततो अणंतरं उव्वट्टित्ता सरीसवेसु उववज्जिहिति, तत्थ णं कालं किच्चा दोच्चाए पुढवीए उक्कोसेणं तिन्नि सागरोवमाइं, से णं ततो अणंतरं उव्वट्टित्ता पक्खीसु उववज्जिहिति, तत्थवि कालं किच्चा तच्चाए पुढवीए सत्त सागरोवमाइं, से णं ततो सीहेसु य, तयाणंतरं चोत्थीए, उरगो, पंचमीए, इत्थी, छट्टीए, मणुओ, अहे सत्तमाए, ततोऽणंतरं उव्वट्टित्ता से जाइं इमाइं जलयर-पंचिंदिय-तिरिक्ख-जोणियाणं मच्छ-कच्छभ-गाह-मगर-सुसुमारादीणं अद्धतेरस जातिकुल-कोडिजोणि-प्पमुह-सयसहस्साइं तत्थ णं एगमेगंसि जोणीविहाणंसि अणेग-सतसहस्स-खुत्तो उद्दाइत्ता २ तत्थेव भुज्जो २ पच्चायाइस्सति २। से णं ततो उव्वट्टित्ता एवं चउप्पएसु उरपरिसप्पेसु भुयपरिसप्पेसु खहयरेसु चउरिंदिएसु तेइंदिएसु बेइंदिएसु वणप्फइएसु कडुयरुक्खेसु कडुयदुद्धिएसु वाउकायेसु तेऊकायेसु आऊकायेसु पुढवीकायेसु अणेगसयसहस्सखुत्तो उद्दाइत्ता २ तत्थेव भुज्जो २ पच्चायाइस्सति, से णं ततो अणंतरं उव्वट्टित्ता सुपइट्ठपुरे नगरे गोणत्ताए पच्चायाहिति ३। से णं तत्थ उम्मुक्कबालभावे अन्नया कयाइं पढमपाउसंसि गंगाए महानईए खलीण(य)मट्टियं खणमाणे तडीए पेल्लिए समाणे कालगए तत्थेव सुपइट्ठे पुरे नगरे सेट्ठिकुलंसि पुमत्ताए पच्चायाइस्सति ४। से णं तत्थ उम्मुक्कबालभावे जाव जोव्वणगमणुपत्ते तहारूवाणं थेराणं अंतिए धम्मं सोच्चा निसम्म मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइस्सति, से णं तत्थ अणगारे भविस्सति ईरियासमिए जाव बंभयारी, से णं तत्थ बहुइं वासाइं सामन्नपरियागं पाउणित्ता आलोइयपडिक्कंते समाहिपत्ते कालमासे

कालं किच्चा सोहम्मे कप्पे देवत्ताए उववज्जिहिति ५। से णं ततो अणंतरं चयं चइत्ता महाविदेहे वासे, जाइं इमाइं कुलाइं भवंति अड्ढाइं जहा दढपइन्ने सा चेव वत्तव्वया कलाओ जाव सिज्झिहिति ६। एवं खलु जंबू! समणेणं भगवया महावीरेणं जाव संपत्तेणं दुहविवागाणं पढमस्स अज्झयणस्स अयमट्ठे पन्नत्तेत्तिबेमि सेवं भंते! २ भगवं गोयमे जाव विहरति ७॥ सू० ६ ॥॥ १ ॥

॥ इति प्रथममध्ययनम् ॥ श्रु० १ अ० १ ॥

॥२॥ अथ श्री उज्झिनकाख्यं द्वितीयमध्ययनम् ॥

जइ णं भंते! समणेणं जाव संपत्तेणं दुहविवागाणं पढमस्स अज्झयणस्स अयमट्ठे पन्नत्ते, दोच्चस्स णं भंते! अज्झयणस्स दुहविवागाणं समणेणं जाव संपत्तेणं के अट्ठे पराणत्ते?, तते णं से सुहम्मे अणगारे जंबूं अणगारं एवं वयासी—एवं खलु जंबू! ते णं काले णं ते णं समए णं वाणियगामे नामं नयरे होत्था रिद्धित्थिमियसमिद्धे, तस्स णं वाणियगामस्स उत्तरपुरच्छिमे दिसीभाए दूईपलासे नामं उज्जाणे होत्था, तत्थ णं दूइपलासे उज्जाणे सुहम्मस्स जक्खस्स जक्खाययणे होत्था, तत्थ णं वाणियगामे मित्ते नामं राया होत्था वन्नओ, तस्स णं मित्तस्स रन्नो सिरीनामं देवी होत्था वराणओ १। तत्थ णं वाणियगामे कामज्झया नामं गणिया होत्था, अहीण पुराणपंचिंदियसरीरा लक्खण-वंजण-गुणोववेया माणुम्माणप्पमाण-पडिपुन्न-सुजाय-सव्वंगसुंदरंगी सुरूवा बावत्तरिकलापंडिया चउसट्ठि-गणिया-गुणोववेया एगूणतीसविसेसे रममाणी एक्कवीस-रतिगुण-प्पहाणा बत्तीस-पुरिसोवयार-कुसला णवंगसुत्त-पडिबोहिया अट्ठारस-देसी-भासा-विसारया सिंगारागार-चारुवेसा गीयरतिय-गंधव्व-नट्टकुसला संगयगय-भणिय-विहिय-विलास-सललिय-संलाव-निउण-जुत्तोवयार-कुसला सुंदरथण-

जहण-वयण-करचरण-नयण-लावरण-विलास-कलिया ऊसियज्भया सहस्सलंभा विदिराण-छत्तचामर वालवीयणीया कन्नीरहप्पयाया यावि होत्था २ । बहूणं गणियासहस्साणं आहेवच्चं जाव विहरइ ३ ॥ सूत्रं ७ ॥ तत्थ णं वाणियगामे विजयमित्ते नामं सत्थवाहे परिवसति अड्ढे जाव अपरिभूते, तस्स णं विजयमित्तस्स सुभद्दा नामं भारिया होत्था अहीण-पुराणपंचिंदिय-सरीरा लक्खणवंजण-गुणोववेया, माणुम्माणप्पमाण-पडिपुन्न-सुजाय-सव्वंग-सुंदरंगी, तस्स णं विजयमित्तस्स पुत्ते सुभद्दाए भारियाए अत्तए उज्झियए नामं दारए होत्था अहीण जाव सुरूवे १ । ते णं काले णं ते णं समए णं समणे भगवं महावीरे समोसढे परिसा निग्गया राया निग्गओ जहा कोणिओ तहा णिग्गओ धम्मो कहिओ परिसा पडिगया, राया य गओ २ । ते णं काले णं ते णं समए णं समणस्स भगवओ महावीरस्स जेट्ठे अंतेवासी इंदभूइनामं अणगारे जाव संखित्त-विउलतेयलेसे छट्ठं छट्ठेणं जहा पन्नत्तीए पढमाए जाव जेणेव वाणियगामे तेणेव उवागच्छति, उच्चनीयअडमाणे जेणेव रायमग्गे तेणेव ओगाढे ३ । तत्थ णं बहवे हत्थी पासइ सन्नद्ध-बद्धवम्मिय-गुडिये उप्पीलिय-कच्छे उद्दामियघंटे णाणामणि-रयणविविह-गेविज्ज-उत्तरकंचुइज्जे पडिकप्पिए झयपडाग-वरपंचामेल-आरूढ-हत्थारोहे गहियाउहप्पहरणे अन्ने य तत्थ बहवे आसे पासति सन्नद्धबद्ध-वम्मियगुडिए आविद्ध-गुडिओसारिय-पक्खरे उत्तरकंचुइय--ओचूलमुह--(चुडामहा)चंडाधर-चामर-थासक-परिमंडियकडिए आरूढआसारोहे गहियाउहप्पहरणे अन्ने य तत्थ बहवे पुरिसे पासइ सणद्ध-बद्ध-वम्मियकवए उप्पीलिय-सरासणपट्टीए पिणिद्धगेवेज्जे विमलवर-बद्धचिंधपट्टे गहियाउहप्पहरणे, तेसिं च णं पुरिसाणं मज्झगयं पुरिसं पासति अवउडगबंधणं उक्कित्तकन्ननासं नेहतुप्पि-यगत्तं वज्झ-करकडि(कक्खडिय)जुयनियत्थं कंठगुणरत्त-मल्लदामं चुण्णगुंडि-यगत्तं चुणायं (धुणांतं) वज्झ(वज्झ)पाणपीयं तिलंतिलं चेव छिज्जमाणं

काकणीमंसाइं खावियंतं पावं खक्खरगसएहिं हम्ममाणं अणेगनरनारी-संपरिवुडं चच्चरे चच्चरे खंडपडहएणं उग्घोसिज्जमाणं, इमं तं णं एयारूवं उग्घोसणं पडिसुणेति–नो खलु देवा ! उज्झियगस्स दारगस्स केइ राया वा रायपुत्तो वा अवरज्झइ अप्पणो से सयाइं कम्माइं अवरज्झन्ति ४ ॥ सू० ८ ॥ तते णं से भगवतो गोयमस्स तं पुरिसं पासित्ता इमे अज्झत्थिए ५ समुप्पज्जित्था–अहो णं इमे पुरिसे जाव नरयपडिरूवियं वेयणं वेदेति-त्तिकट्टु वाणियगामे नयरे उच्चनीयमज्झिमकुले जाव अडमाणे अहापज्जत्तं समुयाणियं गिराहति २ त्ता वाणियगामे नयरे मज्झंमज्झेणं जाव पडिदंसेति १ । समणं भगवं महावीरं वंदइ नमंसइ २ त्ता एवं वयासी–एवं खलु अहं भंते ! तुज्झेहिं अब्भणुन्नाए समाणे वाणियगामं जाव तहेव वेदेति, से णं भंते ! पुरिसे पुव्वभवे के आसी ? जाव पच्चणुब्भवमाणे विहरति ?, एवं खलु गोयमा ! ते णं काले णं ते णं समए णं इहेव जंबुद्दीवे २ भारहे वासे हत्थिणाउरे नामं नगरे होत्था रिद्धत्थिमियसमिद्धे०, तत्थ णं हत्थिणाउरे नगरे सुनंदे नामं राया होत्था महया हिमवंत-मलय-मंदर-महिंदसारे०, तत्थ णं हत्थिणाउरे णगरे बहुमज्झदेसभाए एत्थ णं महं एगे गोमंडवए होत्था अणेगखंभ-सय-सन्निविट्ठे पासाईए ४, तत्थ णं बहवे णगरगोरूवाणं सणाहा य अणाहा य णगरगाविओ य णगरवसभा य णगरबलिवद्दा य णगरपड्डियाओ य पउरतणपाणिया निब्भया निरुवसग्गा (निरुविग्गा) सुहंसुहेणं परिवसंति २ । तत्थ णं हत्थिणाउरे नगरे भीमे नामं कूडग्गाहे होत्था अहम्मिए जाव दुप्पडियाणंदे ३ । तस्स णं भीमस्स कूडग्गाहस्स उप्पला नामं भारिया होत्था अहीणपुराणपंचेंदियसरीरा लक्खण-वंजण-गुणोववेया माणुम्माण-प्पमाणपडिपुन्न-सुजाय-सव्वंग-सुंदरंगी, तते णं सा उप्पला कूडग्गाहिणी अन्नया कयाई आवन्नसत्ता जाया यावि होत्था ४ । तते णं तीसे उप्पलाए कूडग्गाहिणीए तिराहं मासाणं बहुपडिपुन्नाणं

अयमेयारूवे दोहले पाउब्भूते—धन्नाओ णं ताओ अम्मयाओ ४ जाव सुलद्धे जम्मजीवियफले, जाओ णं बहूणं णगरगोरूवाणं सणाहाण य जाव वसभाण य ऊहेहि य थणेहि य वसणेहि य छप्पाहि य ककुहेहि य वहेहि य कन्नेहि य अच्छिहि य नासाहि य जिब्भाहि य उट्ठेहि य कंबलेहि य सोल्लेहि य तलिएहि य भज्जिएहि य परिसुक्केहि य लावणेहि य सुरं च महुं च मेरगं च जातिं च सीधुं च पसराणं च आसाएमाणीओ विसाएमाणीओ परिभुंजेमाणीओ परिभाएमाणीओ दोहलं विणयंति ५। तं जइ णं अहमवि बहूणं नगर जाव विणिज्जामित्तिकट्टु, तंसि दोहलंसि अविणिज्जमाणंसि सुक्का भुक्खा निम्मंसा ओलुग्गा ओलुग्गसरीरा नित्तेया दीणविमणवयणा पंडुल्लइयमुहा ओमंथिय-नयण-वयणकमला जहोइयं पुप्फवत्थ-गंध-मल्लालंकाराहारं अपरिभुञ्जमाणी करयलमलियव्व कमलमाला ओहय-मणसंकप्पा जाव झियायति ६। इमं च णं भीमे कूडग्गाहे जेणेव उप्पला कूडग्गाहिणी तेणेव उवागच्छति २ त्ता ओहय जाव पासति ओहय जाव पासित्ता एवं वयासी—किं णं तुमे देवाणुप्पिए ! ओहय-मणसंकप्पा जाव झियासि ?, तते णं सा उप्पला भारिया भीमं कूडग्गाहं एवं वयासी—एवं खलु देवाणुप्पिया ! ममं तिराहं मासाणं बहुपडिपुन्नाणं दोहला पाउब्भूया धन्ना णं ताओ जाओ णं बहूणं गोरूवाणं सणाहाण य जाव वसभाण य ऊहेहि य जाव लावणएहि य सुरं च ४ आसाएमाणी ३ दोहलं विणेंति ७। तते णं अहं देवाणुप्पिया ! तंसि दोहलंसि अविणिज्जमाणंसि जाव झियामि ८। तते णं से भीमे कूडग्गाही उप्पलं भारियं एवं वयासी—मा णं तुमं देवाणुप्पिया ! ओहयमणसंकप्पा झियाहि, अहन्नं तं तहा करिस्सामि जहा णं तव दोहलस्स संपत्ती भविस्सति, ताहिं इट्ठाहिं ५ जाव वग्गूहिं समासासेति, तते णं से भीमे कूडग्गाही अद्धरत्तकालसमयंसि एगे अबीए सन्नद्ध-बद्ध-वम्मिय-कवए जाव पहरणे सयाओ गिहाओ निग्गच्छइ

सयाओ गिहाओ निग्गच्छित्ता हत्थिणाउरे नगरे मज्झंमज्झेणं जेणेव गोमंडवे तेणेव उवागते बहुणं णगरगोरूवाणं जाव वसभाण य अप्पेगइयाणं ऊहे छिंदति जाव अप्पेगतियाणं कंबले छिंदति अप्पेगइयाणं अण्णमण्णाणं अंगोवंगाणं वियंगेति २ जेणेव सए गिहे तेणेव उवागच्छति २ उप्पलाए कूडग्गाहिणीए उवणेति ९। तते णं सा उप्पला भारिया तेहिं बहूहिं गोमंसेहि य सूलेहि य जाव सुरं च ४ आसाएमाणी तं दोहलं विणेति, तते णं सा उप्पला कूडग्गाही संपुन्नदोहला संमाणियदोहला विणीयदोहला वोच्छिन्नदोहला संपन्नदोहला तं गब्भं सुहंसुहेणं परिवहइ १०। तते णं सा उप्पला कूडग्गाहिणी अन्नया कयाइं नवण्हं मासाणं बहुपडिपुन्नाणं दारयं पयाया ११ ॥ सू० ९ ॥ तते णं तेणं दारएणं जायमेत्तेणं चेव महया महया सद्देणं विघुट्ठे विसरे (चिच्चिसरे) आरसिते, तते णं तस्स दारगस्स आरसियसद्दं सोचा निसम्म हत्थिणाउरे नगरे बहवे णगरगोरूवा जाव वसभा य भीया उव्विग्गा सव्वओ समंता विप्पलाइत्था १। तते णं तस्स दारगस्स अम्मापियरो अयमेयारूवं नामधेज्जं करेंति, जम्हा णं अम्हे इमेणं दारएणं जायमेत्तेणं चेव महया महया चिच्चीसद्देणं विघुट्ठे विस्सरे (चिच्चिसरे) आरसिए तते णं एयस्स दारगस्स आरसियं सद्दं सोचा निसम्म हत्थिणाउरे बहवे णगरगोरूवा जाव भीया ४ सव्वओ समंता विप्पलाइत्था तम्हा णं होउ अम्हं दारए गोत्तासए नामेणं, तते णं से गोत्तासे दारए उम्मुक्कबालभावे जाव जाते यावि होत्था २। तते णं से भीमे कूडग्गाहे अन्नया कयाई कालधम्मुणा संजुत्ते, तते णं से गोत्तासे दारए बहूणं मित्तणाइ-नियग-सयण-संबंधिपरिजणेणं सद्धिं संपरिवुडे रोयमाणे कंदमाणे विलवमाणे भीमस्स कूडग्गाहिस्स नीहरणं करेति नीहरणं करित्ता बहूइं लोइयमयकज्जाइं करेति ३। तते णं से सुनंदे राया गोत्तासं दारयं अन्नया कयाइ सयमेव कूडग्गाहित्ताए ठावेति, तते णं से गोत्तासे दारए कूडग्गाहे

जाए यावि होत्था अहम्मिए जाव दुप्पडियाणंदे ४। तते णं से गोत्तासे दारए कूडग्गाहित्ताए कलाकलिं अद्धरत्तियकालसमयंसि एगे अबीए सन्नद्धबद्धकवए जाव गहिआउहपहरणे सयातो गिहाओ निग्गच्छति जेणेव गोमंडवे तेणेव उवागच्छति तेणेव उवागच्छित्ता बहूणं णगरगोरूवाणं सणाहाण य जाव वियंगेति २ जेणेव सए गिहे तेणेव उवागते ५। तते णं से गोत्तासे कूडग्गाहे तेहिं बहूहिं गोमंसेहि य सूलेहि य जाव सुरं च मज्जं च आसाएमाणे विसाएमाणे जाव विहरति, तते णं से गोत्तासे कूडग्गाहे एयकम्मे (एयप्पहाणे एयविज्जे एयसमायारे) सुबहुं पावकम्मं समज्जिणित्ता पंचवाससयाइं परमाउयं पालइत्ता अट्टदुहट्टोवगए कालमासे कालं किच्चा दोच्चाए पुढवीए उक्कोसं तिसागरोवमठिइएसु नेरइएसु णेरइयत्ताए उववन्ने ६ ॥ सू० १० ॥ तते णं सा विजयमित्तस्स सत्थवाहस्स सुभद्दा नामं भारिया जायनिंदुया यावि होत्था, जाया जाया दारगा विणिहायमावज्जंति १। तते णं से गोत्तासे कूडग्गाहे दोच्चाओ पुढवीओ अणंतरं उव्वट्टित्ता इहेव वाणियगामे नगरे विजयमित्तस्स सत्थवाहस्स सुभद्दाए भारियाए कुच्छिंसि पुत्तत्ताए उववन्ने २। तते णं सा सुभद्दा सत्थवाही अण्णया कयाइं नवण्हं मासाणं बहुपडिपुन्नाणं दारगं पयाया, तते णं सा सुभद्दा सत्थवाही तं दारगं जायमेत्तयं चेव एगंते उक्कुरुडियाए उज्झावेइ उज्झावेत्ता दोच्चंपि गिण्हावेइ २ त्ता आणुपुव्वेणं सारक्खमाणी संगोवेमाणी संवड्ढेति ३। तते णं तस्स दारगस्स अम्मापियरो ठिइवडियं चंदसूर-(पासणियं)-दंसणं च जागरियं च महया इड्ढीसक्कार-समुदएणं करेंति, तते णं तस्स दारगस्स अम्मापियरो इक्कारसमे दिवसे निव्वत्ते संपत्ते बारसमे दिवसे इममेयारूवं गोणं गुणनिप्फन्नं नामधेज्जं करेंति, जम्हा णं अम्हं इमे दारए जायमित्तए चेव एगंते उक्कुरुडियाए उज्झिते तम्हा णं होउ अम्हं दारए उज्झियए नामेणं ४। तते णं से उज्झियए दारए पंचधातीपरिग्गहीए तंजहा—खीरधाईए

१ मज्जणधाईए २ मंडणधाईए ३ कीलावणधाईए ४ अंकधाईए ५ जहा दढपइन्ने जाव निव्वाघाए गिरिकंदरमल्लीणेव्व चंपयपायवे सुहंसुहेणं विहरति ५ । तते णं से विजयमित्ते सत्थवाहे अन्नया कयाइं गणिमं च १ धरिमं च २ मेज्जं च ३ पारिच्छेज्जं च ४ चउव्विहं भंडगं गहाय लवणसमुद्दं पोयवहणेणं उवागते ६ । तते णं से विजयमित्ते तत्थ लवणसमुद्दे पोयविवत्तीए निव्वुड्डभंडसारे अत्ताणे असरणे कालधम्मुणा संजुत्ते, तते णं तं विजयमित्तं सत्थवाहं जे जहा बहवे ईसर-तलवर-माडंबिय-कोडुंबिय-इब्भ-सेट्ठि-सत्थवाहा लवणसमुद्द-पोयविवत्तियं (लवणसमुद्दे पोयविवत्तीए छूढं) निव्वुड्डभंडसारं कालधम्मुणा संजुत्तं सुणेति ते तहा हत्थनिक्खेवं च बाहिरभंडसारं च गहाय एगंते अवक्कमंति ७ । तते णं सा सुभद्दा सत्थवाही विजयमित्तं सत्थवाहं लवणसमुद्दे पोयविवत्तीए निव्वुड्डभंडसारं कालधम्मुणा संजुत्तं सुणेति २ त्ता महया पइसोएणं अप्फुण्णा समाणी परसु-णियत्ताविव चंपगलता धसत्ति धरणीतलंसि सव्वंगेहिं सन्निवडिया ८ । तते णं सा सुभद्दा सत्थवाही मुहुत्तंतरेणं आसत्था समाणी बहूहिं मित्त जाव परिवुडा रोयमाणी कंदमाणी विलवमाणी विजयमित्तसत्थवाहस्स लोइयाइं मयकिच्चाइं करेति, तते णं सा सुभद्दा सत्थवाही अन्नया कयाइं लवणसमुद्दोत्तरणं च लच्छिविणासं च सत्थविणासं च पोयविणासं च पतिमरणं च अणुचिंतेमाणी २ काल-धम्मुणा संजुत्ता ८ ॥ सू० ११ ॥ तते णं ते णगरगुत्तिया सुभद्दं सत्थवाहं कालगयं जाणित्ता उज्झियगं दारगं सयाओ गिहाओ निच्छुभंति निच्छु-भित्ता तं गिहं अन्नस्स दलयंति १ । तते णं से उज्झियए दारए सयाओ गिहाओ निच्छूढे समाणे वाणियगामे णगरे सिंघाडग जाव पहेसु जूयखल-एसु वेसिताघरेसु पाणागारेसु य सुहंसुहेणं परिवड्ढति २ । तते णं से उज्झियए दारए अणोहट्टए अणिवारिए सच्छंदमती सइरप्पयारे मज्जप्पसंगी चोरप्पसंगी जूय-वेस-दारप्पसंगी जाते यावि होत्था ३ । तते णं से उज्झियते अन्नया कयाइं

कामज्झयाए गणियाए सद्धिं संपलग्गे जाते यावि होत्था, कामज्झयाए गणियाए सद्धिं विउलाइं उरालाइं माणुस्सगाइं भोगभोगाइं भुंजमाणे विहरति ४। तते णं तस्स विजयमित्तस्स रन्नो अन्नया कयाइं सिरीए देवीए जोणिसूले पाउब्भूए यावि होत्था, नो संचाएइ विजयमित्ते राया सिरीए देवीए सद्धिं उरालाइं माणुस्सगाइं भोगभोगाइं भुंजमाणे विहरित्तए ५। तते णं से विजयमित्ते राया अन्नया कयाइं उज्झियदारयं कामज्झयाए गणियाए गिहाओ निच्छुभावेति २ त्ता कामज्झयं गणियं अब्भितरियं ठावेति २ त्ता कामज्झयाए गणियाए सद्धिं उरालाइं भोगभोगाइं भुंजमाणे विहरति ६। तते णं से उज्झियए दारए कामज्झयाए गणियाए गिहाओ निच्छुभिए समाणे कामज्झयाए गणियाए मुच्छिए गिद्धे गढिए अज्झोववन्ने अन्नत्थ कत्थइ सुइं च रइं धिइं च अविंदमाणे तच्चित्ते तम्मणे तल्लेसे तदज्झवसाणे तदट्ठोवउत्ते तयप्पियकरणे तब्भावणाभाविए कामज्झयाए गणियाए बहूणि अंतराणि य छिद्दाणि य विवराणि य पडिजागरमाणे २ विहरति ७। तते णं से उज्झियए दारए अन्नया कयाइं कामज्झयाए गणियाए अंतरं लब्भेति, कामज्झयाए गणियाए गिहं रहसियं (रहस्सियगं) अणुप्पविसइ २ त्ता कामज्झयाए गणियाए सद्धिं उरालाइं माणुस्सगाइं भोगभोगाइं भुंजमाणे विहरति ८। इमं च णं मित्ते राया ण्हाते जाव पायच्छित्ते सव्वालंकारविभूसिए मणुस्स-वागुरा-परिक्खित्ते जेणेव कामज्झयाए गणियाए गिहे तेणेव उवागच्छति २ त्ता तत्थ णं उज्झियए दारए कामज्झयाए गणियाए सद्धिं उरालाइं भोगभोगाइं जाव विहरमाणं पासति २ त्ता आसुरुत्ते रुट्ठे कुविए चंडिक्कए मिसिमिसीमाणे तिवलियभिउडिं निडाले साहट्टु उज्झिययं दारयं पुरिसेहिं गिण्हावेइ २ त्ता अट्ठि-मुट्ठि-जाणुकोप्परपहार-संभग्ग-महितगत्तं करेति करेत्ता अवउडगबंधणं करेति २ त्ता एएणं विहाणेणं वज्झं आणावेति, एवं खलु गोयमा! उज्झियते दारए पुरापोराणाणं कम्माणं

जाव पच्चणुब्भवमाणे विहरति १ ॥ सू० १२ ॥ उज्भियए णं भंते ! दारए इओ कालमासे कालं किच्चा कहिं गच्छिहिति ? कहिं उववज्जिहिति ?, गोतमा ! उज्भियते दारए पणवीसं वासाइं परमाउयं पालइत्ता अज्जेव तिभागावसेसे दिवसे सूलीभिन्ने कए समाणे कालमासे कालं किच्चा इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए णेरइयत्ताए उववज्जिहिति १ । से णं ततो अणंतरं उव्वट्टित्ता इहेव जंबुद्दीवे दीवे भारहे वासे वेयड्ढ-गिरि-पायमूले वानरकुलंसि वाणरत्ताए उववज्जिहिति २ । से णं तत्थ उम्मुक्कबालभावे तिरियभोगेसु मुच्छिते गिद्धे गढिते अज्झोववन्ने जाते वानरपेलए वहेहिति तं एयकम्मे एयप्पहाणे एयविज्जे एयसमुदायारे कालमासे कालं किच्चा इहेव जंबुद्दीवे दीवे भारहे वासे इंदपुरे णगरे गणियाकुलंसि पुत्तत्ताए पच्चायाहिति ३ । तते णं तं दारयं अम्मापियरो जायमित्तकं वद्धेहिंति नपुंसगकम्मं सिक्खावेहिंति, तते णं तस्स दारयस्स अम्मापियरो णिव्वत्तबारसाहस्स इमं एयारूवं णामधेज्जं करेहिंति, तंजहा—होऊ णं पियसेणे णामं णपुंसए, तते णं से पियसेणे णपुंसए उम्मुक्कबालभावे जोव्वणगमणुप्पत्ते विण्णाय-परिणयमित्ते रूवेण य जोव्वणेण य लावण्णेण य उक्किट्ठे उक्किट्ठसरीरे भविस्सइ ४ । तते णं से पियसेणे णपुंसए इंदपुरे णगरे बहवे राईसर जाव पभिइओ बहूहि य विज्जापओगेहि य मंतचुन्नेहि य हियउड्डावणेहि य काउड्डावणेहि य निण्हवणेहि य पण्हवणेहि य वसीकरणेहि य आभि-ओगिएहि य अभिओगित्ता उरालाइं माणुस्सगाइं भोगभोगाइं भुंजमाणे विहरिस्सति ५ । तते णं से पियसेणे णपुंसए एयकम्मे एयप्पहाणे एयविज्जे एयसमुदाचारे सुबहुं पावकम्मं समज्जिणित्ता एकवीसं वाससयं परमाउयं पालइत्ता कालमासे कालं किच्चा इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए णेरइयत्ताए उववज्जिहिति ७ । ततो सिरिसिवेसु सुंसुमारे संसारो तहेव जहा पढमो जाव पुढविकायेसु अणेग-सय-सहस्स-खुत्तो उद्दाइत्ता २ तत्थेव भुज्जो २ पच्चायाइस्सति, से णं

तओ अणंतरं उव्वट्टित्ता इहेव जंबुद्दीवे दीवे भारहे वासे चंपाए नयरीए महिसत्ताए पच्चायाहिति ८ । से णं तत्थ अन्नया कयाइं गोट्ठिल्लएहिं जीवियाओ ववरोविए समाणे तत्थेव चंपाए नयरीए सेट्ठिकुलंसि पुत्त(म)त्ताए पच्चायाहिति, से णं तत्थ उम्मुक्कबालभावे तहारूवाणं थेराणं अंतिते केवलं बोहिं अणगारे सोहम्मे कप्पे जहा पढमे जाव अंतं करेहिति ९ । निक्खेवो ॥ सू० १३ ॥ बितियं अज्झयणं सम्मत्तं ॥

॥ इति द्वितीयमध्ययनम् ॥ श्रु० १–अ० २ ॥

॥ अथ अभग्नसेनाख्यं तृतीयमध्ययनम् ॥

तच्चस्स उक्खेवो–एवं खलु जंबू ! तेणं कालेणं तेणं समएणं पुरिमताले णामं णगरे होत्था, रिद्धत्थिमियसमिद्धे, तस्स णं पुरिमतालस्स णगरस्स उत्तरपुरच्छिमे दिसीभाए एत्थ णं अमोहदंसणे उज्जाणे तत्थ णं अमोहदंसिस्स जक्खस्स जक्खाययणे होत्था, तत्थ णं पुरिमताले महब्बले नामं राया होत्था, तत्थ णं पुरिमतालस्स नगरस्स उत्तरपुरच्छिमे दिसीभाए देसप्पंते अडवी संठिया १ । एत्थ णं सालानामं अडवी चोरपल्ली होत्था विसम-गिरिकंदर-कोलंब-सण्णिविट्ठा वंसी-कलंक-पागार-परिक्खित्ता छिण्ण-सेल-विसमप्पवाय-फरिहोवगूढा अब्भिंतर-पाणीया सुदुल्लभ-जलपेरंता अणेग-खंडी विदित-जण-दिन्न-निग्गमपवेसा सुबहुयस्सवि कुवियस्स जणस्स दुप्पहंसा यावि होत्था २ । तत्थ णं सालाडवीए चोरपल्लीए विजए णामं चोरसेणावई परिवसति अहम्मिए जाव विहरति, हण-छिन्न-भिन्न-वियत्तए लोहियपाणी बहु-णगर-णिग्गयजसे सूरे दढप्पहारे साहसिए सद्दवेही असिलट्ठि-पढममल्ले, से णं तत्थ सालाडवीए चोरपल्लीए पंचण्हं चोरसताणं आहेवच्चं जाव विहरति ३ ॥ सू० १४ ॥ तते णं से विजए चोरसेणावई बहूणं चोराण य पारदारियाण य गंठिभेयाण य संधिच्छेयाण य खंडपट्टाण

य अन्नेसिं च बहूणं छिन्नभिन्न-बाहिराहियाणं कुडंगे यावि होत्था १। तते णं से विजए चोरसेणावई पुरिमतालस्स णगरस्स उत्तरपुरच्छिमिल्लं जणवयं बहूहिं गामघातेहि य नगरघातेहि य गोग्गहणेहि य बंदिग्गहणेहि य पंथकोट्टेहि य खत्तखणणेहि य उवीलेमाणे २ विहम्मेमाणे (विद्धंसेमाणे) तज्जेमाणे तालेमाणे निच्छा(त्था)णे निद्धणे निक्कणे कप्पायं करेमाणे विहरति, महब्बलस्स रन्नो अभिक्खणं २ कप्पायं गेणहति, तस्स णं विजयस्स चोरसेणावइस्स खंदसिरिनामं भारिया होत्था अहीण-पुण्ण-पंचेंदिय-सरीरा जाव सव्वंगसुंदरंगी २। तस्स णं विजयचोरसेणावइस्स पुत्ते खंदसिरीए भारियाए अत्तए अभग्गसेणे णामं दारए होत्था अहीण-पुन्न-पंचेंदियसरीरे विण्णाय-परिणयमित्ते जोव्वणग-मणुपत्ते ३। तेणं कालेणं तेणं समएणं समणे भगवं महावीरे पुरिमताले नयरे समोसढे परिसा निग्गया राया निग्गओ धम्मो कहिओ परिसा राया य पडिगओ, तेणं कालेणं तेणं समएणं समणस्स भगवओ महावीरस्स जेट्ठे अंतेवासी गोयमे जाव रायमग्गं समोगाढे, तत्थ णं बहवे हत्थी पासति बहवे आसे पासति, बहवे पुरिसे सन्नद्धबद्धकवए पासति, तेसिं णं पुरिसाणं मज्झगयं एगं पुरिसं पासति अवउडय-बंधणबद्धं जाव उग्घोसेज्जमाणं ४। तते णं तं पुरिसं रायपुरिसा पढमंमि चच्चरंसि निसियावेंति निसियावेत्ता अट्ठ चुल्लप्पिउए अग्गओ घाएंति अग्गओ घाएत्ता कसप्पहारेहिं तालेमाणा २ कलुणं काकणिमंसाइं खावेंति खावेत्ता रुहिरपाणीयं च पायंति तदाणंतरं च णं दोच्चंसि चच्चरंसि अट्ठ चुल्लमाउयाओ अग्गओ घाएंति एवं तच्चे चच्चरे अट्ठ महापिउए चउत्थे अट्ठ महामाउयाओ पंचमे पुत्ते छट्ठे सुण्हाओ सत्तमे जामाउया अट्ठमे धूयाओ णवमे णत्तुया दसमे णत्तुईओ एक्कारसमे णत्तुयावई बारसमे णत्तुइणीओ तेरसमे पिउस्सियपतिया चोद्दसमे पिउसियाओ पण्ण-रसमे मासियापतिया सोलसमे माउस्सियाओ सत्तरसमे मामियाओ अट्ठा-

रसमे अवसेसं मित्तनाइ-नियगसयण-संबंधिपरियणं अग्गओ घातेंति २ त्ता कसप्पहारेहिं तालेमाणे २ कलुणं काकणिमंसाइं खावेंति रुहिरपाणीयं च पाएंति ५ ॥ सू० १५ ॥ तते णं से भगवं गोयमे तं पुरिसं पासेइ २ त्ता इमे एयारूवे अज्झत्थिए पत्थिए समुप्पन्ने जाव तहेव निग्गते एवं वयासि— एवं खलु अहन्नं भंते ! तं चेव जाव से णं भंते ! पुरिसे पुव्वभवे के आसी ? जाव विहरति १ । एवं खलु गोयमा ! तेणं कालेणं तेणं समएणं इहेव जंबुद्दीवे दीवे भारहे वासे पुरिमताले नाम नगरे होत्था रिद्धत्थिमिय-समिद्धे०, तत्थ णं पुरिमताले नगरे उदिओदिए नामं राया होत्था महया हिमवंत-मलय-मंदर-महिंदसारे०, तत्थ णं पुरिमताले निन्नए नामं अंडय-वाणियए होत्था अड्ढे जाव अपरिभूते २ । अहम्मिए जाव दुप्पडियाणंदे, तस्स णं णिएणयस्स अंडयवाणियगस्स बहवे पुरिसा दिण्णभतिभत्तवेयणा कल्लाकल्लिं कोद्दालियाओ य पत्थियापडिए गेण्हंति, पुरिमतालस्स णगरस्स परिपेरंतेसु बहवे काइअंडए य घूघूअंडए य पारेवइ-टिट्टिभि-वगि-मयूरि-कुक्कुडिअंडए य अण्णेसिं च बहूणं जलयर-थलयर-णहयरमाईणं अंडाइं गेण्हंति गेण्हेत्ता पत्थियपिडगाइं भरेंति जेणेव निन्नयए अंडवाणियए तेणामेव उवागच्छइ २ निन्नयगस्स अंडवाणियस्स उवणेंति, तते णं से तस्स निन्नयस्स अंडवाणियस्स बहवे पुरिसा दिण्णभति-भत्तवेयणा जाव बहवे काइअंडए य जाव कुक्कुडिअंडए य अन्नेसिं च बहूणं जलयरथलयर-खहयरमाईणं अंडयए तवएसु य कवल्लीसु य कंदूएसु य भज्जणएसु य इंगालेसु य तलिंति भज्जेंति सोल्लिंति तलेंता भज्जंता सोल्लेंता रायमग्गे अंतरावणंसि अंडय-पणिएणं वित्तिं कप्पेमाणा विहरंति ३ । अप्पणावि य णं से निन्नयए अंडवाणियए तेहिं बहूहिं काइय-अंडएहि य जाव कुक्कुडिअंडएहि य सोल्लेहि य तलिएहि य भज्जएहि य सुरं च आसाएमाणे विसाएमाणे विहरति, तते णं से निन्नए अंडवाणियए एयकम्मे ४ सुबहुं पावकम्मं समज्जिणित्ता

एगं वाससहस्सं परमाउयं पालइत्ता कालमासे कालं किच्चा तच्चाए पुढवीए उक्कोस-सत्त-सागरोवम-ठितीएसु णेरइएसु णेरइयत्ताए उववन्ने ४ ॥सू० १६॥ से णं तओ अणंतरं उव्वट्टित्ता इहेव सालाडवीए चोरपल्लीए विजयस्स चोरसेणावइस्स खंदसिरीए भारियाए कुच्छिंसि पुत्त(म)त्ताए उववन्ने १। तते णं तीसे खंदसिरीए भारियाए अन्नया कयाइं तिण्हं मासाणं बहुपडि-पुण्णाणं इमे एयारूवे दोहले पाउब्भूए—धण्णाओ णं ताओ अम्मयाओ जाओ णं बहूहिं मित्तणाइ-णियग-सयण-संबंधि-परियणमहिलाहिं अण्णाहि य चोरमहिलाहिं सद्धिं संपरिवुडा ण्हाया कयबलिकम्मा जाव पायच्छित्ता सव्वालंकारविभूसिया विपुलं असणं पाणं खाइमं साइमं सुरं च आसाएमाणी विसाएमाणी विहरंति जिमिय-भुत्तुत्तरागयाओ पुरिस नेवत्थिया(ज्जा) सन्न-द्धबद्धवम्मिय-कवइया जाव पहरणावरणा भरिएहि य फलिएहिं णिक्कि-ट्ठाहिं असीहिं अंसागतेहिं तोणेहिं सजीवेहिं धणूहिं समुक्खित्तेहिं सरेहिं समुल्लासियाहि य दामाहिं (दाहाहिं) लंबियाहि य ओसारियाहिं ऊरुघंटाहिं छिप्पतूरेणं वज्जमाणेणं २ महया उक्किट्ठ जाव समुद्दरवभूयंपिव करेमाणीओ सालाडवीए चोरपल्लीए सव्वओ समंता ओलोएमाणीओ २ आहिंडेमाणीओ २ दोहलं विणेंति २। तं जइ णं अहंपि जाव विणिज्जामित्तिकट्टु तंसि दोहलंसि अविणिज्जमाणंसि जाव झियाति ३। तते णं से विजए चोरसेणावई खंदसिरिभारियं ओहय जाव पासति, ओहय जाव पासित्ता एवं वयासी—किण्णं तुमं देवाणुप्पिया! ओहय जाव झियासि ?, तते णं सा खंदसिरी विजयं एवं वयासी—एवं खलु देवाणुप्पिया! मम तिण्हं मासाणं जाव झियामि ४। तते णं से विजए चोरसेणावई खंदसिरीए भारियाए अंतिए एयमट्ठं सोच्चा निसम्म जाव खंदसिरिभारियं एवं वयासी--अहासुहं देवाणुप्पियत्ति एयमट्ठं पडिसुणेति, तते णं सा खंदसिरिभारिया विजएणं चोरसेणावतिणा अब्भणुण्णाया समाणी हट्ठतुट्ठ जाव बहूहिं मित्त जाव अण्णाहि य बहूहिं

चोरमहिलाहिं सद्धिं संपरिवुडा रहाया जाव विभूसिया विपुलं असणं ४ सुरं च आसाएमाणा विसाएमाणा ४ विहरइ जिमियभुत्तुत्तरागया पुरिस-नेवत्था सन्नद्धबद्ध जाव आहिंडमाणी दोहलं विणेति, तते णं सा खंदसिरी भारिया संपुन्नदोहला संमाणियदोहला विणीयदोहला वोच्छिन्नदोहला संपन्नदोहला तं गब्भं सुहंसुहेणं परिवहति ५। तते णं सा खंदसिरी चोरसेणावतिणी णवरहं मासाणं बहुपडिपुन्नाणं दारगं पयाया, तते णं से विजयए चोरसेणावती तस्स दारगस्स महया इड्ढिसक्कारसमुदएणं दसरत्तं ठिइवडियं करेति, तते णं से विजयए चोरसेणावई तस्स दारगस्स एक्कारसमे दिवसे विपुलं असणं ४ उवक्खडावेति मित्तणाति-णियग-सयण-संबंधि-परियणं आमंतेति २ जाव तस्सेव मित्तनाइ-णियग-सयण-संबंधि-परिजणस्स पुरओ एवं वयासी—जम्हा णं अम्हं इमंसि दारगंसि गब्भगयंसि समाणंसि इमे एयारूवे दोहले पाउब्भूते तम्हा णं होउ अम्हं दारगे अभग्गसेणे णामेणं ६। तते णं से अभग्गसेणे कुमारे पंचधातीए जाव परिवड्ढइ ७ ॥ सू० १७ ॥ तते णं से अभग्गसेणे कुमारे उम्मुक्कबालभावे यावि होत्था अट्ठ दारियाओ जाव अट्ठओ दाओ उप्पिं पासाए भुंजमाणे विहरइ १। तते णं से विजए चोरसेणावई अन्नया कयाई कालधम्मुणा संजुत्ते, तते णं से अभग्गसेणे कुमारे पंचहिं चोरसतेहिं सद्धिं संपरिवुडे रोयमाणे कंदमाणे विलवमाणे विजयस्स चोरसेणावइस्स महया इड्ढिसक्कारसमुदएणं णीहरणं करेति २ त्ता बहूइं लोइयाइं मयकिच्चाइं करेति २ केवइकालेणं अप्पसोए जाए यावि होत्था, तते णं ताइं पंच चोरसयाइं अन्नया कयाइं अभग्गसेणं कुमारं सालाडवीए चोरपल्लीए महया २ चोरसेणावइत्ताए अभिसिंचंति २। तते णं से अभग्गसेणे कुमारे चोरसेणावई जाते अहम्मिए जाव कप्पायं गेण्हति, तते णं से जाणवया पुरिसा अभग्गसेणेणं चोरसेणावइणा बहुगाम-घातावणाहिं ताविया समाणा अण्णमन्नं सद्दावेंति २ त्ता एवं वयासी—

एवं खलु देवाणुप्पिया ! अभग्गसेणे चोरसेणावई पुरिमतालस्स णगरस्स उत्तरिल्लं जणवयं बहूहिं गामघातेहिं जाव निद्धणं करेमाणे विहरति, तं सेयं खलु देवाणुप्पिया ! पुरिमताले णगरे महब्बलस्स रन्नो एयमट्ठं विन्न-वित्तते (निवेदित्तए) ३ । तते णं ते जाणवया पुरिसा एयमट्ठं अन्नमणणेणं पडिसुणेंति २ महत्थं महग्घं महरिहं रायरिहं पाहुडं गेण्हेंति २ त्ता जेणेव पुरिमताले णगरे तेणेव उवागते २ जेणेव महब्बले राया तेणेव उवागते ३ महब्बलस्स रन्नो तं महत्थं जाव पाहुडं उवणेंति करयल जाव अंजलिं कट्टु महब्बलं रायं एवं वयासी–एवं खलु सामी ! सालाडवीए चोरपल्लीए अभग्गसेणे चोरसेणावई अम्हे बहूहिं गामघातेहि य जाव निद्धणे करेमाणे विहरति, तं इच्छामि णं सामी ! तुज्झं बाहुच्छाया-परिग्गहिया निब्भया निरुवसग्गा (निरुविग्गा) सुहंसुहेणं परिवसित्तएत्ति-कट्टु पादपडिया पंजलिउडा महब्बलं रायं एतमट्ठं विणणवेंति ४ । तते णं से महब्बले राया तेसिं जणवयाणं पुरिसाणं अंतिए एयमट्ठं सोचा निसम्म आसुरुत्ते जाव मिसिमिसेमाणे तिवलियं भिउडिं निलाडे साहट्टु दंडं सद्दावेति २ त्ता एवं वयासी–गच्छह णं तुमं देवाणुप्पिया ! सालाडविं चोरपल्लिं विलुंपाहि २ अभग्गसेणं चोरसेणावइं जीवग्गाहं गेण्हाहि २ ममं उवणेहि ५ । तते णं से दंडे तहत्ति विणयेणं एयमट्ठं पडिसुणेति, तते णं से दंडे बहूहिं पुरिसेहिं सणणद्धबद्ध जाव पहरणेहिं सद्धिं संपरिवुडे मग्ग-इतेहिं फलएहिं जाव छिप्पतूरेणं वज्जमाणेणं महया जाव उक्किट्ठि जाव करेमाणे पुरिमतालं णगरं मज्झंमज्झेणं निग्गच्छति २ त्ता जेणेव सालाडवी चोरपल्ली तेणेव पहारेत्थ गमणाते, तते णं तस्स अभग्गसेणस्स चोरसेणा-वतियस्स चारपुरिसा इमीसे कहाए लद्धट्ठा समाणा जेणेव सालाडवी चोरपल्ली जेणेव अभग्गसेणे चोरसेणावई तेणेव उवागच्छंति २ त्ता करयल जाव एवं वयासी–एवं खलु देवाणुप्पिया ! पुरिमताले णगरे महब्बलेणं

रन्ना महया भडचडगरेणं दंडे आणत्ते–गच्छह णं तुमे देवाणुप्पिया ! सालाडविं चोरपल्लिं विलुंपाहित्ता अभग्गसेणं चोरसेणावतिं जीवगाहं गेराहाहि २ त्ता ममं उवणेहि, तते णं से दंडे महया भडचडगरेणं जेणेव सालाडवी चोरपल्ली तेणेव पहारेत्थ गमणाए ६। तते णं से अभग्गसेणे चोरसेणावई तेसिं चारपुरिसाणं अंतिए एयमट्ठं सोच्चा निसम्म पंच चोरसताइं सद्दावेति सद्दावेत्ता एवं वयासी–एवं खलु देवाणुप्पिया ! पुरिमताले णगरे महब्बले जाव तेणेव पहारेत्थ गमणाए आगते ७। तते णं से अभग्गसेणे ताइं पंच चोरसताइं एवं वयासी–तं सेयं खलु देवाणुप्पिया ! अम्हं तं दंडं सालाडविं चोरपल्लिं असंपत्तं अंतरा चेव पडिसेहित्तए, तए णं ताइं पंच चोरसताइं अभग्गसेणस्स चोरसेणावइस्स तहत्ति जाव पडिसुणेंति ८। तते णं से अभग्गसेणे चोरसेणावई विपुलं असणं पाणं खाइमं साइमं उवक्खडावेति २ त्ता पंचहिं चोरसएहिं सद्धिं राहाते जाव पायच्छित्ते भोयणमंडवंसि तं विपुलं असणं ४ सुरं च ६ आसाएमाणे ४ विहरति ६। जिमिय-भुत्तुत्तरागतेवि अ णं समाणे आयंते चोक्खे परमसुइभूए पंचहिं चोरसएहिं सद्धिं अल्लं चम्मं दुरूहति अल्लं चम्मं दुरूहइत्ता सगाणद्धबद्ध जाव पहरणेहिं मग्ग(ग्गा)इएहिं जाव रवेणं पुव्वा(पच्चा)वरराहकालसमयंसि सालाडवीओ चोरपल्लीओ णिग्गच्छइ चोरपल्लीओ णिगच्छइत्ता विसमदुग्गगहणं ठिते गहियभत्तपाणे तं दंडं पडिवालेमाणे चिट्ठति १०। तते णं से दंडे जेणेव अभग्गसेणे चोरसेणावई तेणेव उवागच्छति तेणेव उवागच्छित्ता अभग्गसेणेणं चोरसेणावतिणा सद्धिं संपलग्गे यावि होत्था ११। तते णं से अभग्गसेणे चोरसेणावई तं दंडं खिप्पामेव हयमहिय-पवरवीरघाइय-विवडिय-चिंधधयपडागं जाव पडिसेहिए, तते णं से दंडे अभग्गसेणेणं चोरसेणावइणा हयमहिय जाव पडिसेहिए समाणे अथामे अबले अवीरिए अपुरिसक्कारपरक्कमे अधारणिज्जमितिकट्टु जेणेव पुरिमताले नगरे जेणेव

महब्बले राया तेणेव उवागच्छति २ करयल जाव एवं वयासी–एवं खलु सामी ! अभग्गसेणे चोरसेणावई विसमदुग्गगहणं ठिते गहितभत्तपाणीते नो खलु से सक्का केणति सुबहुएणावि आसबलेण वा हत्थिबलेण वा जोहबलेण वा रहबलेण वा चाउरंगेणंपि उरंउरेणं गिण्हित्तए ताहे सामेण य भेदेण य उवप्पदाणेण य विसंभमाणेउं पयते यावि होत्था, जेवि य से अब्भितरगा सीसगभमा मित्तनाति-णियग-सयण-संबंधिपरियणं च विपुल-धण-कणग-रयण-संतसारसावइज्जेणं भिंदति अभग्गसेणस्स य चोरसेणावइस्स अभिक्खणं २ महत्थाइं महग्घाइं महरिहाइं रायारिहाइं पाहुडाइं पेसेइ अभंगसेणं चोरसेणावतिं विसंभमाणेति १२ ॥ सू० १८ ॥ तते णं से महब्बले राया अन्नया कयाइं पुरिमताले णगरे एगं महं महतिमहालियं कूडागारसालं करेति अणेगखंभसयसन्निविट्ठं पासाईयं अभिरूवं पडिरूवं, दरसणिज्जं १ । तते णं से महब्बले राया अन्नया कयाइं पुरिमताले णगरे उस्सुक्कं जाव दसरत्तं पमोयं उग्घोसावेति २ कोडुंबियपुरिसे सद्दावेति २ एवं वयासी–गच्छह णं तुब्भे देवाणुप्पिया ! सालाडवीए चोरपल्लीए तत्थ णं तुम्हे अभग्गसेणं चोरसेणावइं करयल जाव एवं वयासी–एवं खलु देवाणुप्पिया ! पुरिमताले णयरे महाबलस्स रन्नो उस्सुक्के जाव दसरत्ते पमोदे उग्घोसेति तं किन्नं देवाणुप्पिया ! विउलं असणं ४ पुप्फवत्थगंध-मल्लालङ्कारे य ते इहं हव्वमाणिज्जउ उदाहु सयमेव गच्छित्ता ?, तते णं कोडुंबियपुरिसा महब्बलस्स रन्नो करयल जाव पडिसुणेंति २ पुरिमतालाओ णगराओ पडिनिक्खमंति २ णातिविकिट्ठेहिं अद्धाणेहिं सुहेहिं वसहि-पायरासेहिं जेणेव सालाडवी चोरपल्ली तेणेव उवागच्छंति अभग्गसेणं चोरसेनापतिं करयल जाव एवं वयासी–एवं खलु देवाणुप्पिया ! पुरिमताले नगरे महब्बलस्स रन्नो उस्सुक्के जाव उदाहु सयमेव गच्छित्ता ?, तते णं से अभग्गसेणे चोरसेणावई ते कोडुंबियपुरिसे एवं वयासी–अहन्नं

देवाणुप्पिया ! पुरिमतालनगरं सयमेव गच्छामि, ते कोडुंबियपुरिसे सक्कारेति सम्माणेति २ पडिविसज्जेति २। तते णं से अभग्गसेणे चोरसेणावई बहूहिं मित्त जाव परिवुडे राहाते जाव पायच्छित्ते सव्वालंकारविभूसिए सालाडवीओ चोरपल्लीओ पडिनिक्खमति २ त्ता जेणेव पुरिमताले नगरे जेणेव महब्बले राया तेणेव उवागच्छति २ त्ता करयल जाव महब्बलं रायं जएणं विजएणं वद्धावेति २ त्ता महत्थं जाव पाहुडं उवणेति ३। तते णं से महब्बले राया अभग्गसेणस्स चोरसेणावइस्स तं महत्थं जाव पडिच्छति, अभग्गसेणं चोरसेणावतिं सक्कारेति सम्माणेति पडिविसज्जेति कूडागारसालं च से आवसहं दलयति, तते णं से अभग्गसेणे चोरसेणावती महब्बलेणं रन्ना विसज्जिए समाणे जेणेव कूडागारसाला तेणेव उवागच्छइ ४। तते णं से महब्बले राया कोडुंबियपुरिसे सद्दावेति २ त्ता एवं वयासी—गच्छह णं तुब्भे देवाणुप्पिया ! विपुलं असणं पाणं खाइमं साइमं उवक्खडावेह २ तं विउलं असणं ४ सुरं च ६ सुबहुं पुप्फवत्थगंधमल्लालंकारं च अभग्गसेणस्स चोरसेणावइस्स कूडागारसालं उवणेह तते णं ते कोडुंबियपुरिसा करयल जाव उवणेंति ५। तते णं से अभग्गसेणे चोरसेणावई बहूहिं मित्तनाइ जाव सद्धिं संपरिवुडे राहाते जाव सव्वालंकारविभूसिए तं विउलं असणं ४ सुरं च ६ आसाएमाणे पमत्ते विहरति ६। तते णं से महब्बले राया कोडुंबियपुरिसे सद्दावेति २ एवं वयासी—गच्छह णं तुम्हे देवाणुप्पिया ! पुरिमतालस्स णगरस्स दुवाराइं पिहेह अभग्गसेणं चोरसेणावतिं जीवगाहं गिराहइ ममं उवणेह, तते णं ते कोडुंबियपुरिसा करयल जाव पडिसुणेंति २ पुरिमतालस्स णगरस्स दुवाराइं पिहेंति अभग्गसेणं चोरसेणावइं जीवगाहं गिराहंति महब्बलस्स रराणो उवणेंति तते णं से महब्बले राया अभग्गसेणं चोरसेनावइं एतेणं विहाणेणं वज्झं आणवेति ७। एवं खलु गोतमा ! अभग्गसेणे चोरसेणावई पुरापुराणाणं जाव विहरति ८। अभग्गसेणे णं भंते !

चोरसेणावई कालमासे कालं किच्चा कहिं गच्छिहिति ? कहिं उववज्जिहिति ?, गोयमा ! अभग्गसेणे चोरसेणावई सत्ततीसं वासाइं परमाउयं पालइत्ता अज्जेव तिभागावसेसे दिवसे सूलभिन्ने कए समाणे कालमासे कालं किच्चा इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए उक्कोससागरोवमट्ठिईएसु नेरइएसु उववज्जिहिति, से णं ततो अणंतरं उव्वट्टित्ता एवं संसारो जहा पढमो जाव पुढवीए, ततो उव्वट्टित्ता वाणारसीए नयरीए सूयरत्ताए पच्चायाहिति, से णं तत्थ सूयरिएहिं जीवियाओ ववरोविए समाणे तत्थेव वाणारसीए नयरीए सेट्ठिकुलंसि पुत्त(म)त्ताए पच्चायाहिति, से णं तत्थ उम्मुक्कबालभावे एवं जहा पढमे जाव अंतं काहिति १। निक्खेवो ॥ सू० ११ ॥ ततियं अज्झयणं समत्तं ॥

॥ इति तृतीयमध्ययनम् ॥ श्रु० १--अ० ३ ॥

॥ अथ शकटाख्यं चतुर्थमध्ययनम् ॥

जइ णं भंते ! चउत्थस्स उक्खेवो, एवं खलु जंबू ! तेणं कालेणं तेणं समएणं साहंजनीनामं नयरी होत्था रिद्धत्थिमियसमिद्धा, तीसे णं साहंजणीए बहिया उत्तरपुरच्छिमे दिसीभाए देवरमणे णामं उज्जाणे होत्था, तत्थ णं अमोहस्स जक्खस्स जक्खाययणे होत्था पुराणे १। तत्थ णं साहंजणीए णयरीए महचंदे नामं राया होत्था महयाहिमवंत-महंत-मलय-मंदर-महिंदसारे, तस्स णं महचंदस्स रन्नो सुसेणे नामं अमच्चे होत्था सामभेयदंड-उवप्पयाण-नीइ-सुपउत्त-नय-विहन्नू जाव निग्गहकुसले, तत्थ णं साहंजणीए नयरीए सुदंसणाणामं गणिया होत्था वन्नओ, तत्थ णं साहंजणीए नयरीए सुभद्दे नामं सत्थवाहे परिवसइ अड्ढे जाव अपरिभूए, तस्स णं सुभद्दस्स सत्थवाहस्स भद्दानामं भारिया होत्था अहीण जाव सव्वंगसुंदरंगी, तस्स णं सुभद्दसत्थवाहस्स पुत्ते भद्दाए भारियाए अत्तए सगडे नामं दारए होत्था अहीण जाव

सव्वंग-सुंदरंगे २। तेणं कालेणं तेणं समएणं समणे भगवं महावीरे समोसढे परिसा राया य निग्गए धम्मो कहिओ परिसा पडिगया ३। तेणं कालेणं तेणं समएणं समणस्स भगवओ महावीरस्स जेट्ठे अंतेवासी जाव रायमग्गमोगाढे तत्थ णं हत्थी आसे पुरिसे पासति तेसिं च णं पुरिसाणं मज्झगए पासति एगं सइत्थीयं पुरिसं अवउडगबंधणं उक्खित्त-कन्ननासं जाव उग्घोसेणं चिंता तहेव जाव भगवं वागरेति, एवं खलु गोयमा! तेणं कालेणं तेणं समएणं इहेव जंबुद्दीवे दीवे भारहे वासे छगलपुरे नामं णगरे होत्था, तत्थ सीहगिरिनामं राया होत्था महयाहिमवत-महंत-मलय-मंदर-महिंदसारे ४। तत्थ णं छगलपुरे णगरे छणिए नामं छागलीए परिवसति अड्ढे जाव अपरिभूए अहम्मिए जाव दुप्पडियाणंदे, तस्स णं छणियस्स छागलियस्स बहवे अयाण य एलाण य रोज्झाण य वसभाण य ससयाण य सूयराण य पसयाण य सिंघाण य हरिणाण य मयूराण य महिसाण य सतबद्धाण य सहस्सबद्धाण य जूहाणि वाडगंसि सन्निरुद्धाइं चिट्ठंति ५। अन्ने य तत्थ बहवे पुरिसा दिन्नभइभत्तवेयणा बहवे य अए जाव महिसे य सारक्खमाणा संगोवेमाणा चिट्ठंति, अणणे य से बहवे पुरिसा अयाण य जाव गिहंसि निरुद्धा चिट्ठंति ६। अन्ने य से बहवे पुरिसा दिन्नभइभत्तवेयणा बहवे अए य जाव महिसे य सयए य सहस्से य जीवियाओ ववरोविंति २ मंसाइं कप्पणीकप्पियाइं करेंति छणीयस्स छागलीयस्स उवणेंति, अन्ने य से बहवे पुरिसा ताइं बहूयाइं अयमंसाइं जाव महिसमंसाइं तवएसु य कवल्लीसु य कंदूएसु य भज्जणेसु य इंगालेसु य तलेंति य भज्जेंति य सोलयंति य २ ततो य रायमग्गंसि वित्तिं कप्पेमाणा विहरंति ७। अप्पणावि य णं से छन्नियए छागलीए तेहिं बहुविहअयहिं मंसेहिं जाव महिसमंसेहि य सोल्लेहि य तलेहि य भज्जेहि य सुरं च ६ आसाएमाणे विहरति, तते णं से छन्नीए य छागलीए एयकम्मे

एयप्पहाणे एयविज्जे एयसमुदायारे सुबहुं पावकम्मं कलिकलुसं समज्जिणित्ता सत्तवाससयाइं परमाउयं पालइत्ता कालमासे कालं किच्चा चोत्थीए पुढवीए उक्कोसेणं दससागरोवमठिईएसु नेरइएसु नेरइयत्ताए उववन्ने ८ ॥सू० २०॥ तते णं तस्स सुभद्दसत्थवाहस्स भद्दा भारिहा जाव निंदुया यावि होत्था, जाया जाया दारगा विनिहायमावज्जंति १। तते णं से छन्नीए छागले चोत्थीए पुढवीए अणंतरं उव्वट्टित्ता इहेव साहंजणीए नयरीए सुभद्दस्स सत्थवाहस्स भद्दाए भारियाए कुच्छिंसि पुत्तत्ताए उववन्ने २। तते णं सा भद्दा सत्थवाही अन्नया कयाइं नवरहं मासाणं बहुपडिपुन्नाणं दारगं पयाया, तए णं तं दारगं अम्मापियरो जायमेत्तं चेव सगडस्स हेट्ठातो ठवेंति दोच्चंपि गिराहावेंति अणुपुव्वेणं सारक्खंति संगोवेंति संवड्ढेंति जहा उज्झियए जाव जम्हा णं अम्हं इमे दारए जायमेत्ते चेव सगडस्स हेट्ठा ठविए तम्हा णं होऊ णं अम्हं एस दारए सगडे नामेणं, सेसं जहा उज्झियते ३। सुभद्दे लवणसमुद्दे कालगते मायावि कालगया, सेऽवि सयाओ गिहाओ निच्छूढे तते णं से सगडे दारए सयातो गिहाओ निच्छूढे समाणे सिंघाडग तहेव जाव सुदरिसणाए गणियाए सद्धिं संपलग्गे यावि होत्था ४। तते णं से सुसेणे अमच्चे तं सगडं दारगं अन्नया कयाइं सुदरिसणाए गणियाए गिहाओ निच्छुभावेति २ सुदंसणियं गणियं अब्भिंतरियं ठवेति २ सुदरिसणाए गणियाए सद्धिं उरालाइं माणुस्सगाइं भोगभोगाइं भुंजमाणे विहरति ५। तते णं से सगडे दारए सुदरिसणाए गिहाओ निच्छूढे समाणे अन्नत्थ कत्थवि सुतिं वा अलभमाणे अन्नया कयाइं रहसियं सुदरिसणागेहं अणुप्पविसइ २ सुदरिसिणाए सद्धिं उरालाइं भोगभोगाइं भुंजमाणे विहरइ ६। इमं च णं सुसेणे अमच्चे राहाते जाव विभूसिए मणुस्सवग्गुराए परिक्खित्ते जेणेव सुदरिसणा-गणियाए गेहे तेणेव उवाग-च्छति तेणेव उवागच्छइत्ता सगडं दारयं सुदंसणाए गणियाए सद्धिं उरालाइं

भोगभोगाइं भुंजमाणं पासइ २ आसुरुत्ते जाव मिसिमिसेमाणे तिवलियं भिउडिं निडाले साहट्टु सगडं दारयं पुरिसेहिं गिराहाविति २ अट्ठि जाव महियं करेति यओ अवउडगबंधणगं करेति २ जेणेव महचंदे राया तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता करयल जाव एवं वयासी—एवं खलु सामी! सगडे दारए मम अंतेपुरंसि अवरद्धे ७। तते णं से महचंदे राया सुसेणं अमच्चं एवं वयासी—तुमं चेव णं देवाणुप्पिया! सगडस्स दारगस्स दंडं निव्वत्तेहि, तए णं से सुसेणे अमच्चे महचंदेणं रन्ना अब्भणुन्नाए समाणे सगडं दारयं सुदरिसणं च गणियं एएणं विहाणेणं वज्झं आणवेति, तं एवं खलु गोयमा! सगडे दारगे पोराणपुराणाणं दुच्चिराणाणं पच्चणुब्भवमाणे विहरति ८॥ सू० २१॥ सगडे णं भंते! दारए कालगए कहिं गच्छि-हिति? कहिं उववज्जिहिइ?, सगडे णं दारए गोयमा! सत्तावरणं वासाइं परमाउयं पालइत्ता अज्जेव तिभागावसेसे दिवसे एगं महं अओमयं तत्त-समजोइभूयं इत्थिपडिमं अवयासाविए समाणे कालमासे कालं किच्चा इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए णेरइयत्ताए उववज्जिहिति १। से णं ततो अणंतरं उव्वट्टित्ता रायगिहे णगरे मातंगकुलंसि जुगलत्ताए पच्चायाहिति, तते णं तस्स दारगस्स अम्मापियरो णिवत्तबारसगस्स इमं एयारूवं गोणणं नामधेज्जं करिस्संति, तं होऊ णं दारगं सगडे नामेणं होऊ णं दारिया सुदरिसणानामेणं, तते णं से सगडे दारए उम्मुक्कबालभावे जोव्वणग-मणुपत्ते अलं भोगसमत्थे यावि भविस्सइ २। तए णं सा सुदरिसणावि दारिया उम्मुक्कबालभावा विराणाय-परिणयमेत्ता जोव्वणगमणुप्पत्ता रूवेण य जोव्वणेण य लावरणेण य उक्किट्ठा उक्किट्ठसरीरा यावि भविस्सइ ३। तए णं से सगडे दारए सुदरिसणाए रूवेण य जोव्वणेण य लावरणेण य मुच्छिए सुदरिसणाए सद्धिं उरालाइं माणुस्सगाइं भोगभोगाइं भुंजमाणे विहरिस्सति ४। तते णं से सगडे दारए अन्नया कयाइं सयमेव कूडगाहित्तं उवसंपज्जित्ताणं

विहरिस्सति, तते णं से सगडे दारए कूडग्गाहे भविस्सइ अहम्मिए जाव दुप्पडियाणंदे एयकम्मे एयप्पहाणे एयविज्जे एयसमुदायारे सुबहुं पावकम्मं कलिकलुसं समज्जिणित्ता कालमासे कालं किच्चा इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए णेरइयत्ताए उववज्जिहिति, संसारो तहेव जाव पुढवीए ५। से णं ततो अणंतरं उव्वट्टित्ता वाणारसीए नयरीए मच्छत्ताए उववज्जिहिति, से णं तत्थ णं मच्छबंधिएहिं वहिए तत्थेव वाणारसीए नयरीए सेट्ठिकुलंसि पुत्तत्ताए पच्चायाहिति बोहिं पव्वइस्सति सोहम्मे कप्पे महाविदेहे वासे सिज्झिहिति ६। निक्खेवो ! दुहविवागाणं चोत्थस्स अज्झयणस्स अयमट्ठे पन्नत्ते ॥ सू० २२ ॥ चोत्थं अज्झयणं समत्तं ॥

॥ इति चतुर्थमध्ययनम् ॥ श्रु० १-अ० ४ ॥

॥ अथ बृहस्पतिदत्ताख्यं पञ्चममध्ययनम् ॥

जइ णं भंते ! पंचमस्स अज्झयणस्स उक्खेवो, एवं खलु जंबू ! तेणं कालेणं तेणं समएणं कोसंबीनामं नयरी होत्था रिद्धत्थिमियसमिद्धे, बाहिं चंदोतरणे उज्जाणे सेयभद्दे जक्खे, तत्थ णं कोसंबीए नयरीए सयाणीए नामं राया होत्था महता-हिमवंत-महंत-मलय-मंदर-महिंदसारे, मियावती देवी, तस्स णं सयाणीयस्स पुत्ते मियादेवीए अत्तए उदायणे णामं कुमारे होत्था अहीण जाव सव्वंगसुंदरंगे जुवराया, तस्स णं उदायणस्स कुमारस्स पउमावतीनामं देवी होत्था, तस्स णं सयाणीयस्स सोमदत्ते नामं पुरोहिए होत्था रिउव्वेय-जजुवेय-सामवेय-अथव्वणवेय-कुसले, तस्स णं सोमदत्तस्स पुरोहियस्स वसुदत्ता नामं भारिया होत्था, तस्स णं सोमदत्तस्स पुत्ते वसुदत्ताए अत्तए बहस्सतिदत्ते नामं दारए होत्था अहीण जाव सव्वंगसुंदरंगे १। तेणं कालेणं तेणं समएणं समणे भगवं महावीरे समोसरणं, तेणं कालेणं तेणं समएणं भगवं गोयमे तहेव जाव रायमग्ग-

मोगाढ़े तहेव पासइ हत्थी श्रासे पुरिसमज्झे पुरिसं चिंता तहेव पुच्छति पुव्वभवं भगवं वागरेति २। एवं खलु गोयमा! तेणं कालेणं तेणं समएणं इहेव जंबुद्दीवे दीवे भारहे वासे सव्वतोभद्दे नामं नयरे होत्था रिद्धत्थिमियसमिद्धे, तत्थ णं सव्वतोभद्दे नगरे जियसत्तू नामं राया होत्था, तस्स णं जियसत्तुस्स रन्नो महेसरदत्ते नामं पुरोहिए होत्था रिउव्वेय-जजुव्वेय-सामवेय-अथव्वणवेय-कुसले श्रावि होत्था ३। तते णं से महेसरदत्ते पुरोहिए जियसत्तुस्स रन्नो रज्जबल-विवद्धण-अट्ठआए कल्लाकल्लिं एगमेगं माहणदारयं एगमेगं खत्तियदारयं एगमेगं वइस्सदारयं एगमेगं सुद्ददारगं गिराहावेति २ तेसिं जीवंतगाणं चेव हिययउंडए गिराहावेति जियसत्तुस्स रन्नो संतिहोमं करेति ४। तए णं से महेसरदत्ते पुरोहिए अट्ठमी-चो(चउ)द्दसीसु दुवे माहण १ खत्तिय २ वेस ३ सुद्दारगे ४ चो(चउ)राहं मासाणं चत्तारि २ छराहं मासाणं अट्ठ २ संवच्छरस्स सोलस २ जाहे जाहेऽविय णं जियसत्तू राया परबलेणं अभिजुंजइ (अभिजुज्भति) ताहे ताहेवि य णं से महेसरदत्ते पुरोहिए अट्ठसयं माहणदारगाणं अट्ठसयं खत्तियदारगाणं अट्ठसयं वइस्सदारगाणं अट्ठसयं सुद्ददारगाणं पुरिसेहिं गिराहावेति गिराहावेत्ता तेसिं जीवंतगाणं चेव हिययउंडीश्रो गिराहावेति २ जियसत्तुस्स रराणो संतिहोमं करेति, तते णं से परबले खिप्पामेव विद्धंसिज्जइ(सेति) वा पडिसेहिज्जइ वा ५॥ सू० २३॥ तते णं से महेसरदत्ते पुरोहिए एयकम्मे एयप्पहाणे एयविज्जे एयसमुदायारे सुबहुं पावकम्मं समज्जिणित्ता तीसं वाससयाइं परमाउयं पालइत्ता कालमासे कालं किच्चा पंचमाए पुढवीए उक्कोसेणं सत्तरस-सागरोवम-ट्ठितिए नरगे उववन्ने १। से णं ततो अणंतरं उव्वट्टित्ता इहेव कोसंबीए नयरीए सोमदत्तस्स पुरोहियस्स वसुदत्ताए भारियाए पुत्तत्ताए उववन्ने २। तते णं तस्स दारगस्स अम्मापियरो निव्वत्त-बारसाहस्स इमं एयारूवं नामधेज्जं करेंति, जम्हा णं अम्हं इमे दारए सोमदत्तस्स पुरो-

हियस्स पुत्ते वसुदत्ताए अत्तए तम्हा णं होउ अम्हं दारए बहस्सइदत्ते नामेणं, तते णं से बहस्सतिदत्ते दारए पंचधाति परिग्गहिए जाव परिवड्ढइ, तते णं से बहस्सतिदत्ते उम्मुक्कबालभावे जुव्वणगमणुपत्ते विरणायपरिणायमित्ते अलं भोगसमत्थे यावि होत्था, से णं उदायणस्स कुमारस्स पियबालवयस्सए यावि होत्था सहजायए सहवड्ढीयए सहपंसुकीलियए ३। तते णं से सयाणीए राया अन्नया कयाइं कालधम्मुणा संजुत्ते, तते णं से उदायणकुमारे बहुराईसर जाव सत्थवाहप्पभिइहिं सद्धिं संपरिवुडे रोयमाणे कंदमाणे विलवमाणे सयाणीयस्स रन्नो महया इड्ढीसक्कारसमुदएणं नीहरणं करेति, २ बहूइं लोइयाइं मयकिच्चाइं करेति ४। तते णं ते बहवे राईसर जाव सत्थवाहप्पभिइओ उदायणं कुमारं महया रायाभिसेएणं अभिसिंचंति, तते णं से उदायणे कुमारे राया जाते महयाहिमवंत-महंत-मलय-मंदर-महिंदसारे ५। तते णं से बहस्सतिदत्ते दारए उदायणस्स रन्नो पुरोहियकम्मं करेमाणे सव्वट्ठाणेसु सव्वभूमियासु अंतेउरे य दिन्नवियारे जाए यावि होत्था, तते णं से बहस्सतीदत्ते पुरोहिए उदायणस्स रराणो अंतेउरंसि वेलासु य अवेलासु य काले य अकाले य राओ य वियाले य पविसमाणे अन्नया कयाइं पउमावईए देवीए सद्धिं संपलग्गे यावि होत्था पउमावईए देवीए सद्धिं उरालाइं भोगभोगाइं भुंजमाणे विहरइ ६। इमं च णं उदायणे राया एहाए जाव विभूसिए जेणेव पउमावई देवी तेणेव उवागच्छइ २ बहस्सतिदत्तं पुरोहियं पउमावती-देवीए सद्धिं उरालाइं भोगभोगाइं भुंजमाणं पासति २ आसुरुत्ते तिवलिं भिउडिं साहट्टु बहस्सतिदत्तं पुरोहियं पुरिसेहिं गिरहावेति २ जाव एएणं विहाणेणं वज्भं आणाविए (आणवेति), एवं खलु गोयमा! बहस्सतिदत्ते पुरोहिए पुरापोराणाणं जाव विहरइ ७। बहस्सतिदत्ते णं भंते! दारए इओ कालगए समाणे कहिं गच्छिहिति कहिं उववज्जिहिति?, गोयमा! बहस्सतिदत्ते णं दारए पुरोहिए चोसट्ठिं वासाइं परमाउयं पालइत्ता अज्जेव

तिभागावसेसे दिवसे सूलीयभिन्ने कए समाणे कालमासे कालं किच्चा इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए संसारो तहेव पुढवी, ततो हत्थिणाउरे नगरे मिगत्ताए पच्चायाइस्सति, से णं तत्थ वाउरिएहिं वहिए समाणे तत्थेव हत्थिणाउरे नगरे सेट्ठिकुलंसि पुत्तत्ताए उववज्जिहिति, बोहिं सोहम्मे कप्पे विमाणे महाविदेहे वासे सिज्झिहिति ८ । निक्खेवो ॥ सू० २४ ॥ पंचमं अज्झयणं समत्तं ॥

॥ इति पञ्चममध्ययनम् ॥ श्रु० १—अ० ५ ॥

॥ अथ नन्दिवर्धनाख्यं षष्ठमध्ययनम् ॥

जइ णं भंते ! छट्ठस्स उक्खेवो, एवं खलु जंबू ! तेणं कालेणं तेणं समएणं महुरा नाम नयरी भंडीरे उज्जाणे, सुदंसणे जक्खे, सिरीदामे राया, बंधुसिरी भारिया, पुत्ते णंदिवद्धणे कुमारे अहीण जाव सव्वंग-सुदरंगे जुवराया, तस्स सिरीदामस्स सुबन्धु नामं अमच्चे होत्था सामदंड जाव निग्गहकुसले तस्स णं सुबन्धुस्स अमच्चस्स बहुमित्तपुत्ते नामं दारए होत्था अहीण जाव सव्वंग-सुदरंगे, तस्स णं सिरिदामस्स रएणो चित्ते नामं अलंकारिए होत्था, सिरिदामस्स रन्नो चित्तं बहुविहं अलंकारियकम्मं करेमाणे सव्वट्ठाणेसु य सव्वभूमियासु य अंतेउरे य दिन्नवियारे यावि होत्था १ । तेणं कालेणं तेणं समएणं सामी समोसढे परिसा निग्गया रायावि निग्गओ जाव परिसा पडिगया २ । तेणं कालेणं तेणं समएणं समणस्स जेट्ठे जाव रायमग्गं ओगाढे तहेव हत्थी आसे पुरिसे, तेसिं च णं पुरिसाणं मज्झगयं एगं पुरिसं पासति जाव नरनारि-संपरिवुडं ३ । तते णं तं पुरिसं रायपुरिसा चच्चरंसि तत्तंसि अयोमयंसि समजोईभूय-सिहासणंसि निविसावेंति तयाणंतरं च णं पुरिसाणं मज्झगयं बहुविहं अयकलसेहिं तत्तेहिं समजोइभूएहिं अप्पेगइया तंबभरिएहिं अप्पेगइया तउयभरिएहिं अप्पेग-

इया सीसगभरिएहिं अप्पेगइया कलकलभरिएहिं अप्पेगइया खारतेल्लभरिएहिं महया २ रायाभिसेएणं अभिसिंचिते, तयाणंतरं च णं तत्तं अयोमयं समजोइभूयं अयोमयसंडासएणं गहाय हारं पिणद्धंति तयाणंतरं च णं अद्धहारं जाव पट्टं मउडं चिंता तहेव जाव वागरेति ४। एवं खलु गोयमा! तेणं कालेणं तेणं समएणं इहेव जंबुद्दीवे दीवे भारहे वासे सीहपुरे नामं नगरे होत्था रिद्धत्थिमियसमिद्धे, तत्थ णं सीहपुरे नयरे सीहरहे नामं राया होत्था, तस्स णं सीहरहस्स रन्नो दुज्जोहणे नामे चारगपालए होत्था अहम्मिए जाव दुप्पडियाणंदे, तस्स णं दुज्जोहणस्स चारगपालगस्स इमेयारूवे चारगभंडे होत्था ५। तस्स णं दुज्जोहणस्स चारगपालस्स बहवे अयकुंडीओ अप्पेगइयाओ तंबभरियाओ अप्पेगइयाओ तउयभरियाओ अप्पेगइया सीसगभरियाओ अप्पेगइया कलकलभरियाओ अप्पेगइया खारतेल्लभरियाओ अगणिकायंसि अद्दहिया चिट्ठंति, तस्स णं दुज्जोहणस्स चारगपालस्स बहवे उट्टियाओ आसमुत्तभरियाओ अप्पेगइया हत्थिमुत्तभरिआओ अप्पेगइया गोमुत्तभरियाओ अप्पेगइया महिसमुत्तभरियाओ अप्पेगइया उट्टमुत्तभरियाओ अप्पेगइया अयमुत्तभरियाओ अप्पेगइया एलमुत्तभरियाओ बहुपडिपुन्नाओ चिट्ठंति ६। तस्स णं दुज्जोहणस्स चारगपालगस्स बहवे हत्थुंडुयाण य पायंदुयाण य हडीण य नियलाण य संकलाण य पुंजा निगरा य सन्निक्खित्ता चिट्ठंति, तस्स णं दुज्जोहणस्स चारगपालस्स बहवे वेणुलयाण य वेत्तलयाण य चिञ्चालयाण य छियाणं कसाण य वायरासीण य पुंजा णिगरा चिट्ठंति, तस्स णं दुज्जोहणस्स चारगपालस्स बहवे सिलाण य लउडाण य मोग्गराण य कनंगराण य पुंजा णिगरा चिट्ठंति, तस्स णं (तए णं से) दुज्जोहणस्स चारगपालस्स बहवे तंता(ती)ण य वरत्ताण य वागरजा(ज्जू)ण य वालयरज्जूण य सुत्तरज्जूण य पुंजा निगरा य संनिक्खित्ता चिट्ठंति ७। तस्स णं दुज्जोहणस्स चारगपालस्स बहवे असिपत्ताण

य करपत्ताण य खुरपत्ताण य कलंबचीरपत्ताण य पुंजा णिगरा चिट्ठंति, तस्स णं दुज्जोहणस्स चारगपालस्स बहवे लोहखीलाण य कडि(कडग)सकराण य चम्मपट्टाण य अलपल्लाण(अन्ताण) य पुंजा निगरा चिट्ठंति, तस्स णं दुज्जोहणस्स चारगपालस्स बहवे सूतीण य डंभणाण य कोट्टिल्लाण य पुंजा निगरा चिट्ठंति, ८। तस्स णं दुज्जोहणस्स चारगपालस्स बहवे पच्छा(सत्था)ण य पिप्पलाण य कूहाडाण य नहच्छेयणाण य दब्भतिणाण (दब्भाण) य पुंजा निगरा चिट्ठंति ९। तते णं से दुज्जोहणे चारगपाले सीहरथस्स रन्नो बहवे चोरे य पारदारिए य गंठिभेदे य रायावकारी य अणधारए य बालघातए य विसंभघाते य जूतिकारे य सं(खं)डपट्टे य पुरिसेहिं गिण्हावेति २ त्ता उत्ताणए पाडेति २ लोहदंडेणं मुहं विहाडेइ २ अप्पेगतिए तत्ततंबं पज्जेति अप्पेगतिया तउयं पज्जेति अप्पेगतिए सीसगं पज्जेति अप्पेगतिए कलयं पज्जेति अप्पेगतिए खारतेल्लं पज्जेति अप्पेगइयाणं तेणं चेव ओवीलं (अभिसेयगं) करेति, अप्पेगतिए उत्ताणए पाडेति २ आसमुत्तं पज्जेति अप्पेगतिए हत्थिमुत्तं पज्जेति जाव एलमुत्तं पज्जेति, अप्पेगतिए हेट्ठामुहे पाडेति, छड(ल)छड(ल)स्स वम्मावेति २ अप्पेगतिए तेणं चेव ओवीलं दलयति अप्पेगतिए हत्थुंडुयाइं बंधावेति अप्पेगतिए पायंदुडियं(दुयाहिं) बंधावेति अप्पेगतिए हडिबंधणं करेति अप्पेगतिए नियड(ल)बंधणं करेति अप्पेगतिए संकोडियमोडिययं करेति अप्पेगतिए संकलबंधणं करेति अप्पेगतिए हत्थच्छिन्नए करेति जाव सत्थोवाडियं(यए) करेति अप्पेगतिए वेणुलयाहि य जाव वायरासीहि य पहरणातिहि य हणावेति अप्पेगतिए उत्ताणए कारवेति उरे सिलं दलावेति तओ लउलं छुभावेइ २ पुरिसेहिं उक्कंपावेति अप्पेगतिए तंतीहि य जाव सुत्तरज्जूहि य हत्थेसु पाएसु य बंधावेति अगडंसि ओचूलयालगं पज्जेति अप्पेगतिए असिपत्तेहि य जाव कलंबचीरपत्ते हि य पच्छावेति खारतेल्लेणं अब्भिगावेति अप्पेगतिए निलाडेसु य अवदूसु य

कोप्परेसु य जाणूसु य खलुएसु य लोहकीलए य कडसक्कराओ य दवावेति अलिए भंजावेति अप्पेगतिए सुईओ य दंभणाणि य हत्थंगुलियासु य पायंगुलियासु य कोट्टिलएहिं आउडावेति २ भूमिं कंडूयावेति अप्पेगतिए सत्थेहि य जाव नहच्छेदणएहि य अंगं पच्छावेइ दब्भेहि य कुसेहि य उल्लवद्धेहि य वेढावेति आयवंसि दलयति चम्मे सुक्के समाणे चडचडस्स उप्पाडेति १०। तते णं से दुज्जोहणे चारगपालए एयकम्मे सुबहुं पावकम्मं समज्जिणित्ता एगतीसं वाससयाइं परमाउयं पालइत्ता कालमासे कालं किच्चा छट्ठीए पुढवीए उक्कोसेणं बावीस-सागरोवम-ठितीएसु नेरइएसु णेरइयत्ताए उववन्ने ११ ॥ सू० २५ ॥ से णं ततो अणंतरं उव्वट्टित्ता इहेव महुराए णगरीए सिरिदामस्स रण्णो बंधुसिरीए देवीए कुच्छिंसि पुत्त(म)त्ताए उववन्ने, तते णं बंधुसिरी णवण्हं मासाणं बहुपडिपुन्नाणं जाव दारगं पयाया २। तते णं तस्स दारगस्स अम्मापियरो निव्वत्ते बारसाहे इमं एयाणुरूवं नामधेज्जं करेंति होऊ णं अम्हं दारगे णं नंदिसेणे नामेणं, तते णं से नंदिसेणे कुमारे पंचधातीपरिवुडे जाव परिवुड्ढइ, तते णं से नंदिसेणे कुमारे उम्मुक्कबालभावे जाव विहरति जाव जुवराया जाते यावि होत्था ३। तते णं से णंदिसेणे कुमारे रज्जे य जाव अंतेउरे य मुच्छिते इच्छति सिरिदामं रायं जीवियातो ववरोवित्तए सयमेव रज्जसिरिं कारेमाणे पालेमाणे विहरित्तए ४। तते णं से नंदिसेणे कुमारे सिरिदामस्स रन्नो बहूणि अंतराणि य छिद्दाणि य विरहा(वरा)णि य पडिजागरमाणे विहरति, तते णं से नंदिसेणे कुमारे सिरिदामस्स रन्नो अंतरं अलभमाणे अन्नया कयाइं चित्तं अलंकारियं सद्दावेति २ एवं वयासी—तुम्हे णं देवाणुप्पिया! सिरिदामस्स रन्नो सव्वट्ठाणेसु य सव्वभूमीसु य अंतेउरे य दिण्णवियारे सिरिदामस्स रन्नो अभिक्खणं २ अलंकारियं कम्मं करेमाणे विहरसि, तएणं तुम्हं देवाणुप्पिया! सिरिदामस्स रन्नो अलंकारियं कम्मं

करेमाणे गीवाए खुरं निवेसेहि तो णं अहं तुम्हं अद्धरज्जियं करेस्सामि तुम्हं अम्हेहिं सद्धिं उरालाइं भोगभोगाइं भुंजमाणे विहरिस्ससि, तते णं से चित्ते अलंकारिए नंदिसेणस्स कुमारस्स वयणं एयमट्ठं पडिसुणेति ५ । तए णं तस्स चित्तस्स अलंकारियस्स इमेयारूवे जाव समुप्पज्जित्था—जइ णं मम सिरिदामे राया एयमट्ठं आगमेति तते णं ममं ण णज्जति केणति असुभेणं कुम(मा)रणेणं मारिस्सतित्तिकट्टु भीए जेणेव सिरिदामे राया तेणेव उवागच्छति २ सिरिदामं रायं रहस्सियगं करयल जाव एवं वयासी—एवं खलु सामी ! णंदिसेणे कुमारे रज्जे य जाव मुच्छिते इच्छति तुब्भे जीवियातो ववरोवित्ता सयमेव रज्जसिरिं कारेमाणे पालेमाणे विहरित्तए ६ । तते णं से सिरिदामे राया चित्तस्स अलंकारिअस्स अंतिए एयमट्ठं सोचा निसम्म आसुरुत्ते जाव साहट्टु णंदिसेणं कुमारं पुरिसेहिं सद्धिं गिण्हावेति २ एएणं विहाणेणं वज्झं आणवेति, तं एवं खलु गोयमा ! णंदिसेणे पुत्ते जाव विहरति ७ । नंदिसेणे कुमारे इओ चुए कालमासे कालं किच्चा कहिं गच्छिहिइ ? कहिं उववज्जिहिइ ?, गोयमा ! णंदिसेणे कुमारे सट्ठिं वासाइं परमाउयं पालइत्ता कालमासे कालं किच्चा इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए, संसारो तहेव, ततो हत्थिणाउरे णगरे मच्छत्ताए उववज्जिहिति, से णं तत्थ मच्छिएहि वधिए समाणे तत्थेव सेट्ठिकुले बोहिं सोहम्मे कप्पे महाविदेहे वासे सिज्झिहिति बुज्झिहिति मुच्चिहिति परिनिव्विहिति सव्वदुक्खाणमंतं करेहिति, एवं खलु जंबू ! निक्खेवो छट्ठस्स अज्झयणस्स अयमट्ठे पन्नत्तेत्ति बेमि ८ ॥ सू० २६ ॥ छट्ठमज्झयणं समत्तं ॥

॥ इति षष्ठमध्ययनम् ॥ श्रु० १--अ० ६ ॥

—:०:—

॥ अथ उम्बरदत्ताख्यं सप्तममध्ययनम् ॥

जति णं भंते ! उक्खेवो सत्तमस्स, एवं खलु जंबू ! तेणं कालेणं तेणं समएणं पाडलिसंडे णगरे वणसंडे नाम उज्जाणे उंबरदत्तो जक्खो, तत्थ णं पाडलिसंडे णगरे सिद्धत्थे राया तत्थ णं पाडलिसंडे णगरे सागरदत्ते सत्थवाहे होत्था अड्ढे जाव अपरिभूए, गंगदत्ता भारिया, तस्स णं सागरदत्तस्स पुत्ते गंगदत्ताए भारियाए अत्तए उंबरदत्ते नामं दारए होत्था अहीण जाव पंचिंदियसरीरे १। तेणं कालेणं तेणं समएणं समोसरणं जाव परिसा पडिगया, तेणं कालेणं तेणं समएणं भगवं गोयमे तहेव जेणेव पाडलसंडे णगरे तेणेव उवागच्छति पाडलिसंडं नगरं पुरत्थिमिल्लेणं दुवारेणं अणुप्पविसति, तत्थ णं पासति एगं पुरिसं कच्छुल्लं कोढियं दोउ(दओ)यरियं भगंदरियं अरिसिल्लं कासिल्लं सासिल्लं सोगिलं सुयमुहसुयहत्थं सुयपायं सडिय(सुय)हत्थंगुलियं सडियपायंगुलियं सडियकन्ननासियं रसीयाए वा पूईएण य थिविथिविंत-वणमुह-किमिउत्तयंत-पगलंत-पूयरुहिरं लाला-पगलंत-कन्ननासं अभिक्खणं २ पूयकवले य रुहिरकवले य किमियकवले य वममाणं कट्ठाइं कलुणाइं विसराइं कुव्वमाणं मिच्छया-चडगर-पहकरेणं अणिणज्जमाणमग्गं फुट्ट-हडाहड-सीसं दंडिखंड-निवसणं खंडमलग-खंडघड-हत्थगयं गेहे २ देहंबलियाए वित्तिं कप्पेमाणं पासति २। तदा भगवं गोयमं उच्चनीय जाव अडति अहापज्जत्तं गिण्हति पाडलिसंडाओ नगराओ पडिनिक्खमति जेणेव समणे भगवं महावीरे भत्तपाणं आलोएति भत्तपाणं पडिदंसेति २ समणेणं भगवया महावीरेणं अब्भणुन्नाए समाणे जाव बिलमिव पन्नगभूते अप्पाणेणं आहारमाहारेइ संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे विहरति ३। तते णं से भगवं गोयमे दोच्चंपि(मि) छट्ठक्खमण-पारणगंसि पढमाए पोरिसीए सज्झाए जाव पाडलिसंडं नगरं दाहिणिल्लेणं दुवारेणं अणुप्पविसति तंचेव पुरिसं पासति कच्छुल्लं तहेव

जाव संजमेणं तवसा विहरति ४ । तते णं से गोयमे तच्चंमि छट्ठक्खमण-पारणगंसि तहेव जाव पच्चत्थिमिल्लेणं दुवारेणं अणुपविसमाणे तंचेव पुरिसं कच्छुल्लं पासति, चोत्थछट्ठक्खमण-पारणगंसि उत्तरेणं दुवारेणं अणुप्पविसति तं चेव पुरिसं कच्छुल्लं जाव वित्तिं कप्पेमाणं पासति २ इमीसे अज्झत्थिए जाव समुप्पन्ने-अहो णं इमे पुरिसे पुरापोराणाणं जाव एवं वयासी—एवं खलु अहं भंते ! छट्ठस्स पारणगस्स जाव रीयते जेणेव पाडलिसंडे नगरे तेणेव उवागच्छामि २ त्ता पाडलिसंडे नगरे पुरच्छिमिल्लेणं दुवारेणं पविट्ठे, तत्थ णं एगं पुरिसं पासामि कच्छुल्लं जाव कप्पेमाणं, तं अहं दोच्चंमि छट्ठक्खमण-पारणगंसि दाहिणिल्लेणं दुवारेणं तच्चंमि छट्ठक्खमणपारणगंसि पच्चत्थिमेणं तहेव तं अहं चोत्थछट्ठक्खमण-पारणगंसि उत्तरदुवारेण अणुप्पविसामि तं चेव पुरिसं पासामि कच्छुल्लं जाव वित्तिं कप्पेमाणे जाव विहरति, चिंता मम पुव्वभवपुच्छा वागरेति ५ । एवं खलु गोयमा ! तेणं कालेणं तेणं समएणं इहेव जंबुद्दीवे दीवे भारहे वासे विजयपुरे नाम नगरे होत्था रिद्धत्थिमियसमिद्धे, तत्थ णं विजयपुरे णगरे कणगरहे नामं राया होत्था, तस्स णं कणगरहस्स रन्नो धन्नंतरी नामं विज्जे होत्था, अट्ठंगा-उव्वेयपाढए, तंजहा—कुमारभिच्चं १ सालागे (मलागे, सालगे) २ सल्लहत्ते ३ कायतिगिच्छा ४ जंगोले ५ भूयविज्जे ६ रसायणे ७ वाजीकरणे ८ सिवहत्थे सुहहत्थे लहुहत्थे ६ । तते णं से धन्नंतरी विज्जे विजयपुरे णगरे कणगरहस्स रन्नो अंतेउरे य अन्नेसिं च बहूणं राईसर जाव सत्थवाहाणं अन्नेसि च बहूणं दुब्बलाण य १ गिलाणाण य २ वाहियाण य रोगियाण य अणाहाण य सणाहाण य समणाण य माहणाण य भिक्खागाण य करोडियाण य कप्पडियाण य आउराण य अप्पेगतियाणं मच्छमंसाइं उवदंसेति अप्पेगतियाणं कच्छपमंसाइं अप्पेगतियाणं गाहामंसाइं अप्पेग-तियाणं मगरमंसाइं अप्पेगतियाणं सुंसुमारमंसाइं अप्पेगतियाणं अयमंसाइं

एवं एला-रोज्झ-सुयर--मिग-ससय-गो--महिसमंसाइं अप्पेगतियाणं तित्तिर-मंसाइं अप्पेगतियाणं वट्टक-लावय-कपोत-कुक्कुड-मयूरमंसाइं अन्नेसिं च बहूणं जलयर-थलयर-खहयर-मादीणं मंसाइं उवदंसेति अप्पणाविय णं से धन्नंतरीविज्जे तेहिं बहूहिं मच्छमंसेहि य जाव मयूरमंसेहि य अन्नेहि य बहूहिं जलयर-थलयर-खहयर-मंसेहि य मच्छरसेहि य जाव मयूररसेहि य सोल्लेहि य तलेहि य भिज्जेहिं सुरं च ६ आसाएमाणे विसाएमाणे विहरति ७। तते णं से धन्नंतरी विज्जे एयकम्मे सुबहुं पावं कम्मं समज्जिणित्ता बत्तीसं वाससयाइं परमाउयं पालइत्ता कालमासे कालं किच्चा छट्ठीए पुढवीए उक्कोसेणं बावीससागरोवमठिइएसु उववरणे ८। तते णं सा गंगदत्ता भारिया जायणिंदुया यावि होत्था जाया जाया दारगा विनिघाय-मावज्जंति, तते णं तीसे गंगदत्ताए सत्थवाहीए अन्नया कयाइं पुव्वरत्तावरत्त-काल-समयंसि कुडुंबजागरियं जागरमाणीए अयं अब्भत्थिए जाव समुप्पन्ने—एवं खलु अहं सागरदत्तेणं सत्थवाहेणं सद्धिं बहूइं वासाइं उरालाइं मणुस्सगाइं भोगभोगाइं भुंजमाणी विहरामि, णो चेव णं अहं दारगं वा दारियं वा पयामि, तं धराणाओ णं ताओ अम्मयाओ सपुन्नाओ कयत्थाओ कयल-क्खणाओ सुलद्धे णं तासिं अम्मयाणं माणुस्सए जम्मजीवियफले जासिं मन्ने नियग-कुच्छि-संभूयाइं थणदुद्ध-लुद्धगाइं महुरस-मुल्लावगाइं मम्मणं पयंपियाइं थणमूल-कक्ख-देसभागं अभिसरमाणगाति मुद्धगाइं पुणो य कोमल-कमलोवमेहि य हत्थेहिं गिराहेऊणं उच्छंगं निवेसियाति दिंति समुल्लावए सुमहुरे पुणो २ मंजुल-प्पभणिते, अहं णं अधन्ना अपुन्ना अकयपुन्ना एत्तो एगमवि न पत्ता, तं सेयं खलु मम कल्ले जाव जलंते सागरदत्तं सत्थवाहं आपुच्छित्ता सुबहुं पुप्फवत्थ-गंध-मल्लालंकारं गहाय बहु-मित्तणाइ-णियग-सयण-संबंधि-परिजन-महिलाहिं सद्धिं पाडलिसंडाओ णग-राओ पडिनिक्खमित्ता बहिया जेणेव उंबरदत्तस्स जक्खस्स जक्खायतणे

तेणेव उवागच्छामि उवागच्छित्ता तत्थ णं उंबरदत्तस्स जक्खस्स महरिहं पुप्फच्चणं करेत्ता जाणु-पाय-वडियाए ओयावित्तए-जति णं अहं देवाणुप्पिया! दारगं वा दारियं वा पयामि, तो णं अहं तुब्भं जायं च दायं च भायं च अक्खयणिहिं च अणुवड्ढइस्सामित्तिकट्टु ओवाइयं ओवाइणित्तए, एवं संपेहेइ २ त्ता कल्लं जाव जलंते जेणेव सागरदत्ते सत्थवाहे तेणेव उवागच्छति २ त्ता सागरदत्तं सत्थवाहं एवं वयासी—एवं खलु अहं देवाणुप्पिया! तुब्भेहिं सद्धिं जाव न पत्ता, तं इच्छामि णं देवाणुप्पिया! तुब्भेहिं अब्भणुण्णाया जाव उवाइणित्तए ८। तए णं से सागरदत्ते गंगदत्तं भारियं एवं वयासी—ममंपि य णं देवाणुप्पिया! एस चेव मणोरहे, कहं णं तुमं दारगं वा दारियं वा पयाएज्जसि ?, गंगदत्ताए भारियाए एयमट्ठं अणुजाणाति ९। तते णं सा गंगदत्ता भारिया सागरदत्त-सत्थवाहेणं एयमट्ठं अब्भणुन्नाया समाणी सुबहुं पुप्फ जाव महिलाहिं सद्धिं सयाओ गिहाओ पडिनिक्खमइ पडिनिक्खमइत्ता पाडलिसंडं नगरं मज्झंमज्झेणं निग्गच्छति २ जेणेव पुक्खरिणी तेणेव उवागच्छति २ पुक्खरिणीए तीरे सुबहुं पुप्फवत्थ-गंध-मल्लालंकारं उवणेति २ पुक्खरिणीं ओगाहेति २ जलमज्जणं करेति २ जलकीडं करेमाणी ण्हाया कयकोउय-मंगल-पायच्छित्ता उल्लग-पडसाडिया पुक्खरिणीओ पच्चुत्तरति २ तं पुप्फवत्थ-गंध-मल्लालंकारं गिण्हति २ जेणेव उंबरदत्तस्स जक्खस्स जक्खायतणे तेणेव उवागच्छति २ उंबरदत्तस्स जक्खस्स आलोए पणामं करेति २ लोमहत्थं परामुसति २ उंबरदत्तं जक्खं लोमहत्थेणं पमज्जति २ दगधाराए अब्भोक्खेति २ पम्हलसुकुमाल-गंध-कासाइयाए गायलट्ठी ओलूहेति २ सेयाति वत्थाइं परिहेति महरिहं पुप्फारुहणं वत्थारुहणं मल्लारुहणं गंधारुहणं चुन्नारुहणं करेति २ धूवं डहति जाणुपायवडिया एवं वयति—जइ णं अहं देवाणुप्पिया! दारगं वा दारियं वा पयामि ते णं जाव उवातिणति २ त्ता जामेव दिसिं पाउब्भूया तामेव

दिसं पडिगया १०। तते णं से धन्नंतरी विज्जे ताओ नरयाओ अणंतरं उव्वट्टित्ता इहेव जंबुद्दीवे २ पाडलिसंडे नगरे गंगदत्ताए भारियाए कुच्छिसि पुत्तत्ताए उववन्ने, तते णं तीसे गंगदत्ताए भारियाए तिराहं मासाणं बहुपडिपुन्नाणं अयमेयारूवे दोहले पाउब्भूते–धन्नाओ णं ताओ जाव फले जाओ णं विउलं असणं पाणं खाइमं साइमं उवक्खडावेंति २ बहूहिं मित्त जाव परिवुडाओ तं विपुलं असणं पाणं खाइमं साइमं सुरं च ६ पुप्फ जाव गहाय पाडलिसंडं नगरं मज्झंमज्झेणं पडिनिक्खमंति पडिनिक्खमित्ता जेणेव पुक्खरिणी तेणेव उवागच्छंति तेणेव उवागच्छित्ता पुक्खरणीं ओगाहिंति राहाता जाव पायच्छित्ताओ तं विपुलं असणं पाणं खाइमं साइमं बहूहिं मित्तणाइ जाव सद्धिं आसादेंति दोहलं विणेंति, एवं संपेहेइ २ कल्लं जाव जलंते जेणेव सागरदत्ते सत्थवाहे तेणेव उवागच्छति २ सागरदत्तं सत्थवाहं एवं वयासी–धन्नाओ णं ताओ जाव विणेंति तं इच्छामि णं जाव विणित्तए ११। तते णं से सागरदत्ते सत्थवाहे गंगदत्ताए भारियाए एयमट्ठं अणुजाणाति, तते णं सा गंगदत्ता सागरदत्तेणं सत्थवाहेणं अब्भणुन्नाया समाणी विपुलं असणं पाणं खाइमं साइमं उवक्खडावेति तं विपुलं असणं पाणं खाइमं साइमं सुरं च ६ सुबहुं पुप्फ जाव परिगिराहावेइ बहूहिं जाव राहाया कयबलिकम्मा जेणेव उंबरदत्तस्स जक्खाययणे जाव धूवं डहइ २ जेणेव पुक्खरणी तेणेव उवागच्छति १२। तते णं तातो मित्त जाव महिलाओ गंगदत्तं सत्थवाहं सव्वालंकार-विभूसियं करेंति, तते णं सा गंगदत्ता भारिया ताहिं मित्तनाईहिं अन्नाहि य बहूहिं णगरमहिलाहिं सद्धिं तं विपुलं असणं पाणं खाइमं साइमं सुरं च ६ आसाएमाणी जाव दोहलं विणेति २ जामेव दिसिं पाउब्भूता तामेव दिसिं पडिगया १२। तए णं सा गंगदत्ता सत्थवाही (भारिया) पसत्थ(पुराण) दोहला तं गब्भं सुहंसुहेणं परिवहति, तते णं सा गंगदत्ता भारिया णवराहं मासाणं

बहुपडिपुन्नाणं जाव पयाया ठिइवडिया जाव जम्हा णं अम्हं इमे दारए उंबरदत्तस्स जक्खस्स उववातियलद्धते तं होऊ णं दारए उंबरदत्ते नामेणं, तते णं से उंबरदत्ते दारए पंचधातिपरिग्गहिए परिवड्ढइ १४। तते णं से सागरदत्ते सत्थवाहे जहा विजयमित्ते जाव कालमासे कालं किच्चा, गंगदत्तावि, उंबरदत्ते निच्छूढे जहा उज्झियते, तते णं तस्स उंबरदत्तस्स दारयस्स अन्नया कयावि सरीरगंसि जमगसमगमेव सोलस रोगायंका पाउब्भूया, तंजहा–सासे खासे जाव कोढे, तते णं से उंबरदत्ते दारए सोलसहिं रोगयंकेहिं अभिभूए समाणे सडियहत्थे जाव विहरति, एवं खलु गोयमा ! उंबरदत्ते दारये पुरा पोराणाणं जाव पच्चणुब्भवमाणे विहरति १५। तते णं से उंबरदत्ते दारए कालमासे कालं किच्चा कहिं गच्छिहिति ? कहिं उववज्जिहिति ?, गोयमा ! उंबरदत्ते दारए बावत्तरिं वासाइं परमाउयं पालइत्ता कालमासे कालं किच्चा इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए णेरइयत्ताए उववन्ने संसारो तहेव जाव पुढवी, ततो हत्थिणाउरे णगरे कुक्कुडत्ताए पच्चायायाहिति जायमेत्ते चेव गोट्ठिवहिए तहेव हत्थिणाउरे णगरे सेट्ठिकुलंसि उववज्जिहिति बोहिं सोहम्मे कप्पे महाविदेहे वासे सिज्झिहिति, निक्खेवो १६ ॥ सू० २७ ॥ सत्तमं अज्झयणं समत्तं ॥

॥ इति सप्तममध्ययनम् ॥ श्रु० १-अ० ७ ॥

॥ अथ शौरिकदत्ताख्यं अष्टममध्ययनम् ॥

जइ णं भंते ! अट्ठमस्स उक्खेवो, एवं खलु जंबू ! तेणं कालेणं तेणं समएणं सोरियपुरं णगरं, सोरियवडेंसगं उज्जाणं, सोरियो जक्खो, सोरियदत्तो राया, तस्स णं सोरियपुरस्स णगरस्स बहिया उत्तरपुरच्छिमे दिसीभागे एत्थ णं एगे मच्छंधवाडए होत्था, तत्थ णं समुद्ददत्ते नामं मच्छंधे परिवसति अहम्मिए जाव दुप्पडियाणंदे, तस्स णं समुद्ददत्तस्स

समुद्ददत्ता नामं भारिया होत्था अहीण जाव पंचेंदियसरीरे, तस्स णं समुद्ददत्तस्स मच्छंधस्स पुत्ते समुद्ददत्ताए भारियाए अत्तए सोरियदत्ते नामं दारए होत्था, अहीण जाव पंचेंदियसरीरे १। तेणं कालेणं तेणं समएणं सामी समोसढे जाव परिसा पडिगया २। तेणं कालेणं तेणं समएणं जेट्ठे सीसे जाव सोरियपुरे णगरे उच्चनीयमज्झिमकुलाइं अहापज्जत्तं समुदाणं गहाय सोरियपुराओ नगराओ पडिनिक्खमति ३। तस्स मच्छंधपाडगस्स अदूरसामंतेणं वीईवयमाणे महतिमहालियाए मणुस्सपरिसाए मज्झगयं पासति एगं पुरिसं सुक्कं भुक्खं निम्मंसं अट्ठिचम्मावणद्धं किडिकिडी-(किडिया)भूयं णील-साडग-णियच्छं मच्छकंटएणं गलए अणुलग्गेणं कट्ठाइं कलुणाइं विसराइं कूवेमाणं अभिक्खणं अभिक्खणं पूयकवले य रुहिरकवले य किमिकवले य वम्ममाणं पासति, इमे अज्झत्थिए ४-पुरा पोराणाणं जाव विहरति ४। एवं संपेहेति जेणेव समणे भगवं जाव पुव्वभवपुच्छा जाव वागरणं, एवं खलु गोयमा ! तेणं कालेणं तेणं समएणं इहेव जंबुद्दीवे दीवे भारहे वासे नंदिपुरे नामं णगरे होत्था, मित्ते राया, तस्स णं मित्तस्स रन्नो सिरीए नामं महाणसिए होत्था अहम्मिए जाव दुप्पडियाणंदे, तस्स णं सिरीयस्स महाणसियस्स बहवे मच्छिया य वागुरिया य साउणिया य दिन्नभति-भत्तवेयणा, कल्लाकल्लं बहवे सण्हमच्छा य जाव पडागातिपडागे य अए य जाव महिसे य तित्तिरे य जाव मयूरे य जीवियाओ ववरोवेंति २ सिरीयस्स महाणसियस्स उवणेंति, अन्ने य से बहवे तित्तिरा य जाव मयूरा य पंजरंसि संनिरुद्धा चिट्ठंति, अन्ने य बहवे पुरिसे दिन्नभति-भत्तवेयणा, ते बहवे तित्तरे य जाव मयूरे य जीवंतए चेव निप्पक्खेंति सिरीयस्स महाणसियस्स उवणेंति ४। तते णं से सिरीए महाणसिए बहूणं जलयर-थलयर-खहयराणं मंसाइं कप्पणीयकप्पियाइं करेति, तंजहा—सण्हखंडियाणि य वट्टखंडियाणि दीहखंडियाणि रहस्सखंडियाणि हिमपक्काणि य जम्मपक्काणि य वेगपक्काणि य

(धम्मपक्काणि य) मारुयपक्काणि य कालाणि य हेरंगाणि य महिट्ठाणि य आमलरसयाणि य मुद्दियारसयाणि य कविट्ठरसयाणि दालिमरसयाणि य मच्छर-सियाणि य तलियाणि य भज्जियाणि य सोल्लियाणि य उवक्खडावेति अन्ने य बहवे मच्छरसए य एणेज्जरसए य तित्तिररसए य जाव मयूररसए य अन्नं विउलं हरियसागं उवक्खडावेति २ त्ता मित्तस्स रन्नो भोयणमंडवंसि भोयणवेलाए उवणेति अप्पणावि य णं से सिरिए महाणसिते तेसिं च बहूहिं जाव जलयर-थलयर-खहयर-मंसेहिं रसतेहि य हरियसागेहि य सोल्लेहि य तलेहि य भज्जेहि य सुरं च ६ आसाएमाणे ४ विहरति ६। तते णं से सिरिए महाणसिते एयकम्मे एयप्पहाणे एयविज्जे एयसमुदायारे सुबहुं पावकम्मं समज्जिणित्ता तेत्तीसं वाससयाइं परमाउयं पालइत्ता कालमासे कालं किच्चा छट्ठीए पुढवीए उववन्ने ७। तते णं सा समुद्ददत्ता भारिया निंदूया यावि होत्था जाया २ दारगा विणिहायमावज्जंति जहा गंगदत्ताए चिंता आपुच्छणा उवातियं दोहलो जाव दारगं पयाता, जाव जम्हा णं अम्हं इमे दारए सोरियस्स जक्खस्स उवाइयलद्धे तम्हा णं होउ अम्हं दारए सोरियदत्ते नामेणं, तए णं से सोरियदत्ते दारए पंचधाइ जाव उम्मुक्कबाल-भावे विण्णयपरिणयमित्ते जोव्वणगमणुपत्ते होत्था ८। तते णं से समु-द्ददत्ते अन्नया कयाइं कालधम्मुणा संजुत्ते, तते णं से सोरियदत्ते दारये बहूहिं मित्तणाइ जाव रोयमाणे समुद्ददत्तस्स णीहरणं करेति लोइयमयाइं किच्चाइं करेति, अन्नया कयाइं सयमेव मच्छंधमहत्तरगत्तं उवसंपज्जित्ताणं विहरति ९। तए णं से सोरियए दारए मच्छंधे जाते अहम्मिए जाव दुप्पडियाणंदे, तते णं तस्स सोरियमच्छंधस्स बहवे पुरिसा दिन्नभति-भत्तवेयणा कल्लाकल्लिं एगट्ठियाहिं जउणामहानदीं ओगाहिंति २ बहूहिं दहगलणेहि य दहमलणेहि य दहम-द्दणेहि य दहमहणेहिं दहवहणेहि दहपवहणेहि य अयंपुलेहि य पयंपुलेहि य मच्छंधलेहि य मच्छपुच्छेहि य जंभाहि य तिसिराहि य भिसिराहि य

घिसराहि य विसराहि य हिल्लीरीहि य भिल्लिरीहि य जालेहि य गलेहि य कूडपासेहि य वक्कबंधेहि य सुत्तबंधणेहि य वालबंधणेहि य बहवे सण्हमच्छे य जाव पडागातिपडागे य गिण्हंति २ एगट्ठियाओ नावा भरेंति २ कूलं गाहेंति २ मच्छखलए करेंति आयवंसि दलयंति १० । अप्पणाऽविय णं से सोरिये मच्छंधए कल्लाकल्लिं एगट्ठियए जएणं महाणदिं ओगाहेति २ सरिसवच्छिद्दपमाणमेत्तेणं जालेणं बहवे सण्हमच्छे य जाव गेण्हति एगट्ठियं भरेति कूलं गाहेति २ मच्छखलए करेति आयवंसि दलयति ११ । अन्ने य से बहवे पुरिसा दिन्नभइभत्तवेयणा आयव-तत्तएहिं मच्छेहिं सोलेहि य तलेहि य भज्जेहि य रायमग्गंसि वित्तिं कप्पेमाणा विहरंति, अप्पणाविय णं से सोरियदत्ते बहूहिं सण्हमच्छेहि य जाव पडागातिपडागे य गेण्हति जाव सोल्लेहि य भज्जेहि य सुरं च ६ आसाएमाणे ४ विहरति १२ । तते णं तस्स सोरियदत्तस्स मच्छंधस्स अन्नया कयाइं ते मच्छसोल्ले तले भज्जे आहारेमाणस्स मच्छकंटए गलए लग्गे आवि होत्था, तए णं से सोरियमच्छंधे महयाए वेयणाए अभिभूते समाणे कोडुंबियपुरिसे सद्दावेति २ एवं वयासी–गच्छह णं तुम्हे देवाणुप्पिया ! सोरियपुरे नगरे सिंघाडग जाव पहेसु य महया २ सद्देणं उग्घोसेमाणा २ एवं वयह–एवं खलु देवाणुप्पिया ! सोरियस्स मच्छकंटए गले लग्गे तं जो णं इच्छति विज्जो वा ६ सोरियमच्छियस्स मच्छकंटयं गलाओ नीहरित्तते तस्स णं सोरियमच्छंधे विउलं अत्थसंपयाणं दलयति १३ । तते णं ते कोडुंबियपुरिसा जाव उग्घोसंति, तए णं से बहवे विज्जा य ६ इमेयारूवं उग्घोसणं उग्घोसिज्जमाणं निसामेंति २ जेणेव सोरियमच्छंधस्स गेहे जेणेव सोरियमच्छंधे तेणेव उवागच्छंति २ बहूहिं उप्पत्तियाहिं ४ बुद्धीहि य परिणामेमाणा वमणेहि य छड्डणेहि य उवीलणेहि य कवलग्गाहेहि य सल्लुद्धरणेहि य विसल्लकरणेहि य इच्छंति सोरियमच्छंधस्स मच्छकंटयं गलाओ नीहरित्तए,

नो चेव णं संचाएंति नीहरित्तए वा विसोहित्तए वा, तते णं बहवे विज्जा य ६ जाहे नो संचाएंति सोरियस्स मच्छकंटगं गलाओ नीहरित्तए वा विसोहित्तए वा ताहे संता जाव जामेव दिसिं पाउब्भूया तामेव दिसं पडिगया १४। तते णं से सोरियदत्ते मच्छंधे विज्ज-पडियारनिव्विराणे तेणं दुक्खेणं महया अभिभूते सुक्के जाव विहरति १५। एवं खलु गोयमा ! सोरियदत्ते पुरापोराणाणं जाव विहरति १६। सोरिए णं भंते ! मच्छंधे इओ य कालमासे कालं किच्चा कहिं गच्छिहिति ? कहिं उववज्जिहिति ?, गोयमा ! सत्तरि वासाइं परमाउयं पालइत्ता कालमासे कालं किच्चा इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए संसारो तहेव पुढवीओ हत्थिणाउरे णगरे मच्छत्ताए उववज्जिहिति, से णं ततो मच्छिएहिं जीवियाओ ववरोविए तत्थेव सेट्ठिकुलंसि बोहिं सोहम्मे कप्पे महाविदेहे वासे सिज्झिहिति १७। निक्खेवो ॥ सू० २८ ॥ अट्ठमं अज्झयणं सोरियदत्तस्स सम्मत्तं ॥

॥ इति अष्टममध्ययनम् ॥ श्रु० १-अ० ८ ॥

॥ अथ बृहस्पतिदत्ताख्यं नवममध्ययनम् ॥

जइ णं भंते ! उक्खेवो णवमस्स, एवं खलु जंबू ! तेणं कालेणं तेणं समएणं रोहीडए नामं नगरे होत्था रिद्धत्थिमियसमिद्धे, पुढवीवडेंसए उज्जाणे धरणो जक्खो वेसमणदत्तो राया सिरी देवी पूसनंदी कुमारे जुवराया, तत्थ णं रोहीडए नगरे दत्ते णामं गाहावती परिवसति अड्ढे जाव अपरिभूए, कण्हसिरी भारिया, तस्स णं दत्तस्स धूया कन्नसिरीए अत्तया देवदत्ता नामं दारिया होत्था अहीण जाव पंचिंदियसरीरा, जाव उक्किट्ठा उक्किट्ठसरीरा १। तेणं कालेणं तेणं समएणं सामी समोसढे जाव परिसा निग्गया २। तेणं कालेणं तेणं समएणं जेट्ठे अंतेवासी छट्ठक्खमण तहेव जाव रायमग्गं ओगाढे हत्थी आसे पुरिसे पासति, तेसिं पुरिसाणं

मज्झगयं पासति एगं इत्थियं अवउडगबंधणं उक्खित्तकन्ननासं जाव सूले भिज्जमाणं पासति ३। इमे अब्भत्थिए तहेव निग्गए जाव एवं वयासी–एसा णं भंते ! इत्थिया पुव्वभवे का आसी ?, एवं खलु गोयमा ! तेणं कालेणं तेणं समएणं इहेव जंबुद्दीवे दीवे भारहे वासे सुपइट्ठे नामं नगरे होत्था रिद्धत्थिमियसमिद्धे, महसेणे राया, तस्स णं महासेणस्स रन्नो धारणी-पामोक्खाणं देवीसहस्सं ओरोहे यावि होत्था, तस्स णं महासेणस्स रन्नो पुत्ते धारणीए देवीए अत्तए सीहसेणे नामं कुमारे होत्था अहीण जाव जुवराया ४। तते णं तस्स सीहसेणस्स कुमारस्स अम्मापियरो अन्नया कयाइं पंच पासाय-वडिंसय-सयातिं करेंति, अब्भुग्गतमूसिय-पहसिए तए णं तस्स सीहसेणस्स कुमारस्स अन्नया कयावि सामापामोक्खाणं पंचण्हं रायवर-कन्नगसयाणं एगदिवसेणं पाणिं गिराहावेंसु पंचसयओ दाओ, तते णं से सीहसेणे कुमारे सामापामोक्खाहिं पंचहिं देवीसतेहिं (सयाहिं देवीहिं) सद्धिं उप्पिं जाव विहरति ५। तते णं से महसेणे राया अन्नया कयाइ काल-धम्मुणा संजुत्ते, नीहरणं राया जाए महता जाव महिंदसारे, तए णं से सीहसेणे राया सामाए देवीए मुच्छिते ४ अवसेसाओ देवीओ नो आढाति नो परिजाणाति अणाढाइज्जमाणे अपरिजाणमाणे विहरति ६। तते णं तासिं एगूणगाणं पंचण्हं देवीसयाणं एगूणाइं पंच माई[धाई]सयाइं इमीसे कहाए लद्धट्ठाइं समाणाइं (सवणयाए) एवं खलु सामी ! सीहसेणे राया सामाए देवीए मुच्छिए ४ अम्हं धूयाओ नो आढाति नो परिजाणाति अणाढायमाणे अपरिजाणमाणे विहरति, तं सेयं खलु अम्हं सामं देविं अग्गिपओगेण वा विसप्पओगेण वा सत्थप्पओगेण वा जीवियातो ववरो-वित्तए, एवं संपेहेन्ति सामाए देवीए अंतराणि य छिद्दाणि य विवराणि य पडिजागरमाणीओ २ विहरंति ७। तते णं सा सामा देवी इमीसे कहाए लद्धट्ठा समाणी एवं वयासी–एवं खलु सामी ! मम पंचण्हं सवत्तीसयाणं

पंच माईसयाइं इमीसे कहाए लद्धट्ठाइं समाणाइं (सवणयाए) अन्नमन्नं एवं वयासी—एवं खलु सीहसेणे जाव पडिजागरमाणीओ विहरंति, तं न नज्जति णं मम केणवि कुमरणेणं मारिस्संतितिकट्टु भीया जेणेव कोवघरे तेणेव उवागच्छति २ त्ता ओहयमण-संकप्पा जाव भियाति ८। तते णं से सीहसेणे राया इमीसे कहाए लद्धट्ठे समाणे जेणेव कोवघरए जेणेव सामा देवी तेणेव उवागच्छति २ त्ता सामं देविं ओहयमण-संकप्पा जाव पासति २ त्ता एवं वयासी—किन्नं देवाणुप्पिया! ओहयमण-संकप्पा जाव भियासि?, तते णं सा सामा देवी सीहसेणेणं रएणा एवं वुत्ता समाणा उप्फेणओफेणियं सीहसेणं रायं एवं वयासी—एवं खलु सामी! मम एगूणपंचसवत्ती-सयाणं एगूणपंच[धाइ]माईसयाणं इमीसे कहाए लद्धाए समाणाए अन्नमन्ने सद्दावेंति २ एवं वयासी—एवं खलु सीहसेणे राया सामाए देवीए उवरि मुच्छिए अम्हा णं धूआ णो आढाति जाव अंतराणि अ छिद्दाणि य विवराणि य पडिजागरमाणीओ विहरंति तं न नज्जति जाव भीया जाव भियामि ६। तते णं से सीहसेणे राया सामं देविं एवं वयासी—मा णं तुमं देवाणुप्पिया! ओहयमण-संकप्पा जाव भियाइसि, अहन्नं तह घत्तिहामि जहा णं तव णत्थि कत्तोवि सरीरस्स आबाहे वा पबाहे वा भविस्सतित्ति-कट्टु ताहिं इट्ठाहिं ६ समासासेति, ततो पडिनिक्खमति २ त्ता कोडुंबिय-पुरिसे सद्दावेइ २ त्ता एवं वयासी—गच्छह णं तुब्भे देवाणुप्पिया! सुपइट्ठस्स णगरस्स बहिया एगं महं कूडागारसालं करेह अणेगक्खंभसयसन्निविट्ठं पासाइयं दरिसणिज्जं अभिरूवं पडिरूवं, करिता २ मम एयमाणत्तियं पच्चप्पिणह १०। तते णं ते कोडुंबियपुरिसा करयल जाव पडिसुणेंति २ सुपइट्ठियनगरस्स बहिया पच्चत्थिमे दिसीविभाए एगं महं कूडागारसालं जाव करेंति अणेगक्खंभसयसन्निविट्ठं पासाइयं दरिसणिज्जं अभिरूवं पडिरूवं, करित्ता जेणेव सीहसेणे राया तेणेव उवागच्छंति २ त्ता तमाणत्तियं

पच्चप्पिणंति ११ । तते णं से सीहसेणे राया अन्नया कयाति एगूणगाणं पंचराहं देवीसयाणं एगूणाइं पंचमाइसयाइं आमंतेति, तते णं तासिं एगूण-पंचदेवीसयाणं एगूणा (एगुणाइं) पंचमाइसयाइं सीहसेणेणं रन्ना आमंतियाइं समाणाति सव्वालंकारविभूसियाइं जहाविभवेणं जेणेव सुपइट्ठे णगरे जेणेव सीहसेणे राया तेणेव उवागच्छंति १२ । तते णं से सीहसेणे राया एगूण-पंचदेवीसयाणं एगूणगाणं पंचमाइसयाणं कूडागारसालं आवासे दलयति, तते णं से सीहसेणे राया कोडुंबियपुरिसे सद्दावेति २ त्ता एवं वयासी–गच्छह णं तुम्हे देवाणुप्पिया ! विउलं असणं ४ उवणेह सुबहुं पुप्फवत्थ-गंधमल्लालंकारं च कूडागारसालं साहरह य, तते णं ते कोडुंबियपुरिसा तहेव जाव साहरेंति १३ । तते णं तासिं एगूणगाणं पंचराहं देवीसयाणं एगूणपंचमाइसयाइं सव्वालंकारविभूसियाइं करेंति २ तं विउलं असणं ४ सुरं च ६ आसाएमाणाइं ४ गंधव्वेहि य नाडएहि य उवगीयमाणाइं २ विहरंति, तए णं से सीहसेणे राया अद्धरत्तकालसमयंसि बहूहिं पुरिसेहिं सद्धिं संपरिवुडे जेणेव कूडागारसाला तेणेव उवागच्छति २ त्ता कूडागार-सालाए दुवाराइं पिहेति २ कूडागारसालाए सव्वओ समंता अगणिकायं दलयति, तते णं तासिं एगूणगाणं पंचराहं देवीसयाणं एगूणगाइं पंच[धाइ] माइसयाइं सीहसेणरराणा आलीवियाइं समाणाइं रोयमाणाइं ३ अत्ताणाइं असरणाइं कालधम्मुणा संजुत्ताइं १४ । तते णं से सीहसेणे राया एयकम्मे ४ सुबहुं पावकम्मं समज्जिणित्ता चोत्तीसं वाससयाइं परमाउयं पालइत्ता कालमासे कालं किच्चा छट्ठीए पुढवीए उक्कोसेणं बावीससागरोवमाइं ठितिएसु उववन्ने १५ । से णं तओ अणंतरं उव्वट्टित्ता इहेव रोहीडए नगरे दत्तस्स सत्थवाहस्स कन्नसिरिए भारियाए कुच्छिंसि दारियाए उववन्ने, तते णं सा कन्नसिरी नवराहं मासाणं जाव दारियं पयाया सुकुमाल जाव सुरूवं, तते णं तीसे दारियाए अम्मापियरो निव्वित्तबारसाहियाए विउलं असणं

४ जाव मित्तणाति जाव णामधेज्जं करेंति तं होऊ णं दारिया देवदत्ता णामेणं, तए णं सा देवदत्ता पंचधातीपरिगहिया जाव परिवड्ढति, तते णं सा देवदत्ता दारिया उम्मुक्कबालभावा जोव्वणेण रूवेण लावण्णेण य जाव अतीव उक्किट्ठा उक्किट्ठसरीरा जाया यावि होत्था, तते णं सा देवदत्ता दारिया अन्नया कयाइ गहाया जाव विभूसिया बहूहिं खुज्जाहिं जाव परिक्खित्ता उप्पिं आगासतलगंसि कणगतिंदूसेणं कीलमाणी विहरइ १६ । इमं च णं वेसमणदत्ते राया गहाए जाव विभूसिए आसं दुरूहित्ता बहूहिं पुरिसेहिं सद्धिं संपरिवुडे आसवाहिणीयाए णिज्जायमाणे दत्तस्स गाहावइस्स गिहस्स अदूरसामंतेणं विइवयति, तते णं से वेसमणे राया जाव विइवयमाणे देवदत्तं दारियं उप्पिं आगासतलगंसि कणगतिंदूसेण य कीलमाणीं पासति, देवदत्ताए दारियाए रूवेण य जुव्वणेण य लावण्णेण य जाव विम्हिए कोडुंबियपुरिसे सद्दावेति सद्दावेत्ता एवं वयासी–कस्स णं देवाणुप्पिया ! एसा दारिया किं वा नामधेज्जेणं ?, तते णं ते कोडुंबियपुरिसा वेसमणरायं करयल जाव एवं वयासी–एस णं सामी ! दत्तस्स सत्थवाहस्स धूआ कन्नसिरीए भारियाए अत्तया देवदत्ता नामं दारिया रूवेण य जुव्वणेण य लावण्णेण य उक्किट्ठा उक्किट्ठसरीरा, तते णं से वेसमणे राया आसवाहणियाओ पडिनियत्ते समाणे अब्भितरट्ठाणिज्जे पुरिसे सद्दावेइ अब्भितरट्ठाणिज्जे पुरिसे सद्दावेत्ता एवं वयासी–गच्छह णं तुब्भे देवाणुप्पिया ! दत्तस्स धूयं कन्नसिरीए भारियाए अत्तयं देवदत्तं दारियं पूसणंदस्स जुवरन्नो भारियत्ताए वरेह, जतिवि य सा सयंरज्जसुका १७ । तते णं ते अब्भितरट्ठाणिज्जा पुरिसा वेसमणेणं रन्ना एवं वुत्ता समाणा हट्ठतुट्ठा करयल जाव पडिसुणेंति २ गहाया जाव सुद्धप्पावेसाइं जाव संपरिवुडा जेणेव दत्तस्स गिहे तेणेव उवागच्छित्था, तते णं से दत्ते सत्थवाहे ते पुरिसे एज्जमाणे पासति ते पुरिसे एज्जमाणे पासित्ता हट्ठतुट्ठे आसणाओ अब्भुट्ठेइ आस-

णाओ अब्भुट्ठित्ता सत्तट्ठपयाइं अब्भु(पच्चु)ग्गते आसणेणं उवनिमंतेति २ ते पुरिसे आसत्थे वीसत्थे सुहासणवरगए एवं वयासी–संदिसंतु णं देवाणुप्पिया ! किं आगमणप्पओयणं ?, तते णं ते रायपुरिसा दत्तं सत्थवाहं एवं वयासी–अम्हे णं देवाणुप्पिया ! तव धूयं कण्हसिरीए अत्तयं देवदत्तं दारियं पूसनंदिस्स जुवरण्णो भारियत्ताते वरेमो, तं जइ णं जाणासि देवाणुप्पिया ! जुत्तं वा पत्तं वा सलाहणिज्जं वा सरिसो वा संजोगो त्ता दिज्जउ णं देवदत्ता दारिया पूसणंदिस्स जुवरण्णो, भण देवाणुप्पिया ! किं दलयामो सुक्कं ? १८ । तते णं से दत्ते अब्भितरट्ठाणिज्जे पुरिसे एवं वयासी–एवं चेव णं देवाणुप्पिया ! मम सुक्कं जन्नं वेसमणे राया मम दारियानिमित्तेणं अणुगिण्हति, ते ठाणेज्जपुरिसे विपुलेणं पुप्फवत्थगंधमल्लालंकारेणं सक्कारेति सम्माणेति २ पडिविसज्जेति १९ । तते णं ते ठाणिज्जपुरिसा जेणेव वेसमणे राया तेणेव उवागच्छति २ त्ता वेसमणस्स रन्नो एयमट्ठं निवेदेंति, तते णं से दत्ते गाहावती अन्नया कयावि सोभणंसि तिहि-करण-दिवस-नक्खत्तमुहुत्तंसि विपुलं असणं ४ उवक्खडावेइ २ त्ता मित्तनाति-णियग-सयण-संबंधि-परिजणं आमंतेति, ण्हाते जाव पायच्छित्ते सुहासणवरगते तेणं मित्तनाइनियग-सयण-संबंधिजणेण सद्धिं संपरिवुडे तं विउलं असणं ४ आसाएमाणा ४ विहरति जिमयिभुत्तुत्तरागया आयंते ३ तं मित्तनाइनियगसयण-संबंधि-परिजणं विउलगंधपुप्फ जाव अलंकारेणं सक्कारेति सम्माणेति २ देवदत्तं दारियं ण्हायं जाव विभूसियसरीरं पुरिससहस्सवाहिणीयं सीयं दुरूहति २ सुबहुमित्त जाव सद्धिं संपरिवुडा सव्वइड्ढीए जाव नाइयरवेणं रोहीडं नगरं मज्झंमज्झेणं जेणेव वेसमणरण्णो गिहे जेणेव वेसमणे राया तेणेव उवागच्छंति २ त्ता करयल जाव वद्धावेंति २ त्ता वेसमणस्स रन्नो देवदत्तं दारियं उवणेंति २० । तते णं से वेसमणे राया देवदत्तं दारियं उवणीयं पासति उवणीयं पासित्ता हट्ठतुट्ठ जाव हियया

विउलं असणं ४ उवक्खडावेति २ मित्तनाति-नियग-सयण-संबंधि-परिजणं आमंतेति जाव सक्कारेति २ पूसणंदिकुमारं देवदत्तं च दारियं पट्टयं दुरूहेति २ त्ता सेयापीतेहिं कलसेहिं मज्जावेति २ त्ता वरनेवत्थाइं करेति २ त्ता अग्गिहोमं करेति पूसणंदीकुमारं देवदत्ताए दारियाते पाणिं गिण्हावेति २१। तते णं से वेसमणे राया पूसनंदिकुमारस्स देवदत्तं दारियं सव्वइड्ढीए जाव रवेणं महया इड्ढीसक्कारसमुदएणं पाणिग्गहणं कारेति देवदत्ताए दारियाए अम्मापियरो मित्त जाव परियणं च विउलेणं असणं ४ वत्थगंध-मल्लालंकारेण य सक्कारेति सम्माणेति जाव पडिविसज्जेति २२। तए णं से पूसनंदीकुमारे देवदत्ताए दारियाए सद्धिं उप्पिं पासायवरगए फुट्टेहिं मुइंग-मत्थेहिं बत्तीसइबद्धेहिं नाडएहिं उवगिज्जमाणे उवलालिज्जमाणे माणुस्सए कामभोगे पच्चणुब्भवमाणे विहरति २३। तते णं से वेसमणे राया अन्नया कयाइं कालधम्मुणा संजुत्ते नीहरणं जाव राया जाते, तए णं से पूसनंदी राया सिरीए देवीए मायाभत्ते यावि होत्था, कल्लाकल्लिं जेणेव सिरी देवी तेणेव उवागच्छति २ त्ता सिरीए देवीए पायवडणं करेति सयपागसहस्स-पागेहिं तेल्लेहिं अब्भिगावेति अट्ठिसुहाए मंससुहाए तयासुहाए चम्मसुहाए रोमसुहाए चोव्विहाए संवाहणाए संवाहावेति सुरभिणा गंधवट्टएणं उवट्टा-वेति २ तिहिं उदएहिं मज्जावेति तंजहा—उसिणोदएणं सीओदएणं गंधोदएणं, विउलं असणं ४ भोयावेति सिरीए देवीए ण्हाताए जाव पायच्छित्ताए जाव जिमियभुत्तुत्तरागयाए तते णं पच्छा ण्हाति वा भुंजति वा, उरालाइं माणुस्सगाइं भोगभोगाइं भुंजमाणे विहरति २४। तते णं तीसे देवदत्ताए देवीए अन्नया कयाइ पुव्वरत्तावरत्तकालसमयंसि कुडुंबजागरियं जागरमाणीइ इमेयारूवे अब्भत्थिए ५ समुप्पन्ने—एवं खलु पूसनंदी राया सिरीए देवीए माइभत्ते जाव विहरति तं एएणं वक्खेवेणं नो संचाएमि अहं पूसनंदीणा रण्णा सद्धिं उरालाइं भोगभोगाइं भुंजमाणीए विहरित्तए, तं सेयं खलु मम

सिरिदेवीं अग्गिपओगेण वा सत्थप्पओगेण वा विसप्पओगेण वा मंतप्पओगेण वा जीवियाओ ववरोवेत्तए २ पूसनंदिरन्ना सद्धिं उरालाइं भोगभोगाइं भुंजमाणीए विहरित्तए, एवं संपेहेइ २ त्ता सिरीए देवीए अंतराणि य ३ पडिजागरमाणी विहरति २५। तते णं सा सिरिदेवी अन्नया कयावि मज्जाइया विरहियसयणिज्जंसि सुहपसुत्ता जाया यावि होत्था, इमं च णं देवदत्ता देवी जेणेव सिरीदेवी तेणेव उवागच्छति २ त्ता सिरिदेवीं मज्जाइयं विरहितसयणिज्जंसि सुहपसुत्तं पासति २ दिसालोयं करेति २ जेणेव भत्तघरे तेणेव उवागच्छति २ लोहदंडं परामुसति २ लोहदंडं तावेति तत्तं समजोइ-भूयं फुल्लकिंसुयसमाणं संडासएणं गहाय जेणेव सिरिदेवी तेणेव उवागच्छति २ त्ता सिरिए देवीए अवाणंसि पक्खिवेति, तते णं सा सिरीदेवी महया २ सद्देणं आरसित्ता कालधम्मुणा संजुत्ता २६। तते णं तीसे सिरीए देवीए दासचेडीओ आरसियसद्दं सोच्चा निसम्म जेणेव सिरीदेवी तेणेव उवाग-च्छंति २ देवदत्तं देवीं ततो अवक्कममाणिं पासंति २ जेणेव सिरीदेवी तेणेव उवागच्छंति सिरिदेवीं निप्पाणं निच्चेट्ठं जीवियविप्पजढं पासंति २ हा हा अहो अकज्जमितिकट्टु रोयमाणीओ कंदमाणीओ विलवमाणीओ जेणेव पूसनंदी राया तेणेव उवागच्छंति २ त्ता पूसनंदीं रायं एवं वयासी—एवं खलु सामी! सिरीदेवी देवदत्ताए देवीए अकाले चेव जीवियाओ ववरोविया २७। तते णं से पूसनंदी राया तासिं दासचेडीणं अंतिए एयमट्ठं सोच्चा निसम्म महया मातिसोएणं अप्फुण्णे समाणे परसुनियत्तेविव चंपगवरपायवे धसत्ति धरणीतलंसि सव्वंगेहिं सन्निवडिए २८। तते णं से पूसनंदी राया मुहुत्तंतरेण आसत्थे वीसत्थे समाणे बहूहिं राईसर जाव सत्थवाहेहिं मित्त जाव परियणेण य सद्धिं रोयमाणे ३ सिरीए देवीए महया इड्ढीए इड्ढीसक्कार-समुदएणं नीहरणं करेति २ त्ता आसुरुत्ते ४ देवदत्तं देविं पुरिसेहिं गिण्हावेति २ तेणं विहाणेणं वज्झं आणवेति, तं एवं खलु

गोयमा ! देवदत्ता देवी पुरापुराणाणं जाव विहरति २९। देवदत्ता णं भंते ! देवी इओ कासमासे कालं किच्चा कहिं गमिहिति ? कहिं उववज्जिहिति ?, गोयमा ! असीइं वासाइं परमाउयं पालइत्ता कालमासे कालं किच्चा इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए णेरइयत्ताए उववज्जिहिइ संसारो वणस्सतिसु ततो अणंतरं उव्वट्टित्ता गंगपुरे नगरे हंसत्ताए पच्चायाहिति, से णं तत्थ साउणितेहिं वधिए समाणे तत्थेव गंगपुरे णगरे सेट्ठिकुलंसि बोहिं सोहम्मे महाविदेहे वासे सिज्झिहिति, णिक्खेवो ३०॥ सू० २९॥ दुहविवागस्स नवमं अज्झयणं तिबेमि॥

॥ इति नवममध्ययनम्॥ श्रु० १-अ० ९॥

॥ अथ उम्बरदत्ताख्यं दशममध्ययनम् ॥

जति णं भंते ! समणेणं भगवया महावीरेणं दसमस्स उक्खेवो, एवं खलु जंबू ! तेणं कालेणं तेणं समएणं वद्धमाणपुरे णामे णगरे होत्था, विजयवद्धमाणे उज्जाणे माणिभद्दे जक्खे विजयमित्ते राया, तत्थ णं धणदेवे नामं सत्थवाहे होत्था अड्ढे जाव अपरिभूए, पियंगूनामभारिया अंजू दारिया जाव सरीरा, समोसरणं परिसा जाव पडिगया १। तेणं कालेणं तेणं समएणं जेट्ठे जाव अडमाणे जाव विजयमित्तस्स रन्नो गिहस्स असोगवणियाए अदूरसामंतेणं वितिवयमाणे पासति एगं इत्थियं सुक्कं भुक्खं निम्मंसं किडिकिडीभूयं अट्ठिचम्मावणद्धं नीलसाडगनियत्थं कट्ठाइं कलुणाइं विसराइं कूवमाणं पासति २ चिंता तहेव जाव एवं वयासी–सा णं भंते ! इत्थिया पुव्वभवे का आसि ?, वागरणं २। एवं खलु गोयमा ! तेणं कालेणं तेणं समएणं इहेव जंबुद्दीवे दीवे भारहे वासे इंदपुरे णामं णगरे होत्था, तत्थ णं इंददत्ते राया पुढवीसिरी नामं गणिया होत्था वण्णओ, तते णं सा पुढवीसिरी गणिया इंदपुरे णगरे बहवे राईसर जावप्पभियओ

बहूहिं चुन्नप्पओगेहि य जाव आभिओगेत्ता उरालाइं माणुस्सगाइं भोगभोगाइं भुंजमाणा विहरति ३। तते णं सा पुढवीसिरी गणिया एयकम्मा ४ सुबहुं पावकम्मं समज्जिणित्ता पणतीसं वाससयाइं परमाउयं पालइत्ता कालमासे कालं किच्चा छट्टीए पुढवीए उक्कोसेणं णेरइयत्ताए उववन्ना ४। सा णं तओ अणंतरं उव्वट्टित्ता इहेव वद्धमाणपुरे णगरे धणदेवस्स सत्थवाहस्स पियंगुभारियाते कुच्छिंसि दारियत्ताए उववन्ना ५। तते णं सा पियंगुभारिया णवण्हं मासाणं दारियं पयाया, नामं अंजूसिरी, सेसं जहा देवदत्ताए ६। तते णं से विजए राया आसवाह जहा वेसमणदत्ते तहा अंजूं पासइ णवरं अप्पणो अट्ठाए वरेति जहा तेतली जाव अंजूए दारियाते सद्धिं उप्पिं जाव विहरति, तते णं तीसे अंजूते देवीतें अन्नया कयावि जोणिसूले पाउब्भूते यावि होत्था, तते णं से विजये राया कोडुंबियपुरिसे सद्दावेति २ एवं वयासी–गच्छह णं तुब्भे देवाणुप्पिया! वद्धमाणे पुरे णगरे सिंघाडग जाव एवं वदह–एवं खलु देवाणुप्पिया! विजयस्स रायस्स अंजूए देवीए जोणिसूले पाउब्भूते जो णं इत्थ विज्जो वा ६ जाव उग्घोसेंति, तते णं ते बहवे विज्जा वा ६ इमं एयारूवं सोच्चा निसम्म जेणेव विजए राया तेणेव उवागच्छंति २ त्ता अंजूते बहूहिं उप्पत्तियाहि ४ परिणामेमाणा इच्छंति अंजूते देवीए जोणिसूलं उवसामित्तते, नो संचाएंति उवसामित्तए तते णं ते बहवे विज्जा य ६ जाहे नो संचाएंति अंजूदेविए जोणिसूलं उवसामित्तते ताहे संता तंता परितंता जामेव दिसिं पाउब्भूया तामेव दिसिं पडिगया ७। तते णं सा अंजूदेवी ताए वेयणाए अभिभूता समाणा सुक्का भुक्खा निम्मंसा कट्ठाइं कलुणाइं विसराइं विलवति, एवं खलु गोयमा! अंजूदेवी पुरापोराणाणं जाव विहरति ८। अंजू णं भंते! देवी इओ कालमासे कालं किच्चा कहिं गच्छिहिति? कहिं उववज्जिहिति?, गोयमा! अंजू णं देवी नउइं वासाइं परमाउयं पालयित्ता कालमासे कालं किच्चा इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए

नेरइयत्ताए उववज्जिहिइ, एवं संसारो जहा पढमे तहा नेयव्वं जाव वणस्सतिसु ६ । सा णं ततो अणंतरं उव्वट्टित्ता सव्वतोभद्दे नगरे मयूरत्ताए पचायाहिति, से णं तत्थ साउणिएहिं वधिए समाणे तत्थेव सव्वतोभद्दे नगरे सेट्ठिकुलंसि पुत्तत्ताए पचायाहिति, से णं तत्थ उम्मुक्कबालभावे तहारूवाणं थेराणं अंतिए केवलं बोहिं बुज्झिहिति पव्वज्जा सोहम्मे, से णं ताओ देवलोगाओ आउक्खएणं जाव कहिं गच्छिहिति ? कहिं उववज्जिहिति ?, गोयमा ! महाविदेहे जहा पढमे जाव सिज्झिहिइ जाव अंतं काहिति १० । एवं खलु जंबू ! समणेणं जाव संपत्तेणं दुहविवागाणं दसमस्स अज्झयणस्स अयमट्ठे पन्नत्ते, सेवं भंते २ जाव विहरति ॥सू० ३०॥ दुहविवागो दससु अज्झयणेसु ॥ पढमो सुयक्खंधो सम्मत्तो ॥

॥ इति दशममध्ययनम् ॥ श्रु० १--अ० १० ॥

॥ इति प्रथमः श्रुतस्कन्धः ॥ १ ॥

—:०:—

॥ अथ सुखविपाकाख्यो द्वितीयः श्रुतस्कन्धः ॥

॥ अथ सुबाहुनामकं प्रथममध्ययनम् ॥

तेणं कालेणं तेणं समएणं रायगिहे णगरे गुणसिले चेइए सोहम्मे समोगढे, जंबू जाव पज्जुवासमाणे एवं वयासी—जति णं भंते ! समणेणं जाव संपत्तेणं दुहविवागाणं अयमट्ठे पण्णत्ते सुहविवागाणं भंते ! समणेणं जाव संपत्तेणं के अट्ठे पन्नत्ते ?, तते णं से सोहम्मे अणगारे जंबू अणगारं एवं वयासी—एवं खलु जंबू ! समणेणं जाव संपत्तेणं सुहविवागाणं दस अज्झयणा पन्नत्ता, तंजहा—सुबाहू १ भद्दनंदी २ य, सुजाए य ३ सुवासवे ४ । तहेव जिणदासे ५, धणपती य ६ महब्बले ७ ॥ १ ॥ भद्दनंदी ८ महच्चंदे ९ वरदत्ते १० । १ । जति णं भंते ! समणेणं जाव संपत्तेणं सुह-

विवागाणं दस अज्झयणा पन्नत्ता पढमस्स णं भंते ! अज्झयणस्स सुहविवागाणं जाव संपत्तेणं के अट्ठे पण्णत्ते ?, तते णं से सुहम्मे अणगारे जंबूं अणगारं एवं वयासी–एवं खलु जंबू ! तेणं कालेणं तेणं समएणं हत्थिसीसे नामं णगरे होत्था रिद्धत्थिमियसमिद्धे, तस्स णं हत्थिसीसस्स नगरस्स बहिया उत्तरपुरच्छिमे दिसीभाए एत्थ णं पुप्फकरंडए णामं उज्जाणे होत्था सव्वोउय-पुप्फफलसमिद्धे रम्मे नंदणवणप्पगासे पासाईए तत्थ णं कयवणमालपियस्स जक्खस्स जक्खाययणे होत्था दिव्वे० २ । तत्थ णं हत्थिसीसे णगरे अदीणसत्तू णामं राया होत्था महता जाव महिंदसारे, तस्स णं अदीणसत्तुस्स रन्नो धारणीपामोक्खं देवीसहस्सं ओरोहे यावि होत्था ३ । तते णं सा धारणी देवी अन्नया कयाइ तंसि तारिसगंसि वासभवणंसि-(घरंसि) सीहं सुमिणे पासति जहा मेहस्स जम्मणं तहा भाणियव्वं जाव सुबाहुकुमारे जाव अलं भोगसमत्थं वा जाणेंति २ अम्मापियरो पंच पासायवडिंसगसयाइं करावेंति अब्भुग्गय-मूसियपहसिए भवणं ४ । एवं जहा महाबलस्स रन्नो, णवरं पुप्फचूलापामोक्खाणं पंचण्हं रायवरकन्नयसयाणं एगदिवसेणं पाणिं गिण्हावेंति, तहेव पंचसतिओ दाओ जाव उप्पिं पासायवरगते फुट्ट माणेहिं जाव विहरति ५ । तेणं कालेणं तेणं समएणं समणे भगवं महावीरे समोसढे समोसरणं परिसा निग्गया अदीणसत्तू निग्गते, जहा कोणिओ निग्गतो सुबाहूवि जहा जमाली तहा रहेणं निग्गते जाव धम्मो कहिओ रायपरिसा पडिगया ६ । तते णं से सुबाहुकुमारे समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतिए धम्मं सोच्चा निसम्म हट्ठतुट्ठे उट्ठाए उट्ठेति जाव एवं वयासी–सद्दहामि णं भंते ! निग्गंथं पावयणं पत्तियामि णं भंते ! निग्गंथं पावयणं जहा णं देवाणुप्पियाणं अंतिए बहवे राईसर जाव पव्वयंति, नो खलु अहं तहा संचाएमि पव्वइत्तए, अहण्णं देवाणुप्पियाणं अंतिए पंचअणुव्वइयं सत्तसिक्खावइयं गिहिधम्मं पडिवज्जामि, अहासुहं देवाणु-

प्पिया! मा पडिबंधं करेह ७। तते णं से सुबाहू समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतिए पंचाणुव्वइयं सत्तसिक्खावइयं गिहिधम्मं पडिवज्जति २ तमेव चाउग्घंटं आसरहं दुरूहति जामेव दिसं पाउब्भूते तामेव दिसिं पडिगए ८। तेणं कालेणं तेणं समएणं समणस्स भगवओ महावीरस्स जेट्ठे अंतेवासी इंदभई जाव एवं वयासी—अहो णं भंते! सुबाहुकुमारे इट्ठे इट्ठरूवे कंते कंतरूवे पिए २ मणुन्ने २ मणामे २ सोमे २ सुभगे २ पियदंसणे सुरूवे, बहुजणस्सवि य णं भंते! सुबाहुकुमारे इट्ठे ५ सोमे ४ साहुजणस्सवि य णं भंते! सुबाहुकुमारे इट्ठे इट्ठरूवे ५ जाव सुरूवे, सुबाहुणा भंते! कुमारेणं इमा एयारूवा उराला माणुस्सरिद्धी किन्ना लद्धा? किणणा पत्ता? किणणा अभिसमन्नागया? के वा एस आसि पुव्वभवे?, एवं खलु गोयमा! तेणं कालेणं तेणं समएणं इहेव जंबुद्दीवे दीवे भारहे वासे हत्थिणाउरे णामं णगरे होत्था रिद्धत्थिमियसमिद्धे, तत्थ णं हत्थिणाउरे णगरे सुमुहे नामं गाहावई परिवसइ अड्ढे जाव अपरिभूए ९। तेणं कालेणं तेणं समएणं धम्मघोसा णामं थेरा जातिसंपन्ना जाव पंचहिं समणसएहिं सद्धिं संपरिवुडा पुव्वाणुपुव्विं चरमाणा गामाणुगामं दूइज्जमाणा जेणेव हत्थिणाउरे णगरे जेणेव सहस्संबवणे उज्जाणे तेणेव उवागच्छइ २ त्ता अहापडिरूवं उग्गहं उग्गिणिहत्ता णं संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणा विहरन्ति, तेणं कालेणं तेणं समएणं धम्मघोसाणं थेराणं अंतेवासी सुदत्ते णामं अणगारे उराले जाव लेस्से मासंमासेणं खममाणे विहरति १०। तए णं से सुदत्ते अणगारे मासक्खमणपारणगंसि पढमाए पोरिसीए सज्झायं करेति जहा गोयमसामी तहेव धम्मघोसे सुधम्मे थेरे आपुच्छति जाव अडमाणे सुमुहस्स गाहावतिस्स गेहे अणुप्पविट्ठे, तए णं से सुमुहे गाहावती सुदत्तं अणगारं एज्जमाणं पासति २ त्ता हट्ठतुट्ठे आसणातो अब्भुट्ठेति २ पायपीढाओ पच्चोरुहति २ पाउयातो ओमुयति २ एगसाडियं

उत्तरासंगं करेति २ सुदत्तं अणगारं सत्तट्ठ–पयाइं अणुगच्छति २ त्ता तिक्खुत्तो आयाहिणपयाहिणं करेइ २ त्ता वंदति णमंसति २ जेणेव भत्तघरे तेणेव उवागच्छति २ त्ता सयहत्थेणं विउलेणं असणपाणेणं ४ पडिलाभेस्सामीति तुट्ठे ११ । तते णं तस्स सुमुहस्स (सुहम्मस्स) गाहावइस्स तेणं दव्वसुद्धेणं गाहगसुद्धेणं दायगसुद्धेणं (पडिगाहगसुद्धेणं) तिविहेणं तिकरणसुद्धेणं सुदत्ते अणगारे पडिलाभिए समाणे संसारे परित्तीकते मणुस्साउते निबद्धे गेहंसि य से इमाइं पंच दिव्वाइं पाउब्भूयाइं, तंजहा–वसुहारा वुट्ठा दसद्धवन्ने कुसुमे निवातिते चेलुक्खेवे कए आहयाओ देवदुंदुहीओ अंतरावि य णं आकासे अहो दानमहो दानं घुट्ठे य १२ । हत्थिणाउरे सिंघाडग जाव पहेसु बहुजणो अन्नमन्नस्स एवं आइक्खति ४–धण्णे णं देवाणुप्पिए ! सुमुहे गाहावई ५ [सुकयपुन्ने कयलक्खणे सुलद्धे णं मणुस्सजम्मे सुकयत्थे] जाव तं धन्ने णं देवाणुप्पिया ! सुमुहे गाहावई एवं जाव कयत्थे णं देवाणुप्पिया सुमुहे गाहावई १३ । तते णं से सुमुहे गाहावई बहूइं वाससताइं आउयं पालइत्ता कालमासे कालं किच्चा इहेव हत्थिसीसे णगरे अदीणसत्तुस्स रन्नो धारणीए देवीए कुच्छिंसि पुत्तत्ताए उववन्ने, तते णं सा धारणी देवी सयणिज्जंसि सुत्तजागरा २ ओहीरमाणी २ तहेव सीहं पासति सेसं तं चेव जाव उप्पिं पासाए विहरति, तं एयं खलु गोयमा ! सुबाहुणा इमा एयारूवा माणुस्सरिद्धी लद्धा पत्ता अभिसमन्नागया, पभू णं भंते ! सुबाहुकुमारे देवाणुप्पियाणं अंतिए मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइत्तए ?, हंता पभू, तते णं से भगवं गोयमे समणं भगवं महावीरं वंदति नमंसति २ संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे विहरति १४ । तते णं से समणे भगवं महावीरे अन्नया कयाइ हत्थिसीसाओ णगराओ पुप्फगउज्जाणाओ कयवणमालजक्खाययणाओ पडिणिक्खमति २ त्ता बहिया जणवयविहारं विहरति,

तते णं से सुबाहुकुमारे समणोवासए जाते अभिगयजीवाजीवे जाव पडिला-
भेमाणे विहरति १५। तते णं से सुबाहुकुमारे अन्नया कयाइं चाउद्दसट्ठ-
मुद्दिट्ठ-पुण्णमासिणीसु जेणेव पोसहसाला तेणेव उवागच्छति २ त्ता
पोसहसालं पमज्जति २ त्ता उच्चारपासवणभूमिं पडिलेहति २ त्ता दब्भ-
संथारगं संथरति २ दब्भसंथारं दुरूहइ दुरूहित्ता अट्ठमभत्तं पगिण्हइ
पगिण्हेत्ता पोसहसालाए पोसहिते अट्ठमभत्तिए पोसहं पडिजागरमाणे
विहरति १६। तए णं तस्स सुबाहुस्स कुमारस्स पुव्वरत्तावरत्तकालसमयंसि
धम्मजागरियं जागरमाणस्स इमेयारूवे अब्भत्थिए ५—धण्णा णं ते गामागर-
णगर जाव सन्निवेसा जत्थ णं समणे भगवं महावीरे जाव विहरति, धन्ना णं
ते राईसरतलवर जे णं समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतिए मुंडा जाव
पव्वयंति, धन्ना णं ते राईसरतलवर जे णं समणस्स भगवओ महावीरस्स
अंतिए पंचाणुव्वइयं जाव गिहिधम्मं पडिवज्जंति, धन्ना णं ते राईसर जाव जे
णं समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतिए धम्मं सुणेंति, तं जति णं समणे
भगवं महावीरे पुव्वाणुपुव्विं चरमाणे गामाणुगामं दूइज्जमाणे इहमागच्छिज्जा
जाव विहरिज्जा, तते णं अहं समणस्स भगवओ अंतिए मुंडे भवित्ता जाव
पव्वएज्जा १७। तते णं समणे भगवं महावीरे सुबाहुस्स कुमारस्स इमं
एयारूवं अज्झत्थियं जाव वियाणित्ता पुव्वाणुपुव्विं जाव दूइज्जमाणे जेणेव
हत्थिसीसे णगरे जेणेव पुप्फगउज्जाणे जेणेव कयवणमालपियस्स जक्खस्स
जक्खाययणे तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता अहापडिरूवं उग्गहं गिण्हित्ता
संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे विहरति, परिसा राया निग्गया १८।
तते णं तस्स सुबाहुयस्स कुमारस्स तं महया जहा पढमं तहा निग्गओ
धम्मो कहिओ परिसा राया पडिगया १९। तते णं से सुबाहुकुमारे
समणस्स भगवतो महावीरस्स अंतिए धम्मं सोच्चा निसम्म हट्ठतुट्ठ जहा
मेहे तहा अम्मापियरो आपुच्छति णिक्खमणाभिसेयो तहेव जाव अणगारे

जाते ईरियासमिए जाव बंभयारी २० । तते णं से सुबाहू अणगारे समणस्स भगवओ महावीरस्स तहारूवाणं थेराणं अंतिए सामाइयमाइयाइं एक्कारस अंगाइं अहिज्जति २ बहूहिं चउत्थछट्ठट्ठम-दसम-दुवालसेहिं मासद्धमास-खमणेहिं विविहेहिं तवोविहाणेहिं अप्पाणं भावित्ता बहूइं वासाइं सामन्न-परियागं पाउणित्ता मासियाए संलेहणाए अप्पाणं झूसित्ता सट्ठिं भत्ताइं अणसणाए छेदित्ता आलोइयपडिक्कंते समाहिपत्ते कालमासे कालं किच्चा सोहम्मे कप्पे देवत्ताए उववन्ने २१ । से णं ततो देवलोगाओ आउक्खएणं भवक्खएणं ठिइक्खएणं अणंतरं चयं चइत्ता माणुस्सं विग्गहं लभिहिइ २ केवलं बोहिं बुज्झिहिति २ तहारूवाणं थेराणं अंतिए मुंडे जाव पव्वइ-स्सति २२ । से णं तत्थं बहूइं वासाइं सामरणं पाउणिहिइ २ आलोइय-पडिक्कंते समाहिपत्ते कालगते सणंकुमारे कप्पे देवत्ताए उववन्ने २३ । से णं ताओ देवलोयाओ ततो माणुस्सं पव्वज्जा बंभलोए माणुस्सं ततो महासुक्के ततो माणुस्सं आणते देवे ततो माणुस्सं ततो आरणे देवे ततो माणुस्सं सव्वट्ठसिद्धे, से णं ततो अणंतरं उव्वट्टित्ता महाविदेहे वासे जाव अड्ढाइं जहा दढपइन्ने सिज्झिहिति २४ । एवं खलु जंबू ! समणेणं जाव संपत्तेणं सुहविवागाणं पढमस्स अज्झयणस्स अयमट्ठे पन्नत्ते २५ ॥ सू० ३१ ॥ इति पढमं अज्झयणं समत्तं ॥

॥ इति प्रथममध्ययनम् ॥ श्रु० २--अ० १ आदितः--११ ॥

॥ अथ भद्रनन्दी-नामकं द्वितीय-मध्ययनम् ॥

बितियस्स णं उक्खेवो--एवं खलु जंबू ! तेणं कालेणं तेणं समएणं उसभपुरे णगरे थूभकरंडउज्जाणे धन्नो जक्खो धणावहो राया सरस्सई देवी सुमिणदंसणं कहणं जम्मणं बालत्तणं कलाओ य, जुव्वणे पाणिग्गहणं दाओ पासादवरगए भोगा य, जहा सुबाहुस्स नवरं भद्दनंदी कुमारे सिरि-

देवीपामोक्खाणं पंचसया, सामीसमोसरणं सावगधम्मं पुव्वभवपुच्छा, महाविदेहे वासे पुंडरीकिणी णगरी विजयते कुमारे जुगबाहू तित्थयरे पडिलाभिए माणुस्साउए निबद्धे, इहं उप्पन्ने, सेसं जहा सुबाहुयस्स जाव महाविदेहे वासे सिज्झिहिति बुज्झिहिति मुच्चिहिति परिनिव्वाहिति सव्वदुक्खाणमंतं करेहिति ॥ सू० ३२ ॥ बितियं अज्झयणं समत्तं ॥

॥ इति द्वितीयमध्ययनम् ॥ श्रु० २ अ०-२ आदित: १२ ॥

॥ अथ सुजाताख्यं तृतीयमध्ययनम् ॥

तच्चस्स उक्खेवो, वीरपुरं णगरं मणोरमं उज्जाणं, वीरकण्हमित्ते राया, सिरी देवी, सुजाए कुमारे, बलसिरीपामोक्खा पंचसयकन्ना, सामीसमोसरणं पुव्वभवपुच्छा, उसुयारे नयरे उसभदत्ते गाहावई पुप्फदत्ते अणगारे पडिलाभे मणुस्साउए निबद्धे, इह उप्पन्ने जाव महाविदेहे वासे सिज्झिहिति ॥ सू० ३३ ॥ सुहविवागे तइयं अज्झयणं समत्तं ॥ ३ ॥

॥ अथ सुवासवाख्यं चतुर्थमध्ययनम् ॥

चोत्थस्स उक्खेवो—विजयपुरं णगरं, णंदणवणं [मणोरमं] उज्जाणं, असोगो जक्खो, वासवदत्ते राया, कण्हा देवी, सुवासवे कुमारे, भद्दापामोक्खाणं पंचसया जाव पुव्वभवे कोसंबी णगरी, धणपाले राया, वेसमणभद्दे अणगारे, पडिलाभिते इह जाव सिद्धे ॥ सू० ३४ ॥ चोत्थं अज्झयणं समत्तं ॥ ४ ॥

॥ अथ जिनदासाख्यं पञ्चममध्ययनम् ॥

पंचमस्स उक्खेवओ—सोगंधिया णगरी नीलासोए उज्जाणे, सुकालो जक्खो, अप्पडिहओ राया, सुकन्ना देवी, महचंदे कुमारे, तस्स अरहदत्ता

भारिया, जिणदासो पुत्तो, तित्थयरागमणं, जिणदासपुव्वभवो, मज्झमिया णगरी, मेहरहो राया, सुधम्मे अणगारे, पडिलाभिए जाव सिद्धे, ॥ सू० ३५ ॥ पंचमं अज्झयणं समत्तं ॥ ५ ॥

॥ अथ धनपतिनामकं षष्ठमध्ययनम् ॥

छट्ठस्स उक्खेवओ–कणगपुरं णगरं सेयासोयं उज्जाणं, वीरभद्दो जक्खो, पियचंदो राया, सुभद्दा देवी, वेसमणे कुमारे जुवराया, सिरीदेवीपामोक्खा पंचसया कन्ना पाणिग्गहणं, तित्थयरागमणं, धनवती जुवरायापुत्ते जाव पुव्वभवो, मणिवया नगरी, मित्तो राया, संभूतिविजए अणगारे पडिलाभिते जाव सिद्धे ॥ सू० ३६ ॥ छट्ठं अज्झयणं समत्तं ॥ ६ ॥

॥ अथ महाबलाख्यं सप्तममध्ययनम् ॥

सत्तमस्स उक्खेवो, महापुरं णगरं रत्तासोगं उज्जाणं, रत्तपाओ जक्खो, बले राया, सुभद्दा देवी, महब्बले कुमारे, रत्तवईपामोक्खा पंचसया कन्ना पाणिग्गहणं, तित्थयरागमणं जाव पुव्वभवो, मणिपुरं णगरं, णागदत्ते गाहावती, इंदपुरे अणगारे पडिलाभिते जाव सिद्धे ॥ सू० ३७ ॥ सत्तमं अज्झयणं समत्तं ॥ ७ ॥

॥ अथ भद्रनन्दीनामकं अष्टममध्ययनम् ॥

अट्ठमस्स उक्खेवो–सुघोसं णगरं देवरमणं उज्जाणं, वीरसेणो जक्खो, अज्जुणो राया, तत्तवती देवी, भद्दनंदी कुमारे, सिरोदेवीपामोक्खा पंचसया जाव पुव्वभवे, महाघोसे णगरे, धम्मघोसे गाहावती, धम्मसीहे अणगारे पडिलाभिए जाव सिद्धे ॥ सू० ३८ ॥ अट्ठमं अज्झयणं समत्तं ॥ ८ ॥

॥ अथ महाचन्द्राख्यं नवममध्ययनम् ॥

णवमस्स उक्खेवो—चंपा नगरी पुन्नभद्दे उज्जाणे, पुन्नभद्दो जक्खो, दत्ते राया, रत्तवई देवी, महचंदे कुमारे जुवराया, सिरिकंतापामोक्खा णं पंचसया कन्ना जाव पुव्वभवो, तिगिञ्छी णगरी, जियसत्तू राया, धम्मवीरिये अणगारे पडिलाभिए जाव सिद्धे ॥ सू० ३९ ॥ नवमं अज्झयणं समत्तं ॥ ९ ॥

॥ अथ वरदत्ताख्यं दशममध्ययनम् ॥

जति णं दसमस्स उक्खेवो, एवं खलु जंबू ! तेणं कालेणं तेणं समएणं साएयं णामे णगरे होत्था उत्तरकुरू उज्जाणे, पासमिओ जक्खो, मित्तनंदी राया, सिरिकंता देवी, वरदत्ते कुमारे वरसेणपामोक्खा णं पंच देवीसया, तित्थयरागमणं, सावगधम्मं पुव्वभवो पुच्छा, मणुस्साउए निबद्धे, सततुवारे नगरे, विमलवाहणे राया, धम्मरुचिनामं अणगारं एज्जमाणं पासति २ पडिलाभिते समाणे मणुस्साउते निबद्धे, इहं उप्पन्ने, सेसं जहा सुबाहुयस्स कुमारस्स चिंता जाव पव्वज्जा, कप्पंतरिओ जाव सव्वट्ठसिद्धे ततो महाविदेहे जहा दढपइन्नो जाव सिज्झहिति बुज्झिहिति जाव सव्वदुक्खाणमंतं करेहिति ॥ एवं खलु जंबू ! समणेणं भगवया महावीरेणं जाव संपत्तेणं सुहविवागाणं दसमस्स अज्झयणस्स अयमट्ठे पन्नत्ते, सेवं भंते ! सेवं भंते ! जाव विहरति। सुहविवागा ॥ सू० ४० ॥ दसमं अज्झयणं समत्तं ॥

॥ इति दशममध्ययनम् ॥ श्रु० २ अ० १० आदितः २० ॥

॥ इति द्वितीयः श्रुतस्कन्धः ॥

नमो सुयदेवयाए–विवागसुयस्स दो सुयक्खंधा दुहविवागो य सुहविवागो य, तत्थ दुहविवागे दस अज्झयणा एकसरगा दससु चेव दिवसेसु उद्दिसिज्जंति, एवं सुहविवागेवि, सेसं जहा आयारस्स ॥ इति एकारसमं अंगं समत्तं ॥ ११ ॥ ग्रन्थाग्रं १२५० ॥

॥ इति श्री विपाकसूत्रम् ॥११॥

तपोमूर्ति-पूज्याचार्यदेव श्रीमद्विजयकर्पूरसूरीश्वर-पट्टधर-हालार-देशोद्धारक-कविरत्न-पूज्याचार्यदेव---श्रीमद्विजयामृतसूरीश्वर--विनेय--पन्यास–जिनेन्द्रविजय-गणिवरेण संशोधिते सम्पादिते च

श्रीमदागमसुधा-सिन्धौ चतुर्थो विभागः

श्रीमज्ञातासूत्र--श्रीमदुपासकदशासूत्र-श्रीमदन्तकृद्दशासूत्र-श्रीमदनुत्तरोपपातिकदशासूत्र-श्रीमत्प्रश्नव्याकरणसूत्र-श्रीमद् विपाकसूत्रात्मकः समाप्तोऽभूत् । शुभं भवतु श्री श्रमणसङ्घस्य ॥